प्रकाशक—आगम अनुयोग प्रकाशन परिषद्
बख्तावरपुरा, सांडेराव
[फालना–राजस्थान]

प्रथम संस्करण : वीर संवत् २४९९ दीपमालिका
अक्टूबर १९७२
प्रतियाँ : एक हजार
मूल्य : पच्चीस रुपये

मुद्रण व्यवस्था—
श्रीचन्द सुराना 'सरस'
संजय साहित्य संगम
दास बिल्डिंग नं. ५
बिलोचपुरा, आगरा-२

प्राप्ति स्थान
शा. हिम्मतमल हस्तीमल
A/4 मस्कती मार्केट
अहमदाबाद-२

मुद्रक—श्यामसुन्दर शर्मा, श्री प्रिंटर्स, २९।१५४
राजामण्डी, आगरा-२

समर्पण

श्रमणसंस्कृति के प्रतीक-

सरल शान्त दान्त

गुणरत्नाकर गुरुवर..

भजनानंदी श्री फतहचन्द्र जी म० को

प्रकाशकीय

स्वतन्त्र भारत की राजधानी देहली में आगम अनुयोग प्रकाशन की ओर से जैनागमों का नवीन शैली में प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। इस कार्य में सर्वप्रथम ई० सन् १६६६ में समवायाङ्ग का प्रकाशन किया गया। पश्चात् स्थानाङ्ग सूत्र का प्रकाशन भी प्रारम्भ होगया था। बियालीस फर्मे भी वहाँ छप-गये थे, किन्तु कारणवश मुद्रण कार्य स्थगित करना पड़ा। सन् १६७१ में पुनः आगरा में मुद्रण कार्य प्रारम्भ किया गया।

प्रूफ संशोधन एवं मुद्रण का सारा कार्यभार श्रीमान् श्रीचन्दजी सुराना "सरस" ने सँभाल कर हमारे गुरुतर भार को हलका कर दिया। आपका यह सहयोग कभी भुलाया नहीं जा सकता।

समवायाङ्ग के समान इस स्थानाङ्ग सूत्र में भी विस्तृत विषय सूची, शुद्ध मूलपाठ शब्दानुलक्षी सरल, सरस, संक्षिप्त हिन्दी अनुवाद और ज्ञानवर्धक शोधपूर्ण विशिष्ट परिशिष्ट पं० रत्न मुनि श्री कन्हैयालालजी म० "कमल" की अनुपम कृपा से

हमें प्राप्त हुए हैं अतः हम सब गुरुदेव की ज्ञान साधना के प्रति श्रद्धापूर्वक सदा नतमस्तक हैं।

इस प्रकाशन के हेतु स्थानीय दानवीर धर्म प्रेमी **शा. देवीचन्दजी रूपाजी** ने २००१) रु० कागज खरीदने के लिए प्रदान किए तथा **श्री श्वे० स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, फूलिया कलां** ने ५५०१) रु० का महान् योगदान मुद्रणकार्य के लिए किया—इसके लिए हम आप सबके आभारी हैं।

मन्त्री—
आगम अनुयोग प्रकाशन परिषद्
बखतावरपुरा, सांडेराव

सम्पादकीय

आगम अनुयोग प्रकाशन की ओर से स्थानाङ्ग के प्रकाशन की योजना पर सर्वप्रथम मूलपाठ संशोधन का संकल्प बना किन्तु कार्य प्रारम्भ करते ही कुछ ऐसी समस्यायें सामने आईं—जिनके कारण यथेष्ठ....संशोधन की सम्भावना धूमिल होती चली गई। दुर्भाग्य से कार्य-काल में एक अप्रत्याशित व्यवधान ऐसा अनिष्टकर आया कि जिसके कारण कार्य सर्वथा स्थगित करना पड़ा। सौभाग्य से शेष कार्य पूरा करने के लिए पुनः सुअवसर प्राप्त हुआ और गुरुदेव की कृपा से कार्य सम्पन्न भी हो गया।

मेरे संकल्पों के अनुरूप संपादन मे सौष्ठव नहीं आ पाया है—यह मैं स्वयं स्वीकार करता हूँ—फिर भी स्वाध्याय प्रेमियों के लिए उपलब्ध अन्य संस्करणों की अपेक्षा प्रस्तुत संस्करण अधिक उपादेय सिद्ध होगा।

स्मरणशक्ति की समृद्धि के लिए संख्या प्रधान संकलनों की एक सुन्दर शृङ्खला जो चिरकाल से चली आ रही हैं, उसकी ये दो अमर कड़ियाँ स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग हैं। समवायाङ्ग का प्रकाशन पाठकों के हाथों

में पहले पहुँच गया है और स्थानाङ्ग का प्रकाशन अब पहुँच रहा है।

सम्पादन काल में पं० रत्न मुनि श्री मिश्रीमलजी "मुमुक्षु" का तथा सेवाभावी मुनि श्री चाँदमलजी का समय-समय पर जो योगदान रहा है वह चिरस्मरणीय रहेगा। श्री नवीन मुनिजी (गुजराती) तथा अन्तेवासी मुनि विनय ने सेवा में संलग्न रहकर मेरी श्रुत-साधना को जो संबल प्रदान किया है वह सर्वदा अविस्मरणीय है।

जिनके सामयिक सुझावों से इस कार्य के सम्पन्न होने में जो सरलता हुई है उन सिद्धहस्त लेखक एवं अनेक ग्रन्थों के संपादक "सरस" जी को भी मैं अपना सहयोगी पाकर प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ।

दीपमालिका — मुनि कन्हैयालाल "कमल"
वीर संवत् २४९८
वर्षावास-फूलिया कलाँ

प्राक्कथन

स्थानाङ्ग-परिचय—

स्थानाङ्ग में स्थान और अङ्ग ये दो शब्द हैं। स्थान शब्द का सामान्य अर्थ "विश्रान्ति-स्थल" होता है। अङ्ग का सामान्य अर्थ "एक विभाग" होता है। इस प्रकार स्थानाङ्ग नाम निष्पन्न हुआ है।

इस स्थानाङ्ग के संकलनकर्ता श्री सुधर्मा गणधर एक-एक संख्या वाले पदार्थों का संकलन जब परिपूर्ण कर लेते हैं तो उस संकलन का नाम "एक स्थान" देते हैं। इसी प्रकार द्विसंख्यक त्रिसंख्यक यावत् दससंख्यक पदार्थों के संकलन का क्रमशः द्विस्थान त्रिस्थान यावत् दसस्थान नाम देते हैं।

यह आगम द्वादशाङ्गात्मक गणिपिटक का एक अङ्ग-विभाग है। अतः इस अङ्ग का "स्थानाङ्ग" नाम सार्थक है[1]। यह स्थानाङ्ग का शाब्दिक परिचय है। अन्तरङ्ग परिचय इस प्रकार है—

स्थानाङ्ग तृतीय अङ्ग आगम है। इसके दस अध्ययन हैं। इन दस अध्ययनों का एक ही श्रुतस्कन्ध है। द्वितीय, तृतीय

---

१ एक से दस तक की संख्यावाले स्थान ही प्रवचन पुरुष के भाव अङ्ग हैं, अतः इस आगम का नाम स्थानांग है।

और चतुर्थ अध्ययन के चार-चार उद्देशक हैं। पंचम अध्ययन के तीन उद्देशक हैं। शेष छः अध्ययनों में एक-एक उद्देशक हैं। इस प्रकार स्थानाङ्ग के इक्कीस उद्देशक हैं।

वर्तमान में उपलब्ध स्थानांग में ७८३ मूल सूत्र माने गये हैं[१]। इन सूत्रों में से जिन-जिन सूत्रों के जितने-जितने अन्तर्गत सूत्र माने गये हैं उनकी एक विस्तृत सूची परिशिष्ट नम्बर २ में दी गई है। किस अनुयोग के कितने सूत्र हैं—इसकी पूरी जानकारी परिशिष्ट नम्बर १ में दी गई है। सबसे अधिक सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं और सबसे अल्पसूत्र कथानुयोग के हैं। स्थानांग और समवायांग के कुछ ऐसे सूत्र हैं जिनका विषय समान है। ऐसे सूत्रों की एक तुलनात्मक सूची परिशिष्ट नम्बर ३ में दी गई है।

स्थानांग की विषय सूचियों का तुलनात्मक अध्ययन—

नन्दी सूत्र और समवायांग में वर्णित स्थानांग की विषय-सूचियों के देखने पर यह पता चलता है कि नन्दीसूत्र में कही गई स्थानांग की विषयसूची संक्षिप्त है और समवायांग में कही गई विस्तृत है। समवायांग की अपेक्षा नन्दीसूत्र अर्वाचीन है (यह जैन साहित्य के ऐतिहासिक विद्वानों का अभिमत है) अतः नन्दी-सूत्र में कही गई स्थानांग की विषय सूची विस्तृत होनी चाहिए

---

१ आगमोदय समिति से प्रकाशित सटीक स्थानांग की प्रति के अनुसार ये सूत्रांक दिये गए हैं।

थी, किन्तु ऐसा न होकर विपरीत हुआ है। इस समस्या का समाधान कहीं मिल नहीं रहा है।

समवायांग में स्थानांग की विषय सूची—

१. स्वसिद्धान्त, पर-सिद्धान्त और स्वपर-सिद्धान्तों का संयुक्त कथन।

२. जीव, अजीव और जीवाजीव का संयुक्त कथन।

३. लोक, अलोक और लोकालोक का संयुक्त कथन।

४. द्रव्य के गुण तथा विभिन्न क्षेत्र-कालवर्ती पर्यायों का कथन।

५. पर्वत, पानी, समुद्र, चार प्रकार के देव, आकर, पुरुषों के विभिन्न प्रकार, स्वर, गोत्र, नदियों, निधियों और ज्योतिषी देवों की विविध गतियों का वर्णन।

६. एक प्रकार, दो प्रकार यावत् दस प्रकार के लोकस्थ जीव और पुद्गलों का कथन।

नन्दीसूत्र में स्थानांग की विषय सूची—

प्रारम्भ के तीन कोष्ठकों में कहे गए विषय यद्यपि यहाँ व्युत्क्रम से कहे गए हैं फिर भी समवायांग के समान हैं।

चौथे और पाँचवें कोष्ठक में कहे गए विषय यहाँ अत्यन्त संक्षिप्त करके कहे गये हैं—यथा—टंक, कूट शैल, शिखरी प्राग्भार, गुफा, आकर, द्रह और नदियों का कथन है।

छठे कोष्ठक में कहे गये विषय समान हैं। इस संक्षिप्तीकरण का हेतु क्या है-यह ज्ञातव्य है।

स्थानांग की पदसंख्या का ह्रास—

समवायांग और नंदी सूत्र में स्थानांग की पदसंख्या बहत्तर हजार कही गई है किन्तु वर्तमान में उपलब्ध स्थानांग में बहत्तर हजार पद नहीं हैं-ऐसी मान्यता प्रचलित है। यद्यपि पद का परिमाण सुनिश्चित नहीं है फिर भी उपलब्ध आचारांग से स्थानांग चौगुना नहीं है-इसलिए संकलन काल में जितने पद थे उतने पद वर्तमान में नहीं हैं-यह निश्चित है।

एक स्थान से लेकर दसवें स्थान तक प्रत्येक स्थान के अन्तिम सूत्र की संकलन शैली देखकर यह धारणा बनती है कि स्थानाङ्ग में संकलन काल से लेकर अब तक किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है। पर यह धारणा असंगत है। अतः स्थानाङ्ग के प्रत्येक स्थान का अन्तिम भाग ज्यों का त्यों बना रहा[1] और पूर्व भाग में से पदों का ह्रास हो गया"—ऐसा मान लें तो कोई असंगति नहीं दिखाई देती।

---

१ देखिए—एक स्थान सूत्र ५६। द्वितीय स्थान सूत्र ११७-११८। तृतीय स्थान सूत्र २३३-२३४। चतुर्थस्थान सूत्र ३८७-३८८। पंचम स्थान सूत्र ४७४।....षष्ठ स्थान सूत्र ५४०। सप्तम स्थान सूत्र ५९२-५९३। अष्टम स्थान सूत्र ६६०।....नवम स्थान सूत्र ७०२-७०३। दसम स्थान सूत्र ७८३।

स्थानाङ्ग की सूत्राङ्क निर्धारण नीति--

आगमोदय समिति से प्रकाशित सटीक स्थानाङ्ग की प्रति में जो सूत्राङ्क दिये हैं उनकी विभाजक रेखा जानने के लिये जो अब तक प्रयास किये गए हैं, वे सफल सिद्ध नहीं हुए हैं। द्वितीय तृतीय, चतुर्थ, सप्तम और नवम अध्ययन के अन्तिम दो-दो सूत्रों की जो रचना शैली है वही षष्ठ, अष्टम और दसम अध्ययन के अन्तिम एक-एक सूत्र की है।[1] इनके अतिरिक्त भी अनेक सूत्र ऐसे हैं जिनकी विभाजक रेखा का आधार अब तक अज्ञात है अतः सूत्राङ्क निर्धारण नीति निश्चित करके आगामी प्रकाशनों में सूत्राङ्क दिए जावें तो यह एक प्रशस्त प्रयास सिद्ध होगा।

सूत्रों की सृष्टि का अज्ञात रहस्य--

१. सप्तम स्थान के सूत्राङ्क ५४३ में सात प्रकार का योनि संग्रह कहा गया है, और अष्टम स्थान के सूत्राङ्क ५९९ में अष्ट प्रकार का योनि संग्रह कहा गया है। इन दो सूत्रों की किस अपेक्षा से रचना की गई है—यह ज्ञातव्य है।

२. द्वितीय स्थान प्रथम उद्देशक सूत्राङ्क ६७ में दो प्रकार का समय कहा गया है और इसी स्थान एवं उद्देशक के सूत्राङ्क ७४ में दो प्रकार का काल कहा गया है। समय और काल पर्यायवाची हैं---तो क्या ये दोनों सूत्र केवल पर्याय भेद की अपेक्षा से कहे गये हैं या और भी कोई अपेक्षा इन सूत्रों की सृष्टि के पीछे सन्निहित है ?

---

१ टिप्पण एक के समान।

३. पंचम स्थान के सूत्राङ्क ४१० में केवली के पाँच अनुत्तर कहे हैं और दसम स्थान के सूत्राङ्क ७६३ में केवली के दस अनुत्तर कहे गये हैं। दस अनुत्तरों में पांच अनुत्तरों का समावेश हो जाता है फिर भी पांच और दस के दो भिन्न-भिन्न जो सूत्र कहे गये हैं वे विवक्षा भेद या उपेक्षा भेद से ही कहे गए होंगे ?

४. अष्टम स्थान के सूत्रांक ६१३ में आठ प्रकार के तृण वनस्पतिकायों का कथन है और दसम स्थान के सूत्रांक ७७३ में दस प्रकार के तृण वनस्पतिकायों का कथन है। ऊपर के समान सूत्रद्वय की रचना का हेतु प्रकाश में आना चाहिए।

५. सूत्रांक १६३, २८६, ४९८ और ६०० में क्रमशः लोक-स्थिति के ३, ४, ६ और ८ प्रकार कहे गए हैं किन्तु ५ और ७ प्रकार नहीं कहे गए हैं—ऐसी स्थिति में हमारे सामने दो विकल्प आते हैं।

पहला विकल्प—पांच और सात प्रकार की लोक स्थिति के सूत्र बने ही नहीं होंगे।

दूसरा विकल्प—यदि बने थे तो विच्छिन्न हो गए होंगे।

फिर भी चार सूत्र किस-किस अपेक्षा से कहे गए हैं यह तो मालुम होना ही चाहिए।

६. सूत्राङ्क २४४, ४३१ और ४८४ में क्रमशः ४, ५ और ६ भेद तृण वनस्पतिकाय के कहे गए हैं। एक-एक नाम बढ़ाकर तीन सूत्रों की रचना करने का तात्पर्य क्या है ?—यह जिज्ञासा है।

इस प्रकार अनेक सूत्र समाधान के लिए प्रस्तुत किये जा सकते हैं यहाँ केवल कुछ सूत्र उदाहरणार्थ लिखे गए हैं।

स्थानाङ्ग में इन सूत्रों को स्थान कैसे मिला—

तृतीय स्थान-द्वितीय उद्देशक के अन्तिम दो सूत्र १६६ और १६७ दुःख विषयक हैं।

प्रथम सूत्र में दुःख सम्बन्धी प्रश्नोत्तर हैं।

द्वितीय सूत्र में अन्यतीर्थियों की मान्यता है।

दोनों सूत्रों में कहीं संख्या का निर्देश नहीं हैं फिर भी गणना प्रधान स्थानांग में ये सूत्र हैं....यह विचारणीय प्रश्न है।

तृतीय स्थान के तृतीय उद्देशक के अन्तिम सूत्र १९० मे इग्यारह प्रश्नोत्तरों में श्रमण को पर्युपासना का फल कहा गया है। तीन की संख्या का कहीं उल्लेख नहीं है फिर भी तृतीय स्थान में इस सूत्र का संकलन किया गया है।

नन्दीश्वर द्वीप वर्णन और भ० विमलवाहन का वर्णन आदि के कुछ सूत्र ऐसे हैं जो स्थानाङ्ग की संकलन शैली से मेल नहीं खाते हैं। यद्यपि ये सूत्र टीकाकार के सामने भी थे किन्तु वे स्वयं इस सम्बन्ध में किसी निर्णय पर नहीं पहुंचे हैं।[1]

---

१ सत्सम्प्रदायहीनत्वात्, सदूहस्य वियोगतः। सर्व स्वपर शास्त्राणामदृष्टेरस्मृतेश्च मे ॥१॥ वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामशुद्धितः। सूत्राणामति गाम्भीर्याद्, मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥२॥ —स्थानाङ्गवृत्ति प्रशस्ति

क्या यह क्रम भंग नहीं ?

सूत्राङ्क २६३ में मान, माया और लोभ के चार प्रकार कहे गये हैं और सूत्राङ्क ३११ में चार प्रकार का क्रोध कहा गया है। सूत्राङ्क ३८५ में भी चार प्रकार के कषाय कहे गये हैं। चार कषायों के क्रम के अनुसार सर्वप्रथम क्रोध पश्चात् मान माया और लोभ का कथन होना चाहिए किन्तु सत्तरह सूत्र के पश्चात् क्रोध सूत्र का संकलन क्रम भंग नहीं है क्या ? अन्यथा प्रस्तुत संकलन क्रम की संगति सिद्ध करना चाहिये।

प्राचीन काल के गणित प्रयोग

१. "सय" (शत-१००) के स्थान मे "दस दसाइं" का प्रयोग है।[1]

२. "एग सहस्स" (एक सहस्र १०००) के स्थान में "दस सयाइं" का प्रयोग है।

३. "एग लक्ख" (एक लक्ष १०००००) के स्थान में "दस सय सहस्साइं" का प्रयोग है।

४. तीन की संख्या के लिए "छच्च अद्ध" का प्रयोग है।[2]

५. नो से अधिक को अर्थात् ९। या ९॥ को नो में ही गिन लिया है क्योंकि इनमें ९ का ही उच्चारण है।

---

१ दसवें स्थान में दस की संख्या वाले पदार्थों का ही कथन होता है अतः सौ हजार और एक लाख को उक्त संख्याओं में यहां कहा गया है।

२ देखिये सूत्राङ्क ४९३, ६६९, ७१९ और ७३५।

क्लिष्ट कल्पना

जम्बूद्वीप के भरत और ऐरवत वर्ष में अतीत उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा कालवर्ती मनुष्यों की उत्कृष्ट आयु तीन पल्योपम काल का था यह कथन सूत्राङ्क ४९३ में है—यहाँ विचारणीय यह है कि तीन पल्योपम काल को "**छच्च अद्ध पलिओवमाइं परमाउं पालइत्ता**" इन शब्दों में संकलित करके छठे ठाणे में कहा है।

तीन पल्योपम काल के आयु को छ का आधा कहकर छठे ठाणे में कहना सूत्र संकलन काल की प्रचलित पद्धति के अनुसार उपयुक्त माना जा सकता है किन्तु आधुनिक पाठक इस प्रकार के संकलन को क्लिष्ट कल्पना की संज्ञा ही देते हैं।

वाचना भेद या विवक्षा भेद

सूत्राङ्क ४९१ में छः प्रकार के ऋद्धि प्राप्त मनुष्य और छः प्रकार के अनऋद्धि प्राप्त (ऋद्धि रहित) मनुष्य कहे गये हैं। प्रज्ञापना प्रथम पद के सूत्र ६५ में भी ऋद्धि प्राप्त मनुष्य छः प्रकार के ही कहे गये हैं किन्तु अनऋद्धि प्राप्त (रिद्ध रहित) मनुष्य ९ प्रकार के कहे गये हैं।

स्थानांग में कथित छः प्रकार के रिद्धि रहित मनुष्यों से प्रज्ञापना में कथित रिद्धिरहित मनुष्य सर्वथा भिन्न हैं। स्थानांग में उक्त छः प्रकार के रिद्धिरहित मनुष्य अकर्म भूमिक है। जब कि प्रज्ञापना में उक्त रिद्धि रहित मनुष्य कर्म भूमिक है। इस

प्रकार के अनेक विवक्षा भेद हैं जिनका स्वतन्त्र चिन्तन होना आवश्यक है।

लौकिक सूत्र

स्थानांग में कुछ सूत्र ऐसे हैं जिन्हें लौकिक सूत्र कहें तो कोई असंगति दिखाई नहीं देती, क्योंकि इन सूत्रों से केवल लौकिक ज्ञान की वृद्धि होती है। साधक जीवन में लौकिक ज्ञान भी यदा कदा लोकोत्तर ज्ञान का पूरक होता है। लौकिक ज्ञान-शून्य साधक लोकोत्तर साधना में सहज सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। लौकिक ग्रन्थों में स्थानांग के लौकिक कहे जाने वाले सूत्रों का आधार स्थल शोधने का कार्य भी महत्त्वपूर्ण है।

यहाँ कुछ सूत्रों के सूत्राङ्क और विषय दिये जा रहे हैं जिन्हें देखकर पाठक यह समझ सकें कि ये सूत्र लौकिक ज्ञान की वृद्धि के लिये संकलित किये गये हैं।

सूत्राङ्क	विषय निर्देश
२०९—	तीन पितृ अङ्ग और तीन मातृ अङ्ग।
३४३—(१)	चार प्रकार की व्याधियां।
(२)	चार प्रकार की चिकित्सा।
३४४—	चार प्रकार के चिकित्सक।
३७४—	चार प्रकार के वाद्य, नाट्य, गेय, माल्य, अलंकार और अभिनय।
३७६—	चार प्रकार के उदकगर्भ।
३७७—	चार प्रकार के मानुषी गर्भ।

इनके अतिरिक्त और भी अनेक सूत्र इस सूची में सम्मिलित करने योग्य हैं किन्तु विस्तार भय से यहां अंकित नहीं किये गये हैं। लोकोत्तर साधना में इन सूत्रों की उपादेयता सिद्ध करना बहुश्रुतों कार्य हैं। स्थानाङ्ग की विषय सूचियों में इन लौकिक सूत्रों का उल्लेख नहीं है, अतः ये सब प्रक्षिप्त हैं—यह आधुनिक विद्वानों का मत है।

हमारे बहुश्रुत इन सूत्रों को पर-सिद्धांत के सूत्र मानते हैं किन्तु ये पर दर्शन के सूत्र नहीं है। उक्त सूत्रों में आयुर्वेद से संबंधित सूत्र ही अधिक हैं—इसलिये इन सूत्रों से लौकिक ज्ञान की वृद्धि ही होती है।

श्रुत पुरुष में स्थानांग का स्थान

श्रुत पुरुष की कल्पना किस कल्पनाशील महापुरुष के मस्तिष्क की उपज है। और उस महापुरुष का कौन-सा युग है? इस विषय की तथ्यपूर्ण जानकारी प्राप्त करने के साधन सुलभ नहीं है अतः निश्चित कुछ नहीं लिखा जा सकता, किन्तु यह सुनिश्चित है कि यह कल्पना आगम संकलन काल की नहीं है।[1]

आगम काल की कल्पनायें केवल दो हैं। पहली प्रवचन माता की कल्पना और दूसरी गणिपिटक की कल्पना। समवायाङ्ग भगवती सूत्र आदि आगमों में दोनों कल्पनाओं का उल्लेख है।[2]

श्रुत पुरुष और श्रुत देवता की कल्पना आगमोत्तर काल के ग्रन्थों में हैं। इसी प्रकार लोक पुरुष की कल्पना भी ग्रन्थों में ही है।

श्रुत पुरुष की वाम और दक्षिण पिण्डलियों में स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग का स्थान है। इसलिये ये दोनों आगम स्तम्भ के समान सुदृढ़ एवं महत्वपूर्ण है।

---

१ अंग आगम संकलना काल।

२ (क) समवायांग का ८ वां समवाय।

(ख) भगवती शतक १ उ० ४।

(ग) भगवती शतक २५ उ० ३।

स्थानांग का अध्ययन काल

दीक्षा पर्याय के आठवें वर्ष में स्थानाङ्ग की वाचना दी जानी चाहिये यह पूर्वाचार्यों की मान्यता है। यदि आठवें वर्ष से पूर्व कोई वाचना दे तो उसे आज्ञा भङ्गादि दोष लगते हैं।[1]

स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग के ज्ञाता को ही आचार्य उपाध्याय और गणावच्छेदक का पद देने का विधान है अतः प्रत्येक संयमी को इन अंगों का स्वाध्याय करना चाहिए।[2]

क्रमिक विकास

१. सूत्रांक ५८८ में सातावेदनीय और असातावेदनीय के सात-सात अनुभाव कहे हैं किन्तु प्रज्ञापना पद २३ उ० १ सूत्राङ्क ६०४ में सातावेदनीय और असातावेदनीय के आठ-आठ अनुभाव कहे हैं।

आधुनिक विद्वान् इस प्रकार के कथनों को चिन्तन का क्रमिक विकाश मानते हैं किन्तु कायिक सुख और कायिक दुख को छोड़ कर स्थानांग में सात-सात अनुभाव कहने का तात्पर्य क्या है ? यह जिज्ञासा बनी हुई है। स्थानांग के संकलन कर्त्ता ने किसी विशेष अपेक्षा को लेकर ही सात-सात अनुभाव कहे हैं।

---

१ ठाणं-समवाओऽवि य अंगे ते अट्ठवासस्स—अन्यथादानेऽस्याज्ञाभङ्गादयो दोषा—स्थानाङ्ग टीका

२ ठाण-समवायधरे कप्पइ आयरित्ताए उवज्झायत्ताए गणावच्छेइयत्ताए उद्दिसित्तए—व्यवहारसूत्र उ० ३ सूत्र ६८

प्रज्ञापना में उक्त कायिक सुख और दुख का अनुभाव तो स्थानांग के संकलन कर्ता गणधर भगवान को ज्ञात तो था ही, फिर भी आठ अनुभाव न कहकर सात अनुभाव ही कहे हैं तो किसी विशेष अपेक्षा को लेकर ही कहे हैं—ऐसा मानना चाहिए।

२. सूत्रांक ६४८ में ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के ८ नाम हैं और उववाई तथा प्रज्ञापना पद-२ में १२ नाम हैं। इस सम्बन्ध में विचारणीय यह है कि स्थानांग में दस स्थान हैं इसलिये १२ नामों में से १० नाम दसवें स्थान में कहे जा सकते थे, किन्तु आठवें स्थान में आठ नामों का ही कथन है, अतः वाचना भेद में बारह नाम और आठ नाम कहे गये हैं—यही मानना चाहिये।

उपसंहार

स्थानाङ्ग एक बृहद् अङ्ग आगम है इसकी विशालता के अनुरूप अनेक विषय अचर्चित रह गये हैं। इसका एक मात्र कारण है समय और साधनों का अभाव। आगम अनुयोग प्रकाशन के कार्यकर्ता चिरप्रतीक्षित स्थानाङ्ग के प्रकाशन को और अधिक दिनों तक स्थगित रखना भी नहीं चाहते हैं, अतः इस समय इतना ही लिखना पर्याप्त है।

—मुनि कन्हैयालाल "कमल"

स्थानांग सूत्र : विषय सूची

—एक स्थान—(पहला ठाणा)

सूत्रांक विषय

एक समय की स्थिति वाले—यावत्—असंख्य समय की स्थिति वाले-पुद्गलों की वर्गणा,
एक गुण काले—यावत्—अनन्त गुण रुक्ष पुद्गलों की वर्गणा,
जघन्य आदि प्रदेशस्थित पुद्गल स्कंधों की वर्गणा,
जघन्य आदि अवगाहना वाले पुद्गल स्कंधों की वर्गणा,
जघन्य आदि स्थिति वाले पुद्गल स्कंधों की वर्गणा,
जघन्य आदि गुण काले—यावत् अजघन्योत्कृष्ट गुण रुक्ष पुद्गल-स्कंधों की वर्गणा।

५२. जम्बूद्वीप की परिधि,
५३. भगवान महावीर का एकाकी निर्वाण,
५४. अनुत्तरोपपातिक देवों के शरीर की ऊंचाई,
५५. आर्द्रा, चित्रा, और स्वाति नक्षत्र के तारे,
५६. एक प्रदेशावगाढ़ पुद्गल,
एक समय स्थिति वाले पुद्गल,
एक गुण काले—यावत्—एक गुण रुक्ष पुद्गल ।

●

द्विस्थान (दूसरा ठाणा)

प्रथम उद्देशक

सूत्रांक विषय

५७. लोक में सभी पदार्थों का द्वैविध्य,
जीव की विभिन्न दो दो विवक्षाएं,
५८. अजीव की विभिन्न दो दो विवक्षाएं,

द्वितीय उद्देशक

भाषा, आहार, परिणमन, वेदन और निर्जरा करने के दो-दो स्थान,
मरुत प्रमुख देवों के दो प्रकार के शरीर,

तृतीय उद्देशक

८१. दो-दो प्रकार के शब्द और शब्द की उत्पत्ति,

८२. पुद्गलों का सम्मीलन, भेदन, परिशाटन, पतन और विध्वंस-स्वयं और परकृत,
दो-दो प्रकार के पुद्गल,

८३. इसी प्रकार दो दो प्रकार के शब्द, रूप, रस, गंध और स्पर्श,

८४. दो-दो प्रकार के आचार,
दो-दो प्रकार की प्रतिमा 'तप'
दो प्रकार की सामायिक।

८५. देव और नारक इन दो के जन्म की उपपात संज्ञा है
नारक और भवनवासी देव इन दो के मरण की उद्वर्त्तन संज्ञा है,
ज्योतिषी और वैमानिक इन दो के मरण की च्यवन संज्ञा है,
मनुष्य और तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय इन दो के जन्म की गर्भ व्युत्क्रान्ति संज्ञा है।
गर्भावस्था में आहार वृद्धि, हानि, विकुर्वणा, गति परिवर्तन, समुद्घात, काल प्रभाव, जन्म मरण आदि भिन्न-भिन्न परिणतियाँ,

मनुष्य और तिर्यञ्च की शुक्र एवं शोणित से उत्पत्ति,
दो प्रकार की स्थिति
दो प्रकार का आयु
दो प्रकार के कर्म
निरुपक्रम-पूर्णायु भोगने वाले
सोपक्रम-संक्षिप्तायु भोगने वाले

८६. आयाम–विष्कंम्भ, संस्थान, परिधि आदि से तुल्य दो-दो क्षेत्रों के नाम,
उन क्षेत्रों में आयाम, विष्कम्भादि से तुल्य दो-दो वृक्ष और उन वृक्षों पर रहने वाले दो-दो देव।

८७. इसी तरह आयाम, विष्कम्भ आदि से तुल्य पर्वत उन पर रहने वाले देव, वक्षस्कार पर्वत, दीर्घ वैताढ्य, दीर्घ वैताढ्य की गुफा, गुफावासी देव, उनकी स्थिति, चुल्ल हिमवान आदि कूट

८८. द्रह, द्रहवासीदेवियाँ, महानदियाँ, प्रपातद्रह और महानदियाँ।

८९. उत्सर्पिणी काल के सुषमदुषम नामक चौथे आरे का काल प्रमाण,
सुषम नामक आरे में मनुष्यों की ऊँचाई और आयुष्य,
भरत और ऐरवत क्षेत्र में एक युग में, एक समय में उत्पन्न होने वाले दो-दो अरिहन्तवंश, चक्रवर्तीवंश और वासुदेववंश,
सदा सुषमसुषमकाल वत् रिद्धि वाले दो क्षेत्र,
सदा सुषमकालवत् रिद्धि वाले दो क्षेत्र,
सदा सुषमदुषम कालवत् रिद्धि वाले दो क्षेत्र,

चतुर्थ उद्देशक

●

त्रि स्थान (तीसरा ठाणा)

प्रथम उद्देशक

द्वितीय उद्देशक

तृतीय उद्देशक

१७१. वस्त्र धारण के तीन कारण।

१७२. आत्म रक्षा के तीन हेतु,
ग्लान निर्ग्रन्थ के लिए कल्पनीय तीन विकट दत्ति।

१७३. साधु के साथ सम्बन्ध-विच्छेद के तीन कारण।

१७४. तीन प्रकार की अनुज्ञा, समनुज्ञादि।

१७५. तीन प्रकार के वचन और अवचन
तीन प्रकार के मन और अमन।

१७६. अल्पवृष्टि और महावृष्टि के तीन-तीन कारण।

१७७. इच्छा होने पर भी देव के मनुष्य लोक में नहीं आ सकने और आ सकने के तीन-तीन कारण।

१७८. देव की स्पृहा के तीन स्थान,
देव परिताप के तीन स्थान।

१७९. देव च्यवन के तीन लक्षण,
देव उद्वेग के तीन कारण।

१८०. विमानों के तीन प्रकार के संस्थान
विमानों के तीन आधार और तीन भेद।

१८१. नारक के तीन भेद
तीन सुगति, तीन दुर्गति
तीन सुगति प्राप्त और तीन दुर्गति प्राप्त।

१८२. उपवास करने वाले भिक्षु के लिये कल्पनीय तीन प्रकार के जल। वेला (षष्ठभक्त) करने वाले भिक्षु के लिये कल्पनीय

के
ीय

चतुर्थ उद्देशक

●

चतुर्थ स्थान

प्रथम उद्देशक

२४६. निग्र न्थी (साध्वी) को कल्पनीय चार संघाटी (साडी)।
२४७. ध्यान के चार-चार भेद, लक्षण, आलम्बन और अनुप्रेक्षा।
२४८. देवों की चार प्रकार की स्थिति और संवास।
२४९. चौबीस दण्डक में चार कषाय,
चौबीस दण्डक में क्रोधादि का चार प्रकार का प्रतिष्ठान
क्रोधादि की चार प्रकार की उत्पत्ति,
अनन्तानुबंधी आदि क्रोधादि के चार भेद,
आभोग निर्वतित आदि क्रोध के चार भेद।

२५०. अष्ट कर्मप्रकृति के चयनादि के चार स्थान।
२५१. समाधि आदि चार प्रतिमा।
२५२. चार अजीव (अधर्मास्तिकायादि) काय।
२५३. चार अरूपी काय,
फल की उपमा और पुरुष।

२५४. चार प्रकार के सत्य,
चार प्रकार का झूठ,
चौवीस दण्डक में चार प्रकार के प्रणिधान,
चार प्रकार के सुप्रणिधान,
चौवीस दण्डक में चार प्रकार के दुष्प्रणिधान।

२५५. भद्र और अभद्र पुरुष,
दोषदर्शी पुरुष,
दोष प्रकाशक पुरुष,
दोष शामक पुरुष,

द्वितीय उद्देशक

तृतीय उद्देशक

चतुर्थ उद्देशक

पंच स्थान (पाँचवाँ ठाणा)

प्रथम उद्देशक

द्वितीय उद्देशक

तृतीय उद्देशक

षट्स्थान (छठा ठाणा)

जंबूद्वीप में छह महाह्लद और छह उनकी नदियां,
जंबूद्वीप में छह महानदियां मेरु के उत्तर में छह महानदियां,
मेरु के दक्षिण में, सीता, सीतोदा महानदी के उभयकूल में
छह अन्तर नदियां,
धातकीखण्ड आदि के पूर्वार्ध में भी इसी प्रकार।

५२३. छह ऋतुएं।

५२४. छह अवमरात्रि,
छह अतिरात्रि।

५२५. छह प्रकार का अर्थावग्रह।

५२६. अवधिज्ञान के छह भेद।

५२७, साधु के लिए नहीं वोलने योग्य छह प्रकार के वचन।

५२८. षड् कल्प प्रस्तार।

५२९. कल्प के विरोधी।

५३०. छह प्रकार की कल्पस्थिति।

५३१. श्रमण भगवान् महावीर षष्ठभक्त करके प्रव्रजित हुए,
षष्ठ भक्त करके केवली हुए,
षष्ठ भक्त करके सिद्ध हुए।

५३२. सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्प के विमान छह सौ योजन के और उनके देवों की अवगाहना (भवधारणीय) उत्कृष्ट छह हाथ।

५३३. छह प्रकार का भोजन परिणाम,
छह प्रकार विष परिणाम।

सप्त स्थान (सातवाँ ठाणा)

प्रथम उद्देशक

अष्टस्थान (आठवाँ ठाणा)

६३७. सीता महानदी के दोनों कूलों पर आठ-आठ वक्षस्कार पर्वत। सीता महानदी के उत्तर में और दक्षिण में आठ-आठ चक्रवर्ती विजय।
सीतोदा महानदी के उत्तर और दक्षिण में आठ-आठ चक्रवर्ती विजय।
इन दोनों नदियों के उत्तर और दक्षिण में आठ-आठ राजधानियाँ।

६३८. सीता महानदी के उत्तर तथा दक्षिण में उत्कृष्ट आठ-आठ अर्हन्त, आठ-आठ चक्रवर्ती, आठ वलदेव वासुदेव होते हैं।
इसी तरह सीतोदा महानदी के दक्षिण और उत्तर में भी, सीता महानदी के उत्तर तथा दक्षिण में आठ-आठ दीर्घ-वेताढ्य।
आठ-आठ तिमिस्रगुहा,
आठ-आठ खण्डप्रपात गुफा,
आठ-आठ कृतमालक देव,
आठ गंगा सिन्धु कुण्ड-यावत्-आठ-आठ ऋषभकूट देव हैं।

६३९. सीतोदा महानदी के उत्तर में आठ दीर्घ वैताढ्य-यावत् नृत्यमालदेव आठ रक्ता रक्तावती यावत् ऋषभकूट देव हैं।

६४०. मेरुपर्वत चूलिका मध्यभागमें आठ योजन विष्कम्भवाली है।

६४१. धातकीवृक्ष आदि का उच्चत्व आदि भी इसी तरह जानना चाहिए।

नव-स्थान (नौवाँ ठाणा)

दस-स्थान (दशवाँ ठाणा)

स्थानांग सूत्र

(मूल पाठ)

संपादक

मुनि कन्हैयालाल "कमल"

२७ एगे चवणे. २८ एगे उववाए.

२९ एगा तक्का. ३० एगा सन्ना. ३१ एगा मन्ना. ३२ एगा विन्नू.

३३ एगा वेयणा. ३४ एगा छेयणा. ३५ एगा भेयणा.

३६ एगे मरणे अंतिमसारीरियाणं.

३७ एगे संसुद्धे अहाभूए पत्ते.

३८ एगे दुक्खे जीवाणं. एगेभूए. २

३९ एगा अहम्मपडिमा जं से आया परिकिलेसइ.

४० एगा धम्मपडिमा जं से आया पज्जवजाए.

४१ एगे मणे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि.
एगा वइ देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि.
एगे कायवायामे देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि. ३

४२ एगे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसकारपरक्कमे-
देवासुरमणुयाणं तंसि तंसि समयंसि.

४३ एगे नाणे. एगे दंसणे. एगे चरित्ते. ३

४४ एगे समए.

४५ एगे पएसे. एगे परमाणु. २

४६ एगा सिद्धी. एगे सिद्धे. एगे परिनिव्वाणे. एगे परिनिव्वुए. ४

४७ एगे सद्दे. एगे रूवे. एगे गंधे. एगे रसे. एगे फासे.
एगे सुब्भिसद्दे. एगे दुब्भिसद्दे.
एगे सुरूवे. एगे दुरूवे.
एगे दीहे. एगे हस्से.
एगे वट्टे. एगे तंसे. एगे चउरंसे. एगे पिहुले. एगे परिमंडले.
एगे किण्हे. एगे नीले. एगे लोहिए. एगे हालिद्दे. एगे सुक्किले

एगे सुब्भिगंधे. एगे दुब्भिगंधे.

एगे तित्ते. एगे कडुए. एगे कसाए. एगे अंबिले. एगे महुरे.

एगे कक्खड़े. एगे मउए. एगे गरुए. एगे लहुए.

एगे सीए. एगे उण्हे. एगे निद्धे. एगे लुक्खे. ३६

४८ एगे पाणाइवाए —जाव— एगे परिग्गहे.

एगे कोहे —जाव— एगे लोहे.

एगे पेज्जे —जाव— एगे परपरिवाए.

एगा अरइरइ.

एगे मायामोसे. एगे मिच्छादंसणसल्ले. १८

४९ एगे पाणाइवायवेरमणे —जाव— एगे परिग्गहवेरमणे.

एगे कोहविवेगे —जाव— एगे मिच्छादंसणसल्लविवेगे. १८

५० एगा ओसप्पिणी. एगा सुसमसुसमा —जाव—

एगा दूसमदूसमा. ७

एगा उस्सप्पिणी. एगा दूसमदूसमा —जाव—

एगा सुसमसुमसा. ७

५१ (१) एगा नेरइयाणं वग्गणा. एगा असुरकुमाराणं वग्गणा.

चउवीसदंडओ —जाव—

एगा वेमाणियाणं वग्गणा. २४

(२) एगा भवसिद्धियाणं वग्गणा.

एगा अभवसिद्धियाणं वग्गणा.

एगा भवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा.

एगा अभवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा.

एवं—जाव—एगा भवसिद्धियाणं वेमाणियाणं

णमो सिद्धाणं

तइयं ठाणंगं

एगट्ठाणं

१ सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

२ एगे आया.

३ एगे दंडे.

४ एगा किरिया.

५ एगे लोए. ६ एगे अलोए.

७ एगे धम्मे. ८ एगे अधम्मे.

९ एगे बंधे. १० एगे मोक्खे.

११ एगे पुण्णे. १२ एगे पावे.

१३ एगे आसवे. १४ एगे संवरे.

१५ एगा वेयणा. १६ एगा णिज्जरा.

१७ एगे जीवे पाड़िक्कएणं सरीरएणं.

१८ एगा जीवाणं अपरियाइत्ता विगुव्वणा.

१९ एगे मणे. २० एगा वइ. २१ एगे कायवायामे.

२२ एगा उप्पा. २३ एगा वियती. २४ एगा वियच्चा.

२५ एगा गइ. २६ एगा आगइ.

वग्गणा. एगा अभवसिद्धियाणं वेमाणियाणं वग्गणा. ५०

(३) एगा सम्मदिट्ठियाणं वग्गणा. एगा मिच्छदिट्ठियाणं वग्गणा. एगा सम्मच्छिदिट्ठियाणं वग्गणा.

एगा सम्मदिट्ठियाणं नेरइयाणं वग्गणा. एगा मिच्छदिट्ठियाणं नेरइयाणं वग्गणा. एगा सम्मभिच्छदिट्ठियाणं नेरइयाणं वग्गणा.

एवं—जाव—सम्मभिच्छदिट्ठियाणं थणियकुमाराणं वग्गणा.

एगा मिच्छदिट्ठियाणं पुढविकाइयाणं वग्गणा.

एवं —जाव— मिच्छदिट्ठियाणं वणस्सइकाइयाणं वग्गणा. एगा सम्मदिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा. एगा मिच्छदिट्ठियाणं बेइंदियाणं वग्गणा.

एवं तेइंदियाण वि. चउरिंदियाण वि.

सेसा जहा नेरइया—जाव—एगा सम्मभिच्छदिट्ठियाणं वेमाणियाणं वग्गणा. ६२

(४) एगा कण्हपक्खियाणं वग्गणा.

एगा सुक्कपक्खियाणं वग्गणा.

एगा कण्हपक्खियाणं नेरइयाणं वग्गणा.

एगा सुक्कपक्खियाणं नेरइयाणं वग्गणा.

एवं चउवीसदंडओ भाणियव्वो. ५०

(५) एगा कण्हलेस्साणं वग्गणा. एगा नीललेस्साणं वग्गणा.
एवं—जाव—एगा सुक्कलेस्साणं वग्गणा.

एगा कण्हलेस्साणं नेरइयाणं वग्गणा. —जाव—
एगा काउलेस्साणं नेरइयाणं वग्गणा.
एवं जस्स जइ लेस्साओ.
भवणवइ-वाणमंतर-पुढवि-आउ-वणस्सइकाइयाणं च
चत्तारि लेस्साओ.
तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं तिण्णि
लेस्साओ.
पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं छल्लेसाओ.
जोइसियाणं एगा तेउलेसा. वेमाणियाणं तिण्णि उवरिम
लेसाओ. ६६

(६) एगा कण्हलेस्साणं भवसिद्धियाणं वग्गणा.
एगा कण्हलेस्साणं अभवसिद्धियाणं वग्गणा.
एवं छसु वि लेसासु दो दो पदाणि भाणियव्वाणि.
एगा कण्हलेस्साणं भवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा.
एगा कण्हलेस्साणं अभवसिद्धियाणं नेरइयाणं वग्गणा.
एवं जस्स जति लेसाओ तस्स तत्तियाओ भाणियव्वाओ
—जाव— एगा सुक्कलेस्साणं अभवसिद्धियाणं
वेमाणियाणं वग्गणा. १२०

(७) एगा कण्हलेस्साणं सम्मद्दिट्ठियाणं वग्गणा.
एगा कण्हलेस्साणं मिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा.
एगा कण्हलेस्साणं सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वग्गणा.
एवं छसु वि लेसासु —जाव— एगा सुक्कलेसाणं
सम्मामिच्छद्दिट्ठियाणं वेमाणियाणं वग्गणा.

जेसिं जइ दिट्ठीओ. २२७

(८) एगा कण्हलेस्साणं कण्हपक्खियाणं वग्गणा. —जाव—
एगा सुक्कलेस्साणं सुक्कपक्खियाणं वेमाणियाणं वग्गणा.
जस्स जइ लेस्साओ. ५०
एए अट्ठ चउवीसदंडया.
एगा तित्थसिद्धाणं वग्गणा. एवं —जाव— एगा एक्कसिद्धाणं वग्गणा. एगा अणिक्कसिद्धाणं वग्गणा.
एगा पढम-समय-सिद्धाणं वग्गणा.
एवं —जाव— एगा अणंत-समय-सिद्धाणं वग्गणा.
एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा.
एवं—जाव— एगा अणंतपएसियाणं खंधाणं वग्गणा.
एगा एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा —जाव—
एगा असंखेज्जपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा.
एगा एगसमयठिइयाणं पोग्गलाणं वग्गणा. —जाव—
एगा असंखेज्ज-समय-ठिइयाणं पोग्गलाणं वग्गणा.
एगा एग-गुण-कालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा. —जाव—
एगा असंखेज्ज-गुण-कालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा.
एगा अणंत-गुण-कालगाणं पोग्गलाणं वग्गणा.
एवं वण्णा गंधा रसा फासा भाणियव्वा. —जाव—
एगा अणंत-गुण-लुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा.
एगा जहन्नपएसियाणं खंधाणं वग्गणा. एगा उक्कोसपएसियाणं खंधाणं वग्गणा. एगा अजहन्नुक्कोसपएसियाणं खंधाणं वग्गणा.

एवं जहन्नोगाहणयाणं. उक्कोसोगाहणयाणं. अजहन्नुक्कोसोगाहणयाणं.

जहन्नठिइयाणं. उक्कोसठिइयाणं. अजहन्नुक्कोसठिइयाणं.

जहन्नगुणकालयाणं. उक्कोसगुणकालयाणं. अजहन्नुक्कोसगुणकालयाणं.

एवं वण्ण-गंध-रस-फासाणं वग्गणा भाणियव्वा.

—जाव— एगा अजहन्नुक्कोस-गुण-लुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा. ३९४।१०७३

५२ एगे जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं —जाव— अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं.

५३ एगे समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसाए तित्थगराणं चरमतित्थयरे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकड़े परिनिव्वुड़े सव्वदुक्खपहीणे.

५४ अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं एगा रयणी उड्ढं उच्चत्तेणं पन्नत्ता.

५५ अद्दानक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते. चित्ता नक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते. साती नक्खत्ते एगतारे पण्णत्ते. ३

५६ एगपएसावगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता.

एवमेगसमयठिइया. एगगुणकालगा पोग्गला अणंता पण्णत्ता.
—जाव— एगगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २२

॥एगट्ठाणस्स सव्वसुत्ताइं १२४२॥

दुट्ठाणं

दुट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

५७ जदत्थि णं लोगे तं सव्वं दुपडोआरं. तं जहा-

जीवच्चेव. अजीवच्चेव.

तसे चेव. थावरे चेव.

सजोणियच्चेव. अजोणियच्चेव.

साउयच्चेव. अणाउयच्चेव.

सइंदियच्चेव. अणिंदियच्चेव.

सवेयगा चेव. अवेयगा चेव.

सरूवि चेव. अरूवि चेव.

सपोग्गला चेव. अपोग्गला चेव.

संसारसमावन्नगा चेव. असंसारसमावन्नगा चेव.

सासया चेव. असासया चेव. १०

५८ आगासे चेव. नो आगासे चेव.

धम्मे चेव. अधम्मे चेव. २

५९ बंधे चेव. मोक्खे चेव.

पुन्ने चेव. पावे चेव.

आसवे चेव. संवरे चेव.

वेयणा चेव. निज्जरा चेव. ४

६० दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
जीवकिरिया चेव. अजीवकिरिया चेव.

जीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
सम्मत्तकिरिया चेव. मिच्छत्तकिरिया चेव.

अजीवकिरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
इरियावहिया चेव. संपराइया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
काइया चेव. अहिगरणिया चेव.

काइया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
अणुवरयकायकिरिया चेव. दुप्पउत्तकायकिरिया चेव.

अहिगरणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
संजोयणाहिगरणिया चेव. णिव्वत्तणाहिगरणिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
पाउसिया चेव. पारियावणिया चेव.

पाउसिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवपाउसिया चेव. अजीवपाउसिया चेव.

पारियावणिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
सहत्थपारियावणिया चेव. परहत्थपारियावणिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
पाणाइवायकिरिया चेव. अपच्चक्खाणकिरिया चेव.

पाणाइवायकिरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-

सहत्थपाणाइवायकिरिया चेव. परहत्थपाणाइवायकिरिया चेव.

अपच्चक्खाणकिरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव.
अजीवअपच्चक्खाणकिरिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
आरंभिया चेव. परिग्गहिया चेव.

आरंभिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवआरंभिया चेव. अजीवआरंभिया चेव.

परिग्गहिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवपरिग्गहिया चेव. अजीवपरिग्गहिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
मायावत्तिया चेव. मिच्छादंसणवत्तिया चेव.

मायावत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता तं जहा-
आयभाववंकणया चेव. परभाववंकणया चेव.

मिच्छादंसणवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
ऊणाइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव.
तव्वइरित्तमिच्छादंसणवत्तिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
दिट्ठिया चेव. पुट्ठिया चेव.

दिट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवदिट्ठिया चेव. अजीवदिट्ठिया चेव.

पुट्ठिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवपुट्ठिया चेव. अजीवपुट्ठिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
पाडुच्चिया चेव. सामंतोवणिवाइया चेव.

पाडुच्चिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवपाडुच्चिया चेव. अजीवपाडुच्चिया चेव.

सामंतोवणिवाइया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवसामंतोवणिवाइया चेव. अजीवसामंतोवणिवाइया चेव..

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
साहत्थिया चेव. नेसत्थिया चेव.

साहत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवसाहत्थिया चेव. अजीवसाहत्थिया चेव.

नेसत्थिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जीवणेसत्थिया चेव. अजीवणेसत्थिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
आणवणिया चेव. वेयारणिया चेव.
जहेव नेसत्थियाओ.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
अणाभोगवत्तिया चेव. अणवकंखवत्तिया चेव.

अणाभोगवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
अणाउत्तआइयणया चेव. अणाउत्तपमज्जणया चेव.

अणवकंखवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
आयसरीअणवकंखवत्तिया चेव. परसरीरअणवकंखवत्तिया चेव.

दो किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
पेज्जवत्तिया चेव. दोसवत्तिया चेव.

पेज्जवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
मायावत्तिया चेव. लोभवत्तिया चेव.

दोसवत्तिया किरिया दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
कोहे चेव. माणे चेव. ३६

६१ दुविहा गरहा पण्णत्ता. तं जहा-
मणसा वेगे गरहइ. वयसा वेगे गरहइ.

अहवा-गरहा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
दीहं वेगे अद्धं गरहइ. रहस्सं वेगे अद्धं गरहइ. २

६२ दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते. तं जहा-
मणसा वेगे पच्चक्खाइ. वयसा वेगे पच्चक्खाइ.

अहवा-पच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
दीहं वेगे अद्धं पच्चक्खाइ. रहस्सं वेगे अद्धं पच्चक्खाइ. २

६३ दोहिं ठाणेहिं अणगारे संपन्ने अणादियं अणवदग्गं दीहमद्धं-
चाउरंतसंसारकंतारं वीइवएज्जा. तं जहा-
विज्जाए चेव. चरणेण चेव.

६४ दो ठाणाइं अपरियाणित्ता आया नो केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज
सवणयाए. तं जहा-

आरंभे चेव. परिग्गहे चेव.

दो ठाणाइं अपरियाइत्ता आया नो केवलं बोहिं बुज्झेज्जा. तं जहा-

आरंभे चेव. परिग्गहे चेव.

दो ठाणाइं अपरियाइत्ता आया नो केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइज्जा. तं जहा-

आरंभे चेव. परिग्गहे चेव.

एवं नो केवलेणं बंभचेरवासमावसेज्जा.

नो केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा.

नो केवलं संवरेणं संवरेज्जा.

नो केवलं आभिणिबोहियणाणं उप्पाड़ेज्जा.

एवं केवलं सुयणाणं उप्पाड़ेज्जा.

एवं ,, ओहिणाणं उप्पाड़ेज्जा.

एवं ,, मणपज्जवणाणं उप्पाड़ेज्जा.

एवं ,, केवलणाणं उप्पाड़ेज्जा. ११

६५ दो ठाणाइं परियाइत्ता आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए. तं जहा-

आरंभे चेव. परिग्गहे चेव.

एवं —जाव— केवलणाणमुप्पाड़ेज्जा. ११

६६ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए- तं जहा-

सोच्चा चेव. अभिसमेच्चा चेव.

एवं अजोगि-भवत्थ-केवलनाणे वि.

सिद्ध-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
अणंतर-सिद्ध-केवलनाणे-चेव. परंपर-सिद्ध-केवलनाणे चेव

अणंतर-सिद्ध-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
एक्काणंतर-सिद्ध-केवलनाणे चेव.
अणेक्काणंतर-सिद्ध-केवलनाणे चेव.

परंपर-सिद्ध-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
एक्क-परंपर-सिद्ध-केवलनाणे चेव.
अणेक्क-परंपर-सिद्ध-केवलनाणे चेव.

नो केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
ओहिणाणे चेव. मणपज्जणाणे चेव.

ओहिणाणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
भवपच्चइए चेव. खओवसमिए चेव.

दोण्हं भवपच्चइए पण्णत्ते. तं जहा-
देवाणं चेव. नेरइयाणं चेव.

दोण्हं खओवसमिए पण्णत्ते. तं जहा-
मणुसाणं चेव. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं चेव.

मणपज्जवणाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
उज्जुमई चेव. विउलमई चेव.

परोक्खे नाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
आभिणिबोहियनाणे चेव. सुयनाणे चेव

आभिणिबोहियणाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
सुयनिस्सिए चेव. असुयनिस्सिए चेव.

सुयनिस्सिए दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
अत्थोग्गहे चेव. वंजणोग्गहे चेव.
असुयनिस्सिए वि एवमेव.

सुयणाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
अंगपविट्ठे चेव. अंगबाहिरे चेव.

अंगबाहिरे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
आवस्सए चेव. आवस्सय-वइरित्ते चेव.

आवस्सव-यइरित्ते दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
कालिए चेव. उक्कालिए चेव. २२

७२ दुविहे धम्मे पण्णत्ते. तं जहा-
सुयधम्मे चेव. चरित्तधम्मे चेव.

सुयधम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
सुत्त-सुयधम्मे चेव. अत्थ-सुयधम्मे चेव.

चरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
अगार-चरित्तधम्मे चेव. अणगार-चरित्तधम्मे चेव.

दुविहे संजमे पण्णत्ते. तं जहा-
सरागसंजमे चेव. वीतरागसंजमे चेव.

सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
सुहुमसंपराय-सरागसंजमे चेव.

एवं —जाव— केवलणाणमुप्पाड़ेज्जा. ११

६७ दो समाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
ओसप्पिणी समा चेव. उस्सप्पिणी समा चेव.

६८ दुविहे उम्माए पण्णत्ते. तं जहा-
जक्खावेसे चेव. मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं चेव.
तत्थ णं जे से जक्खावेसे से णं सुहवेयतराए चेव.
सुहविमोयतराए चेव.
तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयतराए चेव. दुहविमोयतराए चेव.

६९ दो दंडा पण्णत्ता. तं जहा-
अट्ठादंडे चेव. अणट्ठादंडे चेव.
नेरइयाणं दो दंडा पण्णत्ता. तं जहा-
अट्ठादंडे य. अणट्ठादंडे य.
एवं चउवीसदंडओ —जाव— वेमाणियाणं. २५

७० दुविहे दंसणे पण्णत्ते. तं जहा-
सम्मद्दंसणे चेव. मिच्छादंसणे चेव.
सम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
निसग्गसम्मद्दंसणे चेव. अभिगमसम्मद्दंसणे चेव.
निसग्गसम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
पड़िवाइ चेव. अपड़िवाइ चेव.
अभिगमसम्मद्दंसणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

पड़िवाइ चेव. अपड़िवाइ चेव.

मिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

अभिगहिय-मिच्छादंसणे चेव. अणभिगहिय-मिच्छादंसणे चेव.

अभिगहिय-मिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

सपज्जवसिए चेव. अपज्जवसिए चेव.

अणभिगहिय-मिच्छादंसणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

सपज्जवसिए चेव. अपज्जवसिए चेव. (७)

७१ दुविहे नाणे पण्णत्ते. तं जहा-

पच्चक्खे चेव. परोक्खे चेव.

पच्चक्खे नाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

केवलनाणे चेव. नो केवलनाणे चेव.

केवलणाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

भवत्थ-केवलनाणे चेव. सिद्ध-केवलनाणे चेव.

भवत्थ-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव.

अजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव.

सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

पढमसमय-सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव.

अपढमसमय-सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव.

अहवा—चरिमसमय-सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव.

अचरिमसमय-सजोगि-भवत्थ-केवलनाणे चेव.

बादरसंपराय-सरागसंजमे चेव.

सुहुमसंपराय-सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
पढमसमय-सुहुमसंपराय-सरागसंजमे चेव.
अपढमसमय-सुहुम-संपराय-सरागसंजमे चेव.
अहवा—चरमसमय-सुहुमसंपराय-सरागसंजमे चेव
अचरमसमय-सुहुमसंपराय-सरागसंजमे चेव.

अहवा—सुहुमसंपराय-सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
संकिलेसमाणए चेव. विसुज्झमाणए चेव.

बादरसंपराय-सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
पढमसमय-बादर-संपराय-सरागसंजमे चेव.
अपढमसमय-बादर-संपराय-सरागसंजमे चेव.
अहवा—चरमसमय-बादरसंपराय-सरागसंजमे चेव.
अचरमसमय-बादरसंपराय-सरागसंजमे चेव

अहवा—बादरसंपराय-सरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
पड़िवाइ चेव अपड़िवाइ चेव.

वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
उवसंतकसाय-वीयरागसंजमे चेव.
खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

उवसंतकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
पढमसमय-उवसंतकसाय-वीयरागसंजमे चेव.
अपढमसमय-उवसंतकसाय-वीयरागसंजमे चेव.
अहवा—चरमसमय-उवसंतकसाय-वीयरागसंजमे चेव

अचरमसमय-उवसंतकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

खीणकसाय-वीतरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

केवली-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

सयंबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

सयंबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते.
तं जहा-

पढमसमय-सयंबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अपढमसमय-सयंबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अहवा—चरमसमय-सयंबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे
चेव.

अचरमसमय-सयंबुद्ध-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयराग
संजमे चेव.

बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते.
तं जहा-

पढमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे
चेव.

अपढमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे
चेव.

अहवा—चरमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयराग-

संजमे चेव.

अचरमसमय-बुद्धबोहिय-छउमत्थ-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

केवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

पढमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अपढमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अहवा–चरमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अचरमसमय-सजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

पढमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अपढमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अहवा–चरमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव.

अचरमसमय-अजोगीकेवलि-खीणकसाय-वीयरागसंजमे चेव. २५

७२ (१) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता. तं जहा-

सुहुमा चेव. बायरा चेव.

एवं —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता.
तं जहा-
सुहुमा चेव. बायरा चेव. ५

(२) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता. तं जहा-
पज्जत्तगा चेव. अपज्जत्तगा चेव.

एवं —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता.
तं जहा-
पज्जत्तगा चेव. अपज्जत्तगा चेव. ५

(३) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता. तं जहा-
परिणया चेव. अपरिणया चेव.

एवं —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता.
तं जहा-
परिणया चेव. अपरिणया चेव. ५

(१) दुविहा दव्वा पण्णत्ता. तं जहा-
परिणया चेव. अपरिणया चेव.

(४) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता. तं जहा-
गइसमावन्नगा चेव. अगइसमावन्नगा चेव.

एवं —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता.
तं जहा-
गइसमावन्नगा चेव. अगइसमावन्नगा चेव. ५

(२) दुविहा दव्वा पण्णत्ता. तं जहा-

गइसमावन्नगा चेव. अगइसमावन्नगा चेव.

(५) दुविहा पुढविकाइया पण्णत्ता. तं जहा-
अणंतरोगाढा चेव. परंपरोगाढा चेव.
एवं —जाव— दुविहा वणस्सइकाइया पण्णत्ता.
तं जहा-
अणंतरोगाढा चेव. परंपरोगाढा चेव. ५

(३) दुविहा दव्वा पण्णत्ता. तं जहा-
अणंतरोगाढा चेव. परंपरोगाढा चेव. २८

७४ दुविहे काले पण्णत्ते. तं जहा-
ओसप्पिणी काले चेव. उस्सप्पिणी काले चेव.

दुविहे आगासे पण्णत्ते. तं जहा-
लोगागासे चेव. अलोगागासे चेव. २

७५ (१) नेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-
अब्भंतरए चेव. बाहिरए चेव.

अब्भंतरए कम्मए. बाहिरए वेउव्विए.
एवं देवाणं भाणियव्वं.

पुढविकाइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-
अब्भंतरए चेव. बाहिरए चेव.
अब्भंतरए कम्मए. बाहिरए ओरालिए —जाव—
वणस्सइकाइयाणं.

बेइंदियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-

अब्भंतरए चेव. बाहिरए चेव.

अब्भंतरए कम्मए. अट्ठि-मंस-सोणियबद्धे बाहिरए.

ओरालिए —जाव— चउरिंदियाणं.

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं दो सरीरगा पण्णत्ता.

तं जहा-

अब्भंतरए चेव. बाहिरए चेव.

अब्भंतरए कम्मए. अट्ठि-मंस-सोणिय-ण्हारु-छिराबद्धे बाहिरए ओरालिए.

मणुस्साण वि एवं चेव. २४

(२) विग्गहगइसमावन्नगाणं नेरइयाणं दो सरीरगा पण्णत्ता.

तं जहा-

तेयए चेव. कम्मए चेव.

निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं. २४

(३) नेरइयाणं दोहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया. तं जहा-
रागेण चेव. दोसेण चेव.—जाव—वेमाणियाणं. २४

(४) नेरइयाणं दुट्ठाणनिव्वत्तिए सरीरगे पण्णत्ते. तं जहा-
रागनिव्वत्तिए चेव. दोसनिव्वत्तिए चेव. —जाव—
वेमाणियाणं २४

दो काया पण्णत्ता. तं जहा-

तसकाए चेव. थावरकाए चेव.

तसकाए दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

भवसिद्धिए चेव. अभवसिद्धिए चेव.

एवं थावरकाए वि. ६६

७६ दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ निग्गंथाण वा. निग्गंथीण वा पव्वावित्तए. तं जहा-

पाईणं चेव. उदीणं चेव.

एवं मुंडावित्तए. सिक्खावित्तए. उवट्ठावित्तए. संभुजित्तए. संवसित्तए. सज्झायं उद्दिसित्तए. सज्झायं समुद्दिसित्तए. सज्झायं अणुजाणित्तए. आलोइत्तए. पडिक्कमित्तए. निंदित्तए. गरहित्तए. विउट्टित्तए. विसोहित्तए. अकरणयाए अब्भुट्ठित्तए. अहारिहं पायिच्छत्तं तवोकम्मं पड़िवज्जित्तए.

दो दिसाओ अभिगिज्झ कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा अपच्छिम-मारणंतिय-संलेहणा-झूसणा-झूसियाणं भत्त-पाण-पड़ियाइक्खित्ताणं पाओवगयाणं कालं अणवकंखमाणं विहरित्तए. तं जहा-

पाईणं चेव. उदीणं चेव. १८

दुट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

७७ जे देवा उड्ढोववन्नगा कप्पोववन्नगा विमाणोववन्नगा चारोववन्नगा चारट्ठितीया गइरइया गइसमावन्नगा तेसिं णं देवाणं सया समियं जे पावं कम्मे कज्जइ. तत्थेगया वि एगइया वेयणं वेदेंति. अण्णत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेंति.

नेरइयाणं सया समियं जे पावे कम्मे कज्जइ.

तत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेंति.
अन्नत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेंति —जाव—
पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं.
मणुस्सा णं सया समियं जे पावे कम्मे कज्जइ.
इहगया वि एगइया वेयणं वेदेंति.
अण्णत्थगया वि एगइया वेयणं वेदेंति.
मणुस्सवज्जा सेसा एक्कगमा. २३

७८ नेरइया दु गतिया दु आगतिया पण्णत्ता. तं जहा-
(१) नेरइए नेरइएसु उववज्जमाणे मणुस्सेहिंतो वा.
पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वा उववज्जेज्जा.
से चेव णं से नेरइए नेरइयत्तं विप्पजहमाणे
मणुस्सत्ताए वा. पंचेंदियतिरिक्खजोणियत्ताए वा
गच्छेज्जा.
एवं असुरकुमारा वि. णवरं-से चेव णं से असुरकुमारे
असुरकुमारत्तं विप्पजहमाणे मणुस्सत्ताए वा.
तिरिक्खजोणियत्ताए वा गच्छेज्जा. एवं सव्व देवा.
पुढविकाइया दु गतिया. दु आगतिया पण्णत्ता. तं जहा-
पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइए-
हिंतो वा. नो पुढविकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा.
से चेव णं से पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे
पुढविकाइयत्ताए वा. नो पुढविकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा
एवं—जाव—मणुस्सा. २४

७६ (१) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
भवसिद्धिया चेव. अभवसिद्धिया चेव.
—जाव वेमाणिया. २४

(२) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
अणंतरोववण्णा चेव. परंपरोववण्णगा चेव. —जाव—
वेमाणिया. २४

(३) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
गइसमावण्णगा चेव. अगइसमावण्णगा चेव. —जाव—
वेमाणिया. २४

(४) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
पढमसमयोववण्णगा चेव. अपढमसमयोववण्णगा चेव.
—जाव— वेमाणिया. २४

(५) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
आहारगा चेव. अणाहारगा चेव. —जाव—
वेमाणिया. २४

(६) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
उस्सासगा चेव. नो उस्सासगा चेव. —जाव—
वेमाणिया. २४

(७) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
सइंदिया चेव. अणिंदिया चेव. —जाव—
वेमाणिया २४

(८) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
पज्जत्तगा चेव. अपज्जत्तगा चेव. —जाव—
वेमाणिया २४

(९) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
सन्नि चेव. असन्नि चेव.
एवं पंचेदिया सव्वे.
विगलिंदियवज्जा —जाव— वेमाणिया. १६

(१०) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
भासगा चेव. अभासगा चेव. एवमेगेंदियवज्जा
सव्वे. १९

(११) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
सम्मदिट्ठिया चेव, मिच्छदिट्ठिया चेव. एवमेगेंदियवज्जा
सव्वे. १९

(१२) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
परित्तसंसारिया चेव. अणंतसंसारिया चेव. —जाव—
वेमाणिया. २४

(१३) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
संखेज्जकालसमयठिइया चेव. असंखेज्जकालसमयठि-
इया चेव. एवं पंचेदिया. एगिंदिय-विगलिंदियवज्जा
—जाव— वाणवंतरा. १४

(१४) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-

सुलभबोहिया चेव. दुलभबोहिया चेव. —जाव—
वेमाणिया. २४

(१५) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
कण्हपक्खिया चेव. सुक्कपक्खिया चेव —जाव—
वेमाणिया. २४

(१६) दुविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-
चरिमा चेव. अचरिमा चेव —जाव— वेमाणिया. २४
(३५६)

८० दोहिं ठाणेहिं आया अहोलोगं जाणइ. पासइ. तं जहा-
समोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहोलोगं जाणइ. पासइ.
असमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहोलोगं जाणइ. पासइ.
आहोही-समोहयासमोहएणं चेव अप्पाणेणं आया अहोलोगं
जाणइ. पासइ.

एवं तिरियलोगं. उड्ढलोगं. केवलकप्पलोगं.

दोहिं ठाणेहिं आया अहोलोगं जाणइ. पासइ. तं जहा-
विउव्विएण चेव अप्पाणेण आया अहोलोगं जाणइ. पासइ.
अविउव्विएण चेव अप्पाणेण आया अहोलोगं जाणइ. पासइ.
आहोही-विउव्वियाविउव्विएण चेव अप्पाणेण आया अहोलोगं
जाणइ. पासइ.

एवं तिरियलोगं. उड्ढलोगं. केवलकप्पलोगं.

दोहिं ठाणेहिं आया सद्दाइं सुणेइ. तं जहा-
देसेण वि सद्दाइं सुणेइ. सव्वेण वि सद्दाइं सुणेइ.

एवं रूवाइं पासइ. गंधाइं अग्घाइ. रसाइं आसादेइ. फासाइं पड़िसंवेदेइ.

दोहिं ठाणेहिं आया ओभासइ. तं जहा-
देसेण वि आया ओभासइ. सव्वेण वि आया ओभासइ.
एवं पभासइ. विकुव्वइ. परियारेइ. भासं भासइ. आहारेइ. परिणामेइ. वेदेइ. निज्जरेइ.

दोहिं ठाणेहिं देवे सद्दाइं सुणेइ. तं जहा-
देसेण वि देवे सद्दाइं सुणेइ.
सव्वेण वि देवे सद्दाइं सुणेइ.
एवं रूवाइं पासइ. गंधाइं अग्घाइं. रसाइं आसादेइ. फासाइं पड़िसंवेदेइ. ओभासइ. पभासइ. विकुव्वइ. परियारेइ. भासं भासेइ. आहारेइ. परिणामेइ. वेदेइ. निज्जरेइ.

मरुया देवा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
एग सरीरी चेव. बि सरीरी चेव.
एवं किन्नरा. किंपुरिसा. गंधव्वा. नागकुमारा. सुवन्नकुमारा. अग्गिकुमारा. वाउकुमारा.

देवा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
एगसरीरी चेव. बिसरीरी चेव. ४५

दुट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

८१ दुविहे सद्दे पण्णत्ते. तं जहा-

भासासद्दे चेव. नो भासासद्दे चेव.

भासासद्दे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
अक्खरसंबद्धे चेव. नो अक्खरसंबद्धे चेव.

नो भासासद्दे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
आउज्जसद्दे चेव. नो आउज्जसद्दे चेव.

आउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
तते चेव. वितते चेव.

तते दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
घणे चेव. झुसिरे चेव.
एवं वितते वि.

नो आउज्जसद्दे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
भूसणसद्दे चेव. नो भूसणसद्दे चेव.

नो भूसणसद्दे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
तालसद्दे चेव. लत्तिआसद्दे चेव.

दोहिं ठाणेहिं सद्दुप्पाए सिया. तं जहा-
साहन्नंताणं चेव पुग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया.
भिज्जंताणं चेव पोग्गलाणं सद्दुप्पाए सिया. ९

८२ दोहिं ठाणेहिं पोग्गला साहण्णंति. तं जहा-
सइं वा पोग्गला साहण्णंति.
परेण वा पोग्गला साहण्णंति.

दोहिं ठाणेहिं पोग्गला भिज्जंति. तं जहा-

सइं वा पोग्गला भिज्जंति.
परेण वा पोग्गला भिज्जंति.

दोहिं ठाणेहिं पोग्गला परिसडंति. तं जहा-
सइं वा पोग्गला परिसडंति.
परेण वा पोग्गला परिसडंति.
एवं परिवडंति.
विद्धंसति.

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
भिन्ना चेव. अभिन्ना चेव.

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
भिउरधम्मा चेव. नो भिउरधम्मा चेव.

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
परमाणु-पोग्गला चेव. नो परमाणु-पोग्गला चेव.

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
सुहुमा चेव. बायरा चेव.

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
बद्धपासपुट्ठा चेव. नो बद्धपासपुट्ठा चेव.

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
परियाइयच्चेव. अपरियाइयच्चेव.

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
अत्ता चेव. अणत्ता चेव.

दुविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-
इट्ठा चेव. अणिट्ठा चेव.
एवं कंता. पिया. मणुन्ना. मणामा. १७

८३ दुविहा सद्दा पण्णत्ता. तं जहा-
अत्ता चेव. अणत्ता चेव.
एवमिट्ठा —जाव— मणामा.

दुविहा रूवा पण्णत्ता. तं जहा-
अत्ता चेव. अणत्ता चेव.
एवमिट्ठा —जाव— मणामा.
एवं गंधा. रसा. फासा.
एवमिक्केक्के छ छ आलावगा भाणियव्वा. ३०

८४ दुविहे आयारे पण्णत्ते. तं जहा-
नाणायारे चेव. नो नाणायारे चेव.
नो नाणायारे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
दंसणायारे चेव. नो दंसणायारे चेव.
नो दंसणायारे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
चरित्तायारे चेव. नो चरित्तायारे चेव.
नो चरित्तायारे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
तवायारे चेव. वीरियायारे चेव.
दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
समाहि-पड़िमा चेव. उवहाण-पड़िमा चेव.

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
विवेग-पड़िमा चेव. विउस्सग्ग-पड़िमा चेव.

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
भद्दा चेव. सुभद्दा चेव.

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
महाभद्दा चेव. सव्वओ भद्दा चेव.

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
खुड्डिया चेव मोय-पड़िमा. महल्लिया चेव मोय-पड़िमा.

दो पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
जवमज्झा चेव चंद-पड़िमा. वइरमज्झा चेव चंद-पड़िमा.

दुविहे सामाइए पण्णत्ते. तं जहा-
अगार-सामाइए चेव. अणगार-सामाइए चेव. ११

८५ दोण्हं उववाए पण्णत्ते. तं जहा-
देवाण चेव. नेरइयाण चेव.

दोण्हं उव्वट्टणा पण्णत्ता. तं जहा-
नेरइयाण चेव. भवणवासीण चेव.

दोण्हं चयणे पण्णत्ते. तं जहा-
जोइसियाण चेव वेमाणियाण चेव.

दोण्हं गब्भवक्कंती पण्णत्ता. तं जहा-
मणुस्साण चेव. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव.

दोण्हं गब्भत्थाणं आहारे पण्णत्ते. तं जहा-

मणुस्साण चेव. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव.

दोण्हं गब्भत्थाणं वुड्ढी पण्णत्ता. तं जहा-
मणुस्साण चेव. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव.
एवं निव्वुड्ढी. विगुव्वणा. गइपरियाए.
समुग्घाए. कालसंजोगे. आयाती. मरणे.

दोण्हं छविपव्वा पण्णत्ता. तं जहा-
मणुस्साण चेव. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव.

दो सुक्क-सोणियसंभवा पण्णत्ता. तं जहा-
मणुस्सा चेव. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया चेव.

दुविहा ठिई पण्णत्ता. तं जहा-
कायट्ठिई चेव. भवट्ठिई चेव.

दोण्हं कायट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-
मणुस्साण चेव. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव.

दोण्हं भवट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-
देवाण चेव. नेरइयाण चेव.

दुविहे आउए पण्णत्ते. तं जहा-
अद्धाउए चेव. भवाउए चेव.

दोण्हं अद्धाउए पण्णत्ते. तं जहा-
मणुस्साण चेव. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव.

दोण्हं भवाउए पण्णत्ते. तं जहा-
देवाण चेव. नेरइयाण चेव.

दुविहे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-
पएसकम्मे चेव. अणुभावकम्मे चेव.

दो अहाउयं पालेंति. तं जहा-
देवच्चेव. नेरइयच्चेव.

दोण्हं आउयसंवट्टए पण्णत्ते. तं जहा-
मणुस्साण चेव. पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाण चेव. २४

८६ जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं दो वासा. बहुसमतुल्ला. अविसेसमणाणत्ता. अण्णमण्णं नाइवट्टंति. आयाम-विक्खंभ-संठाण-परिणाहेणं तं जहा-
भरहे चेव. एरवए चेव.
एवमेएणमहिलावेणं हिमवए चेव. हेरण्णवए चेव.
हरिवासे चेव. रम्मयवासे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स पुरच्छिम-पच्चच्छिमेणं दो खेत्ता बहुसमतुल्ला. अविसेसमणाणत्ता. अण्णमण्णं नाइवट्टंति आयाम-विक्खंभ-संठाण-परिणाहेणं. तं जहा-
पुव्व-विदेहे चेव. अवर-विदेहे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं दो कुराओ बहुसम-तुल्लाओ. अविसेसमणाणत्ताओ अण्णमण्णं नाइवट्टंति आयाम-विक्खंभ-संठाण-परिणाहेणं तं जहा-
देवकुरा चेव. उत्तरकुरा चेव.

तत्थ णं दो महइमहालया महद्दुमा बहुसमतुल्ला. अविसेसम-णाणत्ता अण्णमण्णं नाइवट्टंति आयाम-विक्खंभुच्चत्तोव्वेह-

संठाण-परिणाहेणं. तं जहा-

कूड़सामली चेव. सुदंसणा चेव.

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया. महज्जुइया. महाणुभागा. महायसा. महावला. महासोक्खा. पलिओवमट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-

गरुले चेव. वेणुदेवे. अणाढिए चेव जंबुद्दीवाहिवई. ७

८७ जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं दो वासहरपव्वया वहुसमतुल्ला. —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-

चुल्लहिमवंते चेव. सिहरि चेव.

एवं महाहिमवंते चेव. रुप्पि चेव. एवं निसढे चेव. नीलवंते चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं हेमवंतेरण्णवएसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया वहुसमतुल्ला. —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-

सद्दावाई चेव. वियड़ावाई चेव.

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया चेव. —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-

साई चेव. पभासे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं हरिवास-रम्मएसु वासेसु दो वट्टवेयड्ढपव्वया वहुसमतुल्ला. —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-

गंधावाई चेव. मालवंतपरियाए चेव.

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया चेव. —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-

अरुणे चेव. पउमे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं देवकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खंधगसरिसा अद्धचंद-संठाणसंठिया दो वक्खार-पव्वया बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
सोमणसे चेव. विज्जुप्पभे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तरेणं उत्तरकुराए पुव्वावरे पासे एत्थ णं आसक्खंधगसरिसा अद्धचंद-संठाणसंठिया दो वक्खार-पव्वया बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
गंधमायणे चेव. मालवंते चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं दो दीहवेयड्ढ-पव्वया बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
भारहे चेव दीहवेयड्ढे. एरावए चेव दीहवेयड्ढे.

भारहए णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ बहुसमतुल्लाओ अविसेस-मणाणत्ताओ अण्णमण्णं नाइवट्टंति आयाम-विक्खंभुच्चत्त-संठाण-परिणाहेणं. तं जहा-
तिमिसगुहा चेव. खंडप्पवायगुहा चेव.

तत्थ णं दो देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-
कयमालए चेव. नट्टमालए चेव.
एरावयए णं दीहवेयड्ढे दो गुहाओ बहुसमतुल्लाओ —जाव—
कयमालए चेव. नट्टमालए चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंते वासहर-पव्वए दो कूड़ा बहुसमतुल्ला अविसेसमणाणत्ता अण्णमण्णं नाइवट्टंति. आयाम-विक्खंभुच्चत्त-संठाण-परिणाहेणं. तं जहा-चुल्लहिमवंतेकूड़े चेव. वेसमणकूड़े चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं महाहिमवंते वासहर-पव्वए दो कूड़ा बहुसमतुल्ला अविसेसकणाणत्ता अण्णमण्णं नाइवहंति आयाम-विक्खंभुच्चत्तसंठाणपरिणाहेणं. तं जहा-महाहिमवंतकूड़े चेव. वेरुलियकूड़े चेय.

एवं निसढे वासहरपव्वए दो कूड़ा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
निसढकूड़े चेव. रुयगप्पभे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तरेणं नीलवंते वासहरपव्वए दो कूड़ा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
नीलवंतेकूड़े चेव. उवदंसणकूड़े चेव.

एवं रुप्पिम्मि वासहरपव्वए दो कूड़ा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
रुप्पिकूड़े चेव. मणिकंचणकूड़े चेव.

एवं सिहरिम्मि वासहरपव्वए दो कूड़ा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
सिहरिकूड़े चेव. तिगिच्छकूड़े चेव. १९

८८ जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं चुल्लहिमवंत-

सिहरीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा बहुसमतुल्ला अविसेसम-
णाणत्ता अण्णमण्णं नाइवट्टंति. आयाम-विक्खंभ-उव्वेह-संठाण-
परिणाहेणं. तं जहा-
पउमद्दहे चेव. पुंडरीयद्दहे चेव.

तत्थ णं दो देवयाओ महड्ढियाओ महज्जुइयाओ महाणुभा-
गाओ महायसाओ महाबलाओ महासोक्खाओ पलिओवम-
ट्ठिइयाओ परिवसंति. तं जहा-
सिरि चेव. लच्छी चेव.

एवं महाहिमवंत-रुप्पीसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा बहुसम-
तुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
महापउमद्दहे चेव. महापोंडरीयद्दहे चेव.

तत्थ णं दो देवयाओ महड्ढियाओ —जाव— पलिओवम-
ट्ठिइयाओ परिवसंति. तं जहा-
हिरि चेव. बुद्धि चेव.

एवं नीसढ-नीलवंतेसु वासहरपव्वएसु दो महद्दहा बहुसमतुल्ला
—जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
तिगिंछद्दहे चेव. केसरिद्दहे चेव.

तत्थ णं दो देवयाओ महड्ढियाओ —जाव— पलिओवम-
ट्ठिइयाओ परिवसंति. तं जहा-
धिती चेव. किति चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं महाहिमवंताओ

वासहरपव्वयाओ महापउमद्दहाओ दो महाणईओ पवहंति. तं जहा-

रोहियच्चेव. हरिकंतच्चेव.

एवं निसढाओ वासहरपव्वयाओ तिगिच्छद्दहाओ दो महाणईओ पवहंति. तं जहा-

हरिच्चेव. सीओअच्चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तरेणं नीलवंताओ वासहरपव्वयाओ केसरिद्दहाओ दो महाणईओ पवहंति. तं जहा-

सीता चेव. नारिकंता चेव.

एवं रुप्पीओ वासहरपव्वयाओ महापोंडरीयद्दहाओ दो महाणईओ पवहंति. तं जहा-

णरकंता चेव. रुप्पकूला चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं भरहे वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं त जहा-

गंगप्पवायद्दहे चेव. सिंधुप्पवायद्दहे चेव.

एवं हिमवए वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-

रोहियप्पवायद्दहे चेव. रोहियंसप्पवायद्दहे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं हरिवासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-

हरिप्पवायद्दहे चेव. हरिकंतप्पवायद्दहे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं महाविदेहवासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
सीअप्पवायद्दहे चेव. सीओअप्पवायद्दहे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तरेणं रम्मए वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
नरकंतप्पवायद्दहे चेव. नारीकंतप्पवायद्दहे चेव.

एवं हेरण्णवए वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं तं जहा-
सुवन्नकूलप्पवायद्दहे चेव. रुप्पकूलप्पवायद्दहे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स उत्तरेणं एरवए वासे दो पवायद्दहा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-
रत्तप्पवायद्दहे चेव. रत्तावईप्पवायद्दहे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वयस्स दाहिणेणं भरहे वासे दो महाणईओ बहुसमतुल्लाओ अविसेसमणाणत्ताओ अण्णमण्णं नाइवट्टंति आयाम-विक्खंभ-उव्वेह-संठाण-परिणाहेणं पवहंति तं जहा-
गंगा चेव. सिंधू चेव.
एवं जहा पवायद्दहा. एवं णईओ भाणियव्वाओ —जाव— एरवए वासे दो महाणईओ बहुसमतुल्लाओ —जाव— रत्ता चेव. रत्तवई चेव. ३१

८९ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसम दुसमाए समाए दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो होत्था.

एवमिमीसे ओसप्पिणीए — जाव— काले पण्णत्ते.

एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए — जाव— कालो भविस्सइ.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए मणुया दोन्नि य पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था.

एवमिमीसे ओसप्पिणीए —जाव— पालइत्था.

एवमागमिस्साए उस्सप्पिणीए - जाव — पालिस्संति.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमए एगजुगे दो अरिहंतवंसा उप्पज्जिंसु वा. उप्पज्जंति वा. उप्पज्जिस्संति वा. एवं चक्कवट्टिवंसा. एवं दसारवंसा.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगसमए एगजुगे दो दो अरहंता उप्पज्जिंसु वा. उप्पज्जंति वा. उप्पज्जिस्संति वा. एवं चक्कवट्टिणो. एवं बलदेवा. एवं वासुदेवा.

जंबुद्दीवे दीवे दोसु कुरासु मणुया सया सुसमसुसमुत्तमिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति. तं जहा-
देवकुराए चेव. उत्तरकुराए चेव.

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमुत्तमिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति. तं जहा-
हरिवासे चेव. रम्मगवासे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया सया सुसमदुसमुत्तमिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति. तं जहा-
हेमवए चेव. एरण्णवए चेव.

जंबुद्दीवे दीवे दोसु खित्तेसु मणुया सया दुसमसुसमुत्तमिड्ढिं पत्ता पच्चणुब्भवमाणा विहरंति. तं जहा-
पुव्वविदेहे चेव. अवरविदेहे चेव.

जंबुद्दीवे दीवे दोसु वासेसु मणुया छव्विहंपि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति. तं जहा-
भरहे चेव. एरवए चेव. १९

९० जंबुद्दीवे दीवे दो चंदा पभासिसु वा. पभासंति वा. पभासिस्संति वा.
दो सूरिया तविंसु वा. तवंति वा. तविस्संति वा.

एवं दो कत्तियाओ, दो रोहिणीओ, दो मगसिराओ, दो अद्दाओ
गाहाओ—

कत्तिय रोहिणि मगसिर. अद्दा य पुणव्वसु अ पूसो य ।
तत्तो ऽ वि अस्सलेस्सा. महा य दो फग्गुणीओ य ॥१॥
हत्थो चित्ता साई. विसाहा तह य होइ अणुराहा ।
जेट्ठा सूलो पुव्वा य. आसाढा उत्तरा चेव ॥२॥
अभिई सवण धणिट्ठा. सयभिसया दो य होंति भद्दवया ।
रेवइ अस्सिणि भरिणी. णेयव्वा आणुपुव्वीए ॥३॥

एवं गाहाणुसारेण णेयव्वं —जाव— दो भरणीओ.

दो अग्गी. दो पयावई. दो सोमा. दो रुद्दा.
दो अइई. दो बहस्सई. दो सप्पी. दो पीई.
दो भगा. दो अज्जमा. दो सविया. दो तट्ठा.
दो वाउ. दो इंदग्गी. दो मित्ता. दो इंदा.
दो निरइ. दो आउ. दो विस्सा. दो वम्हा.
दो विण्हु. दो वसु. दो वरुणा. दो अया.
दो विविद्धी. दो पुस्सा. दो अस्सा. दो यमा.
दो इंगालगा. दो वियालगा. दो लोहियक्खा. दो सणिच्छरा.
दो आहुणिया. दो पाहुणिया. दो कणा. दो कणगा. दो कणकणगा.
दो कणगवियाणगा. दो कणगसंताणगा. दो सोसा. दो सहिया.
दो आसासणा. दो कज्जोवगा. दो कब्बडगा. दो अयकरगा.
दो दुंदुभगा. दो संखा. दो संखवण्णा. दो संखवण्णाभा. दो कंसा.
दो कंसवण्णा. दो कंसवण्णाभा. दो रुप्पी. दो रुप्पाभासा
दो नीला. दो नीलोभासा. दो भासा. दो भासरासी.
दो तिला. दो तिलपुप्फवण्णा. दो दगा. दो दगपंचवण्णा.
दो काका. दो कक्कंधा. दो इंदग्गी वा. दो धूमकेऊ. दो हरी.
दो पिंगला. दो बुहा. दो सुक्का. दो बहस्सई. दो राहू.
दो अगत्थी. दो माणवगा. दो कासा. दो फासा. दो धुरा.
दो पमुहा. दो वियड़ा. दो विसंधी. दो नियल्ला. दो पइल्ला.
दो जड़ियाइलगा. दो अरुणा. दो अग्गिल्ला. दो काला.
दो महा कालगा. दो सोत्थिया. दो सोवत्थिया.
दो वद्धमाणगा. दो पलंबा. दो निच्चालोगा. दो निच्चुज्जोया.
दो सयंपभा. दो ओभासा. दो सेयंकरा. दो खेमंकरा.

दो आभंकरा. दो पभंकरा. दो अपराजिया. दो अरया.
दो असोगा. दो विगयसोगा. दो विमला. दो वितता.
दो वितत्था. दो विसाला. दो साला. दो सुव्वया.
दो अणियट्टी. दो एगजड़ी. दो दुजड़ी. दो करकरिगा.
दो रायग्गला. दो पुप्फकेऊ. दो भावकेऊ. १४६

९१ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

लवणे णं समुद्दे दो जोयण-सयसहस्साइं चक्कवाल-विक्खंभेणं पण्णत्ते.

लवणस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. ३

९२ धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धेणं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं दो वासा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं तं जहा-

भरहे चेव. एरवए चेव.

एवं जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थ वि भाणियव्वं —जाव— दोसु वासेसु मणुया छव्विहं पि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति. तं जहा-

भरहे चेव. एरवए चेव.

नवरं कूड़सामली चेव. धायइरुक्खे चेव.

देवा गरुले वेणुदेवे चेव. सुदंसणे चेव.

धायइखंडे दीवे पच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-

दाहिणेणं दो वासा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं
तं जहा-
भरहे चेव. एरवए चेव.

एवं जहा जंबुद्दीवे तहा एत्थ वि भाणियव्वं —जाव— दोसु
वासेसु मणुया छव्विहं पि कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति.
तं जहा-
भरहे चेव. एरवए चेव.
नवरं कूड़सामली चेव. महा धायइरुक्खे चेव.
देवा गरुले वेणुदेवे चेव. पियदंसणे चेव.

धायइसंडे णं दीवे दो भरहाइं.
,, दो एरवयाइं.
,, दो हेमवयाइं.
,, दो हेरण्णवयाइं.
,, दो हरिवासाइं.
,, दो रम्मगवासाइं.
,, दो पुव्वविदेहाइं.
,, दो अवरविदेहाइं.
,, दो देवकुराओ.
,, दो देवकुरु-महद्दुमा.
,, दो देवकुरु-महद्दुमवासी देवा.
,, दो उत्तरकुराओ.
,, दो उत्तरकुरु-महद्दुमा.

धायइसंडे णं दीवे दो उत्तरकुरु-महद्दुमवासी देवा.
,, दो चुल्लहिमवंता.
,, दो महा हिमवंता.
,, दो निसहा.
,, दो नीलवंता.
,, दो रुप्पी.
,, दो सिहरी.
,, दो सद्दावाई.
,, दो सद्दावायवासी साती देवा.
,, दो वियडावाई.
,, दो वियडावाईवासी पभासा देवा.
,, दो गंधावाई.
,, दो गंधावाईवासी अरुणा देवा.
,, दो मालवंतपरियागा.
,, दो मालवंतपरियागावासी पउमा देवा.
,, दो मालवंता.
,, दो चित्तकूडा.
,, दो पम्हकूडा.
,, दो नलिणकूडा.
,, दो एगसेला.
,, दो तिकूडा.
,, दो वेसमणकूडा.
,, दो अंजणा.

धायइसंडे णं दीवे दो मातंजणा.
,, दो सोमणसा.
,, दो विज्जुप्पभा.
,, दो अंकावई.
,, दो पम्हावई.
,, दो आसीविसा.
,, दो सुहावहा.
,, दो चंदपव्वया.
,, दो सूरपव्वया.
,, दो नागपव्वया.
,, दो देवपव्वया.
,, दो गंधमायणा.
,, दो उसुआरपव्वया.
,, दो चुल्लहिमवंत-कूड़ा.
,, दो वेसमण-कूड़ा.
,, दो महा हिमवंत-कूड़ा.
,, दो वेरुलिय-कूड़ा.
,, दो निसह-कूड़ा.
,, दो रुयग-कूड़ा.
,, दो नीलवंत-कूड़ा.
,, दो उवदंसण-कूड़ा.
,, दो रुप्पि-कूड़ा.
,, दो मणिकंचण-कूड़ा.

धायइसंडे णं दीवे दो सिहरि-कूड़ा.

,, दो तिगिच्छि-कूड़ा.

,, दो पउमद्दहा.

,, दो पउमद्दहवासिणीओ सिरीदेवीओ.

,, दो महा पउमद्दहा.

,, दो महा पउद्दहवासिणीओ हिरीदेवीओ.

,, दो पुंडरीयद्दहा.

,, दो पुंडरीयद्दहवासिणीओ लच्छीदेवीओ.

,, दो महा पुंडरीयद्दहा.

,, दो महा पुंडरीयद्दहवासिणीओ बुद्धिदेवीओ.

,, दो तिगिच्छद्दहा.

,, दो तिगिच्छद्दहवासिणोओ धिइदेवीओ.

,, दो केसरिद्दहा.

,, दो केसरिद्दहवासिणीओ कित्तिदेवीओ.

,, दो गंगापवातद्दहा —जाव— दो रत्तवइ-
पवायद्दहा.

,, दो रोहियाओ —जाव— दो रुप्पकूलाओ.

,, दो गाहावईओ (णईओ)

,, दो दहवईओ.

,, दो पंकवईओ.

,, दो तत्तजलाओ.

,, दो मत्तजलाओ.

,, दो उम्मत्तजलाओ.

धायइसंडे णं दीवे दो खीरोयाओ.
,, दो सीहसोयाओ.
,, दो अंतोवाहिणीओ.
,, दो उम्मिमालिणीओ.
,, दो फ़ेणमालिणीओ.
,, दो गंभीरमालिणीओ.
,, दो कच्छा. (३२ विजयाओ)
,, दो सुकच्छा.
,, दो महा कच्छा.
,, दो कच्छगावई.
,, दो आवत्ता.
,, दो मंगलावत्ता.
,, दो पुक्खला.
,, दो पुक्खलावई.
,, दो वच्छा.
,, दो सुवच्छा.
,, दो महा वच्छा.
,, दो वच्छगावई.
,, दो रम्मा.
,, दो रम्मगा.
,, दो रमणिज्जा.
,, दो मंगलावई.
,, दो पम्हा.

धायइसंडे णं दीवे दो सुपम्हा.
,, दो महा पम्हा.
,, दो पम्हगावई.
,, दो संखा.
,, दो नलिना.
,, दो कुसुया.
,, दो सलिलावई.
,, दो वप्पा.
,, दो सुवप्पा.
,, दो महा वप्पा.
,, दो वप्पगावई.
,, दो वग्गू.
,, दो सुवग्गू.
,, दो गंधिला.
,, दो गंधिलावई (३२ विजय)
,, दो खेमाओ. (रायहाणीओ)
,, दो खेमपुरीओ.
,, दो रिट्ठाओ.
,, दो रिट्ठपुरीओ.
,, दो खग्गीओ.
,, दो मंजुसाओ
,, दो ओसहीओ.
,, दो पोंडरगिणीओ.

धायइलंडे णं दीवे दो सुसीमाओ.
,, दो कुंडलाओ.
,, दो अपराजियाओ.
,, दो पभंकराओ.
,, दो अंकावईओ.
,, दो पम्हावईओ.
,, दो सुभाओ.
,, दो रयणसंचाओ.
,, दो आसपुराओ.
,, दो सीहपुराओ.
,, दो महा पुराओ.
,, दो विजयपुराओ.
,, दो अपरा जिआओ.
,, दो अवराओ.
,, दो असोगाओ.
,, दो विगयसोगाओ.
,, दो विजयाओ.
,, दो वेजयंतीओ.
,, दो जयंतीओ.
,, दो अपराजियाओ.
,, दो चक्कपुराओ.
,, दो खग्गपुराओ.
,, दो अवज्झाओ.

धायइसंडे णं दीवे दो अउज्झाओ. (३२ रायहाणीओ)

,, दो भद्दसालवणाइं.

,, दो नंदणवणाइं.

,, दो सोमणसवणाइं.

,, दो पंडगवणाइं.

,, दो पंडुकंबलसिलाओ.

,, दो अइपंडुकंबलसिलाओ.

,, दो रत्तकंबलसिलाओ.

,, दो अइरत्तकंबलसिलाओ.

,, दो मंदरा (पव्वया)

,, दो मंदरचूलियाओ.

धायइसंडस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. २०९

९३ कालोदस्स णं समुद्दस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

पुक्खरवरदीवड्ढ-पुरच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणेणं दो वासा बहुसमतुल्ला —जाव— परिणाहेणं. तं जहा-

भरहे चेव. एरवए चेव.

तहेव —जाव— दो कुराओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

देवकुरा चेव. उत्तरकुरा चेव.

तत्थ णं दो महइमहालया महद्दुमा पण्णत्ता. तं जहा-

कूडसामली चेव. पउमरुक्खे चेव.
देवा गरुले चेव वेणुदेवे. पउमे चेव. —जाव— छव्विहं पि
कालं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति.
पुक्खरवरदीवड्ढ-पच्चत्थिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तर-
दाहिणेणं दो वासा बहुसमतुल्ला तहेव.
णाणत्तं-कूडसामली चेव. महा पउमरुक्खे चेव. देवा गरुले चेव
वेणुदेवे. पुंडरीए चेव.
पुक्खरवरदीवड्ढे णं दीवे दो भरहाइं. दो एरवयाइं.
— जाव — दो मंदरा, दो मंदरचूलियाओ.
पुक्खरवरस्स णं दीवस्स वेइया दो गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं
पण्णत्ता.
सव्वेसिं पि णं दीव-समुद्दाणं वेइयाओ दो गाउयाइं उड्ढं
उच्चत्तेणं पण्णत्ताओ. २५७

९४ दो असुरकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
चमरे चेव. बली चेव.

दो नागकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
धरणे चेव. भूयाणंदे चेव.

दो सुवण्णकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
वेणुदेवे चेव. वेणुदाली चेव.

दो विज्जुकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
हरिच्चेव. हरिस्सहे चेव.

दो अग्गिकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-

अग्गिसीहे चेव. अग्गिमाणवे चेव.

दो दीवकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे चेव. विसिट्ठे चेव.

दो उदहिकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
जलकंते चेव. जलप्पभे चेव.

दो दिसाकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
अमियगई चेव. असियवाहणे चेव.

दो वायुकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
वेलंबे चेव. पभंजणे चेव.

दो थणियकुमारिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
घोसे चेव. महा घोसे चेव.

दो पिसाइंदा पण्णत्ता. तं जहा-
काले चेव. महा काले चेव.

दो भूइंदा पण्णत्ता. तं जहा-
सुरूवे चेव. पडिरूवे चेव.

दो जक्खिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णभद्दे चेव. माणिभद्दे चेव.

दो रक्खसिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
भीमे चेव. महा भीमे चेव.

दो किन्नरिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
किन्नरे चेव. किंपुरिसे चेव.

दो किंपुरिसिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
सप्पुरिसे चेव. महा पुरिसे चेव.

दो महोरगिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
अइकाए चेव. महा काए चेव.

दो गंधव्विंदा पण्णत्ता. तं जहा-
गीयरइ चेव. गीयजसे चेव.

दो अणपन्निंदा पण्णत्ता. तं जहा-
संनिहिए चेव. सामण्णे चेव.

दो पणपण्णिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
धाए चेव. विहाए चेव.

दो इसिवाइंदा पण्णत्ता. तं जहा-
इसिच्चेव. इसिबालए चेव.

दो भूतवाइंदा पण्णत्ता. तं जहा-
इस्सरे चेव. महिस्सरे चेव.

दो कंदिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
सुवच्छे चेव. विसाले चेव.

दो महा कंदिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
हस्से चेव. हस्सरई चेव.

दो कुहंडिंदा पण्णत्ता. तं जहा-
सेए चेव. महा सेए चेव.

दो पतइंदा पण्णत्ता. तं जहा-

पतए चेव. पतयवई चेव.

जोइसियाणं देवाणं दो इंदा पण्णत्ता. तं जहा-

चंदे चेव. सूरे चेव.

सोहम्मीसाणेस णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता. तं जहा-

सक्के चेव. ईसाणे चेव.

एवं सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता. तं जहा-

सणंकुमारे चेव. माहिंदे चेव.

बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता. तं जहा-

बंभे चेव. लंतए चेव.

महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता. तं जहा-

महासुक्के चेव. सहस्सारे चेव.

आणय-पाणयारण-च्चुएसु णं कप्पेसु दो इंदा पण्णत्ता. तं जहा-

पाणए चेव. अच्चुए चेव.

महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा दुवण्णा पण्णत्ता.
तं जहा-

हालिद्दा चेव. सुक्किला चेव.

गेविज्जगाणं देवाणं दो रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. ३४

दुट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसो

९५ समयाइ वा. आवलियाइ वा-
जीवाइ या. अजीवाइ या पव्वुच्चइ.

आणाप्पाणुइ वा. थोवेइ वा.
जीवाइ या. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

खणाइ वा. लवाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

एवं मुहुत्ताइ वा. अहोरत्ताइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

पक्खाइ वा. मासाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

उउइ वा. अयणाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

संवच्छराइ वा. जुगाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

वासयाइ वा. वाससहस्साइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

वाससयसहस्साइ वा. वासकोडीइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ वा.

पुव्वंगाइ वा. पुव्वाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

तुडियंगाइ वा. तुड़ियाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

अड़डंगाइ वा. अड़डाइ वा.

जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

अववंगाइ वा. अववाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

हूहूअंगाइ वा. हूहूयाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

उप्पलंगाइ वा. उप्पलाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

पउमंगाइ वा. पउमाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

नलिणंगाइ वा. नलिणाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

अच्छणिकुरंगाइ वा. अच्छणिकुराइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

अउअंगाइ वा. अउआइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

नउअंगाइ वा. नउआइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

पउअंगाइ वा. पउआइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

चूलिअंगाइ वा. चूलिआइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

सीसपहेलियंगाइ वा. सीसपहेलियाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

पलिओवमाइ वा. सागरोवमाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

उस्सप्पिणीइ वा. ओसप्पिणीइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

गामाइ वा. नगराइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

निगमाइ वा. रायहाणीइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

खेड़ाइ वा. कव्वड़ाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

मडंवाइ वा. दोणमुहाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

पट्टणाइ वा. आगराइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

आसमाइ वा.- संवाहाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ या पव्वुच्चइ.

संनिवेसाइ वा. घोसाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

आरामाइ वा. उज्जाणाइ वा.

जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

वणाइ वा. वणसंडाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

वावीइ वा. पुक्खरिणीइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

सराइ वा. सरपंतीइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

अगड़ाइ वा. तलागाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

दहाइ वा. णईइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

पुढवीइ वा. उदहीइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

वातखंधाइ वा. उवासंतराइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

वलयाइ वा. विग्गहाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

दीवाइ वा. समुद्दाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

वेलाइ वा. वेइयाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

दाराइ वा. तोरणाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा. पव्वुच्चइ.

नेरइयाइ वा. नेरइयावासाइ वा. —जाव—
वेमाणियाइ वा, वेमाणियावासाइ वा.
जीवाइ वा अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

कप्पाइ वा. कप्पविमाणावासाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

वासाइ वा. वासधरपव्वयाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

कूड़ाइ वा. कूड़ागाराइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

विजयाइ वा. रायहाणीइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

छायाइ वा. आतपाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

दोसिणाइ वा. अंधगाराइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

ओमाणाइ वा. उम्माणाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

अइयाणागिहाइ वा. उज्जाणगिहाणि वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पव्वुच्चइ.

अविलवाइ वा. सणिप्पवायाइ वा.
जीवाइ वा. अजीवाइ वा पवुच्चइ.
दो रासी पण्णत्ता. तं जहा-
जीवरासी चेव. अजीवरासी चेव. ७८

९६ दुविहे बंधे पण्णत्ते. तं जहा-
पेज्जबंधे चेव. दोसबधे चेव.
जीवाणं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं बंधंति तं जहा-
रागेण चेव. दोसेण चेव.
जीवा णं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं उदीरेंति. तं जहा-
अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए. उवक्कमियाए चेव वेयणाए.
एवं णं दोहिं पावकम्मं वेदेंति. तं जहा-
अब्भोवआमिगए चेव वेयणाए. उकक्कमियाए चेव वेयाणाए.
एवं णं दोहिं ठाणेहिं पावकम्मं निज्जरेंति तं जहा-
अब्भोवगमियाए चेव वेयणाए. उवक्कमियाए चेव वेयणाए. ५

९७ दोहिं ठाणेहिं आया सरीरं फुसित्ता णं णिज्जाति. तं जहा-
देसेण वि आया सरीरं फुसित्ता णं णिज्जाति.
सव्वेण वि आया सरीरं फुसित्ता णं णिज्जाति.
एवं फुरित्ता णं०. एवं फुड़ित्ता णं०. एवं संवट्टित्ता णं०
एवं निव्वट्टइत्ता णं०. ५

९८ दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए.
तं जहा- खएण चेव, उवसमेण चेव.
एवं —जाव— मणपज्जवणाणं उप्पाड़ेज्जा. तं जहा-

खएण चेव. उवसमेण चेव.

९९ दुविहे अद्धोवमिए. तं जहा-
पलिओवमे चेव. सागरोवमे चेव.

प्र० से किं तं पलिओवमे ?

उ० पलिओवमे —

गाहाओ—

जं जोयणविच्छिन्नं. पल्लं एगाहियप्परूढाणं ।
होज्ज निरंतरणिचियं. भरियं वालग्गकोडीणं ॥१॥
वाससए वाससए. एकेक्के अवहडंमि जो कालो ।
सो कालो बोद्धव्वो. उवमा एगस्स पल्लस्स ॥२॥
एएसिं पल्लाणं. कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।
तं सागरोवमस्स उ. एगस्स भवे परिमाणं ॥३॥

१०० दुविहे कोहे पण्णत्ते. तं जहा-
आयपइट्ठे चेव. परपइट्ठे चेव.
एवं नेरइयाणं —जाव वेमाणियाण
एवं —जाव— मिच्छादंसणसल्ले. २

१०१ दुविहा संसारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-
तसा चेव. थावरा चेव.

दुव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-
सिद्धा चेव. असिद्धा चेव.

दुव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

एवं एसा गाहा फासेयव्वा —जाव —ससरीरी चेव.
असरीरी चेव. १३
गाहा—सिद्ध-सइंदिय-काए. जोए वेए कसाय-लेसा य ।
णाणुवओगाहारे. भासग-चरीमे य ससरीरी ॥१॥

१०२ दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं-
नो निच्चं वण्णियाइं, नो निच्चं कित्तियाइं, नो निच्चं वुइयाइं,
नो निच्चं पसत्थाइं, नो निच्चं अब्भणुण्णाइं भवंति. तं जहा-
वलायमरणे चेव, वसट्टमरणे चेव.-

एवं नियाणमरणे चेव, तब्भवमरणे चेव.
एवं गिरिपड़णे चेव, तरुपड़णे चेव.
एवं जलप्पवेसे चेव, जलणप्पवेसे चेव.
एवं विसभक्खणे चेव, सत्थोवइणे चेव.

दो मरणाइं —जाव— नो निच्चं अब्भणुण्णायइं भवंति.
कारणेण पुण अप्पड़िकुट्ठाइं. तं जहा-
वेहाणसे चेव, गिद्धपिट्ठे चेव.-

दो मरणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं-
निच्चं वण्णियाइं, निच्चं कित्तियाइं, निच्चं पसत्थाइं,
निच्चं अब्भणुण्णयाइं भवंति तं जहा-
पाओवगमणे चेव, भत्तपच्चक्खाणे चेव.

पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते तं जहा-
नीहारिमे चेव, अनीहारिमे चेव. णियमं अपड़िकम्मे.

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
नीहारिमे चेव, अनीहारिमे चेव. णियमं सपडिकम्मे. ९

१०३ प्र० के अयं लोगे ?
उ० जीवच्चेव, अजीवच्चेव.

प्र० के अणंता लोए ?
उ० जीवच्चेव, अजीवच्चेव.

प्र० के सासया लोगे ?
उ० जीवच्चेव, अजीवच्चेव. ३

१०४ दुविहा बोही पण्णत्ता. तं जहा-
णाणबोही चेव, दंसणबोही चेव.
दुविहा बुद्धा पण्णत्ता. तं जहा-
णाणबुद्धा चेव, दंसणबुद्धा चेव.
एवं मोहे, मूढा. ४

१०५ नाणावरणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
देसणाणावरणिज्जे चेव, सव्वणाणावरणिज्जे चेव.
दरिसणावणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
देस-दंसणावरणिज्जे चेव, सव्व-दंसणावरणिज्जे चेव.
वेयणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
सायावेयणिज्जे चेव, असायावेयणिज्जे चेव.
मोहणिज्जे कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-

दंसणमोहणिज्जे चेव, चरित्तमोहणिज्जे चेव.

आउए कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा.
अद्धाउए चेव, भवाउए चेव.

नामे कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
सुभणामे चेव, असुभणामे चेव.

गोत्ते कम्मे दुविहे पण्णत्ते. तं जहा-
उच्चागोए चेव, णीयागोए चेव.

अंतराइए कम्मे दुविहे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-
पडुप्पण्णविणासिए चेव, पिहियागामिपहं चेव. ८

१०६ दुविहा मुच्छा पण्णत्ता. तं जहा-
पेज्जवत्तिया चेव, दोसवत्तिया चेव.

पेज्जवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
माए चेव, लोभे चेव.

दोसवत्तिया मुच्छा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
कोहे चेव, माणे चेव. ३

१०७ दुविहा आराहणा पण्णत्ता. तं जहा-
धम्मियाराहणा चेव, केवलि-आराहणा चेव.

धम्मियाराहणा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
सुयधम्माराहणा चेव, चरित्तधम्माराहणा चेव.

केवलि-आराहणा दुविहा पण्णत्ता. तं जहा-
अंतकिरिया चेव, कप्पविमाणोववत्तिया चेव. ३

१०८ दो तित्थगरा नीलुप्पलसमा वण्णेणं पण्णत्ता. तं जहा-
मुणिसुव्वए चेव. अरिट्ठनेमी चेव.

दो तित्थगरा पियंगुसमा वण्णेणं पण्णत्ता. तं जहा-
मल्ली चेव, पासे चेव.

दो तित्थगरा पउमगोरा वण्णेणं पण्णत्ता. तं जहा-
पउमप्पहे चेव, वासुपुज्जे चेव.

दो तित्थगरा चंदगोरा वण्णेणं पण्णत्ता. तं जहा-
चंदप्पभे चेव, पुप्फदंते चेव. ४

१०९ सच्चप्पवायपुव्वस्स णं दुवे वत्थू पण्णत्ता.

११० पुव्वाभद्दवया-णक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते.
उत्तराभद्दवया-णक्खत्ते दुतारे पण्णत्ते.
एवं पुव्व-फग्गुणी. उतरा-फग्गुणी. ४

१११ अंतो णं मणुस्स-खेत्तस्स दो समुद्दा पण्णत्ता. तं जहा-
लवणे चेव, कालोदे चेव.

११२ दो चक्कवट्टी अपरिचत्त-काम-भोगा कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरईयत्ताए उववण्णा.
तं जहा-
सुभूमे चेव, बंभदत्ते चेव

११३ असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

माहिंदे कप्पे देवाणं जहन्नेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता. ५

११४ दोसु कप्पेसु कप्पत्थियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
सोहम्मे चेव. ईसाणे चेव.

११५ दोसु कप्पेसु देवा तेउलेस्सा पण्णत्ता. तं जहा-
सोहम्मे चेव. ईसाणे चेव.

११६ दोसु कप्पेसु देवा कायपरियारगा पण्णत्ता. तं जहा-
सोहम्मे चेव. ईसाणे चेव.

दोसु कप्पेसु देवा फासपरियारगा पण्णत्ता. तं जहा-
सणंकुमारे चेव. माहिंदे चेव.

दोसु कप्पेसु देवा रूवपरियारगा पण्णत्ता. तं जहा-
बंभलोगे चेव. लंतगे चेव.

दोसु कप्पेसु देवा सद्दपरियारगा पण्णत्ता. तं जहा-
महासुक्के चेव. सहस्सारे चेव.

दो इंदा मणपरियारगा पण्णत्ता. तं जहा-
पाणए चेव. अच्चुए चेव. ५

११७ जीवा णं दुट्ठाण-णिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा,

चिणंति वा, चिणिस्संति वा. तं जहा-
तसकायणिवत्तिए चेव, थावरकायणिवत्तिए चेव.
एवं उवचिणिसु वा, उवचिणंति वा, उवचिणिस्संति वा.
एवं बंधिसु वा, बंधंति वा, बंधिस्संति वा.
एवं उदीरिसु वा, उदीरेंति वा, उदीरिस्संति वा.
एवं वेदेंसु वा, वेदेंति वा, वेदिस्संति वा.
एवं णिज्जरिसु वा. णिज्जरिंति वा. णिज्जरिस्संति वा. ६

११८ दुप्पएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता.
दुपएसावगाढा पुग्गला अणंता पण्णत्ता.
दुसमयठिइया पुग्गला अणंता पण्णत्ता.
दोगुण-कालगा पुग्गला अणंता पण्णत्ता.
एवं —जाव— दुगुण-लुक्खा पुग्गला अणंता पण्णत्ता. २३

तिट्ठाणं

तिट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

११९ तओ इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
नामिंदे, ठवणिंदे, दव्विंदे.

तओ इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
नाणिंदे, दंसणिंदे, चरित्तिंदे.

तओ इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
देविंदे, असुरिंदे, मणुस्सिंदे. ३

१२० तिविहा विगुव्वणा पण्णत्ता. तं जहा-
बाहिरए पोग्गलए परियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
बाहिरए पोग्गलए अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
बाहिरए पोग्गलए परियाइत्ता वि, अपरियाइत्ता वि एगा विगुव्वणा.

तिविहा विगुव्वणा पण्णत्ता. तं जहा-
अब्भंतरए पोग्गलए परियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
अब्भंतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा,
अब्भंतरए पोग्गलए परियाइत्ता वि, अपरियाइत्ता वि एगा विगुव्वणा.

तिविहा विगुव्वणा पण्णत्ता. तं जहा-

बाहिरब्भंतरए पोग्गलए परियाइत्ता एगा विगुव्वणा,

बाहिरब्भंतरए पोग्गलए अपरियाइत्ता एगा विगुव्वणा,

बाहिरब्भंतरए पोग्गलए परियाइत्ता वि, अपरियाइत्ता वि एगा विगुव्वणा. ३

१२१ तिविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-

कतिसंचिया, अकतिसंचिया, अवतव्वगसंचिया.

एवंमेगेंदियज्जा —जाव— वेमाणिया.

१२२ तिविहा परियारणा पण्णत्ता. तं जहा-

एगे देवे. अन्ने देवे. अन्नेसिं देवाणं देविओ य अभिजुंजिय २ परियारेइ,

अप्पणिज्जिआओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ,

अप्पणामेव अप्पणा विउव्विय २ परियारेइ.

तिविहा परियारणा पण्णत्ता. तं जहा-

एगे देवे. नो अन्ने देवा. नो अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ,

अप्पणिज्जियाओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ,

अप्पाणमेव अप्पणा विउव्विय २ परियारेइ.

तिविहा परियारणा पण्णत्ता. तं जहा-

एगे देवे. नो अन्ने देवा. नो अन्नेसिं देवाणं देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ,

नो अप्पणिज्जिआओ देवीओ अभिजुंजिय २ परियारेइ,

अप्पाणमेव अप्पाणं विउव्विय २ परियारेइ. ३

१२३ तिविहे मेहुणे पण्णत्ते. तं जहा-

दिव्वे, माणुस्सए, तिरिक्खजोणिए.

तओ मेहुणं गच्छंति. तं जहा-

देवा, मणुस्सा, तिरिक्खिजोणिया.

तओ मेहुणं सेवंति. तं जहा-

इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा. ३

१२४ तिविहे जोगे पण्णत्ते. तं जहा-

मणजोगे, वइजोगे, कायजोगे.

एवं नेरइयाणं विगलिंदियवज्जाणं —जाव— वेमाणियाणं.

तिविहे पओगे पण्णत्ते. तं जहा-

मणपओगे, वइप्पओगे, कायपओगे.

जहा जोगो विगलिंदियवज्जाणं तहा पओगो वि.

तिविहे करणे पण्णत्ते. तं जहा-

मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे.

एवं विगलिंदियवज्जं —जाव— वेमाणियाणं.

तिविहे करणे पण्णत्ते. तं जहा-

आरंभकरणे, संरंभकरणे, समारंभकरणे.

निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं. ४

१२५ तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-

पाणे अइवाइत्ता भवइ,

मुसं वइत्ता भवइ,
तहारूवं समणं वा, माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पड़िलाभित्ता भवइ.
इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा अप्पाउअत्ताए कम्मं पगरेंति.

तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-
नो पाणे अइवाइत्ता भवइ.
नो मुसं वइत्ता भवइ,
तहारूवं समणं वा, माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पड़िलाभित्ता भवइ.
इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति.

तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभ-दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-
पाणे अइवाइत्ता भवइ,
मुसं वइत्ता भवइ,
तहारूवं समणं वा, माहणं वा हीलेत्ता, निंदित्ता, खिसित्ता, गरहित्ता, अवमाणित्ता अन्नयरेणं अमणुण्णेणं अपीइकारएणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पड़िलाभित्ता भवइ.
इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा असुभ-दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति.

तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभ-दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-
नो पाणे अइवाइत्ता भवइ,

नो मुसं वइत्ता भवइ,

तहारूवं समणं वा, माहणं वा वंदित्ता, नमंसित्ता, सक्कारित्ता, सम्माणित्ता, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासेत्ता मणुण्णेणं पीइकारएणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभित्ता भवइ.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं जीवा सुभ-दीहाउअत्ताए कम्मं पगरेंति. ४

१२६ तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती.

संजय-मणुस्साणं तओ गुत्तीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

मणगुत्ती, वइगुत्ती, कायगुत्ती.

तओ अगुत्तीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

मण-अगुत्ती, वइ-अगुत्ती, काय-अगुत्ती.

एवं नेरइयाणं —जाव— थणियकुमाराणं, पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं, असंजय-मणुस्साणं, वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं.

तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा-

मणं-दंडे, वय-दंडे, काय-दंडे.

नेरइयाणं तओ दंडा पण्णत्ता. तं जहा-

मण-दंडे, वय-दंडे, काय-दंडे.

विगलिंदियवज्जं —जाव— वेमाणियाणं. ६

१२७ तिविहा गरहा पण्णत्ता. तं जहा-

मणसा वेगे गरहइ, वयसा वेगे गरहइ, कायसा वेगे गरहइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए.

अहवा–गरहा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

दीहंपेगे अद्धं गरहइ, रहस्संपेगे अद्धं गरहइ, कायंपेगे पड़िसाहरइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए.

तिविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा-

मणसा वेगे पच्चक्खाइ, वयसा वेगे पच्चक्खाइ, कायसा वेगे पच्चक्खाइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए. ४

अहवा–पक्चक्खाणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-

दीहंपेगे अद्धं पच्चक्खाइ, रहस्संपेगे अद्धं पच्चक्खाइ, कायंपेगे पड़िसाहरइ पावाणं कम्माणं अकरणयाए.

१२८ तओ रुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-

पत्तोवए, फलोवए, पुप्फोवए.

एवामेव तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

पत्तो वा रुक्खसमाणा, पुप्फो वा रुक्खसमाणा, फलो वा रुक्खसमाणा.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

नाम-पुरिसे, ठवण-पुरिसे, दव्व-पुरिसे.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

नाण-पुरिसे, दंसण-पुरिसे, चरित्त-पुरिसे.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

वेद-पुरिसे, चिण्ह-पुरिसे, अभिलाव-पुरिसे.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उत्तम-पुरिसा, मज्झिम-पुरिसा, जहण्ण-पुरिसा.

उत्तम-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा-

धम्म-पुरिसा, भोग-पुरिसा, कम्म-पुरिसा.

धम्म-पुरिसा अरिहंता, भोग-पुरिसा चक्कवट्टी, कम्म-पुरिसा वासुदेवा.

मज्झिम-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

उग्गा, भोगा, रायन्ना.

जहण्ण-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

दासा, भयगा, भाइल्लगा. ९

१२९ तिविहा मच्छा पण्णत्ता. तं जहा-

अंडया, पोयया, संमुच्छिमा.

अंडया मच्छा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा.

पोयया मच्छा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा.

तिविहा पक्खी पण्णत्ता. तं जहा-

अंडया, पोयया, संमुच्छिमा.

अंडया पक्खी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा.

पोयया पक्खी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा.
एवमेएणं अभिलावेणं उरपरिसप्पा वि भाणियव्वा.
एवमेएणं अभिलावेणं भुयपरिसप्पा वि भाणियव्वा. ८

१३० एवं चेव तिविहा इत्थीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
तिरिक्ख-जोणित्थीओ देवित्थीओ.

तिरिक्खजोणिणीओ इत्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
जलचरीओ, थलचरीओ, खहचरीओ.

मणुस्सित्थीओ तिविहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
कम्मभूमिआओ, अकम्मभूमिआओ, अंतरदीविआओ.

तिविहा पुरिसा पण्णत्ता. तं जहा-
तिरिक्खजोणी-पुरिसा, मणुस्स-पुरिसा, देव-पुरिसा

तिरिक्खजोणी-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जलचरा, थलचरा, खेचरा.

मणुस्स-पुरिसा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
कम्मभूगिमा, अकम्मभूगिमा, अंतरदीवगा.

तिविहा नपुंसगा पण्णत्ता. तं जहा-
नेरइय-णपुंसगा, तिरिक्खजोणिय-णपुंसगा, मणुस्स-णपुंसगा.

तिरिक्खजोणिय-णपुंसगा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
जलचरा, थलचरा, खहचरा.

मणुस्स-णपुंसगा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा, अंतरदीवगा. ९

१३१ तिविहा तिरिक्खजोणिया पण्णत्ता. तं जहा-
इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा.

१३२ नेरइयाणं तओ लेसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा.

असुरकुमाराणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा एवं —जाव— थणियकुमाराणं.
एवं पुढविकाइयाणं, आउ-वणस्सइकाइयाण वि.
तेउकाइयाणं, वाउकाइयाणं, बेइंदियाणं, तेदियाणं, चउरिंदियाण वि तओ लेस्सा जहा नेरइयाणं.

पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं तओ लेसाओ संकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा.

पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं तओ लेसाओ असंकिलिट्ठाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा.
एवं मणुस्साण वि.
वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं.

वेमाणियाणं तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा.

१३३ तिहिं ठाणेहिं ताराख्वे चलिज्जा. तं जहा-
विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, ठाणाओ ठाणं संकम-
माणे ताराख्वे चलेज्जा.

तिहिं ठाणेहिं देवे विज्जुयारं करेज्जा. तं जहा-
विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा, तहारूवस्स समणस्स
वा, माहणस्स वा इड्ढिं, जुइं, जसं, बलं, वीरियं, पुरि-
सक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे देवे विज्जुयारं करेज्जा.

तिहिं ठाणेहिं देवे थणिय-सद्दं करेज्जा. तं जहा-
विकुव्वमाणे वा, परियारेमाणे वा.
तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा —जाव— देवे
थणिय सद्दं करेज्जा. ३

१३४ तिहिं ठाणेहिं लोगंधयारे सिया. तं जहा-
अरिहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं.
अरिहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे.
पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे.

तिहिं ठाणेहिं लोगुज्जोए सिया. तं जहा-
अरहंतेहिं जायमाणेहिं.
अरहंतेसु पव्वयमाणेसु.
अरहंताणं णाणुप्पाय-महिमासु.

तिहिं ठाणेहिं देवंधयारे सिया. तं जहा-
अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं,
अरहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे,
पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे.

तिहिं ठाणेहिं देवुज्जोए सिया. तं जहा-
अरिहंतेहिं जायमाणेहिं,
अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं,
अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु.

तिहिं ठाणेहिं देवसंनिवाए सिया. तं जहा-
अरिहंतेहिं जायमाणेहिं,
अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं,
अरिहंताणं णाणुप्पायमहिमासु.
एवं देवुक्कलिया. देवकहकहे.

तिहिं ठाणेहिं देविंदा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति. तं जहा-
अरिहंतेहिं जायमाणेहिं,
अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं,
अरहंताणं णाणुप्पायमहिमासु.
एवं सामाणिया. तायत्तीसगा. लोगपाला देवा. अग्गमहिसीओ देवीओ. परिसोववण्णगा देवा. अणियाहिवई देवा. आयरक्खा देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छंति.

तिहिं ठाणेहिं देवा अब्भुट्ठिज्जा. तं जहा-
अरिहंतेहिं जायमाणेहिं — जाव — तं चेव.

एवं आसणाइं चलेज्जा. सीहणायं करेज्जा. चेलुक्खेवं करेज्जा.

तिहिं ठाणेहिं देवाणं चेइय-रुक्खा चलेज्जा. तं जहा-
अरिहंतेहिं जायमाणेहिं — जाव— तं चेव.

तिहिं ठाणेहिं लोगंतिया देवा माणुसं लोगं हव्वमागच्छिज्जा. तं जहा-
अरिहंतेहिं जायमाणेहिं,
अरिहंतेहिं पव्वयमाणेहिं,
अरिहंताणं णाणुप्पायमहिमासु. २१

१३५ तिण्हं दुप्पडियारं समणाउसो ! तं जहा-
अम्मापिउणो, भट्टिस्स, धम्मायरियस्स.
संपाओ वि य णं केइ पुरिसे अम्मा-पियरं सयपाग-सहस्स-पागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेत्ता, सुरभिणा गंधट्टएणं उव्वट्टित्ता, तिहिं उदगेहिं मज्जावित्ता, सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता, मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भोयावेत्ता, जावज्जीवं पिट्ठिवडेंसियाए परिवहेज्जा, तेणावि तस्स अम्मा-पिउस्स दुप्पड़ियारं भवइ.

अहे णं से तं अम्मापियरं केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता पण्णवित्ता परूवित्ता ठावित्ता भवइ, तेणामेव तस्स अम्मा-पिउस्स सुप्पड़ियारं भवइ समणाउसो !
केइ महच्चे दरिद्दं समुक्कसेज्जा, तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमिइसमण्णागए यावि

विहरेज्जा, तए णं से महच्चे अण्णया कयाइ दरिद्दीभूए समाणे तस्स दरिद्दस्स अंतिए हव्वमागच्छेज्जा, तए णं से दरिद्दे तस्स भट्टिस्स सव्वस्समवि दलयमाणे तेणावि तस्स दुप्पड़ियारं भवइ.

अहे णं से तं भट्टिं केवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता पण्णवइत्ता परूवइत्ता ठावइत्ता भवइ, तेणामेव तस्स भट्टिस्स सुप्पड़ियारं भवइ.

केइ तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे, तए णं से देवे तं धम्मायरियं दुब्भिक्खाओ वा देसाओ सुभिक्खं देसं साहरेज्जा, कंताराओ वा णिक्कंतारं करेज्जा, दीहकालिएणं वा रोगायंकेण अभिभूयं समाणं विमोएज्जा, तेणावि तस्स धम्मायरियस्स दुप्पड़ियारं भवइ.

अहे णं से तं धम्मायरियं केवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भट्ठं समाणं भुज्जो विकेवलिपण्णत्ते धम्मे आघवइत्ता—जाव—ठावइत्ता भवइ, तेणामेव तस्स धम्मायरियस्स सुप्पड़ियारं भवइ.

१३६ तिहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवएज्जा. तं जहा-

अणिदाणयाए, दिट्ठिसंपण्णयाए, जोगवाहियाए.

१३७ तिविहा ओसप्पिणी पण्णत्ता. तं जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना.

एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ —जाव— दुसम दूसमा

तिविहा उस्सप्पिणी पण्णत्ता. तं जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना.

एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ —जाव— सुसमसुसमा.

१३८ तिहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा. तं जहा-

आहारिज्जमाणे वा पोग्गले चलेज्जा,

विकुव्वमाणे वा पोग्गले चलेज्जा,

ठाणाओ वा ठाणं संकामिज्जमाणे पोग्गले चलेज्जा.

तिविहा उवही पण्णत्ता. तं जहा-

कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिर-भंड-मत्तोवही.

एवं असुरकुमाराणं भाणियव्वं.

एवं एगिंदियं-नेरइयवज्जं —जाव— वेमाणियाणं.

अहवा तिविहा उवही पण्णत्ता. तं जहा-

सच्चित्ता, अचित्ता, मीसया.

एवं नेरइयाणं निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं.

तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते तं जहा-

कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे, बाहिरभंडमत्तपरिग्गहे.

एवं असुरकुमाराणं.

एवं एगिंदिय-नेरइयवज्जं —जाव— वेमाणियाणं.

अहवा तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते. तं जहा-

सचित्ते, अचित्ते, मीसए.
एवं नेरइयाणं निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं. ५

३९ तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते. तं जहा-
मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे.
एवं पंचिंदियाणं —जाव— वेमाणियाणं.

तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते. तं जहा-
मणसुप्पणिहाणे, वयसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे.
संजयमणुस्साणं तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते. तं जहा-
मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे.

तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते. तं जहा-
मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्पणिहाणे.
एवं पंचिंदियाणं —जाव— वेमाणियाणं. ४

४० तिविहा जोणी पण्णत्ता. तं जहा-
सीया, उसिणा, सीओसिणा.
एवं एगिंदियाणं —जाव— विगलिंदियाणं तेउकाइय-वज्जाणं. संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिम-मणुस्साण य.

तिविहा जोणी पण्णत्ता. तं जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया.
एवं एगिंदियाणं, विगलिंदियाणं, संमुच्छिमपंचिंदियति-रिक्खजोणियाणं. संमुच्छिममणुस्साण य.

तिविहा जोणी पण्णत्ता. तं जहा-

संवुडा, वियडा, संवुडवियडा.

तिविहा जोणी पण्णत्ता. तं जहा-

कुम्मुन्नया, संखावत्ता, वंसीपत्तिया.

कुम्मुन्नया णं जोणी उत्तमपुरिसमाऊणं.

कुम्मुण्णयाए णं जोणीए तिविहा उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमंति. तं जहा-

अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा.

संखावत्ता जोणी इत्थीरयणस्स, संखावत्ताए णं जोणीए बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति नो चेव णं निप्फज्जंति,

वंसीपत्ता णं जोणी पिहुज्जणस्स, वंसीपत्ताए णं जोणीए बहवे पिहुज्जणे गब्भं वक्कमंति. ५

१४१ तिविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता. तं जहा-

संखेज्जजीविया, असंखेज्जजीविया, अणंतजीविया.

१४२ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तओ तित्था पण्णत्ता. तं जहा-

मागहे, वरदामे, पभासे.

एवं एरवए वि.

जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहवासे एगमेगे चक्कवट्टिविजये तओ तित्था पण्णत्ता. तं जहा-

मागहे, वरदामे, पभासे.

एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धेवि, पच्चत्थिमद्धे वि.

पुक्खरवरदीवद्धपुरच्छिमद्धेवि, पच्चत्थिमद्धे वि. ७

१४३ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमाए समाए तिण्णि सागरोवमकोड़ाकोड़ीओ कालो हुत्था.

एवं ओसप्पिणीए, आगमिस्साए उस्सप्पिणीए भविस्सइ.

एवं धायइसंडे पुरच्छिमद्धे, पच्चत्थिमद्धे वि.

एवं पुक्खरवरदीवद्धपुरच्छिमद्धे पच्चत्थिमद्धेवि कालो भाणियव्वो.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीताए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया तिण्णि गाउयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं तिण्णि पलिओवमाइं परमाउं पालइत्था.

एवं इमीसे ओसप्पिणीए.

आगमिस्साए उस्सप्पिणीए.

एवं —जाव— पुक्खरदीवद्ध-पच्चत्थिमद्धे.

जंबुद्दीवे दीवे देवकुरु-उत्तरकुरासु मणुया तिण्णि गाउआइं उड्ढं उच्चत्तेणं तिण्णि पलिओवमाइं परमाउं पालयंति.

एवं —जाव— पुक्खरवरदीवद्ध-पच्चत्थिमद्धे.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगासु ओसप्पिणि उस्सप्पिणीए तओ वंसाओ उप्पज्जिंसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिसंति वा. तं जहा-

अरहंतवंसे, चक्कवट्टिवंसे, दसारवंसे.

एवं —जाव— पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु एगमेगाए ओसप्पिणी-

उस्सप्पिणीए तओ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा. तं जहा-

अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा.

एवं —जाव— पुक्खरवरद्धपच्चत्थिमद्धे.

तओ अहाउयं पालयंति. तं जहा-

अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा.

तओ मज्झिमाउयं पालयंति. तं जहा-

अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेव-वासुदेवा. ४७

१४४ बायरतेउकाइयाणं उक्कोसेणं तिण्णी राइंदियाइं ठिई पण्णत्ता. बायरवाउकाइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता. २

१४५ प्र० अह भंते ! सालीणं बीहीणं गोधूमाणं जवाणं जवजवाणं एएसिणं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं लित्ताणं लंछियाण मुद्दियाणं पिहियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठति ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धंसइ, तेण परं जोणी विद्धंसइ, तेण परं बीए अबीए भवइ, तेण परं जोणीवोच्छेदो पण्णत्तो.

१४६ दोच्चाए णं सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए जहन्नेणं णेरइयाणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

१४७ पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता.

तिसु णं पुढवीसु णेरइयाणं उसिणवेयणा पण्णत्ता. तं जहा-
पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए.

तिसुणं पुढवीसु णेरइया उसिणवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति-
पढमाए, दोच्चाए, तच्चाए. ३

१४८ तओ लोगे समा सपक्खि सपडिदिसिं पण्णत्ते. तं जहा-
अप्पइट्ठाणे नरए, जंबुद्दीवे दीवे, सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे.

तओ लोगे समा सपक्खि सपडिदिसिं पण्णत्ते. तं जहा-
सीमंतए णं नरए, समयक्खेत्ते, ईसीपब्भारा पुढवी. २

१४९ तओ समुद्दा पगईए उदगरसेणं पण्णत्ता. तं जहा-
कालोदे, पुक्खरोदे, सयंभुरमणे.

तओ समुद्दा बहुमच्छकच्छभाइण्णा पण्णत्ता. तं जहा-
लवणे, कालोदे, सयंभुरमणे. २

१५० तओ लोगे निस्सीला निव्वया निग्गुण निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववज्जंति. तं जहा-
रायाणो, मंडलीया, जे य महारंभा कोडुंबी.

तओ लोए सुसीला सुव्वया सगुणा समेरा सपच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववत्तारो भवंति. तं जहा-

रायाणो परिच्चत्तकामभोगा, सेणावइ, पसत्थारो. २

१५१ बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु विमाणा तिवण्णा पण्णत्ता. तं जहा-

किण्हा, नीला, लोहिया.

आणय-पाणयारणच्चुएसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्ज-सरीरा उक्कोसेणं तिण्णि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. २

१५२ तओ पण्णत्तीओ कालेणं अहिज्जंति. तं जहा-

चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती.

तिट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

१५३ तिविहे लोगे पण्णत्ते. तं जहा-

नामलोगे, ठवणलोगे, दव्वलोगे.

तिविहे भावलोगे पण्णत्ते. तं जहा-

नाणलोगे, दंसणलोगे, चरित्तलोगे.

तिविहे लोगे पण्णत्ते. तं जहा-

उड्ढलोगे, अहोलोगे, तिरियलोगे. ३

१५४ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

समिया, चंडा, जाया.

अब्भंतरिया समिया, मज्झिमया चंडा, बाहिरया जाया.

चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सामाणियाणं देवाणं तओ परिसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

जहेव चमरस्स.

एवं तायत्तीसगाणवि.

चमरस्स लोगपालाणं तओ परिसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तुंबा, तुडिया, पव्वा.

एवं अग्गमहिसीण वि.

बलिस्सवि एवं चेव —जाव— अग्गमहिसीणं.

धरणस्स य सामाणिय-तायत्तीसगाणं-

समिया, चंडा, जाया.

लोगपालाणं अग्गमहिसीणं-

ईसा, तुड़िया, दढरहा.

जहा धरणस्स तहा सेसाणं भवणवासीणं.

कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

ईसा, तुड़िया, दढरहा.

एवं सामाणिय-अग्गमहिसीणं.

एवं —जाव— गीयरइ-गीयजसाणं.

चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तुंबा, तुड़िया, पव्वा.

एवं सामाणिय-अग्गमहिसीणं.

एवं सूरस्स वि.

सक्कस णं देविंदस्स देवरण्णो तओ परिसाओ पण्णत्ताओ.

तं जहा-

समिया, चंडा, जाया.

एवं —जहा— चमरस्स —जाव— अग्गमहिसीणं.

एवं —जाव— अच्चुअस्स लोगपालाणं. १३२

१५५ तओ यामा पण्णत्ता. तं जहा-

पढमे यामे, मज्झिमे यामे, पच्छिमे यामे.

तिहिं यामेहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए-

पढमे यामे, मज्झिमे यामे, पच्छिमे यामे.

एवं —जाव— केवलनाणं उप्पाड़ेज्जा-

पढमे यामे, मज्झिमे यामे, पच्छिमे यामे.

तओ वया पण्णत्ता. तं जहा-

पढमे वए, मज्झिमे वए, पच्छिमे वए.

तिहिं वएहिं आया केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए.

तं जहा-

पढमे वए, मज्झिमे वए, पच्छिमे वए.

एसो चेव गमो णेयव्वो —जाव— केवलनाणं ति. ११

१५६ तिविहा बोही पण्णत्ता. तं जहा-

नाणबोही, दंसणबोही, चरित्तबोही.

तिविहा बुद्धा पण्णत्ता. तं जहा-
नाणबुद्धा, दंसणबुद्धा, चरित्तबुद्धा.
एवं मोहे, मूढ़ा. ४

१५७ तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
इहलोगपड़िबद्धा, परलोगपड़िबद्धा, दुहओपड़िबद्धा.

तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
पुरओ पड़िबद्धा, मग्गओ पड़िबद्धा, दुहओ पड़िबद्धा.

तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
तुयावइत्ता, पुयावइत्ता, बुआवइत्ता.

तिविहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
उवायपव्वज्जा, अक्खायपव्वज्जा, संगारपव्वज्जा. ४

१५८ तओ णियंठा नो संण्णोवउत्ता पण्णत्ता. तं जहा-
पुलाए, नियंठे, सियाए.

तओ नियंठा सण्ण नो सण्णोवउत्ता पण्णत्ता. तं जहा-
बउसे, पडिसेवणाकुसीले, कसायकुसीले. २

१५९ तओ सेहभूमीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना.
उक्कोसा छम्मासा, मज्झिमा चउमासा, जहन्ना सत्तरा-इंदिया.

तओ थेरभूमीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
जाइथेरे, सुयथेरे, परियायथेरे.
सट्ठिवासजाए समणे निग्गंथे जाईथेरे,
ठाणंग-समवायधरे णं समणे निग्गंथे सुयथेरे,
वीसवासपरियाए णं समणे निग्गंथे परियायथेरे. २

१६० तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
सुमणे, दुम्मणे, नो सुमणे नो दुम्मणे.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
गंता नामेगे सुमणे भवइ,
गंता नामेगे दुम्मणे भवइ,
गंता नामेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जामीतेगे सुमणे भवइ,
जामीतेगे दुम्मणे भवइ,
जामीतेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.
एवं जाइस्सामीतेगे सुमणे भवइ.
जाइस्सामीतेगे दुम्मणे भवइ.
जाइस्सामीतेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अगंता नामेगे सुमणे भवइ.
अगंता नामेगे दुम्मणे भवइ.
अगंता नामेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

न जामि एगे सुमणे भवइ.

न जामि एगे दुम्मणे भवइ.

न जामि एगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

न जाइस्सामि एगे सुमणे भवइ.

न जाइस्सामि एगे दुम्मणे भवइ.

न जाइस्सामि एगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.

एवं आगंता नामेगे सुमणे भवइ.

आगंता नामेगे दुम्मणे भवइ.

आगंता नामेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.

एतिमेगे सुमणे भवइ.

एतिमेगे दुम्मणे भवइ.

एतिमेगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.

एस्सामीति एगे सुमणे भवइ.

एस्सामीति एगे दुम्मणे भवइ.

एस्सामीति एगे नो सुमणे नो दुम्मणे भवइ.

गाहाओ—

गंता य अगंता य, आगंता खलु तहा अणागंता ।
चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता, णिसिइत्ता चेव नो चेव ॥१॥
हंता य अहंता य, छिंदित्ता खलु तहा अछिंदित्ता ।
बूइत्ता अबूइत्ता, भासित्ता चेव णो चेव ॥२॥

दच्चा य अदच्चा य, भुंजित्ता खलु तहा अभुंजित्ता ।
लंभित्ता अलंभित्ता, पिइत्ता चेव नो चेव ।।३।।
सुइत्ता असुइत्ता, जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता ।
जइत्ता अजइत्ता य, पराजिणित्ता य नो चेव ।।४।।
सद्दा रूवा गंधा रसा य, फासा तहेव ठाणा य ।
निस्सीलस्स गरहिया, पसत्था पुण सीलवंतस्स ।।५।।

एवमिक्केक्के तिन्नि उ तिन्नि उ आलावगा भाणियव्वा.
सद्दं सुणेत्ता णामेगे सुमणे भवइ-
एवं सुणेमीति.
सुणिस्सामीति.
एवं असुणेत्ता णामेगे सुमणे भवइ.
न सुणेमीति.
एवं न सुणिस्सामीति.
एवं रूवाइं, गंधाइं, रसाइं, फासाइं.
एक्केक्के छ छ आलावगा भाणियव्वा १२७ आलावगा भवंति.

१६१ तओ ठाणा णिस्सीलस्स निव्वयस्स निग्गुणस्स निमेरस्स निप्पच्चक्खाणपोसहोववासस्स गरिहिया भवंति. तं जहा-
अस्सि लोगे गरहिए भवइ,
उववाए गरहिए भवइ,
आयाइ गरहिया भवइ.

तओ ठाणा सुसीलस्स सुव्वयस्स सगुणस्स समेरस्स सपच्च-क्खाणपोसहोववासगस्स पसत्था भवंति. तं जहा-

अस्सिं लोगे पसत्थे भवइ,

उववाए पसत्थे भवइ,

आजाती पसत्था भवइ. २

६२ तिविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-

इत्थी, पुरिसा, नपुंसगा.

तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

समदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी य.

अहवा तिविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

पज्जत्तगा, अपज्जत्तगा, नो पज्जत्तगा नो अपज्जत्तगा.

एवं समदिट्ठी-परित्ता-पज्जत्तग-सुहुम-सन्नि-भविया य. ७

६३ तिविहा लोगट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-

आगासपइट्ठिए वाए,

वायपइट्ठिए उदही,

उदहिपइट्ठिया पुढवी.

तओ दिसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

उड्ढा, अहा, तिरिया.

तिहिं दिसाहिं जीवाणं गइ पवत्तइ. तं जहा-

उड्ढाए, अहाए, तिरियाए.

एवं आगइ, वक्कंती, आहारे, वुड्ढी, णिवुड्ढी, गइपरियाए,

समुग्घाए, कालसंयोगे, दंसणाभिगमे, नाणाभिगमे, जीवाभिगमे.

तिहिं दिसाहिं जीवाणं अजीवाभिगमे पण्णत्ते. तं जहा-

उड्ढाए, अहाए, तिरियाए.

एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं.

एवं मणुस्साण वि. १७

१६४ तिविहा तसा पण्णत्ता. तं जहा-

तेउकाइया, वाउकाइया, उराला तसा पाणा.

तिविहा थावरा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया, आउकाइया, वणस्सइकाइया. २

१६५ तओ अच्छेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

समए, पएसे, परमाणू.

एवमभेज्जा, अडज्झा, अगिज्झा, अणड्ढा, अमज्झा, अपएसा,

तओ अविभाइमा पण्णत्ता. तं जहा-

समए, पएसे, परमाणू. ८

१६६ अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाइ समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी-

प्र० किं भया पाणा ? समणाउसो !

गोयमाइ समणा निग्गंथा समणं भगवं महावीरं उवसंकमंति उवसंकमित्ता वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-

नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं जाणामो वा, पासामो वा तं जइ णं देवाणुप्पिया एयमट्ठं नो गिलायंति परिकहित्तए तमिच्छामो णं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं जाणित्तए.

उ० अज्जोत्ति समणे भगवं महावीरे गोयमाइ समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी-दुक्खभया पाणा समणाउसो !

प्र० से णं भंते ! दुक्खे केण कडे ?

उ० जीवेणं कडे पमादेण.

प्र० से णं भंते ! दुक्खे कहं वेइज्जइ ?

उ० अप्पमाएणं.

१६७ अण्णउत्थिया णं भंते ! एवं आइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति-

प्र० कहण्णं समणाणं निग्गंथाणं किरिया कज्जइ ?

तत्थ जा सा कड़ा कज्जइ नो तं पुच्छंति,
तत्थ जा सा कड़ा नो कज्जइ नो तं पुच्छंति,
तत्थ जा सा अकड़ा नो कज्जइ नो तं पुच्छंति,
तत्थ जा सा अकड़ा कज्जइ तं पुच्छंति से एवं वत्तव्वं सिया ?

अकिच्चं दुक्खं, अफुसं दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं अकट्टु अकट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंतित्ति

वत्तव्वं, जे ते एवमाहंसु मिच्छा ते एवमाहंसु.

उ० अहं पुण एवमाइक्खामि, एवं भासामि, एवं पण्णवेमि, एवं परूवेमि-

किच्चं दुक्खं, फुस्सं दुक्खं, कज्जमाणकडं दुक्खं कट्टू-कट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंतित्ति वत्तव्वं सिया.

तिट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

१६८ तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु नो आलोएज्जा, नो पड़िक्कमेज्जा, नो निंदिज्जा, नो गरहिज्जा, नो विउट्टेज्जा, नो विसोहेज्जा, नो अकरणाए अब्भुट्ठेज्जा, नो अहारिहं पायच्छित्तं तवोकम्मं पड़िवज्जेज्जा. तं जहा-

अकरिंसु वाऽहं, करोमि वाऽहं, करिस्सामि वाऽहं.

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु नो आलोएज्जा, नो पडिक्कमिज्जा, —जाव— नो पड़िवज्जेज्जा.

अकित्ती वा मे सिया,

अवण्णे वा मे सिया,

अविणए वा मे सिया.

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु नो आलोएज्जा —जाव— नो पड़िवज्जेज्जा. तं जहा-

कित्ती वा मे परिहाइस्सइ,

जसो वा मे परिहाइस्सइ,
पूयासक्कारे वा मे परिहाइस्सइ.

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा पडिक्कमेज्जा —जाव— पड़िवज्जेज्जा. तं जहा-
मायिस्स णं अस्सिं लोगे गरहिए भवइ,
उववाए गरहिए भवइ,
आयाइ गरहिया भवइ.

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव— पड़िवजेज्जा. तं जहा-
अमाइस्स णं अस्सिं लोगे पसत्थे भवइ,
उववाए पसत्थे भवइ,
आयाइ पसत्था भवइ.

तिहिं ठाणेहिं मायी मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव— पड़िवज्जेज्जा. तं जहा-
नाणट्टयाए, दंसणट्टयाए, चरित्तट्टयाए. ६

६९ तओ पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
सुत्तधरे, अत्थधरे, तदुभयधरे.

७० कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा तओ वत्थाइं धारित्तए वा, परिहरित्तए वा. तं जहा-
जंगिए, भंगिए, खोमिए.

कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा तओ पायाइं धारित्तए वा परिहरित्तए वा. तं जहा-

लाउयपाए वा, दारुपाए वा, मट्टियापाए वा. २

१७१ तिहिं ठाणेहिं वत्थं धरेज्जा. तं जहा-

हिरिपत्तियं, दुगुंछापत्तियं, परीसहवत्तियं.

१७२ तओ आयरक्खा पण्णत्ता. तं जहा-

धम्मियाए पडिच्चोयणाए पडिचोएत्ता भवइ,

तुसिणीओ वा सिया,

उट्ठित्ता वा आयाए एगंतमंतमवक्कमेज्जा.

निग्गंथस्स णं गिलायमाणस्स कप्पंति तओ वियड़दत्तीओ पड़िग्गाहित्तए. तं जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना. २

१७३ तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहम्मियं संभोगियं करेमाणे नाइक्कमइ. तं जहा-

सयं वा दट्ठुं,

सड्ढस्स वा निसम्म,

तच्चं मोसं आउट्टइ चउत्थं नो आउट्टइ.

१७४ तिविहा अणुन्ना पण्णत्ता. तं जहा-

आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए.

तिविहा समणुन्ना पण्णत्ता. तं जहा-

आयरियत्ताए, उवज्झायत्ताए, गणित्ताए.

एवं उवसंपया, एवं विजहणा. ४

१७५ तिविहे वयणे पण्णत्ते. तं जहा-

तव्वयणे, तदन्नवयणे, नो अवयणे.

तिविहे अवयणे पण्णत्ते. तं जहा-
नो तव्वयणे, नो तदन्नवयणे, अवयणे.

तिविहे मणे पण्णत्ते. तं जहा-
तम्मणे, तयन्नमणे, नो अमणे.

तिविहे अमणे पण्णत्ते. तं जहा-
नो तम्मणे, नो तयन्नमणे, अमणे. ४

७६ तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया. तं जहा-
तस्सिं च णं देसंसि वा पदेसंसि वा नो बहवे उदगजोणिया जीवा य, पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति,

देवा नागा जक्खा भूया नो सम्ममाराहिया भवंति तत्थ समुट्ठियं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं अन्नं देसं साहरंति,

अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठितं परिणयं वासिउकामं वाउकाए विधुणइ.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अप्पवुट्ठिकाए सिया.

तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठीकाए सिया. तं जहा-
तंसि च णं देसंसि वा पदेसंसि वा बहवे उदगजोणिया जीवा य, पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उववज्जंति,

देवा जक्खा नागा भूया सम्ममाराहिया भवंति अन्नत्थ समुट्ठियं उदगपोग्गलं परिणयं वासिउकामं तं देसं साहरंति,

अब्भवद्दलगं च णं समुट्ठियं परिणयं वासिउकामं नो वाउआओ विधुणइ.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं महावुट्ठिकाए सिया. २

१७७ तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए. तं जहा-

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने से णं माणुस्सए कामभोगे नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अट्ठं बंधइ, नो नियाणं पगरेइ, नो ठिइपकप्पं पकरेइ,

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु, मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववन्ने तस्स णं माणुस्सए पेम्मे वोच्छिन्ने दिव्वे संकंते भवइ,

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए —जाव— अज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवइ—"इयाणिं न गच्छं मुहुत्तं गच्छं" तेणं कालेणं अप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति,

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा

माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए. णो चेव णं संचाएइ हव्व-
मागच्छित्तए.

७ तिहिं ठाणेहिं देवे अहुणोववन्ने देवलोगेसु इच्छेज्जा माणूसं
लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचाएइ हव्वमागच्छित्तए-

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए
अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवइ–
"अत्थि णं मम माणुस्सए भवे आयरिएइ वा, उवज्झाएइ
वा, पवत्ती इ वा, थेरेइ वा, गणीइ वा, गणधरेइ वा,
गणावच्छेइए वा, जेसिं पभावेण मए इमा एयारूवा दिव्वा
देविड्ढी, दिव्वा देवजुइ, दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते
अभिसमन्नागए" तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि,
णमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं,
चेइयं, पज्जुवासामि,

अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु अमुच्छिए
—जाव—अणज्झोववन्ने तस्स णं एवं भवइ-एस णं माणु-
स्सए भवे नाणीइ वा, तवस्सीइ वा, अइदुक्करकारए तं
गच्छामि णं भगवंतं वंदामि, णमंसामि —जाव— पज्जु-
वासामि,

अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु—जाव—अणज्झोववन्ने, तस्स
णं एवं भवइ–"अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मायाइ वा,
—जाव—सुण्हाइ वा, तं गच्छामि णं तेसिमंतियं पाउब्भ-
वामि पासंतु ता मे इमं एयारूवं दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं

देवजुइं, दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं,

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने देवे देवलोगेसु इच्छेज्ज माणूसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, संचाएइ हव्वमागच्छित्तए.

१७८ तओ ठाणाइं देवे पीहेज्जा. तं जहा-

माणुसं भवं, आरिए खेत्ते जम्मं, सुकुलपच्चायाइं.

तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा. तं जहा-

अहो णं मए, संते बले, संते वीरिए, संते पुरिसक्कारपरक्कमे, खेमंसि सुभिक्खंसि आयरिय-उवज्झाएहिं विज्जमाणेहिं कल्लसरीरेणं नो बहुए सुए अहीए,

अहो णं मए इहलोयपडिबद्धेणं परलोयपरंमुहेणं विसयतिसिएणं नो दीहे सामण्णपरियाए अणुपालिए,

अहो णं मए इड्ढिरससायगरुएणं भोगामिसगिद्धेणं नो विसुद्धे चरित्ते फासिए.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे परितप्पेज्जा. २

१७९ तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ. तं जहा-

विमाणाभरणाइं णिप्पभाइं पासित्ता,

कप्परुक्खगं मिलायमाणं पासित्ता,

अप्पणो तेयलेस्सं परिहायमाणं जाणित्ता.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे चइस्सामित्ति जाणइ.

तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा. तं जहा-

अहो णं मए इमाओ एयारूवाओ दिव्वाओ देविड्ढीओ,

दिव्वाओ देवजुइओ, दिव्वाओ देवाणुभावाओ पत्ताओ लद्धाओ अभिसमण्णागयाओ चइयव्वं भविस्सइ,

अहो णं मए माउओयं पिउसुक्कं तं तदुभयसंसट्ठं तप्पढमयाए आहारो आहारेयव्वो भविस्सइ.

अहो णं मए कलमलजंबालाए असुइए उव्वेयणियाए भीमाए गब्भवसहीए वसियव्वं भविस्सइ.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देवे उव्वेगमागच्छेज्जा. २

१८० तिसंठिया विमाणा पण्णत्ता. तं जहा-

वट्टा, तंसा, चउरंसा.

तत्थं णं जे ते वट्टा विमाणा ते णं पुक्खरकण्णियासंठाणसंठिया सव्वओ समंता पागारपरिक्खित्ता एगदुवारा पण्णत्ता-

तत्थ णं जे ते तंसा विमाणा ते णं सिंघाड़गसंठाणसंठिया दुहाओ पागारपरिक्खित्ता. एगओ वेइया परिक्खित्ता तिदुवारा पण्णत्ता-

तत्थ णं जे ते चउरंसविमाणा ते णं अक्खाड़गसंठाणसंठिया, सव्वओ समंता वेइया परिक्खत्ता. चउदुवारा पण्णत्ता-

तिपइट्ठिया विमाणा. तं जहा-

घणोदधिपइट्ठिया, घणवायपइट्ठिया, ओवासंतरपइट्ठिया.

तिविहा विमाणा पण्णत्ता. तं जहा-

अवट्ठिया, वेउव्विया, परिजाणिया. ३

१८१ तिविहा नेरइया पण्णत्ता. तं जहा-

सम्मादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी.

एवं विगलिंदियवज्जं — जाव - वेमाणियाणं.

तओ दुग्गइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

नेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणीयदुग्गई, मणुयदुग्गई.

तओ सुगइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

सिद्धिसोगई, देवसोगई, मणुस्ससोगई.

तओ दुग्गया पण्णत्ता. तं जहा-

नेरइयदुग्गया, तिरिक्खजोणियदुग्गया, मणुस्सदुग्गया.

तओ सुगया पण्णत्ता. तं जहा-

सिद्धसुग्गया, मणुस्ससुग्गया, देवसुग्गया. ५

१८२ चउत्थभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पड़िगाहित्तए. तं जहा-

उस्सेइमे, संसेइमे, चाउलधोवणे.

छट्ठभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पड़िगाहित्तए. तं जहा-

तिलोदए, तुसोदए, जवोदए.

अट्ठमभत्तियस्स णं भिक्खुस्स कप्पंति तओ पाणगाइं पड़िगाहित्तए. तं जहा-

आयामए, सोवीरए, सुद्धवियड़े.

तिविहे उवहडे पण्णत्ते. तं जहा-

फलिओवहडे, सुद्धोवहडे, संसट्ठोवहडे.

तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते. तं जहा-

जं च ओगिण्हइ,

जं च साहरइ,

जं च आसगंसि पक्खिवइ.

तिविहा ओमोयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

उवगरणोमोयरिया, भत्तपाणोमोयरिया, भावोमोयरिया.

उवगरणोमोयरिया तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

एगे वत्थे, एगे पाए, चियत्तोवहिसाहिज्जणया.

तओ ठाणा निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा अहियाए असुहाए अक्खमाए अणिस्सेएसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति. तं जहा-

कूअणया, कक्करणया, अवज्झाणया.

तओ ठाणा निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामिअत्ताए भवंति. तं जहा-

अकूअणया, अकक्करणया, अणवज्झाणया.

तओ सल्ला पण्णत्ता. तं जहा-

मायासल्ले, नियाणसल्ले, मिच्छादंसणसल्ले.

तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे संखित्तविउलतेउलेस्से भवइ. तं जहा-

आयावणयाए, खंतिखमाए, अपाणगेणं तवोकम्मेणं. ११

१८२ तिमासियं णं भिक्खूपड़िमंपडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ दत्तीओ भोयणस्स पड़िगाहित्तए, तओ पाणगस्स.

एगराइयं भिक्खूपड़िमं सम्मं अणणुपालेमाणस्स अणगारस्स इमे तओ ठाणा अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेयसाए अणाणुगामित्ताए भवंति. तं जहा-

उम्मायं वा लभिज्जा,

दीहकालियं वा रोगायंकं पाउणेज्जा,

केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा.

एगराइयं भिक्खुपड़िमं सम्मं अणुपालेमाणस्स अणगारस्स तओ ठाणा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भवंति. तं जहा-

ओहिणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा,

मणपज्जवनाणे वा से समुप्पज्जेज्जा,

केवलणाणे वा से समुप्पज्जेज्जा. ३

१८३ जंबुद्दीवे दीवे तओ कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

भरहे, एरवए, महाविदेहे.

एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढे पच्चत्थिमद्धे. ५

१८४ तिविहे दंसणे पण्णत्ते, तं जहा-

सम्मद्दंसणे, मिच्छदंसणे, सम्मामिच्छदंसणे.

तिविहा रुई पण्णत्ता. तं जहा-

सम्मरुई, मिच्छरुई, सम्मामिच्छरुई.

तिविहे पओगे पण्णत्ते. तं जहा-
सम्मपओगे, मिच्छपओगे, सम्मामिच्छपओगे. ३

१८५ तिविहे ववसाए पण्णत्ते. तं जहा-
धम्मिए ववसाए,
अधम्मिए ववसाए,
धम्मियाधम्मिए ववसाए.

अहवा तिविहे ववसाए पण्णत्ते. तं जहा-
पच्चक्खे, पच्चइए, आणुगामिए.

अहवा तिविहे ववसाए पण्णत्ते. तं जहा-
इहलोइए, परलोइए, इहलोइएपरलोइए.

इहलोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-
लोइए, वेइए, सामइए.

लोइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-
अत्थे, धम्मे, कामे.

वेइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-
रिउव्वेदे, जउव्वेदे, सामवेदे.

सामइए ववसाए तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-
नाणे, दंसणे, चरित्ते.

तिविहा अत्थजोणी पण्णत्ता. तं जहा-
सामे, दंडे, भेए. ८

१८६ तिविहा पोग्गला पण्णत्ता. तं जहा-

पओगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया.

तिपइट्ठिया नरगा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविपइट्ठिया, आगासपइट्ठिया, आयपइट्ठिया.

णेगमसंगहववहाराणं पुढविपइट्ठिया,

उज्जुसुयस्स आगासपइट्ठिया,

तिण्हं सद्दणयाणं आयपइट्ठिया. २

१८७ तिविहे मिच्छत्ते पण्णत्ते. तं जहा-

अकिरिया, अविणए, अन्नाणे.

अकिरिया तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

पओगकिरिया, समुदाणकिरिया, अन्नाणकिरिया.

पओगकिरिया तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

मणपओगकिरिया, वइपओगकिरिया, कायपओगकिरिया.

समुदाणकिरिया तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

अणंतरसमुदाणकिरिया,

परंपरसमुदाणकिरिया,

तदुभयसमुदाणकिरिया.

अन्नाणकिरिया तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

मइअन्नाणकिरिया,

सुअअन्नाणकिरिया,

विभंगअन्नाणकिरिया.

अविणए तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-

देसच्चाइ, निरालंबणया, नाणपेज्जदोसे.

अन्नाणे तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-

देसऽण्णाणे, सव्वऽण्णाणे, भावऽण्णाणे. ७

१८८ तिविहे धम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

सुयधम्मे, चरित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे.

तिविहे उवक्कमे पण्णत्ते. तं जहा-

धम्मिए उवक्कमे,

अधम्मिए उवक्कमे,

धम्मियाधम्मिए उवक्कमे.

अहवा तिविहे उवक्कमे पण्णत्ते. तं जहा-

आओवक्कमे, परोवक्कमे, तदुभयोवक्कमे.

एवं वेयावच्चे, अणुग्गहे, अणुसट्ठी, उवालंभं,

एवमेक्केक्के तिन्नी तिन्नी आलावगा जहेव उवक्कमे. ७

१८९ तिविहा कहा पण्णत्ता. तं जहा-

अत्थकहा, धम्मकहा, कामकहा.

तिविहे विणिच्छए पण्णत्ते. तं जहा-

अत्थविणिच्छए, धम्मविणिच्छए, कामविणिच्छए. २

१९० प्र० तहारूवं णं भंते ! समणं वा, माहणं वा पज्जुवासमा-
णस्स किं फला पज्जुवासणया ?

उ० सवणफला.

प्र० से णं भंते ! सवणे किं फले ?

उ० णाणफले.

प्र० से णं भंते ! णाणे किं फले ?

उ० विण्णाणफले.

एवमेएणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगंतव्वा-

सवणे णाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिय निव्वाणे ॥

प्र० —जाव— से णं भंते ! अकिरिया किं फला ?

उ० निव्वाणफला.

प्र० से णं भंते ! निव्वाणे किं फले ?

उ० सिद्धिगइगमणपज्जवसाणफले पण्णत्ते, समणाउसो. !

तिट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसो

१६१ पडिमापडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ उवस्सया पडिलेहित्तए. तं जहा-

अहे आगमणगिहंसि वा,
अहे वियड़गिहंसि वा,
अहे रुक्खमूलगिहंसि वा.
एवमणुन्नवित्तए, उवाइणित्तए.

पड़िमापड़िवन्नस्स अणगारस्स कप्पंति तओ संथारगा पड़िलेहित्तए. तं जहा-

पुढविसिला, कट्ठसिला, अहासंथडमेव.

एवं अणुण्णवित्तए. उवाइणित्तए. ४

१९२ तिविहे काले पण्णत्ते. तं जहा-

तीए, पडुप्पण्णे, अणागए.

तिविहे समए पण्णत्ते. तं जहा-

तीए, पडुप्पण्णे, अणागए.

एवं आवलिया, आणापाणू, थोवे, लवे, मुहुत्ते, अहोरत्ते, —जाव— वाससयसहस्से, पुव्वंगे, पुव्वे —जाव— ओसप्पिणी.

तिविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते. तं जहा-

तीए, पडुप्पन्ने, अणागए. ५४

१९३ तिविहे वयणे पण्णत्ते. तं जहा-

एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे.

अहवा तिविहे वयणे पण्णत्ते. तं जहा-

इत्थिवयणे, पुंवयणे, नपुंसगवयणे.

अहवा तिविहे वयणे पण्णत्ते. तं जहा-

तीयवयणे, पडुप्पन्नवयणे, अणागयवयणे. ३

१९४ तिविहा पन्नवणा पण्णत्ता. तं जहा-

नाणपन्नवणा, दंसणपन्नवणा, चरित्तपन्नवणा.

तिविहे सम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

नाणसम्मे, दंसणसम्मे, चरित्तसम्मे.

तिविहे उवघाए पण्णत्ते. तं जहा-

उग्गमोवघाए, उप्पायणोवघाए, एसणोवघाए.

एवं विसोही. ४

१९५ तिविहा आराहणा पण्णत्ता. तं जहा-

णाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा.

नाणाराहणा तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

उक्कोसा, मज्झिमा, जहन्ना.

एवं दंसणाराहणा वि, चरित्ताराहणा वि.

तिविहे संकिलेसे पण्णत्ते. तं जहा-

नाणसंकिलेसे, दंसणसंकिलेसे, चरित्तसंकिलेसे.

एवं असंकिलेसे वि.

एवमइक्कमे वि, वइक्कमे वि, अइयारे वि, अणायारे वि

तिण्हमइक्कमाणं आलोएज्जा, पडिक्कमेज्जा, निंदेज्ज

गरहिज्जा —जाव— पडिवज्जिज्जा. तं जहा-

नाणाइक्कमस्स, दंसणाइक्कमस्स, चरित्ताइक्कमस्स.

एवं वइक्कमाण वि अइयाराणं, अणायाराणं. १४

१९६ तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-

आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे.

१९७ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तओ अकम्म

मिओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

हेमवए, हरिवासे, देवकुरा.

जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं तओ अकम्मभू-मीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

उत्तरकुरा, रम्मगवासे, एरण्णवए.

जंबूमंदरस्स दाहिणेणं तओ वासा पण्णत्ता. तं जहा-

भरहे, हेमवए, हरिवासे.

जंबूमंदरस्स उत्तरेणं तओ वासा पण्णत्ता. तं जहा-

रम्मगवासे, हेरण्णवए, एरवए.

जंबुमंदरदाहिणेणं तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, णिसढे.

जंबूमंदरउत्तरेणं तओ वासहरपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

नीलवंते, रुप्पी, सिहरी.

जंबूमंदरदाहिणेणं तओ महा दहा पण्णत्ता. तं जहा-

पउमदहे, महापउमदहे, तिगिछदहे.

तत्थ णं तओ देवयाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओव-मट्ठिइयाओ परिवसंति. तं जहा-

सिरी, हिरी, धिती.

एवं उत्तरेण वि. नवरं-केसरिदहे, महापोंडरीयदहे, पोंडरीयदहे देवयाओ-कित्ती, बुद्धि, लच्छी.

जंबूमंदरदाहिणेणं चुल्लहिमवंताओ वासहरपव्वयाओ पउ-

सदहाओ महादहाओ तओ महाणईओ पवहंति. तं जहा-

गंगा, सिंधू, रोहितंसा.

जंबूमंदरउत्तरेणं सिहरीओ वासहरपव्वयाओ पोंडरीयदहाओ महादहाओ तओ महानईओ पवहंति. तं जहा-

सुवन्नकूला, रत्ता, रत्तवती.

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं तओ अंतरणईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहावई, दहवई, पंकवई.

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं तओ अंतरणईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला.

जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओदाए महाणईए दाहिणेणं तओ अंतरणईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

खीरोदा, सीयसोता, अंतोवाहिणी.

जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओदाए महाणईए उत्तरेणं तओ अंतरणईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

उम्मिमालिणी, फेणमालिणी, गंभीरमालिणी.

एवं धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे वि अकम्मभूमीओ आढवत्ता —जाव— अंतरणईओ णिरवसेसं भाणियव्वं —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमड्ढे तहेव निरवसेसं भाणियव्वं. १९

१९८ तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा. तं जहा-

अहे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उराला पोग्गला णिवत्तेज्जा, तए णं ते उराला पोग्गला णिवत्तमाणा देसं पुढवीए चलेज्जा,

महोरगे वा महिड्ढीए —जाव— महेसक्खे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे उम्मज्ज-णिमज्जियं करेमाणे देसं पुढवीए चलेज्जा,

नाग-सुवन्नाण वा संगामंसि वट्टमाणंसि देसे पुढवीए चलेज्जा.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं देसे पुढवीए चलेज्जा.

तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा. तं जहा-

अहे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए गुप्पेज्जा,

तए णं से घणवाए गुविए समाणे घणोदहिमेएज्जा,

तए णं से घणोदही एइए समाणे केवलकप्पं पुढविं चलेज्जा,

देवे वा महिड्ढिए —जाव— महेसक्खे तहारूवस्स समणस्स माहणस्स वा, इड्ढि जुइं जसं बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमं उवदंसेमाणे केवलकप्पं पुढविं चलेज्जा,

देवासुरसंगामंसि वा वट्टमाणंसि केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा.

इच्चेएहिं तिहिं ठाणेहिं केवलकप्पा पुढवी चलेज्जा. २

९९ तिविहा देवकिव्विसिया पण्णत्ता. तं जहा-

तिपलिओवमट्ठिइया,
तिसागरोवमट्ठिइया,
तेरससागरोवमट्ठिइया.

प्र० कहिंणं भंते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ?

उ० उप्पिं जोइसियाणं हिट्ठिं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु एत्थ णं तिपलिओवमट्ठिइया देवा किब्बिसिया परिवसंति.

प्र० कहि णं भंते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवा किब्बिसिया परिवसंति ?

उ० उप्पि सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं हेट्ठिं सणंकुमार-माहिंदे कप्पे एत्थ णं तिसागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति.

प्र० कहि णं भंते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिय परिवसंति ?

उ० उप्पि बंभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठिं लंतगे कप्पे एत्थ ण तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति.

२०० सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो बाहिरपरिसाए देवाणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो अब्भिंतरपरिसाए देवी तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरन्नो बाहिरपरिसाए देवीणं तिन्नि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता. ३

२०१ तिविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-

नाणपायच्छित्ते, दंसणपायच्छित्ते, चरित्तपायच्छित्ते.

तओ अणुग्घाइमा पण्णत्ता. तं जहा-

हत्थकम्मं करेमाणे, मेहुणं सेवमाणे, राइभोयणं भुंजमाणे.

तओ पारंचिया पण्णत्ता. तं जहा-

दुट्ठपारंचिए,

पमत्तपारंचिए,

अन्नमन्नं करेमाणे पारंचिए.

तओ अणवट्ठप्पा पण्णत्ता. तं जहा-

साहम्मियाणं तेणं करेमाणे,

अन्नधम्मियाणं तेणं करेमाणे,

हत्थातालं दलयमाणे. ४

२०२ तओ नो कप्पंति पव्वावेत्तए. तं जहा-

पंडए, वाइए, कीवे.

एवं मुंडावित्तए, सिक्खावित्तए, उवट्ठावित्तए, संभुंजित्तए संवासित्तए. ६

२०३ तओ अवायणिज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

अविणीए, विगइपडिबद्धे. अविओसियपाहुडे.

तओ कप्पंति वाइत्तए. तं जहा-

विणीए, अविगइपड़िबद्धे, विउसियंपाहुड़े.

तओ दुसन्नप्पा पण्णत्ता. तं जहा-

दुट्ठे, मूढे, वुग्गहिए.

तओ सुसन्नप्पा पण्णत्ता. तं जहा-

अदुट्ठे, असूढे, अवुग्गाहिए. ४

२०४ तओ मंडलिया पव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

माणुसुत्तरे, कुंडलवरे, रुअगवरे.

२०५ तओ महइमहालया पण्णत्ता. तं जहा-

जंबूद्दीवे मंदरे मंदरेसु,
सयंभूरणे समुद्दे समुद्देसु,
बंभलोए कप्पे कप्पेसु.

२०६ तिविहा कप्पठिई पण्णत्ता. तं जहा-

सामाइयकप्पठिई,
छेदोवट्ठावणियकप्पट्ठिई,
निव्विसमाणकप्पट्ठिई.

अहवा तिविहा कप्पट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-

निव्विट्ठकप्पट्ठिई, जिणकप्पठिई, थेरकप्पठिई. २

२०७ नेरइयाणं तओ सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-

वेउव्विए, तेयए, कम्मए.

असुरकुमाराणं तओ सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-

एवं चेव, एवं सव्वेसिं देवाणं.

पुढविकाइयाणं तओ सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-

ओरालिए, तेयए, कम्मए.

एवं वाउकाइयवज्जाणं —जाव— चउरिंदियाणं.

२०८ गुरुं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता. तं जहा-

आयरियपड़िणीए, उवज्झायपड़िणीए, थेरपड़िणीए.

गइं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता. तं जहा-

इहलोगपड़िणीए, परलोगपड़िणीए, दुहओ लोगपड़िणीए.

समूहं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता. तं जहा-

कुलपड़िणीए, गणपड़िणीए, संघपड़िणीए.

अणुकंपं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता. तं जहा-

तवस्सिपड़िणीए, गिलाणपड़िणीए, सेहपड़िणीए.

भावं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता. तं जहा-

नाणपड़िणीए, दंसणपड़िणीए, चरित्तपड़िणीए.

सुयं पडुच्च तओ पड़िणीया पण्णत्ता. तं जहा-

सुत्तपड़िणीए, अत्थपड़िणीए, तदुभयपड़िणीए. ६

२०९ तओ पिइयंगा पण्णत्ता. तं जहा-

अट्ठी, अट्ठिमिजा, केस-मंसु-रोम-नहे.

तओ माउयंगा पण्णत्ता. तं जहा-

मंसे, सोणिए, मत्थुलिंगे. २

२१० तिहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसा भवइ. तं जहा-

कया णं अहं अप्पं वा, बहुयं वा, सुयं अहिज्जिस्सामि,

कया णं अहं एकल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विह-रिस्सामि,

कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खित्ते पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि.

एवं समणसा, सवयसा, सकायसा पागडेमाणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ.

तिहिं ठाणेहिं समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ. तं जहा-

कया णं अहं अप्पं वा, बहुयं वा, परिग्गहं परिच्चइस्सामि,

कया णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइ-स्सामि,

कया णं अहं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरिस्सामि.

एवं समणसा, सवयसा, सकायसा पागडेमाणे समणोवासए महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ. २

२११ तिविहे पोग्गलपडिघाए पण्णत्ते. तं जहा-

परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलं पप्प पडिहन्निज्जा,

लुक्खत्ताए वा पडिहन्निज्जा,

लोगंते वा पडिहन्निज्जा.

२१२ तिविहे चक्खू पण्णत्ता. तं जहा-

एगचक्खू, विचक्खू, तिचक्खू.

छउमत्थे णं मणुस्से एगचक्खू,

देवे विचक्खू,

तहारूवे समणे वा, माहणे वा उप्पन्न-नाण-दंसणधरे से णं तिचक्खूत्ति वत्तव्वं सिया. २

२१३ तिविहे अभिसमागमे पण्णत्ते. तं जहा-

उड्ढं, अहं, तिरियं.

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा अइसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जइ से णं तप्पढमयाए उड्ढमभिसमेइ,

तओ तिरियं,

तओ पच्छा अहे.

अहोलोगे णं दुरभिगमे पण्णत्ते समणाउसो !

२१४ तिविहा इड्ढी पण्णत्ता. तं जहा-

देविड्ढी, राइड्ढी, गणिड्ढी.

देविड्ढी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

विमाणिड्ढी, विगुव्वणिड्ढी, परियारणिड्ढी.

अहवा देविड्ढी तिविहा, पण्णत्ता. तं जहा-

सचित्ता, अचित्ता, मीसिया.

राइड्ढी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-

रन्नो अइयाणिड्ढी,

रन्नो निज्जाणिड्ढी,

रन्नो बल-वाहण-कोस-कोट्ठागारिड्ढी.

अहवा राइड्ढी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया.

गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
नाणिड्ढी, दंसणिड्ढी, चरित्तिड्ढी.

अहवा गणिड्ढी तिविहा पण्णत्ता. तं जहा-
सचित्ता, अचित्ता, मीसिया. ७

२१५ तओ गारवा पण्णत्ता. तं जहा-
इड्ढीगारवे, रसगारवे, सायागारवे.

२१६ तिविहे करणे पण्णत्ते. तं जहा-
धम्मिए करणे,
अधम्मिए करणे,
धम्मियाधम्मिए करणे.

२१७ तिविहे भगवया धम्मे पण्णत्ते. तं जहा-
सुअहिज्झिए, सुझाइए, सुतवस्सिए.
जया सुअहिज्झियं भवइ तहा सुझाइयं भवइ,
जया सुझाइयं भवइ तया सुतवस्सियं भवइ,
से सुअहिज्झिए, सुझाइए, सुतवस्सिए सुयक्खाए णं
भगवयाधम्मे पण्णत्ते.

२१८ तिविहा वावत्ती पण्णत्ता. तं जहा-
जाणू, अजाणू, विइगिच्छा.

एवमज्झोववज्जणा, परियावज्जणा. ३

२१९ तिविहे अंते पण्णत्ते. तं जहा-

लोगंते, वेयंते, समयंते.

२२० तओ जिणा पण्णत्ता. तं जहा-

ओहिणाणजिणे,

मणपज्जवणाणजिणे,

केवलणाणजिणे.

तओ केवली पण्णत्ता. तं जहा-

ओहिनाणकेवली,

मणपज्जवनाणकेवली,

केवलनाणकेवली.

तओ अरहा, पण्णत्ता. तं जहा-

ओहिनाणअरहा,

मणपज्जवनाणअरहा,

केवलनाणअरहा. ३

२२१ तओ लेसाओ दुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा.

तओ लेसाओ सुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तेऊलेसाओ, पम्हलेसाओ, सुक्कलेसाओ.

एवं दोग्गतिगामिणीओ, सोगतिगामिणीओ, संकिलिट्ठाओ, असंकिलिट्ठाओ, अमणुण्णाओ, मणुण्णाओ, अविसुद्धाओ, विसुद्धाओ, अप्पसत्थाओ, पसत्थाओ, सीतलुक्खाओ,

निह्नुण्हाओ. १४

२२२ तिविहे मरणे पण्णत्ते. तं जहा-

बालमरणे, पंडियमरणे, बालपंडियमरणे.

बालमरणे तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-

ठियलेसे, संकिलिट्ठलेसे, पज्जवजायलेसे.

पंडियमरणे तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-

ठियलेसे, असंकिलिट्ठलेसे, पज्जवजायलेसे.

बालपंडितमरणे तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-

ठियलेसे, असंकिलिट्ठलेसे, अपज्जवजायलेसे. ४

२२३ तओ ठाणा अव्ववसियस्स अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति. तं जहा-

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए निग्गंथे, पावयणे, संकिए, कंखिए, वितिगिच्छिए, भेदसमावन्ने, कलुससमावन्ने निग्गंथं पावयणं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, तं परिस्सहा अभिजुंजिय, अभिजुंजिय अभिभवंति, नो से परिस्सहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ,

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ, अणगारियं पव्वइए पंचहिं महव्वएहिं संकिए –जाव– कलुससमावन्ने पंच महव्वयाइं नो सद्दहइ –जाव– नो से परिस्सहे अभिजुंजिय, अभिजुंजिय अभिभवइ,

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं

जीवनिकाएहिं —जाव— अभिभवइ.

तओ ठाणा ववसियस्स हियाए —जाव— आणुगामियत्ताए भवंति. तं जहा-

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए निग्गंथे पावयणे, निस्संकिए, निक्कंखिए —जाव— नो कलुससमावन्ने निग्गंथे पावयणे सद्दहइ, पत्तियइ, रोएइ से परिस्सहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवंति,

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचहिं महव्वएहिं निस्संकिए निक्कंखिए –जाव– परिस्सहे अभिजुंजिय, अभिजुंजिय अभिभवइ, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवंति,

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए छहिं जीवनिकाएहिं निस्संकिए —जाव— परिस्सहे अभिजुंजिय अभिजुंजिय अभिभवइ, नो तं परिस्सहा अभिजुंजिय, अभिजुंजिय अभिभवंति.

२२४ एगमेगा णं पुढवी तिहिं वलएहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता तं जहा-

घणोदधिवलएणं, घणवायवलएणं, तणुवायवलएणं.

२२५ नेरइया णं उक्कोसेणं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जंति, एगिंदियवज्जं —जाव— वेमाणियाणं.

२२६ खीणमोहस्स णं अरहओ तओ कम्मंसा जुगवं खिज्जंति. तं जहा-

नाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं, अंतराइयं.

२२७ अभिइणक्खत्ते तितारे पण्णत्ते.

एवं सवणो, अस्सिणी, भरणी, मगसिरे, पूसे, जेट्ठा. ६

२२८ धम्माओ णं अरहाओ संती अरहा तिहिं सागरोवमेहिं ति-चउब्भागपलिओवमऊणएहिं वीइक्कंतेहिं समुप्पन्ने.

२२९ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स —जाव— तच्चाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी,

मल्ली णं अरहा तिहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए. एवं पासे वि. ३

२३० समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तिन्नि सया चउद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवाइणं जिण इव अवितहवागरमाणाणं उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था.

२३१ तओ तित्थयरा चक्कवट्टी होत्था. तं जहा-

संती, कुंथू, अरो.

२३२ तओ गेविज्ज-विमाण-पत्थड़ा पन्नत्ता. तं जहा-

हिट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े.

हिट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-

हेट्ठिम हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाणपत्थड़े,
हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,
हेट्ठिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े.

मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-
मज्झिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,
मज्झिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,
मज्झिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े.

उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े, तिविहे पण्णत्ते. तं जहा-
उवरिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,
उवरिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,
उवरिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े. ४

२३३ जीवाणं तिट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा, चिणंति वा, चिणिस्संति वा. तं जहा-
इत्थिनिव्वत्तिए, पुरिसनिव्वत्तिए, नपुंसगनिव्वत्तिए.
एवं चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेद-तह निज्जरा चेव. ६

२३४ तिपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता,
एवं —जाव— तिगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २३

चउट्ठाणं

चउट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

२३५ चत्तारि अंतकिरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तत्थ खलु पढमा इमा अंतकिरिया,

अप्पकम्मपच्चायाए यावि भवइ,

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,

संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, लूहे, तीरट्ठी,

उवहाणवं, दुक्खक्खवे तवस्सी, तस्स णं नो तहप्पगारे

तवे भवइ, नो तहप्पगारा वेयणा भवइ.

तहप्पगारे पुरिसजाए दीहेणं परितावेणं, सिज्झइ, बुज्झइ,

मुच्चइ, परिनिव्वायइ, सव्वदुक्खाणमंतं करेइ.

जहा से भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी,

पढमा अंतकिरिया.

अहावरा दोच्चा अंतकिरिया,

महाकम्मे पच्चायाए यावि भवइ.

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,

संजमबहुले, संवरबहुले, —जाव— उवहाणवं दुक्ख-

क्खवे तवस्सी तस्स णं तहप्पगारे तवे भवइ, तहप्पगारा

वेयणा भवइ.

तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेणं परितावेणं सिज्झइ —जाव— अंतं करेइ.

जहा से गयसुउमाले अणगारे,

दोच्चा अंतकिरिया.

अहावरा तच्चा अंतकिरिया,

महाकम्मे पच्चायाए यावि भवइ.

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,

जहा दोच्चा. नवरं-दीहेणं परितावेणं सिज्झइ —जाव— सव्वदुक्खाणमंतं करेइ.

जहा से सणंकुमारे राया चाउरंतचक्कवट्टी,

तच्चा अंतकिरिया.

अहावरा चउत्था अंतकिरिया,

अप्पकम्मपच्चायाए यावि भवइ.

से णं मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए संजमबहुले, —जाव— तस्स णं नो तहप्पगारे तवे भवइ, नो तहप्पगारा वेयणा भवइ,

तहप्पगारे पुरिसजाए निरुद्धेणं परितावेणं सिज्झइ —जाव— सव्वदुक्खाणमंतं करेइ.

जहा सा मरुदेवा भगवइ,

चउत्था अंतकिरिया.'

२३६ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नए, उन्नए नामेगे पणए,
पणए नामेगे उन्नए, पणए नामेगे पणए.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नए,
तहेव —जाव— पणए नामेगे पणए.

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-परिणए,
उन्नए नामेगे पणय-परिणए,
पणए नामेगे उन्नय-परिणए,
पणए नामेगे पणय-परिणए.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-परिणए,
तहेव —जाव— पणए नामेगे पणय-परिणए.

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-रूवे, उन्नए नामेगे पणय-रूवे,
पणए नामेगे उन्नय-रूवे, पणए नामेगे पणय-रूवे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-रूवे,
तहेव —जाव— पणए नामेगे पणय-रूवे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नय-मणे, उन्नए नामेगे पणय-मणे,

पणय नामेगे उन्नय-मणे, पणए नामेगे पणय-मणे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-संकप्पे,

उन्नए नामेगे पणय-संकप्पे,

पणय नामेगे उन्नय-संकप्पे,

पणय नामेगे पणय-संकप्पे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-पन्ने, उन्नए नामेगे पणय-पन्ने,

पणए नामेगे उन्नय-पन्ने, पणए नामेगे पणय-पन्ने.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-दिट्ठी,

उन्नए नामेगे पणय-दिट्ठी,

पणए नामेगे उन्नय-दिट्ठी,

पणए नामेगे पणय-दिट्ठी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-सीलायारे,

उन्नए नामेगे पणय-सीलायारे,

पणए नामेगे उन्नय-सीलायारे,

पणए नामेगे पणय-सीलायारे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उन्नए नामेगे उन्नय-ववहारे,

उन्नए नामेगे पणय-ववहारे,

पणए नामेगे उन्नय-ववहारे,
पणए नामेगे पणय-ववहारे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उन्नए नामेगे उन्नए-परक्कमे,
उन्नए नामेगे पणय-परक्कमे,
पणए नामेगे उन्नय-परक्कमे,
पणए नामेगे पणय-परक्कमे.
एगे पुरिसजाए पडिवक्खो नत्थि.

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-
उज्जू नामेगे उज्जू, उज्जू नामेगे वंके,
वंके नामेगे उज्जू, वंके नामेगे वंके.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता तं जहा-
उज्जू नामेगे उज्जू, तहेव —जाव— वंके नामेगे वंके.
एवं जहा उन्नय-पणएहिं गमो, तहा उज्जू-वंकेहि वि भाणियव्वो —जाव— परक्कमे. १४

२३७ पडिमापडिवन्नस्स णं अणगारस्स कप्पंति चत्तारि भासाओ भासित्तए. तं जहा-
जायणी, पुच्छणी, अणुन्नवणी, पुट्ठस्स वागरणी.

२३८ चत्तारी भासजाया पण्णत्ता. तं जहा-
सच्चमेगं भासज्जायं, बीयं मोसं,
तइयं सच्चमोसं, चउत्थं असच्चमोसं.

२३९ चत्तारि वत्था पण्णत्ता. तं जहा-

सुद्धे नामेगे सुद्धे, सुद्धे नामेगे असुद्धे,
असुद्धे नामेगे सुद्धे. असुद्धे नामेगे असुद्धे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

सुद्धे नामेगे सुद्धे,
तहेव —जाव— असुद्धे नामेगे असुद्धे.
एवं परिणय-रूवे वत्था सपडिवक्खा.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

सुद्धे नामेगे सुद्ध-मणे, सुद्धे नामेगे असुद्ध-मणे,
असुद्धे नामेगे सुद्ध-मणे, असुद्धे नामेगे असुद्ध-मणे.
एवं संकप्पे —जाव— परक्कमे. १०

२४० चत्तारि सुया पण्णत्ता. तं जहा-

अइजाए, अणुजाए, अवजाए, कुलिंगाले.

२४१ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

सच्चे नामेगे सच्चे, सच्चे नामेगे असच्चे,
असच्चे नामेगे सच्चे, असच्चे नामेगे असच्चे.
एवं परिणए —जाव— परक्कमे. १०

चत्तारि वत्था पण्णत्ता. तं जहा-

सुई नामेगे सुई, सुई नामेगे असुई,
असुई नामेगे सुई, असुई नामेगे असुई.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

सुई नामेगे सुई,
तहेव —जाव— असुई नामेगे असुई.
एवं जहेव सुद्धेणं वत्थेणं भणियं तहेव सुइणावि —जाव—
परक्कमे. १०

२४२ चत्तारि कोरवा पण्णत्ता. तं जहा-
अंब-पलंब-कोरवे, ताल-पलंब-कोरवे,
वल्लि-पलंब-कोरवे, मेंढ-विसाण-कोरवे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अंब-पलंब-कोरवसमाणे, ताल-पलंब-कोरवसमाणे,
वल्लि-पलंब-कोरवसमाणे, मेंढ-विसाण-कोरवसमाणे.

२४३ चत्तारि घुणा पण्णत्ता. तं जहा-
तयक्खाए, छल्लिक्खाए, कट्ठक्खाए, सारक्खाए.

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता. तं जहा-
तयक्खायसमाणे —जाव— सारक्खायसमाणे.
तयक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स सारक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते,
सारक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स तयक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते,
छल्लिक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स कट्ठक्खायसमाणे तवे पण्णत्ते,
कट्ठक्खायसमाणस्स णं भिक्खागस्स छल्लिक्खायसमाणे

तवे पण्णत्ते.

२४४ चउव्विहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता. तं जहा-
अग्ग-बीया, मूल-बीया, पोर-बीया, खंध-बीया.

२४५ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे नेरइए नेरइयलोगंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए.

अहुणोववण्णे नेरइए निरयलोगंसि समुब्भूयं वेयणं वेयमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए,

अहुणोववण्णे नेरइए निरयलोगंसि निरयपालेहिं भुज्जो, भुज्जो अहिट्ठिज्जमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए,

अहुणोववण्णे नेरइए णिरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए,

अहुणोववण्णे नेरइए निरयाउअंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिण्णंसि इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए.

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववन्ने नेरइए —जाव— नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए.

२४६ कप्पंति निग्गंथीणं चत्तारि संघाडीओ धारित्तए वा, परि-

हरित्तए वा. तं जहा-

एगं दुहत्थवित्थारं,

दो तिहत्थवित्थारा,

एगं चउहत्थवित्थारं.

२४७ चत्तारि झाणा पण्णत्ता. तं जहा-

अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे.

अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

अमणुन्न-संपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओग-सइ-समण्णागए यावि भवइ.

मणुन्न-संपओग-संपउत्ते तस्स अविप्पओग-सइ-समण्णागए यावि भवइ.

आयंक-संपओग-संपउत्ते तस्स विप्पओग-सइ-समण्णागए यावि भवइ.

परिजुसिय-काम-भोग-संपओग-संपउत्ते तस्स अविप्पओग-सइ-समण्णागए यावि भवइ.

अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता. तं जहा-

कंदणया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया.

रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

हिंसाणुबंधि, मोसाणुबंधि,

तेणाणुबंधि, सारक्खणाणुबंधि.

रुद्दस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता. तं जहा-

ओसण्णदोसे, बहुदोसे, अन्नाणदोसे, आमरणंतदोसे.

धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पड़ोयारे पण्णत्ते. तं जहा-

आणाविजए, अवायविजए,

विवागविजए, संठाणविजए.

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता. तं जहा-

आणारुई, णिसग्गरुई, सुत्तरुई, ओगाढरुई.

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता. तं जहा-

वायणा, पड़िपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा.

धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

एगाणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा,

असरणाणुप्पेहा, संसाराणुप्पेहा.

सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पड़ोयारे पण्णत्ते. तं जहा-

पुहुत्तवितक्के सवियारी,

एगत्तवितक्के अवियारी,

सुहुमकिरिए अणियट्टी,

समुच्छिन्नकिरिए अप्पड़िवाई,

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता. तं जहा-

अव्वहे, असम्मोहे, विवेगे, विउस्सग्गे.

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि आलंबणा पण्णत्ता. तं जहा-

खंती, मुत्ती, मद्दवे, अज्जवे.

सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा,
असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा.

२४८ चउव्विहा देवाणं ठिई पण्णत्ता. तं जहा-
देव नामेगे, देवसिणाए नामेगे,
देवपुरोहिए नामेगे, देवपज्जलणे नामेगे.

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते. तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा,
देवे नामेगे छवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा,
छवी नामेगे देवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा,
छवी नामेगे छवीए सद्धिं संवासं गच्छेज्जा. २

२४९ चत्तारि कसाया पण्णत्ता. तं जहा-
कोहकसाए, माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए.
एवं नेरइयाणं —जाव— वेमाणियाणं.

चउपइट्ठिए कोहे पण्णत्ते. तं जहा-
आयपइट्ठिए, परपइट्ठिए, तदुभयपइट्ठिए, अपइट्ठिए.
एवं नेरइयाणं —जाव— वेमाणियाणं.
एवं माणे —जाव— लोभे वेमाणियाणं.

चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती सिया. तं जहा-
खेत्तं पडुच्चा, वत्थुं पडुच्चा,
सरीरं पडुच्चा, उवहिं पडुच्चा.
एवं नेरइयाणं —जाव— वेमाणियाणं.

एवं माणे —जाव— लोभे वेमाणियाणं.

चउव्विहे कोहे पण्णत्ते. तं जहा-

अणंताणुबंधिकोहे, अपच्चक्खाणकोहे,

पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे.

एवं नेरइयाणं —जाव — वेमाणियाणं.

एवं माणे —जाव— लोभे वेमाणियाणं.

चउव्विहे कोहे पण्णत्ते. तं जहा-

आभोगणिव्वत्तिए, अणाभोगणिव्वत्तिए,

उवसंते, अणुवसंते.

एवं नेरइयाणं — जाव— वेमाणियाणं.

एवं माणे —जाव — लोभे वेमाणियाणं. ५

२५० जीवा णं चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगड़ीओ चिणिंसु. तं जहा-

कोहेणं, माणेणं, मायाए, लोभेणं.

एवं नेरइयाणं —जाव— वेमाणियाणं.

एवं चिणंति एस दंडओ.

एवं चिणिस्संति एस दंडओ. एवमेएणं तिण्णी दंडगा.

एवं उवचिणिंसु. उवचिणंति. उवचिणिस्संति.

बंधिंसु. बंधंति. बंधिस्संति.

उदीरिंसु. उदीरेंति. उदीरिस्संति.

वेदेंसु. वेदेंति. वेदीस्संति.

निज्जरेंसु. निज्जरेंति. निज्जरिस्संति —जाव— वेमाणियाणं.

एवमेक्केक्के पए तिण्णि तिण्णि दंडगा भाणियव्वा
—जाव— निज्जरिस्संति. १८

२५१ चत्तारि पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
समाहिपड़िमा, उवहाणपड़िमा,
विवेगपड़िमा, विउस्सग्गपड़िमा.

चत्तारि पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
भद्दा, सुभद्दा, महाभद्दा, सव्वओभद्दा.

चत्तारि पड़िमाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
खुड्डिया-मोयपड़िमा, महल्लिया-मोयपड़िमा,
जवमज्झा, वइरमज्झा. ३

२५२ चत्तारि अत्थिकाया अजीवकाया पण्णत्ता. तं जहा-
धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए,
आगासत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए.

चत्तारि अत्थिकाया अरुविकाया पण्णत्ता. तं जहा-
धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए,
आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए. २

२५३ चत्तारि फला पण्णत्ता. तं जहा-
आमे नामेगे आममहुरे, आमे नामेगे पक्कमहुरे,
पक्के नामेगे आममहुरे, पक्के नामेगे पक्कमहुरे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
आमे नामेगे आममहुरफलसमाणे.

तहेव —जाव— पक्के नामेगे पक्कमहुरफलसमाणे.

२५४ चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते. तं जहा-

काउज्जुयया, भासुज्जुयया,

भावुज्जुयया, अविसंवायणाजोगे.

चउव्विहे मोसे पण्णत्ते. तं जहा-

कायअणुज्जुयया, भासअणुज्जुयया,

भावअणुज्जुयया, विसंवायणाजोगे.

चउव्विहे पणिहाणे पण्णत्ते. तं जहा-

मणपणिहाणे, वइपणिहाणे,

कायपणिहाणे, उवगरणपणिहाणे,

एवं नेरइयाणं पंचिंदियाणं —जाव— वेमाणियाणं.

चउव्विहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते. तं जहा-

मणसुप्पणिहाणे —जाव— उवगरणसुप्पणिहाणे.

एवं संजयमणुस्साण वि.

चउव्विहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते. तं जहा-

मणदुप्पणिहाणे —जाव— उवगरणदुप्पणिहाणे.

एवं पंचिंदियाणं —जाव— वेमाणियाणं. ५

२५५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

आवायभद्दए नामेगे नो संवासभद्दए,

संवासभद्दए नामेगे नो आवायभद्दए,

एगे आवायभद्दए वि संवासभद्दए वि,

एगे नो आवायभद्दए नो संवासभद्दए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अप्पणो नामेगे वज्जं पासइ नो परस्स,
परस्स नामेगे वज्जं पासइ नो अप्पणो,
एगे अप्पणो वि वज्जं पासइ परस्स वि,
एगे नो अप्पणो वज्जं पासइ नो परस्स.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अप्पणो नामेगे वज्जं उदीरेइ नो परस्स. तहेव —जाव—
एगे नो अप्पणो वज्जं उदीरेइ नो परस्स.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अप्पणो नामेगे वज्जं उवसामेइ. तहेव —जाव—
एगे नो अप्पणो वज्जं उवसामेइ नो परस्स.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अब्भुट्ठेइ नामेगे नो अब्भुट्ठावेइ,
अब्भुट्ठावेइ नामेगे नो अब्भुट्ठेइ,
एगे अब्भुट्ठेइ वि अब्भुट्ठावेइ वि,
एगे नो अब्भुट्ठेइ नो अब्भुट्ठावेइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
वंदइ नामेगे, नो वंदावेइ,
वंदावेइ नामेगे, नो वंदइ,
एगे वंदइ वि, वंदावेइ वि,
एगे नो वंदइ नो वंदावेइ.
एवं सक्कारेइ. सम्माणेइ. पूएइ. वाएइ. पड़िपुच्छइ.

पुच्छइ. वागरेइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

सुत्तधरे नामेगे नो अत्थधरे,

अत्थधरे नामेगे नो सुत्तधरे,

एगे सुत्तधरे वि अत्थधरे वि,

एगे नो सुत्तधरे नो अत्थधरे. १४

२५६ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता. तं जहा-

सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे.

एवं वलिस्स वि. सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे.

एवं धरणस्स वि.

कालपाले, कोलपाले, सेलपाले, संखपाले.

एवं भूयाणंदस्स वि.

कालपाले, कोलपाले, संखपाले, सेलपाले.

एवं वेणुदेवस्स वि.

चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे.

एवं वेणुदालिस्स वि.

चित्ते, विचित्ते, विचित्तपक्खे, चित्तपक्खे.

एवं हरिकंतस्स वि.

पभे, सुपभे, पभकंते, सुपभकंते.

एवं हरिस्सहस्स वि.

पभे, सुपभे, सुपभकंते, पभकंते.

एवं अग्गिसिहस्स वि.

तेउ, तेउसिहे, तेउकते, तेउप्पभे.

एवं अग्गिमाणवस्स वि.

तेऊ, तेऊसिहे, तेउप्पभे, तेउकंते.

एवं पन्नस्स वि.

रूए, रूयंसे, रूयकंते, रूयप्पभे.

एवं विसिट्ठस्स वि,

रूए, रूयंसे, रूयप्पभे, रूयकंते.

एवं जलकंतस्स वि.

जले, जलरए, जलकंते, जलप्पभे.

एवं जलप्पहस्स वि.

जले, जलरए, जलप्पभे, जलकंते.

एवं अमितगतिस्स वि.

तुरियगइ, खिप्पगइ, सीहगइ, सीहविक्कमगइ.

एवं अमितवाहणस्स वि.

तुरियगइ, खिप्पगइ, सीहविक्कमगइ, सीहगइ.

एवं वेलवस्स वि.

काले, महाकाले, अंजणे, रिट्ठे.

एवं पभंजणस्स वि.

काले, महाकाले, रिट्ठे, अंजणे.

एवं घोसस्स वि.

आवत्ते, वियावत्ते, णंदियावत्ते, महाणंदियावत्ते.

एवं महाघोसस्स वि.

आवत्ते, वियावत्ते, महाणंदियावत्ते, णंदियावत्ते.

एवं सक्कस्स वि.

सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे.

एवं ईसाणस्स वि.

सोमे, जमे, वेसमणे, वरुणे.

एवं एगंतरिया —जाव— अच्चुयस्स.

चउव्विहा वाउकुमारा पण्णत्ता. तं जहा-

काले, महाकाले, वेलंबे, पभंजणे. ३२

२५७ चउव्विहा देवा पण्णत्ता. तं जहा-

भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, विमाणवासी.

२५८ चउव्विहे पमाणे पण्णत्ते. तं जहा-

दव्वप्पमाणे, खेतप्पमाणे, कालप्पमाणे, भावप्पमाणे.

२५९ चत्तारि दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

रूया, रूयंसा, सुरूवा, रूपावती.

चत्तारि विज्जूकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

चित्ता, चित्तकणगा, सएरा, सोयामणी. २

२६० सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

ईसाणस्सणं देविंदस्स देवरन्नो मज्झिमपरिसाए देवीणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता. २

२६१ चउव्विहे संसारे पण्णत्ते. तं जहा-
दव्वसंसारे, खेत्तसंसारे, कालसंसारे, भावसंसारे.

२६२ चउव्विहे दिट्ठिवाए पण्णत्ते. तं जहा-
परिकम्मं, सुत्ताइं, पुव्वगए, अणुजोगे.

२६३ चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-
नाणपायच्छित्ते, दंसणपायच्छित्ते,
चरित्तपायच्छित्ते, चियत्तकिच्चपायच्छित्ते.

चउव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-
परिसेवणापायच्छित्ते, संजोयणापायच्छित्ते,
आलोअणापायच्छित्ते, पलिउंचणापायच्छित्ते. २

२६४ चउव्विहे काले पण्णत्ते. तं जहा-
पमाणकाले, अहाउयनिव्वत्तिकाले,
मरणकाले, अद्धाकाले.

२६५ चउव्विहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते. तं जहा-
वण्णपरिणामे, गंधपरिणामे,
रसपरिणामे, फासपरिणामे.

२६६ भरहेरवएसु णं वासेसु पुरिम-पच्छिमवज्जा मज्झिमगा

बावीसं अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पण्णवेंति. तं जहा-

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं,

सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं,

सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं,

सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं.

सव्वेसु णं महाविदेहेसु अरहंता भगवंता चाउज्जामं धम्मं पण्णवेंति. तं जहा-

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं —जाव—

सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं. २

२६७ चत्तारि दुग्गइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

नेरइयदुग्गई, तिरिक्खजोणियदुग्गई,

मणुस्सदुग्गई, देवदुग्गई.

चत्तारि सुगइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

सिद्धसुगई, देवसुगई,

मणुयसुगई, सुकुलपच्चायाई.

चत्तारि दुग्गया पण्णत्ता. तं जहा-

नेरइयदुग्गया, तिरिक्खजोणियदुग्गया,

मणुयदुग्गया, देवदुग्गया.

चत्तारि सुगया पण्णत्ता. तं जहा-

सिद्धसुगया —जाव— सुकुलपच्चायया. ४

२६८ पढमसमयजिणस्स णं चत्तारि कम्मंसा खीणा भवंति. तं जहा-

नाणावरणिज्जं, दंसणावरणिज्जं,
मोहणिज्जं, अंतराइयं.

उप्पण्णणाणदंसणधरे णं अरहा जिणे केवली चत्तारि कम्मंसे वेदेंति. तं जहा-

वेयणिज्जं, आउयं, नामं, गोत्तं.

पढमसमयसिद्धस्स णं चत्तारि कम्मंसा जुगवं खिज्जंति. तं जहा-

वेयणिज्जं, आउयं, नामं, गोत्तं. ३

२६९ चउहिं ठाणेहिं हासुप्पत्ती सिया. तं जहा-

पासित्ता, भासेत्ता, सुणेत्ता, संभरेत्ता.

२७० चउव्विहे अंतरे पण्णत्ते. तं जहा-

कट्ठंतरे, पम्हंतरे, लोहंतरे, पत्थरंतरे.

इत्थिए वा पुरिसस्स वा चउव्विहे अंतरे पण्णत्ते. तं जहा-

कट्ठंतरसमाणे, पम्हंतरसमाणे,
लोहंतरसमाणे, पत्थरंतरसमाणे. २

२७१ चत्तारि भयगा पण्णत्ता. तं जहा-

दिवसभयए, जत्ताभयए,
उच्चत्तभयए, कब्बालभयए.

२७२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

संपागड़पड़िसेवी नामेगे नो पच्छण्णपड़िसेवी,
पच्छण्णपड़िसेवी नामेगे नो संपागड़पड़िसेवी,
एगे संपागड़पड़िसेवी वि पच्छण्णपड़िसेवी वि,
एगे नो संपागड़पड़िसेवी नो पच्छण्णपड़िसेवी.

२७३ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
कणगा, कणगलया, चित्तगुत्ता, वसुंधरा.
एवं जमस्स, वरुणस्स, वेसमणस्स.

वलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
मितगा, सुभद्दा, विज्जुत्ता, असणी.
एवं जमस्स, वेसमणस्स, वरुणस्स.

धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदंसणा.
एवं —जाव— संखवालस्स.

भूताणंदस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
सुणंदा, सुभद्दा, सुजाया, सुमणा.
एवं —जाव— सेलवालस्स जहा धरणस्स.
एवं सव्वेसिं दाहिणिदलोगपालाणं —जाव— घोसस्स जहा भूताणंदस्स.

एवं —जाव— महाघोसस्स लोगपालाणं.

कालस्स णं पिसाइंदस्स पिसायरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदंसणा.

एवं महाकालस्स वि.

सुरूवस्स णं भूइंदस्स भूयरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

रूववई, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा.

एवं पडिरूवस्स वि.

पुण्णभद्दस्स णं जक्खिंदस्स जक्खरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

पुत्ता, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारगा.

एवं मणिभद्दस्स वि.

भीमस्स णं रक्खसिंदस्स रक्खसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

पउमा, वसुमई, कणगा, रयणप्पभा.

एवं महाभीमस्स वि.

किंनरस्स णं किंनरिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

वडेंसा, केतुमई, रइसेणा, रइप्पभा.

एवं किंपुरिसस्स वि.

सप्पुरिसस्स णं किंपुरिसिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

रोहिणी, नवमिया, हिरी, पुप्फवई.

एवं महापुरिसस्स वि.

अइकायस्स णं महोरगिंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

भुयगा, भुयगवई, महाकच्छा, फुड़ा.

एवं महाकायस्स वि.

गीयरइस्स णं गंधव्विंदस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई.

एवं गीयजसस्स वि.

चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा.

एवं सूरस्स वि णवरं सुरप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा.

इंगालस्स णं महागहस्स चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

विजया, वेजयंति, जयंति, अपराजिया.

एवं सव्वेसिं महग्गहाणं —जाव— भावकेउस्स.

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि

अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

रोहिणी, मयणा, चित्ता, सोमा.

एवं —जाव— वेसमणस्स.

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

पुढवी, राई, रयणी, विज्जू.

एवं —जाव— वरुणस्स. २३०

२७४ चत्तारि गोरसविगईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

खीरं, दहिं, सप्पि, णवणीयं.

चत्तारि सिणेहविगईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तेल्लं, घयं, वसा, नवणीयं.

चत्तारि महाविगईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

महुं, मंसं, मज्जं, णवणीयं. ३

२७५ चत्तारि कूडागारा पण्णत्ता. तं जहा-

गुत्ते नामेगे गुत्ते, गुत्ते नामेगे अगुत्ते,

अगुत्ते नामेगे गुत्ते, अगुत्ते नामेगे अगुत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

गुत्ते नामेगे गुत्ते, —जाव—

अगुत्ते नामेगे अगुत्ते.

चत्तारि कूडागारसालाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गुत्ता नामेगा गुत्तदुवारा,

गुत्ता नामेगा अगुत्तदुवारा,
अगुत्ता नामेगा गुत्तदुवारा,
अगुत्ता नामेगा अगुत्तदुवारा.

एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
गुत्ता नामेगा गुत्तिंदिया,
गुत्ता नामेगा अगुत्तिंदिया,
गुत्तिंदिया नामेगा अगुत्ता,
अगुत्तिंदिया नामेगा अगुत्ता. ४

२७६ चउव्विहा ओगाहणा पण्णत्ता. तं जहा-
दव्वोगाहणा, खेत्तोगाहणा,
कालोगाहणा, भावोगाहणा.

२७७ चत्तारि पण्णत्तीओ अंगबाहिरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
चंदपण्णत्ती, सूरपण्णत्ती,
जंबुद्दीवपण्णत्ती, दीवसागरपण्णत्ती.

चउट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

२७८ चत्तारि पडिसंलीणा पण्णत्ता. तं जहा-
कोहपडिसंलीणे, माणपडिसंलीणे,
मायापडिसंलीणे, लोभपडिसंलीणे.

चत्तारि अपडिसंलीणा पण्णत्ता. तं जहा-
कोहअपडिसंलीणे —जाव— लोभअपडिसंलीणे.

चत्तारि पड़िसंलीणा पण्णत्ता. तं जहा-
मणपड़िसंलीणे, वइपड़िसंलीणे,
कायपड़िसंलीणे, इंदियपड़िसंलीणे.

चत्तारि अपड़िसंलीणा पण्णत्ता. तं जहा-
मणअपड़िसंलीणे —जाव— इंदियअपड़िसंलीणे. ४

२७९ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणे, दीणे नामेगे अदीणे,
अदीणे नामेगे दीणे, अदीणे नामेगे अदीणे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणपरिणए,
दीणे नामेगे अदीणपरिणए,
अदीणे नामेगे दीणपरिणए,
अदीणे नामेगे अदीणपरिणए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणरूवे तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणरूवे.
एवं दीणमणे, दीणसंकप्पे, दीणपण्णे, दीणदिट्ठी, दीणसीलायारे, दीणववहारे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणपरक्कमे, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणपरक्कमे.
एवं सव्वेसिं चउभंगो भाणियव्वो.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणवित्ती, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणवित्ती.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणजाई, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणजाई.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणभासी, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणभासी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणोभासी, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणोभासी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणसेवी, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणसेवी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीण परियाए, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीण परियाए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दीणे नामेगे दीणपरियाले, तहेव —जाव—
अदीणे नामेगे अदीणपरियाले.

सव्वत्थ चउभंगो. १७

२८० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जे, अज्जे नामेगे अणज्जे,
अणज्जे नामेगे अज्जे, अणज्जे नामेगे अणज्जे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जपरिणए, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपरिणए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्ज नामेगे अज्जरूवे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जरूवे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जमणे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जमणे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जसंकप्पे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जसंकप्पे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जपण्णे, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपण्णे.

चत्तारिपुरिस जाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जदिट्ठी, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जदिट्ठी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जसीलायारे, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जसीलायारे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जववहारे, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जववहारे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जपरक्कमे, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जपरक्कमे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जवित्ती, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जवित्ती.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जजाई, तहेव जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जजाई.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जभासी, तहेव —जाव—

अणज्जे नामेगे अणज्जभासी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अज्जे नामेगे अज्जओभासी, तहेव —जाव —

अणज्जे नामेगे अणज्जओभासी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अज्जे नामेगे अज्जसेवी, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जसेवी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अज्जे नामेगे अज्जपरियाए, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपरियाए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अज्जे नामेगे अज्जपरियाले, तहेव —जाव—
अणज्जे नामेगे अणज्जपरियाले.
एवं सत्तर आलावगा जहा दीणेणं भणिया तहा अज्जेण भाणियव्वा.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अज्जे नामेगे अज्जभावे, अज्जे नामेगे अणज्जभावे,
अणज्जे नामेगे अज्जभावे, अणज्जे नामेगे अणज्जभावे.

२८१ चत्तारि उसभा पण्णत्ता. तं जहा-
जाइसम्पन्ने, कुलसम्पन्ने,
बलसम्पन्ने, रूवसम्पन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जाईसम्पन्ने —जाव— रूवसम्पन्ने.

चत्तारि उसभा पण्णत्ता. तं जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने,

कुलसम्पन्ने नामेगे नो जाईसम्पन्ने,
एगे जाई सम्पन्ने वि कुलसम्पन्ने वि,
एगे नो जाईसम्पन्ने नो कुलसम्पन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने तहेव - जाव—
नो जाईसम्पन्ने नो कुलसम्पन्ने.

चत्तारि उसभा पण्णत्ता. तं जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो बलसम्पन्ने,
बलसम्पन्ने नामेगे नो जाईसम्पन्ने,
एगे जाईसम्पन्ने वि बलसम्पन्ने वि,
एगे नो जाईसम्पन्ने नो बलसम्पन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो बलसम्पन्ने, तहेव —जाव—
एगे नो जाईसम्पन्ने नो बलसम्पन्ने.

चत्तारि उसभा पण्णत्ता. तं जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने,
रूवसम्पन्ने नामेगे नो जाईसम्पन्ने,
एगे जाईसम्पन्ने वि, रूवसम्पन्ने वि,
एगे नो जाइसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जाईसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने, तहेव —जाव—

एगे नो जाईसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने.

चत्तारि उसभा पण्णत्ता. तं जहा-

कुलसम्पन्ने नामेगे नो बलसम्पन्ने,

बलसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने,

एगे कुलइसम्पन्ने वि बलसम्पन्ने वि,

एगे नो कुलसम्पन्ने नो बलसम्पन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

कुलसम्पन्ने नामेगे नो बलसम्पन्ने तहेव —जाव—

एगे नो कुलसम्पन्ने नो बलसम्पन्ने.

चत्तारि उसभा पण्णत्ता. तं जहा-

कुलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने,

रूवसम्पन्ने नामेगे नो कुलसम्पन्ने,

एगे कुलसम्पन्ने वि रूवसम्पन्ने वि,

एगे नो कुलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

कुलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने, तहेव —जाव—

एगे नो कुलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने.

चत्तारि उसभा पण्णत्ता. तं जहा-

बलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने,

रूवसम्पन्ने नामेगे नो बलसम्पन्ने,

एगे बलसम्पन्ने वि रूवसम्पन्ने वि,

एगे नो बलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

बलसम्पन्ने नामेगे नो रूवसम्पन्ने, तहेव —जाव—

एगे नो बलसम्पन्ने नो रूवसम्पन्ने.

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता, तं जहा-

भद्दे, मंदे, मिए, संकिन्ने.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

भद्दे —जाव— संकिन्ने.

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता, तं जहा-

भद्दे नामेगे भद्दमणे,

भद्दे नामेगे मंदमणे,

भद्दे नामेगे मियमणे,

भद्दे नामेगे संकिण्णमणे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

भद्दे नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव—

भद्दे नामेगे संकिण्णमणे.

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता. तं जहा-

मंदे नामेगे भद्दमणे,

मंदे नामेगे मंदमणे,

मंदे नामेगे मियमणे,

मंदे नामेगे संकिण्णमणे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

मंदे नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव—
मंदे नामेगे संकिण्णमणे.

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता. तं जहा-
मिए नामेगे भद्दमणे,
मिए नामेगे मंदमणे,
मिए नामेगे मियमणे,
मिए नामेगे संकिण्णमणे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
मिए नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव—
मिए नामेगे संकिण्णमणे.

चत्तारि हत्थि पण्णत्ता. तं जहा-
संकिण्णे नामेगे भद्दमणे,
संकिण्णे नामेगे मंदमणे,
संकिण्णे नामेगे मियमणे,
संकिण्णे नामेगे संकिण्णमणे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
संकिण्णे नामेगे भद्दमणे, तहेव —जाव—
संकिण्णे नामेगे संकिण्णमणे. २४

गाहाओ–मधुगुलियपिंगलक्खो ,
अणुपुव्वसुजायदीहलंगूलो ।
पुरओ उदग्गधीरो ,
सव्वंगसमाहिओ भद्दो ।१।

चलबहलविसमचम्मो ,
थूलसिरो थूलएण पेएण ।
थूलणहदंतवालो ,
हरिपिंगललोयणो मंदो ।२।
तणुओ तणुअग्गीवो ,
तणुयतओ तणुयदंतणहवालो ।
भीरू तत्थुव्विग्गो ,
तासी य, भवे मिए णामं ।३।
एएसिं हत्थीणं ,
थोवं थोवं, तु जो हरइ हत्थी ।
रूवेण व सीलेण व ,
सो संकिण्णोत्ति नायव्वो ।४।
भद्दो मज्जइ सरए ,
मंदो पुण मज्जए वसंतंमि ।
मिउ मज्जइ हेमंते ,
संकिण्णो सव्वकालंमि ।५।

२८२ चत्तारि विकहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
इत्थिकहा, भत्तकहा, देसकहा, रायकहा.

इत्थिकहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-
इत्थीणं जाइकहा, इत्थीणं कुलकहा,
इत्थीणं रूवकहा, इत्थीणं णेवत्थकहा.

भत्तकहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

भत्तस्स आवावकहा, भत्तस्स णिव्वावकहा,
भत्तस्स आरंभकहा, भत्तस्स निट्ठाणकहा.

देसकहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-
देसविहिकहा, देसविकप्पकहा,
देसच्छंदकहा, देसनेवत्थकहा.

रायकहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-
रण्णो अइयाणकहा, रण्णो निज्जाणकहा,
रण्णो बलवाहणकहा, रण्णो कोसकोट्ठागारकहा.

चउव्विहा धम्मकहा पण्णत्ता. तं जहा-
अक्खेवणी, विक्खेवणी, संवेयणी, निव्वेयणी.

अक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-
आयारअक्खेवणी, ववहारअक्खेवणी,
पन्नत्तिअक्खेवणी, दिट्ठिवायअक्खेवणी.

विक्खेवणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-
ससमयं कहेइ, ससमयं कहित्ता परसमयं कहेइ,
परसमयं कहेत्ता ससमयं ठावइत्ता भवइ,
सम्मावायं कहेइ सम्मावायं कहेत्ता मिच्छावायं कहेइ,
मिच्छावायं कहेत्ता सम्मावायं ठावइत्ता भवइ.

संवेगणी कहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-
इहलोगसंवेगणी, परलोगसंवेगणी,
आयसरीरसंवेगणी, परसरीरसंवेगणी.

निव्वेगणीकहा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

इहलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

परलोगे दुच्चिण्णा कम्मा परलोगे दुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

इहलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

इहलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

परलोगे सुचिण्णा कम्मा इहलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति,

परलोगे सुचिण्णा कम्मा परलोगे सुहफलविवागसंजुत्ता भवंति. ११

२८३ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

किसे नामेगे किसे, किसे नामेगे दढे,

दढे नामेगे किसे, दढे नामेगे दढे. ११

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

किसे नामेगे किससरीरे,

किसे नामेगे दढसरीरे,

दढे नामेगे किससरीरे,

दढे नामेगे दढसरीरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

किससरीरस्स नामेगस्स नाणदंसणे समुप्पज्जइ. नो दढ-सरीरस्स,

दढसरीरस्स नामेगस्स नाणदंसणे समुप्पज्जइ नो किस-सरीरस्स,

एगस्स किससरीरस्स वि नाणदंसणे समुप्पज्जइ दढ-सरीरस्स वि,

एगस्स नो किससरीरस्स नाणदंसणे समुप्पज्जइ नो दढ-सरीरस्स. ३

२८४ चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा अस्सिं समयंसि अइसेसे नाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे वि न समुप्पज्जेज्जा. तं जहा-

अभिक्खणं अभिक्खणं इत्थिकहं, भत्तकहं, देसकहं रायकहं कहेत्ता भवइ,

विवेगेणं विउस्सग्गेणं नो सम्ममप्पाणं भावित्ता भवइ,

पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि नो धम्मजागरियं जागरइत्ता भवइ,

फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स नो सम्मं गवेसिया भवइ.

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा —जाव— नो समुप्पज्जेज्जा.

चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा अइसेसे नाण-दंसणे समुप्पज्जिउकामे समुप्पज्जेज्जा. तं जहा-

इत्थिकहं भत्तकहं देसकहं रायकहं नो कहेत्ता भवइ,

विवेगेण विउस्सग्गेणं सम्ममप्पाणं भावेत्ता भवइ,

पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरइत्ता भवइ,

फासुयस्स एसणिज्जस्स उंछस्स सामुदाणियस्स सम्मं गवेसिया भवइ,

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा —जाव— समुप्पज्जेज्जा. २

२८५ नो कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा चउहिं महापाड़िव-एहिं सज्झायं करेत्तए. तं जहा-

आसाढपाड़िवए, इंदमहपाड़िवए,

कत्तियपाड़िवए, सुगिम्हपाड़िवए.

नो कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए. तं जहा-

पढमाए, पच्छिमाए, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते.

कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए. तं जहा-

पुव्वण्हे, अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे. ३

२८६ चउव्विहा लोगट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-

आगासपइट्ठिए वाए,

वायपइट्ठिए उदही,

उदहिपइट्ठिया पुढवी,

पुढविपइट्ठिया तसा थावरा पाणा.

२८७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

तहे नामेगे, नोतहे नामेगे,

सोवत्थी नामेगे, पहाणे नामेगे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

आयंतकरे नामेगे नो परंतकरे,

परंतकरे नामेगे नो आयंतकरे,

एगे आयंतकरे वि परंतकरे वि,

एगे नो आयंतकरे नो परंतकरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

आयंतमे नामेगे नो परंतमे —जाव

एगे नो आयंतमे नो परंतमे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

आयंदमे नामेगे नो परंदमे, —जाव—

एगे नो आयंदमे नो परंदमे. ४

२८८ चउव्विहा गरहा पण्णत्ता. तं जहा-

उवसंपज्जामित्तेगा गरहा,

विइगिच्छामित्तेगा गरहा,
जं किंचि मिच्छामीत्तेगा गरहा,
एवं पि पन्नत्तेगा गरहा.

२८९. चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अप्पणो नामेगे अलमंथू भवइ नो परस्स,
परस्स नामेगे अलमंथू भवइ नो अप्पणो,
एगे अप्पणो वि अलमंथू भवइ परस्स वि,
एगे नो अप्पणो अलमंथू भवइ नो परस्स.

चत्तारि मग्गा पण्णत्ता. तं जहा-
उज्जू नामेगे उज्जू, उज्जू नामेगे वंके,
वंके नामेगे उज्जू, वंके नामेगे वंके.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उज्जू नामेगे उज्जू, — जाव —
वंके नामेगे वंके.

चत्तारि मग्गा पण्णत्ता. तं जहा-
खेमे नामेगे खेमे, खेमे नामेगे अखेमे,
अखेमे नामेगे खेमे, अखेमे नामेगे अखेमे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
खेमे नामेगे खेमे —जाव—
अखेमे नामेगे अखेमे.

चत्तारि मग्गा पण्णत्ता. तं जहा-

खेमे नामेगे खेमरूवे, खेमे नामेगे अखेमरूवे,
अखेमे नामेगे खेमरूवे, अखेमे नामेगे अखेमरूवे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
खेमे नामेगे खेमरूवे, —जाव—
अखेमे नामेगे अखेमरूवे.

चत्तारि संवुक्का पण्णत्ता. तं जहा-
वामे नामेगे वामावत्ते,
वामे नामेगे दाहिणावत्ते,
दाहिणे नामेगे वामावत्ते,
दाहिणे नामेगे दाहिणावत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
वामे नामेगे वामावत्ते, —जाव—
दाहिणे नामेगे दाहिणावत्ते.

चत्तारि धूमसिहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—
दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता.

एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—
दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता.

चत्तारि अग्गिसिहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता.

एवामेव चत्तारित्थिओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता.

चत्तारि वायमंडलिया पण्णत्ता. तं जहा-

वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता.

एवामेव चत्तारित्थीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

वामा नामेगा वामावत्ता, —जाव—

दाहिणा नामेगा दाहिणावत्ता.

चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता. तं जहा-

वामे नामेगे वामावत्ते, —जाव—

दाहिणे नामेगे दाहिणावत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

वामे नामेगे वामावत्ते, —जाव—

दाहिणे नामेगे दाहिणावत्ते. १७

२९० चउहिं ठाणेहिं निग्गंथे निग्गंथिं आलवमाणे वा, संलवमाणे वा नाइक्कमइ. तं जहा-

पंथं पुच्छमाणे वा, पंथं देसमाणे वा,

असणं वा —जाव— साइमं वा दलमाणे वा,

असणं वा —जाव— साइमं वा दलावेमाणे वा.

२९१ तमुक्कायस्स णं चत्तारि नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

तमिति वा, तमुक्कारेइ वा,

अंधकारेइ वा, महंधकारेइ वा.

तमुक्कायस्स णं चत्तारि नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

लोगंधगारेइ वा, लोगतमसेइ वा,

देवंधगारेइ वा, देवतमसेइ वा.

तमुक्कायस्स णं चत्तारि नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

वातफलिहेइ वा, वातफलिहखोभेइ वा,

देवरण्णेइ वा, देववूहेइ वा.

तमुक्काए णं चत्तारि कप्पे आवरित्ता चिट्ठइ. तं जहा-

सोधम्मं, ईसाणं, सणंकुमारं, माहिंदं. ४

२९२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

संपागडपडिसेवी नामेगे, पच्छन्नपडिसेवी नामेगे,

पडुप्पन्ननंदी नामेगे, निस्सरणणंदी नामेगे.

चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

जइत्ता नामेगे नो पराजिणित्ता,

पराजिणित्ता नामेगे नो जइत्ता,

एगा जइत्ता वि पराजिणित्ता वि,

एगा नो जइत्ता नो पराजिणित्ता.

एवामेव पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जइत्ता नामेगे नो पराजिणित्ता, —जाव—

एगा नो जइत्ता नो पराजिणित्ता.

चत्तारि सेणाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

जइत्ता नामेगा जयइ,

जइत्ता नामेगा पराजिणइ,

पराजिणित्ता नामेगा जयइ,

पराजिणित्ता नामेगा पराजिणइ.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जइत्ता नामेगा जयइ —जाव— पराजिणित्ता नामेगा पराजिणइ. ५

२९३ चत्तारि केयणा पण्णत्ता. तं जहा-

बंसीमूलकेयणए, मेंढविसाणकेयणए,

गोमुत्तिकेयणए, अवलेहणियकेयणए.

एवामेव चउव्विहा माया पण्णत्ता. तं जहा-

बंसीमूलकेयणासमाणा —जाव— अवलेहणियासमाणा,

वंसीमूलकेयणासमाणं मायं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेरइएसु उववज्जइ,

मेंढविसाणकेयणासमाणं मायं अणुप्पविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,

गोमुत्तिकेयणासमाणं मायं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

अवलेहणियाकेयणासमाणं मायं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ.

चत्तारि थंभा पण्णत्ता. तं जहा-

सेलथंभे, अट्ठिथंभे, दारुथंभे, तिणिसलयाथंभे.

एवामेव चउव्विहे माणे पण्णत्ते. तं जहा-

सेलथंभसमाणे —जाव— तिणिसलयाथंभसमाणे.

सेलथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेर-इएसु उववज्जइ,

अट्ठिथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरि-क्खजोणिएसु उववज्जइ,

दारुथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ मणु-स्सेसु उववज्जइ,

तिणिसलयाथंभसमाणं माणं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ.

चत्तारि वत्था पण्णत्ता. तं जहा-

किमिरागरत्ते, कद्दमरागरत्ते,

खंजणरागरत्ते, हलिद्दरागरत्ते.

एवामेव चउव्विहे लोभे पण्णत्ते. तं जहा-

किमिरागरत्तवत्थसमाणे,

कद्दमरागरत्तवत्थसमाणे,

खंजणरागरत्तवत्थसमाणे,

हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणे.

किमिरागरत्तवत्थसमाणं लोभं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेरइएसु उववज्जइ,

कद्दमरागरत्तवत्थसमाणं लोभं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,

खंजणरागरत्तवत्थसमाणं लोभं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

हलिद्दरागरत्तवत्थसमाणं लोभं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ. ६

२९४ चउव्विहे संसारे पण्णत्ते. तं जहा-

नेरइएसंसारे, तिरिक्खजोणिएसंसारे,

मणुस्ससंसारे, देवसंसारे.

चउव्विहे आउए पण्णत्ते. तं जहा-

नेरइअआउए, तिरिक्खजोणिए आउए,

मणुस्साउए, देवाउए.

चउव्विहे भवे पण्णत्ते. तं जहा-

नेरइए भवे, तिरिक्खजोणिए भवे,

मणुस्स भवे, देव भवे.

२९५ चउव्विहे आहारे पण्णत्ते. तं जहा-

असणे, पाणे, खाइमे, साइमे.

चउव्विहे आहारे पण्णत्ते. तं जहा-

उवक्खरसंपण्णे, उवक्खडसंपण्णे,

सभावसंपण्णे, परिजुसियसंपण्णे. २

२९६ चउव्विहे बंधे पण्णत्ते. तं जहा-

पगइबंधे, ठिइबंधे,
अणुभावबंधे, पदेसबंधे.

चउव्विहे उवक्कमे पण्णत्ते. तं जहा-
बंधणोवक्कमे, उदीरणोवक्कमे,
उवसमणोवक्कमे, विप्परिणामणोवक्कमे.

बंधणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-
पगइबंधणोवक्कमे, ठिइबंधणोवक्कमे,
अणुभावबंधणोवक्कमे, पदेसबंधणोवक्कमे.

उदीरणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-
पगइउदीरणोवक्कमे,
ठिइउदीरणोवक्कमे,
अणुभावउदीरणोवक्कमे,
पदेसउदीरणोवक्कमे.

उवसमणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-
पगइउवसामणोवक्कमे,
ठिइउवसामणोवक्कमे,
अणुभावउवसामणोवक्कमे,
पदेसुवसामणोवक्कमे.

विप्परिणामणोवक्कमे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-
पगइविप्परिणामणोवक्कमे,
ठिइविप्परिणामणोवक्कमे,

अणुभावविप्परिणामणोवक्कमे,
पदेसविप्परिणामणोवक्कमे.

चउव्विहे अप्पाबहुए पण्णत्ते. तं जहा-
पगइ-अप्पाबहुए, ठिइ-अप्पाबहुए,
अणुभाव-अप्पाबहुए, पएस-अप्पाबहुए.

चउव्विहे संकमे पण्णत्ते. तं जहा-
पगइ-संकमे, ठिइ-संकमे,
अणुभाव-संकमे, पएस-संकमे.

चउव्विहे निधत्ते पण्णत्ते. तं जहा-
पगइ-णिधत्ते, ठिइ-णिधत्ते,
अणुभाव-णिधत्ते, पएस-णिधत्ते.

चउव्विहे निकाइए पण्णत्ते. तं जहा-
पगइ-णिकाइए, ठिइ-णिकाइए,
अणुभाव-णिकाइए, पएस-णिकाइए. १०

२९७ चत्तारि एक्का पण्णत्ता. तं जहा-
दविए एक्कए, माउ एक्कए,
पज्जए एक्कए, संगहे एक्कए.

२९८ चत्तारि कती पण्णत्ता. तं जहा-
दवियकती, माउयकती, पज्जवकती, संगहकती.

२९९ चत्तारि सव्वा पण्णत्ता. तं जहा-
नामसव्वए, ठवणसव्वए,
आएससव्वए, निरवसेससव्वए.

३०० माणुसुत्तरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिं चत्तारि कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

रयणे. रयणुच्चए, सव्वरयणे, रयणसंचए.

३०१ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीआए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोड़ाकोड़ीओ कालो हुत्था,

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवए इमीसे ओसप्पिणीए दूसमसुसमाए समाए जहण्णपए णं चत्तारि सागरोवमकोड़ाकोड़ीओ कालो हुत्था,

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए चत्तारि सागरोवमकोड़ाकोड़ीओ कालो भविस्सइ. ३

३०२ जंबुद्दीवे दीवे देवकुरु-उत्तरकुरुवज्जाओ चत्तारि अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

हेमवए, हेरण्णवए. हरिवासे, रम्मगवासे.

चत्तारि वट्टवेयड्ढपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

सद्दावइ, वियड़ावइ, गंधावइ, मालवंतपरियाए.

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिइया —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-

साइ, पभासे, अरुणे, पउमे.

जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

पुव्वविदेहे, अवरविदेहे, देवकुरा, उत्तरकुरा.

सव्वेऽवि णं निसढणीलवंतवासहरपव्वया चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीयाए महानईए उत्तरे कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चित्तकूडे, पम्हकूडे, नलिणकूडे. एगसेले.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मातंजणे.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए दाहिण कूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

अंकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पच्चत्थिमेणं सीओआए महाणईए उत्तरकूले चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चंदपव्वए, सूरपव्वए, देवपव्वए, नागपव्वए.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स चउसु विदिसासु चत्तारि वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

सोमणसे, विज्जुपभे, गंधमायणे, मालवंते.

जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे जहण्णपए चत्तारि अरहंता, चत्तारि चक्कवट्टी, चत्तारि बलदेवा, चत्तारि वासुदेवा उप्प-

ज्जिसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वए चत्तारि वणा पण्णत्ता. तं जहा-
भद्दसालवणे, नंदणवणे, सोमणसवणे, पंडगवणे.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरपव्वए पंडगवणे चत्तारि अभिसेगसिलाओ, पण्णत्ताओ. तं जहा-

पंडुकंवलसिला, अइपंडुकंवलसिला,
रत्तकंवलसिला, अइरत्तकंवलसिला.

मंदरचूलिया णं उवरिं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेण पण्णत्ता, एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धेऽवि कालं आदिं करेत्ता —जाव— पुक्खरवरदीवपच्चच्छिमद्धे —जाव— मंदर-चूलियत्ति.

जंबुद्दीवगआवस्सगं तु कालाओ चूलिया —जाव— धाय-इसंडे पुक्खरवरे य पुव्वावरे पासे. ४३

३०३ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता. तं जहा-
विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिए.

ते णं दारा चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवे-सेणं पण्णत्ता.

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया —जाव— पलिओवमट्ठि-इया परिवसंति. तं जहा-

विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिए. ३

३०४ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स

वासहरपव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णि-तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

एगूरूयदीवे, आभासियदीवे,
वेसाणियदीवे, नंगोलियदीवे.

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति. तं जहा-
एगूरूया, आभासिया, वेसाणिया, णंगोलिया.

तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

हयकण्णदीवे, गयकण्णदीवे,
गोकण्णदीवे, संकुलिकण्णदीवे.

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति. तं जहा-
हयकण्णा, गयकण्णा, गोकण्णा, संकुलिकण्णा.

तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं पंच पंच जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

आयंसमुहदीवे, मेंढमुहदीवे,
अओमुहदीवे, गोमुहदीवे.

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा.

तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं छ छ जोयण-

सयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

आसमुहदीवे, हत्थिमुहदीवे,
सीहमुहदीवे, वग्घमुहदीवे.

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा.

तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसु लवणसमुद्दं सत्त सत्त जोयण-सयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

आसकण्णदीवे, हत्थिकण्णदीवे,
अकण्णदीवे, कण्णपाउरणदीवे.

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा.

तेसि णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं अट्ठट्ठ जोयण-सयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

उक्कामुहदीवे, मेहमुहदीवे,
विज्जुमुहदीवे, विज्जुदंतदीवे.

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा भाणियव्वा.

तेसु णं दीवाणं चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं नव नव जोयण-सयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

घणदंतदीवे, लट्ठदंतदीवे, गूढदंतदीवे, सुद्धदंतदीवे.

तेसु णं दीवेसु चउव्विहा मणुस्सा परिवसंति. तं जहा-

घणदंता, लट्ठदंता, गूढदंता, सुद्धदंता.

जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं सिहरिस्स वासहर-पव्वयस्स चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं तिण्णि तिण्णि जोयण-सयाइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चत्तारि अंतरदीवा पण्णत्ता. तं जहा-

एगोरूयदीवे —जाव— नंगोलियदीवे.

सेसं तदेव निरवसेसं भाणियव्वं —जाव— सुद्धदंता. ३०

३०५ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउदिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइ जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं महइमहालया महालंजरसंठाणसंठिया चत्तारि महापायाला पण्णत्ता. तं जहा-

वलयामुहे, केउए, जूवए, ईसरे.

एत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओव-मट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-

काले, महाकाले, वेलंबे, पभंजणे.

जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं बायालीसं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चउण्हं वेलंधरनागराइणं चत्तारि आवासपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

गोथूभे, उदयभासे, संखे, दगसीमे.

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओव-

मद्दिइया परिवसंति. तं जहा-

गोथूभे, सिवए, संखे, मणोसिलाए.

जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयंताओ चउसु विदिसासु लवणसमुद्दं बायालीसं बायालीसं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता एत्थ णं चउण्हं अणुवेलंधरणागराईणं चत्तारि आवासपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

कक्कोडए, विज्जुप्पभे, केलासे, अरुणप्पभे.

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढीया —जाव— पलिओवमट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-

कक्कोडए, कद्दमए, केलासे, अरुणप्पभे,

लवणे णं समुद्दे णं चत्तारि चंदा पभासिसु वा, पभासंति वा, पभासिस्संति वा.

चत्तारि सूरिया तविसु वा, तवंति वा, तविस्संति वा.

चत्तारि कत्तियाओ —जाव— चत्तारि भरणीओ.

चत्तारि अग्गी —जाव— चत्तारि जमा.

चत्तारि अंगारा —जाव— चत्तारि भावकेऊ.

लवणस्स णं समुद्दस्स चत्तारि दारा पण्णत्ता. तं जहा-

विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिए.

ते णं दारा णं चत्तारि जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं पण्णत्ते. तं जहा-

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया —जाव— पलिओव-
मट्ठिइया परिवसंति. तं जहा-

विजए, वेजयंते, जयंते, अपराजिए. १०३

३०६ धायइसंडे दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवाल-
विक्खंभेणं पण्णत्ते.

जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स बहिया चत्तारि भरहाइं, चत्तारि
एरवयाइं.

एवं जहा सदुद्देसए तहेव निरवसेसं, भाणियव्वं —जाव—
चत्तारि मंदरा, चत्तारि मंदरचूलिआओ. २०६

नंदीसरदीवस्स वण्णओ

३०७ नंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेस-
भाए चउद्दिसिं चत्तारि अंजणगपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

पुरित्थिमिल्ले अंजणगपव्वए,
दाहिणिल्ले अंजणगपव्वए,
पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए,
उत्तरिल्ले अंजणगपव्वए.

ते णं अंजणगपव्वया चउरासीइ जोयणसहस्साइं उड्ढं
उच्चत्तेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, मूले दस जोयण-
सहस्साइं विक्खंभेणं, तदणंतरं च णं मायाए मायाए परि-
हाएमाणा उवरिमेगं जोयणसहस्सं विक्खंभेणं पण्णत्ता, मूले

इक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवणं, उवरिं तिण्णि तिण्णि जोयणसहस्साइं एगं च छावट्ठं जोयणसयं परिक्खेवेणं, मूले विच्छिण्णा, मज्झे संखित्ता, उप्पि तणुया गोपुच्छसंठाणसंठिया सव्वअंजणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाइया दरिसणीया अभिरूवा पड़िरूवा, तेसि णं अंजणगपव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणिज्जभूमिभागा पण्णत्ता.

तेसि णं बहुसमरमणिज्जभूमिभागाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि सिद्धाययणा पण्णत्ता.

ते णं सिद्धाययणा एगं जोयणसयं आयामेणं पण्णत्ता, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं बावत्तरि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, तेसिं सिद्धाययणाणं चउदिसिं चत्तारि दारा पण्णत्ता. तं जहा-

देवदारे, असुरदारे, नागदारे, सुवण्णदारे.

तेसु णं दारेसु चउव्विहा देवा परिवसंति. तं जहा-

देवा, असुरा, नागा, सुवण्णा.

तेसि णं दाराणं पुरओ चत्तारि मुहमंडवा पण्णत्ता.

तेसि णं मुहमंडवाणं पुरओ चत्तारि पेच्छाघरमंडवा पण्णत्ता. तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अक्खाड़गा पण्णत्ता.

तेसि णं वइरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ.

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि सीहासणा पण्णत्ता.

तेसि णं सीहासणाणं उवरिं चत्तारि विजयदूसा पण्णत्ता.

तेसि णं विजयदूसगाणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि वइरामया अंकुसा पण्णत्ता.

तेसु णं वइरामएसु अंकुसेसु चत्तारि कुंभिका मुत्तादामा पण्णत्ता.

ते णं कुंभिका मुत्तादामा पत्तेयं पत्तेयं अन्नेहिं तदद्धउच्चत्त-पमाणमित्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिकेहिं मुत्तादामेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता.

तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ.

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि चत्तारि चेइयथूभा पण्णत्ता.

तासि णं चेइयथूभाणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि मणि-पेढियाओ पण्णत्ताओ.

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमाओ सव्व-रयणामइओ संपलियंकणिसण्णाओ थूभाभिमुहाहो चिट्ठंति. तं जहा-

रिसभा, वद्धमाणा, चंदाणणा, वारिसेणा.

तेसि णं चेइयथूभाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ.

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि चेइयरुक्खा पण्णत्ता.

तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरओ चत्तारि मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ.

तासि णं मणिपेढियाणं उवरि चत्तारि महिंदज्झया पण्णत्ता.

तेसि णं महिंदज्झयाणं पुरओ चत्तारि नंदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ.

तासि णं पुक्खरणीणं पत्तेयं पत्तेयं चउदिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता. तं जहा-

पुरच्छिमेणं, दाहिणेणं, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं.

गाहा–पुव्वेणं असोगवणं, दाहिणओ होइ सत्तवण्णवणं ।
अवरेणं चंपगवणं, चूयवणं उत्तरे पासे ॥

तत्थ णं जे से पुरच्छिमिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि नंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

नंदुत्तरा, नंदा, आणंदा, नंदीवद्धणा.

ताओ नंदाओ पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयसहस्सं आयामेणं, पण्णासं जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, दस जोयणसयाइं उव्वेहणं, तासि णं पुक्खरिणीणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा.

तेसि णं तिसोवाणपड़िरूवगाणं पुरओ चत्तारि तोरणा पण्णत्ता. तं जहा-

पुरच्छिमेणं, दाहिणेणं, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं.

तासि णं पुक्खरणीणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा पण्णत्ता. तं जहा-

पुरओ, दाहिणओ, पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं.

पुव्वेणं असोगवणं —जाव— चूयवणं उत्तरे पासे.

तासि णं पुक्खरिणीणं बहुमज्झदेसभागे चत्तारि दहिमुहगपव्वया पण्णत्ता.

ते णं दहिमुहगपव्वया चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं, एगं जोयणसहस्सं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिया, दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, सव्वरयणामया अच्छा —जाव— पड़िरूवा, तेसि णं दहिमुहपव्वयाणं उवरिं बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता.

सेसं जहेव अंजणगपव्वयाणं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं —जाव— चूयवणं उत्तरे पासे.

तत्थ णं जे से दाहिणिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउदिसिं चत्तारि नंदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

भद्दा, विसाला, कुमुदा, पोंडरिगिणी.

ताओ नंदाओ पुक्खरणीओ एगं जोयणसयसहस्सं सेसं तं चेव —जाव— दहिमुहगपव्वया —जाव— वणसंडा, तत्थ णं जे से पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि

नंदाओ पुक्खरणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

नंदिसेणा, अमोहा, गोथूभा, सुदंसणा.

सेसं तं चेव, तहेव दहिमुहगपव्वया तहेव सिद्धायणा —जाव – वणसंडा.

तत्थ णं जे से उत्तरिल्ले अंजणगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि नंदाओ पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

विजया, वेजयंती, जयंती, अपराजिया.

ताओ णं पुक्खरणीओ एगं जोयणसहसहस्सं तं चेव पमाणं तहेव दहिमुहगपव्वया तहेव सिद्धायणा —जाव— वणसंडा.

नंदीसरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेस-भागे चउसु विदिसासु चत्तारि रकइरगपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

उत्तरपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए,

दाहिणपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए,

दाहिणपच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए,

उत्तरपच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए.

ते णं रइकरगपव्वया दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा झल्लरिसंठाणसंठिया दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, एक्कतीसं जोयणसहस्साइं छच्च तेवीसे जोयणसए परिक्खेवेणं, सव्वरयणामया अच्छा —जाव— पड़िरूवा. तत्थ णं जे से उत्तरपुरच्छिमिल्ले रइ-

करगपव्वए तस्स णं चउद्दिसिं ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो-चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

नंदुत्तरा, नंदा, उत्तरकुरा, देवकुरा.

कण्हाए, कण्हराइए, रामाए, रामरक्खियाए.

तत्थ णं जे से दाहिणपुरच्छिमिल्ले रइकरगपव्वए, तस्स णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवपमाणाओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

समणा, सोमणसा, अच्चिमाली, मणोरमा.

पउमाए, सिवाए, सतीए, अंजूए.

तत्थ णं जे से दाहिण-पच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए तत्थ णं चउद्दिसिं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हं अग्गमहिसीणं जंबूद्दीवपमाणमेत्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

भूता, भूतवडेंसा, गोथूभा, सुदंसणा.

अमलाए, अच्छराए, नवमियाए, रोहिणीए.

तत्थ णं जे से उत्तर-पच्चत्थिमिल्ले रइकरगपव्वए तत्थ णं चउद्दिसिमिसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो चउण्हमग्गमहिसीणं जंबुद्दीवप्पमाणमित्ताओ चत्तारि रायहाणीओ पण्णत्ता. तं जहा-

रयणा, रयणुच्चया, सव्वरयणा, रयणसंचया.

वसुए, वसुगुत्ताए, वसुमित्ताए, वसुंधराए.

३०८ चउव्विहे सच्चे पण्णत्ते. तं जहा-
नामसच्चे, ठवणसच्चे, दव्वसच्चे, भावसच्चे.

३०९ आजीवियाणं चउव्विहे तवे पण्णत्ते. तं जहा-
उग्गतवे, घोरतवे,
रसणिज्जूहणया, जिब्भिंदियपडिसंलीणया.

३१० चउव्विहे संजमे पण्णत्ते. तं जहा-
मणसंजमे, वइसंजमे, कायसंजमे, उवगरणसंजमे.

चउव्विहे चियाए पण्णत्ते. तं जहा-
मणचियाए, वइचियाए, कायचियाए, उवगरणचियाए.

चउव्विहा अकिंचणया पण्णत्ता. तं जहा-
मणअकिंचणया, वइअकिंचणया,
कायअकिंचणया, उवगरणअकिंचणया. २

चउट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

३११ चत्तारि राईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
पव्वयराई, पुढविराई, वालुयराई, उदगराई.

एवामेव चउव्विहे कोहे पण्णत्ते. तं जहा-
पव्वयराइसमाणे, पुढविराइसमाणे,
वालुयराइसमाणे, उदगराइसमाणे.
पव्वयराइसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेर-
इएसु उववज्जइ,

पुढविराइसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ,

वालुयराइसमाणं कोहं अणुप्पविट्ठे समाणे जीवे कालं करेइ मणुस्सेसु उववज्जइ,

उदगराइसमाणं कोहं अणुपविट्ठे समाणे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ,

चत्तारि उदगा पण्णत्ता. तं जहा-

कद्दमोदए, खंजणोदए, वालुओदए, सेलोदए.

एवामेव चउव्विहे भावे पण्णत्ते. तं जहा-

कद्दमोदगसमाणे, खंजणोदगसमाणे,

वालुओदगसमाणे, सेलोदगसमाणे.

कद्दमोदगसमाणं भावं अणुपविट्ठे समाणे जीवे कालं करेइ नेरइएसु उववज्जइ, एवं — जाव —

सेलोदगसमाणं भावं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ देवेसु उववज्जइ. ४

२ चत्तारि पक्खी पण्णत्ता. तं जहा-

रुयसंपण्णे नामेगे नो रूवसंपण्णे,

रूवसंपण्णे नामेगे नो रुयसंपण्णे,

एगे रूवसंपण्णे वि रुयसंपण्णे वि,

नो रुयसंपण्णे नो रूवसंपण्णे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

रुयसंपण्णे नामेगे, नो रूवसंपण्णे —जाव—
नो रुयसंपण्णे नो रूवसंपण्णे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
पत्तियं करेमीतेगे पत्तियं करेइ,
पत्तियं करेमीतेगे अपत्तियं करेइ,
अप्पत्तियं करेमीतेगे पत्तियं करेइ,
अप्पत्तियं करेमीतेगे अप्पत्तियं करेइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अप्पणो नामेगे पत्तियं करेइ नो परस्स —जाव—
नो अप्पणो पत्तियं करेइ, नो परस्स अपत्तियं करेइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
पत्तियं पवेसामीतेगे पत्तियं पवेसेइ —जाव—
अपत्तियं पवेसामीतेगे अप्पत्तियं पवेसेइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अप्पणो नामेगे पत्तियं पवेसेइ नो परस्स —जाव—
नो अप्पणो पत्तियं पवेसेइ नो परस्स पत्तियं पवेसेइ. ६

३१३ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-
पत्तोवए, पुप्फोवए, फलोवए, छायोवए.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
पत्तो वा रुक्खसमाणे, पुप्फो वा रुक्खसमाणे,
फलो वा रुक्खसमाणे, छायो वा रुक्खसमाणे. २

३१४ भारण्हं वहमाणस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता. तं जहा-

जत्थ णं अंसाओ अंसं साहरइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य णं उच्चारं वा, पासवणं वा परिट्ठावेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य णं नागकुमारावासंसि वा, सुवण्णकुमारा वासंसि वा वासं उवेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य णं आवकहाए चिट्ठइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते.

एवामेव समणोवासगस्स चत्तारि आसासा पण्णत्ता. तं जहा-

जत्थ णं सीलव्वय-गुणव्वय-वेरमण-पच्चक्खाणपोसहोववासाइं पडिवज्जेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य णं सामाइयं देसावगासियं सम्ममणुपालेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य णं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते,

जत्थ वि य णं अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडिआइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ तत्थ वि य से एगे आसासे पण्णत्ते. २

३१५ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

उदीयोदिए नामेगे, उदियत्थमिए नामेगे,

अत्थमियोदिए नामेगे, अत्थमियत्थमिए नामेगे.

भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी णं उदिओदिए,
बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी उदिअत्थमिए,
हरिएसबले णं अणगारे णं अत्थमियोदिए,
काले णं सोयरिए अत्थमियत्थमिए.

३१६ चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता. तं जहा-
कडजुम्मे, तेओए, दावरजुम्मे, कलिओए.

नेरइयाणं चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता. तं जहा-
कडजुम्मे, तेओए, दावरजुम्मे, कलिओए.
एवं असुरकुमाराणं —जाव— थणियकुमाराणं,
एवं पुढविकाइयाणं आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइ-बेंदियाणं तेंदियाणं चउरिंदियाणं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वाणमंतर-जोइसियाणं वेमाणियाणं सव्वेसिं जहा नेरइयाणं. २

३१७ चत्तारि सूरा पण्णत्ता. तं जहा-
खंतिसूरे, तवसूरे, दाणसूरे, जुद्धसूरे.
खंतिसूरा अरहंता, तवसूरा अणगारा,
दाणसूरे वेसमणे, जुद्धसूरे वासुदेवे.

३१८ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उच्चे नामेगे उच्चच्छंदे, उच्चे नामेगे नीयच्छंदे,
नीए नामेगे उच्चच्छंदे, नीय नामेगे नीयच्छंदे.

३१९ असुरकुमाराणं चत्तारि लेसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा, तेउलेसा.

एवं —जाव— थणियकुमाराणं,

एवं पुढविकाइयाणं आउवणस्सइकाइयाणं वाणमंतराणं सव्वेसिं जहा असुरकुमाराणं.

३२० चत्तारि जाणा पण्णत्ता. तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्ते, जुत्ते नामेगे अजुत्ते,
अजुत्ते नामेगे जुत्ते, अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्ते —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.

चत्तारि जाणा पण्णत्ता. तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्तपरिणए,
जुत्ते नामेगे अजुत्तपरिणए,
अजुत्ते नामेगे जुत्तपरिणए,
अजुत्ते नामेगे अजुत्तपरिणए.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्तपरिणए, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्तपरिणए.

चत्तारि जाणा पण्णत्ता. तं जहा-

जुत्ते नामेगे जुत्तरूवे, जुत्ते नामेगे अजुत्तरूवे,
अजुत्ते नामेगे जुत्तरूवे, अजुत्ते नामेगे अजुत्तरूवे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्तरूवे, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्तरूवे.

चत्तारि जाणा पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्त सोभे,
जुत्ते नामेगे अजुत्त सोभे,
अजुत्ते नामेगे जुत्त सोभे,
अजुत्ते नामेगे अजुत्त सोभे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्त सोभे, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्त सोभे.

चत्तारि जुग्गा पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते

एवं जहा जाणेण चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेण वि,
पडिवक्खो तहेव पुरिसजाया —जाव— सोभेत्ति.

चत्तारि सारही पण्णत्ता. तं जहा-
जोयावइत्ता नामेगे नो विजोयावइत्ता,

विजोयावइत्ता नामेगे नो जोयावइत्ता,
एगे जोयावइत्ता वि विजोयावइत्ता वि,
एगे नो जोयावइत्ता, नो विजोयावइत्ता.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जोयावइत्ता नामेगे नो विजोयावइत्ता, —जाव—
एगे नो जोयावइत्ता नो विजोयावइत्ता.

चत्तारि हया पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.

एवामेव पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.
एवं जुत्तपरिणए जुत्तरूवे जुत्तसोभे,
सव्वेसिं पडिवक्खो पुरिसजाया.

चत्तारि गया पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जुत्ते नामेगे जुत्ते, —जाव—
अजुत्ते नामेगे अजुत्ते.
एवं जहा हयाणं तहा गयाण वि भाणियव्वं पड़िवक्खो
तहेव पुरिसजाया.

चत्तारि जुग्गारिया पण्णत्ता. तं जहा-

पंथजाई नाममेगे नो उप्पहजाई,

उप्पहजाई नामेगे नो पंथजाई,

एगे पंथ जाई वि उप्पहजाई वि,

एगे नो पंथजाई नो उप्पहजाई.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

पंथजाई नामेगे नो उप्पहजाई, —जाव—

एगे नो पंथजाई नो उप्पहजाई.

चत्तारि पुप्फा पण्णत्ता. तं जहा-

रूवसंपण्णे नामेगे नो गंधसंपण्णे,

गंधसंपण्णे नामेगे नो रूवसंपण्णे,

एगे रूवसंपण्णे वि गंधसंपण्णे वि,

एगे नो रूवसंपण्णे नो गंधसंपण्णे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

रूवसंपण्णे नामेगे नो सीलसंपण्णे, —जाव—

नो रूवसंपण्णे नो सीलसंपण्णे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जाइसंपण्णे नामेगे नो कुलसंपण्णे,

कुलसंपण्णे नामेगे नो जाइसंपण्णे,

एगे जाइसंपण्णे वि कुलसंपण्णे वि,

एगे नो जाइसंपण्णे नो कुलसंपण्णे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जाइसंपण्णे नामेगे नो बलसंपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसंपण्णे नो बलसंपण्णे.
एवं जाइरूवेण चत्तारि आलावगा.
एवं जाइसुएण चत्तारि आलावगा.
एवं जाइसीलेण चत्तारि आलावगा.
एवं जाइचरित्तेण चत्तारि आलावगा.
एवं कुलेण बलेण चत्तारि आलावगा.
एवं कुलेण रूवेण चत्तारि आलावगा.
एवं कुलेण सुएण चत्तारि आलावगा.
एवं कुलेण सीलेण चत्तारि आलावगा.
एवं कुलेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा.
एवं बलेण रूवेण चत्तारि आलावगा.
एवं बलेण सुएण चत्तारि आलावगा.
एवं बलेण सीलेण चत्तारि आलावगा.
एवं बलेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा,
एवं रूवेण सुएण चत्तारि आलावगा.
एवं रूवेण सीलेण चत्तारि आलावगा.
एवं रूवेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा.
एवं सुएण सीलेण चत्तारि आलावगा.
एवं सुएण चरित्तेण चत्तारि आलावगा.
एवं सीलेण चरित्तेण चत्तारि आलावगा.
एवं एक्कवीसं भंगा भाणियव्वा.

चत्तारि फला पण्णत्ता. तं जहा-

आमलगमहुरे, मुद्दियामहुरे, खीरमहुरे, खंडमहुरे.

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

आमलगमहुरफलसमाणे, मुद्दियामहुरफलसमाणे,
खीरमहुरफलसमाणे, खंडमहुरफलसमाणे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

आयवेयावच्चकरे नामेगे नो परवेयावच्चकरे,
परवेयावच्चकरे नामेगे नो आयवेयावच्चकरे,
एगे आयवेयावच्चकरे वि, परवेयावच्चकरे वि,
एगे नो आयवेयावच्चकरे नो परवेयावच्चकरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

करेइ नामेगे वेयावच्चं नो पडिच्छइ,
पडिच्छइ नामेगे वेयावच्चं नो करेइ,
एगे पडिच्छइ वि वेयावच्चं करेइ वि,
एगे नो पडिच्छइ नो वेयावच्चं करेइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

अट्ठकरे नामे नो माणकरे,
माणकरे नामेगे नो अट्ठकरे,
एगे अट्ठकरे वि माणकरे वि,
एगे नो अट्ठकरे नो माणकरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

गणट्ठकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—

एगे नो गणट्ठकरे नो माणकरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

गणसंगहकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—

एगे नो गणसंगहकरे नो माणकरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

गणसोभकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—

एगे नो गणसोभकरे नो माणकरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

गणसोहीकरे नामेगे नो माणकरे, —जाव—

एगे नो गणसोहीकरे नो माणसोहीकरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

रूवं नामेगे जहइ नो धम्मं,

धम्मं नामेगे जहइ नो रूवं,

एगे रूवं वि जहइ धम्मं वि जहइ,

एगे नो रूवं जहइ नो धम्मं जहइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

धम्मं नामेगे जहइ नो गणसंठिइं, —जाव—

एगे नो धम्मं जहइ नो गणसंठिइं.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

पियधम्मे नामेगे नो दढधम्मे,

दढधम्मे नामेगे नो पियधम्मे,

एगे पियधम्मे वि दढधम्मे वि,

चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता. तं जहा-

अद्दागसमाणे, पडागसमाणे,

खाणुसमाणे, खरकंटयसमाणे. २

३२२ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स समणोवासगाणं सोहम्म-कप्पे अरुणाभे विमाणे चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

३२३ चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए. तं जहा-

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे से णं माणुस्सए कामभोगे नो आढाइ नो परियाणाइ नो अट्ठं बंधइ, नो नियाणं पग-रेइ, नो ठिइपगप्पं पगरेइ,

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववण्णे तस्स णं माणुस्सए पेमे वोच्छि-ण्णे दिव्वे संकंते भवइ,

अहुणोववण्णे देवे देवलोगु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे, गढिए अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवइ, इण्हिं गच्छं, मुहुत्तेणं गच्छं, तेणं कालेणं अप्पाउया मणुस्सा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति,

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु मुच्छिए, गिद्धे, गढिए अज्झोववण्णे तस्स णं माणुस्सए गंधे पडि-कूले पडिलोमे या वि भवइ, उड्ढंपि य णं माणुस्सए गंधे

—जाव— चत्तारि पंच जोयणसयाइं हव्वमागच्छइ,
इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए.

चउहिं ठाणेहिं अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए संचाएइ हव्वमागच्छित्तए. तं जहा-

अहुणोववण्णे देवे देवलोगेसु दिव्वेसु कामभोगेसु असुच्छिए —जाव— अणज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवइ, "अत्थि खलु मम माणुस्सए भवे आयरिएइ वा, उवज्झाएइ वा, पवत्तीइ वा, थेरेइ वा, गणीइ वा, गणधरेइ वा, गणावच्छेएइ वा, जेसिं पभावेणं मए इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी, दिव्वा देवजुइ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया", गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि —जाव— पज्जुवासामी.

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु —जाव— अणज्झोववण्णे तस्स णं एवं भवइ "एस णं माणुस्सए भवे नाणीइ वा तवस्सीइ वा अइदुक्करकारए" तं गच्छामि णं ते भगवंते वंदामि —जाव— पज्जुवासामि.

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु —जाव— अणज्झोववण्णे तस्स णं एवं भवइ "अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मायाइ वा —जाव— सुण्हाइ वा, तं गच्छामि णं तेसिमंतियं पाउब्भवामि पासंतु ता मे इममेयारूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं,

अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु —जाव— अणज्झोववण्णे

एगे नो पियधम्मे नो दढधम्मे.

चत्तारि आयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

पव्वायणायरिए नामेगे नो उवट्ठावणायरिए,

उवट्ठावणायरिए नामेगे नो पव्वायणायरिए,

एगे पव्वायणायरिए वि उवट्ठावणायरिए वि,

एगे नो पव्वयणाएरिए नो उट्ठावणायरिए. धम्मायरिए.

चत्तारि आयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

उद्देसणायरिए नामेगे नो वायणायरिए, —जाव—

एगे नो उद्देसणायरिए नो वायणायरिए.

चत्तारि अंतेवासी पण्णत्ता. तं जहा-

पव्वायणंतेवासी नामेगे नो उवट्ठावणंतेवासी,

उवट्ठावणंतेवासी नामेगे नो पव्वायणंतेवासी,

एगे पव्वायणंतेवासी वि उवट्ठावणंतेवासी वि,

एगे नो पव्वायणंतेवासी नो उवट्ठावणंतेवासी. धम्मंतेवासी

चत्तारि अंतेवासी पण्णत्ता. तं जहा-

उद्देसणंतेवासी नामेगे नो वायणंतेवासी, —जाव—

एगे नो उद्देसणंतेवासी नो वायणंतेवासी. धम्मंतेवासी

चत्तारि निग्गंथा पण्णत्ता. तं जहा-

राइणिए समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ.

राइणिए समणे निग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावी समिए धम्मस्स आराहए भवइ,

ओमराइणिए समणे निग्गंथे महाकम्मे महाकिरिए अणायावी असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ,
ओमराइणिए समणे निग्गंथे अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावी समिए धम्मस्स आराहए भवइ.

चत्तारि निग्गंथीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
राइणिया समणी निग्गंथी महाकम्मा महाकिरिया अणायावि समिया धम्मस्स अणाराहिया भवइ —जाव—
ओमराइणिया समणी निग्गंथी अप्पकम्मा अप्पकिरिया आयावि समिया धम्मस्स आराहिया भवइ.

चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता. तं जहा-
राइणिए समणोवासए महाकम्मे महाकिरिए अणायावि असमिए धम्मस्स अणाराहए भवइ —जाव—
ओमराइणिए समणोवासए अप्पकम्मे अप्पकिरिए आयावि समिए धम्मस्स आराहए भवइ.

चत्तारि समणोवासियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
रायणिया समणोवासिया महाकम्मा महाकिरिया अणायावि समिया धम्मस्स आराहिया भवइ —जाव—
ओमराइणिया समणोवासिया अप्पकम्मा अप्पकिरिया आयावि समिया धम्मस्स आराहिया भवइ.

२१ चत्तारि समणोवासगा पण्णत्ता. तं जहा-
अम्मापिइसमाणे, भाइसमाणे,
मित्तसमाणे, सवत्तिसमाणे.

तस्स णं एवं भवइ—"अत्थि णं मम माणुस्सए भवे मित्तेइ वा, सहीइ वा, सहाएइ वा, संगएइ वा तेसिं च णं अम्हे अण्णमण्णस्स संगारे पडिसुए भवइ" जो मे पुव्विं चयइ से संबोहेयव्वे,

इच्चेएहिं —जाव— संचाएइ हव्वमागच्छित्तए. २

३२४ चउहिं ठाणेहिं लोगंधयारे सिया. तं जहा-

अरहंतेहिं वोच्छिज्जमाणेहिं,

अरहंतपण्णत्ते धम्मे वोच्छिज्जमाणे,

पुव्वगए वोच्छिज्जमाणे,

जायतेए वोच्छिज्जमाणे.

चउहिं ठाणेहिं लोउज्जोए सिया. तं जहा-

अरहंतेहिं जायमाणेहिं,

अरहंतेहिं पव्वयमाणेहिं,

अरहंताणं नाणुप्पायमहिमासु,

अरहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु.

एवं देवंधगारे, देवुज्जोए, देवसण्णिवाए, देवुक्कलियाए, देवकहकहए.

चउहिं ठाणेहिं देविंदा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छंति.

एवं जहा-तिठाणे —जाव— लोगंतिया देवा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छेज्जा. तं जहा-

अरहंतेहिं जायमाणेहिं —जाव—

अरिहंताणं परिनिव्वाणमहिमासु. ३

३२५ चत्तारि दुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तत्थ खलु इमा पढमा दुहसेज्जा. तं जहा-

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए निग्गंथे पावयणे संकिए कंखिए विइगिच्छिए भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे निग्गंथं पावयणं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, निग्गंथं पावयणं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ विणिघायमावज्जइ. पढमा दुहसेज्जा.

अहावरा दोच्चा दुहसेज्जा-

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ —जाव— पव्वइए सएणं लाभेणं नो तुस्सइ, परस्स लाभमासाएइ, पीहेइ, पत्थेइ, अभिलसइ परस्स लाभमासाएमाणे —जाव— अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ, विणिघायमावज्जइ. दोच्चा दुहसेज्जा.

अहावरा तच्चा दुहसेज्जा-

से णं मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएइ —जाव— अभिलसइ दिव्वे माणुस्सए कामभोगे आसाएमाणे —जाव— अभिलसमाणे मणं उच्चावयं नियच्छइ विणिघायमावज्जइ,

तच्चा दुहसेज्जा.

अहावरा चउत्था दुहसेज्जा-

से णं मुंडे —जाव— पव्वइए तस्स णं एवं भवइ "जया णं अहं अगारवासं आवसामी तया णं अहं संवाहणपरि-

मद्दणगातब्भंगगातुच्छोलणाइं लभामि जप्पभिइं च णं अहं मुंडे —जाव— पव्वइए तप्पभिइं च णं अहं संवाहण —जाव— गातुच्छोलणाइं नो लभामि, से णं संवाहण —जाव— गातुच्छोलणाइं आसाएइ —जाव— अभिलसइ", से णं संवाहण —जाव— गातुच्छोलणाइं आसाएमाणे —जाव— मणं उच्चावयं नियच्छइ विणिघायमावज्जइ.

चउत्था दुहसेज्जा.

चत्तारि सुहसेज्जाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

तत्थ खलु पढमा सुहसेज्जा-

से णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए निव्वितिगिच्छिए नो भेदसमावण्णे, नो कलुसमावण्णे निग्गंथं पावयणं सद्दहइ पत्तीयइ रोएइ निग्गंथं पावयणं सद्दहमाणे पत्तियमाणे रोएमाणे, नो मणं उच्चावयं नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ.

पढमा सुहसेज्जा.

अहावरा दोच्चा सुहसेज्जा-

से णं मुंडे —जाव— पव्वइए सएणं लाभेणं तुस्सइ परस्स लाभं नो आसाएइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ परस्स लाभमणासाएमाणे —जाव— अणभिलसमाणे, नो मणं उच्चावयं नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ,

दोच्चा सुहसेज्जा.

अहावरा तच्चा सुहसेज्जा-

से णं मुंडे —जाव— पव्वइए दिव्वे माणुस्सए कामभोगे नो आसाएइ —जाव— नो अभिलसइ दिव्वे माणुस्सए कामभोगे अणासाएमाणे —जाव— अणभिलसमाणे नो मणं उच्चावयं नियच्छइ, नो विणिघायमावज्जइ,

तच्चा सुहसेज्जा.

अहावरा चउत्था सहसेज्जा-

से णं मुंडे —जाव— पव्वइए तस्स णं एवं भवइ-जइ ताव अरहंता भगवंता हट्ठा आरोग्गा बलिया कल्लसरीरा अण्णयराइं ओरालाइं कल्लाणाइं विउलाइं पययाइं पग्गहियाइं महाणुभागाइं कम्मक्खयकारणाइं तवोकम्माइं पडिवज्जंति किमंग पुण अहं अब्भोवगमिओवक्कमियं वेयणं नो सम्मं सहामि खमामि तितिक्खेमि अहियासेमि ममं च णं अब्भोवगमिओवक्कमियं सम्ममसहमाणस्स अक्खममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जति ? एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जइ. ममं च णं अब्भोवगमिओ —जाव— सम्मं सहमाणस्स —जाव— अहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जइ ? एगंतसो मे निज्जरा कज्जइ.

चउत्था सुहसेज्जा. २

३२६ चत्तारि अवायणिज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

अविणीए, वीगइपडिबद्धे, ओसविएपाहुड़े, माइ.

चत्तारि वायणिज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
विणीए, अविगइपडिबद्धे,
विओसवियपाहुडे, अमाइ. २

३२७ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
आयंभरे नामेगे नो परंभरे,
परंभरे नामेगे नो आयंभरे,
एगे आयंभरे वि परंभरे वि,
एगे नो आयंभरे नो परंभरे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दुग्गए नामेगे दुग्गए, दुग्गए नामेगे सुग्गए,
सुग्गए नामेगे दुग्गए, सुग्गए नामेगे सुग्गए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दुग्गए नामेगे दुव्वए, दुग्गए नामेगे सुव्वए,
सुग्गए नामेगे दुव्वए, सुग्गए नामेगे सुव्वए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दुग्गए नामेगे दुप्पडियाणंदे,
दुग्गए नामेगे सुप्पडियाणंदे,
सुग्गए नामेगे दुप्पडियाणंदे,
सुग्गए नामेगे सुप्पडियाणंदे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दुग्गए नामेगे दुग्गइगामी,

दुग्गए नामेगे सुग्गइगामी,
सुग्गए नामेगे दुग्गइगामी,
सुग्गए नामेगे सुग्गइगामी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
दुग्गए नामेगे दुग्गइंगए,
दुग्गए नामेगे सुगइंगए,
सुगए नामेगे दुग्गइंगए,
सुगए नामेगे सुगइंगए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
तमे नामेगे तमे, तमे नामेगे जोई,
जोई नामेगे तमे, जोई नामेगे जोई.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
तमे नामेगे तमवले, तमे नामेगे जोइवले,
जोई नामेगे तमवले, जोई नामेगे जोइवले.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
तमे नामेगे तमवलपलज्जणे,
तमे नामेगे जोइवलपलज्जणे,
जोई नामेगे तमवलपलज्जणे,
जोई नामेगे जोइवलपलज्जणे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
परिण्णायकम्मे नामेगे नो परिण्णायसण्णे,
परिण्णायसण्णे नामेगे नो परिण्णायकम्मे,

एगे परिण्णायकम्मे वि परिण्णायसण्णे वि,
एगे नो परिण्णायकम्मे नो परिण्णायसण्णे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
परिण्णायकम्मे नामेगे नो परिण्णायगिहवासे,
परिण्णायगिहवासे नामेगे नो परिण्णायकम्मे,
एगे परिण्णायगिहवासे वि परिण्णायकम्मे वि,
एगे नो परिण्णायगिहवासे नो परिण्णायकम्मे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
परिण्णायसण्णे नामेगे नो परिण्णायगिहवासे,
परिण्णायगिहवासे नामेगे नो परिण्णायसण्णे,
एगे परिण्णायसण्णे वि परिण्णायगिहवासे वि,
एगे नो परिण्णायसण्णे नो परिण्णायगिहवासे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
इहत्थे नामेगे नो परत्थे,
परत्थे नामेगे नो इहत्थे,
एगे इहत्थे वि परत्थे वि,
एगे नो इहत्थे नो परत्थे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
एगेणं नामेगे वड्ढइ एगेणं हायइ,
एगेणं नामेगे वड्ढइ दोहिं हायइ,
दोहिं नामेगे वड्ढइ एगेणं हायइ,
एगे दोहिं नामेगे वड्ढइ दोहिं हायइ.

चत्तारि कंथगा पण्णत्ता. तं जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णे, आइण्णे नामेगे खलुंके,
खलुंके नामेगे आइण्णे, खलुंके नामेगे खलुंके.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णे, — जाव —
खलुंके नामेगे खलुंके.

चत्तारि कंथगा पण्णत्ता. तं जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णयाए विहरइ,
आइण्णे नामेगे खलुंकत्ताए विहरइ,
खलुंके नामेगे आइण्णयाए विहरई,
खलुंके नामेगे खलुंकत्ताए विहरइ.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

आइण्णे नामेगे आइण्णत्ताए विहरइ, —जाव—
खलुंके नामेगे खलुंकत्ताए विहरइ.

चत्तारि पकंथगा पण्णत्ता. तं जहा-

जाइसंपण्णे नामेगे नो कुलसंपण्णे,
कुलसंपण्णे नामेगे नो जाइसंपण्णे,
एगे जाइसंपण्णे वि कुलसंपण्णे वि,
एगे नो जाइसंपण्णे नो कुलसंपण्णे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

जाइसंपण्णे नामेगे नो कुलसंपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसंपण्णे नो कुलसंपण्णे.

चत्तारि कंथगा पण्णत्ता. तं जहा-
जाइसंपण्णे नामेगे नो बलसंपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसंपण्णे नो बलसंपण्णे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जाइसंपण्णे नामेगे नो बलसंपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसंपण्णे नो बलसंपण्णे.

चत्तारि कंथगा पण्णत्ता. तं जहा-
जाइसंपण्णे नामेगे नो रूवसंपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसंपण्णे नो रूवसंपण्णे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
जाइसंपण्णे नामेगे नो रूवसंपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसंपण्णे नो रूवसंपण्णे.

चत्तारि कंथगा पण्णत्ता. तं जहा-
जाइसंपण्णे नामेगे नो जयसंपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसंपणे नो जयसंपण्णे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
एगे जाइसंपण्णे नामेगे नो जयसंपण्णे, —जाव—
एगे नो जाइसंपण्णे नो जयसंपण्णे.
एवं कुलसंपण्णे य बलसंपण्णे य,
एवं कुलसंपण्णे य रूवसंपण्णे य,
एवं कुलसंपण्णे य जयसंपण्णे य,
एवं बलसंपण्णे य रूवसंपण्णे य,

एवं बलसंपण्णे य जयसंपण्णे य,
सव्वत्थ पुरिसजाया पड़िवक्खो.

चत्तारि कंथगा पण्णत्ता. तं जहा-
रूवसंपण्णे नामेगे नो जयसंपण्णे, —जाव —
एगे नो रूवसंपण्णे नो जयसंपण्णे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
रूवसंपण्णे नामेगे नो जयसंपण्णे, —जाव—
एगे नो रूवसंपण्णे नो जयसंपण्णे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
सीहत्ताए नामेगे निक्खंते सीहत्ताए विहरइ,
सीहत्ताए नामेगे निक्खंते सियालत्ताए विहरइ,
सीयालत्ताए नामेगे निक्खंते सीहत्ताए विहरइ,
सीयालत्ताए नामेगे निक्खंते सीयालत्ताए विहरइ.

३२८ चत्तारि लोगे समा पण्णत्ता. तं जहा-
अपइट्ठाणे नरए, जंबुद्दीवे दीवे,
पालए जाणविमाणे, सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे.

चत्तारि लोगे समा सपक्खि सपड़िदिसिं पण्णत्ता. तं जहा-
सीमंतए नरए, समयक्खेत्ते,
उडुविमाणे, इसीपब्भारा पुढवी. २

३२९ उड्ढलोगे णं चत्तारि बिसरीरा पण्णत्ता. तं जहा-
पुढविकाइया, आउकाइया,
वणस्सइकाइया, उराला तसापाणा.

अहो लोगे णं चत्तारि बिसरीरा पण्णत्ता. तं जहा-
पुढविकाइया —जाव—
उराला तसा पाणा.
एवं तिरियलोए वि. २

३३० चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते.

३३१ चत्तारि सिज्जपडिमाओ पण्णत्ताओ.
चत्तारि वत्थपडिमाओ पण्णत्ताओ.
चत्तारि पायपडिमाओ पण्णत्ताओ.
चत्तारि ठाणपडिमाओ पण्णत्ताओ. ४

३३२ चत्तारि सरीरगा जीवफुडा पण्णत्ता. तं जहा-
वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए.
चत्तारि सरीरगा कम्मुम्मीसगा पण्णत्ता. तं जहा-
ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेउए. २

३३३ चउहिं अत्थिकाएहिं लोगे फुडे पण्णत्ते. तं जहा-
धम्मत्थिकाएणं, अधम्मत्थिकाएणं,
जीवत्थिकाएणं, पुग्गलत्थिकाएणं.
चउहिं बादरकाएहिं उववज्जमाणेहिं लोगे फुडे पण्णत्ते. तं जहा-
पढविकाइएहिं, आउकाइएहिं,
वाउकाइएहिं, वणस्सइकाइएहिं. २

३३४ चत्तारि पएसग्गेणं तुल्ला पण्णत्ता. तं जहा-

धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए,
लोगागासे, एगजीवे.

३३५ चउण्हमेगं सरीरं नो सुपस्सं भवइ. तं जहा-

पुढविकाइयाणं, आउकाइयाणं,
तेउकाइयाणं, वणस्सइकाइयाणं.

३३६ चत्तारि इंदियत्था पुट्ठा वेदेंति. तं जहा-

सोइंदियत्थे, घाणिंदियत्थे,
जिब्भिंदियत्थे, फासिंदियत्थे.

३३७ चउहिं ठाणेहिं जीवा य पोग्गला य नो संचाएइ बहिया लोगंता गमणयाए. तं जहा-

गइअभावेणं, निरुवग्गहयाए,
लुक्खयाए, लोगाणुभावेणं.

३३८ चउव्विहे णाए पण्णत्ते. तं जहा-

आहरणे, आहरणतद्देसे,
आहरणतद्दोसे, उवण्णासोवणए.

आहरणे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

अवाए, उवाए, ठवणाकम्मे, पडुपण्णविणासी.

आहरणतद्देसे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

अणुसिट्ठि, उवालंभे, पुच्छा, निस्सावयणे.

आहरणतद्दोसे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

अधम्मजुत्ते, पडिलोमे, अंतोवणीए, दुरुवणीए.

उवण्णासोवणए चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

तव्वत्थुए, तदण्णवत्थुए,
पडिनिभे, हेऊ.

हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

जावए, थावए, वंसए, लूसए.

अहवा हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

पच्चक्खे, अणुमाणे, ओवम्मे, आगमे

अहवा हेऊ चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

अत्थित्तं अत्थि सो हेऊ,
अत्थित्तं नत्थि सो हेऊ,
नत्थित्तं अत्थि सो हेऊ,
नत्थित्तं नत्थि सो हेऊ. ८

३३९ चउव्विहे संखाणे पण्णत्ते. तं जहा-

पडिकम्मं, ववहारे, रज्जू, रासी.

अहोलोगे णं चत्तारि अंधगारं करेंति. तं जहा-

नरगा, नेरइया,
पावाइं कम्माइं, असुभा पोग्गला.

तिरियलोगे णं चत्तारि उज्जोयं करेंति. तं जहा-

चंदा, सूरा, मणि, जोई.

उड्ढलोगे णं चत्तारि उज्जोयं करेंति. तं जहा-

देवा, देवीओ, विमाणा, आभरणा. ४

चउट्ठाणस्स चउत्थो उद्देसो

३४० चत्तारि पसप्पगा पण्णत्ता. तं जहा-
अणुप्पण्णाणं भोगाणं उप्पाएत्ता एगे पसप्पए,
पुव्वुप्पण्णाणं भोगाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए,
अणुप्पण्णाणं सोक्खाणं उप्पाइत्ता एगे पसप्पए,
पुव्वुप्पण्णाणं सोक्खाणं अविप्पओगेणं एगे पसप्पए.

३४१ नेरइयाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते. तं जहा-
इंगालोवमे, मुम्मरोवमे, सीयले, हिमसीयले.

तिरिक्खजोणियाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते. तं जहा-
कंकोवमे, बिलोवमे, पाणमंसोवमे, पुत्तमंसोवमे.

मणुस्साणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते. तं जहा-
असणे —जाव— साइमे.

देवाणं चउव्विहे आहारे पण्णत्ते. तं जहा-
वण्णमंते, गंधमंते, रसमंते, फासमंते. ४

३४२ चत्तारि जाइआसीविसा पण्णत्ता. तं जहा-
बिच्छुयजाइआसीविसे, मंडुक्कजाइआसीविसे,
उरगजाइआसीविसे, मणुस्सजाइआसीविसे.

प्र० विच्छुयजाइआसीविसस्स णं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ?

उ० पभू णं विच्छुयजाइआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करित्तए.
विसए से विसट्टयाए नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा.

प्र० मंडुक्कजाइ आसीविसस्स पुच्छा ?

उ० पभू णं मंडुक्कजाइआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करित्तए.
सेसं तं चेव —जाव— करिस्संति वा.

प्र० उरगजाइ पुच्छा ?

उ० पभू णं उरगजाइआसीविसे जंबुद्दीवपमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करित्तए.
सेसं तं चेव —जाव— करिस्संति वा.

प्र० मणुस्सजाइ पुच्छा ?

उ० पभू णं मणुस्सजाइआसीविसे समयखेत्तपमाणमेत्तं बोंदि विसेणं विसपरिणयं विसट्टमाणिं करेत्तए.
विसए से विसट्टयाए नो चेव णं —जाव— करिस्संति वा.

३४३ चउव्विहे वाही पण्णत्ता. तं जहा-

वाइए, पित्तिए, सिंभिए, सण्णिवाइए.

चउव्विहा तिगिच्छा पण्णत्ता. तं जहा-
विज्जो, ओसहाइं, आउरे, परिचारए. २

३४४ चत्तारि तिगिच्छगा पण्णत्ता. तं जहा-
आयतिगिच्छए नामेगे नो परतिगिच्छए,
परतिगिच्छए नामेगे नो आयतिगिच्छए,
एगे आयतिगिच्छए वि परतिगिच्छए वि,
एगे नो आयतिगिच्छए नो परतिगिच्छए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
वणकरे नामेगे नो वणपरिमासी,
वणपरिमासी नामेगे नो वणकरे,
एगे वणकरे वि वणपरिमासी वि,
एगे नो वणकरे नो वणपरिमासी,

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
वणकरे नामेगे नो वणसारक्खी —जाव—
एगे नो वणकरे नो वणसारक्खी.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
वणकरे नामेगे नो वणसंरोही —जाव—
एगे नो वणकरे नो वणसंरोही.

चत्तारि वणा पण्णत्ता. तं जहा-
अंतोसल्ले नामेगे नो बाहिसल्ले,

बाहिंसल्ले नामेगे नो अंतोसल्ले,
एगे अंतोसल्ले वि बाहिंसल्ले वि,
एगे नो अंतोसल्ले नो बाहिंसल्ले.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अंतोसल्ले नामेगे नो बाहिंसल्ले —जाव—
एगे नो अंतोसल्ले नो बाहिंसल्ले.

चत्तारि वणा पण्णत्ता. तं जहा-
अंतो दुट्ठे नामेगे नो बाहिं दुट्ठे,
बाहिं दुट्ठे नामेगे नो अंतो दुट्ठे,
एगे अंतो दुट्ठे वि बाहिं दुट्ठे वि,
एगे नो अंतो दुट्ठे नो बाहिं दुट्ठे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
सेयंसे नामेगे सेयंसे, सेयंसे नामेगे पावंसे,
पावंसे नामेगे सेयंसे, पावंसे नामेगे पावंसे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
सेयंसे नामेगे सेयंसेत्ति सालिसए,
सेयंसे नामेगे पावंसेत्ति सालिसए,
एगे सेयंसे वि सेयंसेत्ति सालिसए वि,
एगे नो सेयंसे नो सेयंसेत्ति सालिसए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
सेयंसेत्ति नामेगे सेयंसेत्ति मण्णइ,

सेयंसेत्ति नामेगे पावंसेत्ति मण्णइ,
एगे सेयंसेत्ति वि सेयंसेत्ति मण्णइ वि,
एगे नो सेयंसेत्ति नो सेयंसेत्ति मण्णइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
सेयंसे नामेगे सेयंसेत्ति सालिसए मण्णइ,
सेयंसे नामेगे पावंसेत्ति सालिसए मण्णइ,
एगे सेयंसे वि सेयंसेत्ति सालिसए मण्णइ वि,
एगे नो सेयंसे नो सेयंसेत्ति सालिसए मण्णइ.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
आघवइत्ता नामेगे नो परिभावइत्ता,
परिभावइत्ता नामेगे नो आघवइत्ता,
एगे आघवइत्ता वि परिभावइत्ता वि,
एगे नो आघवइत्ता नो परिभावइत्ता.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
आघवइत्ता नामेगे नो उंछजीविसंपण्णे,
उंछजीविसंपण्णे नामेगे नो आघवइत्ता,
एगे आघवइत्ता वि उंछजीविसंपण्णे वि,
ऐगे नो आघवइत्ता नो उंछजीविसंपण्णे.

चउव्विहा रुक्खविगुव्वणा पण्णत्ता. तं जहा-
पवालत्ताए, पत्तत्ताए, पुप्फत्ताए, फलत्ताए. १४

३४५ चत्तारि वाइसमोसरणा पण्णत्ता. तं जहा-

किरियावाई, अकिरियावाई,
अण्णाणियवाई, वेणइयवाई.

नेरइयाणं चत्तारि वाइसमोसरणा पण्णत्ता. तं जहा-
किरियावाई —जाव— वेणइयवाई.
एवं असुरकुमाराण वि —जाव— थणियकुमाराणं.
एवं विगलिंदियवज्जं —जाव— वेमाणियाणं. २

३४६ चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो वासित्ता,
वासित्ता नामेगे नो गज्जित्ता,
एगे गज्जित्ता वि वासित्ता वि,
एगे नो गज्जित्ता नो वासित्ता.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो वासित्ता, —जाव—
एगे नो गज्जित्ता नो वासित्ता.

चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता,
विज्जुयाइत्ता नामेगे नो गज्जित्ता,
एगे गज्जित्ता वि विज्जुयाइत्ता वि,
एगे नो गज्जित्ता नो विज्जुयाइत्ता.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
गज्जित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता —जाव—

एगे नो गज्जित्ता नो विज्जुयाइत्ता.

चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-

वासित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता,

विज्जुयाइत्ता नामेगे नो वासित्ता,

एगे वासित्ता वि विज्जुयाइत्ता वि,

एगे नो वासित्ता नो विज्जुयाइत्ता.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

वासित्ता नामेगे नो विज्जुयाइत्ता —जाव—

एगे नो वासित्ता नो विज्जुयाइत्ता.

चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-

कालवासी नामेगे नो अकालवासी,

अकालवासी नामेगे नो कालवासी,

एगे कालवासी वि अकालवासी वि,

एगे नो कालवासी नो अकालवासी.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

कालवासी नामेगे नो अकालवासी —जाव—

एगे नो कालवासी नो अकालवासी.

चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-

खेत्तवासी नामेगे नो अखेत्तवासी,

अखेत्तवासी नामेगे नो खेत्तवासी,

एगे खेत्तवासी वि अखेत्तवासी वि,

एगे नो खेत्तवासी नो अखेत्तवासी.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
खेत्तवासी नामेगे नो अखेत्तवासी, —जाव—
एगे नो खेत्तवासी नो अखेत्तवासी.

चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-
जणइत्ता नामेगे नो निम्मवइत्ता,
निम्मवइत्ता नामेगे नो जणइत्ता,
एगे जणइत्ता वि निम्मवइत्ता वि,
एगे नो जणइत्ता नो निम्मवइत्ता.

एवामेव चत्तारि अम्मापियरो पण्णत्ता. तं जहा-
जणइत्ता नामेगे नो निम्मवइत्ता, —जाव—
एगे नो जणइत्ता नो निम्मवइत्ता.

चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-
देसवासी नामेगे नो सव्ववासी,
सव्ववासी नामेगे नो देसवासी,
एगे देसवासी वि सव्ववासी वि,
एगे नो देसवासी नो सव्ववासी.

एवामेव चत्तारि रायाणो पण्णत्ता. तं जहा-
देसाहिवइ नामेगे सव्वाहिवइ, —जाव—
एगे नो देसाहिवइ नो सव्वाहिवइ. १४

३४७ चत्तारि मेहा पण्णत्ता. तं जहा-

पुक्खलसंवट्टए, पज्जुण्णे, जीमूए, जिम्हे.

पुक्खलसंवट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससहस्साइं भावेइ,

पज्जुण्णे णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवाससयाइं भावेइ,

जीमूए णं महामेहे एगेणं वासेणं दसवासाइं भावेइ,

जिम्हे णं महामेहे बहूहिं वासेहिं एगं वासं भावेइ वा, ण वा भावेइ.

३४८ चत्तारि करंडगा पण्णत्ता. तं जहा-

सोवागकरंडए, वेसियाकरंडए,

गाहावइकरंडए, रायकरंडए.

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

सोवागकरंडगसमाणे, वेसियाकरंडगसमाणे,

गाहावइकरंडगसमाणे, रायकरंडगसमाणे. २

३४९ चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-

साले नामेगे सालपरियाए,

साले नामेगे एरंडपरियाए,

एरंडे नामेगे सालपरियाए,

एरंडे नामेगे एरंडपरियाए.

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

साले नामेगे सालपरियाए - जाव -

एरंडे नामेगे एरंडपरियाए.

चत्तारि रुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-

साले नामेगे सालपरिवारे,

साले नामेगे एरंडपरिवारे,

एरंडे नामेगे सालपरिवारे,

एरंडे नामेगे एरंडपरिवारे.

एवामेव चत्तारि आयरिया पण्णत्ता. तं जहा-

साले नामेगे सालपरिवारे —जाव—

एरंडे नामेगे एरंडपरिवारे.

गाहाओ–सालदुममज्झयारे ,

जह साले णाम होइ दुमराया ।

इ य सुंदरआयरिए ,

सुंदरसीसे मुणेयव्वे ॥१॥

एरंडमज्झयारे ,

जह साले णाम होइ दुमराया ।

इ य सुंदरआयरिए ,

मंगुलसीसे मुणेयव्वे ॥२॥

सालदुममज्झयारे ,

एरंडे णाम होइ दुमराया ।

इ य मंगुलआयरिए ,

सुंदरसीसे मुणेयव्वे ॥३॥

एरंडमज्झयारे ,
एरंडे णाम होइ दुमराया ।
इ य मंगुलआयरिए ,
मंगुलसीसे मुणेयव्वे ॥४॥

चत्तारि मच्छा पण्णत्ता. तं जहा-
अणुसोयचारी, पडिसोयचारी,
अंतचारी, मज्झचारी.

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता. तं जहा-
अणुसोयचारी, —जाव— मज्झचारी.

चत्तारि गोला पण्णत्ता. तं जहा-
मधुसित्थगोले, जउगोले, दारुगोले, मट्टियागोले.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
मधुसित्थगोलसमाणे. —जाव— मट्टियागोलसमाणे.

चत्तारि गोला पण्णत्ता. तं जहा-
अयगोले, तउगोले, तंबगोले, सीसगोले.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
अयगोलसमाणे, —जाव— सीसगोलसमाणे.

चत्तारि गोला पण्णत्ता. तं जहा-
हिरण्णगोले, सुवण्णगोले,
रयणगोले, वयरगोले.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
हिरण्णगोलसमाणे, —जाव— वइरगोलसमाणे.

चत्तारि पत्ता पण्णत्ता. तं जहा-
असिपत्ते, करपत्ते, खुरपत्ते, कलंबचीरियापत्ते.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
असिपत्तसमाणे, —जाव—
कलंबचीरियापत्तसमाणे.

चत्तारि कड़ा पण्णत्ता. तं जहा-
सुंबकड़े, विदलकड़े, चम्मकड़े, कंबलकड़े.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
सुंबकड़समाणे —जाव— कंबलकड़समाणे. १६

३५० चउव्विहा चउप्पया पण्णत्ता. तं जहा-
एगखुरा, दुखुरा, गंडीपया, सणप्फया.

चउव्विहा पक्खी पण्णत्ता. तं जहा-
चम्मपक्खी, लोमपक्खी, समुग्गपक्खी, वितत्तपक्खी.

चउव्विहा खुड्डपाणा पण्णत्ता. तं जहा-
बेइंदिया, तेइंदिया,
चउरिंदिया, संमुच्छिम-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया.

३५१ चत्तारि पक्खी पण्णत्ता. तं जहा-
निवत्तित्ता नामेगे नो परिवत्तित्ता,
परिवत्तित्ता नामेगे नो निवत्तित्ता,

एगे निवत्तित्ता वि परिवत्तित्ता वि,
एगे नो निवत्तित्ता नो परिवत्तित्ता.

एवामेव चत्तारि भिक्खागा पण्णत्ता. तं जहा-
निवत्तित्ता नामेगे नो परिवत्तित्ता —जाव—
एगे नो निवत्तित्ता नो परिमत्तित्ता. २

३५२ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
निक्कट्ठे नामेगे निक्कट्ठे,
निक्कट्ठे नामेगे अनिक्कट्ठे,
अनिक्कट्ठे नामेगे निक्कट्ठे,
अनिक्कट्ठे नामेगे अनिक्कट्ठे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
निक्कट्ठे नामेगे निक्कट्ठप्पा, —जाव—
अनिक्कट्ठे नामेगे अनिक्कट्ठप्पा.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
बुहे नामेगे बुहे, बुहे नामेगे अबुहे,
अबुहे नामेगे बुहे, अबुहे नामेगे अबुहे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
बुहे नामेगे बुहहियए —जाव—
अबुहे नामेगे अबुहहियए.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
आयाणुकंपए नामेगे नो पराणुकंपए,

परणुकंपए नामेगे नो आयाणुकंपए,
एगे आयाणुकंपए वि पराणुकंपए वि,
एगे नो आयाणुकंपए नो पराणुकंपए. ५

३५३ चत्तारि संवासे पण्णत्ते. तं जहा-
दिव्वे, आसुरे, रक्खसे, माणुसे.

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते. तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धि संवासं गच्छइ,
देवे नामेगे आसुरीए सद्धि संवासं गच्छइ,
असुरे नामेगे देवीए सद्धि संवासं गच्छइ,
असुरे नामेगे आसुरीए सद्धि संवासं गच्छइ.

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते. तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धि संवासं गच्छइ,
देवे नामेगे रक्खसीए सद्धि संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे देवीए सद्धि संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे रक्खसीए सद्धि संवासं गच्छइ.

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते. तं जहा-
देवे नामेगे देवीए सद्धि संवासं गच्छइ,
देवे नामेगे मणुस्सीहिं सद्धि संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे देवीहिं सद्धि संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे मणुस्सीहिं सद्धि संवासं गच्छइ.

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते. तं जहा-

असुरे नामेगे आसुरीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
असुरे नामेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे आसुरीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छइ.

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते. तं जहा-
असुरे नामेगे आसुरीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
असुरे नामेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे आसुरीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छइ.

चउव्विहे संवासे पण्णत्ते. तं जहा-
रक्खसे नामेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
रक्खसे नामेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे रक्खसीए सद्धिं संवासं गच्छइ,
मणुस्से नामेगे मणुस्सीए सद्धिं संवासं गच्छइ. ७

३५४ चउव्विहे अवद्धंसे पण्णत्ते. तं जहा-
आसुरे, आभिओगे, संमोहे, देवकिब्बिसे.

चउहिं ठाणेहिं जीवा आसुरत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-
कोवसीलयाए, पाहुडसीलयाए,
संसत्ततवोकम्मेणं, निमित्ताऽजीवयाए.

चउहिं ठाणेहिं जीवा आभिओगत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-
अत्तुक्कोसेणं, परपरिवाएणं,
भूइकम्मेणं, कोउयकरणेणं.

भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं,
मइए,
तदट्ठोवओगेणं.

चउहिं ठाणेहिं मेहुणसण्णा समुप्पज्जइ. तं जहा-
चियमंस-सोणिययाए,
मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं,
मइए,
तदट्ठोवओगेणं.

चउहिं ठाणेहिं परिग्गहसण्णा समुप्पज्जइ. तं जहा-
अविमुत्तयाए,
लोभवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं,
मइए,
तदट्ठोवओगेणं. ५

३५७ चउव्विहा कामा पण्णत्ता. तं जहा-
सिंगारा, कलुणा,
बीभत्सा, रोद्दा.
सिंगारा कामा देवाणं,
कलुणा कामा मणुयाणं,
बीभच्छा कामा तिरिक्खजोणियाणं,
रोद्दा कामा णेरइयाणं.

३५८ चत्तारि उदगा पण्णत्ता. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोदए,

उत्ताणे नामेगे गंभीरोदए,
गंभीरे नामेगे उत्ताणोदए,
गंभीरे नामेगे गंभीरोदए.

एवामेव पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणहियए —जाव—
गंभीरे नामेगे गंभीरहियए.

चत्तारि उदगा पण्णत्ता. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी,
उत्ताणे नामेगे गंभीरोभासी,
गंभीरे नामेगे उत्ताणोभासी,
गंभीरे नामेगे गंभीरोभासी.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी —जाव—
गंभीरे नामेगे गंभीरोभासी.

चत्तारि उदहि पण्णत्ते. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोदही,
उत्ताणे नामेगे गंभीरोदही,
गभीरे नामेगे उत्ताणोदही,
गंभीरे नामेगे गंभीरोदही.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणहियए, —जाव—

चउहिं ठाणेहिं जीवा सम्मोहत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-

उम्मग्गदेसणाए, मग्गंतराएणं,

कामासंसप्पओगेणं, भिज्जानियाणकरणेणं.

चउहिं ठाणेहिं जीवा देवकिव्विसियत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-

अरहंताणं अवण्णं वयमाणे,

अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वयमाणे,

आयरियउ-वज्झायाणं अवण्णं वयमाणे,

चाउवण्णस्स संघस्स अवण्णं वयमाणे. ५

३५५ चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

इहलोग-पड़िबद्धा, परलोग-पड़िबद्धा,

दुहओ लोगपड़िबद्धा, अपड़िबद्धा.

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

पुरओ पड़िबद्धा, दुहओ पड़िबद्धा,

मग्गओ पड़िबद्धा, अपड़िबद्धा.

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

ओवायपव्वज्जा, अक्खायपव्वज्जा,

संगारपव्वज्जा, विहगगइपव्वज्जा.

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

तुयावइत्ता, पुयावइत्ता,

मोयावइत्ता, परिपूयावइत्ता.

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

नड़खइया, भड़खइया,

सीहखइया, सीयालखइया.

चउव्विहा किसी पण्णत्ता. तं जहा-

वाविया, परिवाविया,

निंदिया, परिणिंदिया.

एवामेव चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

वाविया — जाव — परिणिंदिया.

चउव्विहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

धण्णपुंजियसमाणा, धण्णविरल्लियसमाणा,

धण्णविक्खित्तसमाणा, धण्णसंकट्टियसमाणा. ८

३५६ चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

आहारसण्णा, भयसण्णा,

मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा.

चउहिं ठाणेहिं आहारसण्णा समुप्पज्जइ. तं जहा-

ओमकोट्ठयाए,

छुहावेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं,

मइए,

तदट्ठोवओगेणं.

चउहिं ठाणेहिं भयसण्णा समुप्पज्जइ. तं जहा-

हीणसत्तत्ताए,

गंभीरे नामेगे गंभीरहियए.

चत्तारि उदही पण्णत्ते. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी,
उत्ताणे नामेगे गंभीरोभासी,
गंभीरे नामेगे उत्ताणोभासी,
गंभीरे नामेगे गंभीरोभासी.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
उत्ताणे नामेगे उत्ताणोभासी —जाव—
गंभीरे नामेगे गंभीरोभासी. ८

३५९ चत्तारि तरगा पण्णत्ता. तं जहा-
समुद्दं तरामीतेगे समुद्दं तरइ,
समुद्दं तरामीतेगे गोप्पयं तरइ,
गोप्पयं तरामीतेगे समुद्दं तरइ,
गोप्पयं तरामितेगे गोप्पयं तरइ.

चत्तारि तरगा पण्णत्ता. तं जहा-
समुद्दं तरित्ता नामेगे समुद्दे विसीयइ,
समुद्दं तरेत्ता नामेगे गोप्पए विसीयइ,
गोप्पयं तरित्ता नामेगे समुद्दे विसीयइ,
गोप्पयं तरित्ता नामेगे गोप्पए विसीयइ. २

३६० चत्तारि कुंभा पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णे, पुण्णे नामेगे तुच्छे,
तुच्छे नामेगे पुण्णे, तुच्छे नामेगे तुच्छे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णे, —जाव—
तुच्छे नामेगे तुच्छे.

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णोभासी,
पुण्णे नामेगे तुच्छोभासी,
तुच्छे नामेगे पुण्णोभासी,
तुच्छे नामेगे तुच्छोभासी.

एवं चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णोभासी, —जाव—
तुच्छे नामेगे तुच्छोभासी.

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे नामेगे पुण्णरूवे, पुण्णे नामेगे तुच्छरूवे,
तुच्छे नामेगे पुण्णरूवे, तुच्छे नामेगे तुच्छरूवे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्ण नामेगे पुण्णरूवे, —जाव—
तुच्छे नामेगे तुच्छरूवे.

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे वि एगे पियट्ठे, पुण्णे वि एगे अवदले,
तुच्छे वि एगे पियट्ठे, तुच्छे वि एगे अवदले.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

पुण्णे वि एगे पियट्ठे, —जाव—
तुच्छे वि एगे अवदले.

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे वि एगे विस्संदइ,
पुण्णे वि एगे नो विस्संदइ,
तुच्छे वि एगे विस्संदइ,
तुच्छे वि एगे नो विस्संदइ.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
पुण्णे वि एगे विस्संदइ, —जाव—
तुच्छे वि एगे नो विस्संदइ.

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता. तं जहा-
भिण्णे, जज्जरिए,
परिस्साइ, अपरिस्साइ.

एवामेव चउव्विहे चरित्ते पण्णत्ते. तं जहा-
भिण्णे —जाव— अपरिस्साइ.

चत्तारि कुंभा पण्णत्ता. तं जहा-
महुकुंभे नामेगे महुपिहाणे,
महुकुंभे नामेगे विसपिहाणे,
विसकुंभे नामेगे महुपिहाणे,
विसकुंभे नामेगे विसपिहाणे.

एवामेव चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

महुकुंभे नामेगे महुपिहाणे, —जाव—
विसकुंभे नामेगे विसपिहाणे. १४

गाहाओ–हिययमपावमकलुसं ,
जीहा वि य महुरभासिणी निच्चं ।
जंमि पुरिसंमि विज्जइ ,
से महुकुंभे महुपिहाणे ॥१॥
हिययमपावमकलुसं ,
जीहा वि य कडुयभासिणी निच्चं ।
जंमि पुरिसंमि विज्जइ ,
से महुकुंभे विसपिहाणे ॥२॥
जं हिययं कलुसमयं ,
जीहा वि य महुरभासिणी निच्चं ।
जंमि पुरिसंमि विज्जइ ,
से विसकुंभे महुपिहाणे ॥३॥
जं हिययं कलुसमयं ,
जीहा वि य कडुयभासिणी निच्चं ।
जंमि पुरिसंमि विज्जइ ,
से विसकुंभे विसपिहाणे ॥४॥

३६१ चउव्विहा उवसग्गा पण्णत्ता. तं जहा-
दिव्वा, माणुसा,
तिरिक्खजोणिया, आयसंचेयणिज्जा.

दिव्वा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

हासा, पाओसा,

वीमंसा, पुढोवेमाया.

माणुस्सा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

हासा, पाओसा,

वीमंसा, कुसीलपड़िसेवणया.

तिरिक्खजोणिया उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

भया, पओसा,

आहारहेउं, अवच्चलेणसारक्खणया.

आयसंचेयणिज्जा उवसग्गा चउव्विहा पण्णत्ता. तं जहा-

घट्टणया, पवड़णया,

थंभणया, लेसणया. ५

३६२ चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

सुभे नामेगे सुभे, सुभे नामेगे असुभे,

असुभे नामेगे सुभे, असुभे नामेगे असुभे.

चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

सुभे नामेगे सुभविवागे,

सुभे नामेगे असुभविवागे,

असुभे नामेगे सुभविवागे,

असुभे नामेगे असुभविवागे,

चउव्विहे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

पयडिकम्मे, ठिइकम्मे,
अणुभावकम्मे, पएसकम्मे. ३

३६३ चउव्विहे संघे पण्णत्ते. तं जहा-
समणा, समणीओ,
सावगा, सावियाओ.

३६४ चउव्विहा बुद्धी पण्णत्ता. तं जहा-
उप्पत्तिया, वेणइया,
कम्मिया, परिणामिया.

चउव्विहा मई पण्णत्ता. तं जहा-
उग्गहमई, ईहामई,
अवायमई, धारणामई.

अहवा चउव्विहा मई पण्णत्ता. तं जहा-
अरंजरोदगसमाणा, वियरोदगसमाणा,
सरोदगसमाणा, सागरोदगसमाणा. ३

३६५ चउव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-
नेरइया, तिरिक्खजोणीया,
मणुस्सा, देवा.

चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-
मणजोगी, वयजोगी,
कायजोगी, अजोगी.

अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

इत्थिवेयगा, पुरिसवेयगा,
नपुंसकवेयगा, अवेयगा.

अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-
चक्खुदंसणी, अचुक्खुदंसणी,
ओहिदंसणी, केवलदंसणी.

अहवा चउव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-
संजया, असंजया,
संजयासंजया, नो संजया नो असंजया. ५

३६६ चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
मित्ते नामेगे मित्ते, मित्ते नामेगे अमित्ते,
अमित्ते नामेगे मित्ते, अमित्ते नामेगे अमित्ते.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
मित्ते नामेगे मित्तरूवे, —जाव—
अमित्ते नामेगे अमित्तरूवे.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
मुत्ते नामेगे मुत्ते, मुत्ते नामेगे अमुत्ते,
अमुत्ते नामेगे मुत्ते, अमुत्ते नामेगे अमुत्ते.

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-
मुत्ते नामेगे मुत्तरूवे, —जाव—
अमुत्ते नामेगे अमुत्तरूवे. ४

३६७ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया चउगइया चउआगइया पण्णत्ता.
तं जहा-

पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु
उववज्जमाणा नेरइएहिंतो वा,
तिरिक्खजोणिएहिंतो वा,
मणुस्सेहिंतो वा,
देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा.
से चेव णं से पंचिंदियतिरिक्खजोणिए पंचिंदियतिरिक्ख-
जोणियत्तं विप्पजहमाणे नेरइयत्ताए वा,
तिरिक्खजोणियत्ताए वा,
मणुस्सयत्ताए वा,
देवत्ताए वा उवागच्छेज्जा.

मणुस्सा चउगइआ चउआगइआ पण्णत्ता. तं जहा-
मणुस्सा मणुस्सेसु उववज्जमाणा-
नेरइएहिंतो वा,
तिरिक्खजोणिएहिंतो वा,
मणुस्सेहिंतो वा,
देवेहिंतो वा उववज्जेज्जा.
से चेव णं से मणुस्से मणुस्सत्तं विप्पजहमाणे-
नेरइयत्ताए वा,
तिरिक्खजोणियत्ताए वा,
मणुस्सयत्ताए वा,
देवत्ताए वा उवागच्छेज्जा. २

३६८ बेइंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स चउविहे संजमे कज्जइ.
तं जहा-
जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवित्ता भवइ,
जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवइ,
फासमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,
फासमएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवइ.

बेइंदियाणं जीवा समारभमाणस्स चउव्विहे असंजमे कज्जइ.
तं जहा-
जिब्भामयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ,
जिब्भामएणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवइ,
फासमयाओ सोक्खाओ ववरोवित्ता भवइ,
फासमएणं दुक्खेणं संजोगित्ता भवइ. २

३६९ सम्मद्दिट्ठियाणं नेरइयाणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ता.
तं जहा-
आरंभिया, परिग्गहिया,
मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया.

सम्मद्दिट्ठियाणं असुरकुमाराणं चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ.
तं जहा-
आरंभिया —जाव— अपच्चक्खाणकिरिया.
एवं विगलिंदियवज्जं —जाव— वेमाणियाणं.

३७० चउहिं ठाणेहिं संते गुणे नासेज्जा. तं जहा-

कोहेणं, पडिनिसेवेणं,
अकयण्णुयाए, मिच्छत्ताभिनिवेसेणं.

चउहिं ठाणेहिं संते गुणे दीवेज्जा. तं जहा-
अब्भासवत्तियं, परच्छंदाणुवत्तियं,
कज्जहेउं, कयपडिकइएइ वा. २

३७१ नेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं सरीरुप्पत्ती सिया. तं जहा-
कोहेणं, माणेणं,
माणयाए, लोभेणं.
एवं —जाव— वेमाणियाणं.

नेरइयाणं चउहिं ठाणेहिं निव्वत्तिए सरीरे पण्णत्ते. तं जहा-
कोहनिव्वत्तिए, — जाव — लोभनिव्वत्तिए.
एवं —जाव— वेमाणियाणं २

३७२ चत्तारि धम्मदारा पण्णत्ता. तं जहा-
खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे.

३७३ चउहिं ठाणेहिं जीवा नेरइयत्ताए कम्मं पकरेंति. तं जहा-
महारंभयाए, महापरिग्गहयाए,
पंचिंदियवहेणं, कुणिमाहारेणं.

चउहिं ठाणेहिं जीवा तिरिक्खजोणियत्ताए कम्मं पगरेंति.
तं जहा-
माइल्लयाए, नियडिल्लयाए,
अलियवयणेणं, कूडतुलकूडमाणेणं.

चउहिं ठाणेहिं जीवा मणुस्सत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-
पगइभद्दयाए, पगइविणीययाए,
साणुक्कोसयाए, अमच्छरियाए.

चउहिं ठाणेहिं जीवा देवाउयत्ताए कम्मं पगरेंति. तं जहा-
सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं,
बालतवोकम्मेणं, अकामणिज्जराए. ४

३७४ चउव्विहे वज्जे पण्णत्ते. तं जहा-
तते, वितते, घणे, झुसिरे.

चउव्विहे नट्टे पण्णत्ते. तं जहा-
अंचिए, रिभिए, आरभडे, भिसोले.

चउव्विहे गेए पण्णत्ते. तं जहा-
उक्खित्तए, पत्तए, मंदए, रोविंदए.

चउव्विहे मल्ले पण्णत्ते. तं जहा-
गंथिमे, वेढिमे, पूरिमे, संघातिमे.

चउव्विहे अलंकारे पण्णत्ते. तं जहा-
केसालंकारे, वत्थालंकारे,
मल्लालंकारे, आभरणालंकारे.

चउव्विहे अभिणए पण्णत्ते. तं जहा-
दिट्ठंतिए, पांडुसुए,
सामंतोवायणिए, लोगमज्झावसिए. ६

३७५ सणंकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा चउवण्णा पण्णत्ता. तं जहा-

नीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किला.

महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारिणिज्जा सरीरगा उक्कोसणं चत्तारि रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. २

३७६ चत्तारि उदकगब्भा पण्णत्ता. तं जहा-

उस्सा, महिया, सीया, उसिणा.

चत्तारि उदकगब्भा पण्णत्ता. तं जहा-

हेमगा, अब्भसंथड़ा, सीयोसिणा, पंचरूविया.

गाहा–माहे उ हेमगा गब्भा, फग्गुणे अब्भसंथड़ा ।
सीयोसिणा उ चित्ते, वइसाहे पंचरूविया ।।१।।

३७७ चत्तारि माणुस्सीगब्भा पण्णत्ता. तं जहा-

इत्थित्ताए, पुरिसत्ताए,
नपुंसगत्ताए, बिबत्ताए.

गाहाओ–अप्पं सुक्कं बहुं ओयं, इत्थि तत्थ पजायइ ।
अप्पं ओयं बहुं सुक्कं, पुरिसो तत्थ पजायइ ।।१।।
दोण्हंपि रत्तसुक्काणं, तुल्लभावे नपुंसओ ।
इत्थीओ अ समाओगे, बिबं तत्थ पजायइ ।।२।।

३७८ उप्पायपुव्वस्स णं चत्तारि मूलवत्थू पण्णत्ता.

३७९ चउव्विहे कव्वे पण्णत्ता. तं जहा-

गज्जे, पज्जे, कत्थे, गेए.

३८० नेरइयाणं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता. तं जहा-

वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए,
मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए.
एवं वाउक्काइयाण वि.

३८१ अरिहंतो णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणमजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसण्णिवाइणं जिणो इव अवितथवागरमाणा उक्कोसिया चउद्दसपुव्विसंपया हुत्था.

३८२ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया हुत्था.

३८३ हेट्ठिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता. तं जहा-

सोहम्मे, ईसाणे, सणंकुमारे, माहिंदे.

मज्झिल्ला चत्तारि कप्पा पड़िपुण्णचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता. तं जहा-

बंभलोगे, लंतए, महासुक्के, सहस्सारे.

उवरिल्ला चत्तारि कप्पा अद्धचंदसंठाणसंठिया पण्णत्ता. तं जहा-

आणए, पाणए, आरणे, अच्चुए. ३

३८४ चत्तारि समुद्दा पत्तेयरसा पण्णत्ता. तं जहा-

लवणोदे, वरुणोदे, खीरोदे, घतोदे.

३८५ चत्तारि आवत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

खरावत्ते, उण्णयात्ते, गूढावत्ते, आमिसावत्ते.

एवामेव चत्तारि कसाया पण्णत्ता. तं जहा-

खरावत्तसमाणे कोहे,

उण्णयावत्तसमाणे माणे,

गूढावत्तसमाणा माया,

आमिसावत्तसमाणे लोभे.

खरावत्तसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे कालं करेइ नेर-इएसु उवज्जइ,

उण्णयावत्तसमाणं माणं एवं चेव.

गूढावत्तसमाणं मायं एवं चेव.

आमिसावत्तसमाणं लोभं एवं चेव. २

३८६ अणुराहानक्खत्ते चउ तारे पण्णत्ते.

पुव्वासाढे एवं चेव,

उत्तरासाढे एवं चेव. ३

३८७ जीवाणं चउट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा, चिणिंति वा, चिणिस्संति वा.

नेरइयणिव्वत्तिए, तिरिक्खजोणियणिव्वत्तिए,

मणुस्सणिव्वत्तिए, देवणिव्वत्तिए.

एवं उवचिणिंसु वा, उवचिणंति वा, उवचिणिस्संति वा.

एवं चिय-उवचिय-बंध-उदीर-वेय-तह-निज्जरे चेव.

३८८ चउपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता.

चउपएसोगाढा पोग्गला अणंता.

चउसमयट्ठिइया पोग्गला अणंता.

चउगुणकालगा पोग्गला अणंता —जाव— चउगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता.

पंचट्ठाणं

पंचट्ठाणस्स पढमो उद्देसो

३८९ पंच महव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं.

सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं,

सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं,

सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं,

सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं.

पंचाणुव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं,

थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं,

थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं,

सदारसंतोसे,

इच्छापरिमाणे. २

३९० पंच वण्णा पण्णत्ता. तं जहा-

किण्हा, —जाव— सुक्किल्ला.

पंच रसा पण्णत्ता. तं जहा-

तित्ता, —जाव— महुरा.

पंच कामगुणा पण्णत्ता. तं जहा-

सद्दा, रूवा, गंधा, रसा, फासा.

पंचहिं ठाणेहिं जीवा सज्जंति. तं जहा-

सद्देहिं, —जाव— फासेहिं.

एवं रज्जंति, मुच्छंति, गिज्झंति, अज्झोववज्जंति.

पंचहिं ठाणेहिं जीवा विणिघायमावज्जंति. तं जहा-

सद्देहिं, —जाव— फासेहिं.

पंच ठाणा अपरिण्णाया जीवाणं अहियाए असुभाए अखमाए अणिस्सेयाए अणाणुगामियत्ताए भवंति. तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा.

पंच ठाणा सुपरिण्णाया जीवाणं हियाए सुभाए —जाव— आणुगामियत्ताए भवंति. तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा.

पंच ठाणा अपरिण्णाया जीवाणं दुग्गइगमणाए भवंति. तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा.

पंच ठाणा सुपरिण्णाया जीवाणं सुग्गइगमणाए भवंति. तं जहा-

सद्दा —जाव— फासा. १३

३९१ पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइं गच्छंति. तं जहा-

पाणाइवाएणं, —जाव— परिग्गहेणं.

मियाइं पहीणसेउयाइं पहीणगुत्तागाराइं उच्छिण्णसामियाइं उच्छिण्णसेउयाइं उच्छिण्णगुत्तागाराइं जाइं इमाइं गामागर-नगर-खेड-कव्वड-दोणमुह-पट्टणासम-संबाह-सण्णिवेसेसु सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु नगरणिद्धमणेसु सुसाण-सुण्णागार-गिरि-कंदर-संति-सेलोवट्ठावण-भवणगिहेसु संणिक्खित्ताइं चिट्ठंति ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए खंभाएज्जा.

इच्चेहिं पंचहिं ठाणेहिं ओहिदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए खंभाएज्जा.

पंचहिं ठाणेहिं केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए नो खंभाएज्जा. तं जहा-

अप्पभूयं वा पुढविं पासित्ता तप्पढमयाए नो खंभेज्जा,
सेसं तहेव —जाव— भवणगिहेसु संणिक्खित्ताइं चिट्ठंति,
ताइं वा पासित्ता तप्पढमयाए नो खंभाएज्जा.
इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिउकामे तप्पढमयाए नो खंभाएज्जा. २

३९५ नेरइयाणं सरीरगा पंचवण्णा पंचरसा पण्णत्ता. तं जहा-

किण्हा —जाव— सुक्किला.
तित्ता —जाव— महुरा.
एवं निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं.

पंच सरीरगा पण्णत्ता. तं जहा-

ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए.

ओरालिएसरीरे पंचवण्णे पंचरसे पण्णत्ते. तं जहा-

किण्हे —जाव— सुक्किल्ले.

तित्ते —जाव— महुरे.

एवं ओरालिएसरीरे —जाव— कम्मगसरीरे.

सव्वे वि णं बादरबोंदिधरा कलेवरा पंचवण्णा, पंचरसा, दुगंधा, अट्ठफासा. ७

३६६ पंचहिं ठाणेहिं पुरिम-पच्छिमगाणं जिणाणं दुग्गमं भवइ. तं जहा-

दुआइक्खं, दुविभज्जं, दुपस्सं, दुइतिक्खं, दुरणुचरं.

पंचहिं ठाणेहिं मज्झिमगाणं जिणाणं सुगमं भवइ. तं जहा-

सुआइक्खं, सुविभज्जं, सुपस्सं, सुइतिक्खं, सुरणुचरं.

पंच ठाणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं निच्चं वण्णियाइं, निच्चं कित्तियाइं, निच्चं वुइयाइं, निच्चं पसत्थाइं, निच्चमब्भणुण्णायाइं भवंति. तं जहा-

खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे.

पंच ठाणाइं समणेणं भगवया महावीरेणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति. तं जहा-

सच्चे, संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे.

पंच ठाणाइं समणाणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति. तं जहा-

उक्खित्तचरए,
निक्खित्तचरए,
अंतचरए,
पंतचरए,
लूहचरए.

पंच ठाणाइं समणाणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति. तं जहा-

अण्णाएचरए,
अण्णइलायचरए,
मोणचरए,
संसट्ठकप्पिए,
तज्जातसंसट्ठकप्पिए.

पंच ठाणाइं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति. तं जहा-

उवनिहिए,
सुद्धेसणिए,
संखादत्तिए,
दिट्ठलाभिए,
पुट्ठलाभिए.

पंच ठाणाइं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति. तं जहा-

आयंबिलिए,
निव्वियए,
पुरिमड्ढिए,

परिमिए,

पिंडवाइए,

भिण्णपिंडवाइए.

पंच ठाणाइं समणाणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति.

तं जहा-

अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे, लूहाहारे.

पंच ठाणाइं समणाणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति.

तं जहा-

अरसजीवी, विरसजीवी, अंतजीवी, पंतजीवी, लूहजीवी.

पंच ठाणाइं समणाणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति.

तं जहा-

ठाणाइए,

उक्कडुआसणिए,

पडिमट्ठाइ,

वीरासणिए,

नेसज्जिए.

पंच ठाणाइं समणाणं —जाव— अब्भणुण्णायाइं भवंति.

तं जहा-

दंडायतिए,

लगंडसाइ,

आयावए,

अवाउडए,

अकंडूयए. १२

३९७ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ. तं जहा-

अगिलाए आयरिय-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए उवज्झाय-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए थेर-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए तवस्सी-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए गिलाण-वेयावच्चं करेमाणे.

पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ. तं जहा-

अगिलाए सेह-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए कुल-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए गण-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए संघ-वेयावच्चं करेमाणे,

अगिलाए साहम्मिय-वेयावच्चं करेमाणे. २

३९८ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहम्मियं संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे नाइक्कमइ. तं जहा-

सकिरियट्ठाणं पडिसेवित्ता भवइ,

पडिसेवित्ता नो आलोएइ,

आलोइत्ता नो पट्ठवेइ,

पट्ठवेत्ता नो निव्विसइ,

जाइं इमाइं थेराणं ठिइपकप्पाइं भवंति, ताइं अतियंचिय

अतियंचिय पड़िसेवेइ से हंद हं पड़िसेवामि किं मे थेरा--
करिस्संति. ?

पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे साहम्मियं पारंचियं करेमाणे
नाइक्कमइ. तं जहा-

सकुले वसइ सकुलस्स भेदाए अब्भुट्ठित्ता भवइ,
गणे वसइ गणस्स भेदाए अब्भुट्ठित्ता भवइ,
हिंसप्पेही,
छिद्दप्पेही,
अभिक्खणं पसिणाययणाइं पउंजित्ता भवइ. २

आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि पंच वुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता.
तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आणं वा, धारणं वा नो
सम्मं पउंजेत्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि अहाराइणियाए किइकम्मं
नो सम्मं पउंजित्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि जे सुत्तपज्जवजाए धारेंति
ते काले काले नो सम्मं अणुप्पवाइत्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि गिलाण-सेह-वेयावच्चं नो
सम्ममब्भुट्ठित्ता भवइ,
आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि अणापुच्छियचारी या वि
भवइ नो आपुच्छियचारी.

आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि पंच अवुग्गहट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आणं वा, धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि अहारायणियाए सम्मं किइकम्मं पउंजित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि जे सुयपज्जवजाए धारेइ ते काले काले सम्मं अणुप्पवाइत्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि गिलाण-सेह-वेयावच्चं सम्मं अब्भुट्ठित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए णं गणंसि आपुच्छियचारी यावि भवइ नो अणापुच्छियचारी. २

४०० पंच निसिज्जाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

उक्कुडुई,

गोदोहिया,

समपायपुता,

पलियंका,

अद्धपलियंका.

पंच अज्जवट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

साहु-अज्जवं,

साहु-मद्दवं,

साहु-लाघवं,

साहु-खंती,

साहु-मुत्ती. २

४०१ पंचविहा जोइसिया पण्णत्ता. तं जहा-

चंदा, सूरा, गहा, नक्खत्ता, ताराओ.

पंचविहा देवा पण्णत्ता. तं जहा-

भवियदव्वदेवा,

नरदेवा,

धम्मदेवा,

देवाहिदेवा,

भावदेवा. २

४०२ पंचविहा परियारणा पण्णत्ता. तं जहा-

काय-परियारणा,

फास-परियारणा,

रूव-परियारणा,

सद्द-परियारणा,

मण-परियारणा.

४०३ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

काली, राई, रयणी, विज्जू, मेहा.

बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

सुभा, निसुभा, रंभा, निरंभा, मयणा. २

४०४ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो पंच संगामिया अणिया पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणिए,
पीढाणिए,
कुंजराणिए,
महिसाणिए,
रहाणिए.

दुमे पायत्ताणियाहिवई,
सोदामी आसराया पीढाणियाहिवई,
कुंथू हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,
लोहियक्खे महिसाणियाहिवई,
किण्णरे रहाणियाहिवई.

बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो पंच संगामिया-अणिया, पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणिए —जाव— रहाणिए.
महद्दुमे पायत्ताणियाहिवई,
महा सोदामो आसराया पीढाणियाहिवई,
मालंकारो हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,
महा लोहिअक्खो महिसाणियाहिवई,
किंपुरिसे रहाणियाहिवई.

धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो पंच संगामिया

अणिया, पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— रहाणीए.

भद्दसेणे पायत्ताणियाहिवई,

जसोधरे आसराया पीढाणियाहिवई,

सुदंसणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,

नीलकंठे महिसाणियाहिवई,

आणंदे रहाणियाहिवई.

भूयाणंदस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो पंच संगामिया-अणिया, पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणीए —जाव— रहाणीए.

दक्खे पायत्ताणियाहिवई,

सुग्गीवे आसराया पीढाणियाहिवई,

सुविक्कमे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,

सेयकंठे महिसाणियाहिवई,

नंदुत्तरे रहाणियाहिवई.

वेणुदेवस्स णं सुवण्णिंदस्स सुवण्णकुमाररण्णो पंच संगामिया-अणिया, पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणीए —जाव— रहाणिए.

सेसं जहा धरणस्स तहा वेणुदेवस्स वि,

वेणुदालियस्स जहा भूयाणंदस्स,

जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं —जाव— घोसस्स,

जहा भूयाणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं —जाव—
महाघोसस्स,

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— रहाणिए.
हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवई,
वाऊ आसराया पीढाणियाहिवई,
एरावणे हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,
दामड्ढी उसभाणियाहिवई,
माढरो रहाणियाहिवई.

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो पंच संगामिया अणिया, पंच संगामियाणियाहिवई पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— रहाणिए.
लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवई,
महावाऊ आसराया पीढाणियाहिवई,
पुप्फदंते हत्थिराया कुंजराणियाहिवई,
महादामड्ढी उसभाणियाहिवई,
महामाढरे रहाणियाहिवई.

जहा सक्कस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं —जाव—
आरणस्स.

जहा ईसाणस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं —जाव—
अच्चुयस्स.

निब्भंछेइ वा, वंधइ वा, रुंभइ वा, छविच्छेयं करेइ वा, पमारं वा नेइ, उद्दवेइ वा, वत्थं वा, पड़िग्गहं वा, कंवलं वा, पायपुंछणं अच्छिंदइ वा, विच्छिदइ वा, भिंदइ वा, अवहरइ वा,

जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेणं मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, तहेव —जाव— अवहरइ वा,

ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उइण्णे भवइ तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा —जाव— अवहरइ वा,

ममं च णं सम्ममसहमाणस्स अखममाणस्स अतितिक्खमाणस्स अणहियासमाणस्स किं मण्णे कज्जइ ? एगंतसो मे पावे कम्मे कज्जइ,

ममं च णं सम्मं सहमाणस्स —जाव— अहियासेमाणस्स किं मण्णे कज्जइ ? एगंतसो मे निज्जरा कज्जइ.

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं छउमत्थे उदिण्णे परीसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा — जाव — अहियासेज्जा.

पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा —जाव— अहियासेज्जा. तं जहा-

खित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,

दित्तचित्ते खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,

जक्खाइट्ठे खलु अयं पुरिसे तेण मे एस पुरिसे

अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,

ममं च णं तब्भववेयणिज्जे कम्मे उदिण्णे भवइ तेण मे एस पुरिसे अक्कोसइ वा, —जाव— अवहरइ वा,

ममं च णं सम्मं सहमाणं खममाणं तितिक्खमाणं अहियासेमाणं पासेत्ता वहवे अण्णे छउमत्था समणा निग्गंथा उदिण्णे परीसहोवसग्गे एवं सम्मं सहिस्संति वा —जाव— अहियासिस्संति वा.

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं केवली उदिण्णे परिसहोवसग्गे सम्मं सहेज्जा —जाव— अहियासेज्जा. २

४१० पंच हेऊ पण्णत्ता. तं जहा-

हेउं न जाणइ,

हेउं न पासइ,

हेउं न वुज्झइ,

हेउं नाभिगच्छइ,

हेउं अण्णाणमरणं मरइ.

पंच हेऊ पण्णत्ता. तं जहा-

हेउणा न जाणइ —जाव— हेउणा अण्णाणमरणं मरइ.

पंच हेऊ पण्णत्ता. तं जहा-

हेउं जाणइ —जाव— हेउं छउमत्थमरणं मरइ.

पंच हेऊ पण्णत्ता. तं जहा-

हेउणा जाणइ —जाव— हेउणा छउमत्थ-मरणं मरइ.

पंच अहेऊ पण्णत्ता. तं जहा-

अहेउं न जाणइ —जाव— अहेउं छउमत्थ-मरणं मरइ.

पंच अहेऊ पण्णत्ता. तं जहा-

अहेउणा न जाणइ —जाव— अहेउणा छउमत्थ-मरणं मरइ.

पंच अहेऊ पण्णत्ता. तं जहा-

अहेउं जाणइ —जाव— अहेउं केवलि-मरणं मरइ.

पंच अहेऊ पण्णत्ता. तं जहा-

अहेउणा जाणइ —जाव— अहेउणा केवलि-मरणं मरइ.

केवलिस्स णं पंच अणुत्तरा पण्णत्ता. तं जहा-

अणुत्तरे नाणे,
अणुत्तरे दंसणे,
अणुत्तरे चरित्ते,
अणुत्तरे तवे,
अणुत्तरे वीरिए. ९

४११ पउमप्पहे णं अरहा पंचचित्ते हुत्था पण्णत्ता. तं जहा-

चित्ताहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,
चित्ताहिं जाए,
चित्ताहिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,

चित्ताहिं अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पड़िपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे,
चित्ताहिं परिणिव्वुए.

पुप्फदंते णं अरहा पंचमूले हुत्था.
मूलेणं चूए चइत्ता गब्भंवक्कंते,
मूलेहिं जाए,
मूलेणं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,
मूलेहिं अणंते —जाव— केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे
मूलेहिं समुप्पण्णे परिनिव्वुए.

एवमेएणं अभिलावेणं इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ.
पउमप्पभस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स ।
पुव्वाइं आसाढा, सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवया ॥१॥
रेवइया अणंतजिणो, पूसो धम्मस्स संतिणो भरणी ।
कुंथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तह रेवइओ य ॥२॥
मुणिसुव्वयस्स सवणो,
आसिणि नमिणो य नेमिणो चित्ता ।
पासस्स विसाहाओ, पंच य हत्थुत्तरो वीरो ॥३॥

समणे भगवं महावीरे पंच हत्थुत्तरे होत्था.
हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,
हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए,
हत्थुत्तराहिं जाए,

हत्थुत्तराहिं मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए,
हत्थुत्तराहिं अणंते अणुत्तरे —जाव— केवलवरनाण-
दंसणे समुप्पण्णे. १४

पंचट्ठाणस्स बीओ उद्देसो

४१२ नो कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा इमाओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वियंजियाओ पंच महण्णवाओ महाणईओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा, तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा, संतरित्तए वा. तं जहा-

गंगा, जउणा, सरऊ, एरावइ, मही.

पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ. तं जहा-

भयंसि वा,
दुब्भिक्खंसि वा,
पव्वहेज्ज व णं कोइ,
दओघंसि वा एज्जमाणंसि महया वा,
अणारिएसु. २

४१३ नो कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जित्तए.

पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ. तं जहा-

भयंसि वा —जाव — अणारिएहिं.

वासावासं पज्जोसवियाणं नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा गामाणुगामं दुइज्जित्तए.

पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ. तं जहा-

नाणट्ठयाए,

दंसणट्ठयाए,

चरित्तट्ठयाए,

आयरिय-उवज्झाया वा से वीसुंभेज्जा,

आयरिय-उवज्झायाण वा बहिया वेयावच्चं करणयाए. २

४१४ पंच अणुग्घाइया पण्णत्ता. तं जहा-

हत्थकम्मं करेमाणे,

मेहुणं पड़िसेवेमाणे,

राइभोयणं भुंजेमाणे,

सागारियपिड़ं भुंजेमाणे,

रायपिंडं भुंजेमाणे.

४१५ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे रायंतेउरं अणुपविसमाणे नाइक्कमइ. तं जहा-

नगरं सिया सव्वओ समंता गुत्ते गुत्तदुवारे, बहवे समण-माहणा नो संचाएइ भत्ताए वा, पाणाए वा, निक्खमित्तए वा, पविसित्तए वा, तेसिं विण्णवणट्ठयाए रायंतेउरं अणुपवेसेज्जा,

पाड़िहारियं वा पीढफलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणमाणे रायंतेउरं अणुपवेसेज्जा,

हयस्स वा, गयस्स वा, दुट्ठस्स आगच्छमाणस्स भीए रायंतेउरं अणुप्पवेसेज्जा,

परो व णं सहसा वा, बलसा वा बाहाए गहाए अंतेउरं अणुप्पवेसेज्जा,

बहिया णं आरामगयं वा, उज्जाणगयं वा रायंतेउरजणो सव्वओ समंता संपरिक्खिवित्ता णं निव्विसेज्जा,

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे रायंतेउरं अणुपविसमाणे णाइक्कमइ.

४१६ पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि असंवसमाणी वि गब्भं धरेज्जा. तं जहा-

इत्थी दुव्वियड़ा दुण्णिसण्णा सुक्कपोग्गले अहिट्ठिज्जा,

सुक्कपोग्गलसंसिट्ठे व से वत्थे अंतो जोणीए अणुपवेसेज्जा,

सइं वा सा सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा,

परो व से सुक्कपोग्गले अणुपवेसेज्जा,

सीओदगवियड़ेण वा से आयममाणीए सुक्कपोग्गला अणुपवेसेज्जा.

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेणसद्धि असंवसमाणि वि गब्भं धरेज्जा.

पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि संवसमाणी वि गब्भं नो धरेज्जा. तं जहा-

अप्पत्तजोवणा,

अइक्कंतजोवणा,

जाइवंझा,

गेलण्णपुट्ठा,

दोमणंसिया.

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं — जाव — नो धरेज्जा.

पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि संवसमाणी वि नो गब्भं धरेज्जा. तं जहा-

निच्चोउया,

अणोउया,

वावण्णसोया,

वाविद्धसोया,

अणंगपड़िसेवणी.

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि संवसमाणी वि गब्भं नो धरेज्जा.

पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि संवसमाणी वि नो गब्भं धरेज्जा. तं जहा-

उउंमि नो निगामपडिसेविणी यावि भवइ,

समागया वा से सुक्कपोग्गला पडिविद्धंसइ,

उदिण्णो वा से पित्तसोणिए,

पुरा वा देवकम्मुणा,

पुत्तफले वा नो निद्दिट्ठे भवइ.

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं इत्थी पुरिसेण सद्धि संवसमाणी वि

गब्भं नो धरेज्जा. ४

४१७ पंचहि ठाणेहिं निग्गंथा निग्गंथीओ य एगंतओ ठाणं वा, सिज्जं वा, निसिहियं वा चेएमाणे नाइक्कमंति. तं जहा-

अत्थेगइया निग्गंथा निग्गंथीओ य एगं महं अगामियं छिण्णावायं दीहमद्धमडविमणुपविट्ठा तत्थ एगइओ ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेएमाणे णाइक्कमंति.

अत्थेगइया निग्गंथा निग्गंथीओ य गामंसि वा नगरंसि वा —जाव— रायहाणिंसि वा वासं उवागया एगतिया जत्थ उवस्सयं लभंति एगतिया नो लभंति तत्थ एगइओ ठाणं —जाव— नाइक्कमंति,

अत्थेगइया निग्गंथा निग्गंथीओ य नागकुमारावासंसि वा वासं उवागया तत्थेगयओ —जाव— नाइक्कमंति,

आमोसगा दीसंति ते इच्छंति निग्गंथीओ चीवरपड़ियाए पड़िगाहित्तए तत्थेगयओ ठाणं वा —जाव— नाइक्कमंति,

जुवाणा दीसंति ते इच्छंति निग्गंथीओ मेहुणपड़ियाए पड़िगाहित्तए तत्थएगइओ ठाणं वा —जाव— नाइक्कमंति.

इच्चेएहिं पंचहिं ठाणेहिं —जाव— नाइक्कमंति.

पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे अचेलए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे नाइक्कमइ. तं जहा-

खित्तचित्ते समणे निग्गंथे निग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचे-

लए संचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे नाइक्कमइ,

एवमेएणं गमएणं-

दित्तचित्ते-

जक्खाइट्ठे-

उम्मायपत्ते-

निग्गंथीपव्वाविथए समणे निग्गंथेहिं अविज्जमाणेहिं अचे-

लए सचेलियाहिं निग्गंथीहिं सद्धिं संवसमाणे नाइक्कमइ. २

४१८ पंच आसवदारा पण्णत्ता. तं जहा-

मिच्छत्तं, अविरइ, पमाए, कसाया, जोगा.

पंच संवरदारा पण्णत्ता. तं जहा-

सम्मत्तं, विरइ, अपमाओ, अकसाइयं, अजोगीत्तं.

पंच दंडा पण्णत्ता. तं जहा-

अट्ठादंडे,

अणट्ठादंडे,

हिंसादंडे,

अकम्हादंडे,

दिट्ठीविप्परियासियादंडे. ३

४१९ पंच किरियाओ पण्णत्ता. तं जहा-

आरंभिया,

परिग्गहिया,

मायावत्तिया,

अपच्चक्खाणकिरिया,

मिच्छादंसणवत्तिया.

मिच्छद्दिट्ठियाणं नेरइयाणं पंच किरियाओ पण्णत्ताओ. तंजहा-

आरंभिया —जाव— मिच्छादंसणवत्तिया.

एवं सव्वेसिं निरंतरं —जाव— मिच्छद्दिट्ठियाणं वेमाणियाणं, नवरं-विगलिंदिया मिच्छद्दिट्ठिया ण भण्णंति सेसं तहेव.

पंच किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

काइया,

अहिगरिणया,

पाओसिया,

पारितावणिया,

पाणाइवाइकिरिया.

नेरइयाणं पंच किरिया एवं चेव निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं.

पंच किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

आरंभिया —जाव— मिच्छादंसणवत्तिया.

नेरइयाणं पंच किरिया निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं.

पंच किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

दिट्ठिया,

पुट्ठिया,

पाडोच्चिया,

सामंतोवणिवाइया,

साहत्थिया.

एवं नेरइयाणं —जाव— वेमाणियाणं.

पंच किरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

नेसत्थिया,

आणवणिया,

वेयारणिया,

अणाभोगवत्तिया,

अणवकंखवत्तिया.

एवं नेरइयाणं —जाव— वेमाणियाणं.

पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

पेज्जवत्तिया,

दोसवत्तिया,

पओगकिरिया,

समुदाणकिरिया,

ईरियावहिया.

एवं मणुस्साण वि सेसाणं नत्थि. ५

२० पंचविहा परिण्णा पण्णत्ता. तं जहा-

उवहि-परिण्णा,

उवस्सय-परिण्णा,

कसाय-परिण्णा,

जोग-परिण्णा,

भत्त-पाण-परिण्णा.

४२१ पंचविहे ववहारे पण्णत्ते. तं जहा-

आगमे, सुए, आणा, धारणा, जीए.

जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ आगमे सिया-

जहा से तत्थ सुए सिया सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ सुए सिया-

जहा से तत्थ आणा सिया आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ आणा सिया-

जहा से तत्थ धारणा सिया धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा,

नो से तत्थ धारणा सिया-

जहा से तत्थ जीए सिया जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा.

इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा. तं जहा-

आगमेणं, सूएणं, आणाए, धारणाए, जीएणं,

जहा जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा तहा ववहारं पट्ठवेज्जा,

प्र० से किमाहु भंते ! आगम-बलिया समणा निग्गंथा ?

उ० इच्चेयं पंचविहं ववहारं जहा जहा जहिं जहिं तहा तहा तहिं तहिं अणिस्सिओस्सिवयं सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ.

४२२ संजयमणुस्साणं सुत्ताणं पंच जागरा पण्णत्ता. तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा.

संजयमणुस्साणं जागराणं पंच सुत्ता पण्णत्ता, तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा.

असंजयमणुस्साणं सुत्ताणं वा, जागराणं वा पंच जागरा पण्णत्ता. तं जहा-

सद्दा, —जाव— फासा. ३

४२३ पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं आइज्जंति. तं जहा-

पाणाइवाएणं, —जाव— परिग्गहेणं.

पंचहिं ठाणेहिं जीवा रयं वमंति. तं जहा-

पाणाइवायवेरमणेणं, —जाव— परिग्गहवेरमणेणं. २

४२४ पंचमासियं णं भिक्खुपडिमं पडिवण्णस्स अणगारस्स कप्पंति पंच दत्तीओ भोयणस्स पडिगाहित्तए पंच पाणगस्स.

४२५ पंचविहे उवघाए पण्णत्ते. तं जहा-

उग्गमोवघाए,

उप्पायणोवघाए,

एसणोवघाए,

परिकम्मोवघाए,

परिहरणोवघाए.

पंचविहा विसोही पण्णत्ता. तं जहा-

उग्गमविसोही,

उप्पायणविसोही,

एसणाविसोही,
परिकम्मविसोही,
परिहरणविसोही. २

४२६ पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुल्लभबोहियत्ताए कम्मं पगरें
तं जहा-
अरहंताणं अवण्णं वयमाणे,
अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वयमाणे,
आयरिय-उवज्झायाणं अवण्णं वयमाणे,
चाउवण्णस्स संघस्स अवण्णं वयमाणे,
विविक्क-तव-बंभचेराणं देवाणं अवण्णं वयमाणे.

पंचहिं ठाणेहिं जीवा सुलभबोहियत्ताए कम्मं पगरें
तं जहा-
अरहंताणं वण्णं वयमाणे, —जाव—
विविक्क-तव-बंभचेराणं देवाणं वण्णं वयमाणे. २

४२७ पंच पड़िसंलीणा पण्णत्ता. तं जहा-
सोइंदियपड़िसंलीणे, —जाव— फासिंदियपड़िसंलीणे

पंच अप्पड़िसंलीणा पण्णत्ता. तं जहा-
सोइंदियअप्पड़िसंलीणे, —जाव— फासिंदियअप्प
संलीणे.

पंचविहे संवरे पण्णत्ते. तं जहा-
सोइंदियसंवरे, —जाव— फासिंदियसंवरे.

पंचविहे असंवरे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइंदियअसंवरे, —जाव— फासिंदियअसंवरे. २

४२८ पंचविहे संजमे पण्णत्ते. तं जहा-

सामाइयसंजमे,

छेओवट्ठावणियसंजमे,

परिहारविसुद्धिसंजमे,

सुहुमसंपरागसंजमे,

अहक्खायचरित्तसंजमे.

४२९ एगिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ. तं जहा-

पुढविकाइयसंजमे, —जाव— वणस्सइकाइयसंजमे.

एगिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ. तं जहा-

पुढविकाइयअसंजमे, —जाव— वणस्सइकाइयअसंजमे. २

४३० पंचिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ. तं जहा-

सोइंदियसंजमे, —जाव— फासिंदियसंजमे.

पंचिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ. तं जहा-

सोइंदियअसंजमे, —जाव— फासिंदियअसंजमे.

सव्व-पाण-भूय-जीव-सत्ता णं असमारभमाणस्स पंचविहे संजमे कज्जइ. तं जहा-

एगिंदियसंजमे —जाव— पंचिंदियसंजमे.

सव्व-पाण-भूय-जीव-सत्ता णं असमारभमाणस्स पंचविहे असंजमे कज्जइ. तं जहा-

एगिंदियअसंजमे, —जाव— पंचिंदियअसंजमे. ४

४३१ पंचविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता. तं जहा-

अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया, खंधबीया, बीयरुहा.

४३२ पंचविहे आयारे पण्णत्ते. तं जहा-

नाणायारे,

दंसणायारे,

चरित्तायारे,

तवायारे,

वीरियायारे.

४३३ पंचविहे आयारपकप्पे पण्णत्ते. तं जहा-

मासिए उग्घाइए,

मासिए अणुग्घाइए,

चउमासिए उग्घाइए,

चउमासिए अणुग्घाइए,

आरोवणा.

आरोवणा पंचविहा पण्णत्ता. तं जहा-

पट्ठविया, ठविया, कसिणा, अकसिणा, हाडहडा. २

४३४ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुत्थिमेणं सीयाए म
नईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

मालवंते, चित्तकूडे, पम्हकूडे, नलिणकूडे, एगसेले.

जंबुमंदरस्स पुरओ सीयाए महानईए दाहिणेणं पंच वक्खार-पव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

तिकूडे, वेसमणकूडे, अंजणे, मायंजणे, सोमणसे.

जंबुमंदर-पच्चत्थिमेणं सीओआए महानईए दाहिणेणं पंच वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

विज्जुप्पभे, अंकावती, पम्हावती, आसीविसे, सुहावहे.

जंबुमंदर-पच्चत्थिमेणं सीओआए महानईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चंदपव्वए, सूरपव्वए, नागपव्वए, देवपव्वए, गंधमायणे.

जंबुमंदर-दाहिणेणं देवकुराए कुराए पंच महद्दहा पण्णत्ता. तं जहा-

निसहदहे, देवकुरुदहे, सूरदहे, सुलसदहे, विज्जुप्पभदहे.

जंबुमंदर-उत्तरेणं उत्तरकुराए कुराए पंच महद्दहा पण्णत्ता. तं जहा

नीलवंतदहे,

उत्तरकुरुदहे,

चंददहे,

एरावणदहे,

मालवंतदहे.

सव्वे वि णं वक्खारपव्वया सीया सीओयाओ महाणईओ मंदरं वा पव्वयंतेणं पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं

पंचगाउयसयाइं उव्वेहेणं.

धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे णं मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमे णं सीयाए महाणईए उत्तरेणं पंच वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

मालवंते —जाव— एगसेले.

एवं जहा जंबुद्दीवे तहा —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढ-पच्छत्थिमद्धे वक्खारा, दहा य उच्चत्तं भाणियव्वं.

समयक्खेत्ते णं पंच भरहाइं, पंच एरवयाइं.

एवं जहा चउट्ठाणे बितीयउद्देसे तहा एत्थ वि भाणियव्वं —जाव— पंच मंदरा, पंच मंदरचूलियाओ, नवरं उसुयारा नत्थि. ९

४३५ उसभे णं अरहा कोसलिए पंच-धणु-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था.

भरहेणं राया चाउरंत-चक्कवट्टी पंच-धणु-सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था.

बाहुबली णं अणगारे, एवं चेव.

बंभीणी अज्जा, एवं चेव.

एवं सुंदरी वि. ५

४३६ पंचहिं ठाणेहिं सुत्ते विबुज्झेज्जा. तं जहा-

सद्देणं,

फासेणं,

भोयणपरिणामेणं,

निह्दक्खएणं,

सुविणदंसणेणं.

४३७ पंचहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे निग्गंथि गिण्हमाणे वा, अवलंबमाणे वा नाइक्कमइ. तं जहा-

निग्गंथि च णं अण्णयरे पसुजाइए वा, पक्खिजाइए वा ओहाएज्जा तत्थ निग्गंथे निग्गंथि गिण्हमाणे वा, अलंबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गंथे निग्गंथि दुग्गंसि वा, विसमंसि वा, पक्खलमाणिं वा, पवड़माणिं वा, गिण्हमाणे वा, अवलंबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गंथे निग्गंथि सेयंसि वा, पंकंसि वा, पणगंसि वा, उदगंसि वा, उक्कसमाणीं वा, उवुज्झमाणीं वा, गिण्हमाणे वा, अवलंबमाणे वा नाइक्कमइ,

निग्गंथे निग्गंथि नावं आरुहमाणे वा, ओरोहमाणे वा नाइक्कमइ,

खित्तचित्तं दित्तचित्तं जक्खाइट्ठं उम्मायपत्तं उवसग्गपत्तं साहिगरणं सपायच्छित्तं —जाव— भत्तपाणपड़ियाइक्खियं अट्ठजायं वा निग्गंथे निग्गंथि गिण्हमाणे वा, अवलंबमाणे वा णाइक्कमइ.

४३८ आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि पंच अइसेसा पण्णत्ता. तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाए निगिज्झिय निगिज्झिय पप्फोड़ेमाणे वा, पमज्जेमाणे वा नाइक्कमइ,

आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सगस्स उच्चार-पासवणं विगिंचमाणे वा विसोहेमाणे वा नाइक्कमइ,

आयरिय-उवज्झाए पभू इच्छा वेयावड़ियं करेज्जा, इच्छा नो करेज्जा,

आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सगस्स एगरायं वा, दुरायं वा एगागी वससाणे नाइक्कमइ,

आयरिय-उवज्झाए बाहिं उवस्सगस्स एगरायं वा, दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ.

४३९ पंचहिं ठाणेहिं आयरिय-उवज्झायस्स गणावक्कमणे पण्णत्ते. तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए य गणंसि आणं वा, धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए गणंसि अहारायणियाए किइकम्मं वेणइयं नो सम्मं पउंजित्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए गणंसि जे सुयपज्जवजाए धारिंति ते काले नो सम्ममणुप्पवाएत्ता भवइ,

आयरिय-उवज्झाए गणंसि सगणियाए वा, परगणियाए वा निग्गंथीए बहिल्लेसे भवइ,

मित्ते नाइगणे वा से गणाओ अवक्कमेज्जा तेसिं संगहो-वग्गहट्ठयाए गणावक्कमणे पण्णत्ते.

४४० पंचविहा इड्ढीमंता मणुस्सा पण्णत्ता. तं जहा-

अरहंता,

चक्कवट्टी,

बलदेवा,

वासुदेवा,

भावियप्पाणो अणगारा.

पंचट्ठाणस्स तइओ उद्देसो

४४१ पंच अत्थिकाया पण्णत्ता. तं जहा-

धम्मत्थिकाए,

अधम्मत्थिकाए,

आगासत्थिकाए,

जीवत्थिकाए,

पोग्गलत्थिकाए.

धम्मत्थिकाए अवण्णे अगंधे अरसे अफासे अरूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ.

दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगं दव्वं,

खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते,

कालओ न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ त्ति, भुविं भवइ य भविस्सइ य धुवे निअए

सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे,

भावओ अवण्णे अगंधे अरसे अफासे,

गुणओ गमणगुणे य.

अधम्मत्थिकाए अवण्णे —जाव— लोगदव्वे, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

दव्वओ —जाव— गुणओ. सेसं तहेव.

नवरं-गुणओ ठाणगुणे.

आगासत्थिकाए अवण्णे, एवं चेव.

नवरं-खेत्तओ लोगालोगप्पमाणमित्तए.

गुणओ अवगाहणगुणे, सेसं तं चेव.

जीवत्थिकाए णं अवण्णे, एवं चेव.

नवरं-दव्वओ णं जीवत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं, अरूवी जीवे सासए, गुणओ उवओगगुणे, सेसं तं चेव.

पोग्गलत्थिकाए पंचवण्णे पंचरसे दुगंधे अट्ठफासे रूवी अजीवे सासए अवट्ठिए लोगदव्वे, से समासओ पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं,

खेत्तओ लोगपमाणमेत्ते,

कालओ न कयाइ नासि —जाव— निच्चे,

भावओ वण्णमंते गंधमंते रसमंते फासमंते,

गुणओ गहणगुणे. ५

४४२ पंच गइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

निरयगइ, तिरियगइ, मणुयगइ, देवगइ, सिद्धिगइ.

४४३ पंच इंदियत्था पण्णत्ता. तं जहा-

सोइंदियत्थे —जाव— फासिंदियत्थे.

पंच मुंडा पण्णत्ता. तं जहा-

सोइंदियमुंडे —जाव— फासिंदियमुंडे.

अहवा पंच मुंडा पण्णत्ता. तं जहा-

कोहमुंडे, माणमुंडे, मायामुंडे, लोभमुंडे, सिरमुंडे. ३

४४४ अहोलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया,

आउकाइया,

वाउकाइया,

वणस्सइकाइकाया,

ओराला तसा पाणा.

उड्ढलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया तहेव —जाव— ओराला तसा पाणा.

तिरियलोगे णं पंच बायरा पण्णत्ता. तं जहा-

एगिंदिया —जाव— पंचिंदिया.

पंचविहा बायरतेउकाइया पण्णत्ता. तं जहा-

इंगाले, जाला, मुम्मुरे, अच्ची, अलाए.

पंचविहा बादरवाउकाइया पण्णत्ता. तं जहा-

पाईण-वाए,

पडीण-वाए,

दाहिण-वाए,

उदीण-वाए,

विदिस-वाए.

पंचविहा अचित्ता वाउकाइया पण्णत्ता. तं जहा-

अक्कंते, धंते, पीलिए, सरीराणुगए, संमुच्छिमे. ६

४४५ पंच निग्गंथा पण्णत्ता. तं जहा-

पुलाए, बउसे, कुसीले, निग्गंथे, सिणाए.

पुलाए पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

नाण-पुलाए,

दंसण-पुलाए,

चरित्त-पुलाए,

लिंग-पुलाए,

अहासुहम-पुलाए.

बउसे पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

आभोग-बउसे,

अणाभोग-बउसे,

संवुड-बउसे,

असंवुड-बउसे,

अहासुहुम-बउसे.

कुसीले पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

नाण-कुसीले,

दंसण-कुसीले,

चरित्त-कुसीले,

लिंग-कुसीले,

अहासुहुम-कुसीले.

नियंठे पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

पढमसमय-नियंठे,

अपढमसमय-नियंठे,

चरिमसमय-नियंठे,

अचरिमसमय-नियंठे,

अहासुहुम-नियंठे.

सिणाए पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

अच्छवी,

असबले,

अकम्मंसे,

संसुद्ध-णाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली,

अपरिस्सावी. ६

४४६ कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा, परिहरित्तए वा. तं जहा-

जंगिए, भंगिए, साणए, पोत्तिए, तिरीड़पट्टए.

कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा पंच रयहरणाइं धारित्तए वा, परिहरित्तए वा. तं जहा-

उण्णिए, उट्टिए, साणए, पच्चापिच्चियए, मुंजापिच्चिए. २

४४७ धम्मं चरमाणस्स पंच निस्साठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

छक्काए, गणे, राया, गिहवई, सरीरं.

४४८ पंच निहि पण्णत्ता. तं जहा-

पुत्तनिही, मित्तनिही, सिप्पनिही, धणनिही, धण्णनिही.

४४९ सोए पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

पुढविसोए, आउसोए, तेउसोए, मंतसोए, बंभसोए.

४५० पंच ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकायं,
अधम्मत्थिकायं,
आगासत्थिकायं,
जीवं असरीरपडिबद्धं,
परमाणुपोग्गलं.

एयाणि चेव उप्पण्ण-नाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकायं —जाव— परमाणुपोग्गलं.

४५१ अहोलोगे णं पंच अणुत्तरा महइमहालया महा निरया पण्णत्ता. तं जहा-

काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए, अप्पइट्ठाणे.

उड्ढलोगे णं पंच अणुत्तरा महइमहालया महा विमाणा

पण्णत्ता. तं जहा-

विजये, विजयंते, जयंते, अपराजिए, सव्वट्ठसिद्धे. २

४५२ पंच पुरिसजाया पण्णत्ता. तं जहा-

हिरिसत्ते, हिरिमणसत्ते, चलसत्ते, थिरसत्ते, उदयणसत्ते.

४५३ पंच मच्छा पण्णत्ता. तं जहा-

अणुसोयचारी,

पड़िसोयचारी,

अंतचारी,

मज्झचारी,

सव्वचारी.

एवामेव पंच भिक्खागा पण्णत्ता. तं जहा-

अणुसोयचारी —जाव— सव्वसोयचारी. २

४५४ पंच वणीमगा पण्णत्ता. तं जहा-

अतिहि-वणीमए,

किविण-वणीमए,

माहण-वणीमए,

साण-वणीमए,

समण-वणीमए.

४५५ पंचहिं ठाणेहिं अचेलए पसत्थे भवइ. तं जहा-

अप्पा पड़िलेहा,

लाघविए पसत्थे,

रूवे वेसासिए,

तवे अणुण्णाए,
विउले इंदियनिग्गहे.

४५६ पंच उक्कला पण्णत्ता. तं जहा-
दंडुक्कले, रज्जुक्कले, तेणुक्कले, देसुक्कले, सव्वुक्कले.

४५७ पंच समिइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
ईरियासमिई —जाव— परिट्ठावणियासमिई.

४५८ पंचविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-
एगिंदिया —जाव— पंचिंदिया.

एगिंदिया पंच गइया, पंच आगइया पण्णत्ता. तं जहा-
एगिंदिया एगिंदिएसु उववज्जमाणे एगिंदिएहिंतो —जाव— पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा.

से चेव णं से एगिंदिए एगिंदियत्तं विप्पजहमाणे एगिंदियत्ताए वा, —जाव— पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा.
बेंदिया पंच गइया पंच आगइया एवं चेव,
एवं —जाव— पंचिंदिया पंचगइया पंच आगइया.

पंचविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-
कोहकसाइ —जाव— लोभकसाइ, अकसाइ.

अहवा पंचविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-
नेरइया —जाव— देवा, सिद्धा. ९

४५९ प्र० अह भंते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-णिप्फाव-कुलत्थ-आलिसंदग-सतीण-पलिमंथगाणं एएसि णं धण्णाणं कुट्ठा-

उत्ताणं जहा सालीणं —जाव— केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ?

उ० गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसणं पंच संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलायइ —जाव— तेण परं जोणीवोच्छेदे, पण्णत्ते.

४६० पंच संवच्छरा पण्णत्ता, तं जहा-

नक्खत्त-संवच्छरे,

जुग-संवच्छरे,

पमाण-संवच्छरे,

लक्खण-संवच्छरे,

सणिचर-संवच्छरे.

जुग-संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

चंदे, चंदे, अभिवड्ढिए, चंदे, अभिवड्ढिए चेव.

पमाण-संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

नक्खत्ते, चंदे, ऊऊ, आदिच्चे, अभिवड्ढिए.

लक्खण-संवच्छरे पंचविहे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहाओ—समगं नक्खत्ता जोगं,
जोयंति समगं उदू परिणमंति ।
नच्चुण्हं नाइसीओ,
बहूदओ होइ नक्खत्ते ॥१॥
ससिसगलपुण्णमासी,
जोएइ विसमचारणक्खत्ते ।

कडुओ वहूदओ तमाहु,
संवच्छरं चंदं ॥२॥
विसमं पवालिणो,
परिणमंति अणुदूसु देंति पुप्फफलं।
वासं ण सम्म वासइ,
तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३॥
पुढविदगाणं तु रसं,
पुप्फफलाणं तु देइ आदिच्चो।
अप्पेण वि वासेणं,
सम्मं निप्फज्जए सस्सं ॥४॥
आदिच्चतेयतविया,
खण-लव-दिसा-उऊ परिणमंति।
पूरिंति रेणुथलताइं,
तमाहु अभिवड्ढितं जाण ॥५॥

४६१ पंचविहे जीवस्स निज्जाणमग्गे पण्णत्ते. तं जहा-
पाएहिं, ऊरूहिं, उरेणं, सिरेणं, सव्वंगेहिं.
पाएहिं निज्जायमाणे निरयगामी भवइ,
ऊरूहिं निज्जायमाणे तिरियगामी भवइ,
उरेणं निज्जायमाणे मणुयगामी भवइ,
सिरेणं निज्जायमाणे देवगामी भवइ,
सव्वंगेहिं निज्जायमाणे सिद्धिगइपज्जवसाणे पण्णत्ते.

४६२ पंचविहे छेयणे पण्णत्ते. तं जहा-

उप्पाच्छेयणे,

वियच्छेयणे,

बंधच्छेयणे,

पएसच्छेयणे,

दोधारच्छेयणे.

पंचविहे आणंतरिए पण्णत्ते. तं जहा-

उप्पायणंतरिए,

वियणंतरिए,

पएसाणंतरिए,

समयाणंतरिए,

सामण्णाणंतरिए.

पंचविहे अणंते पण्णत्ते. तं जहा-

नामाणंतए,

ठवणाणंतए,

दव्वाणंतए,

गणणाणंतए,

पदेसाणंतए.

अहवा पंचविहे अणंतए पण्णत्ते. तं जहा-

एगंओणंतए,

दुहओणंतए,

देसवित्थाराणंतए,

सव्ववित्थाराणंतए,

सासयाणंतए. ४

४६३ पंचविहे नाणे पण्णत्ते. तं जहा-

आभिणिबोहियणाणे,

सुयनाणे,

ओहिणाणे,

मणपज्जवणाणे,

केवलणाणे.

४६४ पंचविहे नाणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

आभिणिबोहियनाणावरणिज्जे —जाव—

केवलनाणावरणिज्जे.

४६५ पंचविहे सज्झाए पण्णत्ते, तं जहा-

वायणा, पुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा.

४६६ पंचविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते. तं जहा-

सद्दहणसुद्धे,

विणयसुद्धे,

अणुभासणासुद्धे,

अणुपालणासुद्धे,

भावसुद्धे.

४६७ पंचविहे पड़िक्कमणे पण्णत्ते. तं जहा-

आसवदारपड़िक्कमणे,

मिच्छत्तपड़िक्कमणे,

कसायपड़िक्कमणे,

जोगपडिक्कमणे,
भावपडिक्कमणे.

४६८ पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं वाएज्जा. तं जहा-
संगहट्ठयाए,
उवग्गहणट्ठयाए,
निज्जरणट्ठयाए,
सुत्ते वा मे पज्जवयाए भविस्सइ,
सुत्तस्स वा अवोच्छित्तिणयट्ठयाए.

पंचहिं ठाणेहिं सुत्तं सिक्खेज्जा. तं जहा-
नाणट्ठयाए,
दंसणट्ठयाए,
चरित्तट्ठयाए,
वुग्गहविमोयणट्ठयाए,
अहत्थे वा भावे जाणिस्सामीत्तिकट्टु. २

४६९ सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचवण्णा पण्णत्ता.
तं जहा-
किण्हा —जाव— सुक्किल्ला.

सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

बंभलोग-लंतएसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जसरीरगा उक्कोसेणं पंचरयणी उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

नेरइया णं पंचवण्णे पंचरसे पोग्गले बंधिस्सु वा, बंधंति वा, बंधिस्संति वा. तं जहा-

किण्हे —जाव— सुक्किल्ले.

तित्ते, —जाव— महुरे.

एवं —जाव — वेमाणिया. ४

४७० जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं गंगा महानई पंच महानईओ समप्पेंति. तं जहा-

जउणा, सरऊ, आई, कोसी, मही.

जंबूमंदरस्स दाहिणेणं सिंधुमहाणई पंच महानईओ समप्पेंति. तं जहा-

सतद्दू, विभासा, वितत्था, एरावई, चंदभागा.

जंबूमंदरस्स उत्तरेणं रत्ता महानई पंच महानईओ समप्पेंति. तं जहा-

किण्हा, महाकिण्हा, नीला, महानीला, महातीरा.

जंबूमंदरस्स उत्तरेणं रत्तावई महानई पंच महानईओ समप्पेंति. तं जहा-

इंदा, इंदसेणा, सुसेणा, वारिसेणा, महाभोया. ४

४७१ पंच तित्थगरा कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडा —जाव— पव्वइया. तं जहा-

वासुपुज्जे, मल्ली, अरिट्ठनेमी, पासे, वीरे.

४७२ चमरचंचाए रायहाणीए पंच सभा पण्णत्ता. तं जहा-

सुहम्मासभा,

उववायसभा,

अभिसेयसभा,

अलंकारियसभा,

ववसायसभा.

एगमेगे णं इंदट्ठाणे णं पंच सभाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

सुहम्मासभा —जाव— ववसायसभा. २

४७३ पंच नक्खत्ता पंच तारा पण्णत्ता. तं जहा-

धणिट्ठा, रोहिणी, पुणव्वसू, हत्थो, विसाहा.

४७४ जीवाणं पंचट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा, चिणंति वा, चिणिस्संति वा. तं जहा-

एगिंदिएनिव्वत्तिए —जाव— पंचिंदियनिव्वत्तिए.

एवं चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेद-तह निज्जरा चेव.

पंचपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता.

पंचपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता, —जाव—

पंचगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २३

छट्ठाणं

४७५ छहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहइ गणं धारित्तए. तं जहा-

सड्ढी पुरिसजाए, सच्चे पुरिसजाए,
मेहावी पुरिसजाए, बहुस्सुए पुरिसजाए,
सत्तिमं, अप्पाधिकरणे.

४७६ छहिं ठाणेहिं निग्गंथे निग्गंथिं गिण्हमाणे वा, अवलंबमाणे वा नाइक्कमइ. तं जहा-

खित्तचित्तं, दित्तचित्तं,
जक्खाइट्ठं, उम्मायपत्तं,
उवसग्गपत्तं, साहिगरणं.

४७७ छहिं ठाणेहिं निग्गंथा निग्गंथीओ य साहम्मियं कालगयं समायरमाणा णाइक्कमंति. तं जहा-

अंतोहिंतो वा बाहिं णीणेमाणा,
बाहीहिंतो वा निब्बाहिं णीणेमाणा,
उवेहमाणा वा,
उवासमाणा वा,
अणुण्णवेमाणा वा,
तुसिणीए वा संपव्वयमाणा.

४७८ छ ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं जहा-

धम्मत्थिकायं. अधम्मत्थिकायं,
आगासं, जीवं असरीरपड़िबद्धं,
परमाणुपोग्गलं, सद्दं.

एयाणि चेव उप्पण्ण-णाण-दंसणधरे अरहा जिणे —जाव— सव्वभावेणं जाणइ, पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकायं —जाव— सद्दं. २

४७९ छहिं ठाणेहिं सव्वजीवाणं नत्थि इड्ढीइ वा, जुत्तीइ वा, जसेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कारपरक्कमेइ वा. तं जहा-

जीवं वा अजीवं करणयाए,
अजीवं वा जीवं करणयाए,
एगसमएणं वा दो भासाओ भासित्तए,
सयं कड़ं वा कम्मं वेएमि वा, मा वा वेएमि,
परमाणुपोग्गलं छिंदित्तए वा भिंदित्तए वा अगणिकाएण वा समोदहित्तए.
बहिया वा लोगंता गमणयाए.

४८० छज्जीवनिकाया पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया —जाव— तसकाइया.

४८१ छ तारग्गहा पण्णत्ता. तं जहा-

सुक्के, बुहे, बहस्सइ,
अंगारए, सनिच्चरे, केऊ.

४८२ छव्विहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया —जाव— तसकाइया.

पुढविकाइया छ गइया, छ आगइया पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा —जाव— तसकाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा.

सो चेव णं से पुढविकाइए पुढविकाइयत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा —जाव— तसकाइयत्ताए वा गच्छेज्जा.

आउकाइया वि छ गइया छ आगइया.

एवं चेव —जाव— तसकाइया. २

४८३ छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

आभिणिबोहियणाणी —जाव— केवलणाणी, अण्णाणी.

अहवा छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

एगिंदिया —जाव— पंचिंदिया, अणिंदिया.

अहवा छव्विहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

ओरालियसरीरी —जाव— कम्मगसरीरी, असरीरी. ३

४८४ छव्विहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता. तं जहा-

अग्गबीया, मूलबीया, पोरबीया,
खंधबीया, बीयरूहा, संमुच्छिमा.

४८५ छट्ठाणाइं सव्वजीवाणं नो सुलभाइं भवंति. तं जहा-

माणुस्सए भवे,

आयरिए खेत्ते जम्मं,

सुकुले पच्चायाइ,
केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स सवणया,
सुयस्स वा सद्दहणया,
सद्दहियस्स वा, पत्तियस्स वा, रोइयस्स वा सम्मं काएणं फासणया.

४८६ छ इंदियत्था पण्णत्ता. तं जहा-
सोइंदियत्थे —जाव— फासिंदियत्थे, नोइंदियत्थे.

४८७ छव्विहे संवरे पण्णत्ते. तं जहा-
सोइंदियसंवरे —जाव— फासिंदियसंवरे, नो इंदिय-संवरे.

छव्विहे असंवरे पण्णत्ते. तं जहा-
सोइंदियअसंवरे —जाव— फासिंदियअसंवरे, नो इंदिय-असंवरे. २

४८८ छव्विहे साए पण्णत्ते. तं जहा-
सोइंदियसाए —जाव— नो इंदियसाए.

छव्विहे असाए पण्णत्ते. तं जहा-
सोइंदियअसाए —जाव— नो इंदियअसाए. २

४८९ छव्विहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-
आलोयणारिहे, पड़िक्कमणारिहे,
तदुभयारिहे, विवेगारिहे,
विउस्सग्गारिहे, तवारिहे.

४९० छव्विहा मणुस्सगा पण्णत्ता. तं जहा-

जंबूदीवगा,
धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धगा,
धायइसंडदीवपच्चत्थिमद्धगा,
पुक्खरवरदीवड्ढपुरत्थिमद्धगा,
पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धगा,
अंतरदीवगा.

अहवा छव्विहा मणुस्सा पण्णत्ता. तं जहा-

सम्मुच्छिममणुस्सा,
कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा.

गब्भवक्कंतिअमणुस्सा-
कम्मभूमगा, अकम्मभूमगा, अंतरदीवगा. २

४९१ छव्विहा इड्ढीमंता मणुस्सा पण्णत्ता. तं जहा-

अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा,
वासुदेवा, चारणा, विज्जाहरा.

छव्विहा अणिड्ढीमंता मणुस्सा पण्णत्ता. तं जहा-

हेमवंतगा, हेरण्णवंतगा, हरिवंसगा,
रम्मगवंसगा, कुरुवासिणो, अंतरदीवगा. २

४९२ छव्विहा ओसप्पिणी पण्णत्ता. तं जहा-

सुसमसुसमा —जाव— दुसमदूसमा.

छव्विहा उसप्पिणी पण्णत्ता. तं जहा-

दुसमदुसमा —जाव— सुसमसुसमा. २

४९३ जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु तीयाए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए मणुया छच्च धणुसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था.

छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालइत्था.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवएसु वासेसु इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुमाए समाए एवं चेव.

जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवए आगमेस्साए उस्सप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए एवं चेव —जाव— छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालइस्संति.

जंबुद्दीवे दीवे देवकुरुउत्तरकुरासु मणुया छ धणुसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

छच्च अद्धपलिओवमाइं परमाउं पालेंति.

एवं धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे चत्तारि आलावगा —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे चत्तारि आलावगा. ६

४९४ छव्विहे संघयणे पण्णत्ते. तं जहा-

वइरोसभणारायसंघयणे, उसभणारायसंघयणे,
नारायसंघयणे, अद्धनारायसंघयणे,
खीलियासंघयणे, छेवट्टसंघयणे.

४९५ छव्विहे संठाणे पण्णत्ते. तं जहा-

समचउरंसे, नग्गोहपरिमंडले, साइ,
खुज्जे, वामणे. हुंडे.

४९६ छट्ठाणा अणत्तवओ अहियाए असुभाए अखमाए अनीसेसाए अणाणुगामियत्ताए भवंति. तं जहा-

परियाए, परियाले, सुए,
तवे, लाभे, पूयासक्कारे.

छट्ठाणा अत्तवओ हियाए —जाव— आणुगामियत्ताए भवंति. तं जहा-

परियारे —जाव— पूयासक्कारे. २

४९७ छव्विहा जाइ-आरिया मणुस्सा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–अंबट्ठा य कलंदा य, वेदेहा वेदिगाइया ।
हरिता चुंचणा चेव, छप्पेगा इब्भजाइओ ॥१॥

छव्विहा कुलारिया मणुस्सा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, नाया, कोरव्वा.

४९८ छव्विहा लोगट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-

आगासपइट्ठिए वाए,
वायपइट्ठिए उदही,
उदहिपइट्ठिया पुढवी,
पुढविपइट्ठिया तसा थावरापाणा,
अजीवा जीवपइट्ठिया,
जीवा कम्मपइट्ठिया.

४९९ छद्दिसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

पाईणा, पडीणा, दाहिणा,
उदीणा, उड्ढा, अहा.

छहिं दिसाहिं जीवाणं गई पवत्तइ. तं जहा-

पाईणाए —जाव— अहाए.

एवमागइ, वक्कंति, आहारे, वुड्ढी, निवुड्ढी, विगुव्वणा, गइपरियाए, समुग्घाए, कालसंजोगे, दंसणाभिगमे, नाणाभिगमे, जीवाभिगमे, अजीवाभिगमे.

एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि. २

५०० छहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे आहारमाहारमाणे नाइक्कमइ. तं जहा-

गाहा–वेयणवेयावच्चे, इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए, छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥१॥

छहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे आहारं वोच्छिंदमाणे नाइक्कमइ. तं जहा-

गाहा–आयंके उवसग्गे, तितिक्खणे बंभचेरगुत्तीए ।
पाणिदयातवहेउं, सरीरवुच्छेयणट्ठाए ॥१॥

५०१ छहिं ठाणेहिं आया उम्मायं पाउणेज्जा. तं जहा-

अरहंताणं अवण्णं वयमाणे,

अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अवण्णं वयमाणे,

आयरिय-उवज्झायाणं अवण्णं वयमाणे.

चाउव्वण्णस्स संघस्स अवण्णं वयमाणे,

जक्खावेसेण चेव,

मोहणिज्जस्स चेव कम्मस्स उदएणं.

५०२ छव्विहे पमाए पण्णत्ते. तं जहा-

मज्जपमाए, निद्दपमाए,
विसयपमाए, कसायपमाए,
जूयपमाए, पड़िलेहणापमाए.

५०३ छव्विहा पमायपड़िलेहणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—आरभड़ा संमद्दा,
वज्जेयव्वा य मोसली तइया।
पप्फोड़णा चउत्थी,
वक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥१॥

छव्विहा अप्पमायपड़िलेहणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—अणच्चावियं अवलियं.
अणाणुबंधि अमोसलिं चेव।
छप्पुरिमा नव खोड़ा,
पाणी पाणविसोहणी ॥१॥

५०४ छ लेसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कण्हलेसा —जाव— सुक्कलेसा.

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं छ लेसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कण्हलेसा —जाव— सुक्कलेसा.

एवं मणुस्सदेवाण वि. २

५०५ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो छ अग्ग-महिसीओ पण्णत्ताओ.

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो छ अग्ग-महिसीओ पण्णत्ताओ. २

५०६ ईसाणस्स णं देविंदस्स मज्झिमपरिसाए देवाणं छ पलिओव-
माइं ठिई पण्णत्ता.

५०७ छ दिसिकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
रूया, रूयंसा, सुरूवा,
रूपवई, रूपकंता, रूपप्पभा.

छ विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
आला, सक्का, सतेरा,
सोयामणी, इंदा, घणविज्जुया. २

५०८ धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो छ अग्गमहि-
सीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
आला —जाव — घणविज्जुया.

भूयाणंदस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो छ अग्गम-
हिसीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
रूवा —जाव— रूवप्पभा.
जहा धरणस्स तहा सव्वेसिं दाहिणिल्लाणं —जाव —
घोसस्स.
जहा भूयाणंदस्स तहा सव्वेसिं उत्तरिल्लाणं —जाव —
महाघोसस्स. ४

५०९ धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो छ सामाणिय-
साहस्सीओ पण्णत्ताओ.

एवं भूयाणंदस्स वि — जाव — महाघोसस्स.

५१० छव्विहा उग्गहमई पण्णत्ता. तं जहा-

खिप्पमोगिण्हइ, बहुमोगिण्हइ,
बहुविधमोगिण्हइ, धुवमोगिण्हइ,
अणिस्सियमोगिण्हइ, असंदिद्धमोगिण्हइ.

छव्विहा ईहामई पण्णत्ता. तं जहा-
खिप्पमीहइ —जाव— असंदिद्धमीहइ.

छव्विहा अवायमइ पण्णत्ता. तं जहा-
खिप्पमवेइ —जाव— असंदिद्धमवेइ.

छव्विहा धारणा पण्णत्ता. तं जहा-
बहुं धारेइ, बहुविहं धारइ,
पोराणं धारेइ, दुद्धरं धारेइ,
अणिस्सियं धारेइ, असंदिद्धं धारेइ. ४

५११ छव्विहे बाहिरए तवे पण्णत्ते. तं जहा-
अणसणं, ओमोयरिया,
भिक्खायरिया, रसपरिच्चाए,
कायकिलेसो, पडिसंलीणया.

छव्विहे अब्भंतरिए तवे पण्णत्ते. तं जहा-
पायच्छित्तं, विणओ, वेयावच्चं,
सज्झाओ, झाणं, विउसग्गो. २

५१२ छव्विहे विवादे पण्णत्ते. तं जहा-
ओसक्कइत्ता, उस्सक्कइत्ता,
अणुलोमइत्ता, पडिलोमइत्ता,
भइत्ता, भेलइत्ता.

५१३ छव्विहा खुड्डा पाणा पण्णत्ता. तं जहा-

बेंदिया,

तेइंदिया,

चउरिंदिया,

समुच्छिम-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिया,

तेउकाइया,

वाउकाइया.

५१४ छव्विहा गोयरचरिया पण्णत्ता. तं जहा-

पेड़ा, अद्धपेड़ा, गोमुत्तिया,

पतंगविहिया, संबुक्कवट्टा, गंतुंपच्चागया.

५१५ जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स य दाहिणेणं इमीसे रयण-प्पभाए पुढविए छ अवक्कंतमहा निरया पण्णत्ता. तं जहा-

लोले, लोलुए, उदड्ढे,

निदड्ढे, जरए, पज्जरए.

चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढविए छ अवक्कंता महा निरया पण्णत्ता. तं जहा-

आरे, वारे, मारे, रोरे, रोरुए, खाड़खडे. २

५१६ बंभलोगे णं कप्पे छ विमाणपत्थड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

अरए, विरए, नीरए, निम्मले, वितिमिरे, विसुद्धे.

५१७ चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरण्णो छ नक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसइमुहुत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

पुव्वाभद्दवया, कत्तिया, महा,
पुव्वाफग्गुणी, मूलो, पुव्वासाढा.

चंदस्स णं जोईसिंदस्स जोइसरण्णो छ नक्खत्ता नत्तंभागा अवड्ढक्खेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

सयभिसया, भरणी, अद्दा,
अस्सेसा, साई, जेट्ठा.

चंदस्स णं जोईसिंदस्स जोइसरण्णो छ नक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणयालीसमुहुत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

रोहिणी, पुणव्वसू, उत्तराफग्गुणी,
विसाहा, उत्तारासढा, उत्तराभद्दवया. ३

५१८ अभिचंदे णं कुलकरे छ धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था.

५१९ भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छ पुव्वसयसहस्साइं महाराया हुत्था.

५२० पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स छ सया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए अपराजियाणं संपया होत्था.

वासुपुज्जे णं अरहा छहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे —जाव— पव्वइए.

चंदप्पभे णं अरहा छम्मासे छउमत्थे हुत्था. ३

५२१ तेइंदिया णं जीवाणं असमारभमाणस्स छव्विहे संजमे कज्जइ. तं जहा-

घाणमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,

घाणमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ,
जिब्भामयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,
जिब्भामएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ,
फासमयाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,
फासमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ.

तेइंदियाणं जीवाणं समारभमाणस्स छव्विहे असंजमे कज्जइ. तं जहा-

घाणमयाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ —जाव—
फासमएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवइ. २

५२२ जंबुद्दीवे दीवे छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

हेमवए, हेरण्णवए, हरिवासे,
रम्मगवासे, देवकुरा, उत्तरकुरा.

जंबुद्दीवे दीवे छव्वासा पण्णत्ता. तं जहा-

भरहे, हेरवए, हेमवए,
हेरण्णवए, हरिवासे, रम्मगवासे.

जंबुद्दीवे दीवे छ वासहरपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, निसढे,
नीलवंते, रुप्पि, सिहरी.

जंबूमंदरदाहिणेणं छ कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

चुल्लहिमवंत-कूडे, वेसमण-कूडे,
महाहिमवंत-कूडे, वेरुलिय-कूडे,
निसढ-कूडे, रुयग-कूडे.

जंबूमंदर उत्तरे णं छ कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

नीलवंत-कूडे, उवदंसण-कूडे,
रुप्पि-कूडे, मणिकंचण-कूडे,
सिहरि-कूडे, तिगिच्छ-कूडे.

जंबुद्दीवे दीवे छ महद्दहा पण्णत्ता. तं जहा-

पउम-द्दहे, महापउम-द्दहे, तिगिच्छ-द्दहे,
केसरि-द्दहे, महापोंडरिय-द्दहे, पुंडरीय-द्दहे.

तत्थ णं छ देवयाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठियाओ परिवसंति. तं जहा-

सिरि, हिरि, धिति, कित्ति, बुद्धि, लच्छी.

जंबूमंदरदाहिणे णं छ महानईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गंगा, सिंधू, रोहिया, रोहितंसा, हरी, हरिकंता.

जंबूमंदरउत्तरेणं छ महानईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

नरकंता, नारीकंता, सुवण्णकूला,
रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवती.

जंबूमंदरपुरच्छिमे णं सीताए महाणईए उभयकूले छ अंतरनईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहावई, दहावई, पंकवई,
तत्तजला, मत्तजला, उम्मत्तजला.

जंबूमंदरपच्चत्थिमे णं सीतोदाए महाणईए उभयकूले च अंतरनईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

खीरोदा, सीहसोता,
अंतोवाहिणी, उम्मिमालिणी,
फेणमालिणी, गंभीरमालिणी.

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं छ अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

हेमवए —जाव— उत्तरकुरा.

एवं जहा जंबूद्दीवे दीवे तहा नई —जाव— अंतरनईओ —जाव— पुक्खरवरदीवद्धपच्चत्थिमद्धे भाणियव्वं. २४

५२३ छ उऊ पण्णत्ता. तं जहा-

पाउसे, वारिसारत्ते, सरए, हेमंते, वसंते, गिम्हे.

५२४ छ ओमरत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

तइए पव्वे, सत्तमे पव्वे,
एक्कारसमे पव्वे, पण्णरसमे पव्वे,
एगूणवीसइमे पव्वे, तेवीसइमे पव्वे.

छ अइरत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

चउत्थे पव्वे, अट्ठमे पव्वे,
दुवालसमे पव्वे, सोलसमे पव्वे,
वीसइमे पव्वे, चउवीसइमे पव्वे. २

५२५ आभिणिबोहियणाणस्स णं छव्विहे अत्थोग्गहे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइंदियत्थोग्गहे —जाव— नोइंदियत्थोग्गहे.

५२६ छव्विहे ओहिणाणे पण्णत्ते. तं जहा-

आणुगामिए, अणाणुगामिए,
वड्ढमाणए, हीयमाणए,
पडिवाई, अपडिवाई.

५२७ नो कप्पइ निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा इमाइं छ अवयणाइं वइत्तए. तं जहा-

अलियवयणे, हीलिअवयणे,
खिंसियवयणे, फरुसवयणे,
गारत्थियवयणे, विउसवियं वा पुणो उदीरित्तए.

५२८ छ कप्पस्स पत्थारा पण्णत्ता. तं जहा-

पाणाइवायस्स वायं वयमाणे,
मुसावायस्स वायं वयमाणे,
अदिण्णादाणस्स वायं वयमाणे,
अविरइवायं वयमाणे,
अपुरिसवायं वयमाणे,
दासवायं वयमाणे.

इच्चेते छ कप्पस्स पत्थारे पत्थरेत्ता सम्ममपरिपूरेमाणो तट्ठाणपत्ते.

५२९ छ कप्पस्स पलिमंथू पण्णत्ता. तं जहा-

कोकुइए संजमस्स पलिमंथू,
मोहरिए सच्चवयणस्स पलिमंथू,
चक्खुलोलुए ईरियावहियाए पलिमंथू,

तिंतिणिए एसणागोयरस्स पलिमंथू,
इच्छालोभिए मोत्तिमग्गस्स पलिमंथू,
भिज्जाणियाणकरणे मोक्खमग्गस्स पलिमंथू.

सव्वत्थ भगवया अणियाणया पसत्था.

५३० छव्विहा कप्पट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-
सामाइयकप्पट्ठिई,
छेओवट्ठावणियकप्पट्ठिई,
निव्विसमाणकप्पट्ठिई,
निव्विट्ठकप्पट्ठिई,
जिणकप्पट्ठिई,
थविरकप्पट्ठिई.

५३१ समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं मुंडे —जाव— पव्वइए.

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणंते अणुत्तरे —जाव— समुप्पण्णे.

समणे भगवं महावीरे छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे. ३

५३२ सणंकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु विमाणा छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

सणंकुमार-माहिंदेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरगा उक्कोसेणं छ रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. २

५३३ छव्विहे भोयणपरिणामे पण्णत्ते. तं जहा-

मणुण्णे, रसिए, पीणणिज्जे,
विंहणिज्जे, मयणिज्जे, दीवणिज्जे.

छव्विहे विसपरिणामे पण्णत्ते. तं जहा-

डक्के, भुत्ते,
निवइए, मंसाणुसारी,
सोणियाणुसारी, अट्ठिमिंजाणुसारी. २

५३४ छव्विहे पट्ठे पण्णत्ते. तं जहा-

संसयपट्ठे, वुग्गहपट्ठे, अणुजोगी,
अणुलोमे, तहणाणे, अतहणाणे.

५३५ चमरचंचा णं रायहाणी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिए उववाएणं.

एगमेगे णं इंदट्ठाणे उक्कोसेणं छम्मासा विरहिए उववाएणं.
अहेसत्तमा णं पुढवी उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववाएणं.

सिद्धिगइ णं उक्कोसेणं छम्मासा विरहिया उववाएणं. ४

५३६ छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते. तं जहा-

जाइणामणिधत्ताउए,
गइणामणिधत्ताउए,
ठिइणामणिधत्ताउए,
ओगाहणाणामणिधत्ताउए,

पएसणामणिधत्ताउए,

अणुभावणामणिधत्ताउए.

नेरइयाणं छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते. तं जहा-

जाइणामणिधत्ताउए —जाव— अणुभावणामणिध-त्ताउए.

एवं —जाव— वेमाणियाणं.

नेरइया णियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति.

एवामेव असुरकुमारा वि —जाव— थणियकुमारा.

असंखेज्जवासाउया सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिया णियमं छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पगरेंति.

असंखेज्जवासाउया सण्णि-मणुस्सा णियमं —जाव— पगरिंति.

वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया जहा नेरइया. ३

५३७ छव्विहे भावे पण्णत्ते. तं जहा-

ओदइए, उवसमिए,
खइए, खओवसमिए,
पारिणामिए, सण्णिवाइए.

५३८ छव्विहे पड़िक्कमणे पण्णत्ते. तं जहा-

उच्चारपड़िक्कमणे, पासवणपड़िक्कमणे,
इत्तरिए, आवकहिए,
जं किंचि मिच्छा, सोमणंतिए.

५३९ कत्तियाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते.

असिलेसाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते. २

५४० जीवाणं छट्ठाण-निव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिंणिसु वा, चिणंति वा, चिणिस्संति वा. तं जहा-

पुढविकायनिवत्तिए —जाव— तसकायणिवत्तिए.

एवं चिण, उवचिण, बंध, उदीर, वेय तह णिज्जरा चेव.

छप्पएसिया णं खंधा अणंता पण्णत्ता.

छप्पएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता.

छसमयट्ठिइया पोग्गला अणंता.

छगुणकालगा पोग्गला —जाव— छगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २९

सत्तट्ठाणं

५४१ सत्तविहे गणावक्कमणे पण्णत्ते. तं जहा-

सव्वधम्मा रोएमि,

एगइया रोएमि एगइया नो रोएमि,

सव्वधम्मा वितिगिच्छामि,

एगइया वितिगिच्छामि एगइया नो वितिगिच्छामि,

सव्वधम्मा जुहुणामि,

एगइया जुहुणामि एगइया नो जुहुणामि,

इच्छामि णं भंते ! एगल्लविहारपड़िमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए.

५४२ सत्तविहे विभंगणाणे पण्णत्ते, तं जहा—

एगदिसिलोगाभिगमे,

पंचदिसिलोगाभिगमे,

किरियावरणे जीवे,

मुदग्गे जीवे,

अमुदग्गे जीवे,

रूवी जीवे,

सव्वमिणं जीवा.

तत्थ खलु इमे पढमे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभंगनाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासइ पाईणं वा, पड़िणं वा, दाहिणं वा उदीणं वा, उड्ढं वा —जाव— सोहम्मे कप्पे, तस्स णं एवं भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे नाण-दंसणे समुप्पण्णे एग दिसिं लोगाभिगमे, संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहंसु पंचदिसिं लोगाभिगमे" जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु

इइ पढमे विभंगणाणे.

अहावरे दोच्चे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स वा, माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासइ पाईणं वा, पड़िणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा, उड्ढं वा —जाव— सोहम्मे कप्पे, तस्स णं एवं भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे णाण-दंसणे समुप्पण्णे पंचदिसिं लोगाभिगमे", संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहंसु—"एगदिसिं लोगाभिगमे जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु".

इइ दोच्चे विभंगणाणे.

अहावरे तच्चे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभंगणाणे

समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभंगणाणेणं पासइ-पाणे अइवाएमाणे, मुसं वयमाणे, अदिण्णमादियमाणे, मेहुणं पड़िसेवमाणे, परिग्गहं परिगिण्हमाणे, राइभोयणं भंजमाणे वा, पावं च णं कम्मं कीरमाणं नो पासइ, तस्स णं एवं भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे णाण-दंसणे समुप्पण्णे किरियावरणे जीवे. संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहंसु—नो किरियावरणे जीवे" जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु.

इइ तच्चे विभंगणाणे.

अहावरे चउत्थे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासइ, बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियादिइत्ता पुढेगत्तं णाणत्तं फुसिया फुरेत्ता फुट्टित्ता विकुव्वित्ताणं, विकुव्वित्ताणं चिट्ठित्तए तस्स णं एवं भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे नाण-दंसणसमुप्पण्णे, मुदग्गे जीवे, संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहंसु—अमुदग्गे जीवे" जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु.

इइ चउत्थे विभंगणाणे.

अहावरे पंचमे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा विभंगणाणे

समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासइ, बाहिरब्भंतरए पोग्गले अपरियादिइत्ता पुढेगत्तं —जाव— विकुव्वित्ताणं चिट्ठित्तए तस्स णं एवं भवइ "अत्थि —जाव— समुप्पण्णे अमुदग्गे जीवे," संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहंसु-मुदग्गे जीवे", जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु.

इइ पंचमे विभंगणाणे.

अहावरे छट्ठे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभंगणाणे समुप्पज्जइ. से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं देवामेव पासइ बाहिरब्भंतरए पोग्गले परियाइत्ता वा, अपरियाइत्ता वा, पुढेगत्तं णाणत्तं फुसेत्ता —जाव— विकुव्वित्ताणं चिट्ठित्तए, तस्स णं एवं भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे णाण-दंसणे समुप्पण्णे, रूवी जीवे, संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहंसु अरूवी जीवे" जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु.

इइ छट्ठे विभंगणाणे.

अहावरे सत्तमे विभंगणाणे

जया णं तहारूवस्स समणस्स वा, माहणस्स वा विभंगणाणे वा समुप्पज्जइ, से णं तेणं विभंगणाणेणं समुप्पण्णेणं पासइ सुहुमेणं वाउकाएणं फुडं पोग्गलकायं एयंतं वेयंतं चलंतं

खुब्भंतं फंदंतं घट्टंतं उदीरेंतं तं तं भावं परिणमंतं तस्स णं एवं भवइ "अत्थि णं मम अइसेसे णाण-दंसणे समुप्पण्णे सव्वमिणं जीवा. संतेगइया समणा वा, माहणा वा एवमाहंसु-"जीवा चेव अजीवा चेव" जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु.

तस्स णं इमे चत्तारि जीवनिकाया णो सम्मसुवगया भवंति, तं जहा-

पुढविकाइया, आउकाइया, तेउकाइया, वाउकाइया,
इच्चेएहिं चउहिं जीवनिकाएहिं मिच्छादंडं पवत्तेइ.

इइ सत्तमे विभंगणाणे.

५४३ सत्तविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते, तं जहा—

अंडया,
पोयया,
जराउया,
रसया,
संसेइमा,
सम्मुच्छिमा,
उब्भिया.

अंडया सत्त गइया सत्त आगइया पण्णत्ता. तं जहा-

अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा, पोयएहिंतो वा —जाव— उब्भिएहिंतो वा उववज्जेज्जा.

से चेव णं से अंडए अंडयत्तं विप्पजहमाणे अंडयत्ताए वा,

पोयग्राए वा —जाव— उब्भियत्ताए वा गच्छेज्जा.

पोयया सत्त गइया सत्त आगइया.

एवं चेव सत्तण्हवि गइरागइ भाणियव्वा —जाव— उब्भियत्ति. २

५४४ आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त संगहट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए गणंसि श्राणं वा, धारणं वा सम्मं पउंजित्ता भवइ.

एवं जहा पंचट्ठाणे —जाव— आयरिय-उवज्झाए गणंसि आपुच्छियचारि यावि भवइ.

नो अणापुच्छियचारी या वि भवइ.

आयरिय-उवज्झाए गणंसि अणुप्पण्णाइं उवगरणाइं सम्मं उप्पाइत्ता भवइ.

आयरिय-उवज्झाए गणंसि पुव्वुप्पण्णाइं उवगरणाइं सम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवइ. नो असम्मं सारक्खेत्ता संगोवित्ता भवइ.

आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त असंगहट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए गणंसि आणं वा, धारणं वा नो सम्मं पउंजित्ता, भवइ. एवं —जाव—

उवगरणाणं नो सम्मं सारक्खेत्ता संगोवेत्ता भवइ. २

५४५ सत्त पिंडेसणाओ पण्णत्ताओ.

सत्त पाणेसणाओ पण्णत्ताओ.

सत्त उग्गहपड़िमाओ पण्णत्ताओ.

सत्त सत्तिक्कया पण्णत्ता.

सत्त महज्झयणा पण्णत्ता.

सत्तसत्तमिया णं भिक्खुपड़िमा एगूणपण्णयाए राइंदिएहिं एगेण य छण्णउएणं भिक्खासएणं अहासुत्तं —जाव— आराहिया वि भवइ. ६

५४६ अहेलोगे णं सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ.

सत्त घणोदहिओ पण्णत्ताओ.

सत्त घणवाया, सत्त तणुवाया पण्णत्ता.

सत्त उवासंतरा पण्णत्ता.

एएसु णं सत्तसु उवासंतरेसु सत्त तणुवाया पइट्ठिया.

एएसु णं सत्तसु तणुवाएसु सत्त घणवाया पइट्ठिया.

एएसु णं सत्तसु घणवाएसु सत्त घणोदहि पइट्ठिया

एएसु णं सत्तसु घणोदहिसु पिंडलगपिहुणसंठाणसंठियाओ सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

पढमा —जाव— सत्तमा.

एयासि णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

घम्मा, वंसा, सेला, अंजणा, रिट्ठा, मघा, माघवइ.

एयासि णं सत्तण्हं पुढवीणं सत्त गोत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

रयणप्पभा,

सक्करप्पभा,

वालुअप्पभा,

पंकप्पभा,

धूमप्पभा,

तमा,

तमतमा, ११

५४७ सत्तविहा बायरवाउकाइया पण्णत्ता. तं जहा-

पाईणवाए,

पडीणवाए,

दाहिणवाए,

उदीणवाए,

उड्ढवाए,

अहोवाए,

विदिसिवाए.

५४८ सत्त संठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

दीहे, हस्से, वट्टे, तंसे, चउरंसे, पिहुले, परिमंडले.

५४९ सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

इहलोगभए,

भए.

मरणभए,

असिलोगभए.

५५० सत्तहिं ठाणेहिं छउमत्थं जाणेज्जा. तं जहा-

पाणे अइवाइत्ता भवइ,

मुसं वइत्ता भवइ,

अदिण्णमाइत्ता भवइ,

सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे आसाएत्ता भवइ,

पूया-सक्कारं अणुवूहेत्ता भवइ,

इमं सावज्जं ति पण्णवेत्ता पडिसेवित्ता भवइ,

नो जहावाइ तहाकारी यावि भवइ.

सत्तहिं ठाणेहिं केवली जाणेज्जा. तं जहा-

नो पाणे अइवाएत्ता भवइ, —जाव— जहावाइ तहाकारी यावि भवइ. २

५५१ सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

कासवा,

गोतमा,

वच्छा,

कोच्छा,

कोसिया,

मंडवा,

वासिट्ठा.

जे कासवा ते सत्तविहा पण्णत्ता. तं जहा-

ते कासवा,
ते संडेल्ला,
ते गोल्ला,
ते वाला,
ते मुंजतिणो,
ते पव्वपेच्छतिणो,
ते वरिसकण्हा.

जे गोयमा ते सत्तविहा पण्णत्ता. तं जहा-

ते गोयमा,
ते गग्गा,
ते भारद्दा,
ते अंगिरसा,
ते सक्कराभा,
ते भक्खराभा,
ते उदगत्ताभा.

जे वच्छा ते सत्तविहा पण्णत्ता. तं जहा-

ते वच्छा,
ते अग्गेया,
ते मित्तिया,
ते सामिलिणो,
ते सेलतया,
ते अट्ठिसेणा,

ते वीयकम्हा,

जे कोच्छा ते सत्तविहा पण्णत्ता. तं जहा-

ते कोच्छा,

ते मोग्गलायणा,

ते पिंगलायणा,

ते कोड़ीणा,

ते मंडलिणो,

ते हारिता.

ते सोमया,

जे कोसिया ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा-

ते कोसिया,

ते कच्चातणा,

ते सालंकायणा,

ते गोलिकायणा,

ते पक्खिकायणा,

ते अग्गिच्चा,

ते लोहिया.

जे मंडवा ते सत्तविहा पण्णत्ता. तं जहा-

ते मंडवा,

ते अरिट्ठा,

ते समुता,

ते तेला,

ते एलावच्चा,

ते कंडिल्ला,

ते खारातणा.

जे वासिट्ठा ते सत्तविहा पण्णत्ता. तं जहा-

ते वासिट्ठा,

ते उंजायणा,

ते जारेकण्हा,

ते वग्घावच्चा,

ते कोडिण्णा,

ते सण्णी,

ते पारासरा. ८

५५२ सत्त मूलनया पण्णत्ता. तं जहा-

नेगमे,

संगहे,

ववहारे,

उज्जुसुए,

सद्दे,

समभिरूढे,

एवंभूए.

५५३ सत्त सरा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—सज्जे रिसभे गंधारे ,

मज्झिमे पंचमे सरे ।

धेवए चेव णिसाए ,
सरा सत्त वियाहिया ॥१॥

एएसि णं सत्तण्हं सराणं सत्त सरट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहाओ–सज्जं तु अग्गजिब्भाए ,
उरेण रिसभं सरं ।
कंठुग्गएण गंधारं ,
मज्झजिब्भाए मज्झिमं ॥१॥
णासाए पंचमं बूया ,
दंतोठ्ठेण य धेवयं ।
मुद्धाणेण य णेसायं ,
सरट्ठाणा वियाहिया ॥२॥

सत्त सरा जीवनिस्सिया पण्णत्ता. तं जहा-

गाहाओ–सज्जं रवइ मयूरो ,
कुक्कुड़ो रिसहं सरं ।
हंसो णयइ गंधारं ,
मज्झिमं तु गवेलगा ॥१॥
अह कुसमसंभवे काले ,
कोइला पंचमं सरं ।
छट्ठं च सारसा कोंचा ,
णिसायं सत्तमं गया ॥२॥

सत्त सरा अजीवनिस्सिया पण्णत्ता. तं जहा-

गाहाओ–सज्जं रवइ मुइंगो,
गोमुही रिसभं सरं।
संखो णयइ गंधारं,
मज्झिमं पुण झल्लरी ॥१॥
चउचलणपइट्ठाणा,
गोहिया पंचमं सरं।
आडंबरो रेवइयं,
महाभेरी य सत्तमं ॥२॥

एएसि णं सत्तसराणं सत्त सरलक्खणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहाओ–सज्जेण लभइ वित्तिं,
कयं च ण विणस्सइ।
गावो मित्ता य पुत्ता य,
णारीणं चेव वल्लभो ॥१॥
रिसभेण उ एसज्जं,
सेणावच्चं धणाणि य।
वत्थगंधमलंकारं,
इत्थिओ सयणाणि य ॥२॥
गंधारे गीयजुत्तिण्णा,
वज्जवित्ती कलाहिया।
भवंति कइणो पण्णा,
जे अण्णे सत्थपारगा ॥३॥

मज्झिमसरसंपण्णा ,
भवंति सुहजीविणो ।
खायती पीयती देइ ,
मज्झिमं सरमस्सिओ ॥४॥
पंचमसरसंपण्णा ,
भवंति पुढवीपई ।
सूरा संगहकत्तारो ,
अणेग-गण-णायगा ॥५॥
रेवयसरसंपण्णा ,
भवंति कलहप्पिया ।
साउणिया वग्गुरिया ,
सोयरिया मच्छबंधा य ॥६॥
चंडाला मुट्ठिया सेया ,
जे अण्णे पावकम्मिणो ।
गोघायगा य जे चोरा ,
णिसायं सरमस्सिया ॥७॥

एतेसिं सत्तण्हं सराणं तओ गामा पण्णत्ता. तं जहा-
सज्जगामे, मज्झिमगामे, गंधारगामे.

सज्जगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
गाहा—भंगी कोरव्वीया हरी य ,
रयतणी य सारकंता य ।

छट्ठी य सारसी णाम,
सुद्धसज्जा य सत्तमा ॥१॥

मज्झिमगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ. तं जहा–

गाहा–उत्तरमंदा रयणी,
उत्तरा उत्तरासमा।
आसोकंता य सोवीरा,
अभिरु हवइ सत्तमा ॥१॥

गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहाओ–नंदी य खुद्दिमा पूरिमा,
य चउत्थी य सुद्धगंधारा।
उत्तरगंधारा वि य,
पंचमिया हवइ मुच्छा उ ॥१॥

सुट्ठुत्तरमायामा,
सा छट्ठी नियमसो उ णायव्वा।
अह उत्तरायया,
कोडीमायसा सत्तमी मुच्छा ॥२॥

सत्त सराओ कओ,
संभवंति गेयस्स का भवंति जोणी।
कइसमया उस्सासा,
कइ वा गेयस्स आगारा ॥३॥

सत्त सरा णाभीओ,
भवंति गीयं च रुयजोणीयं।

पादसमा ऊसासा ,
तिण्णि य गीयस्स आगारा ॥४॥
आइमिउ आरंभया ,
समुव्वहंता य मज्झगारंमि ।
अवसाणे तज्झवितो ,
तिण्णि य गेयस्स आगारा ॥५॥
छद्दोसे अट्ठगुणे ,
तिण्णि य वित्ताइं दो भणितीओ ।
जाणाहिइ सो गाहिइ ,
सुसिक्खिओ रंगमज्झम्मि ॥६॥
भीयं दुतं रहस्सं ,
गायंतो मा य गाहि उत्तालं ।
काकस्सरमणुनासं च ,
होंति गेयस्स छद्दोसा ॥७॥
पुण्णं रत्तं च अलंकियं च ,
वत्तं तहा अविघुट्ठं ।
महुरं सम सुउमारं ,
अट्ठ गुणा होंति गेयस्स ॥८॥
उरकंठसिरपसत्थं च ,
गेज्जंते मउरिभिअपदबद्धं ।
समतालपडुक्खेवं ,
सत्तसरसीहरं गीयं ॥९॥
निद्दोसं सारवंतं च ,

हेउजुत्तमलंकियं ।
उवणीयं सोवयारं च,
मियं महुरमेव य ॥१०॥
सममद्धसमं चेव,
सव्वत्थ विसमं च जं ।
तिण्णि वित्तप्पयाराइं,
चउत्थं नोवलब्भइ ॥११॥
सक्कया पागया चेव,
दुहा भणिइओ आहिया ।
सरमंडलंमि गिज्जंते,
पसत्था इसिभासिया ॥१२॥
केसी गायइ य महुरं,
केसी गायइ खरं च रुक्खं च ।
केसी गायइ चउरं,
केसी विलंबं दुयं केसी ॥१३॥
विस्सरं पुण केरिसी ?,
सामा गायइ महुरं,
काली गायइ खरं च रुक्खं च ।
गोरी गायइ चउरं,
काणं विलंबं दुतं अंधा ॥१४॥
विस्सरं पुण पिंगला ।
तंतिसमं तालसमं,
पादसमं लयसमं गहसमं च ।

नीससिऊससियसमं ,
संचारसमा सरा सत्त ॥१५॥
सत्त सरा य तओ गामा ,
मुच्छणा एकवीसइ ।
ताणा एगूणपण्णासा ,
सम्मत्तं सरमंडलं ॥१६॥

५५४ सत्तविहे कायकिलेसे पण्णत्ते. तं जहा-

ठाणाइए,
ऊक्कुडुयासणिए,
पडिमठाइ,
वीरासणिए,
णेसज्जिए,
दंडाइए,
लगंडसाइ.

५५५ जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पण्णत्ता. तं जहा-

भरहे,
एरवए,
हेमवए,
हेरण्णवए,
हरिवासे,
रम्मगवासे,
महाविदेहे.

जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चुल्लहिमवंते,

महाहिमवंते,

निसढे,

नीलवंते,

रुप्पी,

सिहरी,

मंदरे.

जंबुद्दीवे दीवे सत्त महानईओ पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति. तं जहा-

गंगा,

रोहिया,

हिरी,

सिया,

नरकंता,

सुवण्णकूला,

रत्ता.

जंबुद्दीवे दीवे सत्त महानईओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवण-समुद्दं समुप्पेंति. तं जहा-

सिंधु,

रोहितंसा,

हरिकंता,

सीतोदा,

नारीकंता,

रुप्पकूला,

रत्तवई.

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासा पण्णत्ता. तं जहा-

भरहे —जाव— महाविदेहे.

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चुल्लहिमवंते —जाव— मंदरे.

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त महाणईओ पुरच्छाभिमुहीओ कालोयसमुद्दं समप्पेंति. तं जहा-

गंगा —जाव— रत्ता.

धायइसंडदीवपुरच्छिमद्धे णं सत्त महानईओ पच्चत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति. तं जहा-

सिंधू —जाव— रत्तवई.

धायइसंडदीवे पच्छत्थिमद्धे णं सत्त वासा एवं चेव, नवरं पुरत्थाभिमुहीओ लवणसमुद्दं समप्पेंति पच्चत्थाभिमुहीओ कालोदं. सेसं तं चेव.

पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धे णं सत्त वासा तहेव.

नवरं-पुरत्थाभिमुहीओ पुक्खरोदं समुद्दं समप्पेंति.

पच्छत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं समप्पेंति. सेसं तं चेव.

असिरयणे,
मणिरयणे,
काकणिरयणे·

एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स सत्त पंचिंदिय-रयणा पण्णत्ता. तं जहा-

सेणावइरयणे,
गाहावइरयणे,
वड्ढइरयणे,
पुरोहियरयणे,
इत्थिरयणे,
आसरयणे,
हत्थिरयणे. २

५५९ सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं दुसमं जाणेज्जा. तं जहा-

अकाले वरिसइ,
काले न वरिसइ,
असाहू पुज्जंति,
साहू न पुज्जंति,
गुरुहिं जणो मिच्छं पडिवण्णो,
मणोदुहया,
वइदुहया.

सत्तहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा. तं जहा-

अ[illegible]

काले वरिसइ,

असाहू न पुज्जंति,

साहू पुज्जंति,

गुरुहिं जणो सम्मं पडिवण्णो,

मणोसुहया,

वइसुहया. २

५६० सत्तविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-

नेरइया,

तिरिक्खजोणिया,

तिरिक्खजोणिणीओ,

मणुस्सा,

मणुस्सीओ,

देवा,

देवीओ.

५६१ सत्तविहे आउभेदे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा – अज्झवसाणनिमित्ते, आहारे वेयणा पराघाए ।
फासे आणापाणू, सत्तविहं भिज्जए आउं ॥१॥

५६२ सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया —जाव— तसकाइया. अकाइया.

अहवा सत्तविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

कण्हलेसा —जाव— सुक्कलेसा, अलेसा. २

एवं पच्चत्थिमद्धे वि. नवरं-पुरत्थाभिमुहीओ कालोदं समुद्दं समप्पेंति. पच्चत्थाभिमुहीओ पुरक्खरोदं समप्पेंति. सव्वत्थ वासा वासहरपव्वया नईओ य भाणियव्वाणि. ११

५५६ जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तीयाए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था. तं जहा-

गाहा—मित्तदामे सुदामे य, सुपासे य सयंपभे ।
विमलघोसे सुघोसे य, महाघोसे य सत्तमे ॥१॥

जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सत्त कुलगरा हुत्था-

गाहा—पढमित्थ विमलवाहण,
चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे ।
तत्तो य पसेणइ,
पुण मरुदेवे चेव नाभी य ॥१॥

एएसि णं सत्तण्हं कुलगराणं सत्त भारियाओ हुत्था. तं जहा-

गाहा—चंदजसा चंदकांता,
सुरूव पड़िरूव चक्खुकंता य ।
सिरिकंता मरुदेवी,
कुलकरइत्थीण नामाई ॥१॥

जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए सत्त कुलकरा भविस्संति.

गाहा—मित्तवाहण सुभोमे य,
सुप्पभे य सयंपभे ।

दत्ते सुहुमे सुबंधू य ,
आगमेस्सिण होक्खइ ॥१॥

विमलवाहणे णं कुलगरे सत्तविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छिसु. तं जहा-

गाहा—मत्तंगया य भिंगा ,
चित्तंगा चेव होंति चित्तरसा ।
मणियंगा य अणियणा ,
सत्तमगा कप्परुक्खा य ॥१॥ ५

५५७ सत्तविहा दंडनीई पण्णत्ता. तं जहा-

हक्कारे,
मक्कारे,
धिक्कारे,
परिहासे,
मंडलबंधे,
चारए,
छविच्छेदे.

५५८ एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स णं सत्त एगिंदियरयणा पण्णत्ता, तं जहा-

चक्करयणे,
छत्तरयणे,
चम्मरयणे,
दंडरयणे,

५६३ बंभदत्ते णं राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्त धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं सत्त य वाससयाइं परमाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए अप्पतिट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववण्णे.

५६४ मल्ली णं अरहा अप्पसत्तमे मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए. तं जहा-

मल्ली विदेहरायवरकण्णगा,
पड़िबुद्धि इक्खागराया,
चंदच्छाये अंगराया,
रुप्पी कुणालाहिवइ,
संखे कासीराया,
अदीणसत्तू कुरुराया
जितसत्तू पंचालराया.

५६५ सत्तविहे दंसणे पण्णत्ते तं जहा-

सम्मद्दंसणे,
मिच्छदंसणे,
सम्मामिच्छदंसणे,
चक्खुदंसणे,
अचक्खुदंसणे,
ओहिदंसणे,
केवलदंसणे.

५६६ छउमत्थवीयरागे णं मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपयड़ीओ

वेयइ. तं जहा-

नाणावरणिज्जं,

दंसणावरणिज्जं,

वेयणियं,

आउयं,

नामं,

गोत्तं,

अंतराइयं.

६७ सत्त ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणइ, न पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकायं,

अधम्मत्थिकायं.

आगासत्थिकायं,

जीवं असरीरपड़िबद्धं,

परमाणुपोग्गलं,

सद्दं,

गंधं.

एयाणि चेव उप्पण्णणाणे — जाव — जाणइ, पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकायं —जाव— गंधं. २

६८ समणे भगवं महावीरे वयरोसभणारायसंघयणे समचउरंस-संठाणसंठिए सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था.

६९ सत्त विकहाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

इत्थिकहा,
भत्तकहा,
देसकहा,
रायकहा,
मिउकालणिया,
दंसणभेयणी,
चरित्तभेयणी.

५७० आयरिय-उवज्झायस्स णं गणंसि सत्त अइसेसा पण्णत्ता. तं जहा-

आयरिय-उवज्झाए अंतो उवस्सगस्स पाए निगिज्झिय-निगिज्झिय पप्फोडेमाणे वा, पमज्जमाणे वा नाइक्कमइ,
एवं जहा पंचट्ठाणे —जाव—
बाहिं उवस्सगस्स एगरायं वा, दुरायं वा वसमाणे नाइक्कमइ,
उवकरणाइसेसे भत्तपाणाइसेसे.

५७१ सत्तविहे संजमे-पण्णत्ते. तं जहा-

पुढविकाइयसंजमे —जाव— तसकाइयसंजमे, अजीवकायसंजमे.

सत्तविहे असंजमे पण्णत्ते. तं जहा-

पुढविकायअसंजमे —जाव— तसकाइयअसंजमे, अजीवकाइय असंजमे.

सत्तविहे आरंभे पण्णत्ते. तं जहा-

पुढविकाइयआरंभे —जाव— अजीवकाइयआरंभे.

एवं अणारंभे वि, एवं सारंभे वि, एवं असारंभे वि, एवं समारंभे वि, एवं असमारंभे वि —जाव— अजीवकाय-असमारंभे. ६

५७२ अह भंते ! अयसि-कुसुंभ-कोद्दव-कंगुरालग-सण-सरिसव-मूल-वीयाणं एएसि णं धण्णाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं —जाव— पिहियाणं केवइयं कालं जोणी संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्त संवच्छराइं, तेण परं जोणी पमिलायइ—जाव— जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते.

५७३ वायरआउकाइयाणं उक्कोसेणं सत्त वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता.

तच्चाए णं वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

चउत्थिए णं पंकप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं नेरइयाणं सत्त-सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता. ३

५७४ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णताओ.

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ.

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सत्त अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. ३

५७५ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अब्भितरपरिसाए देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं देवीणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं उक्कोसेणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता. ३

५७६ सारस्सयमाइच्चाणं सत्त देवा, सत्त देवसया पण्णत्ता.

गद्दतोयतुसियाणं देवाणं सत्त देवा,

सत्त देवसहस्सा पण्णत्ता.

५७७ सणंकुमारे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

माहिंदे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं साइरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

बंभलोगे कप्पे जहण्णेणं देवाणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता. ३

५७८ बंभलोयलंतएसु णं कप्पेसु विमाणा सत्तजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

५७९ भवणवासीणं देवाणं भवधारणिज्जा सरीरगा उक्कोसेणं सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

एवं वाणमंतराणं, एवं जोइसियाणं.

सोहम्मीसाणेसु णं कप्पेसु देवाणं भवधारणिज्जगा सरीरा

सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. ४

५८० नंदिस्सरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त दीवा पण्णत्ता. तं जहा-

जंबुद्दीवे दीवे,
धायइसंडे दीवे,
पोक्खरवरे,
वरुणवरे,
खीरवरे,
घयवरे,
खोयवरे.

नंदिस्सरवरस्स णं दीवस्स अंतो सत्त समुद्दा पण्णत्ता. तं जहा-

लवणे,
कालोए,
पुक्खरोदे,
वरुणोए,
खीरोए
घओए,
खोओए. २

५८१ सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ. तं जहा

उज्जुआयया,
एगओवंका,

दुहओवंका,
एगओखुहा,
दुहओखुहा,
चक्कवाला,
अद्धचक्कवाला.

५८२ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सत्त अणिया सत्त अणियाहिवई पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणिए,
पीढाणिए
कुंजराणिए,
महिसाणिए,
रहाणिए,
नट्टाणिए,
गंधव्वाणिए.

दुमे पायत्ताणियाहिवइ,
एवं जहा पंचट्ठाणे —जाव—
किन्नरे रहाणियाहिवइ,
रिट्ठे नट्टाणियाहिवइ,
गीइरइ गंधव्वाणियाहिवइ.

बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सत्ताणिया, सत्त अणियाहिवइ पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— गंधव्वाणिए.

महद्दुमे पायत्ताणियाहिवइ —जाव— किंपुरिसे रहाणियाहिवइ,

महारिट्ठे नट्टाणियाहिवइ, गीइजसे गंधव्वाणियाहिवइ.

धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुरमारण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवइ पण्णत्ता. तं जहा-

पाइत्ताणिए —जाव— गंधव्वाणिए.

रुद्दसेणे पायत्ताणियाहिवइ —जाव— आणंदे रहाणियाहिवइ,

नंदणे नट्टाणियाहिवइ, तेतली गंधव्वाणियाहिवइ.

भूयाणंदस्स सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवइ पण्णत्ता. तं जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— गंधव्वाणिए,

दक्खे पायत्ताणियाहिवइ —जाव— नंदुत्तरे रहाणियाहिवइ, रती नट्टाणियाहिवई, माणसे गंधव्वाणियाहिवइ.

एवं —जाव— घोस-महाघोसाणं नेयव्वं.

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणियाहिवइणो पण्णत्ताओ. तं जहा-

पायत्ताणिए, —जाव— गंधव्वाणिए,

हरिणेगमेसी पायत्ताणियाहिवइ —जाव— माढरे रहाणियाहिवइ,

सेते नट्टाणियाहिवइ, तंबुरु गंधव्वाणियाहिवइ.

ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सत्त अणिया, सत्त अणिया-

हिवइणो पण्णत्ताओ तं जहा-

पायत्ताणिए —जाव गंधव्वाणिए.

लहुपरक्कमे पायत्ताणियाहिवइ —जाव—

महासेणे नट्टाणियाहिवइ, रते गंधव्वाणियाहिवइ.

सेसं जहा पंचट्ठाणे.

एवं —जाव— अच्चुतस्स वि नेयव्वं. ३०

५८३ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स सत्तकच्छाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

पढमाकच्छा — जाव — सत्तमा कच्छा.

चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवइस्स पढमाए कच्छाए चउसट्ठि देवसहस्सा पण्णत्ता

जावइया पढमा कच्छा,

तब्बिगुणा दोच्चा कच्छा;

तब्बिगुणा तच्चा कच्छा,

एवं — जाव — जावइया छट्ठा कच्छा,

तब्बिगुणा सत्तमा कच्छा.

एवं बलिस्स वि, नवरं-महद्दुमे सट्ठिदेवसाहस्सिओ, सेसं तं चेव, धरणस्स एवं चेव. नवरमट्ठावीसं देवसहस्सा, सेसं तं चेव. जहा धरणस्स एवं —जाव— महाघोसस्स. नवरं पायत्ताणियाहिवइ अण्णे ते पुव्वभणियाओ पण्णत्ताओ.

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो हरिणेगमेसिस्स सत्त कच्छाओ तं जहा-

पढमा कच्छा एवं जहा चमरस्स तहा —जाव—
अच्चुतस्स.

नाणत्तं-पायत्ताणियाहिवइ णं ते पुव्वभणिया.

देवपरीमाणं इमं सक्कस्स चउरासीइं देवसहस्सा.

ईसाणस्स असीइदेवहस्साइं.

देवा इमाए गाहाए अणुगंतव्वा.

गाहा—चउरासीइ असीइ, बावत्तरि सत्तरी य सट्ठीया ।
पण्णा चत्तालीसा, तीसा वीसा दससहस्सा ॥१॥

—जाव— अच्चुअस्स लहुपरक्कमस्स दसदेवसहस्सा
—जाव— जावइया छट्ठा कच्छा तब्बिगुणा सत्तमा
कच्छा. ३०

५८४ सत्तविहे वयणविकप्पे पण्णत्ते. तं जहा-

आलावे,

अणालावे,

उल्लावे,

अणुल्लावे,

संलावे,

पलावे,

विप्पलावे.

५८५ सत्तविहे विणए पण्णत्ते. तं जहा-

नाणविणए,

दंसणविणए,

चरित्तविणए,
मणविणए,
वइविणए,
कायविणए,
लोगोवयारविणए.

पसत्थमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-
अपावए,
असावज्जे,
अकिरिए,
निरुवक्केसे,
अणण्हयकरे,
अच्छविकरे,
अभूयाभिसंकमणे.

अपसत्थमणविणए सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-
पावए,
सावज्जे,
सकिरिए,
सउवक्केसे,
अण्हयकरे,
छविकरे,
भूयाभिसंकमणे.

पसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-

अपावए —जाव— अभूयाभिसंकमणे·

अपसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-

पावए —जाव— भूयाभिसंकमणे.

पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-

आउत्तं गमणं,

आउत्तं ठाणं,

आउत्तं निसीयणं,

आउत्तं तुअट्टणं,

आउत्तं उल्लंघणं,

आउत्तं पल्लंघणं,

आउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया.

अपसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-

अणाउत्तं गमणं —जाव— अणाउत्तं सव्विंदियजोगजुंजणया.

लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते. तं जहा-

अब्भासवत्तियं,

परच्छंदाणुवत्तियं,

कज्जहेउं,

कयपडिकिइया,

अत्तगवेसणया,

देसकालण्णुया,

सव्वत्थेसु अ पडिलोमया. ८

५८६ सत्त समुग्घाया पण्णत्ता. तं जहा-

वेयणासमुग्घाए,

कसायसमुग्घाए,

मारणंतियसमुग्घाए,

वेउव्वियसमुग्घाए,

तेजससमुग्घाए,

आहारगसमुग्घाए,

केवलिसमुग्घाए.

मणुस्साणं सत्त समुग्घाया पण्णत्ता. एवं चेव-

५८७ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि सत्त पवयण-णिण्हगा पण्णत्ता. तं जहा-

बहुरया.

जीवपएसिया,

अवत्तिया,

समुच्छेइया,

दोकिरिया,

तेरासिया,

अवद्धिया.

एएसि णं सत्तण्हं पवयणनिण्हगाणं सत्त धम्मायरिया हुत्था. तं जहा-

जमालि,

तीसगुत्ते,

आसाढे,

आसमित्ते,

गंगे,

छलुए,

गोट्ठामाहिल्ले.

एएसि णं सत्तण्हं पवयणनिण्हगाणं सत्तुप्पत्तिनगरा होत्था. तं जहा-

गाहा—सावत्थी उसभपुरं, सेयविया मिहिलमुल्लगातीरं ।
पुरिमंतरंजि दसपुर निण्हगउप्पत्तिनगराइं ।१। ३

५८८ सायावेयणिज्जस्स कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे पण्णत्ते. तं जहा-

मणुण्णा सद्दा —जाव— मणुण्णा फासा.

मणोसुहया, वइसुहया.

असायावेयणिज्जस्स णं कम्मस्स सत्तविहे अणुभावे पण्णत्ते. तं जहा-

अमणुण्णा सद्दा, —जाव—वइदुहया. २

५८९ महाणक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते.

अभीइयादिया णं सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पण्णत्ता. तं जहा-

अभीइ,

सवणो,

धणिट्ठा,

सतभिसया,

पुव्वाभद्दवया,

उत्तराभद्दवया,

रेवइ.

अस्सिणियादिया णं सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिया पण्णत्ता. तं जहा-

अस्सिणी,

भरणी,

क्तित्तिता,

रोहिणी,

मिगसिरे,

अद्दा,

पुणव्वसू.

पुस्सादिया णं सत्त नक्खत्ता अवरदारिया पण्णत्ता. तं जहा-

पुस्सो,

असिलेसा,

मघा,

पुव्वाफग्गुणी,

उत्तराफग्गुणी,

हत्थो,

चित्ता,

साइयाइया णं सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिया पण्णत्ता. तं जहा-

साइ,

विसाहा,

अणुराहा,

जेट्ठा,

मूलो,

पुव्वासाढा,

उत्तरासाढा. ५

५९० जंबुद्दीवे दीवे सोमणसे वक्खारपव्वए सत्त कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–सिद्धे सोमणसे तह, बोद्धव्वे मंगलावइकूड़े ।
देवकुरु विमल कंचण, विसिट्ठकूड़े य बोद्धव्वे ॥१॥

जंबुद्दीवे दीवे गंधमायणे वक्खारपव्वए सत्त कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–सिद्धे य गंधमायण, बोद्धव्वे गंधिलावइकूड़े ।
उत्तरकुरू फलिहे, लोहितक्ख अणंदणे चेव ॥१॥ २

५९१ बिइंदियाणं सत्त जाइकुलकोड़िजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता.

५९२ जीवा णं सत्तट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा, चिणंति वा, चिणिस्संति वा. तं जहा-

नेरइयनिव्वत्तिए —जाव— देवनिव्वत्तिए.

एवं चिण —जाव— निज्जरा चेव. ६

५९३ सत्तपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता.

सत्तपएसोगाढा पोग्गला —जाव— सत्तगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २३

अट्ठट्ठाणं

५९४ अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहइ एगल्लविहारपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए. तं जहा-

सड्ढी पुरिसजाए, सच्चे पुरिसजाए,

मेहावी पुरिसजाए, बहुस्सुए पुरिसजाए,

सत्तिमं, अप्पाहिकरणे,

धिइमं, वीरियसंपण्णे.

५९५ अट्ठविहे जोणिसंगहे पण्णत्ते. तं जहा-

अंडया पोयया —जाव— उब्भिया उववाइया.

अंडगा अट्ठगइया अट्ठागइआ पण्णत्ता. तं जहा-

अंडए अंडएसु उववज्जमाणे अंडएहिंतो वा, पोयएहिंतो वा—जाव— उववाइएहिंतो वा उववज्जेज्जा.

से चेव णं से अंडए अंडगत्तं विप्पजहमाणे अंडगत्ताए वा, पोयगत्ताए वा —जाव— उववाइयत्ताए वा गच्छेज्जा.

एवं पोयया वि जराउया वि. सेसाणं गइरागइ नत्थि. ४

५९६ जीवा णं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिंसु वा, चिणंति वा, चिणिस्संति वा तं जहा-

नाणावरणिज्जं, दरिसणावरणिज्जं,

वेयणिज्जं, मोहणिज्जं,

आउयं, नामं,
गोत्तं, अंतराइयं.

नेरइया णं अट्ठ कम्मपगड़ीओ चिणिंसु वा, एवं चेव.

एवं निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं.

जीवा णं अट्ठ कम्मपगड़ीओ उवचिणिंसु वा, एवं चेव.

एवं चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेय तह निज्जरा चेव.

एए छ चउवीस-दंडगा भाणियव्वा. ६

५९७ अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा, नो पडिक्कमेज्जा —जाव— नो पड़िवज्जेज्जा. तं जहा-

करिंसु वा हं, करेमि वा हं,
करिस्सामि वा हं, अकित्ती वा मे सिया,
अवण्णे वा मे सिया, अवणए वा मे सिया,
कित्ती वा मे परिहाइस्सइ, जसे वा मे परिहाइस्सइ.

अट्ठहिं ठाणेहिं माई मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव— पड़िवज्जेज्जा. तं जहा-

माइस्स णं अंसि लोए गरहिए भवइ,
उववाए गरहिए भवइ,
आजाइ गरहिया भवइ,
एगमवि माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा —जाव— नो पड़िवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
एगमवि माई मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव—

पड़िवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
बहुओवि माई मायं कट्टु नो आलोएज्जा —जाव—
नो पड़िवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
बहुओवि माई मायं कट्टु आलोएज्जा —जाव—
पड़िवज्जेज्जा नत्थि तस्स आराहणा,
आयरिय-उवज्झायस्स वा मे अइसेसे नाण-दंसणे समुप्प-
ज्जेज्जा, सेत्तं मम आलोएज्जा माई णं एसे.

माई णं मायं कट्टु से जहा नामए अयागरेइ वा, तंबागरेइ वा, तउआगरेइ वा, सीसागरेइ वा, रुप्पागरेइ वा, सुवण्णागरेइ वा, तिलागणीइ वा, तुसागणीइ वा, बुसागणीइ वा, नलागणीइ वा, दलागणीइ वा, सोंडियालिच्छाणि वा, भंडियालिच्छाणि वा, गोलियालिच्छाणि वा, कुंभारावाएइ वा, कवेल्लूवाएइ वा, इट्टा वाएइ वा, जंतवाड़चुल्लीइ वा, लोहारंबरिसाणि वा तत्ताणि समजोइभूयाणि किंसुकफुल्लसमाणाणि उक्कासहस्साइं विणिम्मुयमाणाइं विणिम्मुयमाणाइं जालासहस्साइं पमुंचमाणाइं इंगालसहस्साइं परिकिरमाणाइं अंतो अंतो झियायंति. एवामेव मायी मायं कट्टु अंतो अंतो झियायइ जइवि य णं अण्णे केइ वदइ तं पि य णं माई जाणइ अहमेसे अभिसंकिज्जामि अभिसंकिज्जामि.

माई णं मायं कट्टु अणालोइयअपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति

तं जहा-

नो महिड्ढिएसु —जाव— नो दूरं गइएसु नो चिरट्ठिइएसु. से णं तत्थ देवे भवइ, नो महिड्ढिए — जाव— नो चिरट्ठिइए, जावि य से तत्थ वाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ साविय णं नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो महरिहेणं आसणेणं उवनिमंतेति, भासं पि य से भासमाणस्स —जाव— चत्तारि पंच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठंति-मा वहु देव ! भासउ.

से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति. तं जहा-

अंतकुलाणि वा, पंतकुलाणि वा, तुच्छकुलाणि वा, दरिद्दकुलाणि वा, भिक्खागकुलाणि वा, किवणकुलाणि वा, तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइ, से णं तत्थ पुमे भवइ, दुरूवे, दुवण्णे, दुग्गंधे, दुरसे, दुफासे, अणिट्ठे, अकंते अप्पिए, अमणुण्णे, अमणामे, हीणस्सरे, दीणस्सरे, अणिट्ठसरे अकंतसरे, अप्पियसरे, अमणुण्णस्सरे, अमणामस्सरे, अणाएज्जवयणपच्चायाए, जावि य से तत्थ वाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ. सावि य णं नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, भासं पि य से भासमाणस्स —जाव— चत्तारि पंच जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठेंति–मा वहुं अज्जउत्तो ! भासउ, भासउ.

माई णं मायं कट्टु आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति तं जहा-

महिड्ढिएसु —जाव— चिरट्ठिइएसु, से णं तत्थ देवे भवइ महिड्ढीए —जाव— चिरट्ठिइए हारविराइयवच्छे कड़क-तुड़िय-थंभियभुए अंगद-कुण्डल-मउड-गंडतल-कण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणे विचित्तवत्थाभरणे विचित्तमालामउली कल्लाणग-पवर-वत्थ-परिहिए, कल्लाणग-पवर-गंध-मल्लाणु-लेवणाधरे, भासुरबोंदी, पलंबवणमालधरे, दिव्वेणं वण्णेणं, दिव्वेणं गंधेणं, दिव्वेणं रसेणं, दिव्वेणं फासेणं, दिव्वेणं संछाए णं, दिव्वेणं संठाणेणं, दिव्वाए इड्ढीए, दिव्वाए जूतीए, दिव्वाए पभाए, दिव्वाए छायाए, दिव्वाए अच्चीए, दिव्वेणं तेएणं, दिव्वाए लेस्साए दस दिसाओ उज्जो-वेमाणा, पभासेमाणा, महयाहतणट्टगीयवाइयतंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्प-वाइयरवेण दिव्वाइं भोग-भोगाइं भुंजमाणे विहरइ जावि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ, सावि य णं आढाइ परियाणाइ महरिहेण आसणेणं उवनिमंतेति भासंपि य से भासमाणस्स —जाव— चत्तारि पंच देवा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठंति-बहुं देवे ! भासउ भासउ.

से णं तओ देवलोगाओ आउक्खएणं —जाव— चइत्ता इहेव माणुस्सए भवे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति, अड्ढाइं

—जाव— बहुजणस्स अपरिभूयाइं तहप्पगारेसु कुलेसु पुमत्ताए पच्चायाइ.

से णं तत्थ पुमे भवइ सुरूवे, सुवण्णे, सुगंधे, सुरसे, सुफासे, इट्ठे कंते —जाव— मणामे अहीणस्सरे —जाव— मणामस्सरे आदेज्जवयणे पच्चायाए, जा वि य से तत्थ बाहिरब्भंतरिया परिसा भवइ सा वि य णं आढाइ —जाव— बहुं अज्जउत्ते ! भासउ भासउ. ५

५९८ अट्ठविहे संवरे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइंदियसंवरे —जाव—फासिंदियसंवरे,
मणसंवरे, वयणसंवरे, कायसंवरे.

अट्ठविहे असंवरे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइंदियअसंवरे —जाव— कायअसंवरे. २

५९९ अट्ठ फासा पण्णत्ता. तं जहा-

कक्खडे, मउए, गरुए, लहुए,
सीए, उसीणे, निद्धे, लुक्खे.

६०० अट्ठविहा लोगट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-

आगासपइट्ठिए वाए, एवं जहा छट्ठाणे —जाव— जीवा कम्मपइट्ठिया.

अजीवाजीवसंगहीया, जीवाकम्मसंगहीया.

६०१ अट्ठविहा गणिसंपया पण्णत्ता. तं जहा-

आचारसंपया, सुयसंपया,
सरीरसंपया, वयणसंपया,

वायणासंपया,	मइसंपया,
पओगसंपया,	संगहपरिण्णा णाम अट्ठमा.

६०२ एगमेगेणं महाणिही अट्ठचक्कवालपइट्ठाण अट्ठट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते.

६०३ अट्ठ समिईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

इरिया समिई,
भासा समिई,
एसणा समिई,
आयाण-भंड-मत्त निक्खेवणा समिई,
उच्चार-पासवण- खेल-जल्ल - मल -संघाणपरिट्ठावणिया समिई.
मण समिई,
वय समिई,
काय समिई.

६०४ अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहइ आलोयणा पडिच्छित्तए. तं जहा-

आयारवं, आहारवं, ववहारवं, ओवीलए,
पकुव्वए, अपरिस्साइ, निज्जावए, अवायदंसी.

अट्ठहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहइ अत्तदोसमालोइत्तए. तं जहा-

जाइसंपण्णे,	कुलसंपण्णे,
विणयसंपण्णे,	नाणसंपण्णे,

दंसणसंपण्णे, चरित्तसंपण्णे,
खंते, दंते. २

६०५ अट्ठविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-
आलोयणारिहे, पड़िक्कमणारिहे,
तदुभयारिहे, विवेगारिहे,
विउसग्गारिहे, तवारिहे,
छेयारिहे, मूलारिहे.

६०६ अट्ठ मयट्ठाणा पण्णत्ता.
जाइमए, कुलमए, बलमए, रूवमए,
तवमए, सुयमए, लाभमए, इस्सरियमए.

६०७ अट्ठ अकिरियावाई पण्णत्ता.
एगावाई, अणेगावाई,
मियवाई, निम्मियवाई,
सायवाई, समुच्छेयवाई,
नियावाई, न संति परलोगवाई.

६०८ अट्ठविहे महानिमित्ते पण्णत्ते. तं जहा-
भोमे, उप्पाए, सुविणे, अंतलिक्खे,
अंगे, सरे, लक्खणे, वंजणे.

६०९ अट्ठविहा वयणविभत्ती पण्णत्ता. तं जहा.
गाहाओ–निद्देसे पढमा होइ, बीइया उवएसणे ।
तईया करणंमि कया, चउत्थी संपदावणे ।।१।

पंचमी य अवायाणे, छट्ठी सस्सामिवादणे ।
सत्तमी सण्णिहाणत्थे, अट्ठमी आसंतणी भवे ॥२॥
तत्थ पढमा विभत्ती, निद्देसेसो इमो अहं वत्ति ।
वितीया पुण उवएसे, भण कुण व तिमं व तं वत्ति ॥३॥
तइया करणंमि कया, णीयं च कयं च तेण व मए वा ।
हंदि नमो साहए, हवइ चउत्थी पदाणंमि ॥४॥
अवणे गिण्हसु तत्तो, इत्तोत्ति व पंचमी अवादाणे ।
छट्ठी तस्स इमस्स व, गयस्स वा सामिसंबंधे ॥५॥
हवइ पुण सत्तमी तंमि, संमि आहारकालभावे य ।
आमंतणी भवे अट्ठमी, उ जह हे जुवाणत्ती ॥६॥

६१० अट्ठ ठाणाइं छउमत्थेणं सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ तं जहा-

धम्मत्थिकायं —जाव— गंधं, वायं.

एयाणि चेव उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जाणइ पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकायं —जाव— गंधं, वायं. २

६११ अट्ठविहे आउवेए पण्णत्ते तं जहा-

कुमारभिच्चे, कायतिगिच्छा
सालाइ, सलहत्ता
जंगोली, भूतवेज्जा
खारतंते, रसायणे

६१२ सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा-

पउमा, सिवा, सती, अंजु,
अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी
ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा-
कण्हा, कण्हराइ, रामा, रामरक्खिया,
वसू, वुसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुंधरा.
सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ.
ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ. ४

अट्ठ महग्गहा पण्णत्ता तं जहा-
चंदे, सूरे, सुक्के, बुहे,
वहस्सइ, अंगारे, सणिचरे, केउ.

६१३ अट्ठविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता, तं जहा-
मूले, कंदे, खंधे, तया,
साले, पवाले, पत्ते, पुप्फे.

६१४ चउरिंदिया णं जीवा असमारभमाणस्स अट्ठविहे संजमे कज्जइ तं जहा-
चक्खुमाओ सोक्खाओ अववरोवित्ता भवइ,
चक्खुमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ, एवं —जाव—

फासमाओ सोक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ,
फासमएणं दुक्खेणं असंजोगेत्ता भवइ.

चउरिंदिया णं जीवा समारभमाणस्स अट्ठविहे असंजमे कज्जइ तं जहा-

चक्खुमाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ,
चक्खुमएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवइ, एवं —जाव—
फासमाओ सोक्खाओ ववरोवेत्ता भवइ,
फासमएणं दुक्खेणं संजोगेत्ता भवइ. २

६१५ अट्ठ सुहुमा पण्णत्ता तं जहा-

पाणसुहुमे, पणगसुहुमे,
बीयसुहुमे, हरियसुहुमे,
पुप्फसुहुमे, अंडसुहुमे,
लेणसुहुमे, सिणेहसुहुमे.

६१६ भरहस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठ पुरिसजुगाइं अणुबद्धं सिद्धाइं —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणाइं. तं जहा-

आदिच्चजसे, महाजसे, अइबले, महाबले,
तेतीवीरिए, कित्तवीरिए, दंडवीरिए, जलवीरिए.

६१७ पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणियस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था. तं जहा-

सुभे, अज्जघोसे, वसिट्ठे, बंभचारी,
सोमे, सिरिधरिए, वीरिए, भद्दजसे.

६१८ अट्ठविहे दंसणे पण्णत्ते. तं जहा-

सम्मद्दंसणे, मिच्छदंसणे,
सम्मामिच्छदंसणे, चक्खुदंसणे,
अचक्खुदंसणे, ओहीदंसणे,
केवलदंसणे, सुविणदंसणे.

६१९ अट्ठविहे अद्धोवमिए पण्णत्ते. तं जहा-

पलिओवमे, सागरोवमे,
उस्सप्पिणी, ओसप्पिणी,
पोग्गलपरियट्टे, तीतद्धा,
अणागयद्धा, सव्वद्धा.

६२० अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स —जाव— अट्ठमाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी दुवासपरियाए अंतमकासी.

६२१ समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठ रायाणो मुंडे भवेत्ता अगाराओ अणगारियं पव्वाविया. तं जहा-

गाहा—वीरंगय वीरजसे, संजय एणिज्जए य रायरिसी ।
सेय-सिवे उदायणे, तह संखे कासिवद्धणे ॥१॥

६२२ अट्ठविहे आहारे पण्णत्ते. तं जहा-

मणुण्णे असणे, पाणे, खाइमे, साइमे,
अमणुण्णे असणे, पाणे, खाइमे, साइमे.

६२३ उप्पि सणंकुमार-माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठि बंभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे एत्थ णं अक्खाडग-समचउरंस-संठियाओ

अट्ठ कण्हराइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

पुरच्छिमेणं दो कण्हराइओ,
दाहिणेणं दो कण्हराइओ,
पच्चच्छिमेणं दो कण्हराइओ,
उत्तरेणं दो कण्हराइओ.

पुरच्छिमा अब्भंतरा कण्हराइ दाहिणं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा.

दाहिणा अब्भंतरा कण्हराइ पच्छच्छिमगं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा.

पच्चच्छिमा अब्भंतरा कण्हराइ उत्तरं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा.

उत्तरा अब्भंतरा कण्हराइ पुरच्छिमं बाहिरं कण्हराइं पुट्ठा.

पुरच्छिम-पच्चच्छिमिल्लाओ बाहिराओ दो कण्हराईओ छलंसाओ.

उत्तर-दाहिणाओ बाहिराओ दो कण्हराईओ तंसाओ.

सव्वाओ वि णं अब्भंतरकण्हराईओ चउरंसाओ.

एयासि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

कण्हराईइ वा, मेहराईइ वा,
मघाई वा, माघवई वा,
वायफलिहेइ वा, वायपलिक्खोभेइ वा,
देवपलिहेइ वा, देवपलिक्खोभेइ वा.

एयासि णं अट्ठण्हं कण्हराइणं अट्ठसु उवासंतरेसु अट्ठ लोगंति-
यविमाणा पण्णत्ता. तं जहा-

अच्ची, अच्चिमाली,
वइओअणे, पभंकरे,
चंदाभे, सुराभे,
सुपइट्ठाभे, अग्गिच्चाभे.

एएसु णं अट्ठसु लोगंतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगंतिया देवा
पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—सारसयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव बोद्धव्वा ॥१॥

एएसि णं अट्ठण्हं लोगंतियदेवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं अट्ठ
सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता. ५

६२४ अट्ठ धम्मत्थिकायमज्झपएसा पण्णत्ता,
अट्ठ अधम्मत्थिकायमज्झपएसा पण्णत्ता,
अट्ठ आगासत्थिकायमज्झपएसा पण्णत्ता,
अट्ठ जीवमज्झपएसा पण्णत्ता. ४

६२५ अरहंता णं महापउमे अट्ठ रायाणो मुंडा भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वावेस्सइ. तं जहा-

पउमं, पउमगुम्मं, नलिनं, नलिनगुम्मं,
पउमद्धयं, धणुद्धयं, कणगरहं, भरहं.

६२६ कण्हस्स णं वासुदेवस्स अट्ठ अग्गमहिसीओ अरहओ णं

अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडा भवेत्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइया सिद्धाओ —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणाओ. तं जहा-

पउमावई, गोरी,
गंधारी, लक्खणा,
सुसीमा, जंबवई,
सच्चभामा, रुप्पिणी.

कण्हअग्गमहिसीओ

६२७ वीरियपुव्वस्स णं अट्ठ वत्थु, अट्ठ चूलिआवत्थु पण्णत्ता.

६२८ अट्ठ गइओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

निरयगइ, तिरियगइ,
मणुयगइ, देवगइ,
सिद्धगइ, गुरुगइ,
पणोल्लणगइ, पब्भारगइ.

६२९ गंगा-सिंधु-रत्ता-रत्तवइदेवीणं दीवा अट्ठट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता.

६३० उक्कामुह-मेहमुह-विज्जुमुह-विज्जुदंतदीवाणं दीवा अट्ठट्ठ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता.

६३१ कालोदे णं समुद्दे अट्ठ जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते.

६३२ अब्भंतरपुक्खरद्धे णं अट्ठ जोयणसयहस्साइं चक्कवालविक्खं-भेणं पण्णत्ते. एवं बाहिरपुक्खरद्धे वि.

६३३ एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अट्ठसोवण्णिए काकिणिरयणे छत्तले दुवालसंसिए अट्ठकण्णिए अहिकरणिसंठिए पण्णत्ते.

६३४ मागहस्स णं जोयणस्स अट्ठ धणुसहस्साइं निधत्ते पण्णत्ते.

६३५ जंबू णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं बहुमज्झदेसभाए, अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता. कूड़सामली णं अट्ठ जोयणाइं एवं चेव.

६३६ तिमिसगुहा णं अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं.
खंडप्पवायगुहा णं अट्ठ जोयणाइं उद्धं उच्चत्तेणं. २

६३७ जंबूमंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महानईए उभओ कूले अट्ठ वक्खार-पव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

चित्तकूड़े, पम्हकूड़े, नलिणकूड़े, एगसेले,
तिकूड़े, वेसमणकूड़े, अंजणे, मायंजणे.

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओयाए महाणईए उभओकूले अट्ठ वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-

अंकावई, पम्हावई, आसीविसे, सुहावहे,
चंदपव्वए, सूरपव्वए, नागपव्वए, देवपव्वए.

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता. तं जहा-

कच्छे, सुकच्छे, महाकच्छे, कच्छगावइ
आवत्ते, मंगलावत्ते, पुक्खला, पुक्खलावइ.

जंबूमंदरपुरिच्छमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता. तं जहा-

वच्छे — जाव — मंगलावई.

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओयए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता. तं जहा-

पम्हे —जाव— सलिलावई.

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओयाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठ चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता. तं जहा-

वप्पे —जाव— गंधिलावई.

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

खेमा —जाव— पुंडरीगिणी.

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

सुसीमा —जाव— रयणसंचया.

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओदाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

आसपुरा —जाव— वीतसोगा.

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओदाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठ रायहाणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

विजया —जाव— अउज्झा. १०

६३८ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं उक्कोसपए अट्ठ अरहंता, अट्ठ चक्कवट्टी, अट्ठ बलदेवा, अट्ठ वासुदेवा उप्पज्जिंसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा.

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं उक्कोसपए एवं चेव.

जंबूमंदरपच्चत्थिमेणं सीओयाए महाणईए दाहिणेणं उक्कोसपए एवं चेव.

एवं उत्तरेण वि. ४

६३९ जंबूमंदरपुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उत्तरेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा, अट्ठ तिमिसगुहाओ, अट्ठ खंडप्पवायगुहाओ, अट्ठ कयमालगा देवा, अट्ठ नट्टमालगा देवा, अट्ठ गंगाकुंडा, अट्ठ सिंधुकुंडा, अट्ठ गंगाओ, अट्ठसिंधूओ, अट्ठ उसभकूडा पव्वया, अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता.

जंबूमंदरपरच्छिमेणं सीयाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ दीहवेअड्ढा एवं चेव —जाव— अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता. नवरं एत्थ रत्ता रत्तावईओ तासिं चेव कूडा.

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं सीओयाए महाणईए दाहिणेणं अट्ठ दीहवेयड्ढा —जाव— अट्ठ उसभकूडा देवा पण्णत्ता. ४

६४० मंदरचूलिया णं बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते.

६४१ धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धेणं धायइरुक्खे अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते.

बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते.

एवं धायइरुक्खाओ आढवेत्ता सच्चेव जंबूदीववत्तव्वया भाणियव्वा —जाव— मंदरचूलियत्ति. २२

एवं पच्चच्छिमद्धे वि महाधायइरुक्खाओ आढवेत्ता —जाव— मंदरचुलियत्ति. २२

एवं पुक्खरवरदीवड्ढपुरच्छिमद्धे वि पउमरुक्खाओ आढवेत्ता —जाव— मंदरचूलियत्ति. २२

एवं पुक्खरवरदीवपच्चत्थिमद्धे वि महापउमरुक्खाओ आढवेत्ता —जाव— मंदरचूलियत्ति. २२

६४२ जंबूद्दीवे मंदरे पव्वए भद्दसालवणे अट्ठ दिसाहत्थिकूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—पउमुत्तर नीलवंते, सुहत्थि अंजणागिरी कुमुए य।
पलासए वड़िसे, अट्ठमए रोयणगिरी ॥१॥

जंबूद्दीवस्स णं दीवस्स जगई अट्ठ जोयणाणं उड्ढं उच्चत्तेणं बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं. २

६४३ जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं महाहिमवंते वासहरपव्वए अट्ठ कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—सिद्धे महाहिमवंते, हिमवंते रोहिया हरीकूड़े।
हरिहंता हरिवासे, वेरुलिए चेव कूड़ा उ ॥१॥

जंबूमंदरउत्तरेणं रुप्पिंमि वासहरपव्वए अट्ठ कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–सिद्धे य रुप्पी रम्मग, नरकंता बुद्धि रुप्पकूड़े य ।
हिरण्णवए मणिकंचणे य रुप्पिं कूड़ा उ ॥१॥

जंबूमंदरपुरच्छिमेणं रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–रिट्ठे तवणिज्जचण, रयत दिसासोत्थिए पलंबे य ।
अंजण अंजणपुलए, रुयगस्स पुरच्छिमे कूड़ा ॥१॥

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति. तं जहा-

गाहा–नंदुत्तरा नंदा, आणंदा णंदीवद्धणा ।
विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिया ॥२॥

जंबूमंदरदाहिणेणं रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–कणए कंचणे पउमे, नलिणे ससि दिवायरे चेव ।
वेसमणे वेऊलिए, रुयगस्स उ दाहिणे कूड़ा ॥१॥

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति. तं जहा-

गाहा–समाहारा सुप्पतिण्णा ,
सुप्पबुद्धा जसोहरा ।
लच्छिवइ सेसवइ ,
चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥१॥

जंबूमंदरपच्चच्छिमेणं रुयगवरे पव्वए अट्ठ कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–सोत्थिय अमोहे य, हिमवं मंदरे तहा ।
रुअगे रुअगुत्तमे, चंदे अट्ठमे य सुदंसणे ।।१।।

तत्थ णं अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति. तं जहा-

गाहा–इलादेवी सुरादेवी, पुढवी पउमावइ ।
एगनासा नवमिया, सीता भद्दा य अट्ठमा ।।१।।

जंबूमंदरउत्तररुअगवरे पव्वए अट्ठ कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–रयणे रयणुच्चए या, सव्वरयण रयणसंचए चेव ।
विजये य विजयंते, जयंते अपराजिए ।।१।।

तत्थ णं अट्ठदिसाकुमारिमहत्तरियाओ महिड्ढियाओ —जाव— पलिओवमट्ठिइयाओ परिवसंति तं जहा-

गाहा–अलंबुसा मितकेसी, पोंडरिगीतवारुणी ।
आसा य सव्वगा चेव, सिरी हिरी चेव उत्तरओ ।।१।।

अट्ठ अहेलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-

गाहा–भोगंकरा भोगवई, सुभोगा भोगमालिणी ।
सुवच्छा वच्छमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ।।१।।

अट्ठ उड्ढलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहा—मेघंकरा मेघवइ, सुमेघा मेघमालिणी ।
तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिया ॥१॥ १२

६४४ अट्ठ कप्पा तिरितमिस्सोववण्णगा पण्णत्ता. तं जहा-
सोहम्मे —जाव— सहस्सारे.

एएसु णं अट्ठसु कप्पेसु अट्ठ इंदा पण्णत्ता. तं जहा-
सक्के — जाव — सहस्सारे.

एएसि णं अट्ठण्हं इंदाणं अट्ठ परियाणिया विमाणा पण्णत्ता. तं जहा-

पालए, पुप्फए, सोमणसे, सिरिवच्छे,
नंदावत्ते, कामकमे, पीतिमणे, विमले. ३

६४५ अट्ठट्ठमियाणं भिक्खुपडिमाणं चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता —जाव— अणुपालिया वि भवइ.

६४६ अट्ठविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-
पढमसमयनेरइया —जाव— अपढमसमयदेवा.

अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

नेरइया, तिरिक्खजोणिया
तिरिक्खजोणीणिओ. मणुस्सा,
मणुस्सीओ, देवा,
देवीओ, सिद्धा.

अहवा अट्ठविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

आभिणिबोहियनाणी —जाव— विभंगनाणी. ३

६४७ अट्ठविहे संजमे पण्णत्ते. तं जहा-

पढम-समय-सुहुम-संपराय-सराग-संजमे,

अपढम-समय-सुहुम-संपराय-सराग-संजमे,

पढम-समय-बादर-संजमे,

अपढम-समय-बादर-संजमे,

पढम-समय-उवसंत-कसाय-वीयराग-संजमे,

अपढम-समय-उवसंत-कसाय-वीयराग-संजमे,

पढम-समय-खीण-कसाय-वीतराग-संजमे,

अपढम-समय-खीणकसाय-वीतराग-संजमे.

६४८ अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

रयणप्पभा —जाव— अहे सत्तमा इसिपब्भारा.

इसीपब्भाराए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेण पण्णत्ते.

इसिपब्भाराए णं पुढवीए अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

इसिइ वा. इसिपब्भाराइ वा,

तणूइ वा, तणुतणूइ वा.

सिद्धिइ वा, सिद्धालएइ वा,

मुत्तीइ वा, मुत्तालएइ वा. ३

६४९ अट्ठट्ठाणेहिं सम्मं संघडितव्वं जइतव्वं परक्कमितव्वं अस्सिं च अट्ठे नो पमाएयव्वं भवइ.

असुयाणं धम्माणं सम्मं सुणणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

सुयाणं धम्माणं ओगिण्हणयाए अवधारणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

पावाणं कम्माणं संजमेणं अकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

पोराणाणं कम्माणं तवसा विगिंचणयाए विसोहणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

असंगहीयपरितणस्स संगिण्हणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

सेहं आयारगोयरगहणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

गिलाणस्स अगिलाए वेयावच्चकरणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

साहम्मियाणमधिकरणंसि उप्पण्णंसि तत्थ अनिस्सितोवस्सिओ अपक्खग्गाही मज्झत्थ भावभूए कहं णु साहम्मिया अप्पसद्दा अप्पझंझा अप्पतुमंतुमा उवसामणयाए अब्भुट्ठेयव्वं भवइ.

६५० महासुक्क-सहस्सारेसु णं कप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

६५१ अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठसया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वादे अपराजियाणं उक्कोसिया वादिसंपया हुत्था.

६५२ अट्ठसामइए केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते. तं जहा-

पढमे समए दंडं करेइ,

बीए समए कवाड़ं करेइ,
तइए समए मंथाणं करेइ,
चउत्थे समए लोगं पुरेइ,
पंचमे समए लोगं पड़िसाहरइ,
छट्ठे समए मंथं पड़िसाहरइ,
सत्तमे समए कवाड़ं पड़िसाहरइ,
अट्ठमे समए दंडं पड़िसाहरइ.

६५३ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठ सया अणुत्तरोववाइयाणं गइकल्लाणाणं —जाव— आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइयसंपया हुत्था.

६५४ अट्ठविहा वाणमंतरा देवा पण्णत्ता. तं जहा-
पिसाया, भूया, जक्खा, रक्खसा,
किण्णरा, किंपुरिसा, महोरगा, गंधव्वा.

एएसि णं अट्ठण्हं वाणमंतरदेवाणं अट्ठ चेइयरुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहाओ—कलंबो अ पिसायाणं, वड़ो जक्खाण चेइयं ।
तुलसी भूयाणं भवे, रक्खसाणं च कंडओ ॥१॥
असोओ किण्णराणं च, किंपुरिसाण य चंपओ ।
नागरुक्खो भुयंगाणं, गंधव्वाण य तेंदुओ ॥२॥

६५५ इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठजोयणसए उड्ढबाहाए सूरविमाणे चारं चरइ.

६५६ अट्ठ नक्खत्ता चंदेण-सिद्धिं पमद्दं जोगं जोएंति. तं जहा-
कत्तिया, रोहिणी, पुणव्वसू, महा,
चित्ता, विस्साहा, अणुराधा, जेट्ठा.

६५७ जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

सव्वेसिं पि दीवसमुद्दाणं दारा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता. २

६५८ पुरिसवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठसंवच्छराइं बंधठिई पण्णत्ता.

जसोकित्तीनामएणं कम्मस्स जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ताइं बंधठिई पण्णत्ता

उच्चगोयस्स णं कम्मस्स णं एवं चेव. ३

६५९ तेइंदियाणं अट्ठ जाइकुलकोडीजोणीपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता.

६६० जीवा णं अट्ठट्ठाणणिव्वत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा, चिणंति वा, चिणिस्संति वा, तं जहा-

पढम-समय-नेरइय-निव्वत्तिए —जाव— अपढम-समय-देव-निव्वत्तिए.

एवं चिण-उवचिण —जाव— निज्जरा चेव.

अट्ठपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता.

अट्ठपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता —जाव— अट्ठगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २९

नवट्ठाणं

६६१ नवहिं ठाणेहिं समणे निग्गंथे संभोइयं विसंभोइयं करेमाणे नाइक्कमइ. तं जहा-

आयरिय-पड़िणीयं,

उवज्झाय-पड़िणीयं,

थेर-पड़िणीयं,

कुल-पड़िणीयं,

गण-पड़िणीयं,

संघ-पड़िणीयं,

नाण-पड़िणीयं,

दंसण-पड़िणीयं,

चरित्त-पड़िणीयं.

६६२ नव बंभचेरा पण्णत्ता. तं जहा-

सत्थपरिण्णा —जाव— महापरिण्णा.

६६३ नव बंभचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवइ-

नो इत्थिसंसत्ताइं नो पसुसंसत्ताइं, नो पंडगसंसत्ताइं.

नो इत्थीणं कहं कहेत्ता भवइ,

नो इत्थीट्ठाणाइं सेवित्ता भवइ,

नो इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता
निज्झाइत्ता भवइ,
नो पणीयरसभोई,
नो पाण-भोयणस्स अइमत्तं आहारए भवइ,
नो पुव्वरयं पुव्वकीलियं समरेत्ता भवइ,
नो सद्दाणुवाई, नो रूवाणुवाई, नो सिलोगाणुवाई,
नो सायासुक्खपड़िबद्धे यावि भवइ.

नव बंभचेरअगुत्तीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-
नो विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता भवइ-
इत्थीसंसत्ताइं, पसुसंसत्ताइं, पंडगसंसत्ताइं.
इत्थीणं कहं कहेत्ता भवइ,
इत्थीणं ठाणाइं सेवित्ता भवइ,
इत्थीणं इंदियाइं —जाव— निज्झाइत्ता भवइ,
पणीयरसभोई,
पाण-भोयणस्स अइमायमाहारए सया भवइ,
पुव्वरयं पुव्वकीलियं सरित्ता भवइ,
सद्दाणुवाई, रूवाणुवाई, सिलोगाणुवाई,
सायासुक्खपडिबद्धे यावि भवइ. २

६६४ अभिणंदणाओ णं अरहाओ सुमइ अरहा नवहिं सागरोवम-कोड़ी-सयसहस्सेहिं विइक्कतेहिं समुप्पण्णे.

६६५ नव सब्भावपयत्था पण्णत्ता. तं जहा-

जीवा,	अजीवा,	पुण्णं,
पावो,	आसवो,	संवरो,
निज्जरा,	बंधो,	मोक्खो.

६६६ नवविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया —जाव— पंचिंदियत्ति.

पुढविकाइया नवगइया नवआगइया पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइए पुढवीकाइएसु उववज्जमाणे पुढविकाइएहिंतो वा —जाव— पंचिंदिएहिंतो वा उववज्जेज्जा.

से चेव णं पुढविकाइए पुढविकायत्तं विप्पजहमाणे पुढविकाइयत्ताए वा —जाव— पंचिंदियत्ताए वा गच्छेज्जा.

एवमाउकाइया वि —जाव— पंचिंदियत्ति.

नवविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

एगिंदिया,	बेइंदिया,	तेइंदिया,
चउरिंदिया,	नेरइया,	पंचेंदियतिरिक्खजोणिया,
मणुस्सा,	देवा,	सिद्धा.

अहवा नवविहा सव्वजीवा पण्णत्ता. तं जहा-

पढम-समय-नेरइया —जाव—अपढम-समय-देवा, सिद्धा.

नवविहा सव्वजीवोगाहणा पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइओगाहणा —जाव— पंचिंदियओगाहणा.

जीवाणं नवहिं ठाणेहिं संसारं वत्तिसु वा, वत्तंति वा, वत्तिस्संति वा, तं जहा-

पुढविकाइत्ताए —जाव— पंचिंदियत्ताए. ६

६६७ नवहिं ठाणेहिं रोगुप्पत्ती सिया. तं जहा-

अच्चासणाए,

अहियासणाए,

अइणिद्दाए

अइजागरिएण,

उच्चारनिरोहेणं,

पासवणनिरोहेणं,

अद्धाणगमणेणं,

भोयणपड़िकूलयाए,

इंदियत्थविकोवणयाए.

६६८ नवविहे दरिसणावरणिज्जे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

निद्दा,

निद्दानिद्दा,

पयला,

पयलापयला,

थीणगिद्धी,

चक्खुदंसणावरणे,

अचक्खुदंसणावरणे,

ओहिदंसणावरणे,

केवलदंसणावरणे.

६६९ अभीई णं नक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ, अभीइ आइआ णं नव नक्खत्ता णं चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति. तं जहा-

अभीई —जाव— भरणी.

६७० इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवजोअणसयाइं उड्ढं अबाहाए उवरिल्ले ताराख्वे चारं चरइ.

६७१ जंबूद्दीवे णं दीवे नवजोयणिआ मच्छा पविसिंसु वा, पविसंति वा, पविसिस्संति वा.

६७२ जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए नवबलदेववासुदेवपियरो हुत्था तं जहा-

गाहा–पयावइ य बंभे य, रोद्दे सोमे सिवेइया ।
महासीहे अग्गिसीहे, दसरहे नवमे य वसुदेवे ॥१॥

इत्तो आढत्तं जहा समवाए निरवसेसं —जाव—एगा से गब्भवसही सिज्झिस्सति आगमेस्सेणं.

जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे आगमेस्साए उस्सप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेव-पियरो भविस्संति.

नव बलदेव-मायरो भविस्संति.

एवं जहा समवाए निरवसेसं —जाव—महाभीमसेण सुग्गीवे य अपच्छिमे.

गाहा–एए खलु पड़िसत्तू, कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं ।
सव्वे वि चक्कजोही, हम्मेहंती सचक्केहिं ॥१॥ ३

६७३ एगमेगे णं महानिही णं नव नव जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते.

एगमेगस्स णं रण्णो चाउरंतचक्कवट्टिस्स नव महानिहिओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहाओ–नेसप्पे पंडुयए,
पिंगलए सव्वरयण महापउमे ।
काले य महाकाले,
माणवग महानिही संखे ॥१॥
नेसप्पंमि निवेसा,
गामागरनगरपट्टणाणं च ।
दोणमुहमडंबाणं,
खंधाराणं गिहाणं च ॥२॥
गणियस्स य बीयाणं,
माणुम्माणस्स जं पमाणं च ।
धण्णस्स य बीयाणं,
उप्पत्ती पंडुए भणिया ॥३॥
सव्वा आभरणविही,
पुरिसाणं जा य होई महिलाणं ।
आसाण य हत्थीण य,
पिंगलगनिहिंमि सा भणिया ॥४॥

रयणाइं सव्वरयणे,
चोद्दस पवराइं चक्कवट्टिस्स ।
उप्पज्जंति य,
एगिंदियाइं पंचिंदियाइं च ॥५॥
वत्थाण य उप्पत्ती,
निप्पत्ती चेव सव्वभत्तीणं ।
रंगाण य धोयाण य,
सव्वा एसा महापउमे ॥६॥
काले कालण्णाणं,
भव्वपुराणं च तीसु वासेसु ।
सिप्पसतं कम्माणि य,
तिण्णि पयाए हियकराइं ॥७॥
लोहस्स य उप्पत्ती,
होइ महाकालि आगराणं च ।
रुप्पस्स सुवण्णस्स य,
मणिमोत्तिसिलप्पवालाणं ॥८॥
जोधाण य उप्पत्ती,
आवरणाणं च पहरणाणं च ।
सव्वा य जुद्धनीई,
माणवए दंडनीई य ॥९॥
नट्टविही नाडगविही,
कव्वस्स चउव्विहस्स उप्पत्ती ।

संखे महानिहिम्मी,
तुडियंगाणं च सव्वेसिं ॥१०॥
चक्कट्ठपइट्ठाणा,
अट्ठुस्सेहा य नव य विक्खंभे।
बारसदीहा मंजूससंठियया,
जण्हवीई मुहे ॥११॥
वेरुलियमणिकवाड़ा,
कणगमया विविधरयणपड़िपुण्णा।
ससि-सूर-चक्क-लक्खण,
अणुसम-जुगबाहुवतणा य ॥१२॥
पलिओवमट्ठितीया,
निहिसरिणामा य तेसु खलु देवा।
जेसिं ते आवासा,
अक्किज्जा आहिवच्चा वा ॥१३॥
एए ते नवनिहिओ,
पभूत-धण-रयण-संचय-समिद्धा।
जे वसमुवगच्छंती,
सव्वेसिं चक्कवट्टी णं ॥१४॥ २

६७४ नव विगईओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

खीरं, दहिं, नवणीयं,
सप्पिं, तेलं, गुलो,
महुं, मज्जं, मंसं.

६७५ नव सोयपरिस्सवा बोंदी पण्णत्ता. तं जहा-

दो सोत्ता, दो नेत्ता, दो घाणा.

मुहं, पोसे, पाऊ.

६७६ नवविहे पुण्णे पण्णत्ते. तं जहा-

अण्णपुण्णे, पाणपुण्णे, वत्थपुण्णे,

लेणपुण्णे, सयणपुण्णे, मणपुण्णे.

वइपुण्णे, कायपुण्णे, नमोक्कारपुण्णे.

६७७ नव पावस्सायतणा पण्णत्ता. तं जहा-

पाणाइवाए —जाव— लोभे.

६७८ नवविहे पावसुयपसंगे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा—उप्पाए निमित्ते मंते, आतिक्खए तिगिच्छए ।

कला आवरणे अण्णाणे, मिच्छापावतणेइ य ॥१॥

६७९ नव नेउणिया वत्थु पण्णत्ता. तं जहा-

संखाणे, निमित्ते, काइए,

पोराणे, पारिहत्थिए, परपंडिए,

वाइए, भूईकम्मे, तिगिच्छए.

६८० समणस्स णं भगवओ महावीरस्स नव गणा हुत्था.

तं जहा-

गोदासे गणे,

उत्तरबलिस्सहगणे,

उद्देहगणे,

चारणगणे,

उद्दवाइयगणे.

विस्सवाइयगणे,

कामड्ढियगणे,

माणवगणे,

कोडियगणे.

६८१ समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं नवकोडिपरिसुद्धे भिक्खे पण्णत्ते. तं जहा-

न हणइ, न हणावेइ, हणंतं नाणुजाणइ,
न पयइ, न पयावेइ, पचंतं नाणुजाणइ,
न किणइ, न किणावेइ, किणंतं नाणुजाणइ.

६८२ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो नव अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ.

६८३ ईसाणस्स णं देविंदस्स देवरण्णो अग्गमहिसीणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता.

ईसाणे कप्पे उक्कोसेणं देवीणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता. २

६८४ नव देवनिकाया पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—सारस्सयमाइच्चा ,
वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वाबाहा ,
अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥१॥

अव्वावाहाणं देवाणं नव देवा नव देवसया पण्णत्ता.

एवं अग्गिच्चा वि. एवं रिट्ठा वि.

६८५ नव गेवेज्ज-विमाण-पत्थड़ा पण्णत्ता, तं जहा-

हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

हेट्ठिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

हेट्ठिम-उवरिम-गेविज्ज-विसाण-पत्थड़े,

मज्झिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

मज्झिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

मज्झिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

उवरिम-हेट्ठिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

उवरिम-मज्झिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

उवरिम-उवरिम-गेविज्ज-विमाण-पत्थड़े,

एएसि णं नवण्हं गेविज्ज-विमाण-पत्थड़ाणं नव नामधिज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

गहा—भद्दे सुभद्दे सुजाते, सोमणसे पियदरिसणे ।

सुदंसणे अमोहे य, सुप्पबुद्धे जसोधरे ॥१॥

६८६ नवविहे आउपरिणामे पण्णत्ते. तं जहा—

गइपरिणामे,

गइबंधणपरिणामे,

ठिइपरिणामे,

ठिइबंधणपरिणामे,

उड्ढगारवपरिणामे,

अहेगारवपरिणामे,
तिरियगारवपरिणामे,
दीहंगारवपरिणामे,
रहस्संगारवपरिणामे.

६८७ नवनवमिया णं भिक्खुपडिमा एगासिए राइंदिएहिं चउहिं य पंचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्ता —जाव— आराहिया यावि भवइ.

६८८ नवविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-

आलोयणारिहे —जाव— मूलारिहे, अणवठप्पारिहे.

६८९ जंबूमंदरदाहिणेणं भरहे दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—सिद्धे भरहे खंडग,
माणी वेयड्ढ पुण्ण तिमिसगुहा ।
भरहे वेसमणे या,
भरहे कूडाण नामाइं ॥१॥

जंबूमंदरदाहिणेणं निसभे वासहरपव्वए नव कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—सिद्धे निसहे हरिवास,
विदेह हरि धिहि अ सीतोदा ।
अवरविदेहे रुयगे,
निसभे कूडाण नामाणी ॥१॥

जंबूमंदरपव्वए णंदणवणे नव कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-
गाहा--नंदणे मंदरे चेव, निसहे हेमवए रयय रुयए य ।
सागरचित्ते वइरे वलकूड़े चेव बोद्धव्वे ॥१॥

जंबूमालवंतवक्खारपव्वए नव कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-
गाहा—सिद्धे य मालवंते,
उत्तरकुरु कच्छ सागरे रयए ।
सीता तह पुण्णणामे,
हरिस्सहकूड़े य बोद्धव्वे ॥१॥

जंबूमंदरपव्वय कच्छे दीहवेयड्डे नव कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-
गाहा—सिद्धे कच्छे खंड़ग,
माणी वेयड्ड पुण तिमिसगुहा ।
कच्छे वेसमणे या,
कच्छे कूड़ाण णामाइं ॥१॥

जंबू सूकच्छे दीहवेयड्डे नव कूड़ा पण्णत्ता. तं जहा-
सिद्धे सुकच्छे खंडग,
माणी वेयड्ड पुण तिमिसगुहा ।
सुकच्छे वेसमणे;
सुकच्छि कूड़ाण नामाइं ॥१॥

एवं —जाव— पोक्खलावतिंमि दीहवेयड्डे.
एवं वच्छे दीहवेयड्डे.
एवं —जाव— मंगलावइंमि दीहवेयड्डे.

जंबू विज्जुप्पभे वक्खारपव्वए नव कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–सिद्धे अ विज्जुणामे,
देवकूरा पम्ह कणग सोवत्थी ।
सीतोदाए सजले,
हरिकूडे चेव बोद्धव्वे ॥१॥

जंबू पम्हे दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–सिद्धे पम्हे खंडे माणी वेयड्ढे.

एवं चेव —जाव— सलिलावइंमि दीहवेयड्ढे.

एवं वप्पे दीहवेयड्ढे एवं —जाव— गंधिलावइंमि दीहवेयड्ढे नव कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–सिद्धे गंधिल खंडग,
माणी वेयड्ढ पुण तिमिसगुहा ।
गंधिलावई वेसमण,
कूडाणं होंति नामाइं ॥१॥

एवं सव्वेसु दीहवेयड्ढेसु दो कूडा सरिसणामगा सेसा ते चेव.

जंबूमंदरेणं उत्तरेणं नीलवंते वासहरपव्वए नव कूडा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा–सिद्धे नीलवंत विदेह,
सीता कित्ती य नारिकंता य ।
अवरविदेहे,
रम्मगकूडे उवदंसणे चेव ॥१॥

जंबूमंदरउत्तरेणं एरवए दीहवेयड्ढे नव कूड़ा पण्णत्ता.
तं जहा-

गाहा—सिद्धे रयणे खंडग,
माणी वेयड्ढे पुण तिमिसगुहा ।
एरवए वेसमणे,
एरवए कूड़णामाइं ॥१॥ १०

६९० पासे णं अरहा पुरिसादाणिए वज्जरिसहणारायसंघयणे समचउरंससंठाणसंठिए नव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं हुत्था.

६९१ समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तित्थंसि नवहिं जीवेहिं तित्थगरणामगोत्ते कम्मे निव्वत्तिए. तं जहा-

सेणिएणं, सुपासेणं, उदाइणा,
पोट्टिलेणं अणगारेणं, दढाउणा, संखेणं,
सतएणं, सुलसाए, साविआए रेवतीए.

६९२ एस णं अज्जो !
कण्हे वासुदेवे,
रामे बलदेवे,
उदये पेढालपुत्ते,
पुट्टिले
सतए गाहावइ,
दारुए नियंठे,
सच्चइ नियंठीपुत्ते,
सावियबुद्धे अंबड़े परिव्वायए,

अज्जा वि णं सुपासा पासावच्चिज्जा.

आगमेस्साए उस्सप्पिणीए चाउज्जामं धम्मं पण्णवतित्ता सिज्झिहिति —जाव— अंतं काहिति.

६९३ एस णं अज्जो ! सेणिए राया भिंभिसारे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए सीमंतए नरए चउरासीइ-वास-सहस्स-ट्ठिइयंसि निरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति.

से णं तत्थ नेरइए भविस्सइ काले कालोभासे —जाव— परमकिण्हे वण्णेणं से णं तत्थ वेयणं वेदिहिई उज्जलं —जाव—दुरहियासं.

से णं तओ नरयाओ उव्वट्टेत्ता आगमेस्साए उस्सप्पिणीए इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सतदुवारे नयरे संमुइस्स कुलकरस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुमत्ताए पच्चायाहिइ.

तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं वहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं विइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजण —जाव— सुरूवं दारगं पयाहिई.

जं रयणिं च णं से दारए पयाहिई तं रयणिं च णं सतदुवारे नगरे सब्भितरवाहिरए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिइ.

तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे विइक्कंते —जाव— बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोण्णं गुण-णिप्फण्णं नामधिज्जं काहिंति.

जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरए भारग्गसो य, कुंभग्गसो य, पउमवासे य, रयणवासे य वासे वुट्ठे, तं होऊ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधिज्जं महापउमे.

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं काहिंति-महापउमेत्ति.

तए णं महापउमं दारगं अम्मापियरो साइरेगं अट्ठवा-सजायगं जाणित्ता महया रायाभिसेएणं अभिसिंचिहिंति.

से णं तत्थ राया भविस्सइ महता हिमवंतमहंतमलय-मंदरराय वण्णओ —जाव— रज्जं पसाहेमाणे विहरिस्सइ.
तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णया कयाइ दो देवा महिड्ढिया —जाव— महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति. तं जहा-पुण्णभद्दए, माणिभद्दए.

तए णं सतदुवारे नगरे बहवे राइसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भसेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभियओ अण्णमण्णं सद्दावेहिंति. एवं वइस्संति.

जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया —जाव— महेसक्खा सेणाकम्मं करेंति. तं जहा-पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य.

तं होऊ णं अम्हं देवाणुप्पिया ! महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे देवसेणे.

तए णं तस्स महापउमस्स दोच्चे वि नामधेज्जे भविस्सइ.

तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेयसंखतल-विमलसण्णिकासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिजहिइ.

तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतलविमलसण्णिकासं चउद्दंतं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे सतदुवारं नगरं मज्झं-मज्झेणं अभिक्खणं अभिक्खणं अइज्जाहि य निज्जाहि य.

तए णं सतदुवारे नगरे बहवे राइसरतलवर —जाव— अण्णमण्णं सद्दाविंति एवं वइस्संति-जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेए संखतलविमलसण्णिकासे चउद्दंते हत्थिरयणे तं होऊ णं अम्हं देवाणुप्पिया ! देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे.

तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सइ विमलवाहणे.

तए णं से विमलवाहणे राया तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अम्मापिईहिं देवत्तगएहिं गुरुमहत्तरएहिं अब्भणुण्णाए समाणे उदुंमि सरए संबुद्धे अणुत्तरे मोक्खमग्गे पुणरवि लोगंतिएहिं जीयकप्पिएहिं देवेहिं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं धण्णाहिं सिवाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीआहिं वग्गुहिं अभिणं-

दिज्जमाणे अभिथुवमाणे य बहिया सुभूमिभागे उज्जाणे एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयाहिइ. तस्स णं भगवंतस्स साइरेगाइं दुवालस वासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिस्संति तं जहा-

दिव्वा वा, माणुसा वा, तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पण्णे सम्मं सहिस्सइ, खमिस्सइ, तितिक्खिस्सइ, अहियासिस्सइ.

तए णं से भगवं ईरियासमिए भासासमिए —जाव— गुत्तबंभयारि अममे अकिंचणे छिण्णगंथे निरुवलेवे कंसपाइ व मुक्कतोए जहा भावणाए —जाव— सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते.

गाहाओ—कंसे संखे जीवे, गगणे वाए य सारए सलिले ।
पुक्खरपत्ते कुंमे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोभे ।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पड़िबंधे भवइ.

से य पड़िबंधे चउव्विहे पण्णत्ते. तं जहा-

अंडएइ वा, पोयएइ वा, उग्गहिएइ वा, पग्गहिएइ वा.

जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपड़िबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ.

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं, अणुत्तरेणं दंसणेणं, अणुत्तरेणं चरित्तएणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवे मद्दवे

लाघवे खंती मुत्ती गुत्ती सच्च-संजम-तव-गुणसुचरियसोव-च्चियफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए —जाव— केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति. तए णं से भगवं अरहे जिणे भविस्सइ केवली सव्वण्णु सव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ. सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणो-माणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मण-सवय-सकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विरहइ.

तए णं से भगवंतेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाण-दंसणेणं सदेवमणुआसुरलोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति. तं जहा-

दिव्वा वा, माणुसा वा, तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पण्णे सम्मं सहिस्सइ, खमिस्सइ, तितिक्खिस्सइ, अहियासिस्सइ. तए णं से भगवं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए भासासमिए एवं जहा- वद्धमाणसामी तं चेव निरवसेसं —जाव— अव्वावारविउसजोगजुत्ते.

तस्स णं भगवंतस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं विइक्कंतेहिं तेरसहि य पक्खेहिं तेरसमस्स णं संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स अणुत्तरेणं नाणेणं जहा

भावणाए केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति जिणे भविस्सइ केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सणेरइए —जाव— पंच महव्वयाइं सभावणाइं छच्च जीवनिकायधम्मं देसेमाणे विहरिस्सइ.

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं एगे आरंभठाणे पण्णत्ते.

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं एगं आरंभठाणं पण्णवेहिइ.

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं दुविहे बंधणे पण्णत्ते. तं जहा-

पेज्जबंधणे, दोसबंधणे.

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं दुविहं बंधणं पण्णवेहिइ. तं जहा-

पेज्जबंधणं च, दोसबंधणं च.

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं तओ दंडा पण्णत्ता. तं जहा-

मणदंडे —जाव— कायदंडे.

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं तओ दंडे पण्णवेहिइ तं जहा- मणदंडं —जाव— कायदंडं.

से जहा णामए एएणं अभिलावेणं चत्तारि कसाया पण्णत्ता. तं जहा-

कोहकसाए —जाव— लोहकसाए.

पंच कामगुणे पण्णत्ते. तं जहा-

सद्दे —जाव— फासे

छज्जीवनिकाया पण्णत्ता. तं जहा-

पुढविकाइया —जाव— तसकाइया.

एवामेव पुढविकाइया —जाव— तसकाइया.

से जहा णामए एएणं अभिलावेणं सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता. तं जहा-

इह लोगभए —जाव— असिलोगभए.

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं सत्त भयट्ठाणा पण्णवेहिइ.

एवं अट्ठ मयट्ठाणे.

नव बंभचेरगुत्तीओ.

दसविहे समणधम्मे.

एवं —जाव— तेत्तीसमसातणाउत्ति.

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावे, मुंडभावे, अण्हाणए, अदंतवणे, अच्छत्तए, अणुवाहणए, भूमिसेज्जा, फलगसेज्जा, कट्ठसेज्जा, केसलोए, बंभचेरवासे, परघरपवेसे —जाव— लद्धावलद्धवित्तीओ पण्णत्ताओ. एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं नग्गभावं —जाव— लद्धावद्धवित्ती पण्णवेहिइत्ति.

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं आधाकम्मिएइ वा, उद्देसिएइ वा, मीसज्जाएइ वा, अज्झोयरेइ वा, पूइए, कीए, पामिच्चे, अच्छेज्जे, अणिसिट्ठे, अभिहडे वा, कंतारभत्तेइ वा, दुब्भिक्खभत्तेइ वा, गिलाणभत्तेइ वा वद्दलियाभत्तेइ वा, पाहुणभत्तेइ वा, मूलभोयणेइ वा, कंदभोयणेइ वा, फलभोयणेइ वा. बीयभोयणेइ वा, हरियभोयणेइ वा पडिसिद्धे.

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं आधाकम्मियं वा —जाव— हरियभोयणं वा पडिसेहिस्सइ.

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं पंचमहव्वइए सपडिक्कमणे अचेलए धम्मे पण्णत्ते.

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं पंचमहव्वइयं —जाव— अचेलगं धम्मं पण्णविहिइ.

से जहा णामए अज्जो ! मए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए दुवालसविहे सावगधम्मे पण्णत्ते,

एवामेव महापउमे वि अरहा पंचाणुव्वइयं —जाव— सावगधम्मं पण्णवेस्सइ.

से जहा णामए अज्जो ! मए समणाणं निग्गंथाणं सेज्जायरपिंडेइ वा, रायपिंडेइ वा पड़िसिद्धे.

एवामेव महापउमे वि अरहा समणाणं निग्गंथाणं सेज्जायरपिंडेइ वा, रायपिंडेइ वा पड़िसेहिस्सइ.

से जहा णामए अज्जो ! मम नव गणा, एगारस गणधरा.

एवामेव महापउमस्स वि अरिहओ नव गणा, एगारस गणधरा भविस्संति.

से जहा णामए अज्जो ! अहं तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता —जाव— पव्वइए, दुवालस संवच्छराइं तेरस पक्खा छउमत्थपरियागं पाउणित्ता, तेरसहिं पक्खेहिं ऊणगाइं तीसं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता, बायालीसं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, बावत्तरि वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता, सिज्झिस्सं —जाव— सव्व-दुक्खाणमंतं करेस्सं.

एवामेव महापउमे वि अरहा तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता —जाव— पव्वहिइ.

दुवालस संवच्छराइं —जाव— बावत्तरिवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिज्झिहिइ —जाव— सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ.

गाहा—जं सीलसमायारो, अरहा तित्थंकरो महावीरो ।
तस्सीलसमायारो, होइ उ अरहा महापउमे ॥१॥

इइ महापउमचरियं

६९४ नव नक्खत्ता चंदस्स पच्छंभागा पण्णत्ता तं जहा-

गाहा—अभिई सवणो धणिट्ठा,
रेवइ अस्सिणि मग्गसिर पूसो ।
हत्थो चित्ता य तहा,
पच्छंभागा नव हवंति ॥१॥

६९५ आण-पाणय-आरणच्चुएसु कप्पेसु विमाणाइं नव जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं पण्णत्ते.

६९६ विमलवाहणे णं कुलकरे नव धणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं हुत्था.

६९७ उसभेणं अरहा कोसलिए णं इमीसे ओसप्पिणीए नवहिं सागरोवमकोड़ाकोड़ीहिं विइक्कंताहिं तित्थे पवत्तिए.

६९८ घणदंत-लट्ठदंत-गूढदंत-सुद्धदंतदीवाणं दीवा नव नव जोयणसयाइं आयाम-विक्खंभेणं पण्णत्ता.

६९९ सुक्कस्स णं महागहस्स नव वीहीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

हयवीही, गयवीही, नागवीही,
वसहवीही, गोवीही, उरगवीही,
अयवीही, मियवीही, वेसाणरवीही.

७०० नवविहे नोकसायवेयणिज्जे कम्मे पण्णत्ते. तं जहा-

इत्थिवेए, पुरिसवेए, नपुंसगवेए,
हासे, रइ, अरइ,
भये, सोगे, दुगुंछे.

७०१ चउरिंदियाणं नव जाइकुलकोड़ीजोणिपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता.

भुयगपरिसप्प-थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं नव जाइ कुलकोड़ीजोणिपमुहसयसहस्सा पण्णत्ता. २

७०२ जीवा णं नवट्ठाणनिवत्तिए पोग्गले पावकम्मत्ताए चिणिसु वा, चिणंति वा, चिणस्संति वा, पुढविकाइयनिवत्तिए —जाव— पंचिदियनिवत्तिए.

एवं चिण-उवचिण —जाव— निज्जरा चेव. ६

७०३ नव पएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता.

नवपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता —जाव—

नवगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २३

दसट्ठाणं

७०४ दसविहा लोगट्ठिई पण्णत्ता. तं जहा-

जण्णं जीवा उद्दाइत्ता तत्थेव तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायंति. एवं एगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जण्णं जीवाणं सया समियं पावे कम्मे कज्जइ. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जण्णं जीवा सया समियं मोहणिज्जे पावे कम्मे कज्जइ. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एवं भूयं वा, भव्वं वा, भविस्सइ वा जं जीवा अजीवा भविस्संति, अजीवा वा जीवा भविस्संति. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एवं भूयं वा, भव्वं वा, भविस्सइ वा जं तसा पाणा वोच्छिज्जिस्संति, थावरा पाणा वोच्छिज्जिस्संति, तसा पाणा भविस्संति, थावरा पाणा भविस्संति. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एवं भूयं वा, भव्वं वा, भविस्सइ वा जं लोए अलोए भविस्सइ, अलोए वा लोए भविस्सइ. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

न एवं भूयं वा, भव्वं वा, भविस्सइ वा जं लोए अलोए पविस्सइ. अलोए वा लोए पविस्सइ. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जाव ताव लोए ताव ताव जीवा, जाव ताव जीवा ताव ताव लोए. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

जाव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गइ परियाए ताव ताव लोए, जाव ताव लोए ताव ताव जीवाण य पोग्गलाण य गइपरियाए. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता,

सव्वेसु वि णं लोगंतेसु जं अवद्धपासपुट्ठा पोग्गला लुक्खत्ताए कज्जइ जेणं जीवा य पोग्गला य नो संचायंति बहिया लोगंता गमणयाए. एवं पेगा लोगट्ठिई पण्णत्ता.

७०५ दसविहे सद्दे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा--नीहारि पिंडिमे लुक्खे,
भिण्णे जज्जरिए इ य ।
दीहे रहस्से पुहुत्ते य,
काकणी खिखिणिस्सरे ॥१॥

७०६ दस इंदियत्थातीता पण्णत्ता. तं जहा-

देसेण वि एगे सद्दाइं सुणिंसु,
सव्वेण वि एगे सद्दाइं सुणिंसु,
देसेण वि एगे रूवाइं पासिंसु,
सव्वेण वि एगे रूवाइं पासिंसु,
देसेण वि एगे गंधाइं अग्घिंसु,
सव्वेण वि एगे गंधाइं अग्घिंसु,
देसेण वि एगे रसाइं आसाइंसु,
सव्वेण वि एगे रसाइं आसाइंसु,

देसेण वि एगे फासाइं पड़िसंवेदेंसु,
सव्वेण वि एगे फासाइं पड़िसंवेदेंसु.

दस इंदियत्था पडुप्पण्णा पण्णत्ता. तं जहा-
देसेण वि एगे सद्दाइं सुणेंति,
सव्वेण वि एगे सद्दाइं सुणेंति एवं —जाव—
देसेण वि एगे फासाइं पडिसंवेदेंति,
सव्वेण वि एगे फासाइं पडिसंवेदेंति.

दस इंदियत्था अणागया पण्णत्ता. तं जहा-
देसेण वि एगे सद्दाइं सुणिस्संति,
सव्वेण वि एगे सद्दाइं सुणिस्संति एवं —जाव—
देसेण वि एगे फासाइं पडिसंवेदेस्संति,
सव्वेण वि एगे फासाइं पडिसंवेदेस्संति. ३

७०७ दसहिं ठाणेहिं अच्छिण्णे पोग्गले चलेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
आहारिज्जमाणे वा चलेज्जा,
परिणामेज्जमाणे वा चलेज्जा,
उस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा,
निस्ससिज्जमाणे वा चलेज्जा,
वेदेज्जमाणे वा चलेज्जा,
निज्जरिज्जमाणे वा चलेज्जा,
विउव्विज्जमाणे वा चलेज्जा,
परियारिज्जमाणे वा चलेज्जा,
जक्खाइट्ठे वा चलेज्जा,

वायपरिग्गणे वा चलेज्जा.

७०८ दसहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती सिया. तं जहा-

मणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहरिंसु,
अमणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं उवहरिंसु,
मणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहरइ,
अमणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं उवहरइ,
मणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहरिस्सइ,
अमणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं उवहरिस्सइ,
मणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहरिंसु, अवहरइ, अवहरिस्सइ,
अमणुण्णाइं मे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं उवहरिंसु, उवहरइ, उवहरिस्सइ,
मणुण्णामणुण्णाइं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं अवहरिंसु, अवहरइ, अवहरिस्सइ. उवहरिंसु, उवहरइ, उवहरिस्सइ,
अहं च णं आयरिय-उवज्झायाणं सम्मं वट्टामि, ममं च णं आयरिय-उवज्झाया मिच्छं पडिवण्णा.

७०९ दसविहे संजमे पण्णत्ते. तं जहा-

पुढविकाइय-संजमे —जाव— वणस्सइकाइय-संजमे, बेइंदिय-संजमे, तेंदिय-संजमे, चउरिंदिय-संजमे, पंचिंदिय-संजमे, अजीवकाय-संजमे.

दसविहे असंजमे पण्णत्ते. तं जहा-

पुढविकाइय-असंजमे —जाव— अजीवकाय-असंजमे.

दसविहे संवरे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइंदियसंवरे —जाव— फासिंदियसंवरे,

मणसंवरे, वयसंवरे, कायसंवरे,

उवगरणसंवरे, सूईकुसग्गसंवरे.

दसविहे असंवरे पण्णत्ते. तं जहा-

सोइंदियअसंवरे, —जाव— सूईकुसग्गअसंवरे.

७१० दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभिज्जा. तं जहा-

जाइमएण वा —जाव— इस्सरियमएण वा,

नाग सुवण्णा वा मे अंतियं हव्वमागच्छंति,

पुरिसधम्माओ वा मे उत्तरिए अहोहिए नाण-दंसणे समुप्पण्णे.

७११ दसविहा समाही पण्णत्ता. तं जहा-

पाणाइवाय-वेरमणे —जाव— परिग्गह-वेरमणे,

इरियासमिई —जाव उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-परिट्ठावणियासमिई.

दसविहा असमाही पण्णत्ता. तं जहा-

पाणाइवाए —जाव— उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-परिट्ठावणिया असमिई.

७१२ दसविहा पव्वज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा--छंदा रोसा परिजुण्णा,

सुविणा पडिस्सुया चेव ।

सारणिया रोगिणीया ,
अणाढिया देवसण्णत्ती ।।१।।
वोच्छाणुबंधिया ·············

दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते. तं जहा-
खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे,
सच्चें, संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे.

दसविहे वेयावच्चे पण्णत्ते. तं जहा-
आयरिय-वेयावच्चे, उवज्झाय-वेयावच्चे,
थेर-वेयावच्चे, तवस्सि-वेयावच्चे,
गिलाण-वेयावच्चे, सेह-वेयावच्चे,
कुल-वेयावच्चे, गण-वेयावच्चे,
संघ-वेयावच्चे, साहम्मिय-वेयावच्चे.

७१३ दसविहे जीवपरिणामे पण्णत्ते. तं जहा-
गइपरिणामे, इंदियपरिणामे,
कसायपरिणामे, लेसापरिणामे,
जोगपरिणामे, उवओगपरिणामे,
नाणपरिणामे, दंसणपरिणामे,
चरित्तपरिणामे, वेयपरिणामे.

दसविहे अजीवपरिणामे पण्णत्ते. तं जहा-
वंधणपरिणामे, गइपरिणामे,
संठाणपरिणामे, भेदपरिणामे,
वण्णपरिणामे, रसपरिणामे,

गंधपरिणामे, फासपरिणामे,
अगुरुलहुपरिणामे, सद्दपरिणामे.

७१४ दसविहे अंतलिक्खिए असज्झाइए पण्णत्ते. तं जहा-
उक्कावाए, दिसिदाहे,
गज्जिए, विज्जुए,
निग्घाए, जूयए,
जक्खालित्ते, धूमिया,
महिया, रयओग्घाए.

दसविहे ओरालिए असज्झाइए पण्णत्ते. तं जहा-
अट्ठि, मंसं,
सोणिए, असुइसामंते,
सुसाणसामंते, चंदोवराए,
सूरोवराए, पडणे,
रायवुग्गहे, उवसयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे. २

७१५ पंचिंदियाणं जीवाणं असमारभमाणस्स दसविहे संजमे कज्जइ. तं जहा-
सोयामयाओ सुक्खाओ अववरोवेत्ता भवइ, — जाव — फासमएणं दुक्खेणं असंजोएत्ता भवइ.
एवं असंयमोऽवि भाणियव्वो. २

७१६ दस सुहमा पण्णत्ता. तं जहा-
पाणसुहमे — जाव — सिणेहसुहुमे,
गणियसुहुमे, भंगसुहुमे.

७१७ जंबू-मंदर-दाहिणेणं गंगासिंधुमहाणईओ दस महाणईओ समप्पेंति. तं जहा-

जउणा, सरऊ,
आवी, कोसी,
मही, सिंधू,
वितत्था, विभासा,
एरावइ, चंदभागा.

जंबू-मंदर-उत्तरेणं रत्तारत्तवईओ महाणईओ दस महाणईओ समप्पेंति. तं जहा-

किण्हा, —जाव— महाभागा. २

७१८ जंबूद्दीवे दीवे भरहे वासे दस रायहाणीओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहा—चंपा महुरा वाराणसी य, सावत्थी तह य साएयं ।
हत्थिणउर कंपिल्लं, मिहिला कोसंबि रायगिहं ॥१॥

एयासु णं दसरायहाणीसु दस रायाणो मुंडा भवेत्ता, —जाव— पव्वइया. तं जहा-

भरहो, सागरो,
मघवं, सणंकुमारो,
संती, कुंथू,
अरे, महापउमे,
हरिसेणो, जयणामे. २

७१९ जंबूद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं धरणितले, दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दस-जोयणसयाइं विक्खंभेणं, दसदसाइं जोयणसहस्साइं सव्व-ग्गेणं पण्णत्ते.

७२० जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु, एत्थ णं अट्ठपएसिए रुयगे पण्णत्ते.

जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति. तं जहा-

पुरच्छिमा, पुरिच्छमदाहिणा,
दाहिणा, दाहिणपच्चत्थिमा,
पच्चत्थिमा, पच्चत्थिमुत्तरा,
उत्तरा, उत्तरपुरच्छिमा,
उड्ढा, अहो.

एयासि णं दसण्हं दिसाणं दस नामधिज्जा पण्णत्ता. तं जहा-
गाहा--इंदा अग्गेइ जमा, नेरइ वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणा वि य, विमला य तमा य बोद्धव्वा ।।१।।

लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं गोतित्थविरहिए खेत्ते पण्णत्ते,

लवणस्स णं समुद्दस्स दस जोयणसहस्साइं उदगमाले पण्णत्ते,

सव्वे वि णं महापायाला दसदसाइं जोयणसहस्साइं उव्वेहेणं पण्णत्ता,

मूले दस जोयाणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता,
बहुमज्झदेसभागे एगपएसियाए सेढीए दसदसाइं जोयण-
सहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता,
उवरिं मुहमूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता,
तेसि णं महापायालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थसमा
दस जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता,
सव्वे वि णं खुद्दा पायाला दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं
पण्णत्ता,
मूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं, बहुमज्झदेसभाए
एगपएसियाए सेढीए दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं
पण्णत्ता,
उवरिं मुहमूले दसदसाइं जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता.
तेसि णं खुड्डापायालाणं कुड्डा सव्ववइरामया सव्वत्थ
समा दस जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता. ६

७२१ धायइसंडगा णं मंदरा दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, धरणितले
देसूणाइं दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं उवरिं दस जोयण-
सयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता.
पुक्खरवरदीवड्ढगा णं मंदरा दस जोयण० एवं चेव. २

७२२ सव्वे वि णं वट्टवेयड्डपव्वया दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं,
दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिया,
दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता.

७२३ जंबूद्दीवे दीवे दस खेत्ता पण्णत्ता. तं जहा-

भरहे,	एरवए,
हेमवए,	हेरण्णवए,
हरिवस्से,	रम्मगवस्से,
पुव्वविदेहे,	अवरविदेहे,
देवकुरा,	उत्तरकुरा.

७२४ माणुसुत्तरे णं पव्वए मूले दस बावीसे जोयणसए विक्खंभेणं पण्णत्ते.

७२५ सव्वे वि णं अंजणगपव्वया दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता,

सव्वे वि णं दहिमुहपव्वया दस जोयणसयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिया दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता,

सव्वे वि णं रइकरग-पव्वया दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दसगाउयसयाइं उव्वेहेणं, सव्वत्थ समा झल्लरिसंठिया दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ता. ३

७२६ रुयगवरे णं पव्वए दस जोयण-सयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं, उवरिं दस जोयण-सयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते.

एवं कुंडलवरे वि. २

७२७ दसविहे दवियाणुओगे पण्णत्ते. तं जहा-

दवियाणुओगे, माउयाणुओगे,
एगट्ठियाणुओगे, करणाणुओगे,
अप्पियणप्पिए, भावियाभाविए,
बाहिराबाहिरे, सासयासासए,
तहणाणे, अतहणाणे.

७२८ चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिच्छकूडे उप्पायपव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं पण्णत्ते,
चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो सोमप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोणणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते,

चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो जमस्स महारण्णो जमप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं, मूल दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते,

एवं वरुणस्स वि, एवं वेसमणस्स वि.

बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुअगिंदे उप्पायपव्वए मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खंभेणं पण्णत्ते,

बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स सोमस्स एवं चेव.

जहा चमरस्स लोगपालाणं तं चेव बलिस्स वि.

धरणस्स णं नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो धरणप्पभे

उप्पायपव्वए दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस गाउय-सयाइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते,

धरणस्स नागकुमारिंदस्स णं नागकुमाररण्णो कालवालस्स महारण्णो महाकालप्पभे उप्पायपव्वए जोयणसयाइं उड्ढं. एवं चेव,

एवं —जाव— संखवालस्स, एवं भूयाणंदस्स वि, एवं लोगपालाण वि. से जहा धरणस्स एवं —जाव— थणिय-कुमाराणं सलोगपालाणं भाणियव्वं,

सव्वेसिं उप्पायपव्वया भाणियव्वा सरिसणामगा,

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सक्कप्पभे उप्पायपव्वए दस जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं. दस गाउयसहस्साइं उव्वेहेणं, मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते,

सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो जहा सक्कस्स तहा सव्वेसिं लोगपालाणं, सव्वेसिं च इंदाणं —जाव— अच्चुयत्ति. सव्वेसिं पमाणमेगं. १५०

७२९ बायरवणस्सइकाइयाणं उक्कोसेणं दस जोयणसयाइं सरीरो-गाहणा पण्णत्ता.

जलचर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं दस जोयण-सयाइं सरीरोगाहणा पण्णत्ता.

उरपरिसप्प-थलचर-पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं एवं चेव. ३

७३० संभवाओ णं अरहाओ अभिनंदणे अरहा दसहिं सागरोवम-कोडिसयसहस्सेहिं विइक्कंतेहिं समुप्पण्णे.

७३१ दसविहे अणंतए पण्णत्ते. तं जहा-

नामाणंतए, ठवणाणंतए,
दव्वाणंतए, गणणाणंतए,
पएसाणंतए, एगओणंतए,
दुहओणंतए, देसवित्थाराणंतए,
सव्ववित्थाराणंतए, सासयाणंतए.

७३२ उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थु पण्णत्ता.

अत्थि-णत्थिप्पवायपुव्वस्स णं दस चूलवत्थु पण्णत्ता.

७३३ दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—दप्प पमाय णाभोगे,
आउरे आवतीसु य ।
संकिए सहसक्कारे,
भयप्पओसा य वीमंसा ॥१॥

दस आलोयणादोसा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता,
जं दिट्ठं बायरं च सुहुमं वा ।
छण्णं सद्दाउलगं,
बहुजण अव्वत्त तस्सेवी ॥१॥

दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहइ अत्तदोसमालोएत्तए. तं जहा-

जाइसंपण्णे —जाव— अट्ठट्ठाणे —जाव— खंते दंते,
अमाई, अपच्छाणुतावि.

दसहिं ठाणेहिं संपण्णे अणगारे अरिहइ आलोयणं पड़िच्छित्तए.
तं जहा-

आयारवं —जाव — अवायदंसी.
पियधम्मे. दढधम्मे.

दसविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते. तं जहा-

आलोयणारिहे —जाव— अणवट्ठप्पारिहे,
पारंचियारिहे. ५

७३४ दसविहे मिच्छत्ते पण्णत्ते. तं जहा-

अधम्मे धम्मसण्णा, धम्मे अधम्मसण्णा,
अमग्गे मग्गसण्णा, मग्गे उम्मग्गसण्णा,
अजीवेसु जीवसण्णा, जीवेसु अजीवसण्णा,
असाहुसु साहुसण्णा, साहुसु असाहुसण्णा,
अमुत्तेसु मुत्तसण्णा, मुत्तेसु अमुत्तसण्णा.

७३५ चंदप्पभे णं अरहा दस पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे.

धम्मे णं अरहा दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे.

नमी णं अरहा दस वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे.

पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववण्णे.

नेमी णं अरहा दस धणूयं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे —जाव— सव्वदुक्खप्पहीणे.

कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, दस य वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता तच्चाए वालुप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववण्णे. ६

७३६ दसविहा भवणवासी देवा पण्णत्ता. तं जहा-

असुरकुमारा —जाव— थणियकुमारा.

एएसि णं दसविहाणं भवणवासीणं देवाणं दस चेइयरुक्खा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—आसत्थ सत्तिवण्णे,
सामलि उंबर सिरीस दहिवण्णे ।
वंजुल पलास वप्पे,
तए य कणियाररुक्खे ॥१॥ २

७३७ दसविहे सोक्खे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा--आरोग्ग दीहमाउं,
अड्ढेज्जं काम भोग संतोसे ।
अत्थि सुहभोग,
निक्खम्ममेव ततो अणाबाहे ॥१॥

७३८ दसविहे उवघाए पण्णत्ते. तं जहा-

उग्गमोवघाए, जहा पंचट्ठाणे — जाव — परिहरणोवघाए
नाणोवघाए, दंसणोवघाए, चरित्तोवघाए,
अचियत्तोवघाए, सारक्खणोवघाए.

दसविहा विसोही पण्णत्ता. तं जहा-
उग्गमविसोही — जाव — सारक्खणाविसोही. २

७३९ दसविहे संकिलेसे पण्णत्ते. तं जहा-
उवहिसंकिलेसे, उवस्सयसंकिलेसे,
कसायसंकिलेसे, भत्तपाणसंकिलेसे,
मणसंकिलेसे, वइसंकिलेसे,
कायसंकिलेसे, नाणसंकिलेसे,
दंसणसंकिलेसे, चरित्तसंकिलेसे.

दसविहे असंकिलेसे पण्णत्ते. तं जहा-
उवहिअसंकिलेसे — जाव — चरित्तअसंकिलेसे. २

७४० दसविहे बले पण्णत्ते. तं जहा-
सोइंदियबले — जाव — फासिंदियबले,
नाणबले, दंसणबले, चरित्तबले, तवबले, वीरियबले.

७४१ दसविहे सच्चे पण्णत्ते. तं जहा-
गाहा--जणवय सम्मय ठवणा,
नामे रूवे पडुच्च सच्चे य ।
ववहार भाव जोगे,
दसमे ओवम्मसच्चे य ॥१॥

दसविहे मोसे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा--कोहे माणे माया,
लोभे पिज्जे तहेव दोसे य।
हास भए अक्खाइ य,
उवघायनिस्सिए दसमे ॥१॥

दसविहे सच्चामोसे पण्णत्ते. तं जहा-

उप्पण्णमीसए, विगयमीसए,
उप्पण्णविगयमीसए, जीवमीसए,
अजीवमीसए, जीवाजीवमीसए,
अणंतमीसए, परित्तमीसए,
अद्धामीसए, अद्धद्धामीसए. ३

७४२ दिट्ठिवायस्स णं दस नामधेज्जा पण्णत्ता. तं जहा-

दिट्ठवाएइ वा, हेउवाएइ वा,
भूयवाएइ वा, तच्चावाएइ वा,
सम्मावाएइ वा, धम्मावाएइ वा,
भासाविजएइ वा, पुव्वगएइ वा,
अणुजोगगएइ वा, सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहेइ वा.

७४३ दसविहे सत्थे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा--सत्थमग्गी विसं लोणं,
सिणेहो खारमंबिलं।
दुप्पउत्तो मणो वाया,
काया भावो य अविरई ॥१॥

दसविहे दोसे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा--तज्जायदोसे मइभंगदोसे ,
पसत्थारदोसे परिहरणदोसे ।
सलक्खण क्कारण हेउदोसे ,
संकामणं निग्गह वत्थुदोसे ॥१॥

दसविहे विसेसे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा--वत्थु तज्जायदोसे य ,
दोसे एगट्ठिए इ य ।
कारणे य पडुप्पण्णे ,
दोसे निच्चेहि अट्ठमे ॥१॥
अत्ताणा उवणीए य ,
विसेसेइ य ते दस । २

७४४ दसविहे सुद्धवायाणुओगे पण्णत्ते. तं जहा-

चंकारे, मंकारे, पिंकारे, सेयंकारे, सायंकारे,
एगत्ते, पुहत्ते संजूहे, संकामिए, भिण्णे.

७४५ दसविहे दाणे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा--अणुकंपा संगहे चेव, भये कालुणिए इ य ।
लज्जाए गारवेणं च, अहम्मे पुण सत्तमे ॥१॥
धम्मे य अट्ठमे वुत्ते, काहीइ य कतंति य ।

दसविहा गइ पण्णत्ता. तं जहा-

निरयगइ, निरयविग्गहगइ,
तिरियगइ, तिरियविग्गहगइ,

मणुयगइ, मणुयविग्गहगइ,
देवगइ, देवविग्गहगइ,
सिद्धगइ, सिद्धविग्गहगइ,

७४६ दस मुंडा पण्णत्ता. तं जहा-
सोइंदियमुंडे —जाव फासिंदियमुंडे,
कोहमुंडे —जाव — लोभमुंडे, दसमे सिर मुंडे.

७४७ दसविहे संखाणे पण्णत्ते. तं जहा-
गाहा—परिकम्मं ववहारो, रज्जू रासी कलासवण्णे य ।
जावं तावइ वग्गो, घणो य तह वग्गवग्गो वि ॥१॥
कप्पो य ,.... .... ।

७४८ दसविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते. तं जहा-
गाहा—अणागयमइक्कंतं, कोडीसहियं नियंटियं चेव ।
सागारमणागारं, परिमाणकडं निरवसेसं ॥१॥
संकेयं चेव अद्धाए, पच्चक्खाणं दसविहं तु ।

७४९ दसविहा समायारी पण्णत्ता. तं जहा-
गाहा—इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया निसीहिया ।
आपुच्छणा य पड़िपुच्छा, छंदणा य निमंतणा ॥१॥
उवसंपया य काले, समायारी भवे दसविहा उ ।

७५० समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसी इमे दस महासुमिणे पासित्ता णं पड़िबुद्धे, तं जहा-
एगं च णं महाघोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराजियं पासित्ता णं पड़िबुद्धे,

एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे.

एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं पुंसकोइलं सुविणे पासित्ता णं पड़िबुद्धे.

एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुमिणे पासित्ता णं पड़िबुद्धे.

एगं च णं महं सेयं गोवग्गं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे.

एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे.

एगं च णं महासागरं उम्मीवीचीसहस्सकलियं भुयाहिं तिण्णं सुमिणे पासित्ता णं पड़िबुद्धे.

एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे.

एगं च णं महं हरिवेरुलियवण्णाभेणं नियतेणमंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढियं परिवेढियं सुमिणे पासित्ता णं पड़िबुद्धे.

एगं च णं महं मंदरे पव्वए मंदरचूलियाओ उवरिं सीहासणवरगयमत्ताणं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धे.

० ०

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुमिणे पराइयं पासित्ता णं पडिबुद्धे.

तं णं समणेणं भगवया महावीरेणं मोहणिज्जे मूलाओ उग्घाइए.

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सुक्किलपक्खगं

—जाव— पडिबुद्धे.

तं णं समणे भगवं महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरइ,

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं चित्तविचित्तपक्खगं —जाव— पडिबुद्धे.

तं णं समणे भगवं महावीरे ससमयपरसमइयं चित्त-विचित्तं दुवालसंगं गणिपिडगं आघवेइ पण्णवेइ परूवेइ दंसेइ निदंसेइ उवदंसेइ, तं जहा- आयारं —जाव— दिट्ठीवायं,

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दामदुगं सव्वरयणा —जाव— पडिबुद्धे.

तं णं समणे भगवं महावीरे दुविहं धम्मं पण्णवेइ, तं जहा- अगारधम्मं च, अणगारधम्मं च.

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं सेयं गोवग्गं सुमिणं —जाव— पडिबुद्धे.

तं णं समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे संघे पण्णत्ते. तं जहा- समणा, समणीओ, सावगा, सावियाओ.

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं पउमसरं —जाव— पडिबुद्धे.

तं णं समणे भगवं महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेइ. तं जहा- भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसवासी, विमाणवासी.

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं उम्मी-वीची

—जाव — पडिबुद्धे.

तं णं समणेणं भगवया महावीरेणं अणाईए अणवदग्गे दीहमद्धे चाउरंतसंसारकंतारे तिण्णे.

जं णं समणे भगवं महावीरे एगं महं दिणयरं —जाव— पडिबुद्धे.

तं णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणंते अणुत्तरे —जाव — समुप्पण्णे.

जं णं समणं भगवं एगं महं हरिवेरुलिय —जाव— पडिबुद्धे.

तं णं समणस्स भगववो महावीरस्स सदेवमणुयासुरे लोगे उराला कित्तिवण्णसद्दसिलोगा परिगुव्वंति "इह खलु समणे भगवं महावीरे" इइ.

जं णं समणे भगवं महावीरे मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए उवरिं — जाव — पडिबुद्धे.

तं णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेइ पण्णवेइ — जाव — उवदंसेइ.

७५१ दसविहे सरागसम्मद्दंसणे पण्णत्ते. तं जहा-

गाहा—निसग्गुवएसरुई, आणारुई सुत्त-बीयरुइमेव ।
अभिगम वित्थाररुई, किरिया संखेव धम्मरुई ॥१॥

७५२ दस सण्णाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

आहारसण्णा —जाव— परिग्गहसण्णा,

कोहसण्णा, — जाव— लोहसण्णा,
लोगसण्णा, ओघसण्णा.

नेरइयाणं दस सण्णाओ एवं चेव,
एवं निरंतरं —जाव— वेमाणियाणं.

७५३ नेरइया णं दसविहं वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति. तं जहा-

सीयं, उसिणं, खुहं, पिवासं, कंडुं,
परज्झं, भयं, सोगं, जरं, वाहिं.

७५४ दस ठाणाइं छउमत्थे णं सव्वभावे णं न जाणइ न पासइ. तं जहा-

धम्मत्थिकायं —जाव— वाउं,
अयं जिणे भविस्सइ वा, न वा भविस्सइ,
अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सइ वा, न वा करेस्सइ.

एयाणि उप्पण्णनाण-दंसणधरे — जाव— अयं सव्वदुक्खाणमंतं करेस्सइ वा, न वा करेस्सइ.

७५५ दस दसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

कम्मविवागदसाओ, उवासगदसाओ,
अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ,
आयारदसाओ, पण्हावागरणदसाओ,
बंधदसाओ, दोगिद्धिदसाओ,
दीहदसाओ, संखेवियदसाओ.

कम्मविवागदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-

गाहा—मियापुत्ते य गोत्तासे, अंडे सगड़े इयावरे ।
माहणे नंदिसेणे य, सोरियत्ति उदुंबरे ॥१॥
सहसुद्दाहे आमलए कुमार लिच्छूइ इइ.

उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-

गाह—आणंदे कामदेवे अ, गाहावई चूलणीपिया ।
सुरादेवे चुल्लसयए, गाहावई कुंडकोलियए ॥१॥
सद्दालपुत्ते महासयए, नंदिणीपिया सालइयापिया ।

अंतगड़दसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-

गाहा—नमि मातंगे सोमिले, रामगुत्ते सुदंसणे चेव ।
जमाली य भगाली य, किंकिमे पल्लए इ य ॥१॥
फाले अंबड़पुत्ते य, एमेए दस आहिया ।

अणुत्तरोववाइयदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—इसिदासे य धण्णे य, सुणक्खत्तें य काइए ।
सट्ठाणे सालिभद्दे य, आणंदे तेतली इ य ॥१॥
दसण्णभद्दे अइमुत्ते, एमेए दस आहिया ।

आयारदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

वीसं असमाहीट्ठाणा, एगवीसं सबला,
तेत्तीसं आसायणाओ, अट्ठविहा गणिसंपया,
दस चित्तसमाहिट्ठाणा, एगारस उवासगपड़िमाओ,
बारस भिक्खुपड़िमाओ, पज्जोसवणाकप्पो,
तीसं मोहणिज्जट्ठाणा, आजाइट्ठाणं.

पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

उवमा, संखा,
इसिभासियाइं, आयरियभासियाइं,
महावीरभासियाइं, खोमगपसिणाइं,
कोमलपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं,
अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं.

बंधदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—बंधे मोक्खे य देवद्धि,
दसारमंडले वि य आयरियविप्पडिवत्ति ।
उवज्झायविपडिवत्ती,
भावणा विमुत्ती साओ कम्मे ॥१॥

दोगेहिदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—वाए विवाए उववाए,
सुक्खित्तकसिणे बायालीसं सुमिणे ।
तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा,
हारे रामे गुत्ते एमेए दस आहिया ॥१॥

दीहदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—चंदे सूरे य सुक्के य सिरिदेवी,
पभावइ दीवसमुद्दोववत्ती ।
बहूपुत्ती मंदरेइ य थेरे य संभूयविजए,
थेरे पम्ह ऊसासनीसासे ॥१॥

संखेवियदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता. तं जहा-

खुड्डियाविमाणपविभत्ती, महल्लियाविमाणपविभत्ती,
अंगचूलिया, वग्गचूलिया,
विवाहचूलिया, अरुणोववाए,
वरुणोववाए, गरुलोववाए,
वेलंधरोववाए, वेसमणोववाए, ११

७५६ दस-सागरोवम-कोड़ाकोड़िओ कालो उस्सप्पिणीए.

दस-सागरोवम-कोड़ाकोड़िओ कालो ओसप्पिणीए. २

७५७ दसविहा नेरइया पण्णत्ता, तं जहा-

अणंतरोववण्णा, परंपरोववण्णा,
अणंतरावगाढा, परंपरावगाढा,
अणंतराहारगा, परंपराहारगा,
अणंतरपज्जत्ता, परंपरपज्जत्ता,
चरिमा, अचरिमा.

एवं निरंतरं —जाव— वेमाणिया.

चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए दस-निरयावास-सयसहस्सा ठिई पण्णत्ता.

रयणप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं नेरइयाणं दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता.

चउत्थीए णं पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं नेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता

पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं नेरइयाणं दस

सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

असुरकुमाराणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता. एवं —जाव— थणियकुमाराणं.

बायरवणस्सइकाइयाणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता.

वाणमंतरदेवाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता.

बंभलोगे कप्पे उक्कोसेणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता.

लंतए कप्पे देवाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता. १०

७५८ दसहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसिभद्दत्ताए कम्मं पगरेंति, तं जहा-

अणिदाणयाए, दिट्ठिसंपण्णयाए,
जोगवाहियत्ताए, खंतिखमणयाए,
जितिंदिययाए, अमाइल्लयाए,
अपासत्थयाए, सुसामण्णयाए
पवयणवच्छल्लयाए, पवयणउब्भावणयाए,

७५९ दसविहे आसंसप्पओगे पण्णत्ते, तं जहा-

इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे,
दुहओलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे
मरणासंसप्पओगे, कामासंसप्पओगे,
भोगासंसप्पओगे, लाभासंसप्पओगे,
पूयासंसप्पओगे, सक्कारासंसप्पओगे;

७६० दसविहे धम्मे पण्णत्त. तं जहा.-

गामधम्मे, नगरधम्मे,
रट्ठधम्मे, पासंडधम्मे,
कुलधम्मे, गणधम्मे,
संघधम्मे, सुयधम्मे,
चरित्तधम्मे, अत्थिकायधम्मे,

७६१ दस थेरा पण्णत्ता. तं जहा-

गामथेरा, नगरथेरा,
रट्ठथेरा, पसत्थारथेरा,
कुलथेरा, गणथेरा,
संघथेरा, जाइथेरा,
सुअथेरा, परियायथेरा

७६२ दस पुत्ता पण्णा, तं जहा-

अत्तए, खेत्तए,
दिण्णए, विण्णए,
उरसे, मोहरे,
सोंडीरे, संबुद्धे,
उववाइए, धम्मंतेवासी,

७६३ केवलिस्स णं दस अणुत्तरा पण्णत्ता, तं जहा-

अणुत्तरे नाणे, अणुत्तरे दंसणे,
अणुत्तरे चरित्ते, अणुत्तरे तवे,
अणुत्तरे वीरिए अणुत्तरा खंती,

अणुत्तरा मुत्ती, अणुत्तरे अज्जवे,
अणुत्तरे मद्दवे, अणुत्तरे लाघवे.

७६४ समयखेत्ते णं दस कुराओ पण्णत्ताओ तं जहा-
पंच देवकुराओ पंच उत्तरकुराओ, तत्थ णं दस महइमहालया महा दुमा पण्णत्ता. तं जहा-
जंबू सुदंसणा, धायइरुक्खे,
महाधायइरुक्खे, पउमरुक्खे,
महापउमरुक्खे, पंच कूडसामलीओ.

तत्थ णं दस देवा महड्ढिया-जाव-परिवसंति. तं जहा-
अणाढिए जंबुद्दीवाहिवइ, सुदंसणे,
पियंदसणे, पोंडरिए,
महापोंडरीए, पंच गरुला वेणुदेवा. २

७६५ दसहिं ठाणेहिं ओगाढं दुस्समं जाणेज्जा. तं जहा-
अकाले वरिसइ, काले न वरिसइ,
असाहू पूइज्जंति, साहू न पूइज्जंति,
गुरुसु जणो मिच्छं पडिवण्णो,
अमणुण्णा सद्दा —जाव— फासा.

दसहिं ठाणेहिं ओगाढं सुसमं जाणेज्जा. तं जहा-
अकाले न वरिसइ —जाव— मणुण्णा फासा. २

७६६ सुसमसुसमाए णं समाए दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए हव्वमागच्छंति. तं जहा-

मत्तंगया य भिंगा, तुड़ियंगा दीव जोइ चित्तगा ।
चित्तरसा मणियंगा, गेहागारा अणियणा य ।।१।।

७६७ जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे तीताए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा होत्था तं जहा-

गाहा–सयज्जले सयाऊ य, अणंतसेणे य अमियसेणे य ।
तक्कसेणे भीमसेणे महाभीमसेणे य सत्तमे ।।१।।
दढरहे दसरहे सयरहे·················· ······ ।

जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहवासे आगमेसाए उस्सप्पिणीए दस कुलगरा भविस्संति तं जहा-

सीमंकरे, सीमंधरे,
खेमंकरे, खेमंधरे,
विमलवाहणे, संमुती,
पड़िसुए, दढधणू,
दसधणू, सतधणू. २

७६८ जंबूद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं सीयाए महाणईए उभओ कूले दस वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-
मालवंते —जाव— सोमणसे.

जंबूमंदरपच्चत्थिमे णं सीओयाए महाणईए उभओ कूले दस वक्खारपव्वया पण्णत्ता. तं जहा-
विज्जुप्पभे —जाव— गंधमायणे.

एवं धायइसंडपुरच्छिमद्धे वि वक्खारा भाणियव्वा —जाव— पुक्खरवरदीवड्ढपच्चत्थिमद्धे. ६

७६९ दस कप्पा इंदाहिट्ठिया पण्णत्ता. तं जहा-

सोहम्मे —जाव— सहस्सारे.

पाणए, अच्चुए.

एएसु णं दससु कप्पेसु दस इंदा पण्णत्ता. तं जहा-

सक्के —जाव— अच्चुए.

एएसु णं सण्हं इंदाणं दस परिजाणियविमाणा पण्णत्ता. तं जहा-

पालए —जाव— विमलवरे, सव्वओभद्दे. ३

७७० दस दसमिया णं भिक्खुपडिमा णं एगेण राइंदियसएणं अद्धछुट्ठेहि य भिक्खासएहिं अहासुत्ता-जाव-आराहिया भवेइ.

७७१ दसविहा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता तं जहा-

पढमसमयएगिंदिया-जाव-अपढमसमयपंचिंदिया.

दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता तं जहा-

पुढविकाइया-जाव-पंचिंदिया, अणिंदिया.

अहवा-दसविहा सव्वजीवा पण्णत्ता, तं जहा-

पढमसमय-नेरइया-जाव-अपढमसमयदेवा,

पढमसमयसिद्धा, अपढमसिमयसिद्धा. ३

७७२ वाससयाउस्स णं पुरिसस्स दस दसाओ पण्णत्ताओ. तं जहा-

गाहा—बाला किड्डा य मंदा य, बला पण्णा य हायणी ।
पवंचा पब्भारा य, मुंमुही सावणी तहा ॥१॥

७७३ दसविहा तणवणस्सइकाइया पण्णत्ता. तं जहा-
मूले —जाव— बीए.

७७४ सव्वओ वि णं विज्जाहरसेढीओ दस दस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता.

सव्वओ वि णं अभियोगसेढीओ दस दस जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता. २

७७५ गेविज्जगविमाणा णं दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता.

७७६ दसहिं ठाणेहिं सह तेयसा भासं कुज्जा. तं जहा-

केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा, अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे परिकुविए. तस्स तेयं निसिरेज्जा, से तं परियावेइ, से तं परियावेत्ता तामेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा माहणं वा, अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा से तं परितावेइ से तं तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा, से य अच्चासाइए समाणे परिकुविए, देवे य परिकुविए, दुहओ पड़िवण्णा तस्स तेयं निसिरेज्जा एयं परियावितिए तं परियावेत्ता तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाइए परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा तत्थ

फोड़ा संमुच्छंति ते फोड़ा भिज्जंति ते फोड़ा भिण्णा समाणा तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाएइ देवे परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा, तत्थ फोड़ा संमुच्छंति, ते फोड़ा भिज्जंति, ते फोड़ा भिण्णा समाणा तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाइए परिकुविए देवि वि य परिकुविए मा दुहओ पड़िवण्णा तस्स तेयं निसिरेज्जा तत्थ फोड़ा संमुच्छंति सेसं तहेव —जाव— भासं कुज्जा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएज्जा से य अच्चासाइए परिकुविए तस्स तेयं निसिरेज्जा, तत्थ फोड़ा संमुच्छंति. ते फोड़ा भिज्जंति, तत्थ पुला संमुच्छिंति, ते पुला भिज्जंति ते पुला भिण्णा समाणा तमेव सह तेयसा भासं कुज्जा, एते तिण्णि आलावगा भाणियव्वा,

केइ तहारूवं समणं वा, माहणं वा अच्चासाएमाणे तेयं निसिरेज्जा से य तत्थ नो कम्मइ, नो पकम्मइ अंचियं करेइ करेत्ता आयाहिणं पयाहिणं करेइ करेत्ता उड्ढं वेहासं उप्पायइ उप्पाइत्ता से णं तओ पड़िहए पड़िणियत्तइ पड़िनियत्तित्ता तमेव सरीरगं अणुदहमाणे अणुदहमाणे सह तेयसा भासं कुज्जा जहा वा गोसालस्स मंखलि पुत्तस्स तवे तेए,

७७७ दस अच्छेरगा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहाओ–उवसग्ग-गब्भहरणं इत्थीतित्थं,
अभाविया परिसा।
कण्हस्स अवरकंका,
उत्तरणं चंदसूराणं ॥१॥
हरिवंसकुलुप्पत्ती
चमरुप्पाओ य अट्ठसयसिद्धा,
अस्संजएसु पूआ
दस वि अणंतेण कालेण ॥२॥

७७८ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणे कण्डे दस जोअणसयाइं वाहल्लेणं पण्णत्ते.

इमीसे रयणप्पभाए पुढविए वयरे कंडे दस जोयणसयाइं वाहल्लेणं पण्णत्ते.

एवं वेरुलिए, लोहियक्खे, मसारगल्ले, हंसगब्भे, पुलए, सोगंधिए, जोइरसे, अंजणे, अंजणपुलए, रयए, जायरूवे, अंके, फलिहे, रिट्ठे.

जहा रयणे तहा सोलसविहा भाणियव्वा. १६

७७९ सव्वे वि णं दीवसमुद्दा दसजोयणसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता

सव्वे वि णं महा दहा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता.

सव्वे वि णं सलिलकुंडा दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता.

सिया-सीओया णं महाणईओ मुहमूले दस दस जोयणाइं उव्वेहेणं पण्णत्ताओ. ४

७८० कत्तियाणक्खत्ते सव्वबाहिराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारं चरइ,

अणुराहाणक्खत्ते सव्वब्भंतराओ मंडलाओ दसमे मंडले चारं चरइ. २

७८१ दस णक्खत्ता णाणस्स वुड्ढिकरा पण्णत्ता. तं जहा-

गाहा—मिगसिरमद्दा पुस्सो, तिण्णि य पुव्वाइं मूलमस्सेसा ।
हत्थो चित्ता य तहा, दस वुड्ढिकराइं नाणस्स ॥१॥

७८२ चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं दस जाइ-कुल-कोड़ी-जोणि-पमुह-सयसहस्सा पण्णत्ता.

उरपरिसप्प-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं दस जाइ-कुल-कोड़ि-जोणि-पमुह-सय-सहस्सा पण्णत्ता. २

७८३ जीवाणं दसठाणनिव्वत्तिया पोग्गला पावकम्मत्ताए चिणिंसु वा, चिणंति वा, चिणिस्संति वा तं जहा-

पढमसमयएगिंदियनिव्वत्तिए —जाव— फासिंदिय-निव्वत्तिए.

एवं चिण-उवचिण-बंध-उदीर-वेय तह निज्जरा चेव.

दसपएसिया खंधा अणंता पण्णत्ता.

दसपएसोगाढा पोग्गला अणंता पण्णत्ता.

दससमयठिइया पोग्गला अणंता पण्णत्ता.

दसगुणकालगा पोग्गला अणंता पण्णत्ता.

एवं वण्णेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं दसगुणलुक्खा पोग्गला अणंता पण्णत्ता. २९

सम्मत्तं

स्थानांग सूत्र

[अनुवाद]

अनुवादक

मुनि कन्हैयालाल "कमल"

स्थानांग सूत्र

[हिन्दी-अनुवाद]

तओ पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-

सुत्तधरे,
अत्थधरे,
तदुभयधरे । सू० १६९

पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सूत्रधर,
अर्थधर,
तदुभयधर ।

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तं जहा-

सुत्तधरे नामेगे नो अत्थधरे,
अत्थधरे नामेगे नो सुत्तधरे,
एगे सुत्तधरे वि अत्थधरे वि,
एगे नो सुत्तधरे नो अत्थधरे । सू० २२५

पुरुष चार प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

कोई पुरुष सूत्रधर होता है किन्तु अर्थधर नहीं होता,
कोई पुरुष अर्थधर होता है किन्तु सूत्रधर नहीं होता,
कोई पुरुष सूत्रधार भी होता है और अर्थधर भी होता है,
कोई पुरुष सूत्रधर भी नहीं होता और अर्थधर भी नहीं होता ।

णमो सिद्धाणं

तृतीयअंग

स्थानांग सूत्र

एक स्थान

१ हे आयुष्मन् शिष्य ! मैंने सुना है, उन भगवान् महावीर ने इस प्रकार कहा है।

२ आत्मा एक है।[1]

---

१ प्रत्येक वस्तु सामान्य-विशेषात्मक है। सामान्य की अपेक्षा आत्मा एक है। क्योंकि उसका उपयोगरूप लक्षण प्रत्येक आत्मा में पाया जाता है। विशेष की अपेक्षा आत्मा अनेक है। सामान्य विवक्षा से चैतन्यमय आत्मा एक है। इसी तरह सर्वत्र समझ लेना चाहिए। द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा से यहां विवक्षित पदार्थों का एकत्व जानना चाहिये।

३ दण्ड एक है।[1]

४ क्रिया एक है।[2]

५ लोक एक है। ६ अलोक एक है।

७ धर्मास्तिकाय एक है। ८ अधर्मास्तिकाय एक है।

९ वंध एक है।[3] १० मोक्ष एक है।[4]

११ पुण्य एक है।[5] १२ पाप एक है।[6]

१३ आश्रव एक है।[7] १४ संवर एक है।[8]

१५ वेदना एक है।[9] १६ निर्जरा एक है।[10]

१७ प्रत्येक शरीर नाम कर्म के उदय से होने वाले शरीर में जीव एक है।

---

१. आत्मा जिस क्रिया से दंडित हो अर्थात् ज्ञानादि गुण हीन हो वह 'दंड' है।

२. मन, वचन या काया का व्यापार 'क्रिया' है।

३. कषाय पूर्वक कर्म पुद्‌गलों को ग्रहण करना 'बंध' है।

४. आत्मा का कर्म पुद्‌गलों से सर्वथा मुक्त होना 'मोक्ष' है।

५. शुभ कर्म प्रकृतियाँ 'पुण्य' रूप हैं।

६. अशुभ कर्म प्रकृतियाँ 'पाप' रूप हैं।

७. कर्म बंध के समस्त हेतु 'आश्रव' है।

८. आश्रव का निरोध 'संवर' है।

९. आत्मा से कर्म पुद्‌गलों का हटाना 'निर्जरा' है।

१० अष्टकर्म वेदन की अपेक्षा से 'वेदना' एक हैं।

१८ जीवों की बाह्य पुद्गलों को ग्रहण किये विना की जाने वाली (भवधारणीय) विकुर्वणा एक है।[1]

१९ मन का व्यापार एक है। २० वचन का व्यापार एक है।

२१ काया का व्यापार एक है।

२२ उत्पाद एक है।[2] २३ विनाश एक है।

२४ मृतात्मा का शरीर एक है अथवा विशिष्ट उपपत्ति पद्धति अथवा विशिष्ट वेशभूषा एक है।[3]

२५ गति एक है। २६ आगति एक है।

२७ च्यवन-मरण[4] एक है। २८ उपपात[5] जन्म एक है।

२९ तर्क-विमर्श एक है। ३० संज्ञा एक है।[6]

३१ मनन-शक्ति एक है। ३२ विज्ञान एक है।

---

१. नारक और देवों का जीवन पर्यन्त रहनेवाला शरीर 'भवधारणीय' कहा जाता है। उत्पत्ति समय में इस शरीर से अनवगाहित आकाश प्रदेश में रहे हुए पुद्गल 'बाह्य कहे जाते हैं। इन वाह्य पुद्गलों का 'विकुर्वण' अर्थात् शरीर में उपयोग नहीं होता।

२. एक समय में एक पर्याय की अपेक्षा से एकत्व है।

३. 'विवच्चा' इस पाठान्तर के ये दो वैकल्पिक अर्थ हैं।

४. देवताओं का मरण 'च्यवन' कहा जाता है।

५. देवताओं का जन्म 'उपपात' कहा जाता है।

६. व्यंजनावग्रह के पश्चात् होनेवाला ज्ञान 'संज्ञा' है।

३३ वेदना एक है।[१] ३४ छेदन एक है।

३५ भेदन एक है।

३६ चरम शरीरों का मरण एक ही होता है।

३७ पूर्ण शुद्ध तत्वज्ञ पात्र-अतिशय ज्ञानादि गुण रत्नों का पात्र अथवा गुणप्रकर्ष को प्राप्त 'केवली या तीर्थंकर' एक हैं।

३८ स्वकृत कर्म फल भोगी होने से जीवों का दुख एकसा है। [१] सर्व भूत--जीव सामान्य विवक्षा से एक है। [१-२]

३९ जिसके सेवन से आत्मा को क्लेश प्राप्त होता है वह अधर्म प्रतिज्ञा एक है।

४० जिसके आचरण से आत्मा विशिष्ट ज्ञानादि पर्याय युक्त होता है वह धर्म प्रतिज्ञा एक है।

४१ देव[२], असुर[३] और मनुष्यों का एक समय में मनोयोग एक ही होता है। वचन योग और काय योग भी एक ही होता है। [३]

४२ देव, असुर और मनुष्यों के एक समय में एक ही उत्थान, कर्म, बल, वीर्य और पौरुष पराक्रम होता है।

४३ ज्ञान एक है। दर्शन एक है। चारित्र एक है। [३]

---

१. ज्वर आदि रोगों के वेदन की अपेक्षा से 'वेदना' एक है।

२. ज्योतिषी और वैमानिक देवों की 'देव' संज्ञा है।

३. भवनपति और व्यन्तर देवों की 'असुर' संज्ञा है।

४४ समय एक है।

४५ प्रदेश एक है।
परमाणु एक है। [२]

४६ सिद्धि एक है, सिद्ध एक है।
परिनिर्वाण एक है, परिनिर्वृत एक है। [४]

४७ शब्द एक है। रूप एक है।
गंध एक है। रस एक है।
स्पर्श एक है। [५]
शुभ शब्द एक है। अशुभ शब्द एक है। [२]
सुरूप एक है। कुरूप एक है। [२]
दीर्घ एक है। ह्रस्व एक है। [२]
वर्तुलाकार 'लड्डू के समान गोल' एक है।
त्रिकोण एक है।
चतुष्कोण एक है।
पृथुल-विस्तीर्ण एक है।
परिमंडल-चूड़ी के समान गोल एक है। [५]
काला एक है। नीला एक है।
लाल एक है। पीला एक है।
श्वेत एक है। [५]
सुगन्ध एक है। दुर्गन्ध एक है। [२]
तिक्त एक है। कटुक एक है।
कषाय एक है। अम्ल एक है।

मधुर एक है। [५]
कर्कश —यावत्— रूक्ष एक है। [८]

४८ प्राणातिपात (हिंसा) —यावत्— परिग्रह एक है।
क्रोध —यावत्— लोभ एक है।
राग एक है — यावत्—
परपरिवाद–निन्दा एक है।
रति-अरति एक है।
मायामृषा-कपटयुक्त झूठ एक है।
मिथ्यादर्शन शल्य एक है। [१८]

४९ प्राणातिपात-विरमण एक है — यावत् — परिग्रह-विरमण एक है। [५]
क्रोध-त्याग एक है —यावत्— मिथ्यादर्शन-शल्य-त्याग एक है। [१३] [१८]

५० अवसर्पिणी एक है।
सुषमसुषमा एक है — यावत्— दुषमदुषमा एक है। [७]
उत्सर्पिणी एक है। [७]
दुषमदुषमा एक है —यावत् — सुषमसुषमा एक है। [१४]

५१ (१) नारकीय के जीवों की वर्गणा[1] एक है।
असुरकुमारों की वर्गणा एक है, —यावत्—
वैमानिक देवों की वर्गणा एक है। [२४]

---

१ समूह।

(२) भव्य जीवों की वर्गणा एक है।[1]
अभव्य जीवों की वर्गणा एक है।[2]
भव्य नरक जीवों की वर्गणा एक है।
अभव्य नरक जीवों की वर्गणा एक है।
इस प्रकार —यावत्— भव्य वैमानिक देवों की वर्गणा एक है।
अभव्य वैमानिक देवों की वर्गणा एक है। [५०]

(३) सम्यग्दृष्टियों की वर्गणा एक है।[3]
मिथ्यादृष्टियों की वर्गणा एक है।
मिश्रदृष्टि वालों की वर्गणा एक है।
सम्यग्दृष्टि वाले नरक जीवों की वर्गणा एक है।
मिथ्यादृष्टि वाले नरक जीवों की वर्गणा एक है।
मिश्रदृष्टि वाले नरक जीवों की वर्गणा एक है।
इसी प्रकार —यावत्— स्तनित कुमारों की वर्गणा एक है।
मिथ्यादृष्टि पृथ्वीकाय के जीवों की वर्गणा एक है।
—यावत्— वनस्पतिकाय के जीवों की वर्गणा एक है।

---

१. जो जीव मुक्त होने योग्य है वह "भव्य" है।
२. जो जीव मुक्त होने योग्य नहीं है। "अभव्य" है।
३. क्षायिक क्षायोपशमिक और औपशमिक सम्यग्दृष्टि भी इसी के अन्तर्गत है।

सम्यग्दृष्टि द्वीन्द्रिय जीवों की वर्गणा एक है।
मिथ्यादृष्टि द्वीन्द्रिय जीवों की वर्गणा एक है।
इसी प्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवों की वर्गणा एक है।

शेष नरक जीवों के समान —यावत्— मिश्रदृष्टि वाले वैमानिकों की वर्गणा एक है। [६२]

(४) कृष्णपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक है।[1]
शुक्लपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक है।[2]
कृष्णपाक्षिक नरक जीवों की वर्गणा एक है।
शुक्ल-पाक्षिक नरक-जीवों का वर्गणा एक है।
इसी प्रकार चौबीस दण्डक में समझ लेना चाहिए। [५०]

(५) कृष्ण लेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक है।
नील लेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक है।
इसी प्रकार —यावत्— शुक्ल लेश्या वाले जीवों की वर्गणा एक है।

कृष्णलेश्या वाले नैरयिकों की वर्गणा —यावत्— कापोतलेश्या वाले नैरयिकों की वर्गणा एक है।

---

१. अर्धपुद्गल परावर्तन से अधिक भवभ्रमण करने वाला 'कृष्ण पाक्षिक' कहा जाता है।

२. अर्धपुद्गल परावर्तन से अल्प भवभ्रमण करनेवाला 'शुक्ल-पाक्षिक' कहा जाता है।

इस प्रकार जिसकी जितनी लेश्याएं हैं उसकी उतनी वर्गणा समझ लेनी चाहिएं।

भवनपति, वानव्यन्तर, पृथ्विकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय में चार लेश्याएं हैं।

तेजस्काय, वायुकाय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय में तीन लेश्याएं हैं।

तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्यों में छः लेश्याएं हैं।
ज्योतिष्क देवों में एक तेजो लेश्या है।

वैमानिक देवों में ऊपर की तीन लेश्याएं हैं।
इनकी इतनी ही वर्गणा जाननी चाहिएं। [९६]

(६) कृष्णलेश्या वाले भव्य जीवों की वर्गणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले अभव्य जीवों की वर्गणा एक है।
इसी प्रकार छहों लेश्याओं में दो दो पद कहने चाहिए।
कृष्णलेश्या वाले भव्य नैरयिकों की वर्गणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले अभव्य नैरयिकों की वर्गणा एक है।
इस प्रकार विमानवासी देव पर्यंत जिसकी जितनी लेश्याएं हैं उसके उतने ही पद समझ लेने चाहिए। [१९२]

(७) कृष्णलेश्या वाले सम्यक्दृष्टि जीवों की वर्गणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले मिथ्यादृष्टि जीवों की वर्गणा एक है।
कृष्णलेश्या वाले मिश्रदृष्टि जीवों की वर्गणा एक है।

इस प्रकार छः लेश्याओं में जिसकी जितनी दृष्टियां हैं उसके उतने पद जानने चाहिए। [२२०]

(८) कृष्णलेश्या वाले कृष्णपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक है। कृष्णलेश्या वाले शुक्लपाक्षिक जीवों की वर्गणा एक है। इस प्रकार विमानवासी देव पर्यंत जिसकी जितनी लेश्याएं हों उसके उतने पद समझ लेने चाहिए। [१६२]

ये आठ चौवीस दण्डक जानने चाहिए।

तीर्थसिद्ध जीवों की वर्गणा एक है।

अतीर्थसिद्ध जीवों की वर्गणा एक है —यावत्—

एकसिद्ध जीवों की वर्गणा एक है।

अनेकसिद्ध जीवों की वर्गणा एक है। [१५]

प्रथम समय सिद्ध जीवों की वर्गणा एक है —यावत्—

अनन्त समय सिद्ध जीवों की वर्गणा एक है। [१३]

परमाणु पुद्गलों की वर्गणा एक है।

इस प्रकार अनन्त प्रदेशी स्कन्धों की वर्गणा —यावत्— एक है।

एक प्रदेशावगाढ पुद्गलों की वर्गणा एक है —यावत्—

असंख्य प्रदेशावगाढ पुद्गलों की वर्गणा एक है। [१२]

एक समय की स्थिति वाले पुद्गलों की वर्गणा एक है। —यावत्— असंख्य समय की स्थिति वाले पुद्गलोंकी वर्गणा एक है। [१२]

एक गुण काले पुद्गलों की वर्गणा एक है —यावत्—
असंख्य गुण काले पुद्गलों की वर्गणा एक है ।
अनन्त गुण काले पुद्गलों की वर्गणा एक है । [१३]
इस प्रकार वर्ण, गंध, रस और स्पर्श का कथन करना चाहिए
—यावत्—
अनन्त गुण रूक्ष पुद्गलों की वर्गणा एक है । [२६०]
जघन्य प्रदेशी स्कन्धों की वर्गणा एक है ।
उत्कृष्ट प्रदेशी स्कन्धों की वर्गणा एक है ।
न जघन्य न उत्कृष्ट प्रदेशी स्कन्धों की वर्गणा एक है । [३]
इसी प्रकार जघन्यावगाढ, उत्कृष्टावगाढ और अज-
घन्योत्कृष्टावगाढ । [३]

जघन्यस्थिति वाले, उत्कृष्टस्थिति वाले, अजघन्योत्कृष्ट स्थिति
वाले । [३]
जघन्यगुण काले, उत्कृष्टगुण काले, अजघन्योत्कृष्टगुण
काले जानें ।
इसी प्रकार वर्ण. गंध, रस, स्पर्श वाले पुद्गलों की वर्गणा
एक है —यावत्—
अजघन्योत्कृष्ट गुण रूक्ष पुद्गलों की वर्गणा एक है । [६०]
[१२८०]

५२ सब द्वीप समुद्रों के मध्य में रहा हुआ —यावत्—
जम्बूद्वीप एक है ।[1]

५३ इस अवसर्पिणी काल में चौवीस तीर्थंकरों में से अन्तिम तीर्थंकर श्रमण भगवान् महावीर अकेले सिद्ध हुए, बुद्ध हुए, मुक्त हुए, निर्वाण को प्राप्त हुए एवं सब दुखों से रहित हुए।

५४ अनुत्तरोपपातिक देवों की ऊंचाई एक हाथ की है।

५५ आर्द्रा नक्षत्र का एक तारा कहा गया है।
चित्रा नक्षत्र का एक तारा कहा गया है।
स्वाति नक्षत्र का एक तारा कहा गया है। [३]

५६ एक प्रदेश में रहे हुए पुद्गल अनन्त कहे गए हैं।
इसी प्रकार एक समय की स्थिति वाले—
एक गुण काले पुद्गल अनन्त कहे गए हैं —यावत्—
एक गुण रूक्ष पुद्गल अनन्त कहे गए हैं। [२१]

---

१ तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्तावीस योजन तीन कोस एक सौ अट्ठावीस धनुष, साढ़े तेरह अंगुल और कुछ अधिक परिधि वाला जम्बूद्वीप एक है।

दो स्थान

प्रथम उद्देशक

५७ लोक में जो कुछ है वह सब दो प्रकार का है,[1] यथा-
जीव और अजीव।

जीव का द्वैविध्य इस प्रकार है :

त्रस और स्थावर,
सयोनिक और अयोनिक,
सायुष्य और निरायुष्य,
सेन्द्रिय और अनेन्द्रिय,
सवेदक और अवेदक,
सरूपी और अरूपी,
सपुद्गल और अपुद्गल,
संसार-समापन्नक 'संसारी'
असंसार-समापन्नक 'सिद्ध'
शाश्वत और अशाश्वत। [१०]

५८ **अजीव का द्वैविध्य इस प्रकार है :**

आकाशास्तिकाय और नो आकाशास्तिकाय[2]
धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय। [२]

---

१. स्वपक्ष और प्रतिपक्ष रूप से।

२. धर्मास्तिकाय आदि।

अन्य तत्वों का स्वपक्ष और प्रतिपक्ष इस प्रकार है :

५९ बंध और मोक्ष,
पुण्य और पाप,
आस्रव और संवर,
वेदना और निर्जरा। [४]

६० क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
जीव क्रिया और अजीव क्रिया[1]।

जीव क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-
सम्यक्त्व क्रिया और मिथ्यात्व क्रिया।

अजीव क्रिया दो प्रकार की कही गई है,यथा-
ऐर्यापथिकी[2] और साम्परायिकी[3]।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

---

१. अजीव पुद्गलों का कर्मरूप में परिणमन ।

[क] इस क्रिया का कर्ता यद्यपि जीव होता है किन्तु इसमें अजीव पुद्गलों का कर्मरूप में परिणमन होता है इसलिये यह अजीवक्रिया कही जाती है।

[ख] उपशान्तमोह आदि तीन गुणस्थानवर्ती जीव केवल योग [मन, वचन, काय] द्वारा पुद्गलों को साता वेदनीय के रूप में परिणत करता है वह ऐर्यापथिकी क्रिया है।

४. संपराय अर्थात् कषाय तज्जन्य व्यापार साम्परायिकी क्रिया है।

कायिकी और आधिकरणिकी[1]।

कायिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

अनुपरतकाय क्रिया और दुष्प्रयुक्तकाय क्रिया।

आधिकरणिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

संयोजनाधिकरणिकी और निर्वर्तनाधिकरणिकी।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

प्राद्वेषिकी और पारितापनिकी।

प्राद्वेषिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव-प्राद्वेषिकी और अजीव-प्राद्वेषिकी।

पारितापनिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

स्वहस्तपारितापनिकी और परहस्तपारितापनिकी।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

प्राणातिपात क्रिया और अप्रत्याख्यान क्रिया।

प्राणातिपात क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

स्वहस्त प्राणातिपात क्रिया,
परहस्त प्राणातिपात क्रिया।

अप्रत्याख्यान क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव अप्रत्याख्यान क्रिया,
अजीव अप्रत्याख्यान क्रिया।

---

१. (क) जिस क्रिया द्वारा आत्मा अधोगति में जावे वह 'अधिकरणिकी क्रिया' कही जाती है।

(ख) शस्त्र को अधिकरण कहते हैं, उसके द्वारा होने वाली क्रिया भी अधिकरणिकी कही जाती है।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

आरम्भिकी[१] और पारिग्रहिकी ।

आरम्भिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव आरम्भिकी और अजीव आरम्भिकी ।

इसी तरह पारिग्रहिकी क्रिया भी दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव-पारिग्रहिकी और अजीव-पारिग्रहिकी ।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

माया-प्रत्ययिकी और मिथ्यादर्शन-प्रत्ययिकी ।

माया-प्रत्ययिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

आत्म-भाव-वंकनता[२] और पर-भाव-वंकनता[३] ।

मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

ऊनातिरिक्त मिथ्यादर्शन, प्रत्ययिकी[४]

तद्व्यतिरिक्त मिथ्यादर्शन प्रत्ययिकी[५] ।

---

१. जीव हिंसादि सावद्य अनुष्ठान से होने वाली ।

२. श्रेष्ठ न होते हुए अपने आपको श्रेष्ठ कहना ।

३. मिथ्यालेख आदि से दूसरे को ठगना ।

४. [क] आत्मा को अंगुष्ठ प्रमाण कहना ऊन मिथ्या दर्शन है ।

[ख] आत्मा को सर्वव्यापक कहना अतिरिक्त मिथ्या दर्शन है ।

५. आत्मा को न मानने से लगने वाली क्रिया ।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

दृष्टिजा और पृष्टिजा अथवा स्पृष्टिजा ।

दृष्टिजा क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव-दृष्टिजा और अजीव-दृष्टिजा ।

इसी प्रकार पृष्टिजा भी जाननी चाहिए ।

दो क्रियाएं कही गई हैं, यथा-

प्रातीत्यिकी[1] और सामन्तोपनिपातिकी[2] ।

प्रातीत्यिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव-प्रातीत्यिकी[3] और अजीव-प्रातीत्यिकी[4] ।

इसी प्रकार सामन्तोपनिपातिकी भी जाननी चाहिए ।

दो क्रियाएं कही गई हैं, यथा-

स्वहस्तिकी[5] और नैसृष्टिकी[6] ।

स्वहस्तिकी क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

जीव-स्वहस्तिकी और अजीव-स्वहस्तिकी ।

नैसृष्टिकी क्रिया भी इसी प्रकार समझनी चाहिए ।

---

१. बाह्य वस्तु के निमित्त से होने वाली क्रिया ।

२. अनेक लोगों द्वारा की हुई प्रशंसा सुनने से होने वाली ।

३. अश्व आदि जीव की प्रशंसा सुनने से होने वाली ।

४. रथ आदि अजीव पदार्थों की प्रशंसा सुनने से होने वाली ।

५. अपने हाथ से लगने वाली क्रिया ।

६. किसी पदार्थ के निक्षेपण से होने वाली ।

क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

आज्ञापनिकी और वैदारिनी।

नैसृष्टिकी क्रिया की तरह इनके भी दो दो भेद जानने चाहिएं।

दो क्रियाएं कही गई हैं, यथा-

अनाभोगप्रत्यया और अनवकांक्षप्रत्यया[1]।

अनाभोगप्रत्यया क्रिया दो प्रकार की कही गई हैं, यथा-

अनायुक्त आदानता[2] और अनायुक्त प्रमार्जनता[3]।

अनवकांक्षप्रत्यया क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

आत्म-शरीर-अनवकांक्षा प्रत्यया[4]।

पर-शरीर-अनवकांक्षा प्रत्यया[5]।

दो क्रियाएं कही गई हैं, यथा-

राग-प्रत्यया और द्वेष-प्रत्यया।

राग-प्रत्यया क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

माया-प्रत्यया और लोभ-प्रत्यया।

द्वेष-प्रत्यया क्रिया दो प्रकार की कही गई है, यथा-

क्रोध-प्रत्यया और मान-प्रत्यया। [३६]

---

१ अपने और दूसरे के शरीर को क्षति पहुंचाने वाले कर्म करने से लगने वाली क्रिया।

२. स्वशरीर के प्रति बेपरवाह होकर वर्तन करना।

३. उपयोग शून्य होकर वस्तु के लेने या रखने से लगने वाली क्रिया।

४. उपयोग शून्य प्रमार्जन करने से लगने वाली क्रिया।

५. पर शरीर के प्रति बेपरवाह होकर वर्तन करना।

६१ गर्हा—पाप की निन्दा दो प्रकार की कही गई है, यथा-

कुछ प्राणी केवल मन से ही पाप की निन्दा करते हैं,

कुछ केवल वचन से ही पाप की निन्दा करते हैं।

अथवा–गर्हा के दो भेद कहे गये हैं, यथा-

कोई प्राणी दीर्घ काल पर्यन्त 'आजन्म' गर्हा करता है,

कोई प्राणी थोड़े काल पर्यन्त गर्हा करता है ।[२]

६२ प्रत्याख्यान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

कोई कोई प्राणी केवल मन से प्रत्याख्यान करते हैं,

कोई कोई प्राणी केवल वचन से प्रत्याख्यान करते हैं ।

अथवा–प्रत्याख्यान के दो भेद कहे गए हैं, यथा-

कोई दीर्घकाल पर्यन्त प्रत्याख्यान करते हैं.

कोई अल्पकालीन प्रत्याख्यान करते हैं । [२]

६३ दो गुणों से युक्त अनगार अनादि, अनन्त, दीर्घकालीन चार गति रूप भवाटवी को पार कर लेता है, यथा-

विद्या[1] और चारित्र[2] से ।

६४ दो स्थानों को जाने बिना और त्यागे बिना आत्मा को केवली-प्ररूपित धर्म सुनने के लिए नहीं मिलता, यथा-

आरम्भ और परिग्रह ।

दो स्थान जाने विना और त्यागे बिना आत्मा शुद्ध सम्यक्त्व नहीं पाता है, यथा-

---

१. यहां 'विद्या' ज्ञान का पर्यायवाची है ।

२. यहां 'चारित्र' क्रिया का पर्यायवाची है ।

आरम्भ और परिग्रह ।

दो स्थान जाने विना और त्यागे विना आत्मा गृहवास का त्याग कर और मुण्डित होकर शुद्ध प्रव्रज्या अंगीकार नहीं कर सकता है, यथा-

आरम्भ और परिग्रह ।

इसी प्रकार —

शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकता है,
शुद्ध संयम से अपने आपको संयत नहीं कर सकता है,
शुद्ध संवर से संवृत नहीं हो सकता है,
सम्पूर्ण मतिज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता है,
सम्पूर्ण श्रुतज्ञान,
अवधिज्ञान,
मनः पर्यायज्ञान और
केवल ज्ञान-
नहीं प्राप्त कर सकता है । [११]

६५ दो स्थानों को जान कर और त्याग कर आत्मा केवलि प्ररूपित धर्म सुन सकता है—यावत्—केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है, यथा-

आरम्भ और परिग्रह । [११]

६६ दो स्थानों से आत्मा केवलि प्ररूपित धर्म सुन सकता है, —यावत्— केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है । यथा-
श्रद्धापूर्वक 'धर्मकी उपादेयता' सुनकर और समझकर [११]

६७ दो प्रकार का समय कहा गया है, यथा-

अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी ।

६८ उन्माद दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

यक्ष के प्रवेश से होने वाला,

मोहनीय कर्म के उदय से होने वाला ।

इसमें जो यक्षावेश उन्माद है उसका सरलता से वेदन हो सकता है और उसे सरलता से दूर किया जा सकता है। तथा जो मोहनीय के उदय से होने वाला है उसका कठिनाई से वेदन होता है और उसे कठिनाई से ही दूर किया जा सकता है ।

६९ दण्ड दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अर्थ-दण्ड[1] और अनर्थ-दण्ड[2] ।

नैरयिक जीवों के दो दण्ड कहे गये हैं, यथा-

अर्थ-दण्ड और अनर्थ-दण्ड ।

इसी तरह विमानवासी देव पर्यन्त चौबीस दण्डक समझ लेना चाहिये । [२]

७० दर्शन[3] दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

---

१. प्रयोजन से की जाने वाली हिंसा अर्थदण्ड है ।

२. बिना प्रयोजन की जाने वाली हिंसा अनर्थदण्ड है ।

३. दर्शन का अर्थ यहाँ श्रद्धा है ।

सम्यग्दर्शन[१] और मिथ्यादर्शन[२]।

सम्यग्दर्शन के दो भेद कहे गये हैं, यथा-
निसर्ग सम्यग्दर्शन[3] और अभिगम सम्यग्दर्शन।[४]

निसर्ग सम्यग्दर्शन के दो भेद गये कहे हैं, यथा-
प्रतिपाति[५] और अप्रतिपाति[६]।

अभिगम सम्यग्दर्शन के दो भेद कहे गये हैं, यथा-
प्रतिपाति और अप्रतिपाति। [४]

मिथ्यादर्शन दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
अभिग्रहिक मिथ्यादर्शन और अनभिग्रहिक मिथ्या दर्शन।

अभिग्रहिक मिथ्यादर्शन दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
सपर्यवसित (सान्त) और अपर्यवसित (अनन्त),
इसी प्रकार अनभिग्रहिक मिथ्यादर्शन के भी दो भेद जानने चाहिएं। [३][७]

१, तत्त्वार्थ की सम्यक् श्रद्धा "सम्यग्दर्शन" है।
२. तत्त्वार्थ की विपरीत श्रद्धा "मिथ्यादर्शन" है।
३. बिना किसी उपदेश के होने वाली सम्यक् श्रद्धा 'निसर्ग सम्यग्दर्शन' है।
४. किसी के उपदेश, से होने वाली सम्यक् श्रद्धा 'अभिगम सम्यग्दर्शन' है।
५. नष्ट होने वाला।
६. नष्ट न होने वाला।

७१ ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रत्यक्ष[1] और परोक्ष[2]।

प्रत्यक्ष ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

केवलज्ञान और नो केवलज्ञान।

केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

भवस्थ-केवलज्ञान और सिद्ध-केवलज्ञान।

भवस्थ-केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान,

अयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान।

सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-सयोगी भवस्थ-केवलज्ञान,

अप्रथम-समयस-योगी-भवस्थ-केवलज्ञान।

अथवा -चरम-समय-सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान,

अचरम-समय-सयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान।

इसी प्रकार-अयोगी-भवस्थ-केवलज्ञान के भी दो भेद जानने चाहिएं।

सिद्ध-केवलज्ञान के दो भेद कहे गये हैं, यथा-

अनन्तर-सिद्ध-केवलज्ञान और परम्पर-सिद्ध-केवलज्ञान।

अनन्तर सिद्ध केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

---

१. आत्मा को इन्द्रियां और मन की सहायता के बिना होने वाला ज्ञान 'प्रत्यक्ष' ज्ञान है।

२. इन्द्रियां और मन की सहायता से होने वाला ज्ञान 'परोक्ष' ज्ञान है।

एकानन्तर सिद्ध केवलज्ञान,

अनेकानन्तर सिद्ध केवलज्ञान ।

परम्परसिद्ध केवल ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

एक परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान,

अनेक परम्पर सिद्ध केवल ज्ञान ।

नो केवलज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अवधि ज्ञान और मन: पर्याय ज्ञान ।

अवधि ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

भवप्रत्ययिक और क्षायोपशमिक ।

दो का अवधिज्ञान भवप्रत्ययिक कहा गया है, यथा-

देवताओं का और नैरयिकों का ।

दो का अवधिज्ञान क्षायोपशमिक कहा गया है, यथा-

मनुष्यों का और तिर्यंच पंचेन्द्रियों का ।

मन:पर्यायज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

ऋजुमति और विपुलमति ।

परोक्ष ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

आभिनिबोधिक ज्ञान और श्रुतज्ञान ।

आभिनिबोधिक ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

श्रुतनिश्रित और अश्रुतनिश्रित ।

श्रुतनिश्रित दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अर्थावग्रह और व्यंजनावग्रह ।

अश्रुतनिश्रित के भी पूर्वोक्त दो भेद समझने चाहिए ।

श्रुतज्ञान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अंग-प्रविष्ट और अंग-वाह्य ।

अंग-वाह्य के दो भेद कहे गये हैं, यथा-

आवश्यक और आवश्यक-व्यतिरिक्त ।

आवश्यक-व्यतिरिक्त दो प्रकार का कहा गया हैं, यथा-

कालिक और उत्कालिक ।[२२]

७२ धर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

श्रुत-धर्म और चारित्र-धर्म ।

श्रुत-धर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सूत्र-श्रुत-धर्म और अर्थ-श्रुत-धर्म ।

चारित्र धर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अगार-चारित्र-धर्म और अनगार-चारित्र-धर्म । [३]

संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सराग-संयम और वीतराग-संयम ।

सराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-संयम,

बादर-सम्परायसराग-संयम ।

सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-सूक्ष्मसम्पराय-सराग-संयम,

अप्रथम-समय-सूक्ष्मसम्पराय-सराग-संयम ।

अथवा चरम-समय-सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-संयम,

अचरम समयसूक्ष्म -सम्पराय -सराग -संयम ।

अथवा सूक्ष्म-सम्पराय-सराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

'संक्लिश्यमान' उपशम-श्रेणी से गिरते हुए जीव का,
'विशुध्यमान' उपशम-श्रेणी पर चढ़ते हुए जीव का।

बादर-सम्पराय-सराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-बादर-सम्पराय-सराग-संयम,
अप्रथम-समय-बादर-सम्पराय-संयम।

अथवा—चरम-समय-बादर-सम्पराय-सराग-संयम,
अचरम-समय-बादर-सम्पराय-सराग-संयम।

अथवा बादर-सम्पराय-सराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रतिपाती और अप्रतिपाती।

वीतराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

उपशान्त-कषाय-वीतराग-संयम,
क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम।

उपशान्तकषाय वीतराग संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-उपशान्त-कषाय-वीतराग-संयम
अप्रथम-समय-उपशान्त-कषाय-वीतराग-संयम।

अथवा चरम-समय-उपशान्त-कषाय-वीतराग-संयम,
अचरम-समय-उपशान्त-कषाय-वीतराग-संयम।

क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम,

केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम ।

छद्मस्थ क्षीण कषाय वीतराग संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

स्वयं-बुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम,

बुद्ध-वोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम ।

स्वयंबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-स्वयंबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम,

अप्रथम-समय-स्वयंबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम ।

अथवा चरम-समय-स्वयंबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम और अचरम-समय-स्वयंबुद्ध-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय वीतराग-संयम ।

बुद्ध-बोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-बुद्ध-बोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय-वीतराग संयम और अप्रथम-समय-बुद्ध-बोधित-छद्मस्थ-क्षीण-कषाय वीतराग-संयम ।

अथवा चरम-समय और अचरम-समय-बुद्ध-वोधित-केवली

क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है।
यथा-

सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम,
अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम।

सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम,
अप्रथम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम।

अथवा

चरम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतरागसंयम,
अचरम-समय-सयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम।

अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रथम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम,
अप्रथम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम।

अथवा

चरम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम,
अचरम-समय-अयोगी-केवली-क्षीण-कषाय-वीतराग-संयम। [२१]

७३ पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
सूक्ष्म और वादर।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पति कायिक जीव कहे गये हैं, यथा-
सूक्ष्म और वादर।[५]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पतिकायिक जीव कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त।[५]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
परिणत और अपरिणत।

इस प्रकार —यावत्— दो प्रकार के वनस्पति कायिक जीव कहे गये हैं, यथा-
परिणत और अपरिणत।[५]

द्रव्य दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
परिणत और अपरिणत।[१]

पृथ्वीकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
गतिसमापन्नक,
अगतिसमापन्नक (स्थित)।

इस प्रकार —यावत्— वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

गति-समापन्नक और अगति-समापन्नक ।[५]

द्रव्य दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

गति-समापन्नक और अगति-समापन्नक ।[१]

पृथ्वीकायिक[1] जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अनन्तरावगाढ[2] और परम्परावगाढ[3] ।

इस प्रकार —यावत्— द्रव्य दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अनन्तरावगाढ और परम्परावगाढ । [६-२८]

७४ काल दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी । [१]

आकाश दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

लोकाकाश और अलोकाकाश । [१-२]

७५ नैरयिक जीवों के दो शरीर कहे गये हैं, यथा-

आभ्यन्तर और बाह्य ।

कार्मण[4] आभ्यन्तर है और वैक्रिय बाह्य शरीर है ।

देवताओं के शरीर भी इसी तरह कहने चाहिएं ।

---

१. पृथ्वीकायिक आयुष्य के उदय से पृथ्वीकायिक कहे जाने वाले जीव विग्रह गति से उत्पत्ति स्थान में जाते हुए ।

२. वर्तमान समय में किसी एक आकाश प्रदेश में अवगाढ ।

३. जिन्हें स्थित हुए दो तीन आदि समय हो गये हैं वे ।

४. कार्मण और तेजस आभ्यन्तर शरीर हैं किन्तु दोनों सर्वदा एक साथ रहते हैं इसलिए यहा एक कार्मण ही कहा गया है ।

पृथ्वीकायिक जीवों के दो शरीर कहे गये हैं, यथा-

आभ्यन्तर और वाह्य।

कार्मण आभ्यन्तर है और औदारिक वाह्य है।

वनस्पतिकायिक जीव पर्यन्त ऐसा समझना चाहिए[1]।

द्वीन्द्रिय जीवों के दो शरीर कहे गये हैं, यथा-

आभ्यन्तर और वाह्य।

कार्मण आभ्यन्तर है और हड्डी, मांस, रक्त से वना हुआ औदारिक-शरीर वाह्य है।

चतुरिन्द्रिय जीव पर्यन्त ऐसा ही समझना चाहिए।

पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनि के जीवों के दो शरीर हैं, यथा-

आभ्यन्तर और वाह्य।

कार्मण आभ्यन्तरहै और हड्डी, मांस, रक्त, स्नायु और शिराओं से वना हुआ औदारिक शरीर वाह्य है।

इसी तरह मनुष्यों के भी दो शरीर समझने चाहिएं।[१]

विग्रहगति-प्राप्त नैरयिकों के दो शरीर कहे गये हैं, यथा-

तैजस और कार्मण।

इस प्रकार निरन्तर वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिए।[१]

नैरयिक जीवों के शरीर की उत्पत्ति दो स्थानों से होती है।

---

१. यद्यपि वायुकाय के जीवों को वैक्रिय शरीर भी होता है परन्तु वह प्रायिक होने से यहाँ विवक्षित नहीं है।

यथा-

राग से **'रागजन्य कर्म से'** और द्वेष से **'द्वेषजन्य कर्म से'** । [१]

नैरयिक जीवों के शरीर दो कारणों से पूर्ण अवयव वाले होते हैं, यथा-

राग से **'रागजन्य कर्म से'** पूर्ण अवयव वाले,

द्वेष **'द्वेष जन्य कर्म से'** से पूर्ण अवयव वाले ।

इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिए । [१]

दो काय—**'जीव समुदाय'** कहे गये हैं, यथा-

त्रसकाय और स्थावरकाय ।

त्रसकाय दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

भवसिद्धिक और अभवसिद्धिक ।

इसी प्रकार स्थावरकाय भी समझना चाहिये । [३] [७]

७६ दो दिशाओं के अभिमुख होकर निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को दीक्षा देना कल्पता है । यथा-

पूर्व और उत्तर ।

इसी प्रकार—

प्रवजित करना, सूत्रार्थ सिखाना, महाव्रतों का आरोपण करना, सहभोजन करना, सहनिवास करना, स्वाध्याय करने के लिए कहना,

अभ्यस्तशास्त्र को स्थिर करने के लिए कहना,
अभ्यस्तशास्त्र अन्य को पढ़ाने के लिए कहना,
आलोचना करना, प्रतिक्रमण करना,

अतिचारों की निन्दा करना,

गुरु समक्ष अतिचारों की गर्हा करना,

लगे हुए दोष का छेदन करना, दोष की शुद्धि करना,
पुनः दोष न करने के लिए तत्पर होना,
यथायोग्य प्रायश्चित्त और
तपग्रहण करना कल्पता है।

दो दिशाओं के अभिमुख होकर निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को मारणान्तिक संलेखना-तप विशेष से कर्म-शरीरको क्षीण करना, भोजन-पानी का त्याग कर पादपोपगमन संथारा[1] स्वीकार कर मृत्यु की कामना नहीं करते हुए स्थित रहना कल्पता है, यथा-

पूर्व और उत्तर।

द्वितीय उद्देशक

७७ जो देव ऊर्ध्वलोक में उत्पन्न हुए हैं—वे चाहे कल्पोपन्न[1]

---

१. वृक्ष की तरह निश्चेष्ट होकर अनशन करना।

(बाहर देव लोक में उत्पन्न) हों चाहे विमानोपपन्न (ग्रैवेयक और अनुत्तर विमानों में उत्पन्न) हों और जो ज्योतिष्चक्र में स्थित हों वे चाहे गतिरहित हों या सतत गमनशील हों— वे जो सदा —सतत— पापकर्म ज्ञानवरणादि का बंध करते हैं उसका फल कतिपय देव तो उसी भव में अनुभव कर लेते हैं और कतिपय देव अन्य भव में वेदन करते हैं। नैरयिक जीव जो सदा —सतत— पापकर्म का बंध करते हैं उसका फल कतिपय नैरयिक तो उसी भव में अनुभव कर लेते हैं और कितनेक अन्य भव में भी वेदना वेदते हैं। पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीव पर्यन्त ऐसा ही समझना चाहिए। मनुष्यों द्वारा जो सदा —सतत— पापकर्म का बंध किया जाता है उसका फल कतिपय मनुष्य तो इसी मनुष्य भव में अनुभव कर लेते हैं और कतिपय अन्य भव में अनुभव करते हैं। मनुष्य को छोड़कर शेष अभिलाप समान समझने चाहिएं।

७८ नैरयिक जीवों की दो गति और दो आगति कही गई हैं, यथा-

नैरयिक जीवों के बीच उत्पन्न होता हुआ या तो मनुष्यों में से या पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवों में से उत्पन्न होता है।

वही नैरयिक जीव नैरयिकत्व को छोड़ता हुआ मनुष्य अथवा पंचेन्द्रिय तिर्यंच के रूप में उत्पन्न होता है।

इसी तरह असुरकुमार असुरकुमारत्व को छोड़ता हुआ मनुष्य अथवा तिर्यंच के रूप में उत्पन्न होता है।

इसी तरह सब देवों के लिए समझना चाहिए।

पृथ्वीकाय के जीव दो गति और दो आगति वाले कहे गये हैं, यथा-

पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकाय में उत्पन्न होता हुआ पृथ्वीकाय में या नो-पृथ्वीकाय में उत्पन्न होता है। वह पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिकत्व को छोड़ता हुआ पृथ्वीकाय में अथवा नो-पृथ्वीकाय में उत्पन्न होता है।

इसी प्रकार मनुष्य-पर्यन्त समझना चाहिए। [२]

७९ नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भवसिद्धिक[1] और अभवसिद्धिक[2]।

इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिए।

नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अनन्तरोपपन्नक[3] परम्परोपपन्नक[4]।

इसी तरह वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिए।

नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

गतिसमापन्नक[5] और अगतिसमापन्नक[6]।

इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिए।

---

१. भव्य।

२. अभव्य।

३. अन्तर रहित एक साथ उत्पन्न होने वाले।

४. आगे पीछे उत्पन्न होने वाले।

५. नरक में जाते हुए।

६. नरक में स्थित।

नैरयिक जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
प्रथमसमयोत्पन्न और अप्रथमसमयोत्पन्न ।
इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिए ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
आहारक और अनाहारक ।
इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त समझ लेना चाहिए ।

नेरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
उच्छ्वासक[1] और नोउच्छ्वासक ।[2]
यों वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
सेन्द्रिय[3] और अनीन्द्रिय[4] ।
यों वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
पर्याप्त और अपर्याप्त ।
यों वैमानिक पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
संज्ञी और असंज्ञी ।

---

१ उच्छवास पर्याप्ति से पर्याप्त ।
२ उच्छवास पर्याप्ति पूर्ण न करनेवाले ।
३ इन्द्रियपर्याप्ति से पर्याप्त सेन्द्रिय ।
४ इन्द्रियपर्याप्ति पूर्ण न करनेवाले ।

यों विकलेन्द्रियों (पांच स्थावर और द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय एवं चतुरिन्द्रिय) को छोड़कर जो असंज्ञी अवस्था से नैरयिक आदि के रूप में उत्पन्न होते हैं वे असंज्ञी व्यन्तर तक ही उत्पन्न होते हैं।

"ज्योतिष्क और वैमानिक में नहीं" इस विविक्षा से उनका यहां ग्रहण नहीं करके वानव्यन्तर पर्यन्त कहा गया है। जिसने मन:पर्याप्ति पूर्ण की हो वह संज्ञी और जिसने पूर्ण न की हो वह असंज्ञी वानव्यन्तर पर्यन्त सब पंचेन्द्रियों के विषय में यह जानना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भाषक और अभाषक।

यों एकेन्द्रिय को छोड़कर शेष सब दण्डक में समझ लेना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि।

इसी तरह एकेन्द्रिय को छोड़कर शेष सब दण्डक में समझना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

परित्तसंसारिक और अनन्तसंसारिक।

यों वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिये।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

संख्येयकाल की स्थितिवाले.

असंख्येकाल की स्थितिवाले ।

इस प्रकार एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय को छोड़कर वानव्यन्तर पर्यन्त पंचेन्द्रिय जीव समझने चाहिये[1] ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सुलभबोधिक और दुर्लभबोधिक ।

यों वैमानिक देव पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार कहे गये हैं । यथा-

कृष्णपाक्षिक और शुक्लपाक्षिक ।

यों वैमानिक देव पर्यन्त जानना चाहिये ।

नैरयिक दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

चरम[2] और अचरम[3] ।

इस प्रकार वैमानिक देव पर्यन्त जानना चाहिये ।

८० दो प्रकार से आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है, यथा-

वैक्रिय-समुद्घातरूप आत्मस्वभाव से 'अवधिज्ञानी' आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है और वैक्रिय-समुद्घात किये बिना ही आत्म-स्वभाव से आत्मा अधोलोक

---

१. ज्योतिष्क और वैमानिक असंख्येय काल की स्थिति वाले ही होते हैं । एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय संख्यात काल की स्थिति वाले ही होते हैं ।

२. उस योनी में अन्तिम जन्म वाले ।

३. उस योनी में पुनः जन्म लेने वाले ।

को जानता और देखता है।[1] (तात्पर्य यह है कि)अवधिज्ञानी वैक्रिय-समुद्घात करके या वैक्रिय-समुद्घात किये बिना ही अधोलोक को जानता है और देखता है।

इसी तरह तिर्यक् लोक को जानता और देखता है।

इसी तरह ऊर्ध्वलोक को जानता और देखता है।

इसी तरह परिपूर्णलोक को जानता और देखता है।

दो प्रकार से आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है, यथा-

वैक्रिय शरीर बनाकर आत्मा (अवधिज्ञानी) अधोलोक को जानता और देखता है और वैक्रिय शरीर बनाए बिना भी आत्मा अधोलोक को जानता और देखता है। (तात्पर्य यह है कि) अवधिज्ञानी वैक्रिय शरीर बनाकर अथवा वैक्रिय शरीर बनाए बिना भी अधोलोक को जानता और देखता है।

इसी तरह तिर्यक् लोक आदि आलापक समझने चाहिये।[८]

दो प्रकार से आत्मा शब्द सुनता है। यथा-

देश रूप से आत्मा शब्द सुनता है।[2]

---

१. यह कथन शरीरस्थ आत्मा की अपेक्षा से हैं।

२. केवल कान से हीन हीं अपितु शरीर के किसी एक देश से शब्द सुना जा सकता हैं। यह शक्ति विषेश साधना द्वारा प्राप्त हो सकती है।

और सर्व रूप से भी आत्मा शब्द सुनता है[१]।
इसी तरह रूप देखता है।
इसी तरह गंध सूँघता है।
इसी तरह रसों का आस्वादन करता है
इसी तरह स्पर्श का अनुभव करता है[२]। [५]

दो प्रकार से आत्मा प्रकाश करता है, यथा-
देश रूप से आत्मा प्रकाश करता है,
सर्वरूप से भी आत्मा प्रकाश करता है।
इसी तरह विशेष रूप से प्रकाश करता है।
इसी तरह विशेष रूप से वैक्रिय करता है।
इसी तरह परिचार मैथुन करता है।
इसी तरह विशेष रूप से भाषा बोलता है।
इसी तरह विशेष रूप से आहार करता है।
इसी तरह विशेष रूप से परिणमन करता है।
इसी तरह विशेष रूप से वेदन करता है।
इसी तरह विशेष रूप से निर्जरा करता है।

---

१. केवल कान से ही नहीं अपितु सम्पूर्ण शरीर से भी शब्द सुना जा सकता है। यह शक्ति भी विषेश साधना द्वारा प्राप्त हो सकती है।

२. आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी परीक्षण के पश्चात् यह तथ्य स्वीकार कर लिया है।

ये नव सूत्र देश और सर्व दो प्रकार से हैं। [९]

देव दो प्रकार से शब्द सुनता है, यथा-

देव देश से भी शब्द सुनता है और सर्व से भी शब्द सुनता है —यावत्— निर्जरा करता है। [१४]

मरुत देव दो प्रकार के कहे गये हैं,[1] यथा-

एक शरीर वाले[2] और दो शरीर वाले[3]।

इसी तरह किन्नर, किंपुरुष, गंधर्व, नागकुमार, सुवर्णकुमार, अग्निकुमार, वायुकुमार—ये भी एक शरीर और दो शरीर वाले समझने चाहिए।

देव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

एक शरीर वाले और दो शरीर वाले। [९] [३६]

तृतीय उद्देशक

शब्द दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भाषा शब्द और नो-भाषा शब्द।[4]

लोकान्तिक देव विषेश।

भवधारणीय शरीर की अपेक्षा।

उत्तर वैक्रिय की अपेक्षा।

अजीव से पैद होने वाला शब्द।

भाषा शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
अक्षर सम्बद्ध और नो-अक्षर सम्बद्ध ।

नो भाषा शब्द दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
आतोद्य[1] और नो-आतोद्य[2] ।

आतोद्य शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
तत[3] और वितत[4]

तत शब्द दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
घन[5] और शुषिर[6] ।

इसी तरह वितत शब्द भी दो प्रकार का जानना चाहिये ।

नो आतोद्य शब्द दो प्रकार के कहे गये है । यथा-
भूषण शब्द और नो-भूषण शब्द ।

नो-भूषण शब्द दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
ताल शब्द और कंसिका (वाद्य-विशेष का) शब्द अथवा लात-प्रहार का शब्द ।]८]

शब्द की उत्पत्ति दो प्रकार से होती है, यथा-

---

१. ढोल आदि के शब्द ।
२. बांस आदि के फटने से होने वाला शब्द ।
३. तारबद्ध वीणा आदि से होने वाला शब्द ।
४. नगारा आदि के शब्द ।
५. ताल देने वाले वाद्य का शब्द ।
६. मुंह से फूंक देकर बजाये जानेवाले वाद्यका शब्द ।

पुद्गलों के परस्पर मिलने से शब्द की उत्पत्ति होती है,

पुद्गलों के भेद से शब्द की उत्पत्ति होती है, [१] [६]

८२ दो प्रकार से पुद्गल परस्पर सम्बद्ध होते हैं, यथा-

स्वयं (स्वभाव से) ही पुद्गल इकट्ठे हो जाते हैं,

अथवा अन्य के द्वारा पुद्गल इकट्ठे किये जाते हैं।

दो प्रकार से पुद्गल भिन्न भिन्न होते हैं, यथा-

स्वयं ही पुद्गल भिन्न होते हैं।

अथवा अन्य के द्वारा पुद्गल भिन्न किये जाते हैं।

दो प्रकार से पुद्गल सड़ते हैं, यथा-

स्वयं ही पुद्गल सडते हैं,

अथवा अन्य के द्वारा सडाये जाते हैं।

इसी तरह पुद्गल ऊपर गिरते हैं और

इसी तरह पुद्गल नष्ट होते हैं।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भिन्न और अभिन्न।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

नष्ट होनेवाले और नहीं नष्ट होने वाले।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

परमाणु पुद्गल और परमाणु से भिन्न स्कन्ध आदि।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सूक्ष्म और बादर।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

बद्धपार्श्व स्पृष्ट[1] और नो बद्धपार्श्व स्पृष्ट[2]।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

पर्यायातीत (विवक्षित पर्याय से अतीत)

अपर्यायातीत।

अथवा कर्म पुद्गल की तरह समस्त रूप से गृहीत और असमस्त रूप से गृहीत।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

जीव द्वारा गृहीत और अगृहीत।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

इष्ट और अनिष्ट।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

कान्त और अकान्त।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

प्रिय और अप्रिय।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

मनोज्ञ और अमनोज्ञ।

पुद्गल दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

मनाम (मनः प्रिय) और अमनाम। [१८]

---

१. त्वचा से स्पृष्ट और सम्बद्ध जैसे घ्राणेन्द्रियादि ग्राह्य गंध, रस और स्पर्श

२. त्वचा से स्पृष्ट हो किन्तु बद्ध न हो जैसे श्रोत्रेन्द्रि द्वारा ग्राह्य पुद्गल।

८३ शब्द दो प्रकार के कहे गये है, यथा-
गृहीत और अगृहीत।
इसी तरह इष्ट और अनिष्ट —यावत्— मनाम और अमनाम, शब्द जानने चाहिए ।
इसी तरह रूप, गंध, रस और स्पर्श-प्रत्येक में छ छआलापक जानने चाहिये । [६] [३०]

८४ आचार दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
ज्ञानाचार और नो-ज्ञानाचार ।
नो ज्ञानाचार दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
दर्शनाचार और नो-दर्शनाचार।
नो-दर्शनाचार दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
चारित्राचार और नो चारित्राचार ।
नो चारित्राचार दो प्रकार का कहा गया है, यथा-
तपाचार और वीर्याचार, । [४]
प्रतिमाएं (प्रतिज्ञाएं) दो कही गई हैं, यथा-
समाधि प्रतिमा और उपधान प्रतिमा,
प्रतिमाएं दो कहीं गई हैं, यथा-
विवेक प्रतिमा और व्युत्सर्ग प्रतिमा ।
प्रतिमाएं दो कही गई हैं, यथा-
भद्रा और सुभद्रा ।
प्रतिमाएं दो कही गई हैं, यथा-
महाभद्र और सर्वतोभद्र ।
प्रतिमाएं दो कही गई हैं, यथा-

लघुमोकप्रतिमा और महती मोकप्रतिमा ।

प्रतिमाएं दो कही गई हैं, यथा-

यवमध्यचन्द्र प्रतिमा[1] और वज्रमध्यचन्द्र प्रतिमा[2]

सामायिक दो प्रकार की कही गई हैं, यथा-

आगार (देश विरति) सामायिक ।

अनगार (सर्वविरति) सामायिक ।[1] ११

---

१ 'जौ' के समान मध्यभाग वाली तथा चन्द्रमा के समान न्यूनाधिक होनेवाली प्रतिमा अर्थात् शुक्लपक्ष के प्रथम दिन एक कवल (कौर) आहार करे, दूसरे दिन दो कवल इस तरह पूर्णिमा के दिन पन्द्रह कवल आहार करे । इसके बाद कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन १५ कवल, द्वितीया के दिन १४ कवल इस तरह प्रतिदिन-एक एक कम करते हुए अमावस्या के दिन एक कवल आहार करे । इस प्रकारकी तपश्चर्या को यवमध्यचन्द प्रतिमा कहते हैं ।

२ कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को १५ कवल आहार करे तत्पश्चात् प्रति-दिन एक-एक कवल कम करते हुए अमावस्या के दिन एक कवल आहार करे और शुक्लपक्ष को एकम के दिन एक कवल अहार करे और प्रतिदिन एक-एक बढ़ाते पूर्णिमा के दिन १५ कवल आहार करे ।

शुक्लपक्ष को एकम के दिन एक कवल आहार करे और प्रतिदिन एक-एक बढाते-बढ़ाते पूर्णिमा को १५ कवल आहार करे । इस प्रकार के तप को वज्रमध्यचन्द प्रतिमा कहते हैं ।

८५ दो प्रकार के जीवों का जन्म उपपात कहलाता है, यथा-
देवों और नैरयिकों का।]१]
दो प्रकार के जीवों का मरना उद्वर्तन कहलाता है, यथा-
नैरयिकों का और भवनवासी देवों का।
दो प्रकार के जीवों का मरना च्यवन कहलाता है, यथा-
ज्योतिष्कों का और वैमानिकों का ।]२]
दो प्रकार के जीवों की गर्भ में उत्पत्ति होती है, यथा-
मनुष्यों की और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिकों की।
दो प्रकार के जीव गर्भ में रहे हुए आहार करते हैं, यथा-
मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय।
दो प्रकार के जीव गर्भ में वृद्धि पाते हैं, यथा-
मनुष्य और पंचेन्द्रिय तिर्यंच।

इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ में अपचय पाते हैं।
इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ में विकुर्वणा करते हैं।
इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ में गति-पर्याय पाते हैं।
इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ में समुद्घात करते हैं।
इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ में कालसंयोग करते हैं।
इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ से आयाति जन्म पाते हैं।
इसी प्रकार दो प्रकार के जीव गर्भ में मरण पाते हैं। [१०[
दो प्रकार के जीवों का शरीर त्वचा और सन्धि बन्धन वाला कहा गया है, यथा-
मनुष्यों का और तिर्यन्च पंचेन्द्रिय का। [१]

दो प्रकार के जीव शुक्र (वीर्य) और शोणित (रक्त) से उत्पन्न होते हैं, यथा-

मनुष्य और तिर्यंच पंचेन्द्रिय। [१]

स्थिति दो प्रकार की कही गई है, यथा-

कायस्थिति और भवस्थिति।

दो प्रकार के जीवों की कायस्थिति कही गई है, यथा-

मनुष्यों की और पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों की[1]।

दो प्रकार के जीवों की भवस्थिति कही गई है, यथा-

देवों की और नैरयिकों की। [२]

आयु दो प्रकार की कही गई है, यथा-

अद्धायु (भव बदलने पर भी कालान्तरानुगामी जैसे मनुष्यायु) और भवायु (भव बदलने पर बदलनेवाली)

दो प्रकार के जीवों की अद्धायु कही गई है, यथा-

मनुष्यों की और पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिकों की।

दो प्रकार के जीवों की भवायु कही गई है, यथा-

देवों की और नैरयिकों की।]३]

कर्म दो प्रकार के कहे गये है, यथा-

प्रदेश कर्म और अनुभाव कर्म। [१]

---

१ एकेन्द्रियादि की भी होती हैं लेकिन यहां दो की ही विवक्षा है।

२ बीच में टूट सकने वाली

दो प्रकार के जीव यथावद्ध आयुष्य पूर्ण करते हैं, यथा-

देव और नैरयिक । [१]

दो प्रकार के जीवों की आयु सोपक्रमवाली कही है, यथा-

मनुष्यों की और पंचेन्द्रिय तिर्यक्योनिकों की । [१] [२८]

८६ जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में अत्यन्त तुल्य, विशेपता रहित, विविधता रहित, लम्बाई-चौड़ाई आकार एवं परिधि में एक दूसरे का अतिक्रम नहीं करनेवाले दो वर्प-क्षेत्र कहे गये हैं, यथा-

भरत और ऐरवत ।

इसी तरह हैमवत और हिरण्यवत, हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष जानने चाहिए ।

इस जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पूर्व और पश्चिम दिशा में दो क्षेत्र कहे गये हैं जो अत्यन्त समान-विशेषता रहित हैं, यथा-

पूर्व विदेह और अपर विदेह,

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में दो कुरु (क्षेत्र) कहे गये हैं जो परस्पर अत्यन्त समान हैं, यथा-

देवकुरु और उत्तरकुरु । [५]

वहां दो विशाल महावृक्ष हैं जो परस्पर सर्वथा तुल्य, विशेषता रहित, विविधता रहित, लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई, गहराई, आकृति और परिधि में एक दूसरे का अतिक्रम नहीं करते हैं, यथा-

कूट शालमली और जंवू सुदर्शना । [१]

वहां महाऋद्धि वाले-यावत्-महान् सुख वाले और पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं, यथा-

वेणुदेव गरुड़ और अनाढ़िय।

ये दोनों जम्बूद्वीप के अधिपति हैं। [१] [७]

८७ जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में दो वर्षधर पर्वत कहे गये हैं, परस्पर सर्वथा समान, विशेषता रहित, विविधता रहित, लम्बई-चौड़ाई, ऊँचाई, गहराई, संस्थान और परिधि में एक दूसरे का अतिक्रम नहीं करते हैं, यथा-

लघु हिमवान् और शिखरी।

इसी प्रकार महाहिमवान् और रूक्मि।

निषध और नीलवान् पर्वतों के सम्बन्ध में जानना चाहिये। [३]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में हैमवत और एरण्यवत क्षेत्र में दो गोल वैताढ्य पर्वत हैं जो अति समान, विशेषता और विविधता रहित —यावत्— उनके नाम, यथा-

शब्दापाती और विकटपाती। [१]

वहां महा ऋद्धि वाले —यावत्— पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं, यथा-

स्वाति और प्रभास। [१]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष में दो गोल वैताढ्य पर्वत हैं जो अति-समान हैं —यावत्— जिनके नाम, यथा-

गन्धापाती और माल्यवंत पर्याय। [१]

वहां महाऋद्धि वाले —यावत् पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं, यथा-

अरुण और पद्म। [१]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में और देवकुरु के पूर्व और पश्चिम में अश्वस्कन्ध के समान अर्धचन्द्र की आकृति वाले दो वक्षस्कार पर्वत हैं जो परस्पर अति समान हैं —यावत्— उनके नाम।

सौमनस और विद्युत्प्रभ।

जम्बूद्वीपवर्त्ती मेरु पर्वत के उत्तर में तथा कुरु के पूर्व और पश्चिम भाग में अश्व स्कन्ध के समान, अर्धचन्द्र की आकृति वाले दो वक्षस्कार पर्वत हैं जो परस्पर अतिसमान हैं —यावत्–उनके नाम।

गन्धमादन और माल्यवान।

जम्बूद्वीपवर्त्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में दो दो दीर्घ वेताढ्य पर्वत कहे गये हैं जो अतितुल्य हैं —यावत्— उनके नाम, यथा-

भरत दीर्घ वैताढ्य और ऐरवत दीर्घ वैताढ्य। [२]

उस भरत दीर्घ वैताढ्य में दो गुफाएं कही गई हैं जो अति तुल्य, अविशेष, विविधता रहित और एक दूसरी की लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई, संस्थान और परिधि में अतिक्रम न करनेवाली हैं, उनके नाम।

तिमिस्र गुफा और खण्ड-प्रपात गुफा । [१]
वहां महर्धिक —यावत्— पल्योपम की स्थिति वाले दो देव रहते हैं, उनके नाम ।

कृतमालक और नृत्यमालक । [१]
ऐरवत-दीर्घ वैताढ्य में दो गुफाएं हैं जो अतिसमान हैं —यावत्— वहाँ कृतमालक और नृत्यमालक देव रहते हैं । [१]
जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में लघुहिमवान् वर्षधर पर्वत पर दो कूट कहे गये हैं जो परस्पर अति तुल्य- —यावत्—लम्बाई-चौड़ाई, ऊंचाई संस्थान और परिधि में एक दूसरे का अतिक्रमण नहीं करने वाले हैं, उनके नाम-यथा-

लघुहिमवान्कूट और वैश्रमणकूट ।
जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में महाहिमवान् वर्षधर पर्वत पर दो कूट कहे गये हैं जो परस्पर अति तुल्य हैं उनके नाम-

महाहिमवन्कूट और वैडूर्यकूट ।
इसी तरह निषध वर्षधर पर्वत पर दो कूट कहे गये हैं जो अति तुल्य हैं —यावत्— उनके नाम ।

निषधकूट और रुचकप्रभकूट ।
जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर में नीलवान वर्षधर पर्वत पर दो कूट हैं जो अति तुल्य हैं —यावत्— उनके नाम ।

नीलवंतकूट और उपदर्शनकूट ।
इसी तरह रूक्मिकूट वर्षधर पर्वत पर दो कूट हैं जो अति-

तुल्य हैं —यावत्— उनके नाम ।

रूक्मिकूट और मणिकांचनकूट ।

इसी तरह शिखरी वर्षधर पर्वत पर दो कूट हैं जो अति तुल्य हैं —यावत्— उनके नाम, यथा-

शिखरीकूट और तिगिच्छकूट । [६-१९]

जम्बूद्वीपवर्त्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में लघुहिमवान् और शिखरी वर्षधर पर्वतों में दो महान् द्रह हैं जो अति-सम, तुल्य, अविशेष, विचित्रतारहित और लम्बाई-चौड़ाई गहराई, संस्थान एवं परिधि में एक दूसरे का अतिक्रमण नहीं करने वाले हैं, उनके नाम ।

पद्म द्रह और पुण्डरीक द्रह । [१]

वहाँ महाऋद्धि वाली —यावत्— पल्योपम की स्थिति वाली दो देवियां रहती हैं, उनके नाम ।

श्री देवी और लक्ष्मी देवी । [१]

इसी तरह महाहिमवान् और रुक्मि वर्षधर पर्वतों पर दो महाद्रह हैं जो अतिसमान हैं —यावत्— उनके नाम,

महापद्म द्रह और महापुण्डरिक द्रह । [१]

देवियों के नाम ।

ह्री देवी और बुद्धि देवी । [१]

इसी तरह निषध और नीलवान पर्वतों में-

तिगिच्छ द्रह और केसरी द्रह । [१]

देवियाँ 'धृति' और कीर्ति । [१]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में महाहिमवान् वर्षधर पर्वत के महापद्म द्रह में से दो महानदियां प्रवाहित होतीं हैं, उनके नाम ।

रोहिता और हरिकान्ता ।

इसी तरह निषध वर्षधर पर्वत के तिगिच्छ द्रह में से दो महानदियाँ प्रवाहित होती हैं, उनके नाम ।

हरिता और शीतोदा ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के उत्तर में नीलवान् वर्षधर पर्वत के केसरी द्रह में से दो महानदियां प्रवाहित होती हैं, उनके नाम ।

शीता और नारीकान्ता ।

इसी तरह रुक्मि वर्षधर पर्वत के महापुण्डरीक द्रह में से दो महानदियाँ प्रवाहित होतीं हैं, उनके नाम ।

नरकान्ता और रूप्यकूला । [४]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण भरत क्षेत्र में दो प्रपात द्रह हैं जो अतिसमान हैं —यावत्— उनके नाम ।

गंगाप्रपात द्रह और सिन्धुप्रपात द्रह ।

इसी तरह हैमवतवर्ष में दो प्रपात द्रह है जो बहुसमान हैं —यावत्— उनके नाम ।

रोहित-प्रपात द्रह और रोहितांश-प्रपात द्रह ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में हरिवर्ष क्षेत्र में दो प्रपात द्रह हैं जो अति समान हैं —यावत्— उनके नाम।

हरि प्रपात द्रह और हरिकान्त प्रपात द्रह।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में महाविदेह वर्ष में दो प्रपात द्रह हैं जो अतिसमान हैं —यावत्— उनके नाम।

शीता प्रपात द्रह और शीतोदा प्रपात द्रह।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर में रम्यक् वर्ष में दो प्रपात द्रह हैं जो बहुसमान है —यावत्— उनके नाम।

नरकान्त प्रपात द्रह और नारीकान्त प्रपात द्रह।

इसी तरह हेरण्यवत में दो प्रपात द्रह हैं उनके नाम।

सुवर्णकूल प्रपात द्रह और रुप्यकूल प्रपात द्रह।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उतर में ऐरवत वर्ष में दो प्रपात द्रह हैं और अतिसमान हैं —यावत्— उनके नाम

रक्त प्रपात द्रह और रक्तावती प्रपात द्रह। [७]

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में भरत वर्ष में दो महानदियाँ हैं जो अतिसमान हैं। —यावत्— उनके नाम।

गंगा और सिन्धु।

इसी तरह जितने प्रपात द्रह कहे गये हैं उतनी नदियां भी समझ लेनी चाहिए —यावत्—

ऐरवत वर्ष में दो महानदियाँ हैं जो अतिसमान तुल्य हैं

—यावत्— उनके नाम।

रक्ता और रक्तवती [१४] [३१]

८९ जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी के सुषम दुःषम नामक आरे का काल दो क्रोड़ा क्रोड़ी सागरोपम का था।

इसी तरह इस अवसर्पिणी के लिए भी समझना चाहिए।

इसी तरह आगामी उत्सर्पिणी के —यावत्— सुषमदुषम आरे का काल दो क्रोड़ा क्रोड़ी सागरोपम होगा। [२]

जम्बूद्वीपवर्ती भरत-ऐरवत क्षेत्र में गत उत्सर्पिणी के सुषम नामक आरे में मनुष्य दो कोस की ऊंचाई वाले थे। [१] तथा दो पल्योपम की आयु वाले थे। [१]

इसी तरह इस अवसर्पिणी में —यावत्— आयुष्य था। [२]

इसी तरह आगामी उत्सर्पिणी में —यावत्— आयुष्य होगा। [२]

जम्बूद्वीप में भरत और ऐरवत क्षेत्र में एक समय में एक युग में दो अर्हत् वंश उत्पन्न हुये, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे।

इसी तरह चक्रवर्ती वंश,

इसी तरह दशार वंश। [३]

जम्बूद्वीपवर्ती भरत ऐरवत क्षेत्र में एक समय में दो अर्हन् उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे।

इसी तरह दशार और चक्रवर्ती।

इसी तरह बलदेव और वासुदेव दशार वंशी —यावत्

उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे। [३]
जम्बूद्वीपवर्ती दोनों कुरु क्षेत्र में मनुष्य सदा सुषम-सुषम काल की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त कर उनका अनुभव करते हुए रहते हैं, यथा-

देवकुरु और उत्तरकुरु।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रों में मनुष्य सदा सुषम काल की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त करके उसका अनुभव करते हुए रहते हैं, यथा-

हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रों में मनुष्य सदा सुषम दुःषम की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त करके उसका अनुभव करते हुए विचरते हैं, यथा-

हेमवत और हिरण्यवत।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रों में मनुष्य सदा दुःषम सुषम की उत्तम ऋद्धि को प्राप्त करके उसका अनुभव करते हुए रहते हैं, यथा-

पूर्व-विदेह और अपर-विदेह।

जम्बूद्वीपवर्ती दो क्षेत्रों में मनुष्य छः प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं। यथा-

भरत और ऐरवत। [५-१७]

१० जम्बूद्वीप में दो चन्द्रमा प्रकाशित होते थे, होते हैं और होते रहेंगे।

दो सूर्य तपते थे, तपते हैं और तपते रहेंगे।

दो कृत्तिका, दो रोहिणी, दो मृगशिर, दो आर्द्रा इस प्रकार निम्न गाथाओं के अनुसार सब दो दो जान लेने चाहिए।

अट्ठाइस नक्षत्र

१. दो कृत्तिका,
२. दो रोहिणी,
३. दो मृगशिर,
४. दो आर्द्रा,
५. दो पुनर्वसु,
६. दो पुष्य,
७. दो अश्लेषा,
८. दो मघा,
९. दो पूर्वाफाल्गुनी,
१०. दो उत्तराफाल्गुनी,
११. दो हस्त,
१२. दो चित्रा,
१३. दो स्वाती,
१४. दो विशाखा,
१५. दो अनुराधा,
१६. दो ज्येष्ठा,
१७. दो मूल,
१८. दो पूर्वाषाढा,
१९. दो उत्तराषाढा,
२०. दो अभिजित्,
२१. दो श्रवण,
२२. दो धनिष्ठा,
२३. दो शतभिशा,
२४. दो पूर्वा भाद्रापदा,
२५. दो उत्तारा भाद्रपदा,
२६. दो रेवती,
२७. दो अश्विनी,
२८. दो भरणी,

अट्ठाइस नक्षत्रों के देवता

१ दो अग्नि,
२ दो प्रजापति,

३ दो सोम,
४ दो रुद्र,
५ दो अदिति,
६ दो वृहस्पति,
७ दो सर्प,
८ दो पितृ,
९ दो भग,
१० दो अर्यमन्,
११ दो सविता,
१२ दो त्वष्टा,
१३ दो वायु,
१४ दो इन्द्राग्नि,
१५ दो मित्र,
१६ दो इन्द्र,
१७ दो निर्ऋति,
१८ दो आप,
१९ दो विश्व,
२० दो ब्रह्मा,
२१ दो विष्णु,
२२ दो वसु,
२३ दो वरुण,
२४ दो अज,
२५ दो विवृद्धि,
२६ दो पूपन्,
२७ दो अश्विन्,
२८ दो यम.

अठासी ग्रह

१. दो अंगारक,
२. दो विकालक,
३. दो लोहिताक्ष,
४. दो शनैश्चर,
५. दो आधुनिक,
६. दो प्राधुनिक,
७. दो कण,
८. दो कनक,
९. दो कनकनक
१०. दो कनकवितानक,
११. दो कनकसंतानक,
१२. दो सोम
१३. दो सहित
१४. दो आससन,
१५. दो कार्योपग,
१६. दो कर्वटक,

१७. दो अजकरक, १८. दो दुंदुभग,
१९. दो शंख, २०. दो शंखवर्ण,
२१. दो शंखवर्णाभ, २२. दो कंस
२३. दो कंसवर्ण, २४. दो कंसवर्णाभ,
२५. दो रुक्मी, २६. दो रुक्मीभास
२७. दो नील, २८. दो नीलाभास,
२९. दो भास, ३०. दो भासराशि,
३१. दो तिल, ३२. दो तिल-पुष्पवर्ण,
३३. दो उदक, ३४. दो उदकपंचवर्ण,
३५. दो काक, ३६. दो काकान्ध,
३७. दो इन्द्रग्रीव, ३८. दो धूमकेतु,
३९. दो हरि, ४०. दो पिंगल,
४१. दो बुध, ४२. दो शुक्र,
४३. दो बृहस्पति, ४४. दो राहु,
४५. दो अगस्ति, ४६. दो माणवक
४७. दो कास, ४८. दो स्पर्श,
४९. दो धुरा, ५०. दो प्रमुख,
५१. दो विकट, ५२. दो विसंधि,
५३. दो नियल्ल, ५४. दो पदिक,
५५. दो जटिकादिलक, ५६. दो अरुण,
५७. दो अग्गिल, ५८. दो काल
५९. दो महाकाल, ६०. दो स्वस्तिक,
६१. दो सौवस्तिक, ६२. दो वर्धमानक,

६३. दो पूषमानक
६४. दो अंकुश)[१]
६५. दो प्रलंब,
६६. दो नित्यालोक,
६७. दो नित्योद्योत,
६८. दो स्वयंप्रभ,
६९. दो अवभाष,
७०. दो श्रेयंकर,
७१. दो क्षेमंकर,
७२. दो आभंकर,
७३. दो प्रभंकर,
७४. दो अपराजित,
७५. दो अरत,
७६. दो अशोक
७७. दो विगतशोक,
७८. दो विमल,
७९. दो व्यक्त,
८०. दो वितथ्य,
८१. दो विशाल,
८२. दो शाल,
८३. दो सुव्रत,
८४. दो अनिवर्त,
८५. दो एकजटी,
८६. दो द्विजटी,
८७. दो करकरिक,
८८. दो राजार्गल,
८९. दो पुष्पकेतु और
९०. दो भावकेतु । [१४८

९१ जम्बुद्वीप की वेदिका दो कोस ऊंची कही गई है । [१]

लवण समुद्र चक्रवाल विष्कंभ से दो लाख योजन का कहा गया है । [१]

लवण समुद्र की वेदिका दो कोस की ऊंची कही गई है । [१] [३]

९२ पूर्वार्ध धातकीखंडवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में दो क्षेत्र कहे गये हैं जो अति समान हैं—यावत्—उनके नाम-

भरत और ऐरवत ।

पहले जम्बूद्वीप के अधिकार में कहा वैसे यहाँ भी कहना

चाहिए —यावत्— दो क्षेत्र में मनुष्य छः प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं, उनके नाम-

भरत और ऐरवत । [५७]

विशेषता यह है कि वहाँ कूटशाल्मली और धातकी वृक्ष हैं ।

देवता गरुड़ (वेणुदेव) और सुदर्शन ।

धातकी खंड के पश्चिमार्ध में और मेरु पर्वत के उत्तर-दक्षिण में दो क्षेत्र कहे गये हैं जो परस्पर अति तुल्य हैं-यावत्-उनके नाम-

भरत और ऐरवत

—यावत्— दो क्षेत्रों में मनुष्य छः प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं, यथा-

भरत और ऐरवत । [५७]

विशेषता यह है कि यहाँ कूटशाल्मली और महाधातकी वृक्ष हैं और देव गरुड वेणुदेव तथा प्रियदर्शन हैं ।

धातकी खण्ड द्वीप की वेदिका दो कोस की ऊंचाई वाली कही गई है । [१]

धातकीखंड द्वीप में

क्षेत्र

१. दो भरत, २. दो ऐरवत, ३. दो हिमवंत,
४. दो हिरण्यवंत, ५. दो हरिवर्ष, ६. दो रम्यक्वर्ष,
७. दो पूर्व विदेह, ८. दो अपर विदेह, ९. दो देव कुरु ।

वृक्ष

१०. दो देवकुरु महावृक्ष, (कूटशाल्मली)

वृक्षवासी देव

११. दो देवकुरु महावृक्षवासी देव, (गरुड़देव)

क्षेत्र

१२. दो उत्तरकुरु,

वृक्ष

१३. दो उत्तरकुरु महावृक्ष,

वृक्षवासी देव

१४. दो उत्तरकुरु महावृक्षवासी देव,

वर्षधर पर्वत

१५. दो लघु हिमवंत,
१६. दो महा हिमवंत,
१७. दो निषध,
१८. दो नीलवंत,
१९. दो रुक्मी,
२०. दो शिखरी,

वृत्तवैताढ्य पर्वत

२१. दो शब्दापाती (हिमवंत स्थित वृत्तवैताढ्य पर्वत)

पर्वतवासी देव

२२. दो शब्दापाती वासी "स्वातीदेव"

वृत्तवैताढ्य पर्वत

२३. दो विकटापाती (हिरण्यवंत स्थित वृत्तवैताढ्य)

पर्वतवासी देव

२४. दो विकटापाती वासी "प्रभासदेव"

वृत्तवैताढ्य पर्वत

२५ दो गंधापाती (हरिवर्ष स्थित वृत्त वैताढ्य पर्वत)

पर्वतवासी देव

२६ दो गंधापाती वासी "अरुण देव"

वृत्तवैताढ्य पर्वत

२७ दो माल्यवान पर्वत (रम्यग्वर्ष स्थित वृत्तावैताढ्य पर्वत)

पर्वतवासी देव

२८ दो माल्यवान वासी "पद्मदेव",

वक्षस्कार पर्वत

२९ दो माल्यवान (उत्तार कुरु के पूर्व पार्श्व में स्थित वक्ष स्कार गजदंत गिरि)।

३० दो चित्रकूट (शीता नदी के उत्तार तट पर स्थित वक्ष स्कार पर्वत)।

३१ दो पद्मकूट (,, ,,)

३२ दो नलिनीकूट (,, ,,)

३३ दो एकशैल (,, ,,)

३४ दो त्रिकूट (शीतानदी के दक्षिण तट पर स्थित वक्षस्कार पर्वत)

३५ दो वैश्रमण कूट (,, ,,)

३६ दो अंजन कूट (,, ,,)
३७ दो मातंजनकूट (,, ,,)
३८ दो सौमनस (देवकुरु के पूर्व पार्वश में स्थित वक्षस्कार गजदंत गिरि)
३९ दो विद्युत्प्रभ (देवकुरु के पश्चिम पार्श्व में स्थित ,,)
४० दो अंकापाती कूट (शीतोदानदी के दक्षिण तट पर स्थित वक्षस्कार)
४१ दो पक्ष्मापाती कूट (,, ,,)
४२ दो आशीविष कूट (,, ,,)
४३ दो सुखावह कूट (,, ,,)
४४ दो चद्र पर्वत (शीतोदानदी के उत्तार तट पर स्थित वक्षस्कार)
४५ दो सूर्य पर्वत (,, ,,)
४६ दो नाग पर्वत (,, ,,)
४७ दो देव पर्वत (,, ,,)
४८ दो गंधमादन (उत्तार कुरु के पश्चिम पार्श्व में स्थित वक्षस्कार)
४९ दो इषुकार पर्वत[1] (धातकी खंड को पूर्वाध और पश्चिमार्ध में विभक्त करने वाला)

---

१. धातकी खंड के मुख्य दो विभाग हैं—पूवार्ध और पश्चिमार्व। उसे दो भागों में विभक्त करने वाले दो इषुकार पर्वत हैं।

वर्षधर पर्वत कूट

५० दो लघु हिमवान कूट (हिमवान वर्षधर पर्वत का कूट)
५१ दो वैश्रमणकूट (,, ,,)
५२ दो महाहिमवान कूट (महाहिमवान वर्षधर पर्वत का कूट)
५३ दो वैडूर्य कूट (,, ,,)
५४ दो निषध कूट (निषध वर्षधर पर्वत का कूट)
५५ दो रुचककूट (,, ,,)
५६ दो नीलवंत कूट (नीलवंत वर्षधर पर्वत का कूट)
५७ दो उपदर्शन कूट (,, ,,)

एक उत्तर में और एक दक्षिण में ।

उत्तर का "इषुकार पर्वत" लवण समुद्र की जगती (प्राकार) में उत्तर दिशा में रहे हुए "अपराजित द्वार" से लकर धातकी खंड की जगती के उत्तर दिशा में रहे हुए "अपराजित द्वार" पर्यन्त लम्बा है। इसलिये वह चार लाख योजन (उत्तर-दक्षिण में) लम्बा फैला हुआ है ।

दक्षिण का "इषुकार पर्वत" लवण समुद्र की जगती में दक्षिण दिशा में रहे हुए, "वैजयंत द्वार" से लेकर धातकी खंड की जगती में दक्षिण दिशा में रहे हुए "वैजयंत द्वार पर्यन्त लम्बा है । इसकी लम्बाई भी चार लाख योजन की है । इस प्रकार इन दो इषुकार पर्वतों से धातकी खंड के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध ये दो विभाग हैं ।

५८ दो रुक्मीकूट (रुक्मी वर्षधर पर्वत का कूट)
५९ दो मणिकंचन कूट („ „)
६० दो शिखरीकूट (शिखरी वर्षधर पर्वत का कूट „)
६१ दो तिगिच्छकूट („ „)

पर्वत-ह्लद

६२ दो पद्मह्लद (हिमवान वर्षधर पर्वत पर)

ह्लदवासी देवी

६३ दो पद्म ह्लदवासी "श्री देवी,"

पर्वत-ह्लद

६४ दो महापद्म ह्लद (महाहिमवान वर्षधर पर्वत पर)

ह्लदवासी देवी

६५ दो महापद्म ह्लदवासी "ह्री देवी",

पर्वत-ह्लद

६६ दो पौंडरीक ह्लद (शिखरी वर्षधर पर्वत पर)

ह्लदवासी देवी

६७ दो पौंडरीक ह्लदवासी "लक्ष्मी देवी",

पर्वत-ह्लद

६८ दो महा पौंडरीक ह्लद (रुक्मी वर्षधर पर्वत पर)

ह्लदवासी देवी

६९ दो महा पौंडरीक ह्लदवासी "बुद्धिदेवी"

पर्वत-ह्रद

७० दो तिगिच्छ ह्रद (निषध वर्षधर पर्वत पर)

ह्रदवासी देवी

७१ दो तिगिच्छ ह्रदवासी "धृतिदेवी",

पर्वत-ह्रद

७२ दो केसरी ह्रद (नीलवंत वर्षधर पर्वत पर)

ह्रदवासी देवी

७३ दो केसरी ह्रदवासी "कीर्तिदेवी",

क्षेत्र-ह्रद

७४ दो गंगा प्रपात ह्रद (भरत क्षेत्र में)
७५ दो सिंधु प्रपात ह्रद (,,)
७६ दो रोहिता प्रपात ह्रद (हिमवंत क्षेत्र में)
७७ दो रोहितांश प्रपात ह्रद (,,)
७८ दो हरि प्रपात ह्रद (हरिवर्ष में)
७९ दो हरिकांता प्रपात ह्रद (,,)
८० दो शीता प्रपात ह्रद (महाविदेह में)
८१ दो शीतोदा प्रपात ह्रद (,,)
८२ दो नरकांता प्रपात ह्रद (रम्यक् वर्ष में)
८३ दो नारीकांता प्रपात ह्रद (,,)
८४ दो सूवर्ण कूला प्रपात ह्रद (हिरण्यवंत वर्ष में)

८५	दो रूप्यकूला प्रपात ह्रद	(,,)
८६	दो रक्ता प्रपात ह्रद	(ऐरवत वर्ष में)
८७	दो रक्तावती प्रपात ह्रद	(,,)

महा नदियां[1]

८८	दो रोहिता महानदी	(हिमवंत वर्ष में)
८९	दो हरिकांता	,, हरिवर्ष में)
९०	दो हरिसलिला	,, (,,)
९१	दो शीतोदा	,, (महाविदेह में)
९२	दो शीता	,, (,,)
९३	दो नारीकांता	,, (रम्यग्वर्ष में)
९४	दो नरकांता	,, (,,)
९५	दो रूप्यकूला	,, (हिरण्यवंत वर्ष में)

अंतर नदियां

९६	दो गाथावती	(शीतानदी के उत्तर में)
९७	दो द्रहवती	(,,)
९८	दो पंकवती[2]	(,,)
९९	दो तप्तजला	(शीतानदी के दक्षिण में)
१००	दो मत्तजला	(,,)

---

१. गंगा, सिंधु, रोहितांशा, सुवर्णकूला, रक्ता और रक्तवती ये महानदियां भी धातकी खंड में दो दो हैं—देखिये सूत्र ८८।

२. अन्य ग्रन्थों में इसका "वेगवती" नाम भी मिलता है।

१०१	दो उन्मत्ता जला	(,,)
१०२	दो क्षारोदा[1]	(शीतोदा नदी के दक्षिण में)
१०३	दो सिंह स्रोता[2]	(,,)
१०४	दो अन्तोवाहिनी	(,,)
१०५	दो उर्मिमालिनी	(शीतो दानदी के उत्तर में)
१०६	दो फेनमालिनी[3]	(,,)
१०७	दो गंभीर मालिनी	(,,)

चक्रवर्ती-विजय

१०८	दो कच्छ	(शीता नदी के उत्तर में)
१०९	दो सुकच्छ	(,, ,,)
११०	दो महाकच्छ	(,, ,,)
१११	दो कच्छकावती	(,, ,,)
११२	दो आवर्त	(,, ,,)
११३	दो मंगलावर्त	(,, ,,)
११४	दो पुष्कलावर्त	(,, ,,)
११५	दो पुष्कलावती	(,, ,,)

---

१. इसका "क्षीरोदा" नाम भी अन्य ग्रन्थों में मिलता है।

२. इसका "शीत स्रोता" नाम भी अन्य ग्रंथों में मिलता है।

३. फेनमालिनी और गंभीर मालिनी ये दोनों नाम क्रम व्यत्यय से भी मिलते हैं।

११६	दो वत्स	(शीता नदी के दक्षिण में स्थित)
११७	दो सुवत्स	(,, ,,)
११८	दो महावत्स	(,, ,,)
११९	दो वत्सावती	(,, ,,)
१२०	दो रम्य	(,, ,,)
१२१	दो रम्यक्	(,, ,,)
१२२	दो रमणिक	(,, ,,)
१२३	दो मंगलावती	(,, ,,)
१२४	दो पद्म	(शीतोदा नदी के दक्षिण में स्थित)
१२५	दो सुपद्म	(,, ,,)
१२६	दो महापद्म	(,, ,,)
१२७	दो पद्मावती	(,, ,,)
१२८	दो शंख	(,, ,,)
१२९	दो कुमुद	(,, ,,)
१३०	दो नलिन	(,, ,,)
१३१	दो नलिनावती	(,, ,,)
१३२	दो वप्र	(शीतोदा नदी के उत्तर में स्थित)
१३३	दो सुवप्र	(,, ,,)
१३४	दो महावप्र	(,, ,,)
१३५	दो वप्रावती	(,, ,,)
१३६	दो वल्गु	(,, ,,)

१३७ दो सुवल्गु (,, ,,)
१३८ दो गंधिल (,, ,,)
१३९ दो गंधिलावती (,, ,,)

चक्रवर्ती विजय-राजधानियाँ

१४० दो क्षेमा (शीता नदी के उत्तर में स्थित)
१४१ दो क्षेमपुरी (,, ,,)
१४२ दो रिष्टा (,, ,,)
१४३ दो रिष्टपुरी (,, ,,)
१४४ दो खड्गी (,, ,,)
१४५ दो मंजुषा (,, ,,)
१४६ दो औषधि (,, ,,)
१४७ दो पौंडरिकिणी (,, ,,)
१४८ दो सुसीमा (,, ,,)
१४९ दो कुँडला (,, ,,)
१५० दो अपराजिता (,, ,,)
१५१ दो प्रभंकरा (,, ,,)
१५२ दो अंकावती (,, ,,)
१५३ दो पद्मावती (,, ,,)
१५४ दो शुभा (,, ,,)
१५५ दो रत्नसंचया (,, ,,)

१५६ दो अश्वपुरा (शीतोदा नदी के दक्षिण में स्थित)
१५७ दो सिंहपुरा (,, ,,)
१५८ दो महापुरा (,, ,,)
१५९ दो विजयपुरा (,, ,,)
१६० दो अपराजिता (,, ,,)
१६१ दो अपरा (,, ,,)
१६२ दो अशोका (,, ,,)
१६३ दो वीतशोका (,, ,,)
१६४ दो विजया (शीतोदा नदी के उत्तर में स्थित)
१६५ दो वैजयंती (,, ,,)
१६६ दो जयंती (,, ,,)
१६७ दो अपराजिता (,, ,,)
१६८ दो चक्रपुरा (,, ,,)
१६९ दो खड्गपुरा (,, ,,)
१७० दो अवध्या (,, ,,)
१७१ दो अयोध्या (,, ,,)

मेरु पर्वत पर वन खंड

१७२ दो भद्रशाल वन, १७३ दो नंदन वन,
१७४ दो सौमनस वन, १७५ दो पंडक वन,

मेरु पर्वत पर शिला

१७६ दो पांडुकंवल शिला, १७७ दो अतिकंबल शिला,

१७८ दो रक्तकंबल शिला, १७९ दो अतिरक्तकंबल शिला,

पर्वत

१८० दो मेरु पर्वत

पर्वत-चूलिका

१८१ दो मेरु पर्वत की चूलिका [२९६]

९३ कालोदधि समुद्र की वेदिका दो कोस की ऊंचाई वाली कही गई है। [१]

पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में मेरु पर्वत के उत्तर और दक्षिण में दो क्षेत्र कहे गये हैं जो अति, तुल्य, हैं-यावत्-उनके नाम—

भरत और ऐरवत।

इसी तरह —यावत्— दो कुरु कहे गये हैं, यथा-

देव कुरु और उत्तर कुरु।

वहाँ दो विशाल महाद्रुम कहे गये हैं, उनके नाम-

कूटशाल्मली और पद्म वृक्ष

देव गरुड़ वेणुदेव और पद्म —यावत्— वहाँ मनुष्य छ प्रकार के काल का अनुभव करते हुए रहते हैं। [५७]

पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में और मेरु पर्वत के उत्तर दक्षिण में दो क्षेत्र कहे गये हैं इत्यादि पूर्ववत्।

विशेषता यह है कि वहाँ कूटशाल्मली और महापद्म वृक्ष है और देव गरुड़ (वेणुदेव) और पुण्डरिक हैं।

पुष्करवरद्वीपार्ध में दो भरत, दो ऐरवत —यावत्— दो मेरु और दो मेरु चूलिकाएं हैं। [५७]
पुष्करवर द्वीप की वेदिका दो कोस की ऊंची कही गई है। सब द्वीप-समुद्रों की वेदिकाएं दो कोस की ऊंचाई वाली कही गई हैं। [२] [१७७]

दस भवनपती के वीस इन्द्र

९४ असुर कुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
चमर और वलि।
नागकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
धरन और भूतानन्द।
सुवर्णकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
वेणुदेव और वेणुदाली।
विद्युत्कुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
हरि और हरिसह।
अग्निकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
अग्निशिख और अग्निमाणव।
द्वीपकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
पूर्ण और वाशिष्ठ।
उदधिकुमारेन्द्र दो कहे गये है, यथा-
जलकान्त और जलप्रभ।
दिक्कुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
अमितगति और अमितवाहन।

वायुकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
वेलम्ब और प्रभंजन।
स्तनितकुमारेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
घोष और महाघोष। [१०]

सोलह व्यन्तरों के बत्तीस इन्द्र

पिशाचेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
काल और महाकाल।
भूतेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
सुरूप और प्रतिरूप।
यक्षेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
पूर्णभद्र और माणिभद्र।
राक्षसेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
भीम और महाभीम।
किन्नरेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
किन्नर और किंपुरुष।
किंपुरुषेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
सत्पुरुष और महापुरुष।
महोरगेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
अतिकाय और महाकाय।
गन्धर्वेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-
गीतरति और गीतयश।
अणपन्निकेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

सन्निहित और समान्य ।

पणपन्निकेन्द्र दो कहें गये हैं, यथा-

धात और विहात ।

ऋषिवादीन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

ऋषि और ऋषिपालक ।

भूतवादीन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

ईश्वर और महेश्वर ।

क्रन्दितेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

सुवत्स और विशाल ।

महाक्रन्दितेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

हास्य और हास्यरति ।

कुभांडेन्द्र दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

श्वेत और महाश्वेत ।

पतंगेन्द्र दो कहे गये हैं, यथा-

पतय और पतयपति । [१६]

ज्योतिषी देवों के दो इन्द्र

ज्योतिष्क देवों के दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

चन्द्र और सूर्य । [१]

बारह देवलोकों के दस इन्द्र

सौधर्म और ईशान कल्प में दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

शक्र और ईशान ।

सनत्कुमार और माहेन्द्र में दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

सनत्कुमार और माहेन्द्र ।

ब्रह्मलोक और लान्तक कल्प में दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

ब्रह्म और लान्तक ।

महाशुक्र और सहस्रार कल्प में दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

महाशुक्र और सहस्रार ।

आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्प में दो इन्द्र कहे गये हैं, यथा-

प्राणत और अच्युत [५]

इस प्रकार सब मिलकर चौसठ इन्द्र होते हैं

महाशुक्र और सहस्रार कल्प में विमान दो वर्ण के कहे गये हैं, यथा-

पीले और श्वेत । [१]

ग्रैवेयक देवों की ऊंचाई दो हाथ की है । [१] [३४]

चतुर्थ उद्देशक

९५ समय[1] अथवा आवलिका[2] जीव[3] और अजीव[4] कहे

---

१. काल का सबसे सूक्ष्म भाग ।

२. असंख्यात समय अथवा एक श्वास का संख्यातवां भाग

३. जीव का धर्म होने से ।

४. अजीव का धर्म होने से ।

जाते हैं ।[1]

श्वासोच्छ्वास अथवा स्तोक[2] जीव और अजीव कहे जाते हैं ।

इसी तरह—लव,

मुहूर्त[3] और अहोरात्र

पक्ष और मास

ऋतु और अयन

संवत्सर और युग

सौ वर्ष और हजार वर्ष

लाख वर्ष और क्रोड़ वर्ष

त्रुटितांग और त्रुटित

पूर्वांग[4] अथवा पूर्व[5]

---

१. जीव और अजीव का समयादि स्थिति लक्षण धर्म है धर्म और धर्मी में अत्यन्त भेद नहीं है अतः धर्म और धर्मी के अभेद को लक्ष्य में रखकर समयादि को जीव या अजीव रूप कहा जाता है ।

२. सात श्वासोच्छ्वास प्रमाणकाल ।

३. [क] सात स्तोकप्रमाण काल ।

[ख] ७७ लव अथवा दो घड़ी अथवा ३७७३ श्वासोच्छ्वास जितना काल ।

४. चौरासी लाख वर्ष ।

५. चौरासी लाख पूर्व ।

अड़ड़ांग और अड़ड़
अववांग और अवव
हूहूतांग और हूहूत
उत्पलांग और उत्पल
पद्मांग और पद्म
नलिनांग और नलिन
अक्षनिकुरांग और अक्षनिकुर
अयुतांग और अयुत
नियुतांग और नियुत
प्रयुतांग और प्रयुत,
चूलिकांग और चूलिक,
शीर्ष प्रहेलिकांग और शीर्ष प्रहेलिका,
पल्योपम और सागरोपम, [४९]

उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी जीव और अजीव कहे जाते हैं।

ग्राम अथवा नगर,
निगम (वणिक्-निवास),
राजधानी,
खेड़ा (ग्राम से बड़ा और नगर से छोटा, धूल की चाहर दीवारी युक्त)
कर्वट (कुत्सित नगर)
मडम्ब (जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गाँव न

हो ऐसी वस्ती)
द्रोणमुख (जल और स्थल दोनों मार्ग वाला)
पत्तन (जहाँ जल या स्थल मार्ग में से कोई एक हो ऐसा श्रेष्ठ नगर)
आकर (खान)
आश्रम,
संवाह (जहाँ कृषक लोग धान्यादि को रक्षा के लिए ले जाकर रखते हैं ऐसे दुर्ग-विशेष)
सन्निवेश (यात्रियोंकाया सेनादि का पड़ाव)
गोकुल,
आराम (स्त्री-पुरुषों के लिए उद्यान विशेष)
उद्यान (विविध वृक्षों से शोभित)
वन (एक जातीय वृक्षोंका समूह)
वनखंड (अनेक जातीय वृक्ष)
वावड़ी (चतुष्कोण)
पुष्करिणी (गोल वावड़ी अथवा जिसमें कमल हो ऐसी वावड़ी)
सरोवर, सरवरों की पंक्ति, कूप, तालाब, ह्रद, नदी, रत्न-प्रभादिक पृथ्वी, घनोदधि, वातस्कन्ध (घनवात तनुवात), अन्य पोलार (वातस्कन्ध के नीचे का आकाश जहाँ सूक्ष्म पृथ्वीकाय के जीव भरे हैं)
वलय (पृथ्वी के घनोदधि, घनवात, तनुवातरूप वेष्टन)

विग्रह (लोकनाड़ी)
द्वीप, समुद्र, वेला, (समुद्र के जल का बढ़ना)
वेदिका, द्वार, तोरण,
नैरयिक (कर्म-पुद्गल की अपेक्षा से अजीवत्व समझना चाहिये) नरकवास,
वैमानिक, वैमानिकों के आवास, (देवलोक) कल्पविमानावास,
वर्ष (भरत आदि क्षेत्र) वर्षधर पर्वत, कूट, कूटागार,
विजय (चक्रवर्ती के जीते हुए कच्छादि क्षेत्र)
राजधानी ये सब जीवाजीवात्मक होने से) जीव और अजीव कहे जाते हैं।
छाया, आतप, ज्योत्स्ना (चाँदनी), अन्धकार, अवमान (क्षेत्रादि को मापने के हस्तादि साधन) उन्मान (तोल वगैरह) अतियान गृह (राजा आदि के नगर में धूमधाम से प्रवेश करने के गृह) उद्यानगृह, अवलिम्ब (स्थानाविशेष) सणिप्पवाय (वस्तु विशेष)- ये सब जीव और अजीव कहे जाते हैं, (जीव और अजीव से व्याप्त होने के कारण अभेदनय की अपेक्षा से जीव या अजीव कहे जाते हैं)। [५७]

९६ दो राशियां कही गयी हैं, यथा-

जीव-राशि और अजीव-राशि। [१]

बंध दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

राग-बंध और द्वेष-बंध।

जीव दो प्रकार से पाप कर्म बांधते हैं, यथा-

राग से और द्वेष से [२]

जीव दो प्रकार से पाप कर्मों की उदीरणा करते हैं, यथा-

आभ्युपगमिक (स्वेच्छा से स्वीकृत केशलुँचन तपश्चर्या आदि से होने वाली) वेदना से

औपक्रमिक (कर्मोदय के कारण ज्वर, अतिसार आदि से होने वाली) वेदना से। [१]

इसी तरह दो प्रकार से जीव कर्मों का वेदन करते हैं एवं निर्जरा करते हैं, यथा-

आभ्युपगमिक वेदना से और औपक्रमिक वेदना से। [१-५]

९७ दो प्रकार से आत्मा शरीर का स्पर्श करके बाहर निकलती है, यथा-

देश से-शरीर के अमुक भाग अथवा अमुक अवयव का स्पर्श करके आत्मा बाहर निकलती है।

सर्व से-सम्पूर्ण शरीर का स्पर्श करके आत्मा बाहर निकलती है।

इसी तरह स्फुरण (स्पंदन) करके

स्फोटन (फोड़कर) करके,

संकोचन करके

शरीर से अलग होकर आत्मा बाहर निकलती है। [४]

९८ दो प्रकार से आत्मा को केवलि-प्ररूपित धर्म सुनने के लिए मिलता है, यथा-

कर्म कर्मों के क्षय से अथवा उपशम से ।

इसी प्रकार —यावत्— दो कारणों से जीव को मनः पर्याय ज्ञान उत्पन्न होता है, यथा-

(आवरणीय कर्म के) क्षय से अथवा उपशम से । [१०]

९९ औपमिक (उपमा के द्वारा गम्य) काल दो प्रकार का कहा गया है, यथा—

प्रश्न—पल्योपम और सागरोपम,

उत्तर—पल्योपम का स्वरूप क्या है ?

पल्योपम का स्वरूप इस प्रकार है । यथा-

एक योजन विस्तार वाले पल्य (धान्य-मापने का पात्र) में एक दिन के (यावत् उत्कृष्ट सात दिन के) उगे हुए वाल निरन्तर एवं निविड़ रूप से ठूँस ठूँस कर भर दिए जाय और सौ सौ वर्ष में एक एक वाल निकालने से जितने वर्षों में वह पल्य खाली हो जाय उतने वर्षों के काल को एक पल्योपम समझना चाहिए । ऐसे दस क्रोडा क्रोडी पल्योपम का एक सागरोपम होता है । [१]

१०० क्रोध दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

आत्मप्रतिष्ठित और परप्रतिष्ठित ।

'अपने आप पर होने वाला या अपने द्वारा उत्पन्न किया हुआ क्रोध क्रोध आत्म प्रतिष्ठित है ।'

'दुसरे पर होने वाला या उसके द्वारा उत्पन्न किया हुआ

क्रोध पर प्रतिष्ठित है।

इसी प्रकार नारक —यावत्— वैमानकों को उक्त दो प्रकार मान माया —यावत्— मिथ्यादर्शनशल्य भी दो प्रकार का समझना चाहिए। [१३]

.०१ संसार समापन्नक 'संसारी' जीव दो प्रकार कहे गये हैं, यथा-

त्रस और स्थावर,

सर्व जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सिद्ध और असिद्ध।

सर्व जीव दो प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सेन्द्रिय और अनिन्द्रिय।

इस प्रकार सशरीरी और अशरीरी पर्यन्त निम्न गाथा से समझना चाहिए। यथा-

सिद्ध, सेन्द्रिय, सकाय, सयोगी, सवेदी, सकषायी, सलेश्य, ज्ञानी, साकारोपयुक्त, आहारक, भाषक, चरम, सशरीरी ये और प्रत्येक का प्रतिपक्ष इस रूप से दो-दो प्रकार समझने चाहिए। [२६]

१०२ श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए दो प्रकार के मरण सदा (उपादेय रूप से) नहीं कहें हैं, कीर्तित नहीं कहे हैं, व्यक्त नहीं कहे हैं, प्रशस्त नहीं कहे

हैं और उनके आचरण की अनुमति नहीं दी है, यथा-

वलद्‌मरण (संयम से खेद पाकर मरना)

वशार्त मरण (इन्द्रिय-विषयों के वश होकर पतंग की तरह मरना)।

इसी तरह निदान मरण (ऋद्धि-भोग आदि की कामना करके मरना) और तद्‌भव-मरण (उसी गति का आयुष्य बांधकर मरना)।

पर्वत से गिरकर मरना और वृक्ष से गिरकर मरना।

पानी में डूबकर मरना और अग्नि में जलकर मरना।

विष का भक्षण कर मरना और शस्त्र का प्रहार कर मरना। [५]

दो प्रकार के मरण —यावत्— नित्य अनुज्ञात नहीं हैं किन्तु कारण-विशेष (शील रक्षा आदि के लिए) होने पर निषिद्ध नहीं हैं, वे इस प्रकार हैं, यथा-

वैहायस मरण (वृक्ष की शाखा वगैरह पर लटक कर गले में फांसी लगा लेना) और गृध्रपृष्ठ मरण (किसी बड़े प्राणी के मृत कलेवर में प्रवेश कर गीध आदि पक्षियों से शरीर नुचवा कर मरना)। [१]

श्रमण भगवान् महावीर ने दो मरण श्रमण-निर्ग्रन्थों के लिए सदा उपादेय रूप से वर्णित किये हैं —यावत्— उनके लिए अनुमति दी है, यथा-

पादपोपगमन और भक्तप्रत्याख्यान ।

पादपोपगमन दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

निर्हारिम (ग्राम नगर आदि में मरना जहां मृत्यु संस्कार हो)

अनिर्हारिम (गिरि कन्दरादि में मरना जहाँ मृत्यु संस्कार न हो) ।

भक्तप्रत्याख्यान दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

निर्हारिम और अनिर्हारिम, [३]

१०३ प्रश्न — यह लोक क्या है ?

उत्तर—जीव और अजीव ही यह लोक है अर्थात् लोक जीवाजीवात्मक है ।

प्रश्न—लोक में अनन्त क्या है ?

उत्तर—जीव और अजीव,

प्रश्न — लोक में शाश्वत क्या है ?

उत्तर — जीव और अजीव (द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा से ।)

१०४ बोधि (सम्यक्त्व) दो प्रकार की है , यथा—

ज्ञान-बोधि और दर्शन-बोधि । [१]

बुद्ध दो प्रकार के हैं, यथा-

ज्ञान-बुद्ध और दर्शन-बुद्ध । [१]

इसी तरह मोह को समझना चाहिए । [१]

इसी तरह मूढ को समझना चाहिए । [१-४]

१०५ ज्ञानावरणीय कर्म दो प्रकार का है, यथा-

देश ज्ञानावरणीय और सर्व ज्ञानवरणीय।

दर्शनावरणीय कर्म भी इसी तरह दो प्रकार का है।

वेदनीय कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

सातावेदनीय और असातावेदनीय।

मोहनीय कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय।

आयुष्य कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

अद्धायु (कायस्थति) और भवायु (भवस्थिति)।

नाम कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

शुभ नाम और अशुभ नाम।

गोत्र कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

उच्च गोत्र और नीच गोत्र।

अन्तराय कर्म दो प्रकार का कहा गया है, यथा-

प्रत्युत्पन्न विनाशी (वर्तमान में होने वाले लाभ को नष्ट करने वाला)

पिहितागामीपथ (भविष्य में होने वाले लाभ को रोकने वाला) [८]

१०६ मूर्छा दो प्रकार की कही गया है, यथा-

प्रेम-प्रत्यया 'राग से होने वाली'

द्वेष प्रत्यया 'द्वेष से होने वाली'

प्रेम प्रत्यया मूर्छा दो प्रकार का कहा गई है, यथा-
माया और लोभ ।

द्वेष प्रत्यया मूर्छा दो प्रकार की कही गई है, यथा-
क्रोध और मान । [३]

१०७ आराधना दो प्रकार की कही गई है । यथा-
धार्मिक आराधना और केवलि आराधना ।

धार्मिक आराधना दो प्रकार की कही गई है । यथा-
श्रुतधर्म आराधना और चारित्र-धर्माराधना ।

केवलि आराधना दो प्रकार की कही गई है, यथा-
अन्तक्रिया (मोक्षगमन)
कल्पविमानोपपत्ति (सौधर्मादि देवलोक और नवग्रेवयक आदि विमान में जिसके द्वारा जन्म हो वह आराधना । यह आराधना श्रुतकेवली की होती है । [३]

१०८ दो तीर्थंकर नील-कमल के समान वर्ण वाले थे, यथा-
मुनिसुव्रत और अरिष्टनेमि ।

दो तीर्थङ्कर प्रियंगु (वृक्ष-विशेष) के समान वर्ण वाले थे, यथा-
श्री मल्लिनाथ और पार्श्वनाथ,

दो तीर्थङ्कर पद्म के समान गौर (लाल) वर्ण के थे, यथा-
पद्म प्रभ और वासुपुज्य ।

दो तीर्थङ्कर चन्द्र के समान गौर वर्ण शुक्ल वर्ण वाले थे, यथा-

चन्द्रप्रभ और पुष्पदन्त। [४]

१०९ सत्यप्रवाद पूर्व (छठा पूर्व) की दो वस्तुएं (अध्ययन आदि की तरह विभाग) कही गई हैं।

११० पूर्वभाद्रपद नक्षत्र के दो तारे कहे गये हैं।
उत्तरभाद्रपद नक्षत्र के दो तारे कहे गये हैं।
इसी तरह पूर्वफाल्गुन और उत्तरफाल्गुन के भी दो दो तारे कहे गये हैं, [४]

१११ मनुष्य-क्षेत्र के अन्दर दो समुद्र कहे गये हैं, यथा-

लवण समुद्र और कालोदधि समुद्र।

११२ काम भोगों का त्याग नहीं करने वाले दो चक्रवर्ती मरण-काल में मरकर नीचे सातवीं नरक-पृथ्वी के अप्रतिष्ठान नामक नरकवास में नारकरूप से उत्पन्न हुए, उनके नाम ये है, यथा-

सुभूम और ब्रह्मदत्त।

११३ असुरेन्द्रों को छोड़कर भवनवासी देवों को किंचित् न्यून दो पल्योपम की स्थिति कही गई है।
सौधर्म कल्प में देवताओं की उत्कृष्ट स्थितिदो सागरोपम की कही गई है।
ईशान कल्प में देवताओं को उत्कृष्ट किंचित् अधिक दो

सागरोपम की स्थिति कही गई है ।

सनत्कुमार कल्प में देवों की जघन्य दो सागरोपम की स्थिति कही गई है ।

माहेन्द्र कल्प में देवों की जघन्य स्थिति किंचित् अधिक दो सागरोपम की कही गई है ।

११४ दो देवलोक में देवियां कही गई हैं, यथा-

सौधर्म और ईशान ।

११५ दो देवलोक में तेजोलेश्या वाले देव कहे गये है, यथा-

सौधर्म और ईशान ।

११६ दो देवलोक में देव कायपरिचारक (मनुष्य की तरह विषय सेवन करने वाले) कहे गये हैं, यथा-

सौधर्म और ईशान,

दो देवलोक में देव स्पर्श-परिचारक कहे गये हैं, यथा-

सनत्कुमार और माहेन्द्र ।

दो कल्प में देवरूप-परिचारक कहे गये हैं, यथा-

ब्रह्म लोंक और लान्तक ।

दो कल्प में देव शब्द-परिचारक कहे गये हैं, यथा-

महाशुक्र और सहास्रर ।

दो इन्द्र मनः परिचारक कहे गये है, यथा-

प्राणत और अच्युत ।

आनत, प्राणत, आरण और अच्युत इन चारों कल्पों में

देव मनः परिचारक हैं परन्तु यहाँ द्विस्थान का अधिकार होने से "दो इंदा" ऐसा पद दिया है, क्योंकि इन चारों कल्पों में दो इन्द्र हैं अतः उनके ग्रहणसे चारों कल्पों के देवों को ग्रहण करना चाहिए)

११७ जीव ने द्विस्थान निर्वर्तक (अथवा इन कथ्यमान स्थानों में जन्म लेकर उपार्जित अथवा इन दो स्थानों में जन्म लेने से निवृत्ति होने वाले) पुद्गलों को पापकर्म रूप से एकत्रित किये हैं, एकत्रित करते हैं और एकत्रित करेंगे, वे इस प्रकार हैं, यथा-

त्रसकाय निर्वातित और स्थावरकाय निर्वातित।

इसी तरह उपचय किये, उपचय करते हैं और उपचय करेंगे,

बांधे, बांधते हैं और बांधेंगे,

उदीरणा की, उदीरणा करते हैं और उदीरणा करेंगे,

वेदन , वेदन करते हैं और वेदन करेंगे,

निर्जरा की, निर्जरा करते हैं और निर्जरा करेंगे। [७६]

११८ दो प्रदेश वाले स्कन्ध अनन्त कहे गये हैं।

दो प्रदेश में रहने वाले पुद्गल अनन्त कहे गये हैं।

इस प्रकार-यावत्-द्विगुण रूक्ष पुद्गल अनन्त कहे गये हैं।

तीन स्थान

प्रथम उद्देशक

११९ इन्द्र तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

नाम इन्द्र, स्थापना इन्द्र, द्रव्य इन्द्र ।

इन्द्र तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

ज्ञान इन्द्र, दर्शन इन्द्र और चारित्र इन्द्र[1]

इन्द्र तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

देवेन्द्र, असुरेन्द्र और मनुष्येन्द्र[2] [३]

१२० विकुर्वणा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके की जाने वाली विकुर्वणा,

एक बाह्य पुद्गलों को ग्रहण किये बिना की जाने वाली विकुर्वणा,

एक बाह्य पुद्गलों को ग्रहण करके और ग्रहण किये बिना भी की जाने वाली विकुर्वणा ।

विकुर्वणा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक आभ्यन्तर पुद्गलों को ग्रहण करके की जाने वाली विकुर्वणा,

---

१. आत्मिक ऐश्वर्य की अपेक्षा ।

२. बाह्य ऐश्वर्य की अपेक्षा ।

एक आभ्यन्तर पुद्गलों को ग्रहण किये विना की जाने वाली विकुर्वणा,

एक आभ्यन्तर पुद्गलों को ग्रहण करके और ग्रहण किये विना भी की जाने वाली विकुर्वणा।

विकुर्वणा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक वाह्य और आभ्यन्तर पुद्गलों को ग्रहण करके की जाने वाली विकुर्वणा,

एक वाह्य आभ्यन्तर पुद्गलोंको ग्रहण किये विना की जाने वाली विकुर्वणा

एक वाह्य तथा आभ्यन्तर पुद्गलों को ग्रहण करके और विना ग्रहण किये भी की जाने वाली विकुर्वणा। [३]

२२१ नारक तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

कतिसंचित—एक समय में दो से लेकर संख्यात तक उत्पन्न होने वाले,

अकतिसंचित—एक समय में असंख्यात उत्पन्नहोने वाले,

अवक्तव्यक संचित— एक समय में एक ही उत्पन्न होने वाले।

इस प्रकार एकेन्द्रिय को छोड़ कर शेष अकतिसंचित ही हैं। क्योंकि वे एक समय में असंख्यात या अनन्त उत्पन्न होते हैं

इसी तरह वैमानिक पर्यन्त तीन भेद जानने चाहिए।

१२२ परिचारणा (देवों का विषय-सेवन) तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

कोई देव अन्य देवों को या अन्य देवों की देवियों को वश में करके या आलिंगनादि करके विषय सेवन करता है, अपनी देवियों को आलिंगन कर विषय-सेवन करता है और अपने शरीर की विकुर्वणा कर अपने आप से ही विषय सेवन करता है।

कोई देव अन्य देवों और अन्य देवों की देवियों को वश में करके तो विषय सेवन नहीं करता है परन्तु अपनी देवियों का आलिंगन कर विषय-सेवन करता है।

कोई देव अन्य देवों और अन्य देवों की देवियों को वश में करके विषय-सेवन नहीं करता है और न अपनी देवियों का आलिंगनादि करके भी विषय-सेवन करता है

१२३ मैथुन तीन प्रकार का कहा गया है। यथा-

देवता सम्बन्धी,

मनुष्य सम्बन्धी

तिर्यंच योनि सम्बन्धी।

तीन प्रकार के जीव मैथुन करते हैं, यथा-

देव, मनुष्य और तिर्यंच योनिक जीव।

तीन वेद वाले जीव मैथुन सेवन करते हैं, यथा-

स्त्री, पुरुष और नपुंसक। [३]

१२४ योग तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

मनोयोग, वचनयोग और काययोग।

इस प्रकार नारक जीवों के तीन योग होते हैं,

यों विकलेन्द्रिय को छोड़कर वैमानिक पर्यन्त तीन योग समझने चाहिए। [१]

तीन प्रकार के प्रयोग (प्रवृत्ति) कहे गये हैं, यथा-

मनः प्रयोग, वाक् प्रयोग और काय प्रयोग।

जैसे विकलेन्द्रिय को छोड़कर योग का कथन किया वैसा ही प्रयोग के विषय में भी जानना चाहिये। [१]

करण तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

मनः करण, वचन करण और काय करण

इसी तरह विकलेन्द्रिय को छोड़कर वैमानिक पर्यन्त तीन करण जानने चाहिए। [१]

करण तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

आरम्भ करण, संरम्भ करण और समारम्भ करण।

यह अन्तर रहित वैमानिक पर्यन्त जानने चाहिए। [१-३]

१२५ तीन कारणों से जीव अल्पायु रूप कर्म का बंध करते हैं,

यथा-

यदि वह प्राणियों की हिंसा करता है,

झूठ बोलता है,

और तथारूप श्रमण-माहन को (निर्ग्रन्थ मुनि को) अप्रासुक अशन आहार, पान, खादिम तथा स्वादिम बहराता है,

इन तीन कारणों से जीव अल्पायु रूप कर्म का बंध करते हैं। [१]

तीन कारणों से जीव दीर्घायु रूप कर्मों का बंध करते हैं, यथा-

यदि वह प्राणियों की हिंसा नहीं करता है,

झूठ नहीं बोलता है,

तथारूप श्रमण-माहन को प्रासुक एषणीय अशन, पान, खादिम तथा स्वादिम का दान करता है, ।

इन तीन कारणों से जीव दीर्घायु रूप कर्म का बंध करते हैं। [१]

तीन कारणों से जीव अशुभ दीर्घायु रूप कर्म का बंध करते हैं। यथा-

यदि वह प्राणियों की हिंसा करता हैं,

झूठ बोलता है,

तथारूप श्रमण-माहन की हीलना करके निन्दा करके, भर्त्सना करके, गर्हा करके और अपमान करके किसी प्रकार का अमनोज्ञ एवं अप्रीतिकर अशनादि देता है,

इन तीन कारणों से जीव अशुभ दीर्घायु रूप कर्म का वंध करते हैं। [१]

तीन कारणोंसे जीव शुभ दीर्घायु रूप कर्मका वंध करते हैं। यथा-

यदि वह प्राणियों की हिंसा नहीं करता है,

झूठ नहीं बोलता है

तथारूप श्रमण-माहन को वन्दना करके, नमस्कार करके, सत्कार करके, सन्मान करके, कल्याणरूप, मगलरूप, देवरूप और ज्ञानरूप मानकर तथा सेवा-शुश्रूषा करके मनोज्ञ प्रीतिकर, अशन, पान, खादिम, स्वादिम का दान करता है,

इन तीन कारणों से जीव शुभदीर्घायुरूप कर्म का वंध करते हैं। [१-४]

१२६ तीन गुप्तियाँ कही गई हैं, यथा-

मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति।

सयत मनुष्यों की तीन गुप्तियां कही गई हैं, यथा-

मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति। [२]

तीन अगुप्तियां कही गई हैं, यथा-

मन-अगुप्ति, वचन-अगुप्ति और काय-अगुप्ति,

इसी प्रकार नारक-यावत्-स्तनितकुमारों की तीन अगुप्तियां कही गई हैं, यथा-

पंचेन्द्रिय, तिर्यंच, योनिक, असंयत, मनुष्य और वान-व्यन्तर, ज्योतिष्क वैमानिक देवों की तीन अगुप्तियां कही गई हैं। [२]

तीन दण्ड कहे गये हैं, यथा-

मन दण्ड, वचन दण्ड और काय दण्ड।

नारकों के तीन दण्ड कहे गये हैं, यथा-

मन दण्ड, वचन दण्ड और काय दण्ड।

विकलेन्द्रियों (एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक) को छोड़ कर वैमानिक पर्यन्त तीन दण्ड जानने चाहिए। [२-६]

१२७ तीन प्रकार की गर्हा कही गई हैं, यथा-

कुछ व्यक्ति मन से गर्हा करते हैं,

कुछ व्यक्ति वचन से गर्हा करते हैं,

कुछ व्यक्ति पाप कर्म नहीं करके काया द्वारा गर्हा करते हैं (पाप कर्म में प्रवृत्ति नहीं करना ही काय-गर्हा है)

अथवा गर्हा तीन प्रकार की कही गई हैं, यथा-

कितनेक दीर्घ काल की गर्हा करते हैं,

कितनेक थोड़े काल की गर्हा करते हैं,

कितनेक पाप कर्म नहीं करने के लिए अपने शरीर को उनसे (पाप कर्मों से) दूर रखते हैं अर्थात् पाप कर्म में प्रवृत्ति नहीं करना रूप गर्हा करते हैं। [२]

प्रत्याख्यान तीन प्रकार के हैं, यथा-

कुछ व्यक्ति मन के द्वारा प्रत्याख्यान करते हैं,

कुछ व्यक्ति वचन के द्वारा प्रत्याख्यान करते हैं,

कुछ व्यक्ति काया के द्वारा प्रत्याख्यान करते हैं।

जिस प्रकार गर्हा का कथन किया उसी प्रकार प्रत्याख्यान के विषय में भी दो आलापक कहने चाहिए। [१-४]

१२८ वृक्ष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

पत्रयुक्त, फलयुक्त और पुष्पयुक्त। [१]

इसी तरह तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

पत्र वाले वृक्ष के समान,

फल वाले वृक्ष के समान,

फूल वाले वृक्ष के समान। [१]

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

नाम पुरुष, स्थापना पुरुष और द्रव्य पुरुष। [१]

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

ज्ञान पुरुष, दर्शन पुरुष और चारित्र पुरुष । [१]

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

वेद पुरुष, चिन्ह पुरुष और अभिलाप पुरुष [१]

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और जघन्य पुरुष ।

उत्तम पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा

धर्म पुरुष, भोग पुरुष और कर्म पुरुष ।

धर्म पुरुष अर्हन्त देव हैं,

भोग पुरुष चक्रवर्ती हैं,

कर्म पुरुष वासुदेव हैं ।

मध्यम पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

उग्र वंशी, भोग वंशी, और राजन्य वंशी ।

जघन्य पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

दास, भृत्य और भागीदार । [४-६]

२६ मत्स्य (मच्छ) तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अण्डे से उत्पन्न होने वाले,

पोत से (बिना किसी आवरण के) पैदा होने वाले,

संमूर्छिम (सयोग के बिना) स्वत: उत्पन्न होने वाले ।

अण्डज मत्स्य तीन प्रकार के हैं, यथा-

स्त्री मत्स्य, पुरुष मत्स्य और नपुंसक मत्स्य ।

पोतज मत्स्य तीन प्रकार के हैं, यथा-

स्त्री, पुरुष और नपुंसक। [३]

पक्षी तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अण्डज, पोतज और सम्मूर्छिम।

अण्डज पक्षी तीन प्रकार के हैं, यथा-

स्त्री, पुरुष और नपुंसक।

पोतज पक्षी तीन प्रकार के हैं, यथा-

स्त्री, पुरुष और नपुंसक।

इस अभिलापक से उरपरिसर्प और भुजपरिसर्प का भी कथन करना चाहिए। [३-१२]

१३० इसी प्रकार तीन प्रकार की स्त्रियां कही गई हैं, यथा-

तिर्यंच योनिक स्त्रियां

मनुष्य योनिक स्त्रियां

देव-स्त्रियां। [१]

तिर्यंच स्त्रियां तीन प्रकार की कही गई हैं, यथा-

जलचर स्त्री, स्थलचर स्त्री, खेचर स्त्री। [१]

मनुष्य-स्त्रियां तीन प्रकार की हैं, यथा-

कर्मभूमि में पैदा होने वाली,

अकर्मभूमि में पैदा होने वाली,

अन्तर्द्वीप में उत्पन्न होने वाली। [१]

पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

तिर्यंचयोनिक पुरुष,

मनुष्ययोनिक पुरुष

देव पुरुष । [१]

तिर्यंचयोनिक पुरुष तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

जलचर, स्थलचर और खेचर । [१]

मनुष्ययोनिक पुरुष तीन प्रकार के हैं, यथा-

कर्मभूमि में उत्पन्न होने वाले,

अकर्मभूमि में उत्पन्न होने वाले,

अन्तर्द्वीपों में पैदा होने वाले । [१]

नपुंसक तीन प्रकार के हैं, यथा-

नैरयिक नपुँसक,

तिर्यंचयोनिक नपुंसक,

मनुष्य नपुंसक । [१]

तिर्यंचयोनिक नपुंसक तीन प्रकार के हैं, यथा-

जलचर, स्थलचर और खेचर । [१-८]

मनुष्य नपुंसक तीन प्रकार के हैं, यथा-

कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज और अन्तर्द्वीपिक । [१]

१३१ तिर्यंच योनिक तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

स्त्री, पुरुष और नपुंसक ।

१३२ नारक जीवों की तीन लेश्याएं कही गई हैं, यथा-

कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या।

असुरकुमारों की तीन अशुभ लेश्याएं कही गई हैं,[1] यथा-

कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या।

इसी प्रकार स्तनितकुमार पर्यन्त जानना चाहिए।

इसी प्रकार पृथ्वीकायिक अप्कायिक और वनस्पति कायिक जीवों की लेश्या समझना चाहिए।

इसी प्रकार तेजस्काय और वायुकाय की लेश्या भी जाननी चाहिए।

द्वीन्द्रिय,

त्रीन्द्रिय,

और चतुरिन्द्रियों के भी तीन लेश्याएं नारक जीवों के समान कही गई हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकों के तीन अशुभ लेश्याएं कही गई हैं। यथा-

कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या।

---

१ असरकुमारों को चार लेश्याएं होती हैं, परन्तु चौथी तेजोलेश्या अशुभ नहीं है अतः यहां तीन अशुभ लेश्याएं ही गिनाई गई हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकों के तीन लेश्याएं शुभ कही गई है।
यथा-

तेजोलेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या।

इसी प्रकार मनुष्यों के भी तीन लेश्या समझनी चाहिए।

असुरकुमारों के समान वानव्यन्तरों के भी तीन लेश्या समझनी चाहिए।

वैमानिकों के तीन लेश्याएं कही गई हैं, यथा-

तेजोलेश्या, पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या। [१]

१३३ तीन कारणों से तारे अपने स्थान से चलित होते हैं,
यथा-

वैक्रिय करते हुए,
विषय-सेवन करते हुए;
एक स्थान से दूसरे स्थान पर संक्रमण करके जाते हुए
तारे चलित होते हैं। [१]

तीन कारणों से देव विद्युत् चमकाते हैं, यथा-

वैक्रिय करते हुए,
विषय-सेवन करते हुए
तथारूप श्रमण-माहन को ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य, और पौरुष पराक्रम बताते हुए विद्युत् चमकाते हैं। [१]

तीन कारणों से देव मेघ गर्जना करते हैं, यथा-

वैक्रिय करते हुए जिस प्रकार विद्युत् चमकाने के लिए

कहा वैसा ही मेघ गर्जना के लिए भी समझना चाहिए। [१-३]

१३४ तीन कारणों से (तीन प्रसंगों पर) लोक में अन्धकार होता है, यथा-

अर्हन्त भगवान् के निर्वाण-प्राप्त होने पर[1]

अर्हन्त-प्ररूपित धर्म (तीर्थ) के विच्छिन्न होने पर,

पूर्वगत श्रुत के विच्छिन्न होने पर। [१]

तीन कारणों से लोक में उद्योत होता है, यथा-

अर्हन्त भगवान् के जन्म धारण करते समय,

अर्हन्त के प्रव्रज्या अंगीकार करते समय,

अर्हन्त भगवान् के केवल ज्ञान महोत्सव के समय। [१]

तीन कारणों से देव-भवनों में भी अन्धकार होता है, यथा-

अर्हन्त भगवान् के निर्वाण प्राप्त होने पर,

अर्हन्त प्ररूपित धर्म का विच्छेद होने पर,

पूर्वगत श्रुत के विच्छिन्न होने पर।

तीन प्रसंगों पर देवलोक में विशेष उद्योत होता है, यथा-

अर्हन्त भगवंतों के जन्म महोत्सव पर,

अर्हन्तों के दीक्षा महोत्सव पर,

अर्हन्तों के केवलज्ञान महोत्सव पर। [१]

तीन प्रसंगों पर देव इस पृथ्वी पर आते हैं, यथा-

---

१. लोक में अर्हन्तरूप भाव सूर्य के न होने पर।

अर्हन्तों के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवल ज्ञान महोत्सव पर। [१]

इसी तरह देवताओं का समूह रूप में एकत्रित होना और देवताओं का हर्षनाद भी समझना चाहिए। [२]

तीन प्रसंगों पर देवेन्द्र मनुष्य लोक में शीघ्र आते हैं, यथा-

अर्हन्तों के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवल ज्ञान महोत्सव पर। [१]

इसी प्रकार—

सामानिक देव,

त्रायस्त्रिंशक देव,

लोकपाल देव,

अग्रमहिषीदेवियों की पर्षद् (परिवार) के देव,

सेनाधिपति देव,

आत्मरक्षक देव मनुष्य-लोक में शीघ्र आते हैं। [६]

तीन प्रसंगों पर देव सिंहासन से उठते हैं, यथा-

अर्हन्तों के जन्म महोत्सव पर,

उनके दीक्षा महोत्सव पर,

उनके केवलज्ञान-प्रसंग महोत्सव पर।[१]

इसी तरह तीन प्रसंगों पर उनके आसन चलायमा
होते हैं, वे सिंह नाद करते हैं और वस्त्र-वृष्टि कर
हैं। [३]

तीन प्रसंगों पर देवताओं के चैत्यवृक्ष चलायमान होते ;
यथा-

अर्हन्तों के जन्म महोत्सव पर। इत्यादि पूर्ववत् [१]

तीन प्रसंगों पर लोकान्तिक देव मनुष्य-लोक में शीघ्र आत
है, यथा-

अर्हन्तों के जन्म महोत्सव पर,
उनके दीक्षा महोत्सव पर
उनके केवलज्ञान महोत्सव पर। [१-१६]

१३५ हे आयुष्मन् श्रमणो ! तीन व्यक्तियों पर प्रत्युपकार कठिन
है, यथा-

माता पिता स्वामी (पोषक) और धर्माचार्य।
कोई पुरुष (प्रतिदिन) प्रातःकाल होते ही माता-पिता
को शतपाक, सहस्रपाक तेल से मर्दन करके सुगन्धित
उवटन लगाकर तीन प्रकार के (गन्धोदक उष्णोदक,
शीतोदक) जल से स्नान करा कर, सर्व अलंकारों से
विभूषित करके मनोज्ञ, हांडी में पकाया हुआ, शुद्ध
अठारह प्रकार के व्यंजनों (शाकादि) से युक्त भोजन
जिमाकर यावज्जीवन कावड़ में बिठाकर कंधे पर

लेकर फिरता रहे तो भी उपकार का वदला नहीं चुका सकता है किन्तु वह माता-पिता को केवलि प्ररूपित धर्म वताकर, समझाकर और प्ररूपणा कर उसमें स्थापित करे तो ऐसा करने से वह उन माता पिता के उपकार का सुचारु रूप से वदला चुका सकता है।

कोई महा ऋद्धिवाला पुरुष किसी दरिद्र को धन आदि देकर उन्नत वनाए तदनन्तर वह दरिद्र धनादि से समृद्ध वनने पर उस सेठ के असमक्ष अथवा समक्ष ही विपुल भोग सामग्री से युक्त होकर विचरता हो, इसके वाद वह ऋद्धिवाला पुरुष कदाचित् (दैवयोग से) दरिद्र वन कर उस (पूर्व के) दरिद्र के पास शीघ्र आवे उस समय वह (पहले का) दरिद्र (वर्तमान का श्रीमन्त) अपने इस स्वामी को सर्वस्व देता हुआ भी उसके उपकार का वदला नहीं चुका सकता है किन्तु वह अपने स्वामी को केवलिप्ररूपित धर्म वता कर समझाकर और प्ररूपणा कर उसमें स्थापित करता है तो इससे वह अपने स्वामी के उपकार का भलीभांति वदला चुका सकता है।

कोई व्यक्ति तथारूप श्रमण-माहन के पास से एक भी आर्य (श्रेष्ठ) धार्मिक सुवचन सुनकर-समझकर मृत्यु

के समय मर कर किसी देवलोक में देवरूप से उत्पन्न हुआ। तदनन्तर वह देव उन धर्माचार्य को दुर्भिक्ष वाले देश से सुभिक्ष वाले देश में ले जाकर रख दे, जंगल में भटकते हुए को जंगल से बाहर ले जाकर रख दे, दीर्घ-कालीन व्याधि-ग्रस्त को रोग मुक्त करदे तो भी वह धर्माचार्य के उपकार का बदला नहीं चुका सकता है किन्तु वह केवलि प्ररूपित धर्म से (संयोगवश) भ्रष्ट हुए धर्माचार्य को पुनः केवलि-प्ररूपित धर्म बता कर-यावत्-उसमें स्थापित कर देता है तो वह उन धर्माचार्य के उपकार का बदला भलीभांति चुका सकता है।

२३६ तीन स्थानों (गुणों) से युक्त अनगार अनादि-अनन्त दीर्घ-मार्ग वाले चार गतिरूप संसार-कान्तार को पार कर लेता है वे इस प्रकार हैं, यथा-

निदान (भोग ऋद्धि आदि की इच्छा) नहीं करने से,
सम्यक्दर्शन युक्त होने से,
समाधि में रहने से।

अथवा उपधान-तपश्चर्या पूर्वक श्रुत का अभ्यास करने से।

२३७ तीन प्रकार की अवसर्पिणी कही गई है, यथा-

उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य।

इस प्रकार छहों आरक का कथन करना चाहिए-यावत्-दुषमदुषमा । [७]

तीन प्रकार की उत्सर्पिणी कही गई है, यथा-

उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य ।

इस प्रकार छ आरक समझने चाहिये-यावत्-सुषम सुषमा । [७-१४]

१३८ तीन कारणों से अच्छिन्न पुद्गल अपने स्थान से चलित होते है, यथा-

आहार के रूप में जीव के द्वारा गृह्यमान होने पर पुद्गल अपने स्थान से चलित होते है,

वैक्रिय किये जाने पर उसके वशवर्ति होकर पुद्गल स्वस्थान से चलितहोते है,

एक स्थान से दूसरे स्थान पर संक्रमण किये जाने पर (ले जाये जाने पर) पुद्गल स्वस्थान से चलित होते है । [१]

उपधि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

कर्मोपधि, शरीरोपधि और बाह्य-भाण्डोपकरणोपधि ।

असुरकुमारों के तीन प्रकार की उपधि कहनी चाहिये ।

यों एकेन्द्रिय और नारक को छोड़ कर वैमानिक पर्यन्त

तीन प्रकार की उपधि समझनी चाहिये। [२]

अथवा तीन प्रकार की उपधि कही गई है, यथा-
सचित्त, अचित्त और मिश्र।

इस प्रकार निरन्तर नैरयिक जीवों को-यावत्-वैमानिकों को तीनों ही प्रकार की उपधि होती है। [२-४]

परिग्रह तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-
कर्म-परिग्रह,
शरीर परिग्रह
वाह्य-भाण्डोपकरण-परिग्रह।

असुरकुमारों को तीनों प्रकार का परिग्रह होता है। यों एकेन्द्रिय और नारक को छोड़ कर वैमानिक पर्यन्त समझना चाहिए। [२]

अथवा तीन प्रकार का परिग्रह कहा गया है, यथा-
सचित्त, अचित्त और मिश्र।

निरन्तर नैरयिक यावत् – विमानवासी देवों को तीनों प्रकार का परिग्रह होता है। [२-४]

१३९ तीन प्रकार का प्रणिधान (एकाग्रता) कहा गया है, यथा-
मन-प्रणिधान, वचन-प्रणिधान और काय-प्रणिधान।

यह तीन प्रकार का प्रणिधान पंचेन्द्रियों से लेकर वैमा-

निक पर्यन्त सब दण्डकों में पाया जाता है। [२]

तीन प्रकार का सुप्रणिधान कहा गया है, यथा-

मन का सुप्रणिधान,

वचन का सुप्रणिधान,

काय का सुप्रणिधान।

संयत मनुष्यों का तीन प्रकार का सुप्रणिधान कहा गया है, यथा—

मनका सुप्रणिधान,

वचन का सुप्रणिधान

काय का सुप्रणिधान। [२]

तीन प्रकार का अशुभ प्रणिधान कहा गया है, यथा-

मन का अशुभ प्रणिधान

वचन का अशुभ प्रणिधान,

काय का अशुभ प्रणिधान।

यह पंचेन्द्रिय से लेकर वैमानिक पर्यन्त होता है। [२०६]

४० योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

शीत, उष्ण और शीतोष्ण।

यह तेजस्काय को छोड़ कर शेष एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय संमूर्छिम तिर्यंच योनिक पंचेन्द्रिय और संमूर्छिम मनुष्यों को होती है। [२]

योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र।

यह एकेन्द्रियों, विकलेन्द्रियों सम्मूर्छिम तिर्यंचयोनिक पंचेन्द्रियों और सम्मूर्छिम मनुष्यों को होती है। [२]

योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा —

संवृता, विवृता और संवृत-विवृता।

योनि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

कूर्मोन्नता, शंखावर्त्ता और वंशीपत्रिका।

उत्तम पुरुषों की माताओं की कूर्मोन्नता योनि होती है। कूर्मोन्नता योनि में तीन प्रकार के उत्तम पुरुष गर्भ रूप में उत्पन्न होते हैं, यथा-

अर्हन्त चक्रवर्ती और बलदेव-वासुदेव

चक्रवर्ती के स्त्रीरत्न की योनि शंखावर्त्त होती है। शंखावर्त्त योनि में बहुत से जीव और पुद्गल पैदा होते हैं, एवं नष्ट होते हैं किन्तु जन्म धारण नहीं करते हैं।

वंशीपत्रिकायोनि सामान्य मनुष्यों की योनि है। वंशी पत्रिका योनि में बहुत से सामान्य मनुष्य गर्भरूप में उत्पन्न होते हैं। [२-६]

१४१ तृण (बादर) वनस्पतिकाय तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

संख्यात जीव वाली, असंख्यात जीव वाली, अनन्त जीव वाली।

१४२ जम्बूद्वीपवर्ती भरतक्षेत्र में तीन तीर्थ कहे गये हैं, यथा-
मागध, वरदाम और प्रभास ।
इसी तरह ऐरवत क्षेत्र में भी समझने चाहिए ।
जम्बूद्वीपवर्ती महाविदेह क्षेत्र में एक एक चक्रवर्ती विजय में तीन तीर्थ कहे गये हैं,[१] यथा-
मागध, वरदाम और प्रभास ।
इसी तरह धातकीखण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में और पश्चिमार्ध में तथा अर्धपुष्करवरद्वीप के पूर्वार्ध में और पश्चिमार्ध में भी इसी तरह जानना चाहिये । [७]

१४३ जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी काल के सुषम नामक आरक का काल तीन कोड़ाकोड़ी सागरोपम था ।
इसी तरह इस अवसर्पिणी काल के सुषम आरक का काल इतना ही (तीन कोड़ाकोडी सागरोपम) कहा गया है ।
आगामी उत्सर्पिणी के सुषम आरक का काल इतना ही होगा । [६]

---

१ चक्रवर्ती के समुद्र तथा सीतादि महानदियों में उतरने के मार्ग को तीर्थ कहते हैं ।

इसी तरह धातकीखण्ड के पूर्वार्ध में और पश्चिमार्ध में भी। [६]

इसी तरह अर्ध पुष्करवर द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में भी काल का कथन करना चहिए। [६]

जम्बूद्वीपवर्ती भरत ऐरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी काल के सुषमसुषमा आरे में मनुष्य तीन कोस की ऊंचाई वाले और तीन पल्योपम के परमायुष्य[१] वाले थे।

इसी तरह इस अवसर्पिणी काल और आगामी उत्सर्पिणी काल में भी समझना चाहिए। [६]

जम्बूद्वीपवर्ती देवकुरु और उत्तरकुरु में मनुष्य तीन कोस की ऊंचाई वाले कहे गये हैं तथा वे तीन पल्योपम की परमायु वाले हैं। [२]

इसी तरह अर्धपुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्ध तक का कथन करना चाहिए। [२]

जम्बूद्वीप वर्ती भरत-ऐरवत क्षेत्र में एक एक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी में तीन वंश (उत्तम पुरुष परम्परा) उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे, यथा-

अर्हन्तवंश, चक्रवर्ती-वंश और दशार्हवंश।

---

१. निरुपक्रम आयु वाले होने से 'परमायु' कहा गया है।

इसी तरह अर्ध पुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्ध तक कथन करना चाहिए । [४]

जम्बूद्वीप के भरत, ऐरवत क्षेत्र में एक एक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल में तीन प्रकार के उत्तम पुरुष उत्पन्न हुए । उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे, यथा-

अर्हन्त, चक्रवर्ती और बलदेव-वासुदेव ।

इस प्रकार अर्धपुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्ध तक समझना चाहिए । [४]

तीन यथायु का पालन करते हैं (निरुपक्रम आयुवाले होते हैं), यथा-

अर्हन्त, चक्रवर्ती और बलदेव-वासुदेव । [१]

तीन मध्यमायु का पालन करते हैं (वृद्धत्व रहित आयु वाले होते हैं) । यथा-

अर्हन्त, चक्रवर्ती और बलदेव-वासुदेव । [१-३८]

१४४ बादर तेजस्काय के जीवों की उत्कृष्ट स्थिति तीन अहोरात्र की कही गई है,

बादरवायुकाय की उत्कृष्ट स्थिति तीन हजार वर्ष की कही गई है ।

१४५ प्रश्न हे भदन्त ! शालि (उत्तम चावल) व्रीहि (सामान्य चावल) गेहूं, जौ, यवयव (विशेष प्रकार का जौ) इन

धान्यों को कोठों में सुरक्षित रखने पर, पल्य (धान्य भरने के पात्र विशेष) में सुरक्षित रखने पर, मंच पर सुरक्षित रखने पर, ढक्कन लगाकर, लीप कर, सब तरफ लीप कर, रेखादि के द्वारा लांच्छित करने पर, मिट्टी की मुद्रा लगाने पर अच्छी तरह बन्द रखने पर इनकी कितने काल तक योनि (उत्पादन-शक्ति) रहती है ?

उत्तर हे गौतम ! जघन्य अन्तमुहूर्त्त और उत्कृष्ट तीन वर्ष तक योनि रहती है, इसके बाद योनि म्लान हो जाती है, इसके बाद ध्वंसाभिमुख होती है, नष्ट हो जाती है, इसके बाद जीव अजीव हो जाता है और तत्पश्चात् योनि का विच्छेद हो जाता है ।

१४६ दूसरी शर्कराप्रभा नरक-पृथ्वी के नारकों की तीन सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति कही गई है ।

तीसरी वालुकाप्रभा पृथ्वी में नारकों की तीन सागरोपम की जघन्य स्थिति कही गई है । [२]

१४७ पांचवीं धूमप्रभा-पृथ्वी में तीन लाख नरकावास कहे गये हैं ।

तीन नरक-पृथ्वियों में नारकों को उष्णवेदना कही गई है, यथा-

पहली, दूसरी और तीसरी नरक में ।

तीन पृथ्वियों में नारक उष्णवेदना का अनुभव करते हैं, यथा-

प्रथम, दूसरी और तीसरी नरक में। [३]

१४८ लोक में तीन समान प्रमाण (लम्बाई-चौडाई) वाले, समान पार्श्व (आजू-बाजू) वाले और सब विदिशाओं में भी समान कहे गये हैं, यथा-

अप्रतिष्ठान नरक,

जम्बूद्वीप,

सवार्थसिद्ध महा विमान। [१]

लोक में तीन समान प्रमाण वाले, समान पार्श्ववाले और सब विदिशाओं में समान कहे गये हैं, यथा-

सीमन्त नरकावास, समयक्षेत्र, ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी। [१]

१४९ तीन समुद्र प्रकृति से उदकरस वाले कहे गये हैं, यथा-

कालोदधि, पुष्करोदधि, और स्वयंभूरमण। [१]

तीन समुद्रों में मच्छ कच्छ आदि जलचर विशेष रूप से कहे गये हैं, यथा-

लवण, कालोदधि और स्वयंभूरमण। [१] [२]

१५० शीलरहित, व्रतरहित, गुणरहित, मर्यादा रहित, प्रत्याख्यान पौषध-उपवास आदि नहीं करने वाले तीन प्रकार के व्यक्ति मृत्यु के समय मर कर नीचे सातवीं नरक के अप्रतिष्ठान नामक नरकावास में नारक रूप से उत्पन्न होते हैं, यथा—

चक्रवर्ती, वासुदेव आदि राजा,
माण्डलिक राजा (शेष सामान्य राजा)
महारम्भ करने वाले कुटुम्बी। [१]
सुशील, सुव्रती, सद्‌गुणी मर्यादावाले, प्रत्याख्यान-पौषध उपवास करने वाले तीन प्रकार के व्यक्ति मृत्यु के समय मर कर सर्वार्थसिद्ध महाविमान में देव रूप से उत्पन्न होते हैं, यथा-

काम भोगों का त्याग करने वाले राजा,
काम भोग के त्यागी सेनापति,
प्रशास्ता-धर्माचार्य।

१५१ ब्रह्मलोक और लान्तक देवलोक में विमान तीन वर्ण वाले कहे गये हैं। यथा-

काले, नीले और लाल। [१]

आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्प में देवों के भवधारणीय शरीरों की ऊंचाई तीन हाथ की कही गई है। [१-४]

१५२ तीन प्रज्ञप्तियां नियत समय पर पढ़ी जाती हैं, यथा-
चन्द्रप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति और द्वीप सागर प्रज्ञप्ति।

द्वितीय उद्देशक

१५३ लोक तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

नामलोक, स्थापनालोक, और द्रव्यलोक ।

भाव लोक तीन प्रकार का कहे गये हैं, यथा-

ज्ञानलोक, दर्शनलोक, और चारित्रलोक ।

लोक तीन प्रकार के कहे गये हैं. यथा-

ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग्लोक । [३]

१५४ असरकुमारराज असुरेन्द्र चमर की तीन प्रकार की परिषद् कही गई हैं, यथा-

समिता[1] चण्डा[2] और जाया[3] ।

समिता आभ्यन्तर परिपद् है,

चण्डा मध्यम परिपद् है,

जाया वाह्य परिपद् है ।

असुरकुमारराज असुरेन्द्र चमर के सामानिक देवों की तीन परिपद् है समिता आदि चमरेन्द्र की तरह ।

इसी तरह त्रायस्त्रिंशकों की भी परिषद् जानें ।

लोकपालों की तुम्बा, त्रुटिता और पर्वा ।

इसी तरह अग्रमहिषियों की भी परिषद् जानें ।

वलीन्द्र की भी इसी तरह तीन परिषद् समझनी चाहिये ।

---

१. जिसके सभासद बुलाने पर आते हैं ।

२. जिसके सभासद् बुलाने पर भी आते हैं और न बुलाने पर भी आते हैं ।

३. जिसके सभासद् विना बुलाये आते हैं ।

अग्रमहिषी पर्यन्त इसी तरह परिषद् जाननी चाहिये। धरणेन्द्र की, उसके सामानिक और त्रायस्त्रिंशकों की तीन प्रकार की परिषद् कही गई हैं, यथा-

समिता, चण्डा और जाया।

इसके लोकपाल और अग्रमहिषियों की तीन परिषद् कही गई है, यथा-

ईषा, त्रुटिता और दृढ़रथा।

धरणेन्द्र की तरह शेष भवनवासी देवों की परिषद् जाननी चाहिए।

पिशाच-राज, पिशाचेन्द्र काल की तीन परिषद् कही गई हैं, यथा-

ईषा, त्रुटिता और दृढरथा।

इसी तरह सामानिक देव और अग्रमहिषियों की भी परिषद् जानें।

इसी तरह—यावत्—गीतरति और गीतयशा की भी परिषद् जाननी चाहिये।

ज्योतिष्कराज ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र की तीन परिषद् कही गई हैं, यथा-

तुम्बा, त्रुटिता और पर्वा।

इसी तरह सामानिक देव और अग्रमहिषियों की भी परिषद् जानें।

इसी तरह सूर्य की भी परिषद् जानें।

देवराज देवेन्द्र शक्र की तीन परिषद् कही गई हैं, यथा-

समिता, चण्डा और जाया।

इसी प्रकार अग्रमहिषी पर्यन्त चमरेन्द्र के समान तीन परिषद् कहना चाहिए।

इसी तरह अच्युत के लोकपाल पर्यन्त तीन परिषद् समझनी चाहिए।

१५५ तीन याम कहे गये हैं, यथा-

प्रथम याम, मध्यम याम और अन्तिम याम[1]। [१]

तीन यामों में आत्मा केवलि-प्ररूपित धर्म सुनसकता है, यथा-

प्रथम याम में, मध्यम याम में और अन्तिम याम में।

इसी तरह —यावत्— आत्मा तीन यामों में केवलज्ञान उत्पन्न करता है, यथा-

प्रथम याम में, मध्यम याम में और अन्तिम याम में। [११]

तीन वय कही गई है, यथा-

---

१. यद्यपि दिन और रात्रि के चतुर्थ भाग को सामान्यतया याम प्रहर कहा जाता है तथापि यहाँ पूर्वरात्रि, मध्यरात्रि और अन्तिमरात्रि तथा पूर्व दिन, मध्यदिन और अन्तिम दिन इसी विवक्षा से यहां ये तीन याम कहे गये हैं। इसी विवक्षा से रात्रि को त्रियामा कहा गया है।

प्रथम वय, मध्यम वय और अन्तिम वय । [१]

इन तीनों वय में आत्मा केवलि-प्रज्ञप्त धर्म सुन पाता है, यथा-

प्रथमवय, मध्यमवय और अन्तिमवय ।

केवलज्ञान उत्पन्न होने तक का कथन पहले के समान ही जानना चाहिए । [११-२४]

१५६ बोधि तीन प्रकार की कही गई हैं । यथा-

ज्ञान बोधि, दर्शन बोधि और चारित्र बोधि ।

'सम्यग्ज्ञानदर्शन' का फल होने से बोधि कहा गया है । [१]

तीन प्रकार के बुद्ध कहे गये हैं, यथा-

ज्ञानबुद्ध, दर्शनबुद्ध और चारित्रबुद्ध । [१]

इसी तरह तीन प्रकार का मोह और-

तीन प्रकार के मूढ समझने चाहिए । [२-४]

१५७ प्रवज्या (दीक्षा) तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

इहलोकप्रतिबद्धा—इस लोक में उत्तम भोजनादि की इच्छा से ली गई ।

परलोक प्रतिबद्धा—स्वर्ग आदि में सुख की इच्छा से ली गई ।

उभय-लोकप्रतिबद्धा—दोनों जगह सुख की इच्छा से ली गई ।

तीन प्रकार की प्रव्रज्या कही गई है, यथा-

पुरतः प्रतिवद्धा,[1]
मार्गतः प्रतिबद्धा[2]
उभयतः प्रतिवद्धा।

तीन प्रकार की प्रव्रज्या कही गई है, यथा-
व्यथा उत्पन्न कर दी जाने वाली दीक्षा,
अन्यत्र ले जाकर दी जाने वाली दीक्षा,
धर्मतत्व समझा कर दी जाने वाली दीक्षा।

तीन प्रकार की प्रव्रज्या कही गई है, यथा-
सद्‌गुरुओं की सेवा के लिए ली गई दीक्षा,
आख्यानप्रव्रज्य —धर्मदेशना के दियेजानेसे ली गई दीक्षा
संगार प्रव्रज्या—संकेत से ली गई दीक्षा
अथवा" तुम दीक्षा लोगे तो में भी लूँगा" इस प्रकार की शर्त लगा कर ली गई दीक्षा।

१५८ तीन निर्ग्रन्थ नोसंज्ञोपयुक्त (पूर्वानुभूत आहारादि का स्मरण और अनागत की चिन्ता न करने वाले) कहे गये हैं, यथा-
पुलाक, निर्ग्रन्थ और स्नातक।

तीन निर्ग्रन्थ संज्ञ-नोसंज्ञोपयुक्त (संज्ञा और नोसंज्ञा दोनों से संयुक्त) कहे गये हैं। यथा-

---

१. दीक्षा लेने पर मेरे शिष्यादि होंगे इस आशा से ली गई दीक्षा पुरतः प्रतिबद्धा है।
२. स्वजनादि से स्नेह का विच्छेद न हो इस भावना से ली गई दीक्षा मार्गतः प्रतिवद्धा है।

बकुश, प्रतिसेवनाकुशील और कषायकुशील ।

१५९ तीन प्रकार की शैक्ष-भूमि[1] कही गई है, यथा-
उत्कृष्ट छः मास,
मध्यम चार मास
जघन्य सात रात-दिन ।

तीन स्थविर भूमियां कही गई हैं, यथा-
जातिस्थविर, सूत्रस्थविर और पर्यायस्थविर ।
साठ वर्ष की उम्रवाला श्रमण-निर्ग्रन्थ सूत्रस्थविर है,
स्थानाग समवायांग को जानने वाला श्रमण-निर्ग्रन्थ सूत्रस्थविर है,
वीस वर्ष की दीक्षा वाला श्रमणनिर्ग्रन्थ पर्यायस्थविर है ।

१६० तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं । यथा,
सुमना (हर्षयुक्त)
दुर्मना (दुःख या द्वेषयुक्त)
नो-सुमना-नो-दुर्मना (समभाव रखने वाला) ।
तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-
कितनेक किसी स्थान पर जाकर सुमना होते हैं,
कितनेक किसी स्थान पर जाकर दुर्मना होते हैं,
कितनेक किसी स्थान पर जाकर नो सुमना-नो दुर्मना होते हैं ।

---

१. नवदीक्षित को महाव्रतादिदेने का समय अर्थात् छेदोपस्थापनीय चारित्र-वड़ी दीक्षा का समय

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक 'किसी स्थान पर जाता हूँ' ऐसा मान कर सुमना होते हैं,

कितनेक 'किसी स्थान पर जाता हूं' ऐसा मान कर दुर्मना होते हैं,

कितनेक 'किसी स्थान पर जाता हूं' ऐसा मानकर नो-सुमना-नोदुर्मना होते हैं।

इसी तरह कितनेक 'जाऊंगा'' ऐसा मानकर सुमना होते हैं इत्यादि पूर्ववत्।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक "नहीं जाकर" सुमना होते हैं, इत्यादि।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

'नहीं जाता हूं' ऐसा मानकर सुमना होते हैं इत्यादि।

तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

'नहीं जाऊंगा' ऐसा मानकर सुमना होते हैं, इत्यादि।

इसी तरह 'आकर' कितनेक सुमना होते हैं, इत्यादि।

'आताहूं' ऐसा मानकर कितनेक सुमना होते हैं, इत्यादि।

'आऊंगा' ऐसा मानकर कितनेक सुमना होते हैं, इत्यादि।

इस प्रकार इस अभिलापक से—

जाकर, नहीं जाकर।

खड़े रह कर-खड़े नहीं रह कर।

बैठकर, नहीं बैठ कर ।

मार कर, नहीं मार कर ।

छेदकर, नहीं छेद कर ।

बोलकर, नहीं बोल कर ।

कहकर, नहीं कह कर ।

देकर, नहीं देकर ।

खाकर, नहीं खाकर ।

प्राप्त कर, नहीं प्राप्त कर ।

पीकर, नहीं पीकर ।

सोकर, नहीं सोकर ।

लड़कर, नहीं लड़कर ।

जीत कर, नहीं जीत कर ।

पराजित कर, नहीं पराजित कर ।

कितनेक 'सुनता हूं' यह मानकर सुमना होते हैं ।

कितनेक 'सुनुंगा' यह मान कर सुमना होते हैं ।

इसी प्रकार कितनेक नहीं 'सुना' यह मानकर सुमना होते हैं ।

कितनेक 'नहीं सुनता हूं' यह मानकर सुमना होते हैं।

कितनेक 'नहीं सुनुंगा' यह मानकर सुमना होते हैं।

इस प्रकार रूप, गंध, रस और स्पर्श प्रत्येक में छः छः आलापक कहने चाहिए। [१२७]

१६१ शीलरहित, व्रतरहित, गुणरहित, मर्यादा-रहित और प्रत्याख्यान-पोपधोपवास रहित के तीन स्थान गर्हित होते हैं। यथा-

उसका इह लोक जन्म गर्हित होता है, (उसकी इस जन्म में निन्दा होती है)

उसका उपपात (किल्विषिक देवतादि में जन्म लेने से वहां भी) निन्दित होता है,

उसके बाद के जन्मों में भी वह निन्दनीय होता है। [१]

सुशील, सुव्रती, सद्गुणी, मर्यादावान् और पौषधोपवास प्रत्याख्यान आदि करने वाले के तीन स्थान प्रशंसनीय होते हैं, यथा-

उसकी इस लोक में भी प्रशंसा होती है,

उसका उपपात भी प्रशंसनीय होता है

उसके बाद के जन्म में भी उसे प्रशंसा प्राप्त होती है । [१]

१६२ संसारी जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

स्त्री, पुरुष और नपुंसक । [१]

सर्व जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं। यथा-

सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि, और सम्यग्मिथ्यादृष्टि (मिश्र-दृष्टि) ।

अथवा सब जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

पर्याप्त, अपर्याप्त और नो-पर्याप्त नो-अपर्याप्त ।

इसी तरह सम्यग्दृष्टि ।

परित्त,

पर्याप्त,

सूक्ष्म,

संज्ञी, और भव्य,

इन में से जो ऊपर नहीं कहे गये हैं उनके भी तीन तीन प्रकार समझने चाहिए ।

१६३ लोक-स्थिति तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

आकाश के आधार पर वायु रहा हुआ है,

वायु के आधार पर उदधि

उदधि के आधार पर पृथ्वी ।

दिशाए तीन कही गई हैं, यथा-

ऊर्ध्व दिशा, अधो दिशा और तिर्छी दिशा ।

तीन दिशाओं में जीवों की गति होती है, यथा-

ऊर्ध्व दिशा में, अधोदिशा में और तिर्छी दिशामें ।

इसी तरह आगति ।

उत्पत्ति,

आहार,

वृद्धि,

हानि,

गति पर्याय-हलन चलन,

समुद्घात,

कालसंयोग,

अवधि दर्शन से देखना, अवधिज्ञान से जानना

और जीवों का ज्ञान अवधि ज्ञान से जानना चाहिए ।

तीन दिशाओं में जीवों को अजीवों का ज्ञान होता है, यथा-

ऊर्ध्व दिशा में, अधोदिशा में और तिर्छी दिशा में ।

(तीनों दिशाओं में गति आदि तेरह पद समस्त रूप से चौवीस दण्डकों में से पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक और मनुष्य में ही होते हैं)

१६४ त्रस जीव तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

तेजस्काय, वायुकाय, और उदार (स्थूल) त्रस प्राणी।

स्थावर तीन प्रकार के कहे गये है, यथा-

पृथ्वीकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय।

(यहां तेजस्काय और वायुकाय को गति के योग से त्रस माना गया है। [२]

१६५ तीन अच्छेद्य हैं-समय, प्रदेश और परमाणु।

इसी तरह—दो भाग नहीं किये जा सकने वाले। अभेद्य

अदाह्य—नहीं जलाये जा सकने वाले।

अग्राह्य—हाथ आदि से नहीं ग्रहण किये जा सकने वाले।

अमध्य—जिनका मध्यभाग नहीं हो सकता।

अप्रदेशी—निरवयव।

तीन अविभाज्य हैं, यथा-

समय, प्रदेश और परमाणु।

१६६ हे आर्यो! इस प्रकार श्रमण भगवान् महावीर गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थों को सम्बोधित कर इस प्रकारवोले

प्रश्न-हे श्रमणो! हे आयुष्मन्तो! प्राणियों को किससे भय है?

(तव) गौतमादि श्रमणनिर्ग्रन्थ श्रमण भगवान् महावीर के समीप आते हैं और वन्दना-नमस्कार करते हैं। वन्दना नमस्कार करके वे इस प्रकार वोले :-

हे देवानुप्रिय ! यह अर्थ हम जानते नहीं हैं देखते नहीं हैं इसलिये यदि आपको कहने में कष्ट न होता हो तो हम यह बात आप श्री से जानना चाहते हैं ।

उत्तर—आर्यो ! यों श्रमण भगवान् महावीर गौतमादि श्रमणनिग्रन्थों को सम्बोधित करके इस प्रकार बोले—हे श्रमणो ! हे आयुष्मन्तो ! प्राणी दुःख से डरने वाले हैं।

प्रश्न—(गौतमादि श्रमणों ने पूछा) हे भगवन् ! यह दुःख किस के द्वारा दिया गया है ?

उत्तर—(भगवान् बोले) जीव ने प्रमाद के द्वारा दुःख उत्पन्न किया है ।

प्रश्न—(गौतमादि श्रमणों ने पूछा) हे भगवान् ! यह दुःख कैसे नष्ट होता है ?

उत्तर—(भगवान् बोले) अप्रमाद से दुःख का क्षय होता है।

१६७ **प्रश्न**-हे भगवन् ! अन्य तीर्थिक इस प्रकार बोलते हैं, कहते हैं, प्रज्ञप्त करते हैं और प्ररूपणा करते हैं कि श्रमण-निर्ग्रन्थों के मत में कर्म किस प्रकार दुःख रूप होते है ? (चारभंगो में से जो पूर्वकृत कर्म दुख रूप होते हैं यह वे नहीं पूछते हैं, जो पूर्वकृत कर्म दुख रूप नहीं होते हैं यह भी वे नहीं

पूछते हैं, जो पूर्वकृत नहीं है परन्तु दुख रूप होते हैं उसके लिए वे पूछते हैं। (पूछने का आशय यह है कि जैसे अन्य तीर्थिक अकृतकर्म प्राणियों को दुख देते हैं। यह मानते हैं क्या वैसा ही निर्ग्रन्थ भी मानते है ?)

अकृतकर्म को दुख का कारण मानने वाले वादियों का यह कथन है कि

कर्म किये बिना ही दुःख होता है,

कर्मों का स्पर्श (बंध) किये बिना ही दुःख होता है,

किये जाने वाले और किये हुए कर्मों के बिना ही दुःख होता है,

प्राणी, भूत,जीव और सत्व द्वारा कर्म किये बिना ही वेदना का अनुभव करते हैं—ऐसा कहना चाहिये।

उत्तर—(भगवान् बोले) जो लोग ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते हैं। मैं ऐसा कहता हूं, बोलता हूं और प्ररूपणा करता हूं कि कर्म करने से दुख होता है.

कर्मों का स्पर्श करने से दुख होता है,

क्रियमाण और कृत कर्मों से दुःख होता है,

प्राण, भूत, जीव और सत्व कर्म करके वेदना का अनुभव करते हैं। ऐसा कहना चाहिए।

तृतीय उद्देशक

१६८ तीन कारणों से मायावी माया करके भी उसकी आलोचना 'गुरु-समक्ष निवेदन' नहीं करता है, प्रतिक्रमण नहीं करता है, आत्मसाक्षी से निन्दा नहीं करता है, गुरु के समक्ष गर्हा नहीं करता है, उस विचार को दूर नहीं करता है, उसकी शुद्धि नहीं करता है, उसे पुनः नहीं करने के लिए तत्पर नहीं होता है और यथायोग्य प्रायश्चित्त और तपश्चर्या अंगीकार नहीं करता है, यथा-

"मैंने यह काम किया है।" 'इस प्रकार आलोचना करने से मेरा मान महत्त्व कम हो जाएगा अतः आलोचना न करूं। 'इस समय भी मैं वैसा ही करता हूं' इसलिये इसे निन्दनीय कैसे कहूं ?

'भविष्य में भी मैं वैसा ही करुंगा' 'इसलिए आलोचना कैसे करूं।

तीन कारणों से मायावी माया करके भी उसकी आलोचना नहीं करता है, प्रतिक्रमण नहीं करता है —यावत्— तपश्चर्या अंगीकार नहीं करता है, यथा-

मेरी अपकीर्ति होगी,

मेरा अवर्णवाद होगा,

मेरा अविनय होगा ।[1]

तीन कारणों से मायावी माया करके भी आलोचना नहीं करता हैं —यावत्— तप अंगीकार नहीं करता है, यथा-

मेरी कीर्ति[2] क्षीण होगी,

मेरा यश[3] हीन होगा,

मेरी पूजा व मेरा सत्कार कम होगा । [२]

तीन कारणों से मायावी माया करके उसकी आलोचना करता है, प्रतिक्रमण करता है —यावत्— तप अंगीकार करता है, यथा-

मायावी की इस लोक में निन्दा होती है,

परलोक भी निन्दनीय होता है,

अन्य जन्म भी गर्हित होता है ।

तीन कारणों से मायावी माया करके आलोचना करता है, —यावत्— तप अंगीकार करता है, यथा-

अमायी का यह लोक प्रशस्त होता है,

---

१. अवज्ञा ।

२. सीमित प्रदेश में प्रसिद्धि 'किर्ति' ।

३. सर्वत्र प्रसिद्धि 'यश' ।

परलोक में जन्म प्रशस्त होता है,

अन्य जन्म भी प्रशंसनीय होता है।

तीन कारणों से मायावी माया करके आलोचना करता है —यावत्— तप अंगीकार करता है, यथा-

ज्ञान के लिये, दर्शन के लिये, चारित्र के लिये। [२-४]

१६९ तीन प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

सूत्र के धारक, अर्थ के धारक, उभय के धारक।

१७० साधु और साध्वियों को तीन प्रकार के वस्त्र धारण करना और पहनना कल्पता है, यथा-

ऊन का, सन का और सूत का बना हुआ। [१]

साधु और साध्वियों को तीन प्रकार के पात्र धारण करने और परिभोग करने के लिये कल्पते हैं, यथा-

तुम्बे का पात्र, लकड़ी का पात्र और मिट्टी का पात्र। [१-२]

१७१ तीन कारणों से वस्त्र धारण करना चाहिये, यथा-

लज्जा के लिये,

प्रवचन की निन्दा न हो इसलिये,

शीतादि परिषह निवारण के लिये।

१७२ आत्मा को रागद्वेष से बचाने के तीन उपाय कहे गये हैं, यथा—

धार्मिक उपदेश का पालन करे,

उपेक्षा करे या मौन रहे,

उस स्थान से उठ कर स्वयं एकान्त स्थान में चला जाय। [१]
तृषादि से ग्लान निग्रन्थ को प्रासुक जल की तीन दत्ति[1] ग्रहण करना कल्पता है, यथा-

उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य। [१-२]

१७३ तीन कारणों से श्रमण निग्रन्थ स्वधर्मी साम्भोगिक[2] के साथ भोजनादि व्यवहार को तोड़ता हुआ वीतराग की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता है, यथा-

व्रतों में 'गुरुतर' दोष लगाते हुए जिसे स्वयं देखा हो उसे,
व्रतों में 'गुरुतर' दोष लगाने की बात के सम्बन्ध में किसी श्रद्धालु से सुनी हो उसे,
चौथी बार दोष सेवन करने वाले को[3]।

---

१. एक बार में धारा टूटे बिना जितना मिले वह एक दत्ति है। जिससे सारा दिन निकल जाय इतना पानी लेना उत्कृष्ट दत्ति है, इससे कुछ कम लेना मध्यम दत्ति और एक बार ही प्यास बुझा सके इतना लेना जघन्य दत्ति है

२. जिसके साथ आहारादिके आदान-प्रदान का व्यवहारहो।

३. तीन बार दोष का सेवन करने पर आलोचना-प्रायश्चित्त होता है परन्तु चौथी बार उसी दोष के सेवन करने पर आलोचना प्रायश्चित्त नहीं होता है अतः चौथी बार उसी दोष का सेवन करने वाले को।

१७४ तीन प्रकार की अनुज्ञा[1] कही गई है यथा-

आचार्य जो आज्ञा दे,

उपाध्याय जो आज्ञा दे

गणनायक जो आज्ञा दे

तीन प्रकार की समनुज्ञा[2] कही गई है, यथा-

आचार्य जो आज्ञा दे,

उपाध्याय जो आज्ञा दे,

गणनायक जो आज्ञा दे । [२]

इसी प्रकार उपसम्पदा[3] और पदवी का त्याग[4] भी समझना चाहिये । [२-४]

१७५ तीन प्रकार के वचन कहे गये हैं, यथा-

तद् वचन[5], तदन्य वचन[6] और नोवचन[7] ।

तीन प्रकार के अवचन कहे गये हैं, यथा-

---

१. शास्त्र पढ़ने की आज्ञा ।

२. ,,

३. अपने गण के आचार्य आदि को छोडकर दूसरे गण के आचार्य आदि को स्वीकार करना ।

४. आचार्य आदि का पद त्याग ।

५. पदार्थ वाची वचन या पदार्थ विषयक वचन ।

६. पदार्थ से भिन्न पदार्थ वाची वचन या भिन्न पदार्थ विषयक वचन ।

७. वचन मात्र ।

नो तद्वचन,[1] नो तदन्य वचन[2] और अवचन[3] [२]

तीन प्रकार के मन कहे गये हैं, यथा-

तद्मन, तदन्यमन और अमन। [१-३]

१७६ तीन कारणों से अल्पवृष्टि होती है, यथा-

उस, देश में या प्रदेश में बहुत से उदक योनि के जीव अथवा पुद्गल उदक रूप से उत्पन्न नहीं होते हैं, नष्ट नहीं होते हैं, समाप्त नहीं होते हैं, पैदा नहीं होते हैं।

नाग, देव, यक्ष और भूतों की सम्यग् आराधना नहीं करने से वहां उठे हुए उदक पुद्गल-मेघ को जो वरसने वाला है उसे वे देव आदि अन्य देश में लेकर चले जाते हैं।

उठे हुए परिपक्व और वरसने वाले मेघ को पवन विखेर डालता है।

इन तीन कारणों से अल्पवृष्टि होतीहै। [१]

तीन कारणों से महावृष्टि होती है, यथा-

उस देश में या प्रदेश में बहुत से उदक योनि के जीव और पुद्गल उदक रूप से उत्पन्न होते हैं, समाप्त होते

---

१. घट को पट कहना।

२. घट को घट कहना।

३. निरर्थक वचन।

हैं, नष्ट होते हैं और पैदा होते हैं।

देव, यक्ष, नाग और भूतों की सम्यग् आराधना करने से अन्यत्र उठे हुए परिपक्व और बरसने वाले मेघ को उस प्रदेश में ला देते हैं।

उठे हुए, परिपक्व बने हुए और बरसने वाले मेघ को वायु नष्ट न करे।

इन तीन कारणों से महावृष्टि होती है। [१-२]

१७७ तीन कारणों से देवलोक में नवीन उत्पन्न देव मनुष्य-लोक में शीघ्र आने की इच्छा करने पर भी शीघ्र आने में समर्थ नहीं होता है, यथा-

देवलोक में नवीन उत्पन्न देव दिव्य कामभोगों में मूर्छित होने से, गृहयुद्ध होने से, स्नेहपाश में बंधा हुआ होने से, तन्मय होने से वह मनुष्य-सम्बन्धी कामभोगों को आदर नहीं देता है, अच्छा नहीं समझता है, "उनसे कुछ प्रयोजन है"-ऐसा निश्चय नहीं करता है, उनकी इच्छा नहीं करता है, "ये मुझे मिलें "ऐसी भावना नहीं करता है।

देवलोक में नवीन उत्पन्न हुआ, देव दिव्य काम भोगों में मूर्छित, गृद्ध, आसक्त और तन्मय होने से उसका मनुष्य सम्बन्धी प्रेमभाव नष्ट हो जाता है और दिव्य काम भोगों

के प्रति आकर्षण होता है।

देवलोक में नवीन उत्पन्न देव दिव्य काम भोगों में मूर्छित -यावत्- तन्मय बना हुआ ऐसा सोचता है कि "अभी न जाऊँ एक मुहूर्त के बाद जब नाटकादि पूरा हो जाएगा तब जाऊँगा"। इतने काल में तो अल्प आयुष्य वाले मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। इन तीन कारणों से नवीन उत्पन्न हुआ देव मनुष्य लोक में शीघ्र आने की इच्छा करने पर भी शीघ्र नहीं आ सकता है। [१]

तीन कारणों से देवलोक में नवीन उत्पन्न देव मनुष्यलोक में शीघ्र आने की इच्छा करने पर शीघ्र आने में समर्थ होता है, यथा-

देव लोक में नवीन उत्पन्न हुआ देव दिव्य कामभोगों में मूर्छित नहीं होने से, गृद्ध नहीं होने से, आसक्त नहीं होने से उसे ऐसा विचार होता है कि-"मनुष्य-भव में भी मेरे आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक, स्थविर, गणी, गणधर अथवा गणावच्छेदक हैं जिनके प्रभाव से मुझे यह इस प्रकार की देवता की दिव्य ऋद्धि, दिव्य द्युति, दिव्य देवशक्ति (अचिन्त्य) वैक्रियादि की शक्ति मिली, प्राप्त हुई, सम्मुख उपस्थित हुई अतः जाऊं और उन

भगवान् को वन्दन करुं, नमस्कार करुं, सत्कार करुं, कल्याणकारी, मंगलकारी, देव स्वरूप मानकर उनकी सेवा करूं"

देवलोक में उत्पन्न हुआ देव दिव्य कामभोगों में मूर्छित नहीं होने से -यावत्- तन्मय नहीं होने से ऐसा विचार करता है कि -"इस मनुष्यभव में ज्ञानी हैं, तपस्वी हैं और अति-दुष्कर क्रिया करने वाले हैं अतः जाऊं और उन भगवंतों को वन्दन करुं, नमस्कार करुं, -यावत्- उनकी सेवा करुं"

देवलोक में नवीन उत्पन्न हुआ देव दिव्य कामभोगों में मुर्छित -यावत्- तन्मय नहीं होता हुआ ऐसा विचार करता है कि- "मनुष्यभव में मेरी माता -यावत्- मेरी पुत्रवधू है इसलिए जाऊं और उनके समीप प्रकट होऊं जिससे वे मेरी इस प्रकार की मिली हुई, प्राप्त हुई और सम्मुख उपस्थिति हुई दिव्य देवर्द्धि, दिव्य द्युति और दिव्य देवशक्ति को देखें।"

इन तीन कारणों से देवलोक में नवीन उत्पन्न हुआ देव मनुष्य लोक में शीघ्र आने की इच्छा करे तो शीघ्र आ सकता है। [१]

१७८ तीन स्थानों की देवता भी अभिलाषा करते हैं, यथा—

मनुष्य भव, आर्यक्षेत्र में जन्म और उत्तम कुल में उत्पत्ति।

तीन कारणों से देव पश्चात्ताप करते हैं, यथा—

अहो! मैंने वल होते हुए, शक्ति होते हुए, पौरुष-पराक्रम होते हुए भी निरुपद्रवता और सुभिक्ष होने पर भी आचार्य और उपाध्याय के विद्यमान होने पर और नीरोगी शरीर होने पर भी शास्त्रों का अधिक अध्ययन नहीं किया।

अहो! मैं विषयों का प्यासा वन कर इहलोक में ही फंसा रहा और परलोक से विमुख वना रहा जिससे मैं दीर्घ श्रमण पर्याय का पालन नहीं कर सका।

अहो! ऋद्धि, रस और रूप के गर्व में फंसकर और भोगों में आसक्त होकर मैंने विशुद्ध चारित्र का स्पर्श भी नहीं किया।

इन तीन कारणों से देव पश्चात्ताप करते हैं। [२]

२७९ तीन कारणों से देव-"मैं यहां से च्युत होऊंगा" यह जानते हैं, यथा—

विमान और आभरणों को कान्तिहीन देख कर,

कल्पवृक्ष को म्लान होता हुआ देखकर,

अपनी तेजोलेश्या को क्षीण होती हुई जानकर।

इन तीन कारणों से देव अपना च्यवन होना जानते हैं। [१]

तीन कारणों से देव उद्वेग पाते हैं, यथा—

अरे मुझे इस प्रकार की मिली हुई, प्राप्त हुई और सम्मुख आई हुई दिव्य देवर्द्धि, दिव्य देवद्युति और दिव्यशक्ति

छोड़नी पड़ेगी ।

अरे मुझे माता के ऋतु और पिता के वीर्य के सम्मिश्रण का प्रथम आहार करना पड़ेगा,

अरे मुझे माता के जठर के मलमय, अशुचिमय, उद्वेगमय और भयंकर गर्भावास में रहना पड़ेगा ।

इन तीन कारणों से देव उद्वेग प्राप्त होते हैं । [१]

१८० विमान तीन प्रकार के कहे गये हैं यथा-

गोल, त्रिकोण और चतुष्कोण ।

इन में जो गोल विमान हैं वे पुष्करकर्णिका के आकार के होते हैं उनके चारों ओर प्राकार होता है और प्रवेश के लिए एक द्वार होता है ।

उनमें जो त्रिकोण विमान हैं वे सिंघाड़े के आकार के, दोनों तरफ परकोटा वाले, एक तरफ वेदिका वाले और तीन द्वार वाले कहे गये हैं ।

उनमें जो चतुष्कोण विमान हैं वे अखाड़े के आकार के हैं और सब तरफ वेदिका से घिरे हुए हैं तथा चार द्वार वाले कहे गये हैं ।

देव विमान तीन के आधारपर स्थित हैं, यथा-

घनोदधि प्रतिष्ठित,

घनवात प्रतिष्ठित,

आकाश प्रतिष्ठित।

विमान तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अवस्थित 'शास्वत'

वैक्रेय के द्वारा निष्पादित,

पारियानिक आवागमन के लिए वाहन रूप में काम आने वाले। [१]

१८१ नैरयिक तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि और मिश्रदृष्टि।

इस प्रकार विकलेन्द्रिय को छोड़ कर वैमानिक पर्यन्त समझ लेना चाहिए।

तीन दुर्गतियां कही गई हैं, यथा-

नरक दुर्गति, तिर्यंचयोनिक दुर्गति और मनुष्य दुर्गति।

तीन सद्गतियां कही गई हैं, यथा-

सिद्ध सद्गति, देव सद्गति और मनुष्य सद्गति।

तीन दुर्गति प्राप्त कहे गये हैं, यथा-

नैरयिक दुर्गति प्राप्त,

तिर्यंचयोनिक दुर्गति प्राप्त

मनुष्य दुर्गति प्राप्त।

तीन सद्गति प्राप्त कहे गये हैं, यथा-

सिद्धसद्गति प्राप्त,

देवसद्गति प्राप्त,
मनुष्यसद्गति प्राप्त । [ ]

१८२ चतुर्थभक्त 'एक उपवास करने' वाले मुनि को तीन प्रकार का जल लेना कल्पता है, यथा-
आटे का धोवन,
उबाली हुई भाजी पर सिंचा गया जल,
चांवल का धोवन ।

छट्ठ भक्त 'दो उपवास' करने वाले मुनि को तीन प्रकार का जल लेना कल्पता है, यथा-
तिल का धोवन, तुष का धोवन, जो का धोवन ।

अष्टभक्त 'तीन उपवास' करने वाले मुनि को तीन प्रकार का जल लेना कल्पता है, यथा-
ओसामन, छाछ के ऊपर का पानी, शुद्ध उष्ण जल । [३]

भोजन स्थान में अर्पित किया हुआ आहार तीन प्रकार का है, यथा-
फलिखोपहृत[1], शुद्धोपहृत[2], संसृष्टोपहृत[3] ।

---

१. भोजन करने के लिए बैठे हुए हैं और थाली आदि में भोजन सामग्री ली हुई है उसमें से आहारादि लेना फलिकोपहृत है। यह अवगृहीत नामक पंचम पिण्डैषणा का विषय है।
२. तुष आदि से रहित तथा अल्प लेप युक्त शुद्ध ओदनादि भोजनस्थान में दिये जाने पर लेना शुद्धोपहृत है।
३. भोजन करने की थाली में चावल आदि हैं और उसने कौर

तीन प्रकार का आहार दाता द्वारा दिया गया कहा गया है, यथा-

देने वाला हाथ से ग्रहण कर देवे,

आहार के बर्तन से भोजन के बर्तन में रख कर देवे,

बचे हुए अन्न को पुनः बर्तन में रखते समय देवे। [२]

तीन प्रकार की ऊनोदरी कही गई है, यथा-

उपकरण कम करना,

आहार पानी कम करना,

कषाय त्याग रूप भाव ऊनोदरी। [१]

उपकरण ऊणोदरी तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

एक वस्त्र, एक पात्र, संयमी संमत उपाधि धारण।

तीन स्थान निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों के लिए अहित कर, अशुभ, अयुक्त, अकल्याणकारी, अमुक्तकारी और अशुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

आर्तस्वर 'क्रन्दन' करना,

शय्या उपधि आदि के दोषोद्भावन युक्त प्रलाप करना,

दुर्ध्यान 'आर्त-रौद्रध्यान' करना। [१]

तीन स्थान साधु और साध्वियों के लिए हितकर, शुभ, युक्त, कल्याणकारी और शुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

आर्त्तस्वर 'क्रन्दन' न करना,

दोषोद्भावन गर्भित प्रलाप नहीं करना,

लेने के लिए हाथ भरलिया है जब तक मुख में कौर न लिया हो तब तक वह आहार दे तो वह संसृष्टोपहृत है।

अपध्यान नहीं करना। [१]

शल्य तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

मायाशल्य, निदानशल्य और मिथ्यादर्शनशल्य। [१]

तीन कारणों से श्रमण-निर्ग्रन्थ संक्षिप्त विपुल तेजोलेश्या वाला होता है, यथा-

आतापना लेने से,

क्षमा रखने से,

जलरहित 'चतुर्विधआहारकात्याग' तपश्चर्या करने से [१]

तीन मास की भिक्षु-प्रतिमा को अंगीकार करने वाले अनगार को तीन दत्ति भोजन की और तीन दत्ति जल की लेना कल्पता है। [१]

एकरात्रि की भिक्षु प्रतिमा का सम्यग् आराधन नहीं करने वाले साधु के लिए वे तीन स्थान 'फल' अहित कर, अशुभ कर, अयुक्त, अकल्याणकारी और अशुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

वह पागल हो जाय,

दीर्घकालीन रोग उत्पन्न हो जाय,

केवलि प्ररूपित धर्म से भ्रष्ट हो जाय।

एक रात्रि की भिक्षु-प्रतिमा का सम्यग् आराधना करने वाले अनगार के लिए ये तीन स्थान 'फल' हितकर शुभकारी, युक्त, कल्याणकारी और शुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

उसे अवधिज्ञान उत्पन्न हो,

मनःपर्यायज्ञान उत्पन्न हो,

केवलज्ञान उत्पन्न हो। [२] [१३]

१८३ जम्बूद्वीप में तीन कर्मभूमियां कही गई हैं, यथा-

भरत, एरवत और महाविदेह।

इसी प्रकार धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में—यावत्—अर्धपुष्करवर द्वीप के पश्चिमार्द्ध में भी तीन तीन कर्मभूमियां गई हैं। [३]

१८४ दर्शन तीन प्रकार के हैं, यथा-

सम्यग्दर्शन[1] मिथ्यादर्शन[2] और मिश्रदर्शन[3]। [१]

रुचि[4] तीन प्रकार की हैं, यथा-

सम्यग्रुचि, मिथ्यारुचि और मिश्ररुचि। [१]

प्रयोग[5] तीन प्रकार के हैं, यथा-

सम्यग्प्रयोग, मिथ्याप्रयोग और मिश्रप्रयोग। [१-३]

---

१ मिथ्यात्व मोहनीय के शुद्ध दलिक 'सम्यग्दर्शन'।

२ मिथ्यात्व मोहनीय के अशुद्ध दलिक 'मिथ्यादर्शन'।

३ मिथ्यात्व मोहनी के अशुद्ध दलिक 'सम्यग्मिथ्यादर्शन'।

४ सम्यक्त्वमोहनीय के क्षयोपशम आदि से तत्त्वश्रध्दान होना 'रुची है'।

५ जीव का व्यापार।

१८५ व्यवसाय[1] तीन प्रकार के हैं, यथा-

धार्मिक व्यवसाय,

अधार्मिक व्यवसाय,

मिश्र व्यवसाय। [१]

अथवा-तीन प्रकार के व्यवसाय 'ज्ञान' कहे गये हैं, यथा-

प्रत्यक्ष 'अवधि आदि'

प्रात्ययिक 'इन्द्रिय और मन के निमित्त' से होने वाला,

आनुगामिक 'अनुसरण करने वाला'। [१]

अथवा तीन प्रकार के व्यवसाय कहे गये हैं, यथा-

ऐहलौकिक व्यवसाय,

पारलौकिक व्यवसाय,

उभयलौकिक व्यवसाय।

ऐहलौकिक व्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

लौकिक, वैदिक और सामयिक।

लौकिक व्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अर्थ, धर्म और काम,

वैदिकव्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

ऋग्वेद में कहा हुआ,

यजुर्वेद में कहा हुआ,

---

१ कार्य सिद्धि के लिए उपयुक्त अनुष्ठान।

सामवेद में कहा हुआ। [४]

सामयिक व्यवसाय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

ज्ञान, दर्शन और चारित्र । [१] [७]

तीन प्रकार की अर्थयोनि 'राजलक्ष्मी की प्राप्ति के उपाय' कही गई है, यथा-

साम, दण्ड और भेद । [१]

१८६ तीन प्रकार के पुद्‌गल कहे गये हैं, यथा-

प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत और स्वत:परिणत । [१]

नरकावास तीन के आधार पर रहे हुए हैं, यथा-

पृथ्वी के आधार पर,

आकाश के आधार पर,

स्वरूप के आधार पर ।

नैगम संग्रह और व्यवहार नय से पृथ्वी प्रतिष्ठित ।

ऋजुसूत्र नय के अनुसार आकाश प्रतिष्ठित ।

तीन शब्दनयों के अनुसार आत्म प्रतिष्ठित । [१] [३]

१८७ मिथ्यात्व तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अक्रिया मिथ्यात्व,

अविनय मिथ्यात्व,

अज्ञान मिथ्यात्व ।

अक्रिया 'दुष्ट क्रिया' तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

प्रयोगक्रिया, सामुदानिक क्रिया, अज्ञान क्रिया ।

प्रयोग क्रिया तीन प्रकार की है, यथा-

मनः प्रयोग क्रिया,

वचन प्रयोग क्रिया,
काय प्रयोग क्रिया ।

समुदान क्रिया तीन प्रकार की कही गई है, यथा-
अनन्तर समुदान क्रिया,
परस्पर समुदान क्रिया
तदुभय समुदान क्रिया ।

अज्ञान क्रिया तीन प्रकार की कही गई है, यथा-
मति-अज्ञान क्रिया,
श्रुत-अज्ञान क्रिया
विभंग-अज्ञान क्रिया

अविनय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-
देशत्यागी[1], निरालम्बनता[2], नाना प्रेम-द्वेष अविनय[3] [५]

अज्ञान तीन प्रकार का कहा गया है । यथा-
प्रदेश अज्ञान, सर्व अज्ञान, भाव अज्ञान ।

१८८ धर्म तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-
श्रुतधर्म, चारित्रधर्म और अस्तिकाय-धर्म । [१]

उपक्रम[4] तीन प्रकार का कहा गया है, यथा

---

१. जिस अविनय के करने से जन्म-क्षेत्र आदि का त्याग करना पड़े ।
२. आश्रय लेने योग्य का आश्रय न लेना
३. आराध्य के प्रति प्रेम आराध्य के असम्मत के प्रति द्वेष नियत हो तो वह विनय है यदि ये दोनों अनियत हैं तो वह अविनय है । अत: नाना प्रेम-द्वेष को अविनय कहा है ।
४. गुण विशेष करण अथवा विनाश ।

धार्मिक उपक्रम, अधार्मिक उपक्रम और मिश्र उपक्रम।

अथवा तीन प्रकार का उपक्रम कहा गया है, यथा-
आत्मोपक्रम, परोपक्रम और तदुभयोपक्रम।
इसी तरह वैयावृत्य, अनुग्रह, अनुशासन और उपालम्भ। प्रत्येक के तीन-तीन आलापक उपक्रम के समान ही कहने चाहिए। [७]

१८९ कथा तीन प्रकार की कही गई है, यथा-
अर्थकथा, धर्मकथा और कामकथा। [१]
विनिश्चय तीन प्रकार के कहे हैं, यथा-
अर्थविनिश्चय, धर्मविनिश्चय और कामविनिश्चय [१-२]

१९० श्री गौतम स्वामी भगवान् महावीर से पूछते हैं-

प्रश्न—हे भगवन् ! तथारूप श्रमण-माहन की सेवा करने वाले को सेवा का क्या फल मिलता है ?

भगवान् बोले-

उत्तर—हे गौतम उसे धर्मश्रवण करने का फल मिलता है।

प्रश्न—हे भगवन् ! धर्मश्रवण का क्या फल होताहै ?

उत्तर—हे गौतम धर्मश्रवण करने से ज्ञान की प्राप्ति होती है।

प्रश्न—हे भगवन् ! ज्ञान का फल क्या है ?

उत्तर—हे गौतम ! ज्ञान का फल विज्ञान (हेय उपादेय का विवेक) है इस प्रकार इस अभिलापक से यह गाथा जान लेनी चाहिये।

श्रवण का फल ज्ञान,

ज्ञान का फल विज्ञान,

विज्ञान का फल प्रत्याख्यान,

प्रत्याख्यान का फल संयम,

संयम का फल अनाश्रव 'कर्मों का रुक जाना'

अनाश्रव का फल 'तप'

तप का फल व्यवदान 'पूर्वकृत कर्म का विनाश'

व्यवदान का फल अक्रिया।

अक्रिया का फल निर्वाण है।

प्रश्न—हे भगवन् ! अक्रिया का क्या फल है ?

उत्तर— निर्वाण फल है।

प्रश्न—हे भगवन् ! निर्वाण का क्या फल है ?

उत्तर—हे श्रमणायुष्मन् ! सिद्धगति में जाना हीनिर्वाण का सर्वान्तिम प्रयोजन है।

चतुर्थ उद्देशक

१९१ प्रतिमाधारी अनगार को तीन उपाश्रयों का प्रतिलेखन करना कल्पता है, यथा-

अतिथिगृह में, खुले मकान में, वृक्ष के नीचे।

इसी प्रकार तीन उपाश्रयों की आज्ञा लेना और उनका ग्रहण करना कल्पता है। [३]

प्रतिमाधारी अनगार को तीन संस्तारकों की प्रतिलेखना करना कल्पता है, यथा-

पृथ्वी-शिला, काष्ठ-शिला और तृणादि।

इसी प्रकार तीन संस्तारकों की आज्ञा लेना और ग्रहण करना कल्पता है। [३] [६]

१९२ काल तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

भूतकाल, वर्त्तमानकाल और भविष्यकाल।

समय तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अतीत काल, वर्तमान काल और अनागत काल।

इसी तरह आवलिका[1], श्वासोच्छ्वास, स्तोक[2] क्षण[3] लव[4] मुहूर्त[5], अहोरात्र—यावत्—क्रोड़वर्ष, पूर्वांग[6],

---

१. आवलिका-असंख्यात समय का अथवा एक श्वासोच्छ्वास का संख्यातवां भाग।

२. स्तोक-सात श्वासोच्छ्वास प्रमाण काल।

३. क्षण-संख्यात श्वासोच्छ्वास प्रमाण काल।

४. लव-सात स्तोक प्रमाण काल।

५. मुहूर्त–७७ लव, दो घड़ी, अथवा ३७७३ श्वासोच्छ्वास।

६. पूर्वांग–८४ लाख वर्ष।

पूर्व[1], —यावत्— अवसर्पिणी । [ ]

पुद्गल परिवर्तन तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-

अतीत, प्रत्युत्पन्न और अनागत । [१]

१६३ वचन तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

एकवचन, द्विवचन और बहुवचन ।

अथवा वचन तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

स्त्री वचन, पुरुषवचन और नपुँसक वचन ।

अथवा तीन प्रकार के वचन कहे गये हैं यथा-

अतीत वचन, वर्तमान वचन और भविष्य वचन । [३]

१६४ तीन प्रकार की प्रज्ञापना कही गई है, यथा -

ज्ञान प्रज्ञापना, दर्शन प्रज्ञापना और चारित्र प्रज्ञापना ।

तीन प्रकार के सम्यक् कहे गये हैं, यथा-

ज्ञान सम्यक्, दर्शन सम्यक् और चारित्र सम्यक् ।

तीन प्रकार के उपघात[2] कहे गये हैं, यथा-

उद्गमोपघात, उत्पादनोपघात और एषणोपघात ।

इसी तरह तीन प्रकार की विशुद्धि कही गई है, यथा-

उद्गम-विशुद्धि आदि ।

---

१. पूर्व–८४ लाख पूर्वांग ।

२. आहारादि की अकल्पनीयता ।

१९५ तीन प्रकार की आराधना कही गई है, यथा-

ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना और चारित्राराधना।

ज्ञानाराधना तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य।

इसी तरह दर्शन आराधना और चारित्र आराधना कहनी चाहिए। [३]

तीन प्रकार का संक्लेश[1] कहा गया है, यथा-

ज्ञानसंक्लेश, दर्शनसंक्लेश और चारित्रसंक्लेश।

इसी तरह असंक्लेश, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार भी समझने चाहिए। [६]

तीन का अतिक्रमण करने पर आलोचना करनी चाहिये, प्रतिक्रमण करना चाहिये, निन्दा करनी चाहिये, गर्हा करनी चाहिये —यावत्—तप अंगीकार करना चाहिये, यथा-

ज्ञान का अतिक्रमण करने पर,

दर्शन का अतिक्रमण करने पर,

चारित्र का अतिक्रमण करने पर।

इसी तरह व्यतिक्रम, अतिचार और अनाचार करने पर भी आलोचनादि करनी चाहिये। [३] [१२]

१९६ प्रायश्चित्त तीन प्रकार कहा गया है, यथा-

---

१. अशुभ परिणामों से होने वाली हानि।

आलोचना के योग्य,

प्रतिक्रमण के योग्य,

उभय योग्य।

१९७ जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में तीन अकर्मभूमियां कही गई हैं, यथा-

हेमवत, हरिवास और देवकुरु।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर में तीन अकर्मभूमियां कहीं गई हैं, यथा-

उत्तरकुरु, रम्यक्वास और हिरण्यवत।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में तीन क्षेत्र कहे गये हैं, यथा-

भरत, हेमवत और हरिवास।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर में तीन क्षेत्र कहे गये हैं, यथा-

रम्यक्वास, हिरण्यवत और ऐरवत।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण में तीन वर्षधर पर्वत हैं, यथा-

लघुहिमवान, महाहिमवान और निषध।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के उत्तर में तीन वर्षधर पर्वत हैं; यथा-

नीलवान, रुक्मी और शिखरी ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण में तीन महाह्लद हैं, यथा-

पद्मह्लद, महापद्मह्लद और तिगिच्छह्लद ।

वहां तीन महर्द्धिक–यावत्– पल्योपम की स्थिति वाली तीन देवियां रहती हैं, यथा-

श्री, ह्री और धृति ।

इसी तरह उत्तर में भी तीन ह्लद हैं, यथा–

केशरी ह्लद, महापुण्डरीक ह्लद और पुण्डरीक ह्लद ।

इन ह्लदों में रहनेवाली देवियों के नाम, यथा-

कीर्ति, बुद्धि और लक्ष्मी ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में लघु हिमवान वर्षधर पर्वत के पद्मह्लद नामक महाह्लद से तीन महानदियां निकलती हैं, यथा-

गंगा, सिन्धु और रोहितांशा ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर में शिखरीवर्षधर पर्वत के पौण्डरीक नामक महाह्लद से तीन महानदियां निकलती हैं, यथा-

सुवर्णकूला, रक्ता और रक्तवती ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पूर्व में सीता महानदी के उत्तर में तीन अन्तर नदियां कही गई हैं, यथा-

तप्तजला, मत्तजला और उन्मत्तजला ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के दक्षिण में तीन अन्तर नदियां कही गई है, यथा-

क्षीरोदा, शीतस्रोता, और अन्तर्वाहिनी ।

जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के उत्तर में तीन अन्तर नदियां कही गई हैं, यथा-

उर्मिमालिनी, फेनमालिनी और गंभीरमालिनी । [१५]

इस प्रकार धातकी खण्डद्वीप के पूर्वार्ध में अकर्मभूमियों से लगाकर अन्तर नदियों तक सब समान समझना चाहिए-यावत्-अर्धपुष्कर द्वीप के पश्चिमार्ध में भी इसी प्रकार जानना चाहिये । [४५-६०]

१९८ तीन कारणों से पृथ्वी का थोड़ा भाग चलायमान होता है, यथा-

रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे बादर पुद्गल आकर लगे या वहां से अलग होवे तो वे लगने या अलग होने वाले बादर पुद्गल पृथ्वी के कुछ भाग को चलायमान करते हैं,

महा ऋद्धिवाला-यावत्-महेश कहा जाने वाला महोरग देव इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे आवागमन करे तो पृथ्वी चलायमान होती है,

नागकुमार तथा सुवर्णकुमार का संग्राम होने पर थोड़ी

पृथ्वी चलायमान होती है ।

इन तीन कारणों से पृथ्वी देशतः कम्पित होती हैं।

तीन कारणों से पूर्ण पृथ्वी चलायमान होती है, यथा-

इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नीचे घनवात क्षुब्ध होने से घनोदधि कम्पित होता है ।

कम्पित होता हुआ घनोदधि समग्र पृथ्वी को चलायमान करता है ।

महर्धियक—यावत्—महेश कहा जाने वाला देव तथारूप-श्रमण-माहन को ऋद्धि, यश, वल, वीर्य, पुरषाकार पराक्रम बताता हुआ समग्र पृथ्वी को चलायमान करता है ।

देव तथा असुरों का संग्राम होने पर समस्त पृथ्वी चलायमान होती है।

इन तीन कारणों से सारी पृथ्वी चलायमान होती है । [३]

१९९ किल्विषिक देव तीन प्रकार के कहें गये हैं, यथा-

तीन पल्योपम की स्थिति वाले,

तीन सागरोपम की स्थिति वाले,

तेरह सागरोपम की स्थिति वाले ।

प्रश्न—हे भगवन् ! तीन पल्योपम की स्थितिवाले किल्विपिक देव कहां रहते हैं ?

उत्तर—ज्योतिष्क देवों के ऊपर और सौधम-ईशानकल्प के नीचे तीन पल्योपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

प्रश्न—हे भगवन् ! तीन सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव कहां रहते हैं ?

उत्तर—सौधर्म ईशान देवलोक के ऊपर और सनत्कुमार-माहेन्द्रकल्प के नीचे तीन सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

प्रश्न—तेरह सागरोपम स्थिति वाले किल्विषिक देव कहां रहते हैं ?

उत्तर—ब्रह्मलोक कल्प के ऊपर और लान्तक कल्पके नीचे तेरह सागरोपम की स्थिति वाले किल्विषिक देव रहते हैं।

० देवराज देवेन्द्र शक्र की बाह्य परिषद् के देवों की स्थिति तीन पल्योपम की कही गई है।

देवराज देवेन्द्र शक्र की आभ्यन्तर परिषद् की देवियों की स्थिति तीन पल्योपम की कही गई है।

देवराज देवेन्द्र ईशान के बाह्य परिपद् देवियों कीस्थिति तीन पल्योपम की कही गई है।

१ प्रायश्चित्त तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
ज्ञानप्रायश्चित्त, दर्शनप्रायश्चित्त और चारित्र-प्रायश्चित्त।

तीन को अनुद्घातिक 'गुरु' प्रायश्चित्त कहा गयाहै, यथा-

हस्तकर्म करने वाले को,

मैथुन सेवन करने वाले को,

रात्रिभोजन करने वाले को ।

तीन को पारांचिक[1] प्रायश्चित्त कहा गया है, यथा-

कषाय और विषय से अत्यन्त दुष्ट को[2] परस्पर स्त्यान-गृद्धि निद्रावाले को[3] 'गुदा'मैथुन करने वालों को ।

तीन को अनवस्थाप्य[4] प्रायश्चित्त कहा गया है, यथा-

सार्धमिकों की चोरी करने वाले को,

अन्यधार्मिकों की चोरी करने वाले को,

हाथ आदि से मर्मान्तिक प्रहार करने वाले को ।

२०२ तीन को प्रव्रजित करना नहीं कल्पता हैं, यथा-

पण्डक-नपुंसक को,

---

१. यह अंतिम प्रायश्चि है । विशेष जानने के लिए प्रायश्चित्त परिशिष्ट देखें ।

२. साधु या राजा आदि का वध या साध्वी या रानी वगैरह से विषय-सेवन सरीखे भयंकर अपराध करने वाले को ।

३. जागृत अवस्था में सोचे हुए कार्य को निद्रावस्था में पूरा करनेकी जिससे शक्ति प्राप्त हो ऐसी निद्रा होती है ।

४. पुनः महाव्रत आरोपण के अयोग्य अर्थात् पुनः दीक्षा देने के अयोग्य । विशेष जानने के लिए प्रायश्चित्त परिशिष्ट देखें ।

वातिक[1]

अथवा व्याधि-ग्रस्त को, क्लीब—असमर्थ को

इसी तरह 'उक्त तीन को' मुण्डित करना, शिक्षा देना महाव्रतों का आरोपण करना, एक साथ बैठ कर भोजन करना तथा साथ में रखना नहीं कल्पता है।

२०३ तीन वाचना देने योग्य नहीं हैं, यथा-

अविनीत को,

दूध आदि विकृति के लोलुपी को,

अत्यन्त क्रोधी 'जिसका क्रोध कभी शान्त न हो उसको।

तीन को वाचना देना कल्पता है, यथा-

विनीत को

घी आदि विकृति में लोलुप न होने वाले को,

क्रोध उपशान्त करने वाले को।

तीन को समझाना कठिन है, यथा-

दुष्ट को, मूढ को और दुराग्रही को

तीन को सरलता से समझाया जा सकता है, यथा-

अदुष्ट को, अमूढ को और अदुराग्रही को।

२०४ तीन माण्डलिक पर्वत कहे गये हैं, यथा-

---

१ जो विषयेच्छा होने पर अपने आपको रोक न सके।

मानुषोत्तर पर्वत,
कुण्डलवर पर्वत,
रूचकवर पर्वत।

२०५ तीन बड़े से बड़े कहे गये हैं, यथा-
सब मेरुपर्वतों में जम्बूद्वीप का मेरुपर्वत,
समुद्रों में स्वयंभुरमण समुद्र,
कल्पों में ब्रह्मलोक कल्प।

२०६ तीन प्रकार की कल्प स्थिति 'आचार–मर्यादा' कही गई है, यथा-
सामायिक कल्पस्थिति,
छेदोपस्थापनीय कल्पस्थिति
निर्विशमान 'परिहार विशुद्धि' कल्पस्थिति।

अथवा तीन प्रकार की कल्पस्थिति कही गई है, यथा-
निर्विष्ट कल्पस्थिति 'परिहार विशुद्धिक'
जिनकल्प स्थिति,
स्थविर कल्पस्थिति।

२०७ नारक जीवों के तीन शरीर कहे गये हैं, यथा-
वैक्रिय, तैजस और कार्मण।

असुरकुमारों के तीन शरीर नैरयिकों के समान कहे गये हैं,
इसी तरह सब देवों के।

पृथ्वीकाय के तीन शरीर कहे गये हैं, यथा-

औदारिक, तैजस और कार्मण।

इसी तरह वायुकाय को छोड़ कर चतुरिन्द्रिय पर्यन्त तीन शरीर समझने चाहिये।

२०८ गुरु सम्बन्धी तीन प्रत्यनीक 'प्रतिकूल आचरण करने वाले कहे गये हैं, यथा-

आचार्य का प्रत्यनीक,

उपाध्याय का प्रत्यनीक,

स्थविर का प्रत्यनीक।

गति सम्बन्धी तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, यथा-

इहलोक-प्रत्यनीक,

परलोक-प्रत्यनीक,

उभय लोक प्रत्यनीक

समूह की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, यथा-

कुल प्रत्यनीक,

गण-प्रत्यनीक

संघ-प्रत्यनीक।

अनुकम्पा की अपेक्षा से तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, यथा-

तपस्वी-प्रत्यनीक,

ग्लान-प्रत्यनीक,

शैक्ष 'नवदीक्षित' प्रत्यनीक[1],

---

१. इन पर अनुकम्पा करना चाहिए परन्तु जो इन पर अनुकम्पा नहीं करता है वह इनका प्रत्यनीक कहा जाता है।

भाव की अपेक्षा तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, यथा-
ज्ञान-प्रत्यनीक,
दर्शन-प्रत्यनीक,
चारित्र-प्रत्यनीक ।

श्रुत की अपेक्षा तीन प्रत्यनीक कहे गये हैं, यथा-
सूत्र-प्रत्यनीक,
अर्थ-प्रत्यनीक,
तदुभय- प्रत्यनीक ।

२०९ तीन अंग पिता के 'वीर्य से निष्पन्न' कहे गये हैं, यथा-
हड्डी, हड्डी की मिजा और केश-मूंछ, रोम नख[1] ।

तीन अंग माता के 'आर्त्तव से निष्पन्न' कहे गये हैं, यथा-
मांस, रक्त और कपाल का भेजा,
अथवा-भेजे का फिप्फिस 'मांस विशेष' ।

२१० तीन कारणों से श्रमण निग्रन्थ महानिर्जरा वाला और महा पर्यवसान 'समाधिमरण वाला या कर्मों का आत्यन्तिक क्षय करने वाला होता है, यथा-
कब मैं अल्प या अधिक श्रुत का अध्ययन करूंगा,
कब मैं एकलविहार प्रतिमा को अंगीकार करके विचरूंगा,

१. केशादि एक ही गिने गये हैं क्योंकि ये प्रायः समान ही हैं ।

कब मैं अन्तिम मारणान्तिक संलेखना से भूषित होकर आहार पानी का त्याग करके पादपोपगमन संथारा अंगीकार करके मृत्यु की इच्छा नहीं करता हुआ विचरुंगा।

इन तीन कारणों से तीनों भावना प्रकट करता हुआ अथवा चिन्तन पर्यालोचन करता हुआ निर्ग्रन्थ महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है।

तीन कारणों से श्रमणोपासक महानिर्जरा और महापर्यवसान करने वाला होता है, यथा-

कब में अल्प या बहुत परिग्रह को छोड़ूंगा,

कब मैं मुँडित होकर गृहस्थ से अनगार धर्म में दीक्षित होऊंगा,

कब मैं अन्तिम मारणान्तिक संखेलना झूसणा से झूषित होकर, अहार-पानी का त्याग करके पादपोगमन संथारा करके मृत्यु की इच्छा नहीं करता हुआ विचरूँगा। इस प्रकार शुद्ध मन से, शुद्ध वचन से और शुद्ध काया से पर्यालोचन करता हुआ या उक्त तीनों भावना प्रकट करता हुआ श्रमणोपासक महानिर्जरा और महापर्यवसान वाला होता है।

२११ तीन प्रकार से पुद्गल की गति में प्रतिघात होना कहा गया हैं, यथा-

एक परमाणु-पुद्गल का दूसरे परमाणु-पुद्गल से टकराने के कारण गति में प्रतिघात होता है,
रूक्ष होने से गति में प्रतिघात होता है,
लोकान्त में गति का प्रतिघात होता है[१]।

२१२ चक्षुष्मान् 'नेत्रवाले' तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
एक नेत्रवाले, दो नेत्रवाले और तीन नेत्रवाले।
छद्मस्थ-श्रुतादि ज्ञान-रहित मनुष्य एक नेत्रवाले हैं[२]
देव दो नेत्रवाले हैं,[३]
तथारूप श्रमण-माहन तीन नेत्र वाले हैं।[४]

२१३ तीन प्रकार का अभिसमागम 'विशिष्ट ज्ञान' हैं, यथा-
ऊर्ध्व, अध: और तिर्यक्।
जब किसी तथारूप श्रमण-माहण को विशिष्ट ज्ञान-दर्शन 'परम अवधिज्ञानादि' उत्पन्न होता है तब वह
सर्व प्रथम ऊर्ध्वलोक को जानता है
तदनन्तर तिर्यक् लोक को जानता है,
उसके पश्चात् अधोलोक को जानता है।
हे श्रमण आयुष्मन्! अधोलोक का ज्ञान कठिनाई से होता है

---

१. क्योंकि आगे धर्मास्तिकाय का अभाव होने से गति नहीं होती।
२. क्योंकि उनके विशिष्ट श्रुतज्ञानादि भावचक्षु नहीं है केवल चर्मचक्षु है।
३. क्योंकि उनके चक्षु रिन्द्रिय और अवधिज्ञान है।
४. विशिष्ट श्रुत अवधि-ज्ञान और दर्शन उत्पन्न होने से उनके

२१४ ऋद्धि तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

देवर्द्धि, राजर्द्धि और गणके अधिपति आचार्य की ऋद्धि।

देव की ऋद्धि तीन प्रकार की कही है, यथा-

विमानों की ऋद्धि,

वैक्रिय की ऋद्धि,

परिचार 'विषय भोग' की ऋद्धि ।

अथवा- देवर्द्धि तीन प्रकार की है यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र ।

राजा की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-

राजा की अतियान ऋद्धि[1],

राजा कि नियान ऋद्धि[2],

राजा की सेना, वाहन कोष, कोष्ठागार (धान्यभाण्डागार) आदि की ऋद्धि ।

अथवा- राजा की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-

सचित्त, अचित्त और मिश्र ऋद्धि ।

गणी (आचार्य)की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-

द्रव्य चक्षु, परमश्रुत और अवधि ज्ञानदर्शन रूप तीन नेत्र हैं ।

१. नगर–प्रवेश के समय तोरण आदि की ऋद्धि ।

२. बाहर निकलने के समय हाथी सामन्त आदि की ऋद्धि ।

ज्ञान की ऋद्धि, दर्शन की ऋद्धि और चारित्र की ऋद्धि ।

अथवा-गणी की ऋद्धि तीन प्रकार की है, यथा-
सचित्त, अचित्त और मिश्र ।

२१५ तीन प्रकार के गौरव कहे गये है, यथा-
ऋद्धि-गौरव, रस- गौरव और साता-गौरव ।

२१६ तीन प्रकार के करण (अनुष्ठान) कहे गये हें, यथा-
धार्मिक करण, अधार्मिक करण और मिश्र करण ।

२१७ भगवान् ने तीन प्रकार का धर्म कहा है, यथा-
सु-अधीत 'अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करना'

सु-ध्यात 'अच्छी तरह भावनादी का चिन्तन करना'
सु-तपस्यित 'तप का अनुष्ठान अच्छी तरह करना) ।
जब अच्छी तरह अध्ययन होता है तो अच्छी तरह ध्यान चिन्तन होसकता है,

जब अच्छी तरह ध्यान और चिन्तन होता है तब श्रेष्ठ तप का आराधन होता है ।

इसी प्रकार सु-अधीत, सु-ध्यान और सु-तपयिस्त रूप सु-आख्यात धर्म भगवान ने प्ररूपित किया है ।

२१८ व्यावृत्ति 'हिंसादि से निवृत्ति' तीन प्रकार की कही गई है, यथा-

ज्ञानयुक्त की जाने वाली व्यावृत्ति,

अज्ञानसे की जाने वाली व्यावृत्ति,
संशय से की जाने वाले व्यावृत्ति ।
इसी तरह पदार्थों में आसक्ति और पदार्थों का ग्रहण भी तीन तीन प्रकार का है ।

२१९ तीन प्रकार के अन्त कहे गये है, यथा-
लोकान्त, वेदान्त और समयान्त ।

लौकिक अर्थशास्त्र आदि से निर्णय करना लोकान्त है,
वेदों के अनुसार निर्णय करना वेदान्त है,
जैन सिद्धान्तों के अनुसार 'निर्णय' करना समयान्त है ।

२२० जिन तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
अवधिज्ञानी जिन,
मनःपर्यायज्ञानी जिन,
केवलज्ञानी जिन ।

तीन केवली कहे गये हैं, यथा-
अवधिज्ञानी केवली,
मनःपर्यायज्ञानी केवली
केवलज्ञानी केवली ।

तीन अर्हन्त कहे गये हैं, यथा-
अवधिज्ञानी अर्हन्त,
मनःपर्यायज्ञानी अर्हन्त,
केवलज्ञानी अर्हन्त ।

२२१ तीन लेश्याएं दुर्गन्ध वाली कही गई हैं, यथा-
कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या।
तीन लेश्याएं सुगंधवाली कही गई हैं, यथा-
तेजोलेश्या, पद्मलेश्या शुक्ललेश्या।

इसी तरह दुर्गति में ले जानेवाली, सुगति में ले जाने वाली लेश्या, अशुभ, शुभ, अमनोज्ञ, मनोज्ञ, अविशुद्ध, विशुद्ध, क्रमशः अप्रशस्त, प्रशस्त, शीतोष्ण और स्निग्ध, रूक्ष समझनी चाहिए।

२२२ मरण तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-
बालमरण; पण्डितमरण और बाल-पण्डितमरण।
बालमरण तीन प्रकार का कहा गया है, यथा-
स्थितलेश्य[1] संक्लिष्ट लेश्य[2] पर्यवजात लेश्य[3]
पण्डितमरण तीन प्रकार का है, यथा-
स्थितलेश्य, असंक्लिष्ट लेश्य और अपर्यवजात लेश्य।
बालपण्डितमरण तीन प्रकार का है, यथा-
स्थितलेश्य, असंक्लिष्टलेश्य और अपर्यवजात लेश्य।

---

१ कृष्णादि लेश्या वाला होकर जब कृष्ण वाले नरकादि में उत्पन्न हो।
२ नील लेश्यावाला होकर कृष्ण लेश्या वाले में उत्पन्न हो।
३ कृष्णलेश्या वाला होकर जब नीलादि लेश्या में उत्पन्न हो।

२२३ निश्चय नहीं करने वाले 'शंकाशील' के लिए तीन स्थान अहित कर, अशुभरूप, अयुक्त, अकल्याण कारी और अशुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

कोई मुण्डित होकर गृहस्थाश्रम से निकलकर अनागार धर्म में दीक्षित होने पर निग्रन्थ प्रवचन में शंका करता है, अन्यमत की इच्छा करता है, क्रिया के फल के प्रति शंकाशील होता है, द्वैधीभाव 'ऐसा है या नहीं है' ऐसी वुद्धि को प्राप्त करता है, और कलुषित भाव वाला होता है और इस प्रकार वह निग्रन्थ प्रवचन में श्रद्धा नहीं रखता है, विश्वास नहीं रखता है, रुचि नहीं रखता है तो उसे परीषह होते हैं और वे उसे पराजित कर देते हैं। परीषहों को पराजित नहीं कर सकता।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर अगार अवस्था से अनगार रूप में दीक्षित होने पर पांच महाव्रतों में शंका करे —यावत्— कलुषित भाव वाला होता है और इस प्रकार वह कलुषित पंच महाव्रतों में श्रद्धा नहीं रखता, —यावत्— वह परीषहों को पराजित नहीं कर सकता है।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर और अगार से अनागार दीक्षा को अंगीकार करने पर षट् जीव निकाय में श्रद्धा नहीं करता है, —यावत्— वह परीषहों को पराजित नहीं कर सकता है,

सम्यक् निश्चय करने वाले के तीन स्थान हित कर —यावत्— शुभानुबन्धी होते हैं, यथा-

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर गृहस्थावस्था से अनागार धर्म में प्रव्रजित होने पर निग्रन्थ प्रवचन में शंका नहीं लाता है अन्यमत की कांक्षा नहीं करता है—यावत्—कलुषभाव को प्राप्त न होकर निर्ग्रन्थ प्रवचन में श्रद्धा रखता है, विश्वास रखता है और रुचि रखता है तो वह परीषहों को पराजित कर देता है । परीषह उसे पराजित नहीं कर सकते हैं ।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर और गृहस्थावस्था से अनगार धर्म में प्रव्रजित होकर पांच महाव्रतों में शंका नहीं करता है, कांक्षा नहीं करता है—यावत्—वह परीपहों को पराजित करता है, परीषह उसे पराजित नहीं कर सकते हैं ।

कोई व्यक्ति मुण्डित होकर गृहस्थावस्था से अनगार अवस्था में प्रव्रजित होकर षट् जीवनिकाय में शंका नहीं करता है—यावत्—वह परीषहों को पराजित कर देता उसे परीपह पराजित नहीं कर सकते हैं ।

२२४ रत्नप्रभादि प्रत्येक पृथ्वी तीन वलयों के द्वारा चारों तरफ से घिरी हुई है, यथा-

घनोदधिवलय से, घनवातवलय से और तनुवातवलय से।

२२५ नैरयिक जीवन उत्कृष्ट तीन समय वाली विग्रह-गति से उत्पन्न होते हैं।

एकेन्द्रिय को छोड़कर वैमानिक पर्यन्त ऐसा जानना चाहिए[1]

२२६ क्षीण मोह वाले अर्हन्त तीन कर्मप्रकृतियों का एक साथ क्षय करते हैं, यथा-

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय।

२२७ अभिजित् नक्षत्र के तीन तारे कहे गये हैं।

इसी तरह श्रवण, अश्विनी, भरणी, मृगशिर, पुष्य और ज्येष्ठा के भी तीन तीन तारे हैं।

२२८ श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के पश्चात् त्रिचतुर्थांश 'पौने, पल्योपम न्यून सागरोपम व्यतीत हो जाने के बाद श्री शान्तिनाथ भगवान् उत्पन्न हुए।

---

१. एकेन्द्रिय जीव, एकेन्द्रिय में उत्पन्न होते हुए त्रसनाड़ी से बाहर भी उत्पन्न होते हैं अतः पांच समय भी लग सकते हैं)।

२२९ श्रमण "भगवान्" महावीर से लेकर तीसरे युगपुरुष (जम्बू स्वामी) पर्यन्त मोक्षगमन कहा गया है[1]।

मल्लिनाथ भगवान् ने तीन सौ पुरुषों के साथ मुण्डित होकर प्रव्रज्या धारण की थी।

इसी तरह पार्श्वनाथ भगवान् ने भी।

२३० श्रमण भगवान् महावीर के जिन नहीं किन्तु जिन के समान, सर्वाक्षरसन्निपाती 'सब भाषाओं के वेत्ता' और जिन के समान यथातथ्य कहने वाले चौदह पूर्वधर मुनियों की उत्कृष्ट सम्पदा 'संख्या' तीन सौ थी।

२३१ तीन तीर्थंकर चक्रवर्त्ती थे, यथा-

शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ।

२३२ ग्रैवेयक विमान प्रस्तर 'समूह' तीन कह कहे गये हैं, यथा-

अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,
मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,
उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर।

अवस्तन ग्रैवेयक विमान स्तर तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

अधस्तनाधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,
अवस्तनमध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,
अवस्तनोपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर।

---

१. लगातार तीन पट्टधर निर्वाण को प्राप्त हुए हैं।

मध्यम ग्रैवेयक विमानप्रस्तर तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

मध्यमाधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

मध्यममध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

मध्यमोपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर ।

उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर तीन प्रकार के कहे गये हैं, यथा-

उपरितन अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

उपरितन मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तर,

उपरितनोपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तर ।

२३३ जीवोंने तीन स्थानों में अर्जित पुद्गलों को पापकर्म रूप में एकत्रित किये, करते हैं और करेगें, यथा-

स्त्रीवेद निर्वातित,

पुरुषवेद निर्वातित,

नपुसंकवेद निर्वातित ।

पुद्गलों का एकत्रित करना, वृद्धि करना, बंध, उदीरणा, वेदन तथा निर्जरा का भी इसी तरह कथन समझना चाहिए ।

२३४ तीन प्रदेशी स्कन्ध अनन्त कहे हैं इस प्रकार-यावत्-त्रिगुण रूक्ष पुद्गल अनन्त कहे गये हैं ।

चार स्थान

प्रथम उद्देशक

२३५ चार प्रकार की अन्त-क्रियाएं[1] कही गई हैं,

उनमें प्रथम अन्तक्रिया इस प्रकार है—

कोई अल्पकर्मा व्यक्ति मनुष्य-भव में उत्पन्न होता है, वह मुण्डित होकर गृहस्थावस्था से अनगार धर्म में प्रव्रजित होने पर उत्तम संयम, संवर और समाधि का पालन करने वाला रूक्षवृत्ति वाला (आसक्ति -रहित) संसार को पार करने का अभिलाषी; शास्त्राध्ययन के लिए तप करने वाला, दुःख का (दुःख के कारण रूप कर्म का) क्षय करने वाला, तपस्वी (आभ्यन्तर ध्यान आदि तप करने वाला) होता है। उसे घोर तप (अनशन आदि) नहीं करना पडता है और न उसे घोर वेदना होती है। (क्योंकि वह अल्पकर्मा ही उत्पन्न हुआ है)। ऐसा पुरुष दीर्घायु भोगकर सिद्ध होता है, बुद्ध होता है, मुक्त होता है, निर्वाण

---

१. मुक्ति, संसार का अन्त करना।

प्राप्त करता है और सब दुखों का अन्त करता है। जैसे – चातुरन्त (चार दिगंत वाली पृथ्वी का स्वामी) चक्रवर्ती भरत राजा

॥ यह पहली अन्तक्रिया है ॥

दूसरी अन्तक्रिया इस प्रकार है —

कोई व्यक्ति अधिक कर्म वाला मनुष्य-भव में उत्पन्न होता है, वह मुण्डित होकर गृहस्थावस्था से अनगार-धर्म में प्रव्रजित होकर संयम युक्त; संवर युक्त-यावत्-उपधान-वान्, दुख का क्षय करने वाला और तपस्वी होताहै। उसे घोर तप करना पड़ता है और उसे घोर वेदना होती है। ऐसा पुरुष अल्पआयु भोगकर सिद्ध होता है -यावत्- दु:खों का अन्त करता है, जैसे गजसुकुमार अणगार।

॥ यह दूसरी अन्तक्रिया है ॥

तीसरी अन्तक्रिया इस प्रकार है —

कोई अल्पकर्मा व्यक्ति मनुष्य-भव में उत्पन्न होता है, वह मुण्डित होकर अगार अवस्था से अनगारधर्म में दीक्षित हुआ, जैसे दूसरी अन्तक्रिया में कहा उसी तरह सर्व कथन करना चाहिए, विशेषता यह है कि वह दीर्घायु भोगकर होता है —यावत्— सब

दुःखों का अन्त करता है। जैसे चातुरन्त चक्रवर्त्ती राजा सनत्कुमार।

॥ यह तीसरी अन्तक्रिया है॥

चौथी अन्तक्रिया इस प्रकार है-

कोई अल्पकर्मा व्यक्ति मनुष्य-भव में उत्पन्न होता है। वह मुण्डित होकर -यावत्-दीक्षा लेकर उत्तम संयम का पालन करता है -यावत्- न तो उसे घोर तप करना पड़ता है और न उसे घोर वेदना सहनी पड़ती है। ऐसा पुरुष अल्पायु भोगकर सिद्ध होता है -यावत्- सव दुःखों का अन्त करता है। जैसे भगवती मरुदेवी।

॥ यह चौथी अन्तक्रिया है॥

२३६ चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक द्रव्य से भी ऊंचे और भाव से भी ऊंचे,[१]
कितनेक द्रव्य से ऊंचे किन्तु भाव से नीचे,[२]
कितनेक द्रव्य से नीचे किन्तु भाव से ऊंचे[३],
कितनेक द्रव्य से भी नीचे और भाव से भी नीचे।[४]

---

१. जैसे चन्दनादि।
२. जैसे नीम आदि।
३. जैसे इलायची आदि।
४. जैसे जवासा आदि।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक द्रव्य से 'जाति से' उन्नत और गुण से भी उन्नत इस प्रकार -यावत्- द्रव्य से भी हीन और गुण से भी हीन।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक वृक्ष ऊंचाई में उन्नत होते हैं और शुभ रस वाले होते हैं।

कितनेक वृक्ष ऊंचाई में उन्नत होते हैं परन्तु अशुभ रस वाले होते हैं।

कितनेक वृक्ष ऊंचाई में अवनत और रसादि में उन्नत होते हैं।

कितनेक वृक्ष ऊंचाई में भी अवनत और रसादि में भी अवनत होते हैं।

इसी तरह चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं-यथा-

द्रव्य से भी उन्नत और गुण-परिणमन से भी उन्नत। इत्यादि चार भंग।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं,

कितनेक ऊंचाई में भी ऊंचे और रूप में भी उन्नत। इत्यादि चार भंग।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कितनेक द्रव्यादि से उन्नत होते हुए रूप से भी उन्नत

हैं। इत्यादि चार भंग।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

द्रव्यादि से उन्नत होते हुए उन्नत मनवाले -यावत्- चार भंग।

इसी प्रकार संकल्प ८ प्रज्ञा ९, दृष्टि १०, शीलाचार ११, व्यवहार १२, पराक्रम १३, सब के चार चार भंग समझ लेने चाहिए।

इन मन-सूत्रों में पुरुष सूत्र ही समझने चाहिये, वृक्ष सूत्र नहीं।

चार प्रकार के वृक्ष कहे गये है, यथा-

कितनेक वृक्ष आकृति से भी सरल और फलादि देने में भी सरल,[1]

कितनेक आकृति में सरल और फलादि देने में व्रक।

इस प्रकार चार भंग।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

आकृति से भी सरल और हृदय से भी सरल।

इसी प्रकार उन्नत प्रणत के चार भंग और ऋजुवक्र के चार भंग भी कहने चाहिये।

पराक्रम तक सब भंग जान लेने चाहिए।

---

१. जिसकी सेवा करने पर उचित समय पर उचित उपकार रूप फल प्राप्त हो।

२३७ प्रतिमाधारी अनगार को चार भाषाए बोलना कल्पता है, यथा-याचनी,[1] प्रच्छनी,[2] अनुज्ञापनी,[3] प्रश्नव्याकरणी ।[4]

२३८ चार प्रकार की भाषाएं कही गई हैं, यथा-

सत्यभाषा, मृषा, सत्य-मृषा और असत्यामृषा-व्यवहार भाषा ।

२३९ चार प्रकार के वस्त्र कहे गये है, यथा-

शुद्ध तन्तु आदि से बुना हुआ भी है और बाह्य मेल से रहित भी है

अथवा पहले भी शुद्ध और अभी भी शुद्ध ।

शुद्ध बुना हुआ तो है परन्तु मलिन है,

शुद्ध बुना हुआ नहीं परन्तु स्वच्छ है ।

शुद्ध बना हुआ भी नहीं है और स्वच्छ भी नहीं है ।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

जाती आदि से शुद्ध और ज्ञानादी गुण से भी शुद्ध ।

---

१. वस्तु मांगने के लिए बोलना ।
२. मार्ग पूछने के लिए या सूत्रार्थ पूछने के लिए बोलना ।
३. स्थान आदि की आज्ञा लेते हुए बोलना ।
४. प्रत्युत्तर देने के लिए बोलना ।

इत्यादि चार भंग !

इसी तरह परिणत और रूप से भी वस्त्र की चौभंगी और पुरुष की चौभंगी समझ लेनी चाहिए।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

जात्यादि से शुद्ध और मन से भी शुद्ध।

इत्यादि चार भंग !

इसी तरह संकल्प-यावत्-पराक्रम के भी चारभंग जानने चाहिए।

२४० चार प्रकार के पुत्र कहे गये हैं,

अतिजात, 'अपने पिता से भी बढ़ा चढ़ा हुआ,

'अनुजात, 'पिता के समान,

अवजात 'पिता से कम गुण वाला,

कुलांगार' कुलमें कलंक लगाने वाला,।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कितने द्रव्य से भी सत्य और भाव से भी सत्य होते हैं।

कितने द्रव्य से सत्य और भाव से असत्य होते हैं।

इत्यादि चार भंग !

इसी तरह परिणत-यावत्-पराक्रमके चार भंग जानने चाहिये।

---

१. मूल में भी सरल और अन्त में भी सरल।

चार प्रकार के वस्त्र कहे गये हैं, यथा-

कितने स्वभाव से भी पवित्र और संस्कार से भी पवित्र,
कितनेक स्वभाव से पवित्र परन्तु संस्कार से अपवित्र
इत्यादि चार भंग।

इसी तरह चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

शरीर से भी पवित्र और स्वभाव से भी पवित्र।
इत्यादि चार भंग।

२४१ शुद्ध वस्त्र के चार भंग पहले कहे हैं उसी प्रकार शुचिवस्त्रके भी चार भंग समझने चाहिए।

२४२ चार प्रकार के कोर कहे गये हैं, यथा-

आम्रफल के कोर,
ताड़ के फल के कोर,
वल्लीफल के कोर,
मेंढे के सिंग के समान फलवाली वनस्पति के कोर।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं यथा-

आम्रफल के कोर के समान,
तालफल के कोर के सामन[1],

---

१ जिसकी बहुत काल तक कष्ट उठा कर सेवा करने पर बड़ा फल प्राप्त होता हो।

वल्ली फल के कोर के समान,[1]

मेंढके विषाण के तुल्य वनस्पति के कोर के समान[2]।

२४३ चार प्रकार के घुन कहे गये हैं, यथा-

लकड़ी के बाहर की त्वचा को खाने वाले,

छाल खाने वाले,

लकड़ी खाने वाले,

लकड़ी का सारभाग खाने वाले।

इसी प्रकार चार प्रकार के भिक्षु कहे गये हैं, यथा-

त्वचा खाने वाले घुन के समान-यावत्-सार खाने वाले घुन के समान।

१ त्वचा खाने वाले घुन के जैसे भिक्षु का तप सार खाने वाले घुन के जैसा है।

२ छाल खाने वाले घुन के जैसे भिक्षु का तप काष्ठ खाने वाले घुन के जैसा है।

---

१ जो विना अधिक कष्ट के और शीघ्र ही सेवक को फल दे दे।

२ जिसकी सेवा करने पर बदले में केवल मीठे शब्द ही मिले विशेष उपकार न हो,

इस वनस्पति के फल सोने के समान वर्ण वाले होते हैं।

३ काष्ठ खाने वाले घुन के जैसे भिक्षु का तप छाल खाने वाले घुन के जैसा है।

४ सार खाने वाले घुन के जैसे भिक्षु का तप त्वचा खाने वाले घुन के जैसा है।

२४४ तृण वनस्पति कायिक चार प्रकार के कहे गये हैं, यथा- अग्रबीज, मूलबीज-पर्वबीज और स्कंधबीज।

२४५ चार कारणों से नरक में नवीन उत्पन्न नैरयिक मनुष्य लोक में शीघ्र आने की इच्छा करता है परन्तु आने में समर्थ नहीं होता है, यथा-

नरकलोक में नवीन उत्पन्न हुआ नैरयिक वहां होने वाली प्रबल वेदना का अनुभव करता हुआ मनुष्यलोक शीघ्र आने की इच्छा करता है किन्तु शीघ्र आने में समर्थ नहीं होता है।

नंरकभूमि में नवीन उत्पन्न हुआ नैरयिक नरकपालों (परमाधार्मिक देवों) के द्वारा पुनःपुनः आक्रान्त होने पर मनुष्यलोक में जल्दी आने की इच्छा करता है परन्तु आने में समर्थ नहीं होता है।

नवीन उत्पन्न हुआ नैरयिक नरकवेदनीय कर्म के क्षीण न होने से, वेदना के वेदित न होने से, निर्जरित न होने से इच्छा करने पर भी मनुष्यलोक में आने में समर्थ नहीं होता है,

इसी तरह नरकायुकर्म के क्षीण न होने से-यावत्-आने में समर्थ नहीं होता है।

इन चार कारणों से नवीन उत्पन्न नैरयिक मनुष्य लोक में शीघ्र आने की इच्छा करने पर भी आने में समर्थ नहीं होता है।

२४६ साध्वि को चार साड़ियां धारण करने और पहनने के लिए कल्पती हैं, यथा-

एक दो हाथ विस्तारवाली,[1]

दो तीन हाथ विस्तारवाली,

एक चार हाथ विस्तारवाली

२४७ ध्यान चार प्रकार के कहे गये हैं, -

आर्त ध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान।

आर्त्तध्यान चार प्रकार का कहा गया है, यथा-

अमनोज्ञ 'अनिष्ट' वस्तु की प्राप्ति होने पर उसे दूर करने की चिन्ता करना।

मनोज्ञवस्तु की प्राप्ति होने पर वह दूर न हो उसकी चिन्ता करना।[2]

---

१ विस्तार का अर्थ है चौड़ाई-पने से समझना चाहिए।

२ सूत्रार्थ का चिन्तन।

बीमारी होने पर उसे दूर करने की चिन्ता करना।
सेवित काम भोगों से युक्त होने पर उनके चले न जाने
की चिन्ता करना।

अथवा-ज्वरादि से भोग भोगने में असमर्थ न हो जाऊं'
ऐसी चिन्ता करना।

आर्तध्यान के चार लक्षण हैं' यथा-

आक्रन्दन करना, शोक करना,
आंसु गिराना, विलाप करना।

रौद्रध्यान चार प्रकार का है, यथा-

हिंसानुबन्धी, मृषानुबन्धी,
स्तेयानुबन्धी संरक्षणाणुबन्धी।

रोद्रध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं, यथा-

हिंसादि दोषों में से किसी एक में
अत्यन्त प्रवृत्ति करना, हिंसादि सब दोषों में बहुविध
प्रवृत्ति करना, हिंसादि अधर्मकार्य में धर्म-बुद्धि
से या अभ्युदय के लिये प्रवृत्ति करना,
मरण पर्यन्त हिंसादि कृत्यों के लिये पश्चात्ताप न
होना आमरणान्त दोष है।

चार प्रकार का धर्मध्यान स्वरूप, लक्षण, आलम्बन एवं अनुप्रेक्षा रूप चार पदों से चिन्तनीय है

आज्ञाविचय,[1]

अपायविचय,[2]

विपाकविचय,[3]

संस्थान विचय[4] ।

धर्मध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं यथा-

आज्ञारुचि ,निसर्गरुचि,

सूत्ररुचि अवगाढरुचि ।

धर्मध्यान के चार आलम्बन कहे गये हैं, यथा-

वाचना, पृच्छना, परिवर्तना और अनुप्रेक्षा ।

धर्मध्यान की चार भावनाएं कही गई हैं, यथा-

एकत्वानुप्रेक्षा, अनित्यानुप्रेक्षा,

---

१ वीतराग की आज्ञा का पर्यालोचन करना ।
२ रागादि से होने वाले अनर्थो का विचार ।
३ कर्म-फल का विचार करना ।
४ लोक आदि के आकारका चिन्तन करना
५ शास्त्रों के अवगाहन से अथवा गुरु के उपदेश से होने वाली । रुचि ।

अशरणानुप्रेक्षा, संसारानुप्रेक्षा ।

शुक्लध्यान चार प्रकार का कहा गया है, यथा-

पृथक्त्ववितर्क सविचारी ।[1]

एकत्व वितर्क अविचारी[2]

सूक्ष्म-क्रिया अनिवृत्ति[3]

समुच्छिन्नक्रिया अप्रतिपाति[4]

---

१ एक द्रव्य के विभिन्न पर्यायों की पृथक् पृथक् विस्तार से श्रुतानुसार विचार करना और अर्थ से शब्द का और शब्द से अर्थ का विचार करना ।

२ द्रव्य की पयार्यों में अभेद का चिन्तन करना तथा अर्थ से शब्द में एवं शब्द से अर्थ चिन्तन करना अथवा मन आदि योगों का एक से दूसरे में संचरण न होना ।

३ मोक्षगमन के समय मनोयोग आदि के निरुद्ध हो जाने पर सूक्ष्म श्वासोच्छ्वास रूप क्रिया का शेष रहना तथा वर्धमान परिणाम रहने से नहीं गिरनेवाला ध्यान होने से सूक्ष्मक्रिया अनिवृत्ति है ।

४ विषयभोग और धनादि के रक्षण के लिये व्याकुल होना)

५ शैलेशीकरण में सम्पूर्ण काययोग का भी निरोध हो जाने से क्रिया का उच्छेद हो जाता है तथा वह अवस्था अप्रति-पाती है, अतः समुच्छिन्न क्रिया, अप्रतिपाती कहा गया ।

शुक्लध्यान के चार लक्षण कहे गये हैं, यथा-

अव्यथ[1], असम्मोह[2], विवेक[3], व्युत्सर्ग[4]।

शुक्लध्यान के चार आलम्बन हैं, यथा-

क्षमा, निमर्मत्व, मृदुता और सरलता।

शुक्लध्यान की चार भावनाएं कहीं गई हैं यथा-

अनन्तवर्तितानुप्रेक्षा[5],

विपरिणामानुप्रेक्षा[6],

अशुभानुप्रेक्षा,[7]

अपायानुप्रेक्षा[8],

---

१ देवकृत उपसर्गों से होने वाली व्यथा का अभाव।

२ अमूढता,

३ सब संयोगों से अपने आपको पृथक् करना,

४ देहोपाधि का त्याग।

५ जीव अनन्त वार चार गति रूप संसार में भ्रमण कर चु[illegible] है आदि विचारना।

६ वस्तु के परिणमन की विचारणा।

७ संसार की अशुभता का विचार करना।

८ आश्रवके कटुक फलों का विचार करना।

२४८ देवों की स्थिति (क्रम–मर्यादा) चार प्रकार की है, यथा—

कोई सामान्य देव है, कोई देवों में स्नातक (प्रधान) हैं, कोई देव पुरोहित हैं, कोई स्तुति-पाठक देव हैं।

चार प्रकार का संवास 'मैथुन के लिए सहनिवास' कहा गया है, यथा-

कोई देव देवी के साथ संवास करता है,

कोई देव मानुषी नारी या तिर्यंच स्त्री के साथ संवास करता है,

कोई मनुष्य या तिर्यंच-पुरुष देवीके साथ संवास करता है,।

कोई मनुष्ह या तिर्यंच पुरुप मानुपी या तिर्यंची के साथ संवास करता है।

२४९ चार कषाय कहे गये हैं, यथा—

क्रोधकषाय, मानकपाय, मायाकपाय और लोभकषाय।

ये चारों कपाय नारक-यावत्-वैमानिकों में पाये जाते हैं

क्रोध के चार आधार कहे गये हैं, यथा—

आत्मप्रतिष्ठित[1] परप्रतिष्ठित[2]

---

१ 'अपने ऊपर आने वाला क्रोध'।

२ दूसरे पर होने वाला' क्रोध।

तदुभय प्रतिष्ठित[1], अप्रतिष्ठित[2]

ये क्रोध के चार आधार नैरयिक-यावत्-वैमानिक पर्यन्त सब में पाये जाते हैं।

इसी प्रकार-यावत्-लोभ के भी चार आधार हैं।
मान, माया और लोभ के चार आधार वैमानिक पर्यन्त सब दण्डकों में पाये जाते हैं।

चार कारणों से क्रोध की उत्पत्ति होती है, यथा—
क्षेत्र के निमित्त से, वस्तु के निमित्त से,
शरीर के निमित्त से, उपधि के निमित्त से।

इस प्रकार नारक-यावत्-वैमानिक में जानना चाहिए।
इसी प्रकार-यावत्-लोभ की उत्पत्ति भी चार प्रकार से होती है। यह मान, माया और लोभ की उत्पत्ति नारक-जीवों से लेकर वैमानिक पर्यन्त सब में होती है।

चार प्रकार का क्रोध कहा गया है, यथा—
अनन्तानुबन्धी क्रोध, अप्रत्याख्यान क्रोध,
प्रत्याख्यान नावरण क्रोध, संज्वलन क्रोध।
यह चारों प्रकार का क्रोध नारक-यावत्-वैमानिकों में

---

१ अपने और दूसरे के अपराध पर आने वाला क्रोध।
२ बिना किसी बाह्य कारण के क्रोध वेदनीय के उदय से होने वाला क्रोध।'

इसी तरह—यावत्—लोभ भी वैमानिक पर्यन्त है।

चार प्रकार का क्रोध कहा गया है, यथा-

आभोगनिर्वर्त्तित,[1]

अनाभोगनिवर्तित,[2]

उपशान्त क्रोध,

अनुपशान्त क्रोध,

यह चारों प्रकार का क्रोध नैरियक—यावत्

—वैमानिकों में होता है।

इसी तरह—यावत्—चार प्रकार का लोभ—यावत्—

वैमानिकों में पाया जाता है।

१० चार कारणों से जीवों ने आठ कर्म-प्रकृतियों का चयन किया है, यथा-

क्रोध से, मान से, माया से और लोभ से।

इसी प्रकार वैमानिकों तक समझ लेना चाहिए।

इसी प्रकार "ग्रहण करते हैं" यह दण्डक भी जान लेना चाहिए।

इसी प्रकार "ग्रहण करेंगे" यह दण्डक भी समझ लेना चाहिए।

---

१. क्रोध के फल को जानते हुए भी किया गया क्रोध।
२. बिना जाने किया गया क्रोध।

इसी प्रकार चयन के तीन दण्डक हुए ।

इसी प्रकार उपचय किया, करते हैं और करेंगे ।

वन्ध किया, करते हैं और करेंगे ।

उदीरणा की, करते हैं और करेंगे ।

वेदन किया, करते हैं और करेंगे ।

निर्जरा की, करते हैं और करेंगे ।

यों वैमानिक पर्यन्त चौवीस दण्डक में "उपचय —यावत्—निर्जरा करेंगे" तीन-तीन दण्डक समझ लेने चाहिए ।

२५१ चार प्रकार की प्रतिमाएं कही गई हैं, यथा-

समाधिप्रतिमा, उपधानप्रतिमा,

विवेकप्रतिमा, व्युत्सर्गप्रतिमा ।

चार प्रकार की प्रतिमाएं कही गई हैं, यथा-

भद्रा, सुभद्रा, महाभद्रा और सर्वतोभद्रा ।

चार प्रकार की प्रतिमाएं कही गई हैं, यथा-

क्षुद्रा मोकप्रतिमा, महती मोकप्रतिमा,

यवमध्या प्रतिमा, वज्रमध्या प्रतिमा ।

२५२ चार अजीव अस्तिकाय कहे गये हैं, यथा-

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय,

आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय ।

चार अरूपी अस्तिकाय कहे गये हैं, यथा-

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय,

आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय।

२५३ चार प्रकार के फल कहे गये हैं, यथा-

कोई कच्चा होने पर भी थोड़ा मीठा होता है,

कोई कच्चा होने पर भी अधिक मीठा होता है,

कोई पक्का होने पर भी थोड़ा मीठा होता है,

कोई पक्का होने पर ही अधिक मीठा होता है।

इसी प्रकार चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

श्रुत और वय से अल्प होते हुए भी थोड़े मीठे फल के समान अल्प उपशमादि गुण वाले होते हैं।

इस प्रकार चारों भंग समझने चाहिए।

२५४ चार प्रकार के सत्य कहे गये हैं, यथा-

काया की सरलतारूप सत्य, भाषा की सरलतारूप सत्य,

भावों की सरलतारूप सत्य, अविसंवाद योगरूप सत्य।[1]

चार प्रकार का मृषावाद कहा गया है, यथा-

काया की वक्रतारूप मृषावाद,

भाषा की वक्रतारूप मृषावाद,

भावों की वक्रतारू मृषावाद,

---

१. वचन-पालन करना, विश्वासघात न करना।

विसंवाद योगरूप मृषावाद ।

चार प्रकार के प्रणिधान (प्रयोग) कहे गये हैं, यथा-

मन–प्रणिधान, वचन–प्रणिधान,

काय–प्रणिधान, उपकरण–प्रणिधान ।

ये चारों प्रणिधान नारक –यावत्– वैमानिक पर्यन्त समस्त पंचेन्द्रिय दण्डकों में जानने चाहिए ।

चार प्रकार के सुप्रणिधान कहे गये हैं, यथा-

मन-सुप्रणिधान -यावत्- उपकरण-सुप्रणिधान ।

यह सुप्रणिधान संयत मनुष्यों में ही पाये जाते हैं ।

चार प्रकार के दुष्प्रणिधान कहे गये हैं, यथा-

मन-दुष्प्रणिधान - यावत्- उपकरण- दुष्प्रणिधान ।

यह पंचेन्द्रियों को – यावत्– वैमानिकों को होता है ।

२५५ चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कोई प्रथम मिलन में वार्तालाप से भद्र लगते हैं परन्तु सहवास से अभद्र मालूम होते हैं,

कोई सहवास से भद्र मालूम होते हैं पर प्रथम मिलन में अभद्र लगते हैं,

कोई प्रथम मिलन में भी भद्र होते हैं और सहवास से भी भद्र मालूम होते हैं,

कोई प्रथम मिलन में भी भद्र नहीं लगते और सहवास

से भी भद्र मालूम नहीं होते।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कोई अपने दोष देखता है, दूसरों के नहीं,

कोई दूसरों के दोष देखता है, अपने नहीं।

इस प्रकार चौभंगी जाननी चाहिए।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं,यथा-

कोई अपने पाप की उदीरणा करता है किंतु दूसरों के पाप की उदीरणा नहीं करता।

इस प्रकार चार भंग जानने चाहिए।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कोई अपने पाप को शान्त करता है, दूसरों के पाप को शान्त नहीं करता,

इस तरह चौभंगी जाननी चाहिए।

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

कोई स्वयं तो अभ्युत्थान आदि से दूसरों का सम्मान करते हैं परन्तु दूसरों के अभ्युत्थान से अपना सम्मान नहीं कराते हैं।

इत्यादि-चोभंगी।

इसी तरह कोई स्वयं वन्दन करता है किन्तु दूसरों से वन्दन नहीं कराता है।

इसी तरह सत्कार, सम्मान, पूजा, वाचना, सूत्रार्थ ग्रहण करना, सूत्रार्थ पूछना, प्रश्न का उत्तर देना, आदि जानें ।

चार प्रकार पुरुप कहे गये हैं, यथा-

कोई सूत्रधर होता है अर्थधर नहीं होता,
कोई अर्थधर होता है, सूत्रधर नहीं होता ।
कोई सूत्रधर भी होता है और अर्थधर भी होता है,
कोई सूत्रधर भी नहीं होता और अर्थधर भी नहीं होता

२५६ असुरेन्द्र असुकुमार-राज चमर के चार लोकपाल कहे गये हैं,यथा-

सोम, यम, वरुण और वैश्रमण ।

इसी तरह बलीन्द्र के भी सोम, यम, वैश्रमण और वरुण चार लोकपाल हैं ।

धरणन्द्र के कालपाल, कोलपाल, शैलपाल और शंखपाल ।
इसी तरह भूतानन्द के कालपाल, कोलपाल, शंखपाल और शैलपाल नामक चार लोकपाल हैं ।

वेणुदेव के चित्र, विचित्र, चित्रपक्ष और विचित्रपक्ष ।
वेणुदाली के चित्र, विचित्र, विचित्रपक्ष और चित्रपक्ष ।
हरिकान्त के प्रभ, सुप्रभ, प्रभाकान्त और सुप्रभाकान्त ।
हरिस्सह के प्रभ. सुप्रभ, सुप्रभाकान्त और प्रभाकान्त ।
अग्निशिख के तेज, तेजशिख, तेजस्कान्त और तेजप्रभ ।

अग्निमानव के तेज, तेजशिख, तेजप्रभ और तेजस्कान्त ।
पूर्णइन्द्र के रूप, रूपांश, रूपकान्त और रूपप्रभ ।
विशिष्ट इन्द्र के रूप, रूपांश, रूपप्रभ और रूपकान्त ।
जलकान्त इन्द्र के जल, जलरत, जलकान्त और जलप्रभ ।
जलप्रभ के जल, जलरत, जलप्रभ और जलकान्त ।
अमितगत के त्वरितगति, क्षिप्रगति, सिंहगति और सिंह विक्रमगति ।
अमितवाहन के त्वरितगति, क्षिप्रगति,
सिंहविक्रमगति सिंहगति और ।
वेलम्ब के काल, महाकाल, अंजन और रिष्ट ।
प्रभंजन के काल, महाकाल, रिष्ट और अंजन ।
घोस के आवर्त्त, व्यावर्त्त, नंद्यावर्त्त और महानंद्यावर्त्त ।
महाघोषके आवर्त्त,व्यावर्त्त,महानन्द्यावर्त्त, और नन्द्यावर्त्त ।
शक्र के सोम, यम, वरुण और वैश्रमण ।
ईशानेन्द्र के सोम, यम, वैश्रमण और वरुण ।
इस प्रकार एक के अन्तर से अच्युतेन्द्र तक चार-चार लोकपाल समझने चाहिए ।
वायुकुमार चार प्रकार के कहे गये हैं, यथा-
काल, महाकाल, वेलम्ब और प्रभंजन ।

२ ७ चार प्रकार के देव कहे गये हैं, यथा-

भवनवासी, वानव्यन्तर, ज्योतिष्क और विमानवासी।

२५८ चार प्रकार के प्रमाण कहे गये हैं, यथा-
द्रव्यप्रमाण, क्षेत्रप्रमाण, कालप्रमाण और भावप्रमाण।

२५९ चार प्रधान दिक्कुमारियां कही गई हैं, यथा-
रूपा, रूपांशा, सुरूपा और रूपावती। [२]
चार प्रधान विद्युत्कुमारियां कही गई हैं, यथा-
चित्रा, चित्रकनका, शतेरा और सौदामिनी।

२६० देवेन्द्र, देवराज शक्र की मध्यम परिषद् के देवों की चार पल्योपम की स्थिति कही गई है।
देवेन्द्र देवराज ईशान की मध्यमपरिषद् की देवियों की चार पल्योपम की स्थिति कही गई है। [२]

२६१ संसार चार प्रकार का कहा गया है, यथा-
द्रव्यसंसार, क्षेत्रसंसार, कालसंसार और भावसंसार।

२६२ चार प्रकार का दृष्टिवाद कहा गया है, यथा-
परिक्रम, सूत्र, पूर्वगत और अनुयोग।

२६३ चार प्रकार के प्रायश्चित्त कहे गये हैं, यथा-
ज्ञानप्रायश्चित्त, दर्शनप्रायश्चित्त,
चारित्रप्रायश्चित्त, व्यक्तकृत्यप्रायश्चित्त,[1]

---

१ गीतार्थ द्वारा किया जाने वाला प्रायश्चित्त।

अथवा प्रीतिकृत्य[1]

चार प्रकार के प्रायश्चित्त कहे गये है, यथा-

परिणेवना प्रायश्चित्त,[2] संयोजना प्रायश्चित्त[3]

आरोपण प्रायश्चित्त[4] परिकुंचन प्रायश्चित्त[5]

---

१ वैयावृत्यादि

२ अकृत्यके लिए किया जाने वाला प्रायश्चित्त।

३ समान कई अतिचारों का मेल होने पर दिया गया प्रायश्चित्त जैसे शय्यातरपिंड ग्रहण किया वह भी जल से गीले हाथ वाले से लिया, वह भी सामने लाया हुआ और वह भी आधाकर्मी।

४ एकबार अपराधकरने और प्रायश्चित्त कर लेने पर पुनः पुनः उसी दोष के आसेवन से जो विजातीय प्रायश्चित्त दिया जाता है, जैसे पहले पांच अहोरात्र का प्रायश्चित्त एक बार का प्राय-श्चित्त मिलने पर पुन: उसी का सेवन किया तो दस दिन का, पुनः सेवन करने पर पन्द्रह दिन का इस प्रकार-यावत्-छहमास का प्रायश्चित्त दिया जा सकता है यह आरोपणा प्रायश्चित्त है।

५ परिकुंचन प्रायश्चित्त-अपराध के छिपाने या अन्यथा कथन करने के अपराध में दिया गया प्रायश्चित्त ।

२६४ चार प्रकार का काल कहा गया है, यथा-

प्रमाणकाल, यथायुर्निवृत्तिकाल[1]

मरणकाल, अद्धाकाल।

२६५ पुद्गलों का चार प्रकार का परिणमन कहा गया है, यथा-

वर्णपरिणाम, गंधपरिणाम,

रसपरिणाम, स्पर्शपरिणाम।

२६६ भरत और ऐरवत क्षेत्र में प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर को छोड़कर मध्य के बावीस अर्हन्त भगवान् चातुर्याम (चार महाव्रत रूप) धर्म की प्ररूपणा करते हैं, यथा-

सब प्रकार की हिंसा से निवृत्त होना,

सब प्रकार के झूठ से निवृत्त होना

सब प्रकार के अदत्तादान से निवृत्त होना,

सब प्रकार के बाह्य पदार्थों के आदान से निवृत्त होना[2]

सब महाविदेहों में अर्हन्त भगवान् चातुर्याम धर्म का प्ररूपण करते हैं, यथा-

सब प्रकार के प्राणातिपात से निवृत्त होना—यावत्—

सब प्रकार के बाह्य पदार्थों के आदान से निवृत्त होना[2]।

---

१ आयु बंध के अनुसार उतने काल तक उस रूप में रहना।

२ धर्मोपकरण के अतिरिक्त-स्त्री, धन-धान्य आदि के परिग्रह से निवृत्त होना।

२६७ चार प्रकार की दुर्गतियां कही गई हैं, यथा-

नैरयिक दुर्गति, तिर्यंचयोनिक दुर्गति,

मनुष्य दुर्गति, देव दुर्गति ।

चार प्रकार की सुगतियां कही गई हैं, यथा-

सिद्ध सुगति, देव सुगति,

मनुष्य सुगति, श्रेष्ठ कुलमें जन्म ।

चार दुर्गतिप्राप्त कहे गये हैं, यथा-

नैरयिक दुर्गतिप्राप्त. तिर्यंचयोनिक दुर्गतिप्राप्त, ।

मनुष्य दुर्गति प्राप्त, देव दुर्गति प्राप्त ।

चार सुगति प्राप्त कहे गये हैं, यथा-

सिद्ध सुगति प्राप्त यावत्–श्रेष्ठ कुल में जन्म प्राप्त । [४]

२६८ प्रथम समय जिन (सयोगिकेवली) के चार कर्म-प्रकृतियां क्षीण होती हैं, यथा-

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय ।

केवल ज्ञान–दर्शन जिन्हें उत्पन्न हुआ है ऐसे अर्हन्, जिन केवल चार कर्मप्रकृतियों का वेदन करते हैं, यथा-

वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र ।

प्रथम समय सिद्ध के चार कर्मप्रकृतियां एक साथ क्षीण होती हैं, यथा-

वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र ।

देखकर, बोलकर, सुनकर और स्मरण कर। [३]

२७० चार प्रकार के अन्तर कहे गये हैं,-यथा-

काष्ठान्तर[1], पक्ष्मान्तर[2], लोहान्तर[3], प्रस्तरान्तर[4]।

इसी तरह स्त्री-स्त्री में और पुरुष-पुरुष में भी चार प्रकार का अन्तर कहा गया है, यथा-

काष्ठान्तर के समान, पक्ष्मान्तर के समान,

लोहान्तर के समान, प्रस्तरान्तर के समान।

२७१ चार प्रकार के कर्मकर (नौकर) कहे गये हैं, यथा-

दिवसभृतक[5], यात्राभृतक[6], उच्चताभृतक,[7] कब्बाडभृतक[8]।

२७२ चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं, यथा-

---

१. काष्ठ-काष्ठ में अन्तर, जैसे कि चन्दन भी काष्ठ है और आकड़ा भी काष्ठ है परन्तु इनमें अन्तर है।

२. कपास-रूई-रूई में अन्तर।

३. लोह-लोह में अन्तर।

४. पाषाण- पाषण में अन्तर।

५. प्रतिदिन मूल्य ठहरा कर काम करने के लिए रखा जाय वह।

६. देशान्तर में जाने के लिए सहायक रूप से में रखा जाय वह।

७. मूल्य और समय का नियम करके नियतकाल तक जिससे कार्य लिया जाय वह।

८. जमीन खोदने वाले ओड़ आदि जो ठेके से काम करते हैं।

कितनेक प्रकट रूप से दोष का सेवन करते हैं किन्तु गुप्त रूप से नहीं,

कितनेक प्रकट रूप से दोष का सेवन करते हैं किन्तु प्रकट रूप से नहीं,

कितनेक प्रकट रूप से भी और गुप्त रूप से भी दोष सेवन करते हैं,

कितनेक न तो प्रकट रूप में और न गुप्त रूप में दोष का सेवन करते हैं।

२७३ असुरेन्द्र असुरकुमारराज चमर के सोम महाराजा (लोकपाल) की चार अग्रमहिषियां कही गई हैं, यथा-

कनका, कनकलता, चित्रगुप्ता और वसुंधरा।

इसी तरह-यम, वरुण और वैश्रमण के भी इसी नाम की चार-चार अग्रमहिषियां है।

वेरोचनेन्द्र वैरोचनराज बलि के सोम लोकपाल की चार अग्रमहिषियां हैं, यथा-

मित्रका, सुभद्रा, विद्युता और अशनी।

इसी तरह यम, वैश्रमण और वरुण की भी अग्रमहिषियां इन्हीं नाम वाली हैं।

नागकुमारेन्द्र, नागकुमार-राज धरण के कालवाल, लोकपाल की चार अग्रमहिषियां हैं, यथा-

अशोका, विमला, सुप्रभा और सुदर्शना।

इसी प्रकार—यावत्—शंखवाल की अग्रमहिषियां है।

नागकुमारेन्द्र, नागकुमार-राज भूतानन्द के कालवाल लोकपाल की चार अग्रमहिषियां हैं, यथा-

सुनन्दा, सुभद्रा, सुजाता और सुमना।

इसी प्रकार—यावत्—शैलवाल की अग्रमहिषियां समझनी चाहिए।

जिस प्रकार धरणेन्द्रके लोकपालों का कथन किया उसी प्रकार सब दाक्षिणात्य—यावत्—घोप नामक इन्द्रके लोकपालो की अग्रमहिषियां जाननी चाहिये।

जिस प्रकार भूतानन्द का कथन किया उसी प्रकार उत्तर के सब इन्द्र—यावत्—महाघोप इन्द्र के लोकपालों की अग्रमहिषियां समझनी चाहिये।

पिशाचेन्द्र पिशाचराज काल की चार अग्रमहिषियां हैं, यथा-

कमला, कमलप्रभा, उत्पला और सुदर्शना।

इसी तरह महाकाल की भी।

भूतेन्द्र भूतराज सुरूप के भी चार अग्रमहिषियां हैं, यथा-

रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा और सुभगा।

इसी तरह प्रतिरूप के भी।

यक्षेन्द्र यक्षराज पूर्णभद्र के चार अग्रमहिषियां हैं, यथा-

पुत्रा, बहुपुत्रा, उत्तमा और तारका।

ख—इसीप्रकार यक्षेन्द्र मणिभद्र की चार अग्रमहिषियों के नाम भी ये ही हैं।

४क—राक्षसेन्द्र, राक्षसराज भीम की अग्रमहिषियां चार हैं, उनके नाम ये हैं—

१. पद्मा, २. वसुमती, ३. कनका और ४. रत्नप्रभा।

ख—इसीप्रकार राक्षसेन्द्र महाभीम की चार अग्रमहिषियों के नाम भी ये ही हैं।

५क—किन्नरेन्द्र किन्नर की अग्रमहिषियां चार हैं, उनके नाम ये हैं—

१. वडिंसा. २. केतुमती, ३. रतिसेना और ४. रतिप्रभा।

ख—इसीप्रकार किन्नरेन्द्र किंपुरुष की चार अग्रमहिषियों के नाम भी ये ही हैं।

६क—किंपुरूषेन्द्र सत्पुरुष की अग्रमहिषियां चार हैं उनके नाम ये हैं—

१. रोहणी, २. नवमिता, ३. ह्री और ४. पुष्पवती।

ख—इसीप्रकार पुरुषेन्द्र महापुरुष की चार अग्रमहिषियों के नाम भी ये ही हैं।

७क—महोरगेन्द्र अतिकाय की अग्रमहिषियां चार हैं उनके नाम ये हैं—

१. भुजगा, २. भुजगवती, ३. महाकच्छा और ४. स्फुटा।

ख—महोरगेन्द्र महाकाय की चार अग्रमहिषियों के नाम भी ये ही हैं।

८क—गंधर्वेन्द्र गीतरति की अग्रमहिषियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१. सुघोषा, २. विमला, ३. सुसरा और ४. सरस्वती।

ख—इसी प्रकार गंधर्वेन्द्र गीत यशकी चार अग्रमहिषियों के नाम भी ये ही हैं।

९-१—ज्योतिष्केन्द्र, ज्योतिषराज चन्द्र की अग्रमहिषियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१. चन्द्रप्रभा, २. ज्योत्स्नाभा, ३. अर्चिमाली और ४. प्रभंकरा।

२—इसी प्रकार सूर्य की चार अग्रमहिषियों में प्रथम अग्रमहिषी का नाम सूर्यप्रभा और शेष तीन के नाम चन्द्र के समान हैं।

३—इंगाल महाग्रह की अग्रमहिषियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१. विजया, २. वैजयंती, ३. जयंती और ४. अपराजिता।

४—इसीप्रकार सभी महाग्रहों की-यावत्-भावकेतु की चार-चार अग्रमहिषियों के नाम भी ये ही हैं।

१० १-क—शक्र देवेन्द्र देवराज के सोम (लोकपाल) महाराज की अग्रमहिषियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१. रोहिणी, २. मदना, ३. चित्रा और ४. सोमा।

ख-घ—शेष लोकपालों की यावत् वैश्रमण की चार-चार अग्रमहिषियों के नाम भी ये ही हैं।

२-क—ईशानेन्द्र देवेन्द्र देवराज के सोम (लोकपाल) महाराज की अग्रमहिषियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१. पृथ्वी, २. राजी, ३. रतनी और ४. विद्युत्।

ख-घ—इसीप्रकार शेष लोकपालों की-यावत्-वरुण की चार-चार अग्रमहिषियों के नाम भी ये ही हैं।

२७४ १—गोरस विकृतियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१. दूध, २. दधि, ३. घृत और ४. नवनीत।

२—स्निग्ध विकृतियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१. तैल, २. घृत, ३. चर्बी और ४. नवनीत।

३—महाविकृतियां चार हैं। उनके नाम ये हैं—

१. मधु, २. मांस, ३. मद्य और ४. नवनीत।

२७५ १क—कूटागार=शिखराकार गृह चार प्रकार के हैं—

१. गुप्त-प्राकार से आवृत और गुप्त द्वार वाला है,

२. गुप्त-प्राकार से आवृत किन्तु अगुप्त द्वार वाला है,

३. अगुप्त-प्राकार रहित है किन्तु गुप्त द्वार वाला है।

४. अगुप्त-प्राकार रहित हैं और अगुप्त द्वार वाला है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष गुप्त (वस्त्रावृत) हैं और गुप्तेन्द्रिय भी है।

२. एक पुरुष (वस्त्रावृत) हैं किन्तु अगुप्तेन्द्रिय हैं।

३. एक पुरुष अगुप्त (अनावृत) है किन्तु गुप्तेन्द्रिय है।

४. और एक पुरुष अगुप्त (अनावृत) भी है और अगुप्तेन्द्रिय भी है।

२ क—कूटागारशाला=शिखराकार शाला चार प्रकार की है। वे इस प्रकार हैं—

१. गुप्त है—प्राकारादि से आवृत है और गुप्त द्वार वाली है।

२. गुप्त है—प्राकारादि से आवृत है किन्तु गुप्त द्वार वाली नहीं है।

३. अगुप्त है—प्राकारादि से आवृत नहीं है किन्तु गुप्तद्वार वाली है।

४. अगुप्त भी है—प्राकारादि से आवृत नहीं है और गुप्तद्वार वाली भी नहीं है।

ख—इसी प्रकार स्त्री समुदाय भी चार प्रकार का है। वह इस प्रकार का है—

१. एक गुप्ता है—वस्त्रावृता है और गुप्तेन्द्रिया है।

२. एक गुप्ता है—वस्त्रावृता है किन्तु गुप्तेन्द्रियाँ नहीं है।

३. एक अगुप्ता है—वस्त्रादि से अनावृत है किन्तु गुप्तेन्द्रिया है।

४. एक अगुप्ता भी है—वस्त्रादि से अनावृता भी है और अगुप्तेन्द्रिया भी है।

अवगाहना (शरीर का प्रमाण) चार प्रकार की है यह इस प्रकार की है—

१. द्रव्यावगाहना—अनंतद्रव्ययुता, २. क्षेत्रावगाहना—असंख्यप्रदेशावगाढ़ा, ३. कालावगाहना—असंख्यसमय-स्थितिका, ४. भावावगाहना—वर्णादिअनंतगुणयुता।

२७७ चार प्रज्ञप्तियां अङ्गबाह्य हैं। उनके नाम ये हैं—

१. चंद्रप्रज्ञप्ति, २. सूर्यप्रज्ञप्ति, ३. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति ४. द्वीपसारणप्रज्ञप्ति।

॥ चतुर्थ स्थानक प्रथम उद्देशक समाप्त ॥

२७८ १. प्रतिसंलीन—(कषाय का निरोध करने वाले) पुरुष चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. क्रोधप्रतिसंलीन—क्रोध का निरोध करने वाला।

२. मानप्रतिसंलीन—मान का निरोध करने वाला।

३. मायाप्रतिसंलीन—माया का निरोध करने वाला।

४. लोभप्रतिसंलीन—लोभ का निरोध करने वाला।

२. अप्रतिसंलीन (कषाय का निरोध न करने वाला) पुरुष चार प्रकार के कहे गये हैं। वह इस प्रकार हैं—

१. क्रोध अप्रतिसंलीन—क्रोध का निरोध न करने वाला।

२. मान अप्रतिसंलीन—मान का निरोध न करने वाला।

३. माया अप्रतिसंलीन—माया का निरोध न करने वाला।

४. लोभ अप्रतिसंलीन—लोभ का निरोध न करने वाला।

३. प्रतिसंलीन (प्रशस्त प्रवृत्तियों में प्रवृत्त और अप्रशस्त प्रवृत्तियों से निवृत्त) पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार हैं—

१. मन प्रतिसंलीन—मन का निग्रह करने वाला।
२. वचन प्रतिसंलीन—वचन का निग्रह करने वाला।
३. काय प्रतिसंलीन—काया का निग्रह करने वाला।
४. इन्द्रिय प्रतिसंलीन—इन्द्रियों का निग्रह करने वाला।

४. अप्रतिसंलीन (अप्रशस्त कार्यों में प्रवृत्त और प्रशस्त कार्यों से उदासीन) पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. मन अप्रतिसंलीन—मन का निग्रह न करने वाला।
२. वचन अप्रतिसंलीन—वचन का निग्रह न करने वाला।
३. काय अप्रतिसंलीन—काया का निग्रह न करने वाला।

४. इन्द्रिय अप्रतिसंलीन—इन्द्रियों का निग्रह न करने वाला।

२७९ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष दीन है (धनहीन है) और दीन है[1] (हीन मना है)।
२. एक पुरुष दीन है (धनहीन है) किन्तु अदीन है (महामना है)।
३. एक पुरुष अदीन है (धनी है) किन्तु दीन है (हीनमना है)।
४. एक पुरुष अदीन है (धनी है) और अदीन (महामना भी है)।

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार का है—

१. पुरुष दीन है (प्रारम्भिक जीवन में भी निर्धन है) और दीन है (अंतिम जीवन में भी निर्धन है)।
२. एक पुरुष दीन है (प्रारम्भिक जीवन में निर्धन है) किन्तु अदीन भी है (अंतिम जीवन में धनी हो जाता है)

---

१. यहां 'दीन' का अर्थ हीन है।

३. एक पुरुष अदीन है (प्रारम्भिक जीवन में धनी है) किन्तु दीन भी है (अन्तिम जीवन में निर्धन हो जाता है)

४. एक पुरुष अदीन है (प्रारम्भिक जीवन में भी धनी है) और अदीन है (अन्तिम जीवन में भी धनी ही रहता है)[1]

२—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष दीन है (शरीर से कृश है) और दीन परिणति वाला है (कायर है)

२. एक पुरुष दीन है (शरीर से कृश है) किन्तु अदीन परिणति वाला है (शूरवीर है)

३. एक पुरुष अदीन है (हृष्ट-पुष्ट है) किन्तु दीन परिणति वाला है (कायर है)

४. एक पुरुष अदीन भी है (हृष्ट-पुष्ट भी है) और अदीन परिणति वाला भी है (शूरवीर भी है)

३—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष दीन है (शरीर से कृश है) और दीन रूप भी है (मलिन वस्त्र वाला है)

---

१. यह व्याख्या भी टीकाकार सम्मत है।

२. एक पुरुष दीन है (शरीर से कृश है) किन्तु अदीन रूप है (वस्त्र आदि से सुसज्जित है)

३. एक पुरुष अदीन है (शरीर से हृष्ट-पुष्ट है) किन्तु दीन रूप है (मलिन वस्त्र वाला है)

४. एक पुरुष अदीन है (शरीर से हृष्ट-पुष्ट है) और अदीन रूप भी है) वस्त्र आदि से सुसज्जित है)

४-१७—इसी प्रकार ५ दीन मन, ६ दीन संकल्प, ७ दीन प्रज्ञा, ८ दीन दृष्टि, ९ दीन शीलाचार, १० दीन व्यवहार, ११ दीन पराक्रम, १२ दीन वृत्ति, १३ दीन जाति, १४ दीन भासी, १५ दीनावभासी, १६ दीन सेवी, और १७ दीन परिवारी के चार-चार भाग जानें।

२८०-१. पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष आर्य है[1] (क्षेत्र से आर्य है) और आर्य है (आचरण से भी आर्य है)

२. एक पुरुष आर्य है (क्षेत्र से आर्य है) किन्तु अनार्य भी है (पापाचरण से अनार्य है)

३. एक पुरुष अनार्य है (क्षेत्र से अनार्य है) किन्तु आर्य भी है (आचरण से आर्य है)

---

१. आर्य नो प्रकार के हैं।

४. एक पुरुष अनार्य है (क्षेत्र से अनार्य है) और अनार्य है (आचरण से भी अनार्य है)

२-१८—इसीप्रकार २ आर्य परिणति, ३ आर्यरूप, ४ आर्यमन, ५ आर्य संकल्प, ६ आर्यप्रज्ञा, ७ आर्य दृष्टि, ८ आर्य शीलाचार, ९ आर्य व्यवहार, १० आर्यपराक्रम, ११ आर्य वृत्ति, १२ आर्य जाति, १३ आर्यभाषी, १४ आर्यविभासी, १५ आर्यसेवी, १६ आर्य पर्याय १७ आर्य परिवार और १८ आर्य भाव वाले पुरुष के चार-चार भांगे जानें।

१ १क—वृषभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. जातिसंपन्न[1], २. कुलसंपन्न[2], ३. बलसंपन्न, और ४. रूपसंपन्न हैं।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है। वे इस प्रकार है—

१. जातिसंपन्न-यावत्—२-४ रूपसंपन्न हैं।

२क—वृषभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. एक जातिसंपन्न है किन्तु कुलसंपन्न नहीं है।

यहां जाति मातृपक्ष को कहते हैं।

यहां कुल पितृपक्ष को कहते हैं।

२. एक कुलसंपन्न है किन्तु जातिसंपन्न नहीं है।
३. एक जाति संपन्न भी है और कुलसंपन्न भी है।
४. एक जाति संपन्न भी नहीं है और कुल संपन्न भी नहीं है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग के भी चार भांगे जानें।

३क—वृषभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—
१. एक जातिसम्पन्न[1] है किन्तु बलसम्पन्न नहीं है।
२. एक बलसम्पन्न है किन्तु जातिसम्पन्न नहीं है।
३. एक जातिसम्पन्न भी है और बलसम्पन्न भी है।
४. एक जातिसम्पन्न भी नहीं है और बलसम्पन्न भी नहीं है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग के भी चार भांगे जानें।

४क—वृषभ चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—
१. एक जातिसम्पन्न है किन्तु रूपसम्पन्न नहीं है।
२. एक रूपसम्पन्न है किन्तु जातिसम्पन्न नहीं है।
३. एक जातिसम्पन्न भी है और रूपसम्पन्न भी है।
४. एक जातिसम्पन्न भी नहीं है और रूपसम्पन्न भी नहीं है।

---

१. यहां जाति शब्द श्रेष्ठता का सूचक है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग के चार भांगे जानें।

५क—कुल सम्पन्न और बल सम्पन्न वृषभ के चार भांगे हैं।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग के भी चार भांगे हैं।

६क—कुल सम्पन्न और रूप सम्पन्न वृषभ के चार भांगे हैं।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग के भी चार भांगे हैं।

७क—बल सम्पन्न और रूप सम्पन्न वृषभ के चार भांगे हैं।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग के भी चार भांगे हैं।

८क—हाथी चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. भद्र[1], २. मंद[2], ३. मृग[3] और ४. संकीर्ण[4]।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का कहा गया है।

९क—हाथी चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. एक भद्र[5] है और भद्रमन वाला है।

---

१. भद्र=धैर्यवान। २. मंद=धैर्यरहित। ३. मृग=भीरु स्वभाव। ४. संकीर्ण=विचित्र स्वभाव वाला। ५. यहां भद्र का अर्थ उत्तम जातिवाला है।

२. एक भद्र है किन्तु मंदमन वाला है।

३. एक भद्र है किन्तु मृग (भीरु) मन वाला है।

४. एक भद्र है किन्तु संकीर्ण मन वाला है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है।

१०क—हाथी चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. एक मंद किन्तु भद्रमन वाला है।

२. एक मंद है और मंदमन वाला है।

३. एक मंद है किन्तु मृग (भीरु) मन वाला है।

४. एक मंद है किन्तु संकीर्ण (विचित्र) मन वाला है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का कहा गया है।

११क—हाथी चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार हैं—

१. एक मृग (भीरु) है और भद्र (भीरु) मन वाला है।

२. एक मृग है किन्तु मंद मन वाला है।

३. एक मृग है और मृग मन वाला भी है।

४. एक मृग है किन्तु संकीर्ण मन वाला है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है।

१२क—हाथी चार प्रकार के हैं। वे इस प्रकार के हैं—

१. एक संकीर्ण है किन्तु भद्र मन वाला है।

२. एक संकीर्ण है किन्तु मंद मन वाला है।

३. एक संकीर्ण है किन्तु मृग मन वाला है।

४. एक संकीर्ण है और संकीर्ण मन वाला भी है।

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का कहा गया है।

१ गाथा—भद्र हाथी के लक्षण—

मधु की गोली के समान पिंगल (भूरे) नेत्र, क्रमशः पतली सुन्दर एव लम्बी पूंछ, उन्नत मस्तक आदि से सर्वाङ्ग सुन्दर भद्र हाथी धीर प्रकृति का होता है।

२ गाथा—मंद हाथी के लक्षण—

चंचल, स्थूल एवं कहीं पतली और कहीं मोटी चर्म वाला स्थूल मस्तक, पूंछ, नख, दांत एवं केश वाला तथा सिंह के समान पिंगल (भूरे) नेत्र वाला हाथी मंद (अधीर) प्रकृति का होता है।

३ गाथा—मृग हाथी के लक्षण—

कृश शरीर और कृशग्रीवा वाला, पतले चर्म, नख, दांत एवं केश वाला, भयभीत, स्थिरकर्ण, उद्विग्नता पूर्वक गमन करने वाला स्वयं त्रस्त और अन्यों को त्रास देने वाला हाथी मृग प्रकृति का होता है।

४ गाथा—संकीर्ण हाथी के लक्षण—

जिस हाथी में भद्र, मंद और मृग प्रकृति के हाथियों के थोड़े-थोड़े लक्षण हों तथा विचित्र रूप और शील (स्वभाव) वाला हाथी संकीर्ण प्रकृति का होता है।

५ गाथा[1]—हाथियों का मदकाल—

भद्र जाति का हाथी शरद् ऋतु में मतवाला होता है,
मंद जाति का हाथी वसंत ऋतु में मतवाला होता है,
मृग जाति का हाथी हेमंत ऋतु में मतवाला होता है,
और संकीर्ण जाति का हाथी किसी भी ऋतु में मतवाला हो सकता है।

---

१. ये गाथायें निर्युक्ति से मूल में उद्धृत की गई है ऐसा प्रतीत होता है। टीकाकार एक और निर्युक्ति गाथा उद्धृत करते हैं।

गाथा—दंतेहिं हणइ भद्दो, मंदो हत्थेण आहणइ हत्थी।
गत्ताऽधरेइ य मिओ, संकिन्नो सव्वओ हणइ॥

अर्थ—भद्र जाति का हाथी दोनों दांतों से प्रहार करता है। मंद जाति का हाथी सूंड से प्रहार करता है। मृग जाति का हाथी शरीर से और होठ से प्रहार करता है। संकीर्ण जाति का हाथी सर्वाङ्ग से प्रहार करता है।

२८२ १क—विकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. स्त्रीकथा, २. भक्तकथा, ३. देशकथा और ४. राजकथा[1]।

ख—स्त्रीकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. स्त्रियों की जाति सम्बन्धी कथा,

२. स्त्रियों की कुल सम्बन्धी कथा,

३. स्त्रियों की रूप सम्बन्धी कथा,

४. स्त्रियों की नेपथ्य (वेषभूषा) सम्बन्धी कथा।

ग—भक्तकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. भोजन सामग्री की कथा,

२. विविध प्रकार के पकवानों और व्यञ्जनों की कथा,

२. भोजन बनाने की विधियों की कथा,

४. भोजन निर्माण में होने वाले व्यय की कथा।

घ—देशकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. देश के विस्तार की कथा,

२. देश में उत्पन्न होने वाले धान्य आदि की कथा,

---

१ इन विकथाओं के करने से होने वाले दोषों का वर्णन निर्युक्तिकार ने किया है।

३. देशवासियों के कर्तव्याकर्तव्य की कथा,

४. देशवासियों के नेपथ्य (वेशभूषा) की कथा।

ङ—राजकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. राजा के नगर-प्रवेश की कथा,

२. राजा के नगर-प्रयाण की कथा,

३. राजा के बल-वाहन की कथा,

४. राजा के कोठार (भण्डार) की कथा।

२क—धर्मकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. आक्षेपणी, २. विक्षेपणी, ३. संवेद(ग)नी और ४. निर्वेदनी।

ख—आक्षेपणी कथा चार प्रकार की है—

यथा—१. आचारआक्षेपणी—साधुओं का आचार बतानेवाली कथा,

२. व्यवहार आक्षेपणी—दोषनिवारणार्थ प्रायश्चित्त के भेद प्रभेद बतानेवाली कथा,

३. प्रज्ञप्ति आक्षेपणी—संशयनिवारणार्थ कही जाने वाली कथा।

४. दृष्टिवाद आक्षेपणी—श्रोताओं की अपेक्षाओं को समझकर नयानुसार सूक्ष्म तत्वों का विवेचन करने वाली कथा।

ग—विक्षेपणी कथा चार प्रकार की है—

यथा—१. स्व सिद्धान्त के गुणों का कथन करके पर-सिद्धान्त के दोष बताना,

२. पर-सिद्धान्त का खण्डन करके स्वसिद्धान्त की स्थापना करना,

३. परसिद्धान्त की अच्छाईयाँ बताकर पर-सिद्धान्त की बुराइयाँ भी बताना,

४. पर सिद्धान्त की मिथ्या बातें बताकर सच्ची बातों की स्थापना करना।

घ—संवेदनीकथा चार प्रकार की है—

यथा—१. इहलोक संवेदनी—मनुष्य देह की नश्वरता बताकर वैराग्य उत्पन्न करने वाली कथा,

२. परलोक संवेदनी—मुक्ति की साधना में भोग-प्रधान देव जीवन की निरुपयोगिता बताने वाली कथा,

३. आत्शरीर संवेदनी—स्वशरीर को अशुचिमय बताने वाली कथा,

४. परशरीर संवेदनी—दूसरों के शरीर को नश्वर बताने वाली कथा।

ङ—निर्वेदनी कथा चार प्रकार की है—

यथा—१. इस जन्म में किये गये दुष्कर्मों का फल इसी जन्म में मिलता है—यह बताने वाली कथा,

२. इस जन्म में किये गये दुष्कर्मों का फल परजन्म[1] में मिलता है—यह बताने वाली कथा,

३. परजन्म में किये गये दुष्कर्मों का फल इस जन्म में मिलता है—यह बतानेवाली कथा,

४. परजन्म[2] में किये गये दुष्कर्मों का फल इस जन्म में मिलता है—यह बताने वाली कथा,

४. परजन्म[3] कृत दुष्कर्मों का फल परजन्म में मिलता है—यह बताने वाली कथा।

च—१. इस जन्म में किये गये सत्कर्मों का फल इसी जन्म में मिलता है—यह बताने वाली कथा,

२. इस जन्म में किये गये सत्कर्मों का फल पर-जन्म में मिलता है—यह बताने वाली कथा,

३. परजन्म कृत सत्कर्मों का फल इस जन्म में मिलता है—यह बताने वाली कथा,

---

१. यहां पर-जन्म का अर्थ आगामी जन्म है।

२. यहां पर-जन्म शब्द का अर्थ पूर्वजन्म है।

३. यहां पर-जन्म शब्द का अर्थ पूर्वजन्म है।

४. परजन्म[1] कृत सत्कर्मों का फल परजन्म[2] में मिलता हैं—यह बताने वाली कथा।

२८३ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार हैं—

१. एक पुरुष पहले भी कृश था और वर्तमान में भी कृश है।

२. एक पुरुष पहले कृश था किन्तु वर्तमान में सुदृढ़ शरीरवाला है।

३. एक पुरुष पहले भी सुदृढ़ शरीर वाला था किन्तु वर्तमान में कृशकाय है।

४. एक पहले सुदृढ़ शरीरवाला था और वर्तमान में भी सुदृढ़ शरीरवाला है।

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष हीन मनवाला है और कृशकाय भी है।

२. एक पुरुष हीन मनवाला है किन्तु सुदृढ़ शरीर वाला है।

३. एक पुरुष महामना (उदार मनवाला) है किन्तु कृशकाय है।

---

१. यहां परजन्म का अर्थ पूर्वजन्म है।

२. यहां परजन्म का अर्थ आगामीजन्म है।

४. एक पुरुष महामना भी है और सुदृढ़ शरीरवाला भी है।

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. किसी कृशकाय पुरुष को ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जाता है किन्तु सुदृढ़ शरीरवाले पुरुष को ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नहीं होता।

२. किसी सुदृढ़ शरीरवाले पुरुष को ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जाता है किन्तु किसी कृशकाय पुरुष को ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नहीं होता है।

३. किसी कृशकाय पुरुष को भी ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जाता है और किसी सुदृढ़ शरीरवाले पुरुष को भी ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जाता है।

४. किसी कृशकाय पुरुष को भी ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नहीं होता और किसी सुदृढ़ शरीरवाले पुरुष को भी ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नहीं होता।[1]

---

१. ज्ञान-दर्शन की उत्पत्ति में साधक बाधक हेतु शरीर नहीं है अपितु मोह की क्षीणता या अधिकता है, अतः कृशकाय या स्थूलकाय में मोह अधिक होगा तो ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नहीं होगा। यदि मोह उपशांत हो जायगा या क्षीण हो जायगा तो ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो जायगा।

२८४ १क—चार कारणों से वर्तमान में निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों के चाहने पर भी उन्हें केवल ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नहीं होता।

१. जो बार-बार स्त्री-कथा, भक्त-कथा, देश-कथा और राज-कथा कहता है।

२. जो विवेकपूर्वक कायोत्सर्ग करके आत्मा को समाधिस्थ नहीं करता है।

३. जो पूर्वरात्रि में (रात्रि के प्रथम और द्वितीय प्रहर में) और अपररात्रि में (रात्रि के चतुर्थ प्रहर में) धर्म जागरण नहीं करता है।

४. जो प्रासुक आगमोक्त और एषणीय (शुद्ध) अल्प-आहार नहीं लेता तथा सभी घरों से आहार की गवेषणा नहीं करता है।

—इन चार कारणों से निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को वर्तमान में केवल ज्ञान-दर्शन उत्पन्न नहीं होता है।

ख—चार कारणों से वर्तमान में भी निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों के चाहने पर उन्हें केवल ज्ञान, केवलदर्शन उत्पन्न होता है।

१. जो स्त्रीकथा आदि चार कथा नहीं करते हैं।

२. जो विवेकपूर्वक कायोत्सर्ग करके आत्मा को समाधिस्थ करते हैं।

३. जो पूर्वरात्रि और अपररात्रि में धर्म-जागरण करते हैं।

४. जो प्रासुक और एषणीय अल्प आहार लेते हैं तथा सभी घरों से आहार की गवेषणा करते हैं।

—इन चार कारणों से निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को वर्तमान में भी केवलज्ञान, केवल-दर्शन उत्पन्न होता है।

२८५ १क—चार महाप्रतिपदाओं में निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को स्वाध्याय करना नहीं कल्पता है।

वे चार प्रतिपदायें ये हैं—

१. श्रावण कृष्णा प्रतिपदा, २. कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा,

३. मार्गशीर्ष कृष्णा प्रतिपदा ४. वैसाख कृष्णा प्रतिपदा।

ख—चार संध्याओं में निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थियों को स्वाध्याय करना नहीं कल्पता है।

वे चार संध्यायें ये हैं—

१. दिन के प्रथम प्रहर में[1], २. दिन के अन्तिम प्रहर में[2],

---

१. सूर्योदय पूर्व एक घड़ी और पश्चात् एक घड़ी।

२. सूर्यास्त पूर्व एक घड़ी और पश्चात् एक घड़ी।

३. रात्रि के प्रथम प्रहर में[1] और ४. रात्रि के अंतिम प्रहर में[2] ।

२८६ १. लोकस्थिति चार प्रकार की है । वह इस प्रकार है—

१. आकाश के आधार पर घनवायु और तनवायु प्रतिष्ठित है ।

२. वायु के आधार पर घनोदधि प्रतिष्ठित है ।

३. घनोदधि के आधार पर पृथ्वी प्रतिष्ठित है ।

४. और पृथ्वी के आधार पर त्रस-स्थावर प्राणी प्रतिष्ठित है ।

२८७ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । वह इस प्रकार है—

१. तथापुरुष—जो सेवक, स्वामी की आज्ञानुसार कार्य करे ।

२. नो तथापुरुष—जो सेवक स्वामी की आज्ञानुसार कार्य न करे ।

३. सौवस्तिक पुरुष—जो स्वस्तिक पाठ करे ।

---

१. दिन के मध्य भाग से पूर्व एक घड़ी और पश्चात् एक घड़ी ।

२. रात्रि के मध्य भाग से पूर्व एक घड़ी और पश्चात् एक घड़ी । ये चार सन्धिकाल है । इनमें स्वाध्याय करने का निषेध है ।

४. और प्रधान पुरुष—जो सबका आदरणीय पुरुष हो।

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. आत्मांतकर—एक पुरुष अपने भव (जन्म-मरण) का अंत करता है किन्तु दूसरे के भव का अंत नहीं करता।[1]

२. परांतकर—एक पुरुष दूसरे के भव का अंत करता है किंतु अपने भव का अंत नहीं करता।[2]

३. उभयांतकरी—एक पुरुष अपने और दूसरे के भव का अंत करता है।[3]

४. न उभयांतकर—एक पुरुष न अपने भव का और न दूसरे के भव का अंत करता है।[4]

---

१. प्रत्येक बुद्ध, २. अचरमशरीरी धर्माचार्य, ३. तीर्थंकर, ४. पांचवें आरे के धर्माचार्य।

टीकाकार के अनुसार इस सूत्र के वैकल्पिक अर्थ इस प्रकार है :—

क—१. आत्मान्तकर—एक पुरुष आत्महत्या करने वाला होता है।

२. परान्तकर—एक पुरुष दूसरे की हत्या करने वाला होता है।

(कृपया शेष टिप्पणी ६९९ पृष्ठ पर देखिये)

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष स्वयं चिंता करता है, किंतु दूसरे को चिंता नहीं होने देता,

२. एक पुरुष दूसरे को चिंतित करता है, किंतु स्वयं चिंता नहीं करता।

(पृष्ठ ६९८ का टिप्पणी की शेष)

३. उभयान्तकर—एक पुरुष आत्महत्या और परहत्या करने वाला होता है।

४. न उभयान्तकर—एक पुरुष न आत्महत्या करता है और न परहत्या करता है।

ख—१. आत्मतंत्रकर—जो स्वयं स्वतन्त्र होकर कार्य करता है। यथा—जिन भगवान्।

२. परतंत्रकर—जो परतंत्र होकर कार्य करता है। यथा—भिक्षु।

३. उभयतंत्रकर—जो स्वतंत्र रहकर भी कार्य करता है और परतंत्र रहकर भी कार्य करता है। यथा—आचार्य

४. न उभयतंत्रकर—जो न स्वतंत्र रहकर कार्य करता है और न परतंत्र रहकर कार्य करता है। यथा—शठ।

इसी प्रकार गच्छ या धन के सम्बन्ध में भी उक्त चार भांगों की व्याख्या करें।

३. एक पुरुष स्वयं भी चिंता करता है और दूसरे को भी चिंतित करता है।

४. एक पुरुष न स्वयं चिंता करता है और न दूसरे को चिंतित करता है।

घ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष आत्मदमन करता है, किंतु दूसरे का दमन नही करता।

२. एक पुरुष दूसरे का दमन करता है किंतु आत्मदमन नहीं करता।

३. एक पुरुष आत्मदमन भी करता है और परदमन भी करता है।

४. एक पुरुष न आत्मदमन करता है और न परदमन करता है।

२८८ १—गर्हा[1] चार प्रकार की है—यथा,

१. स्वकृत दोष की शुद्धि के लिए उचित प्रायश्चित्त लेने हेतु मैं स्वयं गुरु महाराज के समीप जाऊं यह एक गर्हा है।

२. गर्हणीय दोषों का मैं निराकरण करूं यह दूसरी गर्हा है।

१: गुरु के समक्ष आत्मनिंदा करना गर्हा है।

३. मैंने जो अनुचित किया है उसका मैं स्वयं मिथ्या दुष्कृत करूं—यह तीसरी गर्हा है।

४. स्वकृत दोषों की गर्हा करने से आत्म-शुद्धि होती है, यह जिन भगवान ने कहा है—इस प्रकार स्वीकार करना, यह चौथी गर्हा है।

२८९ १. पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक पुरुष अपने आपको दुष्प्रवृत्तियों से बचाता है किंतु दूसरे को नहीं बचाता।

२. एक पुरुष दूसरे को दुष्प्रवृत्तियों से बचाता है, किंतु स्वयं नहीं बचता।

३. एक पुरुष स्वयं भी दुष्प्रवृत्तियों से बचता है और दूसरे को भी बचाता है।

४. एक पुरुष न स्वयं दुष्प्रवृत्तियों से बचता है और न दूसरे को बचाता है।[1]

---

१. टीकाकार के अनुसार एक वैकल्पिक अर्थ यह है—

१. एक पुरुष आत्मनिग्रह में समर्थ है किन्तु परनिग्रह में समर्थ नहीं है।

२. एक पुरुष परनिग्रह में समर्थ है किन्तु आत्मनिग्रह में समर्थ नहीं है।

३. एक पुरुष आत्मनिग्रह में और परनिग्रह में भी समर्थ हैं।

४. एक पुरुष न आत्मनिग्रह और न परनिग्रह में समर्थ हैं।

२ क—मार्ग चार प्रकार का है। वह इस प्रकार है—

१. एक मार्ग प्रारम्भ में भी सरल है और अन्त में भी सरल है।[1]

२. एक मार्ग प्रारंभ में सरल है किन्तु अंत में वक्र है।[2]

३. एक मार्ग प्रारंभ में वक्र है किन्तु अन्त में सरल है।

४. एक मार्ग प्रारम्भ में भी वक्र है और अन्त में भी वक्र है।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है[3]—

३ क—मार्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक मार्ग प्रारम्भ में भी उपद्रवरहित है और अन्त में भी उपद्रवरहित है।

---

१. जिस मार्ग से पथिक गंतव्यस्थान तक बिना किसी कठिनाई के पहुँच जाय वह सरल है।

२. जो मार्ग ऊँचा-नीचा व टेढा हो वह वक्र है।

३. मानव में सरलता दो प्रकार की होती है—
एक बाह्य सरलता और दूसरी आभ्यन्तर सरलता।
वाणी आदि में जो सरलता दिखाई देती है वह बाह्य सरलता है।
हृदय की जो सरलता हैं वह आभ्यन्तर सरलता है।

२. एक मार्ग प्रारम्भ में उपद्रवरहित है किन्तु अन्त में उपद्रवरहित नहीं है।

३. एक मार्ग प्रारम्भ में उपद्रवसहित है किन्तु अन्त में उपद्रवरहित है।

४. एक मार्ग प्रारम्भ में और अन्त में उपद्रवसहित है।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है।[1]

४क—मार्ग चार प्रकार का है यथा—

१. एक मार्ग उपद्रवरहित है और सुन्दर है।

२. एक मार्ग उपद्रवरहित है किन्तु सुन्दर नहीं है।

३. एक मार्ग उपद्रवसहित है किन्तु सुन्दर है।

४. एक मार्ग उपद्रवसहित भी है और सुन्दर भी नहीं है।

---

१. १. एक पुरुष पहले शांत रहता है और पीछे भी शांत रहता है।

२. एक पुरुष पहले शांत रहता है किन्तु पीछे उत्तेजित हो जाता है।

३. एक पुरुष पहले उत्तेजित हो जाता है किन्तु पीछे शांत हो जाता है।

४. एक पुरुष पहले और पीछे सदा ही उत्तेजित रहता है।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकारका है। यथा—

१. एक पुरुष शांत स्वभाव वाला है और अच्छी वेश-भूषा वाला है।

२. एक पुरुष शांतस्वभाववाला है किन्तु वेशभूषा अच्छी नहीं है।

३. एक पुरुष खराब वेशभूषा वाला तो है किन्तु शांत स्वभावी है।

४. एक पुरुष खराब वेशभूषा वाला भी है और क्रूर स्वभाव वाला भी है।

५क—शंख चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक शंख वाम है (प्रतिकूल प्रभाव वाला है) और वामावर्त भी है।[1]

२. एक शंख वाम है (प्रतिकूल प्रभाव वाला है) किन्तु दक्षिणावर्त है।

३. एक शंख दक्षिण है (अनुकूल प्रभाव वाला है) किन्तु वामावर्त है।

४. एक शंख दक्षिण है (अनुकूल प्रभाव वाला है) और दक्षिणावर्त भी है।[2]

---

१. उत्तरदिशा की ओर मुँह वाला।
२. दक्षिणदिशा की ओर मुँह वाला।

ख—इसीप्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष प्रतिकूल स्वभाव वाला है और प्रतिकूल व्यवहार वाला भी है।

२. एक पुरुष प्रतिकूल स्वभाव वाला है किन्तु अनुकूल व्यवहार वाला है।

३. एक पुरुष अनुकूल स्वभाव वाला है किन्तु प्रतिकूल व्यवहार वाला है।

४. एक पुरुष अनुकूल स्वभाव वाला है और अनुकूल व्यवहार वाला भी है।

६क—धूमशिखा चार प्रकार की है। यथा—

१. एक धूमशिखा वामा है (बांयी ओर जाने वाली है) और वामावर्त भी है।

२. एक धूमशिखा वामा है (बांयी ओर जाने वाली है) किन्तु दक्षिणावर्त है।

३. एक धूम शिखा दक्षिणा है (दांयी ओर जाने वाली है) किन्तु वामावर्त है।

४. एक धूमशिखा दक्षिणा है और दक्षिणावर्त भी है।

ख—इसीप्रकार स्त्रियां भी चार प्रकार की हैं[1]—

७ क—अग्निशिखा, और

ख—स्त्रियों के चार भांगे ।

८ क—वायुमंडल, और (ख) स्त्रियों के चार भांगे ।

९ क—वनखंड, और (ख) पुरुषों के चार भांगे ।[2]

२९० १. चार कारणों से अकेला साधु अकेली साध्वी से बात-चीत करे तो मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता है ।[3]

१. मार्ग पूछे, २. मार्ग बतावे,

३. अशनादि चार प्रकार का आहार दे, और

४. अशनादि चार प्रकार का आहार दिलावे ।

२९१ १. तमस्काय के चार नाम हैं । यथा—

१. तम, २. तमस्काय, ३. अंधकार और

४. महांधकार ।

---

१. स्त्रियों के अनुकूल प्रतिकूल स्वभाव और अनुकूल प्रतिकूल व्यवहार से चार भांगे बनालें ।

२. पुरुषों के अनुकूल प्रतिकूल स्वभाव और अनुकूल प्रतिकूल व्यवहार से चार भांगे बनालें ।

३. एगो एगत्थिए सद्धिं, नेव चिट्ठे न संलवे ।

—इस उत्सर्गसूत्र का यह अपवादसूत्र है ।

२. तमस्काय के चार नाम हैं यथा—

१. लोकांधकार, २. लोकतमस, ३. देवांधकार और ४. देवतमस।

३. तमस्काय के चार नाम हैं यथा—

१. वातपरिघ—वायु को रोकने के लिए अर्गला समान।

२. वातपरिघ क्षोभ—वायु को क्षुब्ध करने के लिए अर्गला समान।

३. देवारण्य—देवताओं के छिपने का स्थान।

४. देवव्यूह—जिस प्रकार मानव का सैन्यव्यूह में प्रवेश पाना कठिन है। उसी प्रकार देवों का तमस्काय में प्रवेश पाना कठिन है।

४. तमस्काय से चार कल्प (देवलोक) ढके हुए हैं— यथा—१. सौधर्म, २. ईशान, ३. सनत्कुमार और ४. माहेन्द्र।

२९२ १. पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. संप्रगट प्रतिसेवी—साधु समुदाय में रहने वाला एक साधु अगीतार्थ के समक्ष दोष सेवन करता है।

२. प्रच्छन्नप्रतिसेवी—एक साधु प्रच्छन्न दोष सेवन करता है।

३. प्रत्युत्पन्न नंदी—एक साधु वस्त्र या शिष्य के लाभ से आनन्द मनाता है।

४. निःसरण नंदी—एक साधु गच्छ में से स्वयं के या शिष्य के निकलने से आनन्द मनाता है।

२. क—सेनायें चार प्रकार की हैं। यथा—

१. एक सेना शत्रु को जीतनेवाली है किन्तु हराने वाली नहीं है।

२. एक सेना हराने वाली है किन्तु जीतने वाली नहीं है।

३. एक सेना शत्रुओं को जीतनेवाली भी है और हरानेवाली भी है।

४. एक सेना शत्रुओं को न जीतनेवाली है और न हरानेवाली है।

ख—इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक साधु परीषहों को जीतनेवाला है किन्तु भगवान महावीर की तरह परीषहों को सर्वथा परास्त करनेवाला नहीं है।

२. एक साधु परीषहों से हारनेवाला है किन्तु कंडरीक की तरह उन्हें जीतनेवाला नही है।

३. एक साधु शैलक राजर्षि के समान परीषहों से हारने वाला भी है और उन्हें जीतनेवाला भी है।

४. एक साधु न परीषहों से हारनेवाला है और न उन्हें जीतनेवाला है।

क्योंकि साधनाकाल में उसे परीषह आये ही नहीं।

३क—सेनायें चार प्रकार की हैं। यथा—

१. एक सेना युद्ध के आरम्भ में भी शत्रु सेना को जीतती है और युद्ध के अंत में भी शत्रु सेना को जीतती है।

२. एक सेना युद्ध के आरम्भ में शत्रु सेना को जीतती है किन्तु युद्ध के अन्त में पराजित हो जाती है।

३. एक सेना युद्ध के आरम्भ में पराजित होती है किन्तु युद्ध के अन्त में विजय प्राप्त करती है।

४. एक सेना युद्ध के आरम्भ में भी और अन्त में भी पराजित होती है।

ख—इसीप्रकार परीषहों से विजय और पराजय प्राप्त करने वाले पुरुष वर्ग के चार भांगे हैं।

२९३ १क—वक्र वस्तुएँ चार प्रकार की हैं। यथा—

१. बांस की जड़ के समान वक्रता,

२. घेटे के सींग के समान वक्रता,

३. गोमूत्रिका के समान वक्रता,

४. वांस की छाल के समान वक्रता।

ख—इसीप्रकार माया भी चार प्रकार की है। यथा—

१. बांस की जड़ के समान वक्रतावाली माया करने वाला जीव मरकर नरक में उत्पन्न होता है।

२. घेटे के सींग के समान वक्रतावाली माया करने वाला जीव मरकर तिर्यंचयोनि में उत्पन्न होता है।

३. गोमूत्रिका के समान वक्रता वाली माया करने वाला जीव मरकर मनुष्ययोनि में जन्म लेता है।

४. बांस की छाल के समान वक्रता वाली माया करने वाला जीव मरकर देवयोनि में उत्पन्न होता है।

२ क—स्तम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. शैलस्तम्भ, २. अस्थिस्तम्भ, ३. दारुस्तम्भ और ४. तिनिसलतास्तम्भ।

ख—इसीप्रकार मान चार प्रकार का है। यथा—

१. शैलस्तम्भ समान, २. अस्थिस्तम्भ समान, ३. दारु-स्तम्भ समान और ४. तिनिसलतास्तम्भ समान।

१. शैलस्तम्भ समान मान करनेवाला जीव मरकर नरक में उत्पन्न होता है।

२. अस्थिस्तम्भ समान मान करने वाला जीव मरकर तिर्यंचयोनि में उत्पन्न होता है।

३. दारुस्तम्भ समान मान करनेवाला जीव मरकर मनुष्य योनि में उत्पन्न होता है।

४. तिनिसलतास्तम्भ समान मान करनेवाला जीव मरकर देवयोनि में उत्पन्न होता है।

३क—वस्त्र चार प्रकार के हैं। यथा—

१. कृमिरंग से रंगा हुआ,

२. कीचड़ से रंगा हुआ,

३. खंजन से रंगा हुआ,

४. हरिद्रा से रंगा हुआ।

ख—इसीप्रकार लोभ चार प्रकार का है। यथा—

१. कृमिरंग से रगे हुए वस्त्र के समान,

२. कीचड़ से रंगे हुए वस्त्र के समान,

३. खंजन से रंगे हुए वस्त्र के समान,

४. हरिद्रा से रंगे हुए वस्त्र के समान।

१. कृमिरंग से रंगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर नरक में उत्पन्न होता है।

२. कीचड़ से रंगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर तिर्यंच में उत्पन्न होता है।

३. खंजन से रंगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर मनुष्य में उत्पन्न होता है।

४. हल्दी से रंगे हुए वस्त्र के समान लोभ करने वाला जीव मरकर देवताओं में उत्पन्न होता है।

२९४ १—संसार चार प्रकार का है। यथा—

१. नैरयिक संसार, २. तिर्यंच संसार, ३. मानव संसार और ४. देव संसार।

२—आयु चार प्रकार का है। यथा—

१. नैरयिकायु, २. तिर्यंचायु, ३. मनुजायु ४. देवायु।

३—भव चार प्रकार का है। यथा—

१. नैरयिक भव, २. तिर्यंच भव, ३. मानव भव और ४. देवभव।

२९५ १क—आहार चार प्रकार का है। यथा—

१. अशन. २. पान, ३. खादिम और ४. स्वादिम।

ख—यथा—१. उपस्करसंपन्न—हींग वगैरह से संस्कारित आहार।

२. उपस्कृत संपन्न—अग्निपक्व आहार,

३. स्वभाव संपन्न—स्वत:पक्वआहार—द्राक्ष आदि,

४. पर्युषित संपन्न—रात भर रखकर बनाया हुआ आहार—दहीबड़ा आदि।

२९६ १क—बंध चार प्रकार के हैं। यथा—

१. प्रकृतिबंध, २. स्थितिबंध, ३. अनुभागबंध और ४. प्रदेशबंध।

१. कर्मप्रकृतियों का बंध—प्रकृतिबंध है,

२. कर्मप्रकृतियों की जघन्य उत्कृष्ट स्थिति का बंध—स्थितिबंध है।

३. कर्मप्रकृतियों में तीव्र-मंद रस का बंध—रसबंध है।

४. आत्मप्रदेशों के साथ शुभाशुभ विपाक वाले अनंता-नंत कर्मप्रदेशों का बंध—प्रदेश बंध है।

ख—उपक्रम चार प्रकार का है। यथा—

१. बंधनोपक्रम, २. उदीरणोपक्रम, ३. उपशमनोपक्रम और ४. विपरिणामनोपक्रम।

ग—बंधनोपक्रम[1] चार प्रकार का है। यथा—

१. प्रकृतिबंधनोपक्रम, २. स्थितिबंधनोपक्रम, ३. अनुभागबंधनोपक्रम और ४. प्रदेशबंधनोपक्रम।

---

१. स्यादारंभ उपक्रम—उपक्रम—आरम्भ।

घ—उदीरणोपक्रम[1] चार प्रकार का है । यथा—

१. प्रकृतिउदीरणोपक्रम, २. स्थितिउदीरणोपक्रम, ३. अनुभावउदीरणोपक्रम और ४. प्रदेशउदीरणोपक्रम ।

ङ—उपशमनोपक्रम[2] चार प्रकार का है । यथा—

१. प्रकृतिउपशमनोपक्रम, २. स्थितिउपशमनोपक्रम, ३. अनुभावउपशमनोपक्रम और ४. प्रदेशउपशमनोपक्रम ।

च—विपरिणामनोपक्रम[3] चार प्रकार का है । यथा—

१. प्रकृतिविपरिणामनोपक्रम, २. स्थितिविपरिणामनोपक्रम, ३. अनुभावविपरिणामनोपक्रम और ४. प्रदेशविपरिणामनोपक्रम ।

छ—अल्प-वहुत्व चार प्रकार का है । यथा—

---

१. **उदीरणा—उदय में नहीं आये हुए कर्मदलिकों को उदय में लाना ।**

२. **उपशमन—उदय में आई हुई कर्मप्रकृतियों को उपशांत करना ।**

३. **विपरिणमन—सत्ता, उदय, क्षय, क्षयोपशम, उद्वर्तन और अपवर्तन द्वारा कर्मप्रकृति की वर्तमान अवस्था को बदल देना ।**

१. प्रकृति अल्पबहुत्व[1], २. स्थिति अल्पबहुत्व, ३. अनुभाव अल्पबहुत्व और ४. प्रदेश अल्पबहुत्व।

ज—संक्रम[2] चार प्रकार का है यथा—

१. प्रकृति संक्रम, २. स्थिति संक्रम, ३. अनुभाव संक्रम और ४. प्रदेश संक्रम।

झ—निधत्त[3] चार प्रकार का है। यथा—

१. प्रकृति निधत्त, २. स्थिति निधत्त, ३. अनुभाव निधत्त और ४. प्रदेश निधत्त।

ञ—निकाचित[4] चार प्रकार का है। यथा—

१. प्रकृति निकाचित, २. स्थिति निकाचित, ३. अनुभाव निकाचित और ४. प्रदेश निकाचित।

---

१. एक कर्म के दलिकों से दूसरे कर्म के दलिकों का अधिक होना।
२. संक्रम—आत्मबल से कर्मप्रकृति को दूसरी कर्मप्रकृति के रूप में बदल देना।
३. निधत्त—उद्वर्तन या अपवर्तन के बिना अन्य कारणों से उदीरणा के अयोग्य कर्मप्रकृति।
४. निकाचित—सर्व कारणों से उदीरणा के अयोग्य कर्मप्रकृति। अर्थात् निकाचित कर्म भोगे बिना नहीं छूटता है।

२९७ १—एक संख्यावाले चार हैं। यथा—

१. द्रव्य एक[1], २. मातृका पद एक[2], ३. पर्याय एक[3], ४. संग्रह एक[4]।

२९८ १—कितने चार हैं ?[5] यथा—

१. द्रव्य कितने हैं, २. मातृका पद कितने हैं, ३. पर्याय कितने हैं और ४. संग्रह कितने हैं ?

२९९ १—सर्व चार हैं। यथा—

१. नाम सर्व, २. स्थापना सर्व, ३. आदेश सर्व और ४. निश्वशेष सर्व[6]।

३०० १—मानुषोत्तर पर्वत की चार दिशाओं में चार कूट हैं। यथा—

१. रत्न, २. रत्नोच्चय, ३. सर्वरत्न और ४. रत्न-संचय।

---

१. अभेद विवक्षा से द्रव्य एक है।
२. पद की अपेक्षा मातृका पद एक है।
३. एक वर्ण की अपेक्षा पर्याय एक है।
४. समुदाय की अपेक्षा संग्रह एक है।
५. ये कितने हैं ? यह प्रश्न इन चारों के सम्बन्ध में पूछा जाता है।
६. समग्र वस्तुओं की अपेक्षा कहना।

३०१ १क—जंबूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी का सुषमसुषमाकाल[1] चार क्रोड़ाक्रोड़ी सागरोपम था।

ख—जंबूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी का सुषमसुषमा काल[2] चार क्रोड़ाक्रोड़ी सागरोपम था।

ग—जंबूद्वीप के भरत ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी का सुषमसुषमाकाल[3] चार क्रोड़ाक्रोड़ी सागरोपम होगा।

३०२ १—जम्बूद्वीप में देवकुरु और उत्तरकुरु को छोड़कर चार अकर्मभूमियां हैं। यथा—

१. हेमवंत, २. हैरण्यवत, ३. हरिवर्ष और ४. रम्यक्-वर्ष।

२क—वृत्त वैताढ्य पर्वत चार हैं।यथा—

१. शब्दापाति, २. विकटापाति, ३. गंधापाति और ४. माल्यवंत पर्याय।

ख—उन वृत्त वैताढ्य पर्वतों पर पल्योपमस्थितिवाले

---

१. छठा आरा।

२. पहला आरा।

३. छठा आरा।

चार महर्धिक देव रहते हैं। यथा—

१. स्वाति, २. प्रभास, ३. अरुण और ४. पद्म।

३—जम्बूद्वीप में चार महाविदेह हैं। यथा—

१. पूर्वविदेह, २. अपरविदेह, ३. देवकुरु और ४. उत्तरकुरु।

४—सभी निषध और नीलवंत वर्षधरपर्वत चार सौ योजन ऊँचे और चारसौ गाउ (कोश) भूमि में गहरे हैं।

२ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व में बहनेवाली सीता महानदी के उत्तर किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं। यथा—

१. चित्रकूट, २. पद्मकूट, ३. नलिनकूट और ४. एकशैल।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व में बहनेवाली सीता महानदी के दक्षिण किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं। यथा—

१. त्रिकूट, २. वैश्रमणकूट, ३. अंजन और ४. मातंजन।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में बहनेवाली सीता महानदी के दक्षिण किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं। यथा—

१. अंकावती, २. पद्मावती, ३. आशिविष और ४. सुखावह ।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में बहनेवाली सीता महानदी के उत्तर किनारे पर चार वक्षस्कार पर्वत हैं। यथा—

१. चन्द्रपर्वत, २. सूर्यपर्वत, ३. देवपर्वत और ४. नाग-पर्वत।

ङ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के चार विदिशाओं में चार वक्षस्कार हैं। यथा—

१. सोमनस, २. विद्युत्प्रभ, ३. गंधमादन और ४. माल्यवंत।

६—जम्बूद्वीप के महाविदेह में जघन्य चार अरिहंत, चार चक्रवर्ती, चार बलदेव, चार वासुदेव उत्पन्न हुए, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे।

७—जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत पर चार वन है। यथा—

१. भद्रसाल वन, २. नन्दन वन, ३. सोमनस वन और ४. पंडगवन।

८—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर पंडगवन में चार अभिषेक शिलाएँ है। यथा—

१. पंडुकंबल शिला, २. अतिपंडुकंबल शिला, ३. रक्तकंबल शिला और ४. अतिरक्तकंबल शिला।

९—मेरुपर्वत की चूलिका ऊपर से चार सौ योजन चौड़ी है।

१०-११. (३४ सूत्र)—इसी प्रकार धातकी खंड द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में (पूर्वोक्त सूत्र ३०१ के ३ सूत्र और सूत्र ३०२ के १४ सूत्र) काल सूत्र से लेकर यावत-मेरुचूलिका पर्यन्त कहें।

१२-१३. (३४ सूत्र)—इसी प्रकार पुष्करार्ध द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में भी काल सूत्र से लेकर-यावत्-मेरु-चूलिका पर्यन्त कहें।

गाथार्थ—जम्बूद्वीप में शास्वत पदार्थकाल-यावत् मेरु-चूलिका तक जो कहें हैं वे धातकी खण्ड और पुष्करवर द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध में भी कहें।

३०३ १—जम्बूद्वीप के चार द्वार हैं।

१. विजय, २. वेजयंत, ३. जयंत और ४. अपराजित।

२—जम्बूद्वीप के द्वार चार सौ योजन चौड़े हैं और उनका उतना ही प्रवेशमार्ग है।

३—जम्बूद्वीप के उन द्वारों पर पल्योपमस्थितिवाले चार महर्धिक देव रहते हैं। उनके नाम ये हैं—

१. विजय, २. विजयन्त, ३. जयन्त और ४. अपराजित।

३०४ १क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण में और चुल्ल (लघु) हिमवन्त वर्षधर पर्वत के चार विदिशाओं में लवण समुद्र तीनसौ तीनसौ योजन जाने पर चार-चार अन्तरद्वीप हैं। यथा—

१. एकोरुक द्वीप, २. आभाषिक द्वीप, ३. वेषाणिक द्वीप और ४. लांगोलिक द्वीप।

२ख—उन द्वीपों में चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं। यथा

१. एकोरुक, २. आभाषिक, ३. वैषाणिक और ४. लाँगुलिक

३क—उन द्वीपों की चार विदिशाओं में लवण समुद्र में चारसौ-चारसौ योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप हैं। यथा—

१. हयकर्णद्वीप, २. गजकर्ण द्वीप, ३. गोकर्णद्वीप और ४. संकुलिकर्णद्वीप।

ख—उन द्वीपों में चार प्रकार के मनुष्य रहते है।

यथा—१. हयकर्ण, २. गजकर्ण, ३. गोकर्ण और शष्कुलीकर्ण।

४क—उन द्वीपों की चार विदिशाओं में लवण समुद्र में पांचसौ-पांचसौ योजन जाने पर चार अतंर द्वीप हैं। यथा—१. आदर्शमुखद्वीप, २. मेंढ़मुखद्वीप, ३.अयोमुखद्वीप और ४. गोमुखद्वीप।

ख—उन द्वीपों में चार प्रकार के मनुष्य हैं। यथा—१. आदर्शमुख, २. मेंढ़मुख, ३. अयोमुख और ४. गोमुख।

५क—उन द्वीपों की चार विदिशाओं में लवण समुद्र में छ:सो- छ:सो योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप है। यथा—१. अश्वमुखद्वीप, २. हस्तिमुखद्वीप, ३. सिंह मुखद्वीप और ४. व्याघ्रमुखद्वीप।

ख—उन द्वीपों में मनुष्य चार प्रकार के हैं। यथा—२. अश्वमुख, २. हस्तिमुख, ३. सिंहमुख और ४. व्याघ्रमुख।

६क—उन द्वीपों की चार विदिशाओं में लवण समुद्र में सातसो-सातसो योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप है। यथा—

१.अश्वकर्ण द्वीप, २.हस्तिकर्ण द्वीप, ३. अकर्ण द्वीप ओर ४. कर्णप्रावरण द्वीप।

ख—उन द्वीपों में चार प्रकार के मनुष्य हैं। यथा—

१. अश्वकर्ण, २. हस्तिकर्ण, ३. अकर्ण और ४. कर्ण प्रावरण ।

७क—उन द्वीपों की चार विदिशाओं में लवण समुद्र में आठसो-आठसो योजन जाने पर चार अन्तर द्वीप हैं। यथा—

१. उल्कामुखद्वीप, १. मेघमुखद्वीप, ३. विद्युन्मुखद्वीप और ४. विद्युद्दन्तद्वीप ।

ख—उन द्वीपों में चार प्रकार के मनुष्य रहते हैं। यथा

१. उल्कामुख, २. मेघमुख, ३. विद्युन्मुख और ४. विद्युद्दन्तमुख ।

८क—उन द्वीपों की चार विदिशाओं में लवण समुद्र में नोसो-नोसो योजन जाने पर चार द्वीप हैं। यथा—

१. धनदन्तद्वीप, २. लष्टदन्तद्वीप, ३. मूढ़दन्तद्वीप और ४. शुद्धदन्तद्वीप ।

ख—उन द्वीपों में चार प्रकार के मनुष्य हैं। यथा—

१. घनदन्त, २. लष्टदन्त, ३. गूढ़दंत, ४. शुद्धदंत ।

९—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के उत्तर में और शिखरी वर्षधर पर्वत की चार विदिशाओं में लवण समुद्र में तीनसो-तीनसो योजन जाने पर चार अन्तरद्वीप हैं। अन्तरद्वीपों के नाम इसी सूत्र के उपसूत्र ६

(१८) के समान समझें।

३०५ १क—जम्बूद्वीप की वाह्य वेदिकाओं से (पूर्वादि) चार दिशाओं में लवण समुद्र में ६५००० हजार योजन जाने पर महाघटाकार चार महापातालकलश हैं। यथा—१. वलयामुख, २. केतुक ३. यूपक और ४. ईश्वर।

ख—इन चार महापाताल कलशों में पल्योपम स्थिति वाले चार महर्धिक देव रहते हैं। यथा—

१. काल, २. महाकाल, ३. वेलम्ब और ४. प्रभंजन।

२क—जम्बूद्वीप की वाह्य वेदिकाओं से (पूर्वादि) चार दिशाओं में लवण समुद्र में ४२,००० हजार योजन जाने पर चार वेलन्धर नागराजाओ के चार आवास पर्वत हैं। यथा—

१. गोस्तुभ, २. उदकभास, ३. शंख, ४. दकसीम।

ख—इन चार आवास पर्वतों पर पल्योपम स्थिति वाले चार महर्धिक देव रहते हैं। यथा—

१. गोस्तूप, २. शिवक, ३. शंख और ४. मनशिल।

३क—जम्बूद्वीप की वाह्य वेदिकाओं से (अग्न्यादि) चार विदिशाओं में लवण समुद्र में ४२,००० हजार

योजन जाने पर अनुवेलधर नागराजाओं के चार आवास पर्वत हैं। यथा—

१. कर्कोटक, २. कर्दमक, ३. कैलाश और ४. अरुणप्रभ।

ख—उन चार आवास पर्वतों पर पल्योपम स्थितिवाले चार महर्धिक देव रहते हैं।

यथा—इन देवों के नाम पर्वतों के समान है।

४क—लवण समुद्र में चार चन्द्रमा अतीत में प्रकाशित हुए थे वर्तमान में प्रकाशित होते हैं और भविष्य में प्रकाशित होंगे।

ख—लवण समुद्र में चार सूर्य अतीत में तपे थे वर्तमान में तपते हैं और भविष्य में तपेंगे।

५(८८)—इसी प्रकार चार कृतिका-यावत्-चारभाव केतु पर्यन्त सूत्र कहें।

६क—लवण समुद्र के चार द्वार हैं—

इनके नाम जम्बूद्वीप के द्वारों के समान हैं।

ख—इन द्वारों पर पल्योपम स्थितिवाले चार महर्धिक देव रहते हैं।

उनके नाम जम्बूद्वीप के द्वारों पर रहने वाले देवों के समान हैं।

३०६ १—धातकीखंड द्वीप का वलयाकार विष्कम्भ चार लाख योजन का है।

२—जम्बूद्वीप के बाहर चार भरत क्षेत्र और चार ऐरवत क्षेत्र हैं।

३—इसी प्रकार पुष्करार्धद्वीप के पूर्वार्ध पर्यन्त द्वितीय स्थान उद्देशक तीन के सूत्र ९०, ९१ और ९२ में उक्त मेरुचूलिका तक के पाठ की पुनरावृत्ति करें, और उसमें सर्वत्र चार की संख्या कहें।

॥ नंदीश्वर द्वीप वर्णन ॥

३०७ १क—वलयाकार विष्कम्भवाले नन्दीश्वर द्वीप के मध्य चारों दिशाओं में चार अंजनक पर्वत हैं।

यथा—१. पूर्व में अंजनक पर्वत, २. दक्षिण में अंजनक पर्वत, ३. पश्चिम में अंजनक पर्वत और ४. उत्तर में अंजनक पर्वत।

वे अंजनक पर्वत ८४,००० हजार योजन ऊँचे हैं और एक हजार योजन भूमि में गहरे हैं। उन पर्वतों के मूल का विष्कम्भ दस हजार योजन का है। फिर क्रमशः कम होते होते ऊपर का विष्कम्भ एक हजार योजन का है।

उन पर्वतों की परिधि मूल में इकतीस हजार छसो

तेईस योजन की है।

फिर क्रमशः कम होते-होते ऊपर की परिधि तीन हजार एक सौ छासठ योजन की है। वे पर्वत मूल में विस्तृत, मध्य में संकरे और ऊपर पतले अर्थात् गो पुच्छ की आकृति वाले हैं।

सभी अंजनक पर्वत अंजन (श्यामरत्न) मय हैं, स्वच्छ हैं, कोमल हैं, घुटे हुए और घिसे हुए हैं। रज, मल और कर्दम रहित हैं। अनिन्द्य सुषमा वाले है, स्वतः चमकने वाले हैं।

उनसे किरणें निकल रही हैं, अतः उद्योतित हैं। उन्हें देखने से मन प्रसन्न होता है, वे पर्वत दर्शनीय है, मनोहर हैं एवं रमणीय हैं।

ख—उन अंजनक पर्वतों का ऊपरीतल समतल है उन समतल उपरितलों के मध्य भाग में चार सिद्धायतन हैं।

उन सिद्धायतनों की लम्बाई एक सौ योजन की है, चौड़ाई पचास योजन की है और ऊंचाई बहत्तर योजन की हैं।

ग—उन सिद्धायतनों की चार दिशाओं में चार द्वार हैं।

यथा—१. देव द्वार, २. असुर द्वार, ३. नागद्वार और

४. सुपर्ण द्वार।

घ—उन द्वारों पर चार प्रकार के देव रहते हैं।
यथा—१. देव, २. असुर, ३. नाग और ४. सुपर्ण।

ङ—उन द्वारों के आगे चार मुखमण्डप हैं।

च—उन मुखमण्डपों के आगे चार प्रेक्षाघर मण्डप है।

छ—उन प्रेक्षाघर मण्डपों के मध्य भाग में चार वज्रमय अखाड़े हैं।

ज—उन वज्रमय अखाड़ों के मध्य भाग में चार मणि-पीठिकायें है।

झ—उन मणिपीठिकाओं के ऊपर चार सिंहासन हैं।

ञ—उन सिंहासनों पर चार विजय दूष्य हैं।

ट—उन विजयदूष्यों के मध्य भाग में चार वज्रमय अंकुश[1] है।

ठ—उन वज्रमय अंकुशों पर लघु कुंभाकार मोतियों की चार मालायें हैं।

ड—प्रत्येक माला अर्धप्रमाण वाली चार-चार मुक्ता-मालाओं से घिरी हुई हैं।

---

१. वस्तु लटकाने का आंकड़ा।

२क—उन प्रेक्षाघर मण्डपों के आगे चार मणिपीठिकाएँ हैं[1]।

ख—उन मणिपीठिकाओं पर चार चैत्य स्तूप हैं।

ग—प्रत्येक चैत्य स्तूपों की चारों दिशाओं में चार-चार मणिपीठिकाएँ हैं।

घ—प्रत्येक मणिपीठिका पर पल्यंकासन वाली स्तूपाभिमुख सर्व रत्नमय चार जिन प्रतिमायें हैं।

उनके नाम—

१. रिषभ २. वर्धमान ३. चन्द्रानन और ४. वारिषेण।

ङ—उन चेत्यस्तूपों के आगे चार मणिपीठिकायें हैं।

च—उन मणिपीठिकाओं पर चार चैत्य वृक्ष हैं।

छ—उन चैत्य वृक्षों के सामने चार मणि पीठिकायें हैं।

ज—उन मणिपीठिकाओं पर चार महेन्द्र ध्वजायें हैं।

झ—उन महेन्द्र ध्वजाओं के सामने चार नंदा पुष्करणियाँ हैं।

ञ—प्रत्येक पुष्करणी की चारों दिशाओं में चार वन खंड हैं।

---

१. पूर्वोक्त (च) सूत्र देखें।

गाथार्थ—यथा—१. पूर्व में अशोक वन,
२. दक्षिण में सप्तपर्ण वन,
३. पश्चिम में चम्पक वन, और
४. उत्तर में आम्रवन !

३क—पूर्व दिशावर्ती अंजनक पर्वत की चारों दिशाओं में चार नंदा पुष्करणियाँ हैं।

उनके नाम इस प्रकार हैं—

१. नंदुत्तरा, २. नंदा, ३. आनंदा और ४. नंदिवर्धना

उन पुष्करणियों की लम्बाई एक लाख योजन है। चौड़ाई पचास हजार योजन है और गहराई एक हजार योजन है।

ख—प्रत्येक पुष्करणी की चारों दिशाओं में त्रिसोपान प्रतिरूपक (तीन पगथिये) हैं।

ग—उन त्रिसोपान प्रतिरूपकों के सामने पूर्वादि चार दिशाओं में चार तोरण हैं।

घ—प्रत्येक तोरण की पूर्वादि चार दिशाओं में चार वन खण्ड हैं।

वन खण्डों के नाम इसी सूत्र के पूर्वोक्त हैं।

ङ—उन पुष्करणियों के मध्यभाग में चार दधिमुख पर्वत हैं। इनकी ऊँचाई ६४,००० हजार योजन,

भूमि में गहराई एक हजार योजन की है।

वे पर्वत सर्वत्र पल्यंक के समान आकार वाले हैं।

इनकी चौड़ाई दस हजार योजन की है और परिधि इकतीस हजार छसो तेईस योजन की है।

ये सभी रत्नमय हैं —यावत् रमणीय है।

च—उन दधिमुख पर्वत के उपर का भाग समतल हैं।

"शेष समग्र कथन अंजनक पर्वतों के समान कहना चाहिये यावत् -उत्तर में आम्रवन तक" [इसी सूत्र २ के उपसूत्र २ के (ख से ड तक) और उपसूत्र २ की पूरी आवृति करें]

४क-च—दक्षिण दिशा के अंजनक पर्वत की चार दिशाओं में चार नन्दा पुष्करणियां है।

उनके नाम इस प्रकार है—

१. भद्रा, २. विसाला, ३. कुमुद और ४. पोंडरिकिणी।

पुष्करणियों का शेष वर्णन-यावत्-दधिमुखपर्वत वनखण्ड पर्वत तक कहें।

५क-च—पश्चिम दिशा के अंजनक पर्वत की चारों दिशाओ में चार नन्दा पुष्पकरणियां हैं।

उनके नाम इस प्रकार है—

१. नन्दिसेना, २. अमोघा, ३. गोस्तूपा और ४. सुदर्शना। शेष वर्णन पूर्ववत।

६क-च—उत्तर दिशा के अंजनक पर्वत की चारों दिशाओं में चार नन्दा पुष्करणियां है। उनके नाम है—

१. विजया, २. वेजयन्ती, ३.जयन्ती और ४. अपराजिता। शेप वर्णन पूर्ववत्।

७क—वलयाकार विष्कम्भ वाले नन्दीश्वर द्वीप के मध्य भाग में चार विदिशाओं में चार रतिकर पर्वत है।

यथा—१. उत्तर पूर्व में रतिकर पर्वत,

२. दक्षिण-पूर्व में रतिकर पर्वत,

३. दक्षिण-पश्चिम में रतिकर पर्वत,

४. उत्तर-पश्चिम में रतिकर पर्वत।

वे रतिकर पर्वत एक हजार योजन ऊंचे हैं,

एक हजार गाउ भूमि में गहरे हैं।

झालर के समान सर्वत्र सम संस्थान वाले हैं।

दस हजार योजन उनकी चौड़ाई है। इकतीस हजार छह सौ तेइस योजन उनकी परिधि है। सभी रत्नमय हैं। स्वच्छ हैं, यावत्-रमणीय हैं।

ख—उत्तर पूर्व में स्थिति रतिकर पर्वत की चारों दिशाओं में देवेन्द्र देवराज ईशानेन्द्र की चार अग्रमहिषियों

की जम्बूद्वीप जितनी बड़ी चार राजधानियाँ हैं।

उनके नाम ये हैं—

१. नंदुत्तरा, २. नंदा, ३. उत्तर कुश और ४. देवकुश

ग—चार अग्रमहिषियों के नाम—

१. कृष्णा, २. कृष्णराजी, ३. रामा और ४. राम रक्षिता।

इन अग्रमहिषियों की उक्त राजधानियाँ हैं।

ग—दक्षिण पूर्व में स्थित रतिकर पर्वत की चारों दिशाओं में देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र की चार अग्रमहिषियों की जम्बूद्वीप जितनी बड़ी चार राजधानियाँ हैं।

उनके नाम ये हैं—

१. समणा, २. सोमणसा, ३. अर्चिमाली और ४. मनोरमा।

ड़—चार अग्रमहिषियों के नाम—

१. पद्मा, २. शिवा, ३. शची और ४. अंजू।

इन अग्रमहिषियों की उक्त राजधानियां हैं।

च—दक्षिण-पश्चिम स्थित रतिकर पर्वत की चारों दिशाओं में देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र की चार अग्रमहिषियों की जम्बूद्वीप जितनी बड़ी चार राजधानिया हैं। उनके नाम ये हैं—

१. भूता २. शूतवडिसा ३. गोस्तूपा और ४. सुदर्शना।

छ—अग्रमहिषियों के नाम—

१. अमला २. अप्सरा ३. नवमिका और ४. रोहणी।

इन अग्रमहिषियों की उक्त राजधानियां हैं।

ज—उत्तर-पश्चिम में स्थित रतिकर पर्वत की चारों दिशाओं में देवेन्द्र देवराज ईशानेन्द्र की जम्बूद्वीप जितनी बड़ी चार राजधानियां हैं।

उनके नाम ये हैं—

१. रत्ना, २. रत्नोच्चया, ३. सर्वरत्ना और ४. रत्न संचया।

अग्रमहिषियों के नाम—

१. वसु २. वसु गुप्ता ३. वसुमित्रा और ४. वसुंधरा
इन अग्रमहिषियों की उक्त राजधानियाँ हैं।

॥ इति श्री नंदीश्वर द्वीप वर्णन ॥

३०८ १—सत्य चार प्रकार का है।

यथा—१. नाम सत्य, २. स्थापना सत्य,
३. द्रव्य सत्य और ४. भाव सत्य !

३०९ १—आजीविका (गोशालक) मतवालों का तप चार

प्रकार है। यथा—

१. उग्र तप, २. घोर तप,

३. रसनिर्यूह तप ४. जिव्हेन्द्रिय प्रतिसंलीनता।

१० १क—संयम चार प्रकार का है। यथा—

१. मन संयम, २. वचन संयम,

३. काय संयम और ४. उपकरण संयम।

ख—त्याग चार प्रकार का है। यथा—

१. मन त्याग, २. वचन त्याग,

३. काय त्याग और ४. उपकरण त्याग।

ग—अकिंचनता चार प्रकार की है। यथा—

१. मन अकिंचनता, २. वचन अकिंचनता,

३. काय अकिंचनता, और ४. उपकरण अकिंचनता।

॥ इति चतुर्थ स्थानक का द्वितीयोद्देशक ॥

अथ चतुर्थ स्थानक तृतीय उद्देशक

११ १क—रेखायें चार प्रकार की हैं। यथा—

१. पर्वत की रेखा, २. पृथ्वी की रेखा, ३. बालु की रेखा और ४. पानी की रेखा।

ख—इसी प्रकार क्रोध चार प्रकार का है। यथा—

१. पर्वत की रेखा के समान,

२. पृथ्वी की रेखा के समान,

३. वालु की रेखा के समान,

४. पानी की रेखा के समान।

ग—१. पर्वत की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर नरक में उत्पन्न होता है।

२. पृथ्वी की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर तिर्यंच योनि में उत्पन्न होता है।

३. वालु की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर मनुष्य योनि में उत्पन्न होता है।

४. पानी की रेखा के समान क्रोध करने वाला जीव मरकर देव योनि में उत्पन्न होता है।[1]

घ—उदक (पानी चार प्रकार का होता है। यथा—

१. कर्दमोदक, २. खंजनोदक, ३. वालुकोदक और

---

१. इस सूत्र के आगे पूर्वोक्त सूत्र २९३ में वर्णित कषाय सूत्रों का कथन होना चाहिये था किंतु मान, माया और लोभविषयक कथन पहले हुआ और क्रोध विषयक कथन यहां हुआ यह विपर्यय देवर्धिगणि क्षमाश्रमण से अब तक चल रहा है। टीकाकार के सामने भी यही पाठ रहा है अत: इनको यथास्थान रखने का साहस अब तक किसी ने नहीं किया है।

४. शैलोदक ।

ङ—इसी प्रकार भाव चार प्रकार का है ।

यथा—१. कर्दमोदक समान, २. खंजोनदक समान, ३. वालुकोदक समान और ४. शैलोदक समान ।

च—कर्दमोदक समान भाव (विचार) रखने वाला जीव मरकर नरक में उत्पन्न होता है। यावत् शैलोदक समान भाव रखने वाला जीव मरकर देवयोनि में उत्पन्न होता है ।

३१२ १क—पक्षी चार प्रकार के हैं । यथा—

१—एक पक्षी रुत सम्पन्न (मधुर स्वर वाला) है किन्तु रूप सम्पन्न नहीं है ।[1]

२—एक पक्षी रूप सम्पन्न है किन्तु रुत सम्पन्न (मधुर स्वर वाला) नहीं है ।[2]

३—एक पक्षी रूप सम्पन्न भी है और रुतसम्पन्न भी है ।[3]

---

१. यथा—कोयल

२. यथा—शुक

३. यथा—मयूर

४—एक पक्षी रुत सम्पन्न भी नहीं है और रूप सम्पन्न भी नहीं है।[1]

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग भी चार प्रकार का है।

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक के साथ प्रीति करूँ और उसके साथ प्रीति करता भी है।

२—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक के साथ प्रीति करूं किन्तु उसके साथ प्रीति नहीं करता है।

३—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि अमुक के साथ प्रीति न करूँ किन्तु उसके साथ प्रीति करलेता है।

४—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि अमुक के साथ प्रीति न करूं और उसके साथ प्रीति करता भी नहीं है।

घ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है।

यथा—१—एक पुरुष स्वयं भोजन आदि से तृप्त होकर आनन्दित होता है किन्तु दूसरे को तृप्त नहीं करता।

२—एक पुरुष दूसरे को भोजन आदि से तृप्त कर प्रसन्न

---

१. यथा—काक

होता है किन्तु स्वयं को तृप्त नहीं करता।

३—एक पुरुष स्वयं भी भोजन आदि से तृप्त होता है और अन्य को भी भोजन आदि से तृप्त करना है।

४—एक पुरुष स्वयं भी तृप्त नहीं होता और अन्य को भी तृप्त नहीं करता।

ङ—पुरुष वर्ग ४ प्रकार का है। यथा—

१—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अपने सद्व्यवहार से अमुक में विश्वास उत्पन्न करूं और विश्वास उत्पन्न करता भी है!

२—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अपने सद्व्यवहार से अमुक में विश्वास उत्पन्न करूँ किन्तु विश्वास उत्पन्न नहीं करता।

३—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक में विश्वास उत्पन्न नही कर सकूंगा किन्तु विश्वास उत्पन्न करने में सफल हो जाता है।

४—एक पुरुष ऐसा सोचता है कि मैं अमुक में विश्वास उत्पन्न नहीं कर सकूँगा और विश्वास उत्पन्न कर भी नहीं सकता है।

च१—एक पुरुष स्वयं विश्वास करता है किन्तु दूसरे में विश्वास उत्पन्न नहीं कर पाता।

२—एक पुरुष दूसरे में विश्वाम उत्पन्न कर देता है, किंतु स्वयं विश्वास नहीं करता।

३—एक पुरुष स्वयं भी विश्वास करता है और दूसरे में भी विश्वास उत्पन्न करता है।

४—एक पुरुष स्वयं भी विश्वास नहीं करता और न दूसरे में विश्वास उत्पन्न करता है।

३२३ १क—वृक्ष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. पत्रयुक्त,　　२. पुष्पयुक्त,

३. फलयुक्त और　　४. छायायुक्त

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. पत्ते वाले वृक्ष के समान,[1]

२. पुष्प वाले वृक्ष के समान,[2]

३. फल वाले वृक्ष के समान,[3]

१—जिस प्रकार केवल पत्ते वाले वृक्ष से जन साधारण को पुष्पादि नहीं मिलते उसी प्रकार एक पुरुष से किसी का भला नहीं होता।

२—जिस प्रकार पुष्प वाले वृक्ष से सुगन्ध मिलती है उसी प्रकार एक पुरुष से सद्विचार मिलते हैं।

३—जिस प्रकार फल वाले वृक्ष से फल मिलते हैं उसी प्रकार एक पुरुष से अन्न वस्त्र आदि मिलते हैं।

४. छाया वाले वृक्ष के समान ।[1]

३१४ १क—भारवहन करने वाले के चार विश्राम स्थल हैं ।

यथा—१. एक भारवाहक मार्ग में चलता हुआ एक खंधे से दूसरे खंधे पर भार रखता है । यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

२.एक भारवाहक कहीं पर भार रखकर मल मूत्रादि का त्याग करता है—यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

३.एक भारवाहकनागकुमार या सुपर्णकुमार के मंदिर में रात्रि विश्राम लेता है। यह भी एक प्रकार का विश्राम है ।

४. एक भारवाहक अपने घर पहूंच जाता है यह भी एक प्रकार का विश्राम हैं ।

ख—इसी प्रकार श्रमणोपासक के चार विश्राम हैं ।

यथा—१. जो श्रमणोपासक शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण व्रत या प्रत्याख्यान-पौषधोपवास करते हैं—यह

१—जिस प्रकार छाया वाले वृक्ष से ताप मिटता है और शान्ति मिलती है उसीप्रकार एक पुरुष से सुरक्षा होती है और संताप मिटता है ।

भी एक प्रकार का विश्राम है।

२. जो श्रमणोपासक सामायिक या देशावगासिक धारण करता है यह भी एक प्रकार का विश्राम है।

३. जो श्रमणोपासक चौदस अष्टमी, अमावस्या या पूर्णिमा के दिन पौषध करता है—यह भी एक प्रकार का विश्राम है।

४. जो श्रमणोपासक भक्त-पान का प्रत्याख्यान करता है, और पादप के समान शयन करके मरण की कामना नहीं करता है—यह भी एक प्रकार का विश्राम का करता है।

३१५ १—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. उदितोदित—यहाँ भी उदय (समृद्ध) और आगे भी उदय (परम सुख प्राप्त) है।

२. उदितास्तमित—यहां उदय (समृद्ध) है किन्तु आगे उदय नहीं।

३. अस्तमितोदित—यहां उदय नहीं है किन्तु आगे उदय है।

४. अस्तमितास्तमित—यहां भी उदय नहीं है और आगे भी उदय नहीं है।

१. भरत चक्रवर्ती उदितोदित है;

२. ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती उदितास्तमित है ।

३. हरिकेशबल अणगार अस्तमितोदित है ।

४. काल शौकरिक अस्तमितास्तमित है ।

३१६ १क—युग्म ४ प्रकार है । यथा—

१. कृतयुग्म—एक ऐसी संख्या जिसके चार का भाग देने पर शेष चार रहे ।

२. त्र्योज—एक ऐसी संख्या जिसके तीन का भाग देने पर शेष तीन रहे ।

३. द्वापर—एक ऐसी संख्या जिसके दो का भाग देने पर शेष दो रहे ।

४. कल्योज—एक ऐसी संख्या जिसके एक का भाग देने पर शेष एक रहे ।

ख—नारक जीवों के चार युग्म हैं ।

ग—इसी प्रकार २४ दण्डकवर्ती जीवों के चार युग्म हैं ।

३१७ १क—शूर चार प्रकार के है । यथा—

१. क्षमाशूर, २. तपशूर, ३. दानशूर और
४. युद्धशूर ।

ख—१. क्षमाशूर अरिहंत है, २. तपशूर अणगार है,
३. दानशूर वैश्रमण है, और ४. युद्धशूर वासुदेव है ।

३१८ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१. एक पुरुष उच्च है (लौकिक वैभव से श्रेष्ठ है) और उच्चछंद है (श्रेष्ठ अभिप्राय वाला है)

२. एक पुरुष उच्च है (लौकिक वैभव से श्रेष्ठ है) किन्तु नीच छंद है (नीच अभिप्राय वाला है)

३. पुरुष एक नीच है (वैभवहीन है) किन्तु उच्चछंद है (उच्च अभिप्राय वाला है)

४. एक पुरुष नीच है (वैभवहीन है) और नीच छंद है (नीच अभिप्राय वाला है)

३१९ १क—असुरकुमारों की ४ लेश्या हैं। यथा—

१. कृष्ण लेश्या, २. नील लेश्या,
३. कापोत लेश्या और ४. तेजो लेश्या।

ख—इसी प्रकार शेष भवनवासी देवो की, पृथ्वी काय, अप्काय, वनस्पतिकाय और वाणव्यन्तरों की चार लेश्यायें हैं।

३२० १क—यान चार प्रकार के है ।

१. एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) और युक्त है (सामग्री से भी युक्त है)

२. एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) किन्तु अयुक्त है (सामग्री रहित है)

३. एक यान अयुक्त है (वृषभ आदि से रहित है)

किन्तु युक्त है (सामग्री से युक्त है)।

४. एक यान अयुक्त (वृषभ आदि से रहित है) और अयुक्त है (सामग्री से भी रहित है)

ख—इसी प्रकार पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष युक्त है (धनादि से युक्त है) और युक्त है (उचित अनुष्ठान से भी युक्त है)

२. एक पुरुष युक्त है (धनादि से युक्त है) किन्तु अयुक्त है। (उचित अनुष्ठान से अयुक्त है।)

३. एक पुरुष अयुक्त है (धनादि से अयुक्त है) किन्तु युक्त है (उचित अनुष्ठान से युक्त है)

४. एक पुरुष अयुक्त है (धनादि से रहित हैं) और अयुक्त है (उचित अनुष्ठान से भी रहित है।

२क—यान चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) और युक्त परिणत है (चलने के लिए तैयार है)

२. एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) किंतु अयुक्त परिणत है (चलने योग्य नहीं है)

३. एक यान अयुक्त है (वृषभ आदि से रहित है) किन्तु युक्त है (चलने योग्य है)

४. एक यान अयुक्त है। (वृषभ आदि से रहित है)

और अयुक्त है (चलने योग्य भी नहीं है)

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष युक्त है (धनधान्य से परिपूर्ण है) और युक्त परिणत है (उचित प्रवृत्ति वाला है)

शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

३क—यान चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) और युक्त रूप है (सुन्दराकार है)

शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष युक्त है (धन आदि से युक्त है) और युक्त रूप है (सुन्दर है)

शेष तीन भांगे पूर्वोक्त कहें।

४क—यान चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक यान युक्त है (वृषभ आदि से युक्त है) और शोभा युक्त है।

शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष युक्त है (धन से युक्त है) और उसकी शोभा युक्त है।

शेष तीन भांगे पूर्वोक्त कहें।

५क—वाहन चार प्रकार के हैं।[1] यथा—

१. एक वाहन बैठने की सामग्री (मंच आदि) से युक्त है और वेग युक्त है।

२. एक वाहन बैठने की सामग्री (मंच आदि) से युक्त है किन्तु वेग युक्त नहीं है।

३. एक वाहन बैठने की सामग्री युक्त नहीं है किन्तु वेग युक्त है।

४. एक वाहन बैठने की सामग्री युक्त भी नहीं है और वेग युक्त भी नहीं है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष धन धान्य सम्पन्न है और उत्साही है।

२. एक पुरुष धन धान्य सम्पन्न है किन्तु उत्साही नहीं है।

३. एक पुरुष उत्साही है किन्तु धन धान्य सम्पन्न नहीं है।

४. एक पुरुष धन धान्य सम्पन्न भी नहीं है और

१—प्रत्येक यान या वाहन पर बैठने के साधन भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं और उनके नाम भी भिन्न-भिन्न हैं।

उत्साही भी नहीं है।

६-८—यान के चार सूत्रों के समान युग्म के चार सूत्र भी कहें और पुरुष सूत्र भी पूर्ववत् कहें।

९क—सारथी चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक सारथी रथ के अश्व जोतता है किन्तु खोलता नहीं है।

२. एक सारथी रथ के अश्व खोलता है किन्तु जोतता नहीं है।

३. एक सारथी रथ में अश्व जोतता भी है और खोलता भी है।

४. एक सारथी रथ में अश्व जोतता भी नहीं है है और खोलता भी नहीं है।

ख—इसी प्रकार पुरुष (श्रमण) चार प्रकार के है।

यथा—१. एक श्रमण (किसी व्यक्ति को) संयम साधना में लगाता है किन्तु अतिचारों से मुक्त नहीं करता।

२. एक श्रमण संयमी को अतिचारों से मुक्त करता है किन्तु संयम साधना में नहीं लगाता।

३. एक श्रमण संयम साधना में भी लगाता है और अतिचारों से भी मुक्त करता है।

४. एक श्रमण संयम साधना में भी नहीं लगाता और अतिचारों से भी मुक्त नहीं करता।

१०-१४—हय (अश्व) चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक अश्व पलाण युक्त है और वेग युक्त है। यान के चार सूत्रों के समान हय के चार सूत्र कहें और पुरुष सूत्र भी पूर्ववत् कहें।

१५-१८—हय के चार सूत्रों के समान गज के चार सूत्र कहें[1] और पुरुष सूत्र भी पूर्ववत् कहें।

१९क—युग्यचर्या (अश्व आदि की चर्या) चार प्रकार की है। यथा—१. एक अश्व मार्ग में चलता है किन्तु उन्मार्ग में नहीं चलता है।

२. एक अश्व उन्मार्ग में चलता है किन्तु मार्ग में नहीं चलता है।

३. एक अश्व मार्ग में भी चलता है और उन्मार्ग में भी चलता है।

४. एक अश्व मार्ग में भी नहीं चलता और उन्मार्ग में भी नहीं चलता।

ख—इसी प्रकार पुरुष (श्रमण) भी चार प्रकार के है।

१—गज सूत्रों में अंबाबाड़ी कहें।

यथा—१. एक पुरुष संयम मार्ग में चलता है किन्तु उन्मार्ग में नहीं चलता।

शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

२०क—पुष्प चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुष्प सुन्दर है किन्तु सुगन्धित नहीं है।[1]

२. एक पुष्प सुगन्धित है किन्तु सुन्दर नहीं है।[2]

३. एक पुष्प सुन्दर भी है और सुगन्धित भी है।[3]

४. एक पुष्प सुन्दर भी नहीं है और सुगन्धित भी नहीं है।[4]

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष सुन्दर है किन्तु सदाचारी नहीं है।

शेष तीन भांगे पूर्ववत् कहें।

२१क—जाति सम्पन्न और कुल सम्पन्न,

ख—जाति सम्पन्न और बल सम्पन्न।

ग—जाति सम्पन्न और रूप सम्पन्न,

घ—जाति सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न।

ङ—जाति सम्पन्न और शील सम्पन्न,

१—आंवले के पुष्प समान। २—चम्पा के पुष्प समान।
३—जाई पुष्प के समान। ४—बोरड़ी के पुष्प समान।

च—जाति सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।

छ—कुल सम्पन्न और वल सम्पन्न,

ज—कुल सम्पन्न और रूप सम्पन्न ।

झ—कुल सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न,

ञ—कुल सम्पन्न और शील सम्पन्न ।

ट—कुल सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न,

ठ—वल सम्पन्न और रूप सम्पन्न ।

ड—वल सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न,

ढ—वल सम्पन्न और शील सम्पन्न ।

ण—वल सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न,

त—रूप सम्पन्न और श्रुत सम्पन्न ।

थ—रूप सम्पन्न और शील सम्पन्न,

द—रूप सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।

ध—श्रुत सम्पन्न और शील सम्पन्न,

न—श्रुत सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।

प—शील सम्पन्न और चारित्र सम्पन्न ।

इनके चार-चार भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें ।

२२क—फल चार प्रकार के हैं । यथा—

१. आंवले जैसा मधुर, २. दाख जैसा मधुर,

३. दूध जैसा मधुर, ४. खांड जैसा मधुर ।

ख—इसी प्रकार आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. मधुर आंवले के समान जो आचार्य है वे मधुर-भाषी हैं और उपशान्त है।

२. मधुर दाख समान जो आचार्य है वे अधिक मधुरभाषी हैं और अधिक उपशान्त है।

३. मधुर दूध के समान जो आचार्य हैं वे विशेष मधुरभाषी हैं और अत्यधिक उपशान्त हैं।

४. मधुर शर्करा समान जो आचार्य हैं वे अधिकतम मधुरभाषी है और अधिक उपशान्त हैं।

२३क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष अपनी सेवा करता है किन्तु दूसरे की नहीं करता।[1]

२. एक पुरुष दूसरे की सेवा करता है अपनी नहीं करता।[2]

३. एक पुरुष अपनी सेवा भी करता है और दूसरे की भी करता है।[3]

४. एक पुरुष अपनी सेवा भी नहीं करता और दूसरे

---

१. आलसी या रूक्ष प्रकृतिवाला। २. परोपकारी।
३, व्यवहार कुशल (स्थविरकल्पी)

की भी नहीं करता ।[4]

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष दूसरे की सेवा करता है किन्तु अपनी सेवा नहीं करवाता ।[5]

२. एक पुरुष दूसरे से सेवा करवाता है किन्तु स्वयं सेवा नहीं करता ।[6]

३. एक पुरुष दूसरे की सेवा भी करता है और दूसरे से सेवा करवाता हैं ।[7]

४. एक पुरुष न दूसरे की सेवा करता है और न दूसरे से सेवा करवाता है ।[8]

२४क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष कार्य करता है किन्तु मान नहीं करता।

२. एक पुरुष मान करता है किन्तु कार्य नहीं करता।

३. एक कार्य भी करता है और मान भी करता है।

४. एक कार्य भी नहीं करता है और मान भी नहीं

---

४. पादोपगमन भक्त प्रत्याख्यान करने वाला।

५. निस्पृही ।

६. रोगी या आचार्य ।

७. स्थविरकल्पी मुनि ।

८. जिनकल्पी मुनि ।

करता है।

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष (श्रमण) गण के लिये आहारादि का संग्रह करता है।

२. एक पुरुष गण के लिये संग्रह नहीं करता किन्तु मान करता है।

३. एक पुरुष गण के लिये भी संग्रह करता है और मान भी करता है।

४. एक पुरुष गण के लिये संग्रह भी नहीं करता और अभिमान भी नहीं करता है।

ग—पुरुष चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१. एक पुरुष निर्दोष साधु समाचारी का पालन करके गण की शोभा बढ़ाता है और मान नहीं करता।

२. एक पुरुष मान करता है किन्तु गण की शोभा नहीं बढ़ाता है।

३. एक पुरुष गण की शोभा भी बढ़ाता है और मान भी करता है।

४. एक पुरुष गण की शोभा भी नहीं बढ़ाता और मान भी नहीं करता।

घ—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष (श्रमण) गण की शुद्धि (यथा योग्य प्रायश्चित देकर) करता है किन्तु मान नहीं करता। शेष तीन भांगे पूर्वोक्त कहें।

२५क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष साधु वेष छोड़ता हैं किन्तु चारित्र धर्म नहीं छोड़ता।[1]

२. एक पुरुष चारित्र धर्म छोड़ता है किन्तु साधु वेष नहीं छोड़ता।[2]

३. एक पुरुष साधु वेष भी छोड़ता है और चारित्र धर्म भी छोड़ता है।[3]

४. एक पुरुष साधु वेष भी नहीं छोड़ता और चारित्र धर्म भी नहीं छोड़ता।

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष (श्रमण) सर्वज्ञ धर्म को छोड़ता है किन्तु गण की मर्यादा को नहीं छोड़ता हैं।

२. एक पुरुष सर्वज्ञ कथित धर्म को नहीं छोड़ता है

---

१. अन्य दर्शन का अध्ययन करने के लिए यदि कहीं जाना हो तो।

२. निह्नव। ३. पतित।

किन्तु गण की मर्यादा को छोड़ देता है।

३. एक पुरुष सर्वज्ञ कथित कथित धर्म भी छोड़ देता है और गण की मर्यादा भी छोड़ देता है।

४. एक पुरुष सर्वज्ञ कथित धर्म भी नहीं छोड़ता है और गण की मर्यादा भी नहीं छोड़ता है।

२६—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष है उसे धर्म प्रिय है किन्तु वह धर्म में दृढ़ नहीं है।

२. एक पुरुष है वह धर्म में दृढ़ है किन्तु उसे धर्म प्रिय नहीं है।

३. एक पुरुष है उसे धर्म प्रिय भी है और वह धर्म में दृढ़ भी है।

४. एक पुरुष है उसे धर्म भी प्रिय नहीं है और वह धर्म में दृढ़ भी नहीं है।

२७क—आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक आचार्य दीक्षा देते हैं किन्तु महाव्रतों की प्रतिज्ञा नहीं कराते हैं।[1]

---

१. दीक्षा देने वाले प्रव्राजनाचार्य कहे जाते है। महाव्रत धारण कराने वाले उपस्थापनाचार्य कहे जाते हैं।

२. एक आचार्य महाव्रतों की प्रतिज्ञा कराते हैं किन्तु दीक्षा नहीं देते हैं।

३. एक आचार्य दीक्षा भी देते हैं और महाव्रत भी धारण कराते हैं।

४. एक आचार्य न दीक्षा देते हैं और न महाव्रत धारण कराते हैं।[1]

ख—आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक आचार्य शिष्य को आगम ज्ञान प्राप्त करने योग्य बना देते हैं।[2] किन्तु स्वयं आगमों का अध्ययन नहीं कराते।[3]

२. एक आचार्य आगमों का अध्ययन कराते हैं किन्तु शिष्य को आगम ज्ञान प्राप्त करने योग्य नहीं बनाते।

३. एक आचार्य शिष्य को योग्य भी बनाते हैं और वाचना भी देते हैं।

---

१. धर्माचार्य, सामान्य साधु या श्रावक।

२. जो शिष्यों को आगम ज्ञान प्राप्त करने योग्य बनाते हैं वे उद्देशनाचार्य कहे जाते हैं।

३. जो शिष्य को आगमों का अध्ययन कराते हैं वे वाचनाचार्य कहे जाते हैं।

४. एक आचार्य न शिष्य को योग्य बनाते हैं और न वाचना देते हैं।[1]

२८क—अन्तेवासी (शिष्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक प्रव्रजित शिष्य है किन्तु उपस्थापित महाव्रतारोपित शिष्य नहीं है।

२. एक उपस्थापित शिष्य हैं किन्तु प्रव्रजित शिष्य नहीं है।

३. एक शिष्य प्रव्रजित भी है और उपस्थापित भी है।

४. एक शिष्य प्रव्रजित भी नहीं है और उपस्थापित भी नहीं है।[2]

ख—शिष्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक उद्देशना शिष्य है किन्तु वाचना शिष्य नहीं है।

२. एक वाचना शिष्य है किन्तु उद्देशना शिष्य नहीं है।

३. एक उद्देशना शिष्य भी है और वाचना शिष्य भी हैं।

---

१. ऐसे आचार्य धर्माचार्य होते हैं वे केवलधर्मोपदेश करते हैं।

२. ऐसा शिष्य 'धर्मान्तेवासी' कहा जाता है जिसने गुरु से केवल धर्म का बोध प्राप्त किया है।

४. एक उद्देशना शिष्य भी नहीं है और वाचना शिष्य भी नहीं है।

२९क—निर्ग्रन्थ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक निर्ग्रन्थ दीक्षा में ज्येष्ठ है किन्तु महा पाप कर्म और महापाप क्रिया करता है। न कभी आतापना लेता है और न पंचसमितियों का पालन ही करता है। अतः वह धर्म का आराधक नहीं है।

२. एक निर्ग्रन्थ दीक्षा में ज्येष्ठ है किन्तु पापकर्म और पाप क्रिया कदापि नहीं करता है। आतापना लेता है और समितियों का पालन भी करता है। अतः वह धर्म का आराधक होता है।

३. एक निर्ग्रन्थ दीक्षा में लघु है किन्तु महापाप कर्म और महापाप क्रिया करता है, न कभी आतापना लेता है और न समितियों का पालन करता है। अतः वह धर्म का आराधक नहीं होता है।

४. एक निर्ग्रन्थ दीक्षा में लघु है किन्तु कदापि पाप कर्म और पाप क्रिया नहीं करता है, आतापना लेता है और समितियों का पालन भी करता है। अतः वह धर्म का आराधक होता है।

इसी प्रकार निर्ग्रन्थियों श्रावकों और श्राविकाओं के

ही मूर्छित-यावत्-आसक्त नहीं होता है और मनुष्य लोक में आना चाहता है तो आ सकता है।

३२४ १क—लोक में अन्धकार चार कारणों से होता है। यथा—

१. अर्हन्तों के मोक्ष जाने पर,

२. अर्हन्त कथित धर्म के लुप्त होने पर,

३. पूर्वों का ज्ञान नष्ट होने पर,

४. अग्नि न रहने पर।[1]

ख—लोक में उद्योत चार कारणों से होता है। यथा—

१. अर्हन्तों के जन्म समय में, २. अर्हन्तों के प्रवजित होते समय, ३. अर्हन्तों के केवल ज्ञान महोत्सव में, ४. अर्हन्तों के निर्वाण महोत्सव में।

ग-छ—"इसी प्रकार देवलोक में अंधकार, उद्योत, देव

---

१. इस सूत्र में लोक शब्द से सम्पूर्ण लोक नहीं समझना चाहिए क्योंकि महाविदेह आदि ऐसे क्षेत्र हैं जहां आगममान्यतानुसार—१. अर्हन्तों का, २. अर्हन्त प्रज्ञप्त धर्म का, ३. पूर्वों के ज्ञान और का और ४. अग्नि का विच्छेद कभी होता ही नहीं। अतः भरत-क्षेत्र आदि कतिपय क्षेत्र ही लोक शब्द से ग्रहण करें। यदि लोक शब्द से सम्पूर्ण लोक लिया जायगा तो आगम वचनों में पूर्वा पर विरोध आयेगा।

समुदाय का एकत्र होना, उत्साहित होना और आनन्दजन्य कोलाहल होना" के चार-चार भाँगे कहें।

ज—देवेन्द्र-यावत्-लोकान्तिक देव चार कारणों से मनुष्य लोक में आते हैं।

तीसरे स्थान में सूत्र १३४ में कथित तीन कारणों में "अरिहंतों के निर्वाणमहोत्सव का एक कारण और बढ़ाकर चार भांगे कहें।

३२५ १क—दुखशय्या[1] चार प्रकार की है।

१. उनमें यह प्रथम दुख शय्या है। यथा—एक व्यक्ति मुंडित होकर अर्थात् "गृहस्थ का परित्याग कर और मुनि धर्म में प्रव्रजित होकर" निर्ग्रन्थ प्रवचन में शङ्का, कांक्षा, विचिकित्सा करता है तो वह मानसिक दुविधा में धर्म विपरीत विचारों से निर्ग्रन्थ प्रवचन में श्रद्धा, प्रतीति एवं रुचि नहीं रखता है। निर्ग्रन्थ प्रवचन में अश्रद्धा, अप्रतीति और अरुचि

---

१. यहाँ 'दुखशय्या' का भावार्थ 'अशान्त जीवन' है जिस प्रकार खराब खाट पर आराम से नींद नहीं आती उसी प्रकार श्रद्धा रहित साधु जीवन भी अशांत जीवन ही है। इसी अशांत जीवन का औपमिक नाम 'दुखशय्या' है।

रखने पर श्रमण का मन सदा ऊँचा नीचा (डांवा- डोल) रहता है अतः वह धर्म भ्रष्ट हो जाता है। यह प्रथम दुखशय्या है।

२. यह दूसरी दुख शय्या है। यथा—"एक व्यक्ति मुंडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर स्वयं को जो आहार आदि प्राप्त है, उससे सन्तुष्ट नहीं होता है और दूसरे को जो आहार आदि प्राप्त है, उनकी इच्छा करता है" ऐसे श्रमण का मन सदा ऊँचा-नीचा (डांवाडोल) रहता है अतः वह धर्म भ्रष्ट हो जाता है। यह दूसरी दुखशय्या है।

३. यह तीसरी दुखशय्या है—एक व्यक्ति मुंडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर जो दिव्य मानवी काम-भोगों का आस्वादन-यावत्-अभिलाषा करता है। उस श्रमण का मन सदा डांवाडोल रहता है अतः वह धर्मभ्रष्ट हो जाता है। यह तीसरी दुखशय्या है।

४. यह चौथी दुखशय्या है—एक व्यक्ति मुंडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर ऐसा सोचता है कि मैं जब घर पर था तब मालिश, मर्दन, स्नान आदि नियमित करता था और जब से मैं मुंडित-यावत्-प्रव्रजित हुआ हूं तब से मैं मालिश, मर्दन स्नान

आदि नहीं कर पाता हूँ—इस प्रकार श्रमण जो मालिश-यावत्-स्नान आदि की इच्छा-यावत् अभिलाषा करता है उसका मन सदा डांवाडोल रहता है अतः वह धर्म भ्रष्ट हो जाता है। यह चौथी दुखशय्या है।

ख—सुखशय्या चार प्रकार की है उनमें से यह प्रथम सुख शय्या है।यथा—

१. एक व्यक्ति मुंडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर निर्ग्रन्थ प्रवचन में शङ्का, कांक्षा, विचिकित्सा नहीं करता है तो वह न दुविधा में पड़ता है और न धर्म विपरीत विचार रखता है। निर्ग्रन्थ प्रवचन में श्रद्धा, प्रतीति एवं रुचि रखने पर श्रमण का मन डांवाडोल नहीं होता, अतः वह धर्म भ्रष्ट भी नहीं होता। यह प्रथम सुख शय्या है।

२. यह दूसरी सुखशय्या है—एक व्यक्ति मुंडित होकर-यावत्-प्रव्रजित होकर स्वयं को प्राप्त आहार आदि से संतुष्ट रहता है और अन्य को प्राप्त आहार आदि की अभिलाषा नहीं रखता है—ऐसे श्रमण का मन कभी ऊँचा नीचा नहीं होता और न वह धर्म-भ्रष्ट होता है। यह दूसरी सुख शय्या है!

३. यह तीसरी सुख शय्या है—एक व्यक्ति मुंडित-यावत्-प्रव्रजित होकर दिव्य मानवी काम-भोगों का आस्वादन-यावत्-अभिलाषा नहीं करता है—उस श्रमण का मन कभी डांवाडोल नहीं होता है, अतः वह धर्म भ्रष्ट भी नहीं होता। यह तीसरी सुखशय्या है।

४. यह चौथी सुख शय्या है—एक व्यक्ति मुंडित-यावत्-प्रव्रजित होकर ऐसा सोचता है कि—'अरिहंत भगवंत आरोग्यशाली, बलवान शरीर के धारक उदार कल्याण विपुल कर्मक्षयकारी तपःकर्म को अंगीकार करते हैं, तो मुझे तो जो वेदना आदि उपस्थित हुई है उसे सम्यक् प्रकार से सहन करना चाहिए। यदि मैं आगत वेदनी कर्मों को सम्यक् प्रकार से सहन नहीं करूँगा तो एकान्त पाप कर्म का भागी होऊँगा। यदि सम्यक् प्रकार से सहन करूँगा तो एकान्त कर्म निर्जरा कर सकूँगा।' इस प्रकार वह धर्म में स्थिर रहता है। यह चौथी सुख-शय्या हैं।

३२६ १क—चार प्रकार के व्यक्ति आगम वाचना के अयोग्य होते हैं। यथा—

१. अविनयी, २. दूध आदि पौष्टिक आहारों का

अधिक सेवन करने वाला, ३. अनुपशांत अर्थात् अति क्रोधी ४. मायावी।

ख—चार प्रकार के आगम वाचना के योग्य होते हैं। यथा—१. विनयी, २. दूध आदि पौष्टिक आहारों का अधिक सेवन न करने वाला, ३. उपशान्त-क्षमाशील, ४. कपट रहित।

३२७ १क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक अपना भरण-पोषण करता है किन्तु दूसरे का भरण-पोषण नहीं करता।[1]

२. एक अपना भरण-पोषण नहीं करता किन्तु दूसरों का भरण-पोषण करता है।[2]

३. एक अपना भी और दूसरे का भी भरण-पोषण करता है।[3]

४. एक अपना भी भरण-पोषण नहीं करता और

१—लोकोत्तर पक्ष में—जिनकल्पी मुनि।

२—लोकोत्तर पक्ष में—अर्हन्त।

३. लोकोत्तर पक्ष में—स्थविरकल्पी।

दूसरे का भी भरण-पोषण नहीं करता।[४]

ख—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष पहले भी दरिद्री होता है और पीछे भी दरिद्री रहता है।

२. एक पुरुष पहले दरिद्री होता है किन्तु पीछे धनवान हो जाता है।

३. एक पुरुष पहले धनवान होता है किन्तु पीछे दरिद्री हो जाता है।

४. एक पुरुष पहले भी धनवान होता है और पीछे भी धनवान रहता है।

ग—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष दरिद्री होता है और दुराचारी भी होता है।

२. एक पुरुष दरिद्री होता है किन्तु सदाचारी होता है।

३. एक पुरुष धनवान होता है किन्तु दुराचारी होता है।

४. एक पुरुष धनवान भी होता है और सदाचारी

---

४. लोकोत्तर पक्ष में—जड़मति।

भी होता है ।

घ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१. एक दरिद्री हैं किन्तु दुष्कृत्यों में आनन्द मानने वाला है ।

२. एक दरिद्री है किन्तु सत्कार्यों में आनन्द मानने वाला है ।

३. एक धनी है किन्तु दुष्कृत्यों में आनन्द मानने वाला है ।

४. एक धनी भी है और सत्कार्यों में भी आनन्द मानने वाला है ।

ङ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है । यथा—

१. एक पुरुष दरिद्री है और दुर्गति में जाने वाला है ।

२. एक पुरुष दरिद्री है और सुगति में जाने वाला है ।

३. एक पुरुष धनवान है और दुर्गति में जाने वाला है ।

४. एक पुरुष धनवान है और सुगति में जाने वाला है ।

च—पुरुष वर्ग चार प्रकार का हैं । यथा—

१. एक पुरुष दरिद्री है और दुर्गति में गया है।[१]

२. एक पुरुष दरिद्री है और सुगति में गया है।[२]

३. एक पुरुष धनवान् है और दुर्गति में गया है।[३]

४. एक पुरुष धनवान है और सुगति में गया है।[४]

छ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष पहले भी अज्ञानी है और पीछे भी अज्ञानी है।

२. एक पुरुष पहले अज्ञानी है किन्तु पीछे ज्ञानवान हो जाता है।

३. एक पुरुष पहले ज्ञानी है किन्तु बाद में अज्ञानी बन जाता है।

४. एक पुरुष पहले भी ज्ञानी है और पीछे भी ज्ञानी है।

ज—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष मलिन स्वभाववाला है और उसके पास अज्ञान का बल है।

२. एक पुरुष मलिन स्वभाववाला है किन्तु उसके

---

१. द्रमक के समान। २. जिनदास के समान।
३. मम्मण शेठ के समान। ४. आनन्दश्रावक के समान।

पास ज्ञान का बल है।

३. एक पुरुष निर्मल स्वभाव वाला है किन्तु उसके पास अज्ञान का बल है।

४. एक पुरुष निर्मल स्वभाव वाला है और उसके पास ज्ञान का बल है।

झ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष मलिन स्वभाववाला है और अज्ञान बल में आनंद मानने वाला है।[1]

२. एक पुरुष मलिन स्वभाव वाला है किन्तु ज्ञान बल में आनंद मानने वाला है।

३. एक पुरुष निर्मल स्वभाववाला है किन्तु अज्ञान बल में आनंद मानने वाला है।

४. एक पुरुष निर्मल स्वभाव वाला है और ज्ञान बल में आनंद मानने वाला है।

---

१. टीकाकार इस सूत्र के वैकल्पिक अर्थ भी देते हैं—(क) एक पुरुष मलिन स्वभाव वाला है किन्तु अपने अज्ञान से लज्जित होने वाला है। शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें। (ख) एक पुरुष मलिन स्वभाव वाला है किन्तु अंधेरे में चलने से लज्जित होता है अर्थात् प्रकाश में चलता है। शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

ञ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष ने कृषि आदि सावद्यकर्मों का तो परित्याग कर दिया है किन्तु सदोष आहार आदि का परित्याग नहीं किया है।

२. एक पुरुष ने सदोष आहार आदि का तो परित्याग कर दिया है किन्तु कृषि आदि सावद्यकर्मों का परित्याग नहीं किया है।

३. एक पुरुष ने कृषि आदि सावद्य कर्मों का भी परित्याग कर दिया है और सदोष आहार आदि का भी परित्याग कर दिया है।

४. एक पुरुष ने कृषि आदि सावद्य कर्मों का भी परित्याग नहीं किया है और सदोष आहार आदि का भी परित्याग नहीं किया है।

ट—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष ने कृषि आदि कर्मों का परित्याग कर दिया है, किन्तु गृहवास का परित्याग नहीं किया है। शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रमसे कहे।

ठ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। पूर्ववत।

ड—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष ने सदोष आहार आदि का तो परित्याग कर दिया है किन्तु गृहवास का परित्याग नहीं किया है।

शेष ३ भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

ढ—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष इहभव के सुख की कामना करता है किन्तु परभव के सुख की कामना नहीं करता है।

२. एक पुरुष परभव के सुख की कामना करता है किन्तु इहभव के सुख की कामना नहीं करता है।

३. एक पुरुष इहभव और परभव दोनों के सुख की कामना करता है।

४. एक पुरुष न इहभव के और न परभव के सुख की कामना करता है।

ण—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष एक (श्रुतज्ञान) से बढ़ता है और एक (सम्यग्दर्शन) से हीन होता है।

२. एक पुरुष एक (श्रुतज्ञान) से बढ़ता है और दो (सम्यग्दर्शन और विनय) से हीन होता है।

३. एक पुरुष दो (श्रुतज्ञान और सम्यकचारित्र) से

वढ़ता है और सम्यग्दर्शन से हीन होता है।

४. एक पुरुष दो (श्रुतज्ञान और सम्यगनुष्ठान) से वढ़ता है और दो (सम्यग्दर्शन और विनय) से हीन होता है।

त—अश्व चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक अश्व पहले शीघ्र गति होता है और पीछे भी शीघ्रगति रहता है।

२. एक अश्व पहले शीघ्रगति होता है किन्तु पीछे मन्द गति हो जाता है।

३. एक अश्व पहले मंदगति होता है किन्तु पीछे शीघ्र गति हो जाता है।

४. एक अश्व पहले भी मंदगति होता है और पीछे भी मंद गति रहता है।

थ—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष पहले सद्गुणी है और पीछे भी सद्-गुणी है।

२. एक पुरुष पहले सद्गुणी है किन्तु पीछे अवगुणी हो जाता है।

३. एक पुरुष पहले अवगुणी है किन्तु पीछे सद्गुणी

हो जाता है ।

४. एक पुरुष पहले भी और पीछे भी अवगुणी होता है ।

द—अश्व चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एश अश्व शीघ्रगति है और संकेतानुसार चलता है ।

२. एक अश्व शीघ्रगति है किन्तु संकेतानुसार नहीं चलता है ।[1]

३. एक अश्व मंदगति है किन्तु संकेतानुसार चलता है ।[2]

४. एक अश्व मंद गति है और संकेतानुसार भी नहीं चलता है ।

ध—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक पुरुष विनय गुणसम्पन्न है और व्यवहार में भी विनम्र है ।

शेष ३ भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें ।

न—अश्व चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु कुलसम्पन्न

---

१. दुर्गम मार्ग होने से । २. अश्वारोही कुशल होने से ।

नहीं है ।

शेष तीन भंगें पूर्वोक्त सूत्र के अनुसार कहें ।

प—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं ।

भांगे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के अनुसार कहें ।

फ—अश्व चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु बलसम्पन्न नहीं है ।

शेष तीन भांगे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है ।

ब—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं ।

भांगे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है ।

भ—अश्व चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु रूपसम्पन्न नहीं है ।

शेष भांगे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है ।

म—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं ।

भांगे पूर्वोक्त सूत्र २८१ के समान है ।

य—अश्व चार प्रकार के है । यथा—

१. एक अश्व जातिसम्पन्न है किन्तु युद्ध में वह विजय प्राप्त नहीं कर पाता ।

शेष तीन भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें ।

र—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष जातिसम्पन्न (जिसका मातृ पक्ष उत्तम है) किन्तु युद्ध में वह विजय प्राप्त नहीं कर पाता। शेष भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

इसी प्रकार—

ल—१. कुल सम्पन्न और वल सम्पन्न,

व—२. कुल सम्पन्न और रूप सम्पन्न,

श—३. कुल सम्पन्न और जय सम्पन्न,

ष—४. वल सम्पन्न और रूप सम्पन्न,

स—५. वल सम्पन्न और जय सम्पन्न,

ह—६. रूप सम्पन्न और वल सम्पन्न,

क्ष—७. रूप सम्पन्न और जय सम्पन्न,

अश्व के चार-चार भांगे तथा इसी प्रकार पुरुष के चार-चार भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

क—पुरुष वर्ग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष सिंह की तरह (वीरतापूर्वक) प्रव्रजित होता है और सिंह की तरह ही विचरण करता है।

२. एक पुरुष सिंह की तरह प्रव्रजित होता है किन्तु शृंगाल (कायर) की तरह विचरण करता है।

३. एक पुरुष शृंगाल की तरह प्रव्रजित होता किन्तु

सिंह की तरह विचरण करता है।

४. एक पुरुष शृगाल की तरह प्रव्रजित होता है और शृगाल की तरह ही विचरण करता है।

३२८ १क—लोक में समान स्थान चार हैं। यथा—

१. अप्रतिष्ठान नरकावास,[1]

२. जम्बुद्वीप,

३. पालकयान विमान,[2]

४. सर्वार्थसिद्ध महाविमान।[3]

ख—लोक में सर्वथा समान स्थान चार हैं। यथा—

१. सीमंतक नरकावास,[4]

२. समयक्षेत्र (मनुष्य लोक),

३. उडु नामक विमान,[5]

४. इषत्प्राग्भारा पृथ्वी[6] (सिद्धशिला)

---

१. सप्तम नरक में एक नरकावास।

२. पालक देव द्वारा निर्मित सौधर्मेन्द्र का वाहन विमान।

३. ये चारों एक-एक लाख योजन के हैं।

४. प्रथम नरक का एक नरकावास।

५. सौधर्म देवलोक में एक विमान।

६. ये चारों पैंतालीस लाख योजन के हैं।

३२९ १क—ऊर्ध्वलोक में दो देह धारण करने के पश्चात् मोक्ष में जाने वाले जीव चार प्रकार के हैं। यथा—

१. पृथ्वी कायिक जीव,

२. अप्कायिक जीव,

३. वनस्पति कायिक जीव,

४. स्थूल त्रसकायिक जीव,

ख-ग—अधोलोक और तिर्यग्लोक सम्बन्धी सूत्र इसी प्रकार कहें।

३३० १क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष लज्जा से परिषह सहन करता है,

२. एक पुरुष लज्जा से मन दृढ़ रखता है,

३. एक पुरुष परिषह से चलचित्त हो जाता है,

४. एक पुरुष परिषह आने पर भी निश्चलमन रहता है।

३३१ १क—शय्या प्रतिमायें (प्रतिज्ञायें) चार हैं।[1]

---

१. क. मन में निर्धारित प्रकार की शय्या (शयनार्थ काष्ठ फलक) का ही ग्रहण करना।

ख. पहले देखी हुई शय्या लेना।

ग. शय्या दाता के घर में हो तो लेना और स्वयं गृह स्वामी

ख—वस्त्र प्रतिमायें चार हैं ।[1]

ग—पात्र प्रतिमायें चार हैं ।[2]

घ—स्थान प्रतिमायें चार हैं ।[3]

३३२ १क—जीव से व्याप्त शरीर चार हैं । यथा—

१. वैक्रियक शरीर २. आहारक शरीर,

३. तेजस शरीर और ४. कार्मण शरीर ।

ख—कामर्ण शरीर से व्याप्त शरीर चार हैं । यथा—

१. औदारिक शरीर, २. वैक्रियक शरीर,

३. आहारक शरीर और ४. तेजस शरीर ।

के देने पर लेना ।

घ. शय्या भी यथेष्ट बिछी हुई हो तो लेना ।

१. क. मन में निर्धारित प्रकार का वस्त्र लेना ।

ख. पहले देखा हुआ वस्त्र लेना ।

ग. उपयुक्त वस्त्र लेना ।

घ. फेंकने योग्य वस्त्र लेना ।

२. क. मन में निर्धारित प्रकार का पात्र लेना ।

ख. पहले देखा हुआ पात्र लेना ।

ग. उपयुक्त पात्र लेना ।

शेष पृष्ठ ७८३ पर भी देखें ।

३३३ १क—लोक में व्याप्त अस्तिकाय चार हैं। यथा—

१. धर्मास्तिकाय, २. अधर्मास्तिकाय,

३. जीवास्तिकाय और ४. पुद्गलास्तिकाय।

ख—उत्पद्यमान चार बादरकाय लोक में व्याप्त हैं।

यथा—१. पृथ्वीकाय, २. अप्काय,

३. वायुकाय और ४. वनस्पतिकाय।

३३४ १—समान प्रदेश वाले द्रव्य चार हैं। यथा—

१. धर्मास्तिकाय, २. अधर्मास्तिकाय,

घ. फेंकने योग्य पात्र लेना।

३. क. निरवद्य स्थान की याचना करना और उस स्थान में—

१. हाथ पैरों का संकोचन प्रसारण करना। २. भींत आदि का सहारा लेना। ३. चंक्रमण करना(टहलना)।

ख. निरवद्य स्थान की याचना करना और उस स्थान में—

१. हाथों पैरों का संकोचन प्रसारण करना, २. भींत आदि का आश्रय लेना, ३. किन्तु चंक्रमण नहीं करना।

ग. निरवद्य स्थान की याचनाकरना और उस स्थान में—

१. केवल हाथों पैरों का संकोचन प्रसारण करना।

घ. निरवद्य स्थान की याचना करना किन्तु उक्त तीनों कार्य न करना।

३. लोकाकाश, और ४. एक जीव ।

३३५ १—चार प्रकार के जीवों का एक शरीर आँखों से नहीं देखा जा सकता । यथा—

१. पृथ्वीकाय, २. अप्काय,

३. तेउकाय और ४. वनस्पतिकाय ।

३३६ १—चार इन्द्रियों से ज्ञान पदार्थों का सम्बन्ध होने पर ही होता है । यथा—

१. श्रोत्रेन्द्रिय २. घ्राणेन्द्रिय,

३. जिह्वेन्द्रिय, और ४. स्पर्शेन्द्रिय ।

३३७ १—जीव और पुद्गल चार कारणों से लोक के बाहर नहीं जा सकते । यथा—

१. गति का अभाव होने से;

२. सहायता का अभाव होने से,

३. रुक्षता से, ४. लोक की मर्यादा होने से ।

३३८ १क—ज्ञात (दृष्टान्त) चार प्रकार के हैं । यथा—

१. जिस दृष्टान्त से अव्यक्त अर्थ व्यक्त किया जाय ।

२. जिस दृष्टान्त से वस्तु के एकदेश का प्रतिपादन किया जाय ।

३. जिस दृष्टान्त से सदोष सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जाय ।

४. जिस दृष्टान्त से वादी द्वारा स्थापित सिद्धान्त का निराकरण किया जाय।

ख—अव्यक्त अर्थ को व्यक्त करने वाले दृष्टान्त चार प्रकार के हैं। यथा—

१. द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव विघ्न-बाधा बताने वाले दृष्टान्त।

२. द्रव्यादि से कार्य सिद्धि बताने वाले दृष्टान्त।

३. जिस दृष्टान्त से परमत को दूषित सिद्ध करके स्वमत को निर्दोष सिद्ध किया जाय।

४. जिस दृष्टान्त से तत्काल उत्पन्न वस्तु का विनाश सिद्ध किया जाय।

ग—वस्तु के एक देश का प्रतिपादन करने वाले दृष्टान्त चार प्रकार के हैं। यथा—

१. सद्गुणों की स्तुति से गुणवान के गुणों की प्रशंसा करना।

२. असत्कार्य में प्रवृत्त मुनि को दृष्टान्त द्वारा उपालम्भ देना।

३. किसी जिज्ञासु का दृष्टान्त द्वारा प्रश्न पूछना।

४. एक व्यक्ति का उदाहरण देकर दूसरे को प्रति-

बोध देना ।

घ—सदोष सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले दृष्टांत चार प्रकार के हैं । यथा—

१. जिस दृष्टांत से पाप कार्य करने का संकल्प पैदा हो ।

२. जिस दृष्टांत से "जैसे को तैसा करना" सिखाया जाय ।

३. परमत को दूषित सिद्ध करने के लिए जो दृष्टांत दिया जाय, उसी दृष्टांत से स्वमत भी दूषित सिद्ध हो जाय ।

४. जिस दृष्टांत में दुर्वचनों का या अशुद्ध वाक्यों का प्रयोग किया जाय ।

ङ—वादी के सिद्धान्त का निराकरण करने वाले दृष्टांत चार प्रकार के हैं । यथा—

१. वादी जिस दृष्टान्त से अपने पक्ष की स्थापना करे, प्रतिवादी भी उसी दृष्टान्त से अपने पक्ष की स्थापना करे ।

२. वादी दृष्टान्त से जिस वस्तु को सिद्ध करे प्रतिवादी उस दृष्टान्त से भिन्न वस्तु सिद्ध करे ।

३. वादी जैसा दृष्टान्त कहे प्रतिवादी को भी वैसा

ही दृष्टान्त देने के लिए कहे।

४. प्रश्नकर्ता जिस दृष्टान्त का प्रयोग करता है उत्तरदाता भी उसी दृष्टान्त का प्रयोग करता है।

च—हेतु चार प्रकार के हैं। यथा—

१. वादी का समय बिताने वाला हेतु।

२. वादी द्वारा स्थापित हेतु के सदृश हेतु की स्थापना करने वाला हेतु।

३. शब्द छल से दूसरे को व्यामोह (भ्रम) पैदा करने वाला हेतु।

४. धूर्त द्वारा अपहृत वस्तु को पुनः प्राप्त कर सके ऐसा हेतु।

छ—हेतु चार प्रकार के हैं। यथा—

१. जो हेतु आत्मा द्वारा जाना जाय और जो हेतु इन्द्रियों द्वारा जाना जाय।

२. जिसके देखने से व्याप्ति का बोध हो ऐसा हेतु। यथा—धुवां देखने से अग्नि और धुएँ की व्याप्ति का स्मरण होना।

३. उपमा द्वारा समानता का बोध कराने वाला हेतु।

४. आप्त-पुरुष कथित वचन।

ज—हेतु चार प्रकार के हैं। यथा—

१. धूम के अस्तित्व से अग्नि का अस्तित्व सिद्ध करने वाला हेतु।

२. अग्नि के अस्तित्व से विरोधी शीत का नास्तित्व सिद्ध करने वाला हेतु।

३. अग्नि के अभाव में शीत का सद्भाव सिद्ध करने वाला हेतु।

४. वृक्ष के अभाव में शाखा का अभाव सिद्ध करने वाला हेतु।

झ—गणित चार प्रकार का है। यथा—

१. पाहुड़ों का गणित (पाटि गणित)।

२. व्यवहार गणित-तोल-माप आदि।

३. लम्बाई नापने का गणित।

४. राशि मापने का गणित।

ञ—अधोलोक में अंधकार करने वाली चार वस्तुयें हैं।
यथा—१. नरकावास, २. नैरयिक,
३. पाप कर्म और ४. अशुभ पुद्गल।

ट—तिर्यक्‌लोक (मनुष्यलोक) में उद्योत करने वाले चार हैं। यथा—

१. चन्द्र, २. सूर्य, ४. मणि और ४. ज्योति ।[1]

ठ—ऊर्ध्वलोक में उद्योत करने वाले चार हैं । यथा—

१. देव, २. देवियाँ, ३. विमान और ४. आभरण ।

॥ चतुर्थ स्थानक तृतीय उद्देशक समाप्त ॥

● ● ●

॥ चतुर्थ स्थानक चतुर्थ उद्देशक प्रारम्भ ॥

३३९ १—विदेश जाने वाले पुरुष चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक पुरुष जीवन निर्वाह के लिए विदेश जाता है।

२. एक पुरुष संचित सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए विदेश जाता है ।[2]

३. एक पुरुष सुख-सुविधा के लिए विदेश जाता है ।

४. एक पुरुष प्राप्त सुख-सुविधा की सुरक्षा के लिए विदेश जाता है ।[3]

३४० १क—नैरयिकों का आहार चार प्रकार का है । यथा—

१. अंगारों जैसा अल्पदाहक ।

२. प्रज्वलित अग्नि कणों जैसा अतिदाहक ।

---

१. अग्नि ।

२. अराजकता फैलने पर या सैनिक आक्रमण के भय से ।

३. कुशासन से या बांधवों के दुर्व्यवहार से ।

३. शीतकालीन वायु के समान शीतल।

४. वर्फ के समान अतिशीतल।

ख—तिर्यंचों का आहार चार प्रकार का है। यथा—

१. कंक पक्षी के आहार जैसा अर्थात् दुष्पच आहार भी तिर्यंचों को सुपच होता है।

२. बिल में जो भी डालें सब तुरन्त अन्दर चला जाता है उसी प्रकार तिर्यंच स्वाद लिए बिना सीधा उदरस्थ कर लेते हैं।

३. चाण्डाल के मांस समान अभक्ष्य भी तिर्यंच खा लेते हैं।

४. पुत्र माँस के समान तीव्र क्षुधा के कारण अनिच्छा-पूर्वक खाते हैं।

ग—मनुष्यों का आहार चार प्रकार का है। यथा—

१-४ अशन-पान-खादिम-स्वादिम।

घ—देवताओं का आहार चार प्रकार का है। यथा—

१. सुवर्ण, २. सुगन्धित,

३. स्वादिष्ट और ४. सुखद स्पर्श वाला।

३४१ १—आशि-विष (मुँह में विष) चार प्रकार का है।

यथा—१. वृश्चिक जाति का आशिविष,

२. मंडूक जाति का आशिविष,

३. सर्प जाति का आशिविष,

४. मनुष्य जाति का आशिविष ।

प्रश्न—हे भगवन् ! विच्छू जाति का आशिविष कितना प्रभावशाली है ?

उत्तर—आधे भरत क्षेत्र जितने बड़े शरीर को एक विच्छू का विष प्रभावित कर देता है । यह केवल विष का प्रभावमात्र बताया है । अब तक न इतने बड़े शरीर को प्रभावित किया है, न वर्तमान में भी प्रभावित करता है और न भविष्य में भी प्रभावित कर सकेगा ।

प्रश्न—हे भगवन् ! मंडूक जाति का आशिविष कितना प्रभावशाली है ?

उत्तर—भरत क्षेत्र जितने बड़े शरीर को एक मंडूक का विष प्रभावित कर देता है । शेष पूर्ववत् ।

प्रश्न ३—हे भगवन् ! सर्प जाति का आशिविष कितना प्रभावशाली ?

उत्तर—जम्बू द्वीप जितने बड़े शरीर को एक सर्प का विष प्रभावित कर देता है । शेष पूर्ववत् ।

प्रश्न ४—हे भगवन् ! मनुष्य जाति का आशिविष कितना प्रभावशाली है ?

उत्तर—समय क्षेत्र जितने बड़े शरीर को एक मनुष्य का विष प्रभावित कर देता है। शेष पूर्ववत्।

३४२ १—व्याधियाँ चार प्रकार की हैं। यथा—

१. वातजन्य, २. पित्तजन्य,
३. कफजन्य और ४. सन्निपात जन्य।[1]

□ □ □ □

३४३ १—चिकित्सा चार प्रकार की है। यथा—

१. वैद्य, २. औषध, ३. रोगी और ४. परिचारक।[2]

३४४ १क—चिकित्सक चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक चिकित्सक (वैद्य) स्वयं की चिकित्सा करता है किन्तु दूसरे की चिकित्सा नहीं करता है।

२. एक चिकित्सक दूसरे की चिकित्सा करता है किन्तु स्वयं की चिकित्सा नहीं करता है।

३. एक चिकित्सक स्वयं की भी चिकित्सा करता है और अन्य की भी चिकित्सा करता है।

४. एक चिकित्सक न स्वयं की चिकित्सा करता है और न अन्य की चिकित्सा करता है।

---

१. वात, पित्त और कफ के संयोग को सन्निपात कहते हैं।
२. चिकित्सा के ये चार अंग हैं।

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष व्रण (शल्य चिकित्सा) करता है किन्तु व्रण को स्पर्श नहीं करता।

२. एक पुरुष व्रण का स्पर्श करता है किन्तु व्रण नहीं करता।

३. एक पुरुष व्रण भी करता है और व्रण का स्पर्श भी करता है।

४. एक पुरुष व्रण भी नहीं करता और व्रण का स्पर्श भी नहीं करता।

ग—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष व्रण करता है किन्तु व्रण की रक्षा नहीं करता।[1]

२. एक पुरुष व्रण की रक्षा करता है किन्तु व्रण नहीं करता है।

३. एक पुरुष व्रण भी करता है और व्रण की रक्षा भी करता है।

४. एक पुरुष व्रण भी नहीं करता और व्रण की रक्षा भी नहीं करता।

---

१. पट्टी आदि बाँधकर व्रण की रक्षा नहीं करता।

घ—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष व्रण करता है किन्तु व्रण को औषधि आदि से मिलाता नहीं है।

२. एक पुरुष व्रण को औषधि से ठीक करता है किन्तु व्रण नहीं करता है।

३. एक पुरुष व्रण भी करता है और व्रण की रक्षा भी करता है।

४. एक पुरुष व्रण भी नहीं करता है और व्रण को ठीक भी नहीं करता है।

ङ—व्रण चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक व्रण के अन्दर शल्य है किन्तु बाहर शल्य नहीं है।

२. एक व्रण के बाहर शल्य है किन्तु अन्दर शल्य नही है।

३. एक व्रण के अन्दर भी शल्य है और बाहर भी शल्य है।

४. एक व्रण के अन्दर भी शल्य नहीं है और बाहर भी शल्य नहीं है।

च—इसी प्रकार पुरुष भी चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पुरुष मन में शल्य रखता है किन्तु व्यवहार

में शल्य नहीं रखता है ।[1]

२. एक पुरुष व्यवहार में शल्य रखता है किन्तु मन में शल्य नहीं रखता है ।

३. एक पुरुष मन में भी शल्य रखता है और व्यवहार में भी शल्य रखता है ।

४. एक पुरुष मन में भी शल्य नहीं रखता है और व्यवहार में भी शल्य नहीं रखता है ।

छ—व्रण चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक व्रण अन्दर से सड़ा हुआ है किन्तु बाहर से सड़ा हुआ नहीं है ।

२. एक व्रण बाहर से सड़ा हुआ है किन्तु अन्दर से सड़ा हुआ नहीं है ।

३. एक व्रण अन्दर से भी सड़ा हुआ है और बाहर से भी सड़ा हुआ है ।

४. एक व्रण अन्दर से भी सड़ा हुआ नहीं है और बाहर से भी सड़ा हुआ नहीं है ।

ज—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक पुरुष का हृदय श्रेष्ठ है किन्तु उसका व्यवहार

---

१. छल कपट ।

श्रेष्ठ नहीं है।[1]

२. एक पुरुष का व्यवहार श्रेष्ठ है किन्तु दुष्ट हृदय है।[2]

३. एक पुरुष दुष्ट हृदय भी है और उसका व्यवहार भी श्रेष्ठ नहीं है।

४. एक पुरुष दुष्ट हृदय भी नहीं है और व्यवहार भी उसका श्रेष्ठ है।

झ—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष सद्‌विचार वाला है और सत्‌कार्य करने वाला भी है।

२. एक पुरुष सद्‌विचार वाला है किन्तु सत्कार्य करने वाला नहीं है।

३. एक पुरुष सत्कार्य करने वाला तो है किन्तु सद्-विचार वाला नहीं है।

४. एक पुरुष सद्‌विचार वाला भी नहीं है और सत्कार्य करने वाला भी नहीं है।

ञ—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष भाव से श्रेयस्कर है और द्रव्य से श्रेय-

---

१. पराधीन सम्यक्त्वी पुरुष।

२. उदाई नृप को मारने वाला कपटी श्रमण वेषी।

स्कर सदृश है।[1]

२. एक पुरुष भाव से श्रेयस्कर है किन्तु द्रव्य से पापी सदृश है।[2]

३. एक पुरुष भाव से पापी है किन्तु द्रव्य से श्रेयस्कर सदृश्य है।

४. एक पुरुष भाव से भी पापी है और द्रव्य से भी पापी सदृश है।

ट—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष श्रेष्ठ है और अपने को श्रेष्ठ मानता है।

२. एक पुरुष श्रेष्ठ है किन्तु अपने को पापी मानता है।

३. एक पुरुष पापी है किन्तु अपने को श्रेष्ठ मानता है।

४. एक पुरुष पापी है और अपने को पापी मानता है।

ठ—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष श्रेष्ठ है और लोगों में श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।[3]

२. एक पुरुष श्रेष्ठ है किन्तु लोगों में पापी सदृश

---

१. दूसरे को सत्परामर्श देने के कारण श्रेयस्कर सदृश है।
२. दूसरे को असत्परामर्श देने के कारण पापी सदृश है।
३. कुछ सत्कर्म करता है अतः श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।

माना जाता है।[1]

३. एक पुरुष पापी है किन्तु लोगों में श्रेष्ठ सदृश माना जाता है।[2]

४. एक पुरुष पापी है और लोगों में पापी सदृश माना जाता है।[3]

ङ—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष जिन प्रवचनों का प्ररूपक है किन्तु प्रभावक नहीं है।

२. एक पुरुष शासन का प्रभावक है किन्तु जिन प्रवचनों का प्ररूपक नहीं है।[4]

३. एक पुरुष शासन का प्रभावक भी है और जिन वचनों का प्ररूपक भी है।

४. एक पुरुष शासन का प्रभावक भी नहीं है और जिन प्रवचनों का प्ररूपक भी नहीं है।

ढ—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

---

१. कुछ असत्कार्य करता है अतः पापी सदृश माना जाता है।
२. लोगों को दिखाने के लिए कुछ सुकृत करता है।
३. क्योंकि सदाचारी नहीं है।

१. एक पुरुष सूत्रार्थ का प्ररूपक है किन्तु शुद्ध आहारादि की एषणा में तत्पर नहीं है।

२. एक पुरुष शुद्ध आहारादि की एषणा में तत्पर नहीं है किन्तु सूत्रार्थ का प्ररूपक है।

३. एक पुरुष सूत्रार्थ का प्ररूपक भी है और शुद्ध आहारादि की एषणा में भी तत्पर है।

४. एक पुरुष सूत्रार्थ का प्ररूपक भी नहीं है और शुद्ध आहारादि की एषणा में भी तत्पर नहीं है।

ण—वृक्ष की विकुर्वणा चार प्रकार की है। यथा—

१. नई कोंपलें आना, २. पत्ते आना,
३. पुष्प आना, ४. फल आना।

४५. १क—वाद करने वालों के समोसरण[1] चार हैं। यथा—

१. क्रियावादी[2], २. अक्रियावादी,[3]
३. अज्ञानवादी[4] और ४. विनयवादी[5]।

---

१. समवसरण-अनेक मतों का एकत्र मिलना।
२. क्रियावादियों के एक सौ अस्सी मत हैं।
३. अक्रियावादियों के अस्सी मत हैं।
४. अज्ञानवादियों के सड़सठ मत हैं।
५. विनयवादियों के बत्तीस मत हैं। सब मिलकर ३६३ मत हैं।

ख—विकलेन्द्रियों को छोड़कर शेप सभी दण्डकों मे
वादियों के चार समवरण हैं।

३४६ १क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मेघ गाजता है किन्तु वर्षता नहीं है।

२. एक मेघ वर्षता हैं किन्तु गाजता नहीं है।

३. एक मेघ गाजता भी है और वर्षता भी है।

४. एक मेघ गाजता भी नहीं है और वर्षता भी
नहीं है।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुप बोलता बहुत है किन्तु देता कुछ भी
नहीं है।

२. एक पुरुष देता है किन्तु बोलता कुछ भी नहीं है

३. एक पुरुप बोलता भी है और देता भी है।

४. एक पुरुप बोलता भी नहीं है और देता भी
नहीं है।

२क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मेघ गाजता है किन्तु उसमें बिजलियां नहीं
चमकती है।

२. एक मेघ में बिजलियां चमकती है किन्तु गाजता
नहीं है।

३. एक मेघ गाजता है और उसमें विजलियाँ भी चमकती हैं।

४. एक मेघ गाजता भी नहीं है और उसमें विजलियां भी चमकती नहीं है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष प्रतिज्ञा करता है किन्तु अपनी बड़ाई नहीं हाँकता।

२, एक पुरुष अपनी बड़ाई हांकता है किन्तु प्रतिज्ञा नहीं करता है।

३. एक पुरुष प्रतिज्ञा भी करता है और अपनी बड़ाई भी हांकता है।

४. एक पुरुष प्रतिज्ञा भी नहीं करता है और अपनी बड़ाई भी नहीं हांकता है।

३क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मेघ वर्षता है किन्तु उसमें बिजलियां नही चमकती है।

२. एक मेघ में विजलियाँ चमकती हैं किन्तु वर्षता नहीं है।

३. एक मेघ वर्षता भी है और उसमें बिजलियां भी

चमकती हैं।

४. एक मेघ वर्षता भी नहीं है और उसमें बिजलियाँ भी चमकती नहीं हैं।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष दानादि सत्कार्य करता है किन्तु अपनी बड़ाई नहीं करता है।

२. एक पुरुष अपनी बड़ाई करता है किन्तु दानादि सत्कार्य नहीं करता हैं।

३. एक पुरुष दानादि सत्कार्य भी करता है और अपनी बड़ाई भी करता है।

४. एक पुरुष दानादि सत्कार्य भी नहीं करता और अपनी बड़ाई भी नहीं करता है।

४क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मेघ समय पर बरसता है किन्तु असमय नहीं बरसता।

२. एक मेघ असमय बरसता है किन्तु समय पर नहीं बरसता।

३. एक मेघ समय पर भी बरसता है और असमय भी बरसता है।

४. एक मेघ समय पर भी नहीं बरसता और असमय भी नहीं बरसता ।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष समय पर दानादि सत्कार्य करता है, किन्तु असमय नहीं करता ।

२. एक पुरुष असमय दानादि सत्कार्य करता है किन्तु समय पर नही करता ।

३. एक पुरुष समय पर भी दानादि सत्कार्य करता है और असमय भी ।

४. एक पुरुष समय पर भी दानादि सत्कार्य नहीं करता और असमय भी नहीं करता ।

५क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मेघ क्षेत्र में बरसता है किन्तु अक्षेत्र में नहीं बरसता ।

२. एक मेघ अक्षेत्र में बरसता है किन्तु क्षेत्र में नहीं बरसता ।

३. एक मेघ क्षेत्र में भी बरसता है और अक्षेत्र में भी बरसता है ।

४. एक मेघ क्षेत्र में भी नहीं बरसता और अक्षेत्र में

भी नहीं बरसता।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष पात्र को दान देता है किन्तु अपात्र को नहीं।

२. एक पुरुष अपात्र को दान देता है किन्तु पात्र को नहीं।

३. एक पुरुष पात्र को भी दान देता है और अपात्र को भी।

४. एक पुरुष पात्र को भी दान नहीं देता और अपात्र को भी नहीं देता।

६क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मेघ धान्य के अंकुर उत्पन्न करता है किन्तु धान्य को पूर्ण नहीं पकाता।

२. एक मेघ धान्य को पूर्ण पकाता है किन्तु धान्य के अंकुर उत्पन्न नहीं करता।

३. एक मेघ धान्य के अंकुर भी उत्पन्न करता है और धान्य को पूर्ण भी पकाता है।

४. एक मेघ धान्य के अंकुर भी उत्पन्न नहीं करता है और धान्य को पूर्ण भी नहीं पकाता है।

ख—इसी प्रकार माता-पिता भी चार प्रकार के हैं।

यथा—१. एक माता-पिता पुत्र को ज़न्म देते हैं किन्तु उसका पालन नहीं करते।

२. एक माता-पिता पुत्र का पालन करते हैं किन्तु पुत्र को जन्म नहीं देते हैं।

३. एक माता-पिता पुत्र को जन्म भी देते हैं और उसका पालन भी करते हैं।

४. एक माता-पिता पुत्र को जन्म भी नहीं देते हैं और उसका पालन भी नहीं करते हैं।

७क—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मेघ एक देश में बरसता है किन्तु सर्वत्र नहीं बरसता है।

२. एक मेघ सर्वत्र बरसता है किन्तु एक देश में नहीं बरसता।

३. एक मेघ एक देश में भी बरसता है और सर्वत्र भी बरसता है।

४. एक मेघ न एक देश में बरसता है और न सर्वत्र बरसता है।

ख—इसी प्रकार राजा भी चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक राजा एक देश का अधिपति है किन्तु सब

देशों का नहीं।

२. एक राजा सब देशों का स्वामी है किन्तु एक देश का नहीं।

३. एक राजा एक देश का अधिपति भी है और सब देशों का अधिपति भी है।

४. एक राजा न एक देश का अधिपति है और न सब देशों का अधिपति है।[1]

३४७ १—मेघ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. पुष्कलावर्त, २. प्रद्युम्न,
३. जीमूत और ४. जिम्ह

१. पुष्कलावर्त महामेघ की एक वर्षा से पृथ्वी दस हजार वर्ष तक गीली रहती है।

२. प्रद्युम्न महामेघ की एक वर्षा से पृथ्वी एक हजार वर्ष तक गीली रहती है।

३. जीमूत महामेघ की एक वर्षा से पृथ्वी दस वर्ष तक गीली रहती है।

४. जिम्ह महामेघ की अनेक वर्षाएँ भी पृथ्वी को एक वर्ष तक गीली नहीं रख पाती।

---

१. जिस राजा का राज्य छीन लिया गया है ऐसा राजा।

४८ १क—करंडक (करंडिया) चार प्रकार के हैं। यथा—

१. श्वपाक (भंगियों) का करंडक[1]।

२. वेश्याओं का करंडक[2]।

३. समृद्ध गृहस्थ का करंडक।[3]

४. राजा का करंडक।[4]

ख—इसी प्रकार आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. श्वपाककरंडक समान आचार्य केवल लोक रंजक ग्रन्थों का ज्ञाता व्याख्याता होता है किन्तु श्रमणाचार का पालक नहीं होता।

२. वेश्याकरंडक समान आचार्य जिनागमों का सामान्य ज्ञाता तो होता है किन्तु लोकरंजक ग्रन्थों का व्याख्यांन करके अधिक से अधिक जनता को अपनी ओर आकर्षित करता है।

३. गाथापति के करंडक समान आचार्य स्वसिद्धान्त

---

१. चाण्डाल का करंडिया-मल या कचरे से भरा रहता है।
२. वेश्या का करंडिया-समान्य स्वर्णाभूषणों से भरा रहता है।
३. गृहस्वामी का करंडिया-मणिरत्नजटित स्वर्णाभूषणों से भरा रहता है।
४. राजा का करंडिया-अमूल्य रत्नों से भरा रहता है।

और पर-सिद्धान्त का ज्ञाता होता है और श्रमणाचार का पालक भी होता है।

४. राजा के करंडिये समान आचार्य जिनागमों के मर्मज्ञ एवं आचार्य के समस्त गुण युक्त होते हैं।

३४९ १क—वृक्ष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक वृक्ष शाल (महान्) है और शाल के (छायादि) गुण युक्त है।

२. एक वृक्ष शाल (महान्) है किन्तु गुणों मे एरण्ड समान है अर्थात् छायादि रहित।

३. एक वृक्ष एरण्ड समान (अत्यल्प विस्तार वाला) है किन्तु गुणों से शाल (महावृक्ष) के समान है।

४. एक वृक्ष एरण्ड है और गुणों से भी एरण्ड जैसा ही है।

ख—इसी प्रकार आचार्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक आचार्य शाल समान महान् (उत्तम जाति कुल-सद्गुरु वाले) हैं और ज्ञानक्रियादि महान् गुणयुक्त है।

२. एक आचार्य महान् है किन्तु ज्ञान-क्रियादि गुणहीन है।

३. एक आचार्य एरण्ड समान (जाति-कुल-गुरु आदि से सामान्य) है किन्तु ज्ञानक्रियादि महान् गुणयुक्त है।

४. एक आचार्य एरण्ड समान है और ज्ञान-क्रियादि गुणहीन है।

२क—वृक्ष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक वृक्ष शाल (महान्) है और शालवृक्ष समान महान् वृक्षों से परिवृत है।

२. एक वृक्ष शाल समान महान् है किन्तु एरण्ड समान तुच्छ वृक्षों से परिवृत है।

३. एक वृक्ष एरण्ड समान तुच्छ है किन्तु शाल समान महान् वृक्षों से परिवृत है।

४. एक वृक्ष एरण्ड समान तुच्छ है और एरण्ड समान तुच्छ वृक्षों से परिवृत है।

ख—इसी प्रकार आचार्य भी चार प्रकार हैं। यथा—

१. एक आचार्य शाल वृक्ष समान (उत्तम जात्यादि) महान् गुणयुक्त है और शाल परिवार समान श्रेष्ठ शिष्य परिवार युक्त है।

२. एक आचार्य शाल वृक्ष समान महान् उत्तम गुण युक्त है किन्तु एरण्ड परिवार समान कनिष्ठ शिष्य परिवार युक्त है।

३. एक आचार्य एरण्ड परिवार समान कनिष्ठ शिष्य परिवार युक्त है किन्तु स्वयं शाल वृक्ष समान महान् उत्तम गुण युक्त है।

४. एक आचार्य एरण्ड समान कनिष्ठ (सामान्य जात्यादियुक्त) है और एरण्ड परिवार समान कनिष्ठ शिष्य परिवार युक्त है।

गाथार्थ—१. महावृक्षों के मध्य में जिस प्रकार वृक्ष राज शाल सुशोभित होता है उसी प्रकार श्रेष्ठ शिष्यों के मध्य में उत्तम आचार्य सुशोभित होते हैं।

२. एरण्ड वृक्षों के मध्य में जिस प्रकार वृक्षराज शाल दिखाई देता है। उसी प्रकार कनिष्ठ शिष्यों के मध्य में उत्तम आचार्य मालुम पड़ते हैं।

३. महावृक्षों के मध्य में जिस प्रकार एरण्ड दिखाई देता है उसी प्रकार श्रेष्ठ शिष्यों के मध्य में कनिष्ठ आचार्य दिखाई देते हैं।

४. एरण्ड वृक्षों के मध्य में जिस प्रकार एक एरण्ड प्रतीत होता है उसी प्रकार कनिष्ठ शिष्यों के मध्य में कनिष्ठ आचार्य प्रतीत होते हैं।

३क—मत्स्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक मत्स्य नदी के प्रवाह के अनुसार चलता है।

२. एक मत्स्य नदी के प्रवाह के सन्मुख चलता है।

३. एक मत्स्य नदी के प्रवाह के किनारे चलता है।

४. एक मत्स्य नदी के प्रवाह के मध्य में चलता है।

ख—इसी प्रकार भिक्षु (श्रमण) चार प्रकार के हैं।

यथा—१. एक भिक्षु उपाश्रय के समीप गृह से भिक्षा लेना प्रारम्भ करता है।

२. एक भिक्षु किसी अन्य गृह से भिक्षा लेता हुआ उपाश्रय तक पहुँचता है।

३. एक भिक्षु घरों की अन्तिम पंक्तियों से भिक्षा लेता हुआ उपाश्रय तक पहुँचता है।

४. एक भिक्षु गांव के मध्य भाग से भिक्षा लेता है।

४क—गोले चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१. मेण का गोला, २. लाख का गोला,

३. काष्ठ का गोला ४. मिट्टी का गोला।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष मेण के गोले के समान कोमल हृदय होता है।

२. एक पुरुष लाख के गोले के समान कुछ कठोर हृदय होता है।

३. एक पुरुष काष्ठ के गोले के समान कुछ अधिक कठोर हृदय होता है।

४. एक पुरुष मिट्टी के गोले के समान कुछ और अधिक कठोर हृदय होता है।

५क—गोले चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१. लोहे का गोला, २. जस्ते का गोला,

३. तांबे का गोला और ४. शीशे का गोला।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. लोहे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म भारी होते हैं।

२. जस्ते के गोले के समान एक पुरुष के कर्म कुछ अधिक भारी होते हैं।

३. तांबे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म और अधिक भारी होते हैं।

४. सीसे के गोले के समान एक पुरुष के कर्म अत्यधिक भारी होते हैं।

६क—गोले चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१. चांदी का गोला, २. सोने का गोला,

३. रत्नों का गोला और ४. हीरों का गोला।

ख—उसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. चांदी के गोले के समान एक पुरुष ज्ञानादि श्रेष्ठ गुण युक्त होता है।

२. सोने के गोले के समान एक पुरुष कुछ अधिक श्रेष्ठ ज्ञानादि गुण युक्त होता है।

३. रत्नों के गोले के समान एक पुरुष और अधिक श्रेष्ठ ज्ञानादि गुण युक्त होता है।

४. हीरों के गोले के समान एक पुरुष अत्यधिक श्रेष्ठ युक्त होता है।

७क—पत्ते चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१. तलवार की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

२. करवत की धार के समान तीक्ष्ण दांत वाले पत्ते।

३. उस्तरे की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

४. कदंबचीरिका (एक प्रकार का शस्त्र) की धार के समान तीक्ष्ण धार वाले पत्ते।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष तलवार की धार के समान तीक्ष्ण (तीव्र) वैराग्यमय विचार धारा से मोहपाश का

शीघ्र छेदन करता है।

२. एक पुरुष करवत की धार के समान वैराग्यमय विचारों से मोहपाश को शनैः शनैः काटता है।

३. एक पुरुष उस्तरे की धार के समान वैराग्यमय विचारधारा से मोहपाश का विलम्ब से छेदन करता है।

४. एक पुरुष कदंबचीरिका की धार के समान वैराग्यमय विचारों से मोहपाश का अतिविलम्ब से विच्छेद करता है।

क—कट[1] (चटाई) चार प्रकार के हैं। यथा—

१. घास की चटाई

२. बाँस की सलियों की चटाई

३. चर्म की चटाई और

४. कंबल की चटाई

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. घास की चटाई के समान एक पुरुष अल्प राग वाला होता है।

---

१ कट-बिछोने का एक आसन। चटाई की बुनाई ढीली और गाढ़ी होती है उसी प्रकार रागभाव भी अल्पाधिक होता है।

२. वांस की चटाई के समान एक पुरुष विशेष राग भाव वाला होता है।

३. चमड़े की चटाई के समान एक पुरुष विशेषतर राग भाव वाला होता है।

४. कंबल की चटाई के समान एक पुरुष विशेषतम राग भाव वाला होता है।

३५०—१. चतुष्पद चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक खुर वाले[1] २. दो खुर वाले[2]

३. कठोर चर्म मय गोल पैर वाले[3]

४. तीक्ष्ण नखयुक्त पैर वाले।[4]

२—पक्षी चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१. चमड़े की पांखों वाले

२. रुंए वाली पांखों वाले।

३. सिमटी हुई पांखों वाले[5]

४. फैली हुई पांखों वाले।

---

१ गधे, घोड़े आदि। २. गाय, भैंस आदि।

३ ऊँट, हाथी आदि। ४. कुत्ता, बिल्ली आदि।

५ समुद्गक पक्षी और वितत पक्षी अढ़ाई द्वीप के बाहर ही होते हैं।

३—क्षुद्र प्राणी चार प्रकार के होते हैं। यथा—

१. दो इन्द्रियों वाले २. तीन इन्द्रियों वाले

३. चार इन्द्रियों वाले और

४. संमूर्छिम[1] पंचेन्द्रिय तिर्यंच।

३५१ १क—पक्षी चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पक्षी घोंसले से वाहर निकलता है किन्तु वाहर फिरने व उड़ने में समर्थ नहीं है।

२. एक पक्षी फिरने में समर्थ है किन्तु घोंसले से वाहर नहीं निकलता है।

३. एक पक्षी घोंसले से वाहर भी निकलता है और फिरने में भी समर्थ है।

४. एक पक्षी न घोंसले से वाहर निकलता है और न फिरने में समर्थ होता है।

ख—इसी प्रकार भिक्षुक (श्रमण) भी चार प्रकार के है। यथा—

१. एक श्रमण भिक्षार्थ उपाश्रय से बाहर जाता है किन्तु फिरता नहीं है।

२. एक श्रमण फिरने में समर्थ है किन्तु भिक्षा के

---

१ बिना गर्भ के पैदा होने वाले।

लिए नहीं जाता है।

३. एक श्रमण भिक्षार्थ जाता है और फिरता भी है।

४. एक श्रमण भिक्षार्थ जाता भी नहीं है और फिरता भी नहीं है।

३५२. १क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष पहले (पूर्वावस्था में) भी कृश है और पीछे (वृद्धावस्था में) भी कृश रहता है।

२. एक पुरुष पहले कृश है किन्तु पीछे स्थूल हो जाता है।

३. एक पुरुष पहले स्थूल है किन्तु पीछे कृश हो जाता है।

४. एक पुरुष पहले भी स्थूल होता है और पीछे भी स्थूल ही रहता है

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा

१. एक पुरुष का शरीर कृश है और उसके (क्रोधादि) कषाय भी कृश (अल्प) है।

२. एक पुरुष का शरीर कृश है किन्तु उसके कषाय अकृश (अधिक) है।

३. एक पुरुष के कषाय अल्प है किन्तु उसका शरीर स्थूल है।

४. एक पुरुष के कषाय अल्प है और शरीर भी कृश है।

२क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष बुध (सत्कर्म करने वाला) है और बुध विवेकी है।

२. एक पुरुष बुध है किन्तु अबुध (विवेक रहित) है।

३. एक पुरुष अबुध है किन्तु बुध (सत्कर्म करने वाला) है।

४. एक पुरुष अबुध है (विवेक रहित है) और अबुध है (सत्कर्म करने वाला भी नहीं है)

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष बुध (शास्त्रज्ञ) है और बुध हृदय है (कार्यकुशल है)

२. एक पुरुष बुध (शास्त्रज्ञ) है किन्तु अबुध हृदय है (कार्यकुशल नहीं है)

३. एक पुरुष अबुध हृदय है (कार्यकुशल नहीं है) किन्तु बुध है (शास्त्रज्ञ है)

४. एक पुरुष अबुध है (शास्त्रज्ञ नहीं है) और अबुध है (कार्यकुशल भी नहीं है)

३—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष अपने पर अनुकम्पा करने वाला है किन्तु दूसरे पर अनुकम्पा करने वाला नहीं है।[१]

२. एक पुरुष अपने पर अनुकम्पा नहीं करता है किन्तु दूसरे पर अनुकम्पा करता है।[२]

३. एक पुरुष अपने पर भी अनुकम्पा करता है और दूसरे पर भी अनुकम्पा करता है।[३]

४. एक पुरुष अपने पर भी अनुकम्पा नहीं करता है और दूसरे पर भी अनुकम्पा नहीं करता है।[४]

३५३ १क—संभोग (मैथुन) चार प्रकार के हैं। यथा—

१. देवताओं का[५] २. असुरों का

३. राक्षसों का और ४. मनुष्यों का।

---

१ प्रत्येक बुध प्राणीमात्र पर अनुकम्पा करने वाले हैं किन्तु दूसरे मुनियों की सेवा नहीं करते हैं और उपदेश भी नहीं देते हैं इस अपेक्षा से यह कथन है। २. तीर्थंकर

३ स्थविरकल्पी ४. कालशौकरिक आदि।

५ ज्योतिषी देवों का और वैमानिक देवों का।

ख—संभोग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक देवता देवी के साथ संभोग करता है।

२. एक देवता असुरी के साथ संभोग करता है।

३. एक असुर देवी के साथ संभोग करता है।

४. एक असुर असुरी के साथ संभोग करता है।

ग—संभोग चार प्रकार का है। यथा

१. एक देव देवी के साथ संभोग करता है।

२. एक देव राक्षसी के साथ संभोग करता है।

३. एक राक्षस देवी के साथ संभोग करता है।

४. एक राक्षस राक्षसी के साथ संभोग करता है।

घ—संभोग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक देव देवी के साथ संभोग करता है।

२. एक देव मानुषी के साथ संभोग करता है।

३. एक मनुष्य देवी के साथ संभोग करता है।

३. एक मनुष्य मानुषी के साथ संभोग करता हैं।

ङ—संभोग चार प्रकार का है। यथा—

१. एक असुर असुरी के साथ संभोग करता है।

२. एक असुर राक्षसी के साथ संभोग करता है।

३. एक राक्षस असुरी के साथ संभोग करता है।

४. एक राक्षस राक्षसी के साथ संभोग करता है ।

च—संभोग चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक असुर असुरी के साथ संभोग करता है ।

२. एक असुर मानुषी के साथ सभोग करता है ।

३. एक मनुष्य असुरी के साथ संभोग करता है ।

४. एक मनुष्य मनुष्यणी के साथ संभोग करता है ।

छ—संभोग चार प्रकार के हैं । यथा—

१. एक राक्षस राक्षसी के साथ संभोग करता है ।

२. एक राक्षस मनुष्यणी के साथ संभोग करता है ।

३. एक मनुष्य राक्षसी के साथ संभोग करता है ।

४. एक मनुष्य मनुष्यणी के सथभोसंग करता है ।

३५४ १क—अपध्वंश (चारित्र के फल का नाश) चार प्रकार का है । यथा

१. आसुरी भावनाजन्य-आसुर भाव,

२. अभियोग भावनाजन्य-अभियोग भाव,

३. संमोह भावनाजन्य-संमोह भाव,

४. किल्विष भावना जन्य–किल्विष भाव

ख—असुरायु का बन्ध चार कारणों से होता है । यथा—

१. क्रोधी स्वभाव से २. अतिकलह करने से ।

३. आहार में आसक्ति रखते हुए तप करने से
४. निमित्त ज्ञान द्वारा आजीविकोपार्जन करने से

ग—अभियोगायु का बंध चार कारणों से होता है। यथा-

१. अपने तप जप की महिमा अपने-मुंह करने से।
२. दूसरो की निंदा करने से।
३. ज्वरादि के उपशमन हेतु अभिमन्त्रित राख देने से।
४. अनिष्ट की शान्ति के लिये मन्त्रोपचार करते रहने से।

घ—संमोहायु[1] बाँधने के चार कारण हैं। यथा—

१. उन्मार्ग का उपदेश देने से,
२. सन्मार्ग में अन्तराय देने से।
३. काम-भोगों की तीव्र अभिलाषा से।
४. अतिलोभ करके नियाणा करने से।

ङ—देव किल्विष आयु बाँधने के चार कारण हैं। यथा-

१. अरिहंतों की निंदा करने से।
२. अरिहंत कथित धर्म की निंदा करने से,
३. आचार्य-उपाध्याय की निंदा करने से।

---

१ मूढ़ात्मा देव का आयु।

४. चतुर्विध संघ की निन्दा करने से।

३५५ १क—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१. इह लोक के सुख के लिये दीक्षा लेना।

२. परलोक के सुख के लिये दीक्षा लेना।

३. इहलोक और परलोक के लिये दीक्षा लेना।

४. किसी प्रकार की कामना न रखते हुए दीक्षा लेना।

ख—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१. शिष्यादि की कामना से दीक्षा लेना।

२. पूर्व दीक्षित स्वजनों के मोह से दीक्षा लेना।

३. उक्त दोनों कारणों से दीक्षा लेना।

४. निष्काम भाव से दीक्षा लेना।

ग—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१. सद्गुरुओं की सेवा के लिए दीक्षा लेना।

२. किसी के कहने से दीक्षा लेना।

३. "तू दीक्षा लेगा तो मैं भी लूंगा" इस प्रकार वचनबद्ध होकर दीक्षा लेना।

४. किसी वियोग से व्यथित होकर दीक्षा लेना।

घ—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१. किसी को उत्पीड़ित करके दीक्षा दी जाय,

२. किसी को अन्यत्र ले जाकर दीक्षा दी जाय।

३. किसी को ऋण मुक्त करके दीक्षा दी जाय,

४. किसी को भोजन आदि का लालच दिखाकर दीक्षा दी जाय।

ङ—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१. नटखादिता—नट की तरह वैराग्य रहित धर्म कथा करके आहारादि प्राप्त करना।

२. सुभटखादिता—सुभट की तरह वल दिखाकर आहारादि प्राप्त करना।

३. सिंहखादिता—सिंह की तरह दूसरे की अवज्ञा करके आहारादि प्राप्त करना।

४. शृगालखादिता—शृगाल की तरह दीनता प्रदर्शित कर आहारादि प्राप्त करना।

२क—कृषि चार प्रकार की है। यथा—

१. एक कृषि में धान्य एक वार वोया जाता है।

२. एक कृषि में धान्य आदि दो तीन वार बोया जाता है।[1]

---

१ एक बार पोध लगाकर रोपना, या एक बार वोये हुए को उखाड़ कर रोपना, इसे "चोवना" कहते हैं।

३. एक कृषि में एक बार निनाण (घास आदि उखाड़ फेंकना) की जाती है।

४. एक कृषि में बार-बार निनाण की जाती है।

ख—इसी प्रकार प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१. एक प्रव्रज्या में एक बार सामायिक चारित्र धारण किया जाता है।

२. एक प्रव्रज्या में बार-बार सामायिक चारित्र धारण किया जाता है।

३. एक प्रव्रज्या में एक बार अतिचारों की आलोयणा की जाती है।

४. एक प्रव्रज्या में बार-बार अतिचारों की आलोयणा की जाती है।

ग—प्रव्रज्या चार प्रकार की है। यथा—

१. खलिहान में शुद्ध की हुई धान्यराशि जैसी अतिचार रहित प्रव्रज्या।

२. खलिहान में उफणे हुए धान्य जैसी अल्प अतिचार वाली प्रव्रज्या।

३. गायटा किये हुए धान्य जैसी अनेक अतिचार वाली प्रव्रज्या।

४. खेत में से लाकर खलिहान में रखे हुए धान्य जैसी प्रचुर अतिचार वाली प्रव्रज्या।

३५६ १क—संज्ञा चार प्रकार की है। यथा—

१. आहार संज्ञा
२. भय संज्ञा
३. मैथुन संज्ञा और
४. परिग्रह संज्ञा।

ख—चार कारणों से आहार संज्ञा होती है। यथा—

१. पेट खाली होने से।
२. क्षुधावेदनीय कर्म के उदय से।
३. खाद्य पदार्थों की चर्चा सुनने से।
४. निरन्तर भोजन की इच्छा करने से।

ग—चार कारणों से भय संज्ञा होती है। यथा—

१. अल्प शक्ति (कमजोर होने से।
२. भयवेदनीय कर्म के उदय से।
३. भयावनी कहानियाँ सुनने से।
४. भयानक प्रसंगों के स्मरण से।

घ—चार कारणों से मैथुन संज्ञा होती है। यथा—

१. रक्त और मांस के उपचय से।
२. मोहनीय कर्म के उदय से।
३. काम कथा सुनने से।

४. भुक्त भोगों के स्मरण से।

ङ—चार कारणों से परिग्रह संज्ञा होती है। यथा—

१. परिग्रह (संग्रह) होने से।

२. लोभ वेदनीय कर्म के उदय से।

३. हिरण्य सुवर्ण आदि के देखने से।

४. धन कंचन के स्मरण से।

३५७ १क—काम (विषय-वासना) चार प्रकार के हैं। यथा—

१. शृंगार, २. करुण,

३. बीभत्स, ३. रौद्र,

ख—१. देवताओं की काम वासना 'शृंगार' प्रधान है।

२. मनुष्यों की काम वासना 'करुण' है।

३. तिर्यंचों की काम वासना 'बीभत्स' है।

४. नैरयिकों की काम वासना 'रौद्र' है।

३५८ १क—पानी चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पानी थोड़ा गहरा है किन्तु स्वच्छ है।

२. एक पानी थोड़ा गहरा है किन्तु मलिन है।

३. एक पानी बहुत गहरा है किन्तु स्वच्छ है।

४. एक पानी बहुत गहरा है किन्तु मलिन है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष बाह्य चेष्टाओं से तुच्छ है और तुच्छ हृदय है।

२. एक पुरुष बाह्य चेष्टाओं से तो तुच्छ है किंतु गम्भीर हृदय है।

३. एक पुरुष बाह्य चेष्टाओं से तो गम्भीर प्रतीत होता है किंतु तुच्छ हृदय है।

४. एक पुरुष बाह्य चेष्टाओं से भी गम्भीर प्रतीत होता है और गम्भीर हृदय भी है।

२क—पानी चार प्रकार का है। यथा—

१. एक पानी छिछला है और छिछला जैसा ही दीखता है।

२. एक पानी छिछला है किन्तु गहरा दीखता है।

३. एक पानी गहरा है किन्तु छिछला जैसा प्रतीत होता है।

४. एक पानी गहरा है और गहरे जैसा ही प्रतीत होता है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष तुच्छ प्रकृति है और वैसा ही दिखता भी है।

२. एक पुरुष तुच्छ प्रकृति है किन्तु बाह्य व्यवहार से गम्भीर जैसा प्रतीत होता है।

३. एक पुरुष गम्भीर प्रकृति है किन्तु बाह्य व्यवहार से तुच्छ प्रतीत होता है।

४. एक पुरुष गम्भीर प्रकृति है और बाह्य व्यवहार से भी गम्भीर ही प्रतीत होता है।

३क—उदधि (समुद्र) चार प्रकार के हैं। यथा—

१. समुद्र का एक देश छिछरा (थोड़ा गहरा) है और थोड़े गहरे (छिछरा) जैसा दिखाई देता है।[1]

२. समुद्र का एक भाग छिछरा है किन्तु बहुत गहरे जैसा प्रतीत होता है।[2]

३. समुद्र का एक भाग बहुत गहरा है किन्तु छिछरे जैसा प्रतीत होता है।[3]

४. समुद्र का एक भाग बहुत गहरा है और गहरे जैसा ही प्रतीत होता है।

---

१. मनुष्य क्षेत्र के बाहर के समुद्रों में ज्वार भाटा नहीं आता है। अतः छिछरा ही प्रतीत होता है।

२. ज्वार भाटा आने से गहरा हो जाता है।

३. ज्वार भाटा चले जाने से छिछरे जैसा प्रतीत होता है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं।

पूर्वोक्त उदक सूत्र के समान भांगे कहें।

३५६ १क—तैराक चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक तैराक (तिरने वाला) ऐसा होता है जो समुद्र को तिरने का निश्चय करके समुद्र को ही तिरता है।

२. एक तैराक ऐसा होता है जो समुद्र को तिरने का निश्चय करके गोपद (समुद्र की खाड़ी) ही तिरता है।

३. एक तैराक ऐसा होता है जो गोपद तिरने का निश्चय करके समुद्र को तिरता है।

४. एक तैराक ऐसा होता है जो गोपद तिरने का निश्चय करके गोपद ही तिरता है।[1]

---

१. इस सूत्र का एक वैकल्पिक अर्थ टीकाकार ने इस प्रकार किया है—(१) इसी प्रकार भाव तैराक भवसागर को पार करने वाले पुरुष चार प्रकार के हैं—(१) एक पुरुष सर्वविरति धारण करने का निश्चय करके सर्वविरति ही धारण करता है। (२) एक पुरुष सर्वविरक्ति धारण करने का निश्चय करके देश विरक्ति धारण करता है। (३) एक पुरुष देशविरक्ति धारण

ख—तैराक चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक तैराक एक बार समुद्र को तिरकर पुनः समुद्र को तिरने में असमर्थ होता है।

२. एक तैराक एक बार समुद्र को तिरके दूसरी बार गोपद को तिरने में भी असमर्थ होता है।

३. एक तैराक एक बार गोपद (समुद्र की खाड़ी) को तिर करके पुनः समुद्र को पार करने में असमर्थ होता है।

४. एक तैराक एक बार गोपद को तिर करके पुनः गोपद को पार करने में भी असमर्थ होता है।[२]

करने का निश्चय करके सर्वविरक्ति धारण करता है। (४) एक पुरुष देश विरक्ति धारण करने का निश्चय करके देश विरक्ति ही धारण करता है।

२. टीकाकार इस सूत्र का एक वैकल्पिक अर्थ प्रस्तुत करते हैं। पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष समुद्र समान महान् कार्य करके पुनः महान कार्य नहीं कर पाता।

२. एक पुरुष समुद्र समान महान कार्य करके पुनः गोपद समान सामान्य कार्य भी नहीं कर पाता।

३६० १क—कुम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक कुम्भ पूर्ण (टूटा-फूटा नहीं है) और पूर्ण (मधु से भरा हुआ है) है।

२. एक कुम्भ पूर्ण है, किन्तु खाली है।

३. एक कुम्भ पूर्ण (मधु से भरा हुआ है) है किन्तु अपूर्ण (टूटा-फूटा) है।

४. एक कुम्भ अपूर्ण है (टूटा फूटा है) और अपूर्ण है (खाली है)

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष जात्यादि गुण से पूर्ण है और ज्ञानादि गुण से भी पूर्ण है।

२. एक पुरुष जात्यादि गुण से पूर्ण है किन्तु ज्ञानादि गुण से रहित।

३. एक पुरुष ज्ञानादि गुण से सहित है किन्तु जात्यादि गुण से पूर्ण है।

---

३. एक पुरुष गोपद समान सामान्य कार्य करके पुनः समुद्र समान महान् कार्य नही कर पाता।

४. एक पुरुष गोपद समान सामान्य कार्य करके पुनः अन्य सामान्य कार्य भी नहीं कर पाता।

४. एक पुरुष जात्यादि गुण से भी रहित है और ज्ञानादि गुण से भी रहित हैं।

२क—कुम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक कुम्भ पूर्ण है और देखने वाले को पूर्ण जैसा ही दीखता है।

२. एक कुम्भ पूर्ण है किन्तु देखने वाले को अपूर्ण जैसा ही दीखता है।

३. एक कुम्भ अपूर्ण है किन्तु देखने वाले को पूर्ण जैसा ही दीखता है।

४. एक कुम्भ अपूर्ण है और देखने वाले को अपूर्ण जैसा ही दीखता है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष धन आदि से पूर्ण है और उस धन का उदारतापूर्वक उपभोग करता है अतः पूर्ण जैसा ही प्रतीत होता है।

२. एक पुरुष पूर्ण है (धनादि से पूर्ण है) किन्तु उस धन का उपभोग नहीं करता अतः अपूर्ण (धन हीन) जैसा ही प्रतीत होता है।

३. एक पुरुष अपूर्ण है (धनादि से परिपूर्ण नहीं है) किन्तु समय-समय पर धन का उपयोग करता है अतः पूर्ण (धनी) जैसा ही प्रतीत होता है।

४. एक पुरुष अपूर्ण है (धनादि से परिपूर्ण भी नहीं हैं) और अपूर्ण (निर्धन) जैसा ही प्रतीत होता है।

३ क—कुम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक कुम्भ पूर्ण है (जल आदि से पूर्ण है) और पूर्ण रूप है (सुन्दर है)।

२. एक कुम्भ पूर्ण है किन्तु अपूर्ण रूप है (सुन्दर) शेष भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष पूर्ण है (ज्ञानादि से पूर्ण है) और पूर्ण रूप है (संयत वेषभूषा से युक्त है)

२. एक पुरुष पूर्ण है किन्तु पूर्ण रूप नहीं है (संयत वेषभूषा से युक्त नहीं है)

शेष भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

४ क—कुम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक कुम्भ पूर्ण (जलादि से) है और (स्वर्णादि मूल्यवान धातु का बना हुआ होने से) प्रिय है।

२. एक कुम्भ पूर्ण है किन्तु (मृत्तिका आदि तुच्छ द्रव्यों का बना हुआ होने से) अप्रिय है।

३. एक कुम्भ अपूर्ण है किन्तु (स्वर्णादि मूल्यवान धातुओं का बना हुआ होने से) प्रिय है।

४. एक कुम्भ अपूर्ण है और अप्रिय भी है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुप (धन या श्रुत आदि से पूर्ण है और उदार हृदय है अतः प्रिय है।

२. एक पुरुप पूर्ण है किन्तु मलिन हृदय होने से अप्रिय है।

शेष भांगे पूर्वोक्त क्रम से कहें।

५ क—कुम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक कुम्भ (जल से) पूर्ण है—किन्तु उसमें पानी झरता है।

२. एक कुम्भ (जल से) पूर्ण है—किन्तु उसमें से पानी झरता नहीं है।

३. एक कुम्भ (जल से) अपूर्ण है किन्तु झरता है।

४. एक कुम्भ अपूर्ण है किन्तु झरता नहीं है।

ख—इसी प्रकार पुरुप चार प्रकार के हैं यथा—

१. एक पुरुष (धन या श्रुत से) पूर्ण है और धन या श्रुत देता भी है।

२. एक पुरुष पूर्ण है किन्तु देता नहीं है।

३. एक पुरुष (धन या श्रुत से) अपरिपूर्ण है किन्तु यथाशक्ति या यथाज्ञान देता भी है।

४. एक पुरुष अपूर्ण है और देता भी नहीं है।

६ क—कुम्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. खंडित, २. जोजरा,

३. कच्चा (जिसमें से पानी झरता है।)

४. पक्का (जिसमें से पानी नहीं झरता है।)

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष मूल प्रायश्चित्त योग्य (पुनः दीक्षा देने योग्य) होता है।

२. एक पुरुष छेदादि प्रायश्चित्त योग्य होता है।

३. एक पुरुष सूक्ष्म अतिचार युक्त होता है।

४. एक पुरुष निरतिचार, चारित्र युक्त होता है।

७ क—कुंभ चार प्रकार के है, यथा—

१. एक मधु कुम्भ है और उसका ढक्कन भी मधु पूरित है।

२. एक मधु कुम्भ है किन्तु उसका ढक्कन विष पूरित है।

३. एक विष कुम्भ है किन्तु उसका ढक्कन मधु पूरित है।

४. एक विष कुम्भ है और उसका ढक्कन भी विष पूरित है।

ख—इसी प्रकार पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष सरल हृदय है और मधुरभाषी है।

२. एक पुरुष सरल हृदय है किन्तु कटुभाषी है।

३. एक पुरुष मायावी है किन्तु मधुरभाषी भी नहीं है।

४. एक पुरुष मायावी है किन्तु मधुरभाषी भी है।

गाथार्थ—१. जिस पुरुष का हृदय निष्पाप एवं निर्मल हैं और जिसकी जिह्वा भी सदा मधुर भाषिणी है। उस पुरुष को मधु ढक्कन वाले मधु कुम्भ की उपमा दी जाती है।

२. जिस पुरुष का हृदय निष्पाप एवं निर्मल है किन्तु उसकी जिह्वा सदा कटुभाषिणी है तो उस पुरुष को विष पूरित ढक्कन वाले मधु कुम्भ की उपमा दी जाती है।

३. जो पापी एवं मलिन हृदय है और जिसकी जिह्वा सदा मधुरभाषिणी है। उस पुरुष को मधुपूरित ढक्कन वाले विष कुम्भ की उपमा दी जाती है।

४. जो पापी एवं मलिन हृदय है और जिसकी जिह्वा सदा कटुभाषिणी है उस पुरुष को विषपूरित ढक्कन वाले विष कुम्भ की उपमा दी जाती है।

३६१ १ क—उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१. देवकृत, २. मनुष्य कृत,
३. तिर्यंचकृत और ४. आत्मकृत।

ख—देवकृत उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१. उपहास करके उपसर्ग करता है।

२. द्वेष करके उपसर्ग करता है।

३. परीक्षा के बहाने उपसर्ग करता है।

४. विविध प्रकार के उपसर्ग करता है।

ग—मनुष्य कृत उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१-३ पूर्ववत्।

४. मैथुन सेवन की इच्छा से उपसर्ग करता है।

घ—तिर्यंच कृत उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१. भयभीत होकर उपसर्ग करता है।

२. द्वेष भाव से उपसर्ग करता है।

३. आहार (वासादि) के लिये उपसर्ग करता है।

४. स्वस्थान की रक्षा के लिये उपसर्ग करता है।

ङ—आत्मकृत उपसर्ग चार प्रकार के हैं। यथा—

१. संघट्टन से-आंख में पड़ी हुई रज आदि को हाथ से निकालने पर पीड़ा होती है।

२. गिर पड़ने से।

३. अधिक देर तक एक आसन से बैठने पर पीड़ा होती है।

४. पग संकुचित कर अधिक देर तक बैठने से पीड़ा होती है।

३६२ १ क—कर्म चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक कर्म प्रकृति शुभ है और उसका हेतु भी शुभ है। अर्थात् पुण्यानुबंधी पुण्य।

२. एक कर्म प्रकृति शुभ है किंतु उसका हेतु अशुभ है। अर्थात् पापानुबंधी पुण्य।

३. एक कर्म प्रकृति अशुभ है किन्तु उसका हेतु शुभ है। अर्थात् पुण्यानुबंधी पाप।

४. एक कर्म प्रकृति अशुभ है और उसका हेतु भी अशुभ है। अर्थात् पापानुबंधी पाप।

ख—कर्म चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक कर्म प्रकृति का बंध शुभ रूप में हुआ और उसका उदय भी शुभ रूप में हुआ।

२. एक कर्म प्रकृति का बंध शुभ रूप में हुआ किन्तु संक्रमकरण से उसका उदय अशुभ रूप में हुआ।

३. एक कर्म प्रकृति का बंध अशुभ रूप में हुआ किंतु संक्रमकरण से उसका उदय शुभ रूप में हुआ।

४. एक कर्म प्रकृति का बंध अशुभ रूप में हुआ और उसका उदय भी अशुभ रूप में हुआ।

२—कर्म चार प्रकार के हैं। यथा—

१. प्रकृति कर्म, २. स्थिति कर्म,
३. अनुभाव कर्म और ४. प्रदेश कर्म।

३६३ १—संघ चार प्रकार का है। यथा—

१. श्रमण, २. श्रमणियां,
३. श्रावक, और ४. श्राविकायें।

३६४ १—बुद्धि चार प्रकार की है। यथा—

१. उत्पातिया[1]

---

१ अविलम्ब उत्पन्न होने वाली बुद्धि।

२. वैनयिकी,[1]

३. कार्मिकी,[2] और

४. पारिणामिकी ।[3]

२—मति चार प्रकार की है। यथा—

१. अवग्रहमति[4], २. ईहामति[5],

३. अवायमति[6], और ४. धारणामति[7] ।

३—मति चार प्रकार की है। यथा—

१. घड़े के पानी जैसी[8], २. नाले के पानी जैसी,[9]

---

१ विनय से उत्पन्न होने वाली बुद्धि ।

२ निरन्तर कार्य करते रहने से होने वाली बुद्धि ।

३ अनेक अनुभवों से उत्पन्न होने वाली बुद्धि ।

४ वस्तु के सामान्य स्वरूप का ज्ञान कराने वाली मति ।

५ वस्तु के विशेष स्वरूप की जिज्ञासा वाली मति ।

६ वस्तु का यथार्थ स्वरूप जानने वाली मति ।

७ वस्तु के स्वरूप का विस्मरण न हो ऐसी मति ।

८ घड़े का पानी जल्दी खाली हो जाता है इसी प्रकार चिंतन मनन में अल्प सामर्थ्य वाली मति ।

९ नाले का पानी कुछ देर से खाली हो जाता है इसी प्रकार चिंतन [illegible]धिक सामर्थ्य वाली मति ।

३. तालाब के पानी जैसी[1] ४. समुद्र के पानी जैसी,[2]

३६५ १ संसारी जीव चार प्रकार के हैं। यथा :

१. नैरयिक, २. तिर्यंच ३. मनुष्य और ४. देव।

२ सभी जीव चार प्रकार के हैं। यथा

१. मनयोगी, २. वचन योगी,
३. काय योगी और ४. अयोगी।

३ सभी जीव चार प्रकार के हैं। यथा

१. स्त्री वेदी, २. पुरुष वेदी।
३. नपुंसक वेदी और ४. अवेदी।

४ सभी जीव चार प्रकार के हैं। यथा

१. चक्षुदर्शन वाले, २. अचक्षु दर्शन वाले।
३. अवधि दर्शन वाले, ४. केवल दर्शन वाले।

५ सभी जीव चार प्रकार के हैं। यथा

१. संयत, २. असंयत।
३. संयतासंयत और ४. नोसंयत-नोअसंयत।

---

१ सरोवर का पानी खाली नहीं होता है इसी प्रकार चिंतन मनन में जो कभी थकती नहीं वैसी मति।

२ समुद्र का पानी सदा समान रहता है इसी प्रकार सदा समान रहने वाली मति।

३६६ १क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष इहलोक का भी मित्र है और परलोक का भी मित्र है।[1]

२. एक पुरुष इहलोक का तो मित्र है किन्तु परलोक का मित्र नहीं है।[2]

३. एक पुरुष परलोक का तो मित्र है किन्तु इहलोक का मित्र नहीं है।[3]

४. एक पुरुष इहलोक का भी मित्र नहीं है और परलोक का भी मित्र नहीं है।[4]

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष अन्तरंग मित्र है और बाह्य स्नेह भी पूर्ण मित्रता का है।

२. एक पुरुष अन्तरंग मित्र तो है किन्तु बाह्य स्नेह प्रदर्शित नहीं करता है।

३. एक पुरुष बाह्य स्नेह तो प्रदर्शित करता है किन्तु अन्तरंग में शत्रुभाव है।[5]

४. एक पुरुष अन्तरंग (हृदय में) में भी शत्रु भाव

---

१. सद्गुरु २. स्वार्थी सम्बन्धी, ३. जिनके प्रतिकूल आचरण से वैराग्य हो. ४. शत्रु ५. कुलटा स्त्री।

रखता है। और बाह्य व्यवहार से भी शत्रु है।

२क—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष द्रव्य (बाह्य व्यवहार) से भी मुक्त है और भाव (आसक्ति) से भी मुक्त है।[1]

२. एक पुरुष द्रव्य (बाह्य व्यवहार) से तो मुक्त है किन्तु भाव (आसक्ति) से मुक्त नहीं है।[2]

३. एक पुरुष भाव (आसक्ति) से तो मुक्त है किन्तु द्रव्य (बाह्य व्यवहार) से मुक्त नहीं है।[3]

४. एक पुरुष द्रव्य से भी मुक्त नहीं है और भाव से भी मुक्त नहीं है।[4]

ख—पुरुष चार प्रकार के हैं। यथा—

१. एक पुरुष (आसक्ति से) मुक्त है और (संयत वेष का धारक होने से) मुक्त रूप है।[5]

२. एक पुरुष (आसक्ति से तो) मुक्त है किन्तु (संयत वेष का धारक न होने से) मुक्त रूप नहीं है।[6]

३. एक पुरुष संयत वेष का धारक है अतः मुक्त रूप तो है किन्तु आसक्ति होने से मुक्त नहीं है।[7]

---

१. सुसाधु, २. रंक, ३. भरत चक्रवर्तीवत्, ४. गृहस्थ, ५. यति, ६. शिवकुमारवत्, ७. छद्मवेषी यति।

४. एक पुरुष (असक्ति होने से) मुक्त भी नहीं है और संयत वेष भूषा का धारक न होने से मुक्त रूप भी नहीं है।[1]

३६७ १—(क-ख) पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जीव मरकर चारों गतियों में उत्पन्न होते हैं और चारों गतियों में से आकर पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होते हैं। यथा—

१. नैरयिकों से, २. तिर्यंचों से,
३. मनुष्यों से और ४. देवताओं से।

२क-ख—मनुष्य मरकर चारों गतियों में उत्पन्न होते हैं और चारों गतियों में से आकर मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं।

३६८ १क—द्वीन्द्रिय जीवों की हिंसा न करने वाला चार प्रकार का संयम करता है यथा—

१. जिह्वेन्द्रिय के सुख को नष्ट नहीं करता।

२. जिह्वेन्द्रिय सम्वन्धी दुख नहीं देता।

३. स्पर्शेन्द्रिय के सुख को नष्ट नहीं करता।

४. स्पर्शेन्द्रिय सम्वन्धी दुख नहीं देता।

ख—द्वीन्द्रिय जीवों की हिंसा करने वाला चार प्रकार

---

१ गृहस्थ।

का असंयम करता है। यथा--

१. जिह्वेन्द्रिय के सुख को नष्ट करता है।

२. जिह्वेन्द्रिय सम्बन्धी दुख देता है।

३. स्पर्शेन्द्रिय के सुख को नष्ट करता है।

४. स्पर्शेन्द्रिय सम्बन्धी दुख देता है।

३६९ १क--सम्यग्दृष्टि नैरयिक चार क्रियायें करते हैं। यथा--

१. आरम्भिकी २. पारिग्रहिकी,

३. मायाप्रत्यया, और ४. अप्रत्याख्यान क्रिया।

ख--विकलेन्द्रिय छोड़कर शेष सभी दण्डकों के जीव चार क्रियायें करते हैं। पूर्ववत्।

३७० १क--चार कारणों से पुरुष दूसरे के गुणों को छिपाता है।

यथा--१. क्रोध से, २. ईर्ष्या से,

३. कृतघ्न होने से और ४. दुराग्रही होने से।

ख--चार कारणों से पुरुष दूसरे के गुणों को प्रकट करता है। यथा--

१. प्रशंसक स्वभाव वाला व्यक्ति।

२. दूसरे के अनुकूल व्यवहार वाला।

३. स्वकार्य साधक व्यक्ति।

४. प्रत्युपकार करने वाला।

३७१ १क—चार कारणों से नैरयिक शरीर की उत्पत्ति प्रारम्भ होती है। यथा—

१. क्रोध से, २. मान से,
३. माया से, और ४. लोभ से।

शेष सभी दण्डकवर्ती जीवों के शरीर की उत्पत्ति का प्रारम्भ भी इन्हीं चार कारणों से होता है।

ख—चार कारणों से नैरयिकों के शरीर की पूर्णता होती है। यथा—

१. क्रोध से यावत् लोभ से।

शेष सभी दण्डकवर्ती जीवों के शरीर की पूर्णता भी इन्हीं चार कारणों से होती है।

३७२ १—धर्म के चार द्वार हैं। यथा—

१. क्षमा, २. निर्लोभता,
३. सरलता और ४. मृदुता।

३७३ १क—चार कारणों से नरक में जाने योग्य कर्म बंधते हैं।

यथा—१. महा आरम्भ (हिंसा) करने से,

२. महापरिग्रह (संग्रह) करने से।

३. पंचेन्द्रिय जीवों को मारने से।

४. मांस आहार करने से।

ख—चार कारणों से तिर्यंचों में उत्पन्न होने योग्य कर्म बंधते हैं। यथा—

१. मन की कुटिलता से।

२. वेष बदलकर ठगने से।

३. झूठ बोलने से, ४. खोटे तोल माप बरतने से।

ग—चार कारणों से मनुष्यों में उत्पन्न होने योग्य कर्म बँधते हैं। यथा—

१. सरल स्वभाव से, २. विनम्रता से,

३. अनुकम्पा से, ४. मात्सर्यभाव न रखने से

घ—चार कारणों से देवताओं में उत्पन्न होने योग्य कर्म। बँधते हैं। यथा—

१. सराग संयम से, २. श्रावक जीवनचर्या से,

३. अज्ञान तप से[3] और ४. अकामनिर्जरा से[2]।

३७४ १—वाद्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. तत (वीणा आदि), २. वितत (ढोल आदि),

---

१ विवेक बिना जो तपश्चर्या की जाती है वह अज्ञानतप कहा जाता है।

२ इच्छा के बिना जो कष्ट सहा जाय और उससे जो कर्मक्षय हो उसे अकाम निर्जरा कहते हैं।

३. घन (कांस्यताल आदि), और

४. शुपिर (बांसुरी आदि)।

२—नाट्य (नाटक) चार प्रकार के हैं। यथा—

१. ठहर-ठहर कर नाचना।

२. संगीत के साथ नाचना।

३. संकेतों से भावाभिव्यक्ति करते हुये नाचना।

४. झुककर या लेट कर नाचना।

३—गायन चार प्रकार का है। यथा—

१. नाचते हुये गायन करना।

२. छंद (पद्य) गायन।

३. मंद-मंद स्वर से गायन करना।

४. शनैः शनैः स्वर को तेज करते हुए गायन करना।

४—पुष्प रचना चार प्रकार की है। यथा—

१. सूत के धागे से गूँथकर की जाने वाली पुष्प रचना।

२. चारों ओर पुष्प बींटकर की जाने वाली रचना।

३. पुष्प आरोपित करके की जाने वाली रचना।

४. परस्पर पुष्प नाल मिलाकर की जाने वाली रचना।

५—अलंकार चार प्रकार के हैं। यथा—

१. केशालंकार, २. वस्त्रालंकार,

३. माल्यालंकार, और ४. आभरणालंकार।

६—अभिनय चार प्रकार का है। यथा—

१. किसी घटना का अभिनय करना।

२. महाभारत का अभिनय करना।

३. राजा मन्त्री आदि का अभिनय करना।

४. मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का अभिनय करना।

३७५ १—सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प में चार वर्ण के विमान हैं। यथा—

१. नीले, २. रक्त, ३. पीत और ४. श्वेत।

२—महाशुक्र और सहस्रारकल्प में देवताओं के शरीर चार हाथ के ऊँचे हैं।

३७६ १ क—पानी के गर्भ चार प्रकार के हैं।[1] यथा—

१. ओस, २. धुंवर,

३. अतिशीत और ४. अतिगरम।

ख—पानी के गर्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. हिमपात।

२. बादल से आकाश का आच्छादित होना।

---

१. यहाँ गर्भ का अर्थ वर्षा का हेतु है।

३. अतिशीत या अतिगरमी होना।

४. (१) वायु, (२) बद्दल, (३) गाज, (४) बिजली और (५) बरसना इन पांचों का संयुक्त रूप से होना।

गाथार्थ—१. माघ मास में हिमपात से, २. फाल्गुन मास में बादलों से, ३. चैत्र मास में अधिक शीत से और ४. वैशाख में ऊपर कहे संयुक्त पाँच प्रकार से पानी का गर्भ स्थिर होता है।[1]

३७७ १ —मनुष्यणी (स्त्री) के गर्भ चार प्रकार के हैं। यथा—

१. स्त्री रूप में, २. पुरुष रूप में,

३. नपुंसक रूप में और, ४. बिंब रूप में।[2]

गाथार्थ—१. अल्प शुक्र और अधिक ओज का मिश्रण होने से गर्भ स्त्री रूप में उत्पन्न होता है। अल्प ओज और अधिक शुक्र का मिश्रण होने से गर्भ पुरुष रूप में

---

१. इन लक्षणों के अनुसार जिस दिन पानी का गर्भ स्थिर होता है उससे ६ या ७ माह पश्चात् वर्षा होती है। टीकाकार अन्य ग्रन्थों के कुछ और श्लोक उद्धृत करके उदक गर्भ की स्थिति के हेतु बताते हैं अतः टीका देखें।

२. गर्भ केवल पिंड रूप में उत्पन्न होता है अतः उसमें किसी प्रकार की आकृति नहीं होती।

उत्पन्न होता है। ओज और शुक्र के समान मिश्रण से गर्भ नपुंसक रूप में उत्पन्न होता है। स्त्री का स्त्री से सहवास होने पर गर्भ बिंब रूप में उत्पन्न होता है।

३७८ १ —उत्पाद पूर्व के चार मूल वस्तु हैं।

३७९ १ —काव्य चार प्रकार के हैं। यथा—

१. गद्य[1], २. पद्य[2] ३. कथ्य[3] और ४. गेय[4]।

३८० १ क—नैरयिक जीवों के चार समुद्घात है।[5] यथा—

१. वेदना समुद्घात।

२. कषाय समुद्घात।

३. मारणांतिक समुद्घात और

४. वैक्रिय समुद्घात।

ख—वायुकायिक जीवों के भी ये चार समुद्घात हैं।

३८१ १ —अर्हन्त अरिष्टनेमि—(नेमिनाथ) के चार सौ चौदह पूर्वधारी श्रमणों की उत्कृष्ट सम्पदा थी। वे जिन न

---

१. छंद रहित, २. छंद बद्ध, ३. कथारूप, ४. गाने योग्य।

५. आत्म शक्ति से कर्म दलिकों में की जाने वाली एक विशेष प्रक्रिया को समुद्घात कहते हैं।

होते हुए भी जिनसदृश थे। जिनकी तरह पूर्ण यथार्थ वक्ता थे और सर्व अक्षर संयोगों के पूर्ण ज्ञाता थे।

३८२ —श्रमण भगवान महावीर के चार सौ वादी मुनियों की उत्कृष्ट संपदा थी। वे देव, मनुष्य असुरों की परिषद में कदापि पराजित होने वाले न थे।

३८३ १ क—नीचे के चार कल्प अर्ध चन्द्राकार हैं। यथा—

१. सौधर्म, २. ईशान,
३. सनत्कुमार और ४. माहेन्द्र।

ख—विचले चार कल्प पूर्ण चन्द्राकार हैं।

१. ब्रह्मलोक, २. लांतक,
३. महाशुक्र और ४. सहस्रार।

ग—ऊपर के चार कल्प अर्ध चन्द्राकार हैं। यथा—

१. आनत, २. प्राणत,
३. आरण और ४. अच्युत।

३८४ १ —चार समुद्रों में से प्रत्येक समुद्र के पानी का स्वाद भिन्न-भिन्न प्रकार का है। यथा—

१. लवण समुद्र के पानी का स्वाद लवण जैसा खारा है।

२. वरुणोद समुद्र के पानी का स्वाद मद्य जैसा है।

३. क्षीरोद समुद्र के पानी का स्वाद दूध जैसा है।

४. घृतोद समुद्र के पानी का स्वाद घी जैसा है।

३८५ १ क—आवर्त चार प्रकार के हैं।[1] यथा—

१. खरावर्त-समुद्र में चक्र की तरह पानी का घूमना।

२. उन्नतावर्त-पर्वत पर चक्र की तरह घूमकर चढ़ने वाला मार्ग।

३. गूढ़ावर्त-दड़ी पर रस्सी से की जाने वाली गुंथन।

४. आमिषावर्त-मांस के लिए आकाश में पक्षियों का घूमना।

ख —कषाय चार प्रकार के हैं। यथा—

१. खरावर्त समान क्रोध।

२. उन्नतावर्त समान मान।

३. गूढावर्त समान-माया।

४. आमिषावर्त समान लोभ।

ग —१. खरावर्त समान क्रोध करने वाला जीव मरकर नरक में उत्पन्न होता है।

२. इसी प्रकार उन्नतावर्त समान मान करने वाला जीव।

३. गूढ़ावर्त समान माया करने वाला जीव, और

---

१. किसी भी पदार्थ का गोल घूमना 'आवर्त' कहा जाता है।

४. आमिषावर्त समान लोभ करने वाला जीव मरकर नरक में उत्पन्न होता है।

३८६ १ क—अनुराधा नक्षत्र के चार तारे हैं।

ख-ग—इसी प्रकार पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चार-चार तारे हैं।

३८७ १ क—चार स्थानों में संचित पुद्गल पाप कर्म रूप में एकत्र हुए हैं, होते हैं और भविष्य में भी होंगे। यथा—

१. नारकीय जीवन में एकत्रित पुद्गल।

२. तिर्यंच जीवन में एकत्रित पुद्गल।

३. मनुष्य जीवन में एकत्रित पुद्गल।

४. देव जीवन में एकत्रित पुद्गल।

ख-च—इसी प्रकार पुद्गलों का उपचय, बंध, उदीरण, वेदन और निर्जरा के एक-एक सूत्र कहें।

३८८ १ क—चार प्रदेश वाले स्कन्ध अनेक हैं।

ख—चार आकाश प्रदेश में रहे हुए पुद्गल अनन्त हैं।

ग—चार गुण वाले पुद्गल अनन्त हैं।

घन्व—चार गुण रुखे पुद्गल अनन्त हैं।

—चतुर्थ स्थानक चतुर्थ उद्देशक समाप्त—

॥ चतुर्थ स्थान समाप्त ॥

पांचवाँ स्थान : प्रथम उद्देशक

३८९ क—महाव्रत पाँच कहे गये हैं। यथा—

१. प्राणातिपात से सर्वथा विरत होना—

२-५ यावत् परिग्रह से सर्वथा विरत होना।

ख—अणुव्रत पाँच कहे गये हैं। यथा—

१. स्थूल प्राणातिपात से विरत होना।

२. स्थूल मृषावाद से विरत होना।

३. स्थूल अदत्तादान से विरत होना।

४. स्व-स्त्री में सन्तुष्ट रहना।

५. इच्छाओं (परिग्रह) की मर्यादा करना।

३९० क—वर्ण पांच कहे गये हैं। यथा—

१. कृष्ण, २. नील, ३. रक्त ४. पीत, ५. शुक्ल।

ख—रस पाँच कहे गये हैं। यथा—

१. तिक्त यावत्—२-५ मधुर।

ग—काम गुण पांच कहे गये हैं। यथा—

१. शब्द, २. रूप, ३. गंध, ४. रस, ५. स्पर्श।

घ—इन पांचों में जीव आसक्त हो जाते हैं। यथा—

१. शब्द, यावत् २-५ स्पर्श में।

(ङ-झ)—इसी प्रकार पूर्वोक्त पाँचों में जीव राग भाव को प्राप्त होते हैं।

" " मूर्छा भाव को "
" " गृद्धि भाव को "
" " आकांक्षा भाव को "
" " मरण को "

(ञ)—इन पांचों का ज्ञान न होना जीवों के अहित के लिए होता है।

" " " अशुभ "
" " " अनुचित "
" " " अकल्याण "
" " " अनानुगामिता के "

यथा—

शब्द, यावत् २-५ स्पर्श।

(ट)—इन पांचों का ज्ञान होना, त्याग होना जीवों के हित के लिए होता है।

,,	,,	,,	शुभ	के लिए होता है
,,	,,	,,	उचित	,,
,,	,,	,,	कल्याण	,,
,,	,,	,,	अनुगामिकता	,,

ठ—इन पाँच स्थानों का न जानना और न त्यागना जीवों की दुर्गतिगमन के लिए होता है। यथा—
१. शब्द, यावत् २-५ स्पर्श।

ड—इन पाँच स्थानों का ज्ञान और परित्याग जीवों की सुगतिगमन के लिए होता है।
यथा—१. शब्द यावत् २-५ स्पर्श।

३९१ क—पांच कारणों से जीव दुर्गति को प्राप्त होते हैं।
यथा—१. प्राणातिपात से, यावत् २-५ परिग्रह से।

ख—पांच कारणों से जीव सुगति को प्राप्त होते हैं।
यथा—१. प्राणातिपात विरमण से, यावत् २-५ परिग्रह विरमण से।

३९२ क—पांच प्रतिमाएं कही गई हैं। यथा—
१. भद्रा प्रतिमा, २. सुभद्रा प्रतिमा।
३. महाभद्रा प्रतिमा, ४. सर्वतोभद्रप्रतिमा।
५. भद्रोत्तर प्रतिमा।

३९३ क—पाँच स्थावर काय कहे गये हैं। यथा—

१. इन्द्र स्थावर काय (पृथ्वीकाय)

२. ब्रह्म स्थावर काय (अप्काय)

३. शिल्प स्थावर काय (तेजस्काय)

४. संमति स्थावर काय (वायुकाय)

५. प्राजापत्य स्थावर काय (वनस्पति काय)

ख—पाँच स्थावर कायों के ये पाँच अधिपति हैं। यथा—

१. पृथ्वीकाय का अधिपति (इन्द्र)

२. अप्काय का अधिपति (ब्रह्म)

३. तेजस्काय का अधिपति (शिल्प)

४. वायुकाय का अधिपति (संमति)

५. वनस्पतिकाय का अधिपति (प्रजापति)

:४ क—अवधि उपयोग की प्रथम प्रवृत्ति के समय अवधि ज्ञान-दर्शन। पाँच कारणों से चलित-क्षुब्ध होते हैं। यथा—

१. पृथ्वी को छोटी देखकर,

२. पृथ्वी को सूक्ष्म जीवों से व्याप्त देखकर,

३. महान अजगर का शरीर देखकर,

४. महान ऋद्धि वाले देव को अत्यन्त सुखी देखकर,

५. ग्राम नगरादि में अज्ञात एवं गड़े हुए स्वामीरहित खज़ानों को देखकर।

ख—किन्तु इन पाँच कारणों से केवलज्ञान-केवलदर्शन चलित-क्षुब्ध नहीं होता है। यथा—

१. पृथ्वी को छोटी देखकर यावत् २-५ ग्राम नगरादि में गड़े हुए अज्ञात खजानों को देखकर।

३६५ क—नैरयिकों के शरीर पाँच वर्ण वाले और पाँच रस वाले कहे गये हैं। यथा—

१. कृष्ण यावत्, २-५ शुक्ल।

२. तिक्त यावत्, २-५ मधुर।

इसी प्रकार वैमानिक देव पर्यन्त २४ दण्डक के शरीरों के वर्ण और रस कहने चाहिए।

ख—पाँच शरीर कहे गये हैं, यथा—

१. औदारिक शरीर,

२. वैक्रिय शरीर,

३. आहारक शरीर,

४. तेजस शरीर,

५. कार्मणशरीर।

ग—औदारिक शरीर के पाँच वर्ण और पाँच रस कहे गये हैं। यथा—

१. कृष्ण, यावत् २-५ शुक्ल।

२. तिक्त, यावत् २-५ मधुर।

घ-छ—इसी प्रकार कार्मण शरीर पर्यन्त वर्ण और रस कहने चाहिये। सभी स्थूलदेहधारियों के शरीर पांच वर्ण,

पांच रस, दो गंध और आठ स्पर्श युक्त हैं।

२६ क—पाँच कारणों से प्रथम और अन्तिम जिन का उपदेश उनके शिष्यों को उन्हें समझने में कठिनाई होती है।

१. दुराख्येय—आयास साध्य व्याख्या युक्त।

२. दुर्विभजन—विभाग करने में कष्ट होता है।

३. दुर्दर्श—कठिनाई से समझ में आता है।

४. दुःसह—परीषह सहन करने में कठिनाई होती है।

५. दुरनुचर—जिनाज्ञानुसार आचरण करने में कठिनाई होती है।

ख—पाँच कारणों से मध्य के २२ जिनका उपदेश उनके शिष्यों को सुगम होता है। यथा—

१. सुआख्येय—व्याख्या सरलतापूर्वक करते हैं।

२. सुविभाज्य—विभाग करने में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता।

३. सुदर्श—सरलतापूर्वक समझ लेते हैं।

४. सुसह—शांतिपूर्वक परीषह सहन करते हैं।

५. सुचर—प्रसन्नतापूर्वक जिनाज्ञानुसार आचरण करते हैं।

ग—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच सद्गुण सदा प्रशस्त एवं आचरण योग्य कहे हैं।

यथा—१. क्षमा, २. निर्लोभता,

३. सरलता, ४. मृदुता, ५. लघुता।

घ—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच सद्गुण सदा प्रशस्त एवं आचरण योग्य कहे हैं।

यथा—१. सत्य, २. संयम,
३. तप, ४. त्याग, ५.ब्रह्मचर्य।

ङ—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच अभिग्रह सदा प्रशस्त एवं आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१. उक्षिप्तचारी—'यदि ग्रहस्थ रांधने के पात्र में से जीमने के पात्र में अपने खाने के लिए आहार ले और उस आहार में से दे तो लेउं।' ऐसा अभिग्रह करने वाला मुनि।

२. निक्षिप्तचारी—'रांधने के पात्र में से निकाला हुआ आहार यदि गृहस्थ दे तो लेउँ।' ऐसा अभिग्रह करने वाला मुनि।

३. अंतचारी—भोजन करने के पश्चात् बढ़ा हुआ आहार लेने वाला मुनि।

४. प्रान्तचारी—तुच्छ आहार लेने का अभिग्रह करने वाला मुनि।

५. रूक्षचारी—लूखा आहार लेने का अभिग्रह करने

वाला मुनि ।

च—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिये पांच अभिग्रह सदा प्रशस्त एवं आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१. अज्ञातचारी—अपनी जाति-कुल आदि का परिचय दिये बिना आहार लेने के अभिग्रह वाला मुनि ।

२. अन्य ग्लानचारी—दूसरे रोगी के लिए भिक्षा लाने वाला मुनि ।

३. मौनचारी—मौनव्रत धारी मुनि ।

४. संसृष्टकल्पिक—लेप वाले हाथ से कल्पनीय आहार दे तो लेऊं। ऐसी प्रतिज्ञा वाला मुनि ।

५—तज्जात संसृष्ट कल्पिक—प्रासुक पदार्थ के लेप वाले हाथ से आहार दे तो लेऊं। ऐसे अभिग्र हवाला मुनि।

छ—भगवान महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच अभिग्रह प्रशस्त एवं सदा आचरण के योग्य कहे हैं।

यथा—१. औपनिधिक—अन्य स्थान से लाया हुआ आहार लेने वाला मुनि ।

२. शुद्धैषणिक—निर्दोष आहार की गवेषणा करने वाला मुनि ।

३. संख्यादत्तिक—आज इतनी दत्ति (निर्धारित संख्या के अनुसार) ही आहार लेऊँगा ऐसा अभिग्रह

करके आहार की एषणा करने वाला मुनि ।

४. दृष्टलाभिक—देखी हुई वस्तु लेने के संकल्प वाला मुनि ।

५. पृष्ठलाभिक—(क) आपको आहार (आदि) दूं ?—इस प्रकार पूछकर आहार दे तो लेऊं ऐसी प्रतिज्ञा वाला मुनि ।

—अथवा 'आहार निर्दोष है या सदोष ? इस प्रकार पूछ कर आहार लेने वाला मुनि ।

ज—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच अभिग्रह प्रशस्त एवं सदा आचरण करने योग्य कहे हैं । यथा—

१. आचाम्लिक—आयम्बिल करने वाला मुनि ।

२. निर्विकृतिक—घी आदि की विकृति को न लेने वाला मुनि ।

३. पुरिमार्धक—दिन के पूर्वार्ध तक (दो प्रहर तक) प्रत्याख्यान करने वाला मुनि ।

४. परिमितपिण्डपातिक—परिमित आहार लेने वाला मुनि ।

५. भिन्न पिण्डपातिक—अखण्ड,नहीं किन्तु टुकड़े-टुकड़े किया हुआ आहार लेने वाला मुनि ।

झ—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच अभिग्रह प्रशस्त एवं सदा आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१. अरसाहारी, २. विरसाहारी, ३. अंताहारी, ४. प्रान्ताहारी, ५. रुक्षाहारी।

ञ—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच अभिग्रह प्रशस्त एवं सदा आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१. अरसजीवी, २, विरसजीवी, ३. अंतजीवी, ४. प्रान्तजीवी, ५. रुक्षजीवी।

ट—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच अभिग्रह प्रशस्त एवं सदा आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१. स्थानातिपद—कायोत्सर्ग करने वाला मुनि।

२. उत्कटुकासनिक—उकडु आसन बैठने वाला मुनि।

३. प्रतिमास्थायी—'एक रात्रिकी' आदि प्रतिमाओं को धारण करने वाला मुनि।

४. वीरासनिक—वीरासन से बैठने वाला मुनि।

५. नैषधिक—पालथी लगाकर बैठने वाला मुनि।

ठ—भ० महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों के लिए पाँच अभिग्रह सदा प्रशस्त एवं आचरण योग्य कहे हैं। यथा—

१. दण्डायतिक—सीधे पैर कर सोने वाला मुनि।

२. लगडशायी—आँके वाँके पैर व कमर कर सोने वाला मुनि ।

३. आतापक—शीत या ग्रीष्म की आतापना लेने वाला मुनि ।

४. अपावृतक—वस्त्र रहित रहने वाला मुनि ।

५. अकण्डूयक—खाज न खुजाने वाला मुनि ।

३९७ क—पाँच कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ की महानिर्जरा और महापर्यवसान—मुक्ति होती है। यथा—

१. ग्लानि के बिना आचार्य की सेवा करने वाला
२. " उपाध्याय की सेवा करने वाला
३. " स्थविर की सेवा करने वाला
४. " तपस्वी की सेवा करने वाला
५. " ग्लान की सेवा करने वाला

ख—पाँच कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ की महानिर्जरा और महापर्यवसान होता है। यथा—

१. ग्लानि के बिना नवदीक्षित की सेवा करने वाला
२. " कुल की सेवा करने वाला
३. " गण की सेवा करने वाला
४. " संघ की सेवा करने वाला
५. " स्वधर्मी की सेवा करने वाला

९८ क—पाँच कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ साम्भोगिक साधर्मिक को विसंभोगी करे तो जिनाज्ञा का अतिक्रमण नहीं करता है। यथा—

१. अकृत्य करने वाले को।

२. अकृत्य करके आलोचना न करने वाले को।

३. आलोचना करके प्रायश्चित्त न करने वाले को।

४. प्रायश्चित लेकर भी आचरण न करने वाले को।

५. "अरे! ये स्थविर ही बार-बार अकृत्य का सेवन करते हैं तो ये मेरा क्या कर सकेंगे।" ऐसा कहने वाले को।

ख—पाँच कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ (आचार्य) साम्भोगिक को पाराञ्चिक प्रायश्चित दे तो जिनाज्ञा का अतिक्रमण नहीं करता है। यथा—

१. स्वकुल में भेद डालने के लिए कलह करने वाले को।

२. स्वगण में भेद डालने के लिए कलह करने वाले को।

३. हिंसा प्रेक्षी—साधु आदि को मारने के लिए उनका शोध करने वाले को।

४. छिद्र प्रेक्षी—साधु आदि को मारने के लिए अव-

सर की तलाश में रहने वाले को।

५. प्रश्न विद्या का बार-बार प्रयोग करने वाले को।

३९९ क—आचार्य और उपाध्याय के गण में विग्रह (कलह) के पाँच कारण हैं। यथा—

१. आचार्य या उपाध्याय गण में रहने वाले श्रमणों को आज्ञा[1] या निषेध[2] सम्यक् प्रकार से न करे।

२. गण में रहने वाले श्रमण दीक्षा पर्याय के क्रम से सम्यक् प्रकार से वंदना न करे।

३. गण में काल क्रम से जिसको जिस आगम की वाचना देनी है उसे उस आगम की वाचना न दे।

४. आचार्य या उपाध्याय अपने गण में ग्लान (रोगी) या शैक्ष्य (नवदीक्षित) की सेवा के लिए सम्यक् व्यवस्था न करे।

५. गण में रहने वाले श्रमण गुरु की आज्ञा के बिना विहार करे।

ख—आचार्य उपाध्याय के गण में अविग्रह (कलह न होने) के पाँच कारण हैं। यथा—

---

१ हे मुनि! यह कार्य करो—यह आज्ञा है।

२ हे मुनि! यह कार्य न करो यह निषेध है इसे ही 'धारणा' कहा जाता है।

१. आचार्य या उपाध्याय गण में रहने वाले श्रमणों को आज्ञा या निषेध सम्यक् प्रकार से करे।

२. गण में रहने वाले श्रमण दीक्षा पर्याय के क्रम से सम्यक् प्रकार वंदना करे।

३. गण में कालक्रम से जिसको जिस आगम की वाचना देनी है उसे उस आगम की वाचना दे।

४. आचार्य या उपाध्याय अपने गण में ग्लान या शैक्ष्य (नवदीक्षित) की सेवा के लिए सम्यक् व्यवस्था करे।

५. गण में रहने वाले श्रमण गुरु की आज्ञा से विहार करें।

४०० क—पांच निषद्यायें (बैठने के ढंग) कही गई हैं। यथा—

१. उत्कुटिका—उकडु बैठना।

२. गोदोहिका—गाय दुहे उस आसन से बैठना।

३. समपादपुता—पैर और पुत से पृथ्वी का स्पर्श करके बैठना।

४. पर्यंका—पालथी मारकर बैठना।

५. अर्धपर्यंका—अर्ध पद्मासन से बैठना।

ख पांच आर्जव (संवर) के हेतु कहे गये हैं। यथा—

१. शुभ आर्जव, २. शुभ मार्दव, ३. शुभ लाघव,

४. शुभ क्षमा, ५. शुभ निर्लोभता।

४०१ क—पाँच ज्योतिष्क देव कहे गये हैं। यथा—

१. चन्द्र, २. सूर्य, ३. ग्रह, ४. नक्षत्र, ५. तारा।

ख पाँच प्रकार के देव कहे गये हैं। यथा

१. भव्य द्रव्य देव—देवताओं में उत्पन्न होने योग्य मनुष्य और तिर्यंच।

२. नर देव—चक्रवर्ती।

३. धर्मदेव—साधु।

४. देवाधिदेव—अरिहन्त।

५. भावदेव—देवभव के आयुष्य का अनुभव करने वाले भवनपति आदि ४ प्रकार के देव।

४०२—पाँच प्रकार की परिचारणा (विषय सेवन) कही गई हैं। यथा—

१. काय-परिचारणा—केवल काया से मैथुन सेवन करना। यह परिचारणा दूसरे देवलोक तक होती है।

२. स्पर्श परिचारणा—केवल स्पर्श होने से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह तीसरे चौथे देवलोक तक होती है।

३. रूप परिचारणा—केवल रूप देखने से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा पांचवे, छठे देवलोक

तक होती है।

४. शब्द परिचारणा—केवल शब्द श्रवण से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा सातवें, आठवें देवलोक तक होती है।

५. मन परिचारणा—केवल मानसिक संकल्प से विषयेच्छा की पूर्ति होना। यह परिचारणा नवमे से बारहवें देवलोक तक होती है।

४०३ क—चमर असुरेन्द्र की पाँच अग्रमहिषियां कही गई हैं।
यथा—१. काली, २. रात्रि,
३. रजनी, ४. विद्युत, ५. मेघा।

ख—वलि वैरोचनेन्द्र की पाँच अग्रमहिषियाँ कही गई हैं।
यथा—१. शुभा, २. निशुभा,
३. रंभा, ४. निरंभा, ५. मदना।

४०४ क—चमर असुरेन्द्र की पाँच सेनायें हैं और उनके पाँच सेनापति हैं। यथा—

१. पैदल सेना, २. अश्व सेना,
३. हस्ति सेना, ४. महिष सेना,
५. रथ सेना।

पाँच सेनापति—

१. द्रुम—पैदल सेना का सेनापति।

२. सौदामी अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३. कुंथु हस्तीराज—हस्तिसेना का सेनापति।

४. लोहिताक्षमहिषराज—महिष सेना का सेनापति।

५. किन्नर—रथ सेना का सेनापति।

ख—वलि वैरोचनेन्द्र की पाँच सेनायें हैं और उनके पाँच-पाँच सेनापति हैं। यथा—

१. पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना।

पाँच सेनापति—

१. महद्रुम—पैदल सेना के सेनापति।

२. महासौदाम अश्वराज—अश्वसेना के सेनापति।

३. मालंकार हस्तीराज—हस्तिसेना के सेनापति।

४. महालोहिताक्ष महिषराज—महिष सेना के सेनापति।

५. किंपुरुष—रथसेना के सेनापति।

ग—धरण नागकुमारेन्द्र की पाँच सेनायें हैं और उनके पाँच सेनापति हैं, यथा—

१. पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना।

पाँच सेनापति—

१. भद्रसेन—पैदल सेना के सेनापति।

२. यशोधर अश्वराज—अश्व सेना के सेनापति।

३. सुदर्शन हस्तिराज—हस्ति सेना के सेनापति।

४. नीलकंठ महिषराज—महिष सेना के सेनापति।

५. आनन्द—रथसेना के सेनापति।

घ—भूतानन्द नागकुमारेन्द्र की पाँच सेनाएँ हैं और पाँच सेनापति हैं। यथा—

१. पैदल सेना—यावत् २-५ रथ सेना।

पाँच सेनापति—

१. दक्ष—पैदल सेना का सेनापति।

२. सुग्रीव अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३. सुविक्रम हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति।

४. श्वेतकण्ठ महिषराज—महिष सेना का सेनापति।

५. नन्दुत्तर—रथ सेना का सेनापति।

ङ—वेणुदेव सुपर्णेन्द्र की पाँच सेनापति और पाँच सेनाएँ। यथा—

१. पैदल सेना यावत् २-५ रथ सेना।

२. धरण के सेनापतियों के नाम के समान वेणुदेव के सेनापतियों के नाम हैं।

३. भूतानन्द के सेनापतियों के नाम के समान वेणुदालिय के सेनापतियों के नाम हैं।

(च-ठ)—धरण के सेनापतियों के नाम के समान सभी

दक्षिण दिशा के इन्द्रों के यावत् घोस के सेनापतियों के नाम हैं।

(ङ-न)—भूतानन्द के सेनापतियों के नाम के समान सभी उत्तर दिशा के इन्द्रों के यावत् महाघोस के सेनापतियों से नाम हैं।

प—शक्रेन्द्र की पाँच सेनाएँ हैं और उनके पांच सेनापति हैं। यथा—

१. पैदल सेना, २. अश्व सेना, ३. गज सेना, ४. वृषभ सेना, ५. रथ सेना।

१. हरिणगमैषी—पैदल सेना का सेनापति।

२. वायु अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३. एरावण हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति।

४. दामर्धि वृषभराज—वृपभ सेना का सेनापति।

५. माढर—रथ सेना का सेनापति।

फ—शक्रेन्द्र की पाँच सेनायें हैं, और उनके पाँच सेनापति हैं। यथा—

१. पैदल सेना यावत् २-४ वृषभ सेना, ५-रथ सेना।

पाँच सेनापति—

१. लघुपराक्रम—पैदल सेना का सेनापति।

२. महावायु अश्वराज—अश्व सेना का सेनापति।

३. पुष्पदन्त हस्तिराज—हस्ति सेना का सेनापति।

४. महादामर्धि वृषभराज—वृषभ सेना का सेनापति।

५. महामाढर—रथ सेना का सेनापति।

शक्रेन्द्र के सेनापतियों के नाम के समान सभी दक्षिण दिशा के इन्द्रों के यावत् आरणकल्प के इन्द्रों के सेनापतियों के नाम हैं। ईशानेन्द्र के सेनापतियों के समान सभी उत्तर दिशा के इन्द्रों के यावत् अच्युत कल्प के इन्द्रों के सेनापतियों के नाम हैं।

४०५ क—शक्रेन्द्र की आभ्यन्तर परिषदा के देवों की स्थिति पाँच पल्योपम की कही गई हैं।

ख—ईशानेन्द्र की आभ्यन्तर परिषदा के देवियों की स्थिति पाँच पल्योपम की कही गई है।

४०६—पाँच प्रकार के प्रतिघात कहे गये हैं। यथा—

१. गति प्रतिघात—देवादि गतियों का प्राप्त न होना

२. स्थिति प्रतिघात—देवादि की स्थितियों का प्राप्त न होना।

३. बंधन प्रतिघात—प्रशस्त औदारिकादि बंधनों का प्राप्त न होना।

४. भोग प्रतिघात—प्रशस्त भोग-सुख का प्राप्त न होना।

५. बल, वीर्य, पुरुषाकार, पराक्रम प्रतिघात---बल आदि का प्राप्त न होना।

४०७ पाँच प्रकार की आजीविका (जीवननिर्वाह के लिए किया जाने वाला कार्य) कही गई है। यथा :---

१. जाति आजीविका---अपनी जाति बताकर आजीविका करना।

२. कुल आजीविका---अपना कुल बताकर आजीविका करना।

३. कर्म आजीविका---कृषि आदि कर्म करके आजीविका करना।

४. शिल्प आजीविका---वस्त्र आदि बुनने का कार्य करके आजीविका करना।

५. लिंग आजीविका---साधु आदि का वेष धारण करके आजीविका करना।

४०८ पाँच प्रकार के राजचिन्ह कहे गये हैं। यथा

१. खड्ग, २. छत्र, ३. मुकुट,
४. मोजड़ी, ५. चामर।

४०९ क पाँच कारणों से छद्मस्थ जीव (साधु) उदय में आये हुए परीषहों और उपसर्गों को :---

१. समभाव से सहन करता है।

२. समभाव से क्षमा करता है।

३. समभाव से तितिक्षा करता है।

४. समभाव से निश्चल होता है।

५. समभाव से विचलित होता है।

१ कर्मोदय से यह पुरुष उन्मत्त है इसलिए :—

१. मुझे आक्रोश वचन गाली बोलता है।

२. मुझे हंसता है।

३. मुझे हाथ पकड़कर फेंक देता है।

४. दुर्वचनों से मेरी भर्त्सना करता है।

५. मुझे रस्सी आदि से बाँधता है।

६. मुझे बंदीखाने में डालता है।

७. मेरे शरीर के अवयवों का छेदन करता है।

८. मेरे सामने उपद्रव करता है।

९. मेरे वस्त्र, पात्र, कंबल या रजोहरण छीन लेता है, या दूर फेंक देता है।

१०. मेरे पात्रों को तोड़ देता है।

११. मेरे पात्र चुरा लेता है।

२ यह यक्षाविष्ट पुरुष है इसलिए यह—

१. मुझे आक्रोश वचन बोलता है यावत् २-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

३ इस भव में वेदने योग्य कर्म मेरे उदय में आये हैं। इसलिए यह पुरुष १-मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत् २-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

४ यदि मैं सम्यक् प्रकार से सहन नहीं करूंगा।
,, ,, क्षमा नहीं करूंगा।
,, ,, तितिक्षा नहीं करूँगा।
,, ,, निश्चल नहीं रहूँगा।
तो मेरे केवल पाप कर्म का बंध होगा।

५ यदि मैं सम्यक् प्रकार से सहन करूंगा।
,, ,, क्षमा करूंगा।
,, ,, तितिक्षा करूंगा।
,, ,, निश्चल रहूँगा।
तो मेरे केवल कर्मों की निर्जरा ही होगी।

ख पांच कारणों से केवली उदय में आये हुए परीषहों और उपसर्गों को—

१. समभाव से सहन करता है-यावत्
२-४ ,, निश्चल रहता है। यथा—

१ यह विक्षिप्त पुरुष है, इसलिए १. मुझे आक्रोश वचन बोलता है—यावत्-२-११-मेरे पात्र चुरा लेता है।

२ यह दृप्तचित्त (अभिमानी) पुरुष है, इसलिये—
१. मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत्-

२-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

३ यह यक्षाविष्ठ पुरुष है-इसलिये-

१. मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत्-

२-११ मेरे पात्र चुरा लेता है।

४ इस भव में वेदने योग्य कर्म मेरे उदय में आये हैं, इसलिए यह पुरुष—

१. मुझे आक्रोश वचन बोलता है-यावत्

२-११-मेरे पात्र चुरा लेता है।

५ मुझे सम्यक् प्रकार से सहन करते हुए, क्षमा करते हुए, तितिक्षा करते हुए या निश्चल रहते हुए देखकर अन्य अनेक छद्मस्थ श्रमण निर्ग्रन्थ उदय में आये हुए परीषहों और उपसर्गों को सम्यक् प्रकार से सहन करेंगे-यावत्-निश्चल रहेंगे।

४१० क—पांच प्रकार के हेतु कहे गये हैं, यथा—

१. अनुमान प्रमाण के अंग धूमादि हेतु को जानता नहीं है,

२. ,, ,, देखता नहीं है,

३. ,, धूमादि हेतु पर श्रद्धा नहीं करता है।

४. ,, धूमादि हेतु को प्राप्त नहीं करता है।

५. ,, जाने बिना अज्ञान मरण मरता है।

ख—पांच प्रकार के हेतु कहे गये हैं, यथा—

१. हेतु से जानता नहीं है, यावत् २-५ हेतु से अज्ञान मरण मरता है।

ग—२. पांच प्रकार के हेतु कहे गये हैं, यथा—

१. हेतु से जानता है, यावत् २-५ हेतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

घ—पांच हेतु कहे गये हैं, यथा—

१. हेतु से जानता है, यावत् २-५ हेतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

ङ—पांच अहेतु कहे गये हैं, यथा—

१. अहेतु को नहीं जानता है, यावत्-२-५ अहेतु रूप छद्मस्थ मरण मरता है।

च—पांच अहेतु कहे गये हैं, यथा—

१. अहेतु से नहीं जानता है, यावत्-२-५ अहेतु से छद्मस्थ मरण मरता है।

छ—पांच अहेतु कहे गये हैं, यथा—

१. अहेतु को जानता है-यावत् २-५ अहेतु रूप केवली मरण मरता है।

ज—पांच अहेतु कहे गये हैं, यथा—

१. अहेतु से जानता है-यावत् २-५ अहेतु से केवली मरण मरता है।

झ—पांच गुण केवली के अनुत्तर (श्रेष्ठ) कहे गये हैं-यथा—

१. अनुत्तर ज्ञान २. अनुत्तर दर्शन, ३. अनुत्तर चारित्र, ४. अनुत्तर तप, ५. अनुत्तर वीर्य।

क—पद्मप्रभ अर्हन्त के पाँच कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुये हैं, यथा—

१. चित्रा नक्षत्र में देवलोक से च्यवकर गर्भ में उत्पन्न हुए।

२. ,, जन्म हुआ,

३. ,, प्रव्रजित हुए,

४. ,, अनंत, अनुत्तर, निर्व्याघात, [निरावरण] पूर्ण, प्रतिपूर्ण केवल ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ।

५. चित्रा नक्षत्र में निर्वाण प्राप्त हुए

ख—पुष्पदन्त अर्हन्त के पांच कल्याणक मूल नक्षत्र में हुए, यथा—

१. मूल नक्षत्र में देवलोक से च्यवकर गर्भ में उत्पन्न हुए

२-५ ,, जन्म यावत् निर्वाण कल्याणक कहे।

ग-त—तीर्थंकरों के कल्याणक इन गाथाओं से समझें।

१. पद्मप्रभ अर्हन्त के पांच कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुए।

२. पुष्पदन्त अर्हन्त के पांच कल्याणक मूल नक्षत्र में हुए।

३. शीतल अर्हन्त के पांच कल्याणक पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में हुए।

४. विमल अर्हन्त के पांच कल्याणक उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में हुए।

५. अनन्त अर्हन्त के पांच कल्याणक रेवति नक्षत्र में हुए।

६. धर्मनाथ अर्हन्त के पांच कल्याणक पुष्य नक्षत्र में हुए।

७. शांतिनाथ अर्हन्त के पांच कल्याणक भरणी नक्षत्र में हुए।

८. कुन्थुनाथ अर्हन्त के पांच कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र में हुए।

९. अरनाथ अर्हन्त के पाँच कल्याणक रेवति नक्षत्र में हुए।

१०. मुनिसुव्रत अर्हन्त के पांच कल्याणक श्रवण नक्षत्र में हुए।

११. नमि अर्हन्त के पांच कल्याणक अश्विनी नक्षत्र में हुए।

१२. नेमिनाथ अर्हन्त के पांच कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुए।

१३. पार्श्वनाथ अर्हन्त के पांच कल्याणक विशाखा नक्षत्र में हुए।

१४. भ० महावीर के पांच कल्याणक हस्तोत्तरा (चित्रा) नक्षत्र में हुए।

थ—श्रमण भगवान् महावीर के पांच कल्याणक हस्तो—त्तरा नक्षत्र में हुए।

यथा—१. भ० महावीर हस्तोत्तरा नक्षत्र में देवलोक से च्यवकर गर्भ में उत्पन्न हुए।

२. „ „ देवानन्दा के गर्भ से त्रिशला के गर्भ में आये।

३. „ „ जन्म हुआ।

४. „ „ दीक्षित हुए।

५. „ „ केवलज्ञान-दर्शन उत्पन्न हुआ।

—पंचम स्थान का प्रथम उद्देशक समाप्त—

पंचम स्थान : द्वितीय उद्देशक

४१२ क—निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को ये पाँच महानदियाँ एक मास में दो या तीन बार तैर कर पार करना या नौका द्वारा पार करना नहीं कल्पता है।

यथा—१ गंगा, २ यमुना, ३ सरयू, ४ ऐरावती, ५ मही।

ख—पाँच कारणों से पार करना कल्पता है,

यथा–१. क्रुद्ध राजा आदि या क्रूरजनों के भय से

२. दुष्काल होने पर।

३. किसी अनार्य द्वारा पीड़ा पहुँचाये जाने पर।

४. बाढ़ के प्रवाह में वहते हुए व्यक्तियों को निकाल के लिये।

५. किसी महान् अनार्य द्वारा पीड़ित किये जाने पर

४१३ क—निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को प्रावृट् ऋतु (प्रथ वर्षा) में ग्रामानुग्राम विहार करना नहीं कल्पता है किन्तु पांच कारणों से कल्पता है।

यथा–१ क्रुद्ध राजा आदि या क्रूर जनों के भय से २ दुष्काल होने पर-यावत्-३-५ किसी महान् अनार्य द्वारा पीड़ा पहुँचाये जाने पर।

ख—वर्षावास रहे हुए निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों को एक गांव से दूसरे गांव जाने के लिए विहार करना नहीं कल्पता है।

पाँच कारणों से विहार करना कल्पता है, यथा–

१. ज्ञान प्राप्ति के लिये,

२. दर्शन-सम्यक्त्व की पुष्टि के लिये।

३. चारित्र की रक्षा के लिये।

४. आचार्य या उपाध्याय के मरने पर अन्य आचार्य या उपाध्याय के आश्रय में जाने के लिये।

५. आचार्यादि द्वारा या अन्यत्र रहे हुए आचार्यादि की सेवा के लिए भेजने पर।

४ —पाँच अनुद्‌घातिक (महा प्रायश्चित देने योग्य) कहे गये हैं, यथा—

१. हस्त कर्म करने वाले को,

२. मैथुन सेवन करने वाले को,

३. रात्रि भोजन करने वाले को,

४. सागारिक (जिसकी आज्ञा से मकान में ठहरे हैं) के घर से लाया हुआ आहार खाने वाले को।

५. राजपिंड खाने वाले को।

५ —पांच कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ अन्तःपुर में प्रवेश करे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करता है। यथा—

१. पर सैन्य से नगर घिर गया हो या आक्रमण के भय से नगर के द्वार बन्द कर दिये गए हों और श्रमण ब्राह्मण आहार-पानी के लिए कहीं आ जा न सकते हों तो श्रमण-निर्ग्रन्थ अन्तःपुर में सूचना देने के लिए जा सकता है।

२. प्रातिहारिक (जो वस्तु लाकर पीछी दी जाय) पीठ (पाट) फलक (सहारा देने की पीटिका) संस्तारक आदि वस्तुयें देने के लिए श्रमण-निर्ग्रन्थ अन्तःपुर में जा सकता है।

३. दुष्ट अश्व या उन्मत्त हस्ति के सामने आने पर भयभीत श्रमण निर्ग्रन्थ अन्तःपुर में जा सकता है।

४. कोई जबरदस्त हाथ पकड़ कर श्रमण निर्ग्रन्थ को अन्तःपुर में ले जावे तो जा सकता है।

५. नगर से बाहर उद्यान में गए हुए श्रमण को यदि अन्तःपुर वाले घेर कर क्रीड़ा करें तो वह श्रमण अन्तःपुर में प्रविष्ट ही माना जाता है।

४१६ क—पांच कारणों से स्त्री पुरुष के साथ सहवास न करने पर भी गर्भ धारण कर लेती है, यथा—

१. जिस स्त्री की योनि अनावृत्त हो और वह जहां पर पुरुष का वीर्य स्खलित हुआ है ऐसे स्थान पर इस प्रकार बैठे कि जिससे शुक्राणु योनि में प्रविष्ट हो जाय तो—

२. शुक्र लगा हुआ वस्त्र योनि में प्रवेश करे तो—

३. जानबूझकर स्वयं शुक्र को योनि में प्रविष्ट करावे तो—

४. दूसरे के कहने से शुक्राणुओं को योनि में प्रवेश करे तो—

५. नदी नाले के शीतल जल में आचमन (शुद्धि के लिए) के लिए यदि कोई स्त्री जावे और उस समय उसकी योनि में शुक्राणु प्रविष्ट हो जाए तो—

ख—पांच कारणों से स्त्री पुरुष के साथ सहवास करने पर भी गर्भ धारण नहीं करती है, यथा—

१. जिसे युवावस्था प्राप्त नहीं हुई है, वह

२. जिसकी युवावस्था वीत गई है, वह

३. जो जन्म से वन्ध्या हो, वह

४. जो रोगी हो, वह

५. जिसका मन शोक से संतप्त हो, वह

ग—पांच कारणों से स्त्री पुरुष के साथ सहवास करने पर भी गर्भ धारण नहीं करती है। यथा—

१. जिसे नित्य रजस्राव होता है, वह

२. जिसे कभी रजस्राव नहीं होता है, वह

३. जिसके गर्भाशय का द्वार रोग से वन्द हो गया हो, वह

४. जिसके गर्भाशय का द्वार रोगग्रसित हो, वह

५. जो अनेक पुरुषों के साथ अनेक बार सहवास करती हो, वह।

घ—पांच कारणों से स्त्री पुरुष के साथ सहवास करने पर भी गर्भ धारण नहीं करती है। यथा—

१. रजस्राव काल में पुरुप के साथ विधिवत् सहवास न करने वाली।

२. योनि-दोप से शुक्राणुओं के नष्ट होने पर।

३. जिसका पित्त प्रधान रक्त हो वह।

४. गर्भ धारण से पूर्व देवता द्वारा शक्ति नष्ट किये जाने पर।

५. संतान होना भाग्य में न हो तो।

४१७ क—पांच कारणों से निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियाँ एक जगह ठहरें, सोयें या बैठें तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता है। यथा—

१. निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियाँ कदाचित् अनेक योजन लम्बी, निर्जन एवं अगम्य अटवी में पहुँच जावे तो—

२. किसी ग्राम, नगर यावत् राजधानी में निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थियों में से किसी एक को ही उपाश्रय मिला हो तो—

३. नागकुमार या सुपर्णकुमारावास में स्थान मिला हो तो—

४. निर्ग्रन्थियों के वस्त्र यदि चोर ले जावें तो—

५. यदि तरुण गुण्डे निर्ग्रन्थियों के साथ बलात्कार करना चाहें तो—

ख—पाँच कारणों से अचेल (अल्पवस्त्रधारी) निर्ग्रन्थ सचेल (सवस्त्र) निर्ग्रन्थियों के साथ एक स्थान में रहे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करता है। यथा—

१. विक्षिप्त चित्त श्रमण के साथ यदि अन्य श्रमण न हो तो—

२. इसी प्रकार हर्षातिरेक से दृप्तचित्त

३. यक्षाविष्ट और

४. वायु रोग से उन्मत्त हो तो—

५. किसी साध्वी का पुत्र दीक्षित हो और उसके साथ यदि अन्य श्रमण न हो तो।

१८ क—पांच आश्रवद्वार कहे गए हैं, यथा—

१. मिथ्यात्व, २. अविरति, ३. प्रमाद, ४. कषाय, ५. अशुभयोग।

ख—पांच संवर द्वार कहे गये हैं,—यथा

१. सम्यकत्व, २. विरति, ३. अप्रमाद, ४. अकषाय, ५. शुभयोग।

ग—पांच प्रकार का दण्ड कहा गया है, यथा—

१. अर्थ दण्ड—स्व-पर के हित के लिए त्रस या स्थावर प्राणी की हिंसा।

२. अनर्थ दण्ड—निरर्थक हिंसा।

३. हिंसा दण्ड—जिसने अतीत में हिंसा की है जो वर्तमान में हिंसा करता है और जो भविष्य में हिंसा करेगा—इस अभिप्राय से जो सर्प या शत्रु की घात करता है।

४. अकस्मात दण्ड—किसी अन्य पर प्रहार किया था किन्तु वध अन्य का हो गया हो।

५. दृष्टिविपर्यास दण्ड—"यह शत्रु है" इस अभिप्राय से कदाचित् मित्र का वध हो जाय।

४१६ क—पांच क्रियायें कही गई हैं, यथा—

१. आरंभिकी, २. पारिग्रहिकी, ३. मायाप्रत्ययिका, ४. अप्रत्याख्यान क्रिया, ५. मिथ्या दर्शन प्रत्यया।

ख—मिथ्या दृष्टि नैरयिकों के पाँच क्रियायें कहीं गई हैं, यथा—

१. आरंभिकी-यावत्, २-५ मिथ्यादर्शन प्रत्यया।

इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त सभी मिथ्यादृष्टियों को पांच क्रियायें कही गई हैं।

विशेष—विकलेन्द्रिय (बेन्द्रिय, तेन्द्रिय और चउरिन्द्रिय) मिथ्यादृष्टि नहीं होते हैं। शेष पूर्ववत् हैं।

ग—पांच क्रियायें कही गई हैं, यथा—

१. कायिकी, २. आधिकरणिकी, ३. प्राद्वेषिकी, ४. पारितापनिकी, ५. प्राणातिपातिकी।

नैरयिकों से लेकर वैमानिक पर्यन्त ये पांच क्रियायें हैं।

घ—पांच क्रियायें कही गई हैं, यथा—

१. आरंभिकी-यावत्, २-५. मिथ्यादर्शन प्रत्यया

नैरयिकों से लेकर वैमानिक पर्यन्त ये पांचों क्रियायें हैं।

ङ—पांच क्रियायें कही गई हैं, यथा—

१. दृष्टिजा, २. पृष्टिजा, ३. प्रातीत्यिकी,
४. सामंतोपनिपातिकी, ५. स्वाहस्तिकी।

च—नैरयिकों से लेकर वैमानिक पर्यन्त ये पांच क्रियायें हैं।

छ—पांच क्रियायें कही गई हैं, यथा—

१. नैसृष्टिकी, २. आज्ञापानिकी, ३. वैदारणिकी,
४. अनाभोग प्रत्यया, ५. अनवकांक्षाप्रत्यया।

ज—नैरयिकों से लेकर वैमानिक पर्यन्त ये पांच क्रियायें हैं।

झ—पांच क्रियायें कही गई हैं, यथा—

१. प्रेम प्रत्यया, २. द्वेष प्रत्यया, ३. प्रयोग क्रिया,
४. समुदान क्रिया, ५. ईर्यापथिकी।

ञ—ये पांचों क्रियायें केवल एक मनुष्य दण्डक में हैं। शेष दण्डकों में नहीं हैं।[1]

४२० परिज्ञा पांच प्रकार की हैं,
यथा— १. उपधि परिज्ञा, २. उपाश्रय परिज्ञा, ३. कषाय परिज्ञा, ४. योग परिज्ञा, ५. भक्त परिज्ञा।

४२१ व्यवहार पांच प्रकार का है, यथा :—
१. आगम व्यवहार[2], २. श्रुत व्यवहार[3], ३. आज्ञा व्यवहार, ४. धारणा व्यवहार[4], ५. जीत व्यवहार।
१. किसी विवादास्पद विषय में जहाँ तक आगम से कोई निर्णय निकलता हो वहां तक आगम के अनुसार ही व्यवहार करना चाहिये।

---

१ ईर्यापथिक क्रिया केवल उपशान्त मोह आदि तीन गुण स्थानकों में ही सम्भव है। ये गुणस्थान केवल मनुष्य दण्डक में ही होते हैं।

२ केवलज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चौदह पूर्वधारी, दशपूर्वधारी, और नवपूर्वधारी का व्यवहार "आगम व्यवहार" कहा जाता है।

३ नव पूर्व से न्यून ज्ञान वाले का व्यवहार "श्रुत व्यवहार" कहा जाता है।

४ गीतार्थ ने पहले किसी को प्रायश्चित दिया हो उसे धारे—याद रखे और उसके अनुसार अन्य को प्रायश्चित दे, वह धारणा व्यवहार कहा जाता है।

२. जहाँ किसी आगम से निर्णय न निकलता हो वहां श्रुत से व्यवहार करना चाहिए।

३. जहाँ श्रुत से निर्णय न निकलता हो वहां गीतार्थ की आज्ञा के अनुसार व्यवहार करना चाहिये।

४. जहां गीतार्थ की आज्ञा से समस्या हल न होती हो वहां धारणा के अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

५. जहां धारणा से समस्या न सुलझती हो वहां जीत (गीतार्थ पुरुषों की परम्परा द्वारा अनुसरित) हार के अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

इस प्रकार आगमादि से व्यवहार करना चाहिए।

प्रश्न—हे भगवन्! श्रमण निर्ग्रन्थ आगम व्यवहार को ही प्रमुख मानने वाले हैं फिर ये पाँच व्यवहार क्यों कहे गये हैं?

उत्तर—इन पांच व्यवहारों में से जहां जिस व्यवहार से समस्या सुलझती हो वहां उस व्यवहार से प्रवृत्ति करने वाला श्रमण निर्ग्रन्थ आज्ञा का आराधक होता है।

४२२ क—सोये हुये संयत मनुष्यों के पांच जागृत हैं,
यथा—शब्द-यावत्-स्पर्श।

ख—जागृत संयत मनुष्यों के पांच सुप्त हैं,
यथा—शब्द-यावत्-स्पर्श।

ग—सुप्त या जागृत असंयत मनुष्यों के पांच जागृत हैं, यथा—शब्द-यावत्-स्पर्श ।

४२३ क—पांच कारणों से जीव कर्म-रज ग्रहण करता है, यथा—प्राणातिपात से-यावत्–परिग्रह से ।

ख—पांच कारणों से जीव कर्म-रज से मुक्त होता है, यथा—प्राणातिपात विरमण से — यावत्-परिग्रह विरमण से ।

४२४ पांच मास वाली पांचवी भिक्षु-प्रतिमा धारण करने वाले अणगार को पांच दत्ति आहार की और पांच-पांच दत्ति पानी की लेना कल्पता है ।

४२५ क—पांच प्रकार के उपघात (आहारादि की अशुद्धि) हैं । यथा—१ उद्गमोपघात–गृहस्थ द्वारा लगने वाले आधा कर्म आदि सोलह दोष ।

२. उत्पादनोपघात—साधु द्वारा लगने वाले धात्री आदि सोलह दोष ।

३. एषणोपघात—साधु और गृहस्थ द्वारा लगने वाले शंकितादि दश दोष ।

४. परिकर्मोपघात—वस्त्र-पात्र के छेदन या सिलाई आदि में मर्यादा का उल्लंघन ।

५. परिहरणोपघात—एकाकी विचरने वाले साधु के वस्त्र-पात्रादि उपकरणों को उपयोग में लेना ।

ख—पांच प्रकार की विशुद्धि कही गई है,

यथा—१. उद्गम विशुद्धि, २ उत्पादन विशुद्धि, ३. एषणा विशुद्धि, ४ परिकर्म विशुद्धि, ५ परिहरण विशुद्धि। पूर्वोक्त उद्गमादि दोषों का सेवन न करना विशुद्धि है।

४२६ क—पांच कारणों से जीव दुर्लभ बोधी रूप कर्म बांधते हैं,

यथा—१. अरिहन्तों का अवर्णवाद[1] बोलने पर,

२. अरिहन्त कथित धर्म का अवर्णवाद बोलने पर,

३. आचार्यों या उपाध्यायों का अवर्णवाद बोलने पर,

४. चतुर्विध संघ का अवर्णवाद बोलने पर,

५. उत्कृष्ट तप और ब्रह्मचर्य का पालन करने से हुये देवों का अवर्णवाद बोलने पर।

ख—पांच कारणों से जीव सुलभ बोधि रूप कर्म बांधते हैं।

यथा—१-५ अरिहन्तों का गुणानुवाद करने पर-यावत्-उत्कृष्ट तप और ब्रह्मचर्य के पालने से हुए.... देवों के गुणानुवाद करने पर।

४२७ क—प्रतिसंलीन[2] पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय प्रतिसंलीन-यावत्-२-४

---

१ अवर्णवाद—निन्दा।

२ प्रतिसंलीन—इन्द्रियविजयी।

५. स्पर्शेन्द्रिय प्रतिसंलीन।

ख—अप्रतिसंलीन पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय अप्रतिसंलीन-यावत्-२-४

५. स्पर्शेन्द्रिय अप्रतिसंलीन।

ग—संवर[1] पाँच प्रकार के हैं,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय संवर-यावत्-२-४

५. स्पर्शेन्द्रिय संवर।

घ—असंवर[2] पांच प्रकार के हैं,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय असंवर-यावत्-
स्पर्शेन्द्रिय असंवर।

४२८ —संयम पांच प्रकार का है,

यथा—१. सामायिक संयम, २. छेदोपस्थापनीय संयम, ३. परिहार विशुद्धि संयम, ४. सूक्ष्म संपराय संयम, ५. यथाख्यात चारित्र संयम।

४२९ क—एकेन्द्रिय जीवों की हिंसा न करने वाले को पांच प्रकार का संयम होता है,

यथा—१-५ पृथ्वीकायिक संयम-यावत्-
वनस्पतिकायिक संयम।

---

१ संवर—आत्मा के साथ कर्ममल का बंध न हो—ऐसा आचरण।

२ असंवर-आश्रव-आत्मा के साथ कर्म बंध हो-ऐसा आचरण।

ख—एकेन्द्रिय जीवों की हिंसा करने वाले को पांच प्रकार का असंयम होता है,

यथा—१-५ पृथ्वी कायिक असंयम-यावत्-
वनस्पतिकायिक असंयम।

० क—पञ्चेन्द्रिय जीवों की हिंसा न करने वालों के पांच प्रकार का संयम होता है,

यथा-१ श्रोत्रेन्द्रिय संयम-यावत-२-४

५ स्पर्शेन्द्रिय संयम

ख—पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा करने वालों के पांच प्रकार का असंयम होता है,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय असंयम-यावत्-२-४
५ स्पर्शेन्द्रिय असंयम।

ग—सभी प्राण, भूत, सत्त्व और जीवों की हिंसा न करने वालों के पांच प्रकार का संयम होता है,

यथा—१-५ एकेन्द्रिय संयम-यावत्-
पंचेन्द्रिय संयम।

घ—सभी प्राण, भूत, सत्त्व और जीवों की हिंसा करने वालों के पांच प्रकार का असंयम होता है,

यथा—१-५ एकेन्द्रिय असंयम-यावत्
पंचेन्द्रिय असंयम।

४३१ —तृणवनस्पति कायिक जीव पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. अग्रबीज, २. मूल बीज, ३. पर्व बीज,
४. स्कन्ध बीज, ५. बीज रुह ।

४३२ —आचार पांच प्रकार का है,
यथा—१. ज्ञानाचार, २. दर्शनाचार, ३. चारित्रा-
चार, ४. तपाचार, ५. वीर्याचार ।

४३३ क—आचार प्रकल्प[1] पांच प्रकार का है,
यथा—१. मासिक उद्घातिक-लघुमास[2],
२. मासिक अनुद्घातिक—गुरुमास[3],
३. चातुर्मासिक उद्घातिक—लघु चौमासी,
४. चातुर्मासिक अनुद्घातिक—गुरु चौमासी,
५. आरोपणा[4]—प्रायश्चित में वृद्धि करना ।

---

१ आचार प्रकल्प—निशीथ सूत्रोक्त प्रायश्चित्त ।

२ लघुमास—मासिक तपश्चर्यारूप प्रायश्चित्त में कुछ अंश कम करना ।

३ गुरुमास—मासिक तपश्चर्यारूप प्रायश्चित में कुछ भी कमी न करना ।

४ आरोपणा—गुरु के समक्ष यदि दोष छिपावे तो दोष के प्रायश्चित के साथ-साथ माया दोष का जो प्रायश्चित और अधिक बढ़ाया जाय तो वह आरोपणा है ।

ख—आरोपणा पांच प्रकार की है,

यथा—१. प्रस्थापिता—आरोपणा करने के गुरुमास आदि प्रायश्चित्त रूप तपश्चर्या का प्रारम्भ करना।

२. स्थापिता—गुरुजनों की वैयावृत्य करने के लिये आरोपित प्रायश्चित के अनुसार भविष्य में तपश्चर्या करना।

३. कृत्स्ना—वर्तमान जिन शासन में उत्कृष्ट तप ६ मास का माना गया है अतः इससे अधिक प्रायश्चित न देना।

४. अकृत्स्ना—यदि दोष के अनुसार प्रायश्चित देने पर छः मास से अधिक प्रायश्चित आता हो तथापि छः मास का ही प्रायश्चित देना।

५. हाडहड़ा—लघुमास आदि प्रायश्चित शीघ्रतापूर्वक देना।

४३४ क—जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत के पूर्व में सीता महानदी के उत्तर में पांच वक्षस्कार पर्वत हैं,

यथा—१. माल्यवंत, २. चित्रकूट, ३. पद्मकूट, ४. नलिनकूट, ५. एक शैल।

ख—जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत के पूर्व में सीता महानदी के दक्षिण में पांच वक्षस्कार पर्वत हैं,

यथा—१. त्रिकूट, २. वैश्रमणकूट, ३. अंजन, ४. मातंजन, ५. सोमनस।

ग—जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत के पश्चिम में सीता महानदी के दक्षिण में पांच वक्षस्कार पर्वत हैं

यथा—१. विद्युत्प्रभ, २. अंकावती, ३. पद्मावती,
४. आशिविष, ५. सुखावह ।

घ—जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत के पश्चिम में सीता महानदी
के उत्तर में पांच वक्षस्कार पर्वत हैं,

यथा—१. चन्द्रपर्वत, २. सूर्य पर्वत, ३. नाग पर्वत,
४. देव पर्वत, ५. गंधमादन पर्वत ।

ङ—जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत के दक्षिण में देव कुरुक्षेत्र में
पांच महाद्रह हैं,

यथा—१. निषधद्रह, २. देवकुरुद्रह, ३. सूर्यद्रह,
४. सुलसद्रह, ५. विद्युत्प्रभद्रह ।

च—जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत के के दक्षिण में उत्तर कुरुक्षेत्र
में पाँच महाद्रह हैं,

यथा—१. नीलवंतद्रह, २. उत्तर कुरुद्रह, ३, चन्द्रद्रह
४. एरावणद्रह, ५. माल्यवंतद्रह ।

छ—सीता, सीतोदा महा नदी की ओर तथा मेरु पर्वत
की ओर सभी वक्षस्कार पर्वत ५०० योजन ऊँचे हैं,
और ५०० गाउ भूमि में गहरे हैं ।

ज-ट—धातकीखण्ड के पूर्वार्ध में मेरु पर्वत के पूर्व में,
सीता महानदी के उत्तर में पाँच वक्षस्कार पर्वत
है [जम्बूद्वीप के समान] [ख से छ तक]

ण-न—धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध में [जम्बूद्वीप के समान]

प-य—पुष्करवरद्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में भी जम्बूद्वीप के समान वक्षस्कार पर्वत और द्रहों की ऊँचाई आदि कहना चाहिये।

र—समय क्षेत्र में पांच भरत, पांच ऐरवत-यावत्-पांच मेरु और पांच मेरु चूलिकायें।[1]

३५ क—कौशलिक अर्हन्त ऋषभदेव पांच सौ धनुष के ऊंचे थे।

ख—चक्रवर्ती महाराजा भरत पांच सौ धनुष के ऊंचे थे।

ग—बाहुबली अणगार भी इतने ही ऊंचे थे।

घ—ब्राह्मी नाम की आर्या पांच सौ धनुष ऊंची थी।

ङ—इसी प्रकार सुन्दरी नाम की आर्या भी इतनी ही ऊंची थी।

३६ पांच कारणों से सोया हुआ मनुष्य जागृत होता है, यथा—१. शब्द सुनने से, २. हाथ आदि के स्पर्श से, ३. भूख लगने से, ४. निद्रा क्षय से, ५. स्वप्न दर्शन से।

---

1. सूचना–चतुर्थ स्थान के द्वितीय उद्देशक सूत्र के समान यहाँ कहें।

विशेष सूचना–यहाँ इषुकार पर्वत नहीं है।

४३७ —पांच कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ निर्ग्रन्थी को पकड़ कर रखे या सहारा दे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं करता है।

१. साध्वी को यदि कोई उन्मत्त पशु या पक्षी मारता हो (उस समय अन्य साध्वी समीप न हो तो)

२. दुर्ग या विषम मार्ग से साध्वी प्रस्खलित हो या गिर रही हो।

३. निर्ग्रन्थी कीचड़ में फस गई हो या लिपट गई हो।

४. निर्ग्रन्थी को नाव पर चढ़ाना हो या उतारना हो।

५. जो निर्ग्रन्थी विक्षिप्त चित्त, क्रुद्ध, यक्षाविष्ट, उन्मत्त, उपसर्ग प्राप्त, कलह से व्याकुल, प्रायश्चित-युक्त-यावत्-भक्त-पान प्रत्याख्यात हो अथवा पति या चोर द्वारा संयम से च्युत की जा रही हो।

४३८ —गण में आचार्य और उपाध्याय के पांच अतिशय। यथा—१ आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय में प्रवेश करके धूल भरे पैरों को दूसरे साधुओं से झटकवावे या साफ करावे तो भगवान् की आज्ञा का उल्लंघन नहीं होता।

२. आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय में मल-मूत्र का

उत्सर्ग करे या उसकी शुद्धि करे तो भगवान् की आज्ञा का उल्लंघन नहीं होता।

३. आचार्य और उपाध्याय इच्छा हो तो वैयावृत्य करे, इच्छा न हो तो न करे[1] फिर भी आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता।

४. आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय में एक या दो रात अकेले रहे तो भी आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता।

५. आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय के बाहर एक या दो रात अकेले रहे तो भी आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता।

४३९ —पांच कारणों से आचार्य और उपाध्याय गण छोड़कर चले जाते हैं।

१ गण में आचार्य और उपाध्याय की आज्ञा या निषेध[2] का सम्यक् प्रकार से पालन न होता हो।

२. गण में वय ज्येष्ठ और ज्ञान ज्येष्ठ का वन्दनादि व्यवहार सम्यक् प्रकार से पालन करवा न सके तो।

३. गण में श्रुत की वाचना यथोचित रीति से न दे सके तो।

---

१ आहार आदि का वितरण करे या न करे।

२ मूल में "धारणा" शब्द है। टीकाकार ने इसका अर्थ-अकृत्य से निवृत्ति-किया है।

४. स्वगण की या परगण की निर्ग्रन्थी में आसक्त हो जाय तो।

५. मित्र या स्वजन यदि गण छोड़कर चला जाय तो उसे पुनः स्वगण में स्थापित करने के लिए आचार्य या उपाध्याय गण छोड़कर चला जाय तो।

४४० पांच प्रकार के ऋद्धिमान् मनुष्य हैं,
यथा—१. अर्हन्त, २. चक्रवर्ती, ३. बलदेव, ४. वासुदेव, ५. भावितात्मा अणगार।

पंचम स्थान-द्वितीय उद्देशक समाप्त

पञ्चम स्थान-तृतीय उद्देशक

४४१ क—पांच अस्तिकाय हैं:—
यथा—१. धर्मास्तिकाय. २. अधर्मास्तिकाय, ३. आकाशास्तिकाय, ४. जीवास्तिकाय, ५. पुद्गलास्तिकाय।

ख धर्मास्तिकाय अवर्ण, अगंध, अरस, अस्पर्श, अरूपी, अजीव, शास्वत, अवस्थित लोकद्रव्य हैं।
वह पांच प्रकार का है,
यथा—१. द्रव्य से, २. क्षेत्र से, ३. काल से, ४. भाव से और ५. गुण से।
१. द्रव्य से—धर्मास्तिकाय एक द्रव्य है,

२. क्षेत्र से—लोक प्रमाण है,

३. काल से—अतीत में कभी नहीं था—ऐसा नहीं,
वर्त्तमान में नहीं हैं—ऐसा नहीं,
भविष्य में कभी नहीं होगा—ऐसा भी नहीं।

धर्मास्तिकाय अतीत में था, वर्तमान में हैं और भविष्य में भी रहेगा। वह ध्रुव, नियत, शास्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य है।

४. भाव से–अवर्ण, अगंध, अरस, और अस्पर्श है।

५. गुण से–गमन सहायक गुण है।

ग—अधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय के समान पांच प्रकार का है।

विशेष सूचना–गुण से-स्थिति सहायक गुण।

घ—आकाशास्तिकाय धर्मास्तिकाय के समान पांच प्रकार का है।

विशेष सूचना–क्षेत्र से-आकाशास्तिकाय लोकालोक प्रमाण है। गुण से-अवगाहन गुण है।

ङ—जीवास्तिकाय धर्मास्तिकाय के समान पांच प्रकार का है।

विशेष सूचना द्रव्य—से जीवास्तिकाय अनन्तजीव द्रव्य हैं। गुण से-उपयोग गुण हैं।

च—पुद्गलास्तिकाय पांच वर्ण, पांच रस, दो गंध और

आठ स्पर्श युक्त है। रूपी, अजीव, शास्वत, अवस्थित-यावत्-गुण से।

१. द्रव्य से---पुद्गलास्तिकाय अनन्त द्रव्य हैं।

२. क्षेत्र से---लोक प्रमाण हैं।

३. काल से---अतीत में कभी नहीं था--ऐसा नहीं-यावत् नित्य है।

४. भाव से—वर्ण, गंध, रस और स्पर्श युक्त है।

५. गुण से—ग्रहण गुण है।[1]

४४२ —गति पांच हैं,

यथा—१ नरक गति, २. तिर्यंच गति, ३. मनुष्य गति. ४. देवगति, ५. सिद्ध गति।

४४३ क—पांच इन्द्रियों के पांच विषय हैं,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय का विषय 'शब्द'--यावत् २-३-४-५ स्पर्शन्द्रिय का विषय 'स्पर्श'।

ख—मुंड[2] पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय मुण्ड-यावत्—२-३-४ ५. स्पर्शेन्द्रिय मुण्ड।

---

१. पुद्गलास्तिकाय औदारिक शरीर आदि से ग्राह्य है तथा इन्द्रियों से ग्राह्य है अतः ग्रहण गुण है।

२. मुंड—रागादिभाव दूर करना।

ग अथवा मुंड पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. क्रोधमुंड[1], २. मान मुंड, ३. माया मुंड, ४. लोभमुंड, ५. शिर मुंड[2]।

४४४ क—अधोलोक में पांच बादर (स्थूल) कायिक जीव हैं,
यथा—१. पृथ्वीकायिक, २. अप्‌कायिक, ३. वायु कायिक, ४. वनस्पतिकायिक, ५. औदारिक शरीर वाले-त्रस प्राणी।

ख—ऊर्ध्व लोक में अधोलोक के समान पांच प्रकार के बादर कायिक जीव हैं,

ग—तिरछा लोक में पांच प्रकार के बादर कायिक जीव हैं, यथा १. एकेन्द्रिय-यावत्--२-४
५. पंचेन्द्रिय।

घ—पांच प्रकार के बादर तेजस्कायिक जीव हैं।
यथा—१. इंगाल—अंगारे।
२. ज्वाला—प्रज्वलित अग्नि।
३. मुर्मुर—राख से मिश्रित अग्नि।
४. अर्चि—शिखा सहित अग्नि।
५. अलात—जलती हुई लकड़ी या छाणा।

---

१ क्रोध मुंड—क्रोध दूर करना।
२ शिर मुंड—लोच करना।

ङ—पांच प्रकार के बादर वायुकायिक जीव हैं,

यथा—१. पूर्व दिशा का वायु, २. पश्चिम दिशा का वायु, ३. दक्षिण दिशा का वायु, ४. उत्तर दिशा का वायु, ५. विदिशाओं का वायु।

च—पांच प्रकार के अचित्त वायुकायिक जीव हैं,

यथा—१. आक्रान्त—दबाने से पैदा होने वाला वायु।

२. ध्मात—धमण से पैदा होने वाला वायु।

३. पीड़ित—वस्त्र के नीचोड़ने से होने वाला वायु।

४. शरीरानुगत—डकार या श्वासादि रूप वायु।

५. सम्मूच्छिम—पंखा आदि से उत्पन्न होने वाला वायु।

४४५ क—निर्ग्रन्थ पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. पुलाक[1], २. बकुश[2], ३. कुशील, ४. निर्ग्रन्थ, ५. स्नातक।

ख—पुलाक पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. ज्ञान पुलाक, २. दर्शन पुलाक, ३. चारित्र पुलाक, ४. लिंग पुलाक, ५. यथासूक्ष्म पुलाक।

ग—बकुश पांच प्रकार के हैं।

---

१ पुलाक—अतिचार लगाने वाला निग्रन्थ।

२ बकुश—दोष लगाने वाला निर्ग्रन्थ।

यथा—१. आभोग बकुश, २. अनाभोग बकुश, ३. संवृत बकुश, ४. असंवृत बकुश. ५. यथा सूक्ष्म बकुश ।

घ—कुशील पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. ज्ञान कुशील, २. दर्शन कुशील, ३. चारित्र कुशील, ४. लिंग कुशील, ५. यथा सूक्ष्म कुशील ।

ङ—निर्ग्रन्थ पांच प्रकार हैं,

यथा—१. प्रथम समय निर्ग्रन्थ,

२. अप्रथम समय निर्ग्रन्थ

३. चरम समय निर्ग्रन्थ,

४. अचरम समय निर्ग्रन्थ,

५. यथासूक्ष्म निर्ग्रन्थ ।

च—स्नातक पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. अच्छवी—शरीर रहित ।

२. अशवल—अतिचार रहित ।

३. अकर्मांश—कर्म रहित ।

४. शुद्ध ज्ञान—दर्शन के धारक अर्हन्त जिन केवली ।

५. अपरिश्रावी—तीनों योगों का निरोध करनेवाला अयोगी ।

४४६ क—निर्ग्रन्थों और निर्ग्रन्थियों को पांच प्रकार के वस्त्रों का उपभोग या परिभोग कल्पता है,

यथा—१. जांगमिक[1] कंबल आदि।

२. भांगमिक—अलसी का वस्त्र।

३. सानक—शण के सूत्र का वस्त्र।

४. पोतक—कपास का वस्त्र।

५. तिरीडपट्ट[2]—वृक्ष की छाल का वस्त्र।

ख—निर्ग्रन्थों और निर्ग्रन्थियों को पांच प्रकार के रजोहरणों का उपभोग या परिभोग कल्पता है।

यथा—१. औणिक—ऊन का बना हुआ।

२. औष्ट्रिक—ऊँट के बालों का बना हुआ।

३. शानक—शण का बना हुआ।

४. बल्वज—घास की छाल से बना हुआ।

५. मुंज का बना हुआ।

४४७ —धार्मिक पुरुष के पांच आलम्बन स्थान हैं,

यथा—१. छकाय, २. गण, ३. राजा, ४. गृहपति, ५. शरीर।

---

१. जंगम—त्रसजीव भेड़, बकरी आदि की ऊन से बना हुआ।
२ तिरीड—नामक वृक्ष की छाल से बना हुआ।

४४८ —निधि पांच प्रकार की है,

यथा—१. पुत्रनिधि, २. मित्रनिधि, ३. शिल्पनिधि, ४. धननिधि, ५. धान्य निधि ।

४४९ —शौच पांच प्रकार का है,

यथा—१. पृथ्वी शौच, २. जल शौच,

३. अग्नि शौच, ४. मंत्र शौच,

५. ब्रह्म शौच ।

४५० क—इन पांच स्थानों को छद्मस्थ पूर्ण रूप से न जानता है और न देखता है ।

यथा—१. धर्मास्तिकाय, २. अधर्मास्तिकाय

३. आकाशास्तिकाय, ४. शरीर रहित जीव,

५. परमाणु पुद्गल ।

ख—इन्हीं पांच स्थानों को केवलज्ञानी पूर्णरूप से जानते हैं और देखते हैं,

यथा—१-५ धर्मास्तिकाय-यावत्-परमाणु पुद्गल ।

४५१ —ऊर्ध्वलोक में पाँच महाविमान हैं,

यथा—१. विजय, २. वैजयंत, ३. जयंत, ४. अपराजित, ५. सर्वार्थ सिद्ध महाविमान ।

४५२ —पुरुष पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. ह्री सत्त्व-लज्जा से धैर्य रखने वाला,
२. ह्री मन सत्त्व-लज्जा से मन में धैर्य रखने वाला,
३. चल सत्त्व—अस्थिर चित्त वाला,
४. स्थिर सत्त्व-स्थिर चित्त वाला,
५. उदात्त सत्त्व-बढ़ते हुए धैर्य वाला।

४५३ क—मत्स्य पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. अनुश्रोतचारी—प्रवाह के अनुसार चलने वाला,
२. प्रतिश्रोतचारी—प्रवाह के सामने जाने वाला।
३. अंतचारी—किनारे किनारे चलने वाला,
४. प्रान्तचारी—प्रवाह के मध्य में चलने वाला,
५. सर्वचारी—सर्वत्र चलने वाला।

ख—इसी प्रकार भिक्षु पांच प्रकार के हैं,
यथा—१-५ अनुश्रोतचारी-यावत्-
सर्वश्रोतचारी।

१. उपाश्रय से भिक्षाचर्या प्रारम्भ करने वाला,
२. दूर से भिक्षाचर्या प्रारम्भ करके उपाश्रय तक आने वाला,
३. गांव के किनारे बसे हुए घरों से भिक्षा लेने वाला,

४. गांव के मध्य में बसे हुए घरों से भिक्षा लेने वाला,

५. सभी घरों से भिक्षा लेने वाला।

५४ —वनीपक-याचक पांच प्रकार के हैं,

यथा—अतिथि वनीपक, २. दरिद्री वनीपक,

३. ब्राह्मण वनीपक, ४. श्वान वनीपक,

५. श्रमण वनीपक।

५५ —पांच कारणों से अचेलक प्रशस्त होता है,

यथा—१. अल्पप्रत्युपेक्षा—अल्प उपधि होने से अल्प-प्रतिलेखन होता है।

२. प्रशस्त लाघव—अल्प उपधि होने से अल्पराग होता है।

३. वैश्वासिक रूप—विश्वास पैदा करने वाला वेष।

४. अनुज्ञात तप—जिनेश्वर सम्मत अल्प उपाधि रूप तप।

५. विपुल इन्द्रिय निग्रह—इन्द्रियों का महान् निग्रह।

५६ —उत्कट पुरुष पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. दण्ड उत्कट—अपराध करने पर कठोर दण्ड देने वाला।

२. राज्योत्कट—ऐश्वर्य में उत्कृष्ट।

३. स्तेन उत्कट—चोरी करने में उत्कृष्ट ।

४. देशोत्कट—देश में उत्कृष्ट ।

५. सर्वोत्कट—सब में उत्कृष्ट ।

४५७ —समितियां पांच हैं,
यथा १. इर्या समिति यावत्-२-४,
५. परिष्ठिापनिका समिति ।

४५८ क—संसारी जीव पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. एकेन्द्रिय-यावत्-२-४
५. पंचेन्द्रिय ।

ख—एकेन्द्रिय जीव पांच गतियों (स्थानों) में पांच गतियों (स्थानों) से आकर उत्पन्न होते हैं ।
१-५. एकेन्द्रिय जीव एकेन्द्रियों में एकेन्द्रियों से-यावत्-पंचेन्द्रियों से आकर उत्पन्न होता है ।

ग—१-५. एकेन्द्रिय एकेन्द्रियपन को छोड़कर एकेन्द्रिय रूप में-यावत्-पंचेन्द्रिय रूप में उत्पन्न होता है ।

घ—द्वीन्दिय जीव पांच स्थानों में पांच स्थानों से आकर उत्पन्न होते हैं ।

ङ—१-५. द्वीन्दिय जीव एकेन्द्रियों में यावत्-पंचेन्द्रियों में आकर उत्पन्न होते हैं ।

च—१-५. त्रीन्दिय जीव पांच स्थानों में पांच स्थानों से आकर उत्पन्न होते हैं ।

छ—१-५. त्रीन्दिय जीव एकेन्द्रियों में-यावत्-पंचेन्द्रियों में आकर उत्पन्न होते हैं।

ज—१-५ त्रीन्दियजीव एकेन्द्रियों में-यावत् पंचेन्द्रियों में आकर उत्पन्न होते हैं।

झ—१-५ चतुरिन्द्रिय जीव पांच स्थानों में पांच स्थानों से आकर उत्पन्न होते हैं।

ञ—१-५ चतुरिन्द्रिय जीव एकेन्द्रियों में-यावत्-पञ्चेन्द्रियों में आकर उत्पन्न होते हैं।

ट—१-५ पञ्चेन्द्रिय जीव पांच स्थानों में पांच स्थानों से आकर उत्पन्न होते हैं।

ठ—१-५ पञ्चेन्द्रिय जीव एकेन्द्रियों में-यावत्-पञ्चेन्द्रियों में आकर उत्पन्न होते हैं।

ड—सभी जीव पांच प्रकार के हैं,
यथा—१-५ क्रोध कषायी-यावत्-अकषायी।

ढ—अथवा सभी जीव पांच प्रकार के हैं,
यथा-१-५ नैरयिक-यावत्-सिद्ध।

४५९ प्र०—हे भगवन् ! चणा, मसूर, तिल, मूंग, उड़द, वाल, कुलथ, चँवला, तुवर और कालाचणा कोठे में रखे हुए इन धान्यों की कितनी स्थिति है ?

उ०—हे गौतम ! जघन्य अन्तमुहूर्त उत्कृष्ट पांच वर्ष।
इसके पश्चात् योनि (जीवोत्पत्तिस्थान) कुमला जाती है और शनैः शनैः योनि विच्छेद (उत्पत्ति स्थान निर्जीव) हो जाता है।

४६० क—संवत्सर पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. नक्षत्र संवत्सर, २. युग संवत्सर,
३. प्रमाण संवत्सर, ४. लक्षण संवत्सर,
५. शनैश्चर संवत्सर।

ख—युग संवत्सर पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. चंद्र, २. चंद्र, ३. अभिवर्धित, ४. चंद्र
५. अभिवर्धित।

ग—प्रमाण संवत्सर पांच प्रकार का है,
यथा—१. नक्षत्र संवत्सर, २. चंद्र संवत्सर,
३. ऋतु संवत्सर, ४. आदित्य संवत्सर,
५. अभिवर्धित संवत्सर।

घ—लक्षण संवत्सर पांच प्रकार का है,
यथा—१. जिस तिथि में जिस नक्षत्र का योग होना चाहिए उस नक्षत्र का उसी तिथि में योग होता है[1] जिसमें रितुओं का परिणमन क्रमशः होता रहता

---

१. यथा-कार्तिक में कृत्तिका, मृगसिर में आर्द्रा, पोष में पुष्य-इत्यादि।

है, जिसमें सरदी और गरमी का प्रमाण बराबर रहता है, और जिसमें वर्षा अच्छी होती है वह नक्षत्र संवत्सर कहा जाता है।

२. जिसमें सभी पूर्णिमाओं में चन्द्र का योग रहता है, जिसमें नक्षत्रों की विषम गति होती है[1] जिसमें अतिशीत और अति ताप पड़ता है, और जिसमें वर्षा अधिक होती है वह चंद्र संवत्सर होता है।

३. जिसमें वृक्षों का यथासमय परिणमन नहीं होता है, रितु के विना फल लगते हैं, वर्षा भी नहीं होती है उसे कर्म संवत्सर या रितु संवत्सर कहते हैं।

४. जिसमें पृथ्वी जल, पुष्प और फलों को सूर्य रस देता है और थोड़ी वर्षा से भी पाक अच्छा होता है उसे आदित्य संवत्सर कहते हैं।

५. जिसमें क्षण, लव, दिवस और ऋतु सूर्य से तप्त रहते हैं, और जिसमें सदा धूल उड़ती रहती है। उसे अभिवर्धित संवत्सर कहते हैं।

६१ शरीर से जीव के निकलने के पांच मार्ग हैं, यथा १. पैर, २. उरू (साथल), ३. वक्षस्थल,

---

१ कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका के बदले भरणी अथवा रोहिणी होता है।

४. शिर, ५. सर्वाङ्ग ।

१. पैरों से निकलने पर जीव नरकगामी होता है,

२. उरू से निकलने पर जीव तिर्यंचगामी होता है,

३. वक्षस्थल से निकलने पर जीव मनुष्य गति प्राप्त होता है ।

४. शिर से निकलने पर जीव देवगतिगामी होता है,

५. सर्वांग से निकलने पर जीव मोक्षगामी होता है ।

४६२ क—छेदन पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. उत्पाद छेदन–नवीन पर्याय की अपेक्षा से पूर्वपर्याय का छेदन ।

२. व्यय छेदन–पूर्व पर्याय का व्यय-छेदन ।

३. बंध छेदन–कर्मबंध का छेदन ।

४. प्रदेश छेदन–जीव द्रव्य के बुद्धि से कल्पित प्रदेश ।

५. द्विधाकार छेदन–जीवादिद्रव्यों के दो विभाग करना ।

ख—आनन्तर्य पांच प्रकार का है,

यथा–१. उत्पादानन्तर्य–जीवों की निरन्तर उत्पत्ति ।

२. व्ययानन्तर्य–जीवों का निरन्तर मरण ।

३. प्रदेशानन्तर्य–प्रदेशों का निरन्तर अविरह[3] ।

---

१. जीव प्रदेशों के साथ कर्मों का निरन्तर अविरह ।

(क) भव्य के संसारी अवस्था में निरन्तर अविरह रहता है ।

४. समयानन्तर्य—समय का निरन्तर अविरह ।

५. सामान्यानन्तर्य—उत्पाद आदि विशेष के अभाव में जो निरन्तर अविरह।

ग—अनन्त पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. नाम अनन्त, २. स्थापना अनन्त, ३. द्रव्य अनन्त, ४. गणना अनन्त, ५. प्रदेशानन्त ।

घ—अनन्तक पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. एकतः अनन्तक—दीर्घता की अपेक्षा जो अनन्त है। एक श्रेणी का क्षेत्र।

२. द्विधा अनन्तक—लम्बाई और चौड़ाई की अपेक्षा से जो अनन्त हो।

३. देश विस्तार अनन्तक—रूचक प्रदेश से पूर्व आदि किसी एक दिशा में देश का जो विस्तार हो।

४. सर्वविस्तार अनन्तक—अनन्तप्रदेशी सम्पूर्ण आकाश ।

५. शास्वतानन्तक—अनन्त समय की स्थिति वाले जीवादि द्रव्य ।

४६३ —ज्ञान पांच प्रकार के हैं,

यथा—१. आभिनिबोधिक ज्ञान,

२. श्रुत ज्ञान, ३. अवधि ज्ञान,

४. मनः पर्यवज्ञान, ५. केवल ज्ञान ।

४६४ —ज्ञानावरणीय कर्म पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्म
यावत्—२-४-५ केवलज्ञानावरणीय कर्म ।

४६५ —स्वाध्याय पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. वाचना, २. पृच्छना, ३. परिवर्तना, ४. अनुप्रेक्षा ५. धर्म कथा ।

४६६ —प्रत्याख्यान पांच प्रकार के हैं, यथा—
१. श्रद्धा शुद्ध, २. विनय शुद्ध, ३. अनुभाषना शुद्ध, ४. अनुपालना शुद्ध, ५. भाव शुद्ध ।

४६७ —प्रतिक्रमण पांच प्रकार के हैं,
यथा—१. आश्रव द्वार—प्रतिक्रमण,
२. मिथ्यात्व—प्रतिक्रमण,
३. कषाय—प्रतिक्रमण,
४. योग—प्रतिक्रमण,
५. भाव—प्रतिक्रमण ।

४६८ क—पांच कारणों से गुरु शिष्य को वाचना देते हैं,
यथा—१. संग्रह के लिये—शिष्यों को सूत्र का ज्ञान कराने के लिये ।
२. उपग्रह के लिये—गच्छ पर उपकार करने के लिये ।

३. निर्जरा के लिये—शिष्यों को वाचना देने से कर्मों की निर्जरा होती है।

४. सूत्र ज्ञान दृढ़ करने के लिये।

५. सूत्र का विच्छेद न होने देने के लिये।

ख—पांच कारणों से सूत्र सीखे,

यथा—१. ज्ञान वृद्धि के लिये,

२. दर्शन शुद्धि के लिये,

३. चारित्र शुद्धि के लिये,

४. दूसरे का दुराग्रह छुड़ाने के लिये,

५. पदार्थों के यथार्थ ज्ञान के लिये।

क—सौधर्म और ईशान कल्प में विमान पांच वर्ण के हैं,

यथा—१. कृष्ण-यावत्-२-४, ५. शुक्ल।

ख—सौ धर्म और ईशान कल्प में विमान पांचसौ योजन के ऊंचे हैं।

ग—ब्रह्मलोक और लान्तक कल्प में देवताओं के भव-धारणीय शरीर ऊंचाई में पांच हाथ का है।

घ—नैरयिकों ने पांच वर्ण और पांच रस वाले कर्म पुद्-गल बांधे हैं, बांधते हैं और बांधेंगे।

यथा—१-५ कृष्ण-यावत्-शुक्ल।

१-५ तिक्त-यावत्-मधुर।

इसी प्रकार वैमानिक देव पर्यन्त (चौवीस दण्डकों में) कहें ।

४७० क—जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत के दक्षिण में गंगा महानदी में पांच महानदियाँ मिलती हैं,

यथा—१. यमुना, २. सरयू, ३. आदि, ४. कोसी, ५. मही ।

ख—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु के दक्षिण में सिन्धु महानदी में पांच महानदियां मिलती हैं ।

यथा—१. शतद्रू, २. विभाषा, ३. वित्रस्ता, ४. एरावती, ५. चंद्रभागा ।

ग—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु के उत्तर में रक्ता महानदी में पांच महानदियां मिलती हैं,

यथा—१. कृष्णा; २. महा कृष्णा, ३. नीला, ४. महानीला, ५. महातीरा ।

घ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु के उत्तर में रक्तावती महानदी में पांच महानदियां मिलती हैं,

यथा—१. इन्द्रा, २. इन्द्र सेना, ३. सुसेणा, ४. वारिसेणा, ५. महाभोगा ।

४७१ —पांच तीर्थंकर कुमारावस्था में मुण्डित-यावत्-प्रव्रजित हुए,

यथा—१. वासुपूज्य, २, मल्ली, ३. अरिष्टनेमी ४. पार्श्वनाथ, ५. महावीर ।

४७२ क—चमरचंचा राजधानी में पांच सभायें हैं,
यथा—१. सुधर्मा सभा, २. उपपातसभा, ३. अभिषेकसभा, ४. अलंकारसभा, ५. व्यवसाय सभा।

ख—प्रत्येक इन्द्र स्थान में पांच-पांच सभायें हैं,
यथा—१-५ सुधर्मा सभा-यावत्-व्यवसाय सभा।

४७३ पांच नक्षत्र पांच पांच तारा वाले हैं,
यथा—१. घनिष्ठा, २. रोहिणी, ३. पुनर्वसु, ४. हस्त, ५. विशाखा।

४७४ क—जीवों ने पांच स्थानों में कर्म पुद्गलों को पाप कर्म रूप में चयन किया, करते हैं और करेंगे।
यथा—१-५ एकेन्द्रिय रूप में-यावत्-पञ्चेन्द्रिय रूप में।

ख-च—इसी प्रकार उपचय, बंध, उदीरणा, वेदन तथा निर्जरा सम्बन्धी सूत्रक हैं।

छ—पांच प्रदेश वाले स्कन्ध अनन्त हैं।

ज पांच प्रदेशावगाढ़ पुद्गल अनन्त हैं।

झ पांच समयाश्रित पुद्गल अनन्त हैं।

ञ-ड पांच गुण कृष्ण-यावत्-पांच गुण रुक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

इति पंचम स्थान तृतीय उद्देशक

पंचम स्थान समाप्त

षष्ठ स्थान (छठा ठाणा)

४७५ —छः स्थान युक्त अणगार गण का अधिपति हो सकता है।

यथा—१. श्रद्धालु, २. सत्यवादी, ३. मेधावी, ४. बहुश्रुत, ५. शक्ति सम्पन्न, ६. क्लेशरहित।

४७६ —छः कारणों से निग्रन्थ निग्रन्थी को पकड़ कर रखे या सहारा दे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता।

यथा—१. विक्षिप्त को, २. क्रुद्ध को,

३. यक्षाविष्ट को, ४. उन्मत्त को,

५. उपसर्ग युक्त को, ६. कलह करती हुई को।

४७७ —छः कारणों से निग्रन्थ और निग्रन्थियां कालगत (मृत) सार्धमिक के प्रति आदर भाव करें तो आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता है।

यथा—१. उपाश्रय से बाहर निकालना हो,

२. उपाश्रय के बाहर से जंगल में ले जाना हो,

३. मृत को बांधना हो,

४. जागरण करना हो,

५. अनुज्ञापन करना हो,[1]

६. चुपचाप साथ जावे तो।

४७८ क—छः स्थान छद्मस्थ पूर्ण रूप से नहीं जानता है और नहीं देखता है।

यथा—१. धर्मास्तिकाय को, २. अधर्मास्तिकाय को, ३. आकाशास्तिकाय को, ४. शरीर रहित जीव को ५. परमाणु पुद्गल को, ६. शब्द को।

ख—इन्हीं छः स्थानों को केवल ज्ञानी अर्हन्त जिन पूर्ण-रूप से जानते हैं और देखते हैं।

यथा—१. धर्मास्तिकाय को-यावत्-शब्द को,

४७९ —छः कारणों से जीवों को ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य और पराक्रम प्राप्त नहीं होता है।

यथा—१. जीव को अजीव करना चाहे तो,

२. अजीव को जीव करना चाहे तो,

३. साँच और झूठ एक साथ बोले तो,

४. स्वकृत कर्म भोगे या न भोगे—ऐसा माने तो,

५. परमाणु को छेदन-भेदन करना चाहे अथवा अग्नि से जलाना चाहे तो,

६. लोक से बाहर जाने तो।

---

१ स्वजन सम्बन्धियों को सूचना देनी हो।

४८० छः जीव निकाय हैं,
यथा—१-६ पृथ्वीकाय—यावत्—त्रसकाय ।

४८१ छः ग्रह छः-छः तारा वाले हैं,
यथा—१ शुक्र, २ बुध, ३ बृहस्पति, ४ अंगारक[1], ५ शनैश्चर, ६ केतु ।

४८२ क—संसारी जीव छः प्रकार के हैं,
यथा—पृथ्वीकायिक यावत्—त्रसकायिक ।

ख—पृथ्वीकायिक जीव छः गति और छः आगति वाले हैं,

यथा—१ पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वी काय में उत्पन्न होते हैं तो पृथ्वीकायिकों से—यावत्—त्रसकायिकों से उत्पन्न होते हैं ।

ग—वही पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिकपने को छोड़कर पृथ्वीकायिकपने को—यावत्—त्रसकायिकपने को प्राप्त होता है ।

घ-ट—अप्कायिक जीव छः गति और छः आगति वाले हैं । इसी प्रकार—यावत्—त्रसकायिक पर्यन्तक है ।

४८३ क—जीव छः प्रकार के हैं,
यथा—२-५ आभिनिबोधिक ज्ञानी—यावत्—केवल ज्ञानी, ६ अज्ञानी ।

---

१. अंगारक—मंगल ।

ख—अथवा जीव छः प्रकार के हैं।

यथा—१-५ एकेन्द्रिय—यावत्—पंचेन्द्रिय,
६ अनीन्द्रिय।

ग—अथवा जीव ६ प्रकार के हैं,

यथा—१ औदारिक शरीरी, २ वैक्रिय शरीरी,
३ आहारक शरीरी, ४ तैजस शरीरी, ५ कार्मण
शरीरी, ६ अशरीरी।

४८४ —तृण वनस्पतिकाय छः प्रकार की हैं,
यथा—१ अग्रवीज, २ मूलवीज, ३ पर्ववीज,
४ स्कन्धवीज, ५ वीजरूह, ६ सम्मूर्छिम।

४८५ —छः स्थान सव जीवों को सुलभ नहीं है,
यथा—१ मनुष्यभव, २ आर्य क्षेत्र में जन्म, ३ सुकुल
में उत्पत्ति, ४ केवली कथित धर्म का श्रवण. ५ श्रुत
धर्म पर श्रद्धा, ६ श्रद्धित, प्रतीत और रोचित धर्म
का आचरण।

४८६ छः इन्द्रियों के छः विषय हैं,

यथा—१ श्रोत्रेन्द्रिय का विषय—यावत्—स्पर्शेन्द्रिय
का विषय, ६ मनका विषय।

४८७ क—संवर छः प्रकार के हैं,
यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय संवर—यावत्—स्पर्शेन्द्रिय
संवर, ६ मन संवर।

ख—असंवर (आश्रव) छः प्रकार के हैं,

यथा—१ ५ श्रोत्रेन्द्रिय असंवर—यावत्—स्पर्शेन्द्रिय असंवर, ६ मन असंवर।

४८८ क—सुख छः प्रकार का है,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय का सुख यावत् स्पर्शेन्द्रिय का सुख, ६ मन का सुख।

ख—दुःख छः प्रकार का है,

यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय का दुःख यावत् स्पर्शेन्द्रिय का दुःख, ६ मन का दुःख।

४८९ —प्रायश्चित्त छः प्रकार का है,

यथा—१. आलोचना योग्य—गुरु के समक्ष सरलता-पूर्वक लगे हुए दोष को स्वीकार करना।

२. प्रतिक्रमण योग्य—लगे हुए दोष की निवृत्ति के लिये पश्चात्ताप करना और पुनः दोष न लगे ऐसी सावधानी रखना।

३. उभय योग्य—आलोचन और प्रतिक्रमण योग्य।

४. विवेक योग्य—आधा कर्म आदि सदोष आहार को परठकर शुद्ध होना।

५. व्युत्सर्ग योग्य—कायचेष्टा का निरोध करके शुद्ध होना।

६. तप योग्य—विशिष्ट तप करके शुद्ध होना।

४६० क—मनुष्य छः प्रकार के हैं,

यथा—१. जम्बूद्वीप में उत्पन्न।

२. धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में उत्पन्न।

३. धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध में उत्पन्न।

४. पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में उत्पन्न।

५. पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में उत्पन्न।

६. अन्तरद्वीपों में उत्पन्न।

ख—अथवा मनुष्य छः प्रकार के हैं,

यथा— सम्मुर्छिम मनुष्य १. कर्म भूमि में उत्पन्न।
" " २. अकर्म भूमि में उत्पन्न।
" " ३. अन्तरद्वीपों में उत्पन्न।
गर्भज मनुष्य १. कर्मभूमि में उत्पन्न।
" " २. अकर्म भूमि में उत्पन्न।
" " ३. अन्तरद्वीपों में उत्पन्न।

४६१ क—ऋद्धिमान मनुष्य छः प्रकार के हैं,

यथा—१. अरिहन्त, २. चक्रवर्ती, ३. बलदेव,

४. वासुदेव, ५. चारण[1], ६. विद्याधर।

---

१ जंघाचारण लब्धि युक्त।

ख—ऋद्धिरहित मनुष्य छः प्रकार के हैं,

यथा—१. हेमवन्त क्षेत्र के।

२. हैरण्यवन्त क्षेत्र के।

३. हरिवर्ष क्षेत्र के।

४. रम्यक् क्षेत्र के।

५. देवकुरु और उत्तरकुरु क्षेत्र के।

६. अन्तरद्वीपों के।

४९२ क—अवसर्पिणी काल छः प्रकार का है,

यथा—१-६ सुषम-सुषमा—यावत्—दुषम-दुषमा।

ख—उत्सर्पिणी काल छः प्रकार का है,

यथा—१-६ दुषम-दुषमा यावत् सुषम-सुषमा।

४९३ क—जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्रों में अतीत उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा काल में मनुष्य छः हजार धनुष के ऊंचे थे, और उनका परमायु छः के आधे (तीन) पल्योपमों का था।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती भरत और ऐरवत क्षेत्रों में इस उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा काल में मनुष्यों की ऊँचाई और उनका परमायु पूर्ववत् ही था।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती भरत और एरवत क्षेत्रों में आगामी उत्सर्पिणी के सुषम-सुषमा काल में मनुष्यों की ऊँचाई और उनका परमायु पूर्ववत् ही होगा।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती देवकुरु उत्तरकुरुअ र क्षेत्रों में मनुष्यों की ऊंचाई और उनका परमायु पूर्ववत् ही है।

ङ-न—इसी प्रकार धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में पूर्ववत् चार आलापक हैं—यावत्—पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में भी पूर्ववत् चार आलापक हैं।

४९४ —संघयण छः प्रकार के हैं,

यथा—१. वज्ररिषभ नाराच संहनन,

२. ऋषभ नाराच संहनन,

३. नाराच संहनन,

४. अर्ध नाराच संहनन,

५. कीलिका संहनन,

६. सेवार्त संहनन।

४९५ —संस्थान छः प्रकार के हैं,

यथा—१. सम चतुरस्र संस्थान,

२. न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान,

३. सादी संस्थान,

४. कुब्ज संस्थान,

५. वामन संस्थान,

६. हुंड संस्थान।

४९६ क—अनात्मभाववर्ती (कषाय युक्त) मनुष्यों के लिए ये छह स्थान अहितकर हैं, अशुभ हैं, अशान्ति मिटाने में असमर्थ हैं, अकल्याणकर हैं, और अशुभ परम्परा वाले हैं,

यथा—१. आयु अथवा दीक्षा काल,

२. परिवार–पुत्रादि, या शिष्यादि,

३. श्रुत, ४. तप, ५. लाभ, ६. पूजा-सत्कार।

ख—आत्मभाववर्ती (कषाय रहित) मनुष्यों के लिए उक्त छह स्थान हितकर हैं, शुभ हैं, अशान्ति मिटाने में समर्थ हैं, कल्याणकर हैं, और शुभ परम्परा वाले हैं,

यथा—१-६ पर्याय यावत् पूजा-सत्कार।

४९७ क—जाति आर्य मनुष्य छः प्रकार के हैं,

यथा—१. अंबष्ठ, २. कलंद, ३. वैदेह, ४. वेदगायक, ५. हरित, ६. चुंचण।

ख—कुलार्य मनुष्य छः प्रकार के हैं,

यथा—१. उग्र कुल के, २. भोग कुल के. ३. राजन्य कुल के, ४. इक्ष्वाकुकुल के, ५. ज्ञान कुल के, ६. कौरव कुल के।

४९८ —लोक स्थिति छः प्रकार की है,

यथा—१. आकाश पर वायु,

२. वायु पर उदधि,

३. उदधि पर पृथ्वी,

४. पृथ्वी पर त्रस और स्थावर प्राणी,

५. जीव के सहारे अजीव,

६. कर्म के सहारे जीव।

४९९ क—दिशायें छः हैं,

यथा—१ पूर्व, २ पश्चिम, ३ दक्षिण, ४ उत्तर, ५ ऊर्ध्व, ६ अधो।

ख—उक्त छह दिशाओं में जीवों की गति होती हैं। इसी प्रकार (ग) जीवों की आगति, (घ) व्युत्क्रान्ति, (ङ) आहार, (च) शरीर की वृद्धि, (छ) शरीर की हानि, (ज) शरीर की विकुर्वणा, (झ) गतिपर्याय (ञ) वेदनादि समुद्घात, (ट) दिन-रात आदि काल का संयोग, (ठ) अवधि आदि दर्शन से सामान्य ज्ञान, (ड) अवधि आदि ज्ञान से विशेषज्ञान, (ढ) जीव-स्वरूप का प्रत्यक्ष ज्ञान, (ण) पुद्गलादि अजीव-स्वरूप का प्रत्यक्ष ज्ञान, (त) इसी प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चों के और मनुष्यों के चौदह-चौदह सूत्र हैं।

५०० क—छः कारणों से श्रमण निर्ग्रन्थ के आहार करने पर भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता,

यथा—१. क्षुधा शान्त करने के लिये,

२. सेवा करने के लिए,

३. ईर्या समिति के शोधन के लिये,

४. संयम की रक्षा के लिए,

५. प्राणियों की रक्षा के लिये,

६. धर्म चिन्तन के लिये ।

ख—छः कारण से श्रमण निर्ग्रन्थ के आहार त्यागने पर भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता ।
यथा—१. आतङ्क-ज्वरादि की शान्ति के लिए,
२. उपसर्ग—राजा या स्वजनों द्वारा उपसर्ग किये जाने पर,

३. तितिक्षा—सहिष्णु बनने के लिए,

४. ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए,

५. प्राणियों की रक्षा के लिये,

६. शरीर त्यागने के लिये ।

५०१ —छः कारणों से आत्मा उन्माद को प्राप्त होता है,
यथा—१. अर्हन्तों का अवर्णवाद[1] बोलने पर,

२. अर्हन्त प्रज्ञप्त धर्म का अवर्णवाद बोलने पर,

३. आचार्य और उपाध्यायों के अवर्णवाद बोलने पर

४. चतुर्विध संघ का अवर्णवाद बोलने पर,

५. यक्षाविष्ट होने पर,

६. मोहनीय कर्म का उदय होने पर ।

---

१ अवर्णवाद—निन्दा

०२ —प्रमाद छः प्रकार के हैं,

यथा १. मद्य[1], २. निद्रा, ३. विषय, ४. कषाय, ५. द्यूत, ६. प्रतिलेखना में प्रमाद ।

०३ क—प्रमाद पूर्वक की गई प्रति लेखना छः प्रकार की है,

यथा—१. आरभटा—उतावल से प्रति लेखना करना,

२. संमर्दा—मर्दन करके प्रति लेखना करना,

३. मोसली—वस्त्र के ऊपर के नीचे के या तिर्यक् भाग को प्रतिलेखन करते हुए परस्पर छुहाना ।

४. प्रस्फोटना—वस्त्र की रज को झड़काना ।

५. विक्षिप्ता—प्रतिलेखित वस्त्रों को अप्रतिलेखित वस्त्रों पर रखना ।

६. वेदिका—प्रतिलेखना करते समय विधिवत् न बैठना ।

ख—अप्रमाद प्रतिलेखना (सावधानी पूर्वक की गई प्रतिलेखना) छह प्रकार की है,

यथा—१. अनर्तिता—शरीर या वस्त्र को न नचाते हुए प्रतिलेखना करना ।

२. अवलिता—वस्त्र या शरीर को झुकाये बिना प्रतिलेखना करना ।

---

१ प्रमाद मद्य तुल्य है ।

३. अनानुबंधि---उतावल या झटकाये बिना प्रतिलेखना करना।

४. अमोसली—वस्त्र को मसले बिना की गई प्रतिलेखना।

५. छः पुरिमा और नव खोटका।

५०४ —दण्डक सूत्र—

क—लेश्याएं छः हैं,

यथा—१-६ कृष्णलेश्या यावत् शुक्ललेश्या।

ख—तिर्यञ्च पञ्चेन्द्रियों में छह लेश्यायें हैं :

यथा—१-६ कृष्णलेश्या यावत् शुक्ल लेश्या।

ग—मनुष्य और देवताओं में छः लेश्यायें हैं,

यथा—१-६ कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या।

५०५ —शक्रदेवेन्द्र देवराज सोम महाराजा की छः अग्रमहिषियां हैं।

५०६ —ईशान देवेन्द्र की मध्यम परिषद् के देवों की स्थिति छः-पल्योपम की है।

५०७ क—छः श्रेष्ठ दिककुमारियां हैं,

यथा—१. रूपा, २. रूपांशा, ३. सुरूपा, ४. रूपवती, ५. रूपकांता, ६. रूपप्रभा।

ख—छः श्रेष्ठ विद्युत् कुमारियां हैं,

यथा—१. आला, २. शुक्रा, ३. सतेरा, ४. सौदामिनी, ५. इन्द्रा, ६. घन विद्युता।

५०८ क—धरण नागकुमारेन्द्र की छः अग्रमहिषियां हैं।
यथा—१. आला, २. शुक्रा, ३. सतेरा, ४. सौदामिनी, ५. इन्द्रा, ६, घनविद्युता।

ख—भूतानन्द नाग कुमारेन्द्र की छः अग्रमहिषियां हैं
यथा—१. रूपा, २. रूपांशा, ३. सुरूपा, ४. रूपवती, ५. रूपकांता, ६. रूपप्रभा।

ग-ञ—घोष पर्यन्त दक्षिण दिशा के सभी देवेन्द्रों की अग्रमहिषियों के नाम धरणेन्द्र के समान हैं।

ट-द—महाघोष पर्यन्त उत्तर दिशा के सभी देवेन्द्रों की अग्र-महिषियों के नाम भूतानन्द के समान हैं।

५०९ क—धरण नागकुमारेन्द्र के छः हजार सामानिक देव हैं।

ख-न—इसी प्रकार भूतानन्द यावत् महाघोष नागकुमारेन्द्र के छः हजार सामानिक देव हैं।

५१० क—अवग्रहमति छः प्रकार की हैं,
यथा—१. क्षिप्र—क्षयोपशम की निर्मलता से शंख आदि के शब्द को शीघ्र ग्रहण करने वाली मति।

२. बहु—शंख आदि अनेक प्रकार के शब्दों को ग्रहण करने वाली मति।

३. बहुविध—शब्दों के माधुर्य आदि पर्यायों को ग्रहण करने वाली मति।

४. ध्रुव—एक वार धारण किये हुये अर्थ को सदा के लिए स्मरण में रखने वाली मति।

५. अनिश्रित—ध्वजादि चिह्न के विना ग्रहण करने वाली मति ।

६. असंदिग्ध—संशय रहित ग्रहण करने वाली मति।

ख—ईहामति छः प्रकार की है,

यथा—१-६ क्षिप्र ईहामति—शीघ्र विचार करने वाली मति—यावत्—संदेह रहित विचार करने वाली मति ।

ग—अवायमति छः प्रकार की है।

यथा—१-६ शीघ्र निश्चय करने वाली मति—यावत्—संदेह रहित निश्चय करने वाली मति।

घ—धारणा छः प्रकार की है,

यथा—१. वहु धारणा—वहुत धारण करने वाली मति।

२. बहुविध धारणा—अनेक प्रकार से धारण करने वाली मति।

३. पुराण धारणा—पुराणे (जूने) को धारण करने वाली मति।

४. दुर्धर धारणा—गहन विषयों को धारण करने वाली मति।

५. अनिश्रित धारणा—ध्वजा आदि चिह्नों के बिना धारण करने वाली मति।

६. असंदिग्ध धारणा—संशय विना धारण करने वाली मति।

५११ क—वाह्य तप छह प्रकार का है,

यथा—१. अनशन-आहार त्याग, एक उपवास से लेकर छः मास पर्यन्त।

२. ऊनोदरिका—कवल आदि न्यून ग्रहण करना।

३. भिक्षाचर्या—नाना प्रकार के अभिग्रह धारण करके आहार आदि ग्रहण करना[1]।

४. रस परित्याग—क्षीर आदि मधुर रसों का त्याग करना।

५. काय क्लेश—अनेक प्रकार के आसन करना।

६. प्रति संलीनता—इन्द्रिय जय, कषाय जय और योगों का जय।[2]

ख—आभ्यन्तर तप-छह प्रकार का है,

यथा—१. प्रायश्चित्त—आलोचनादि दस प्रकार का प्रायश्चित।

---

१ भिक्षाचर्या—वृत्तिसंक्षेप।

२ प्रतिसंलीनता—विविक्त शय्यासन।

२. विनय—जिस तप के द्वारा विशेष रूप से कर्मों का नाश हो।

३. वैयावृत्य—सेवा, सुश्रूषा।

४. स्वाध्याय—विविध प्रकार का अभ्यास करना।

५. ध्यान—एकाग्र होकर चिंतन करना।

६. व्युत्सर्ग—परित्याग[1]। चित्त की चंचलता के कारणों का परित्याग करना।

५१२ —विवाद छः प्रकार का है,

यथा—१. अवष्वष्कय—पीछे हटकर प्रारम्भ में कुछ सामान्य तर्क देकर समय बितावे और अनुकूल अवसर पाकर प्रतिवादी पर आक्षेप करे।

२. उत्ष्वष्कय—पीछे हटाकर किसी प्रकार प्रतिवादी से विवाद बंध करावे और अनुकूल अवसर पाकर पुनः विवाद करे।

३. अनुलोम्य—सभ्यों को और सभापति को अनुकूल करके विवाद करे।

---

१ इसके दो भेद है यथा—

(क) द्रव्य व्युत्सर्ग—गण, शरीर, उपाधि, आहारादि का त्याग करना।

(ख) भाव व्युत्सर्ग—क्रोधादि कलुषित भावों का त्याग करना।

४. प्रतिलोम्य—सभ्यों को और सभापति को प्रतिकूल करके विवाद करे।

५. भेदयित्वा—सभ्यों में मतभेद पैदा करके विवाद करे।

६. मेलयित्वा—कुछ सभ्यों को अपने पक्ष में मिलाकर विवाद करे।

५१३ —क्षुद्र प्राणी छः प्रकार के हैं,
यथा—१. द्वीन्द्रिय, २. त्रीन्द्रिय, ३. चतुरिन्द्रिय,
४. सम्मूर्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक,
५. तेजस्कायिक, ६. वायु कायिक।

५१४ —गौचरी छः प्रकार की है,
यथा—१. पेटा—गांव के चार विभाग करके गौचरी करना।

२. अर्ध पेटा—गांव के दो विभाग करके गौचरी करना।

३. गौमूत्रिका—घरों की दो पंक्तियों में गौमूत्रिका के समान क्रम बना कर गौचरी करे।[1]

---

१ गौमूत्रिका—गाय जैसे तिरछी गति से प्रस्त्रवण करती है वैसी तिरछी गति से गोचरी करना।

४. पतंगवीथिका—पतंगिया की उड़ान के समान विना क्रम के गोचरी करना ।

५. शंबुक वृत्ता—शंख के वृत्त की तरह घरों का क्रम बनाकर गोचरी करना ।

६. गत्वा प्रत्यागत्वा—प्रथम पंक्ति के घरों में क्रमशः आद्योपान्त गोचरी करके द्वितीय पंक्ति के घरों में क्रमशः आद्योपान्त गोचरी करना ।'

५१५ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के दक्षिण में—इस रत्नप्रभा पृथ्वी में छह अपक्रान्त (अत्यन्त घृणित) महा नरकावास हैं,

यथा—१. लोल, २. लोलुप, ३. उद्दग्ध, ४. निर्दग्ध, ५. जरक, ६. प्रजरक ।

ख—चौथी पंक प्रभा पृथ्वी में छह अपक्रान्त (अत्यन्त घृणित) महा नरकावास हैं,

यथा—१. आर, २. वार, ३. मार, ४. रोर, ५. रोरुक ६. खाडखड़ ।

५१६ —ब्रह्मलोक कल्प में छह विमान-प्रस्तर हैं,

यथा—१. अरज, २. विरज, ३. निरज, ४. निर्मल, ५. वित्तिमिर, ६. विशुद्ध ।

५१७ क—ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के साथ छह नक्षत्र ३०, ३० मुहूर्त तक सम्पूर्ण क्षेत्र में योग करते हैं ।

यथा—१. पूर्वाभद्र पद, २. कृत्तिका, ३. मघा, ४. पूर्वा फाल्गुनी, ५. मूल, ६. पूर्वाषाढ़ा ।

ख—ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के साथ छह नक्षत्र १५-१५ मुहूर्त तक आधे क्षेत्र में योग करते हैं,
यथा—१. शतभिषा, २. भरणी, ३. आर्द्रा, ४. अश्लेषा, ५. स्वाती, ६. ज्येष्ठा।

ग—ज्योतिष्केन्द्र चन्द्र के साथ छह नक्षत्र आगे और पीछे दोनों ओर ४५-४५ मुहूर्त तक योग करते हैं,
यथा—१. रोहिणी, २. पुनर्वसु, ३. उत्तरा फाल्गुनी, ४. विशाखा, ५. उत्तराषाढ़ा, ६. उत्तराभाद्रपदा, ६. उत्तराषाढ़ा।

५१८ —अभिचन्द्र कुलकर छः सौ धनुष के ऊँचे थे।

५१९ —भरत चक्रवर्ती छह लाख पूर्व तक महाराजा (राज-पद पर) रहे।

५२० क—भगवान पार्श्वनाथ के छः सौ वादी मुनियों की संपदा थी वे वादी मुनि देव-मनुष्यों की परिषद् में अजेय थे।

ख—वासुपूज्य अर्हन्त के साथ छः सौ पुरुष प्रव्रजित हुये।

ग—चन्द्र प्रभ अर्हन्त छः मास पर्यन्त छद्मस्थ रहे।

२१ क—तेइन्द्रिय जीवों की हिंसा न करने वाला छह प्रकार के संयम का पालन करता है।
यथा—१. गंध ग्रहण का सुख नष्ट नहीं होता।

२. गंध (ग्रहण न कर सकने) का दुःख प्राप्त नहीं होता।

३. रसास्वादन का सुख नष्ट नहीं होता।

४. रसास्वादन न कर सकने का दुःख प्राप्त नहीं होता।

५. स्पर्श जंन्य सुख नष्ट नहीं होता।

६. स्पर्शानुभव न होने का दुःख प्राप्त नहीं होता।

ख—तेइन्द्रिय जीवों की हिंसा करने से छह प्रकार का असंयम होता है।

यथा—१. गंध ग्रहण जन्य सुख प्राप्त नहीं होता।

२. गंध ग्रहण न कर सकने का दुःख प्राप्त होता है।

३. रसास्वादन जन्य सुख प्राप्त नहीं होता।

४. रसास्वादन न कर सकने का दुःख प्राप्त होता है।

५. स्पर्शजन्य सुख प्राप्त नहीं होता।

६. स्पर्शानुभव न कर सकने का दुख प्राप्त होता है।

५२२ क—जम्बूद्वीप में छह अकर्म भूमियां हैं,

यथा—१. हैमवत, २. हैरण्यवत, ३. हरिवर्ष, ४. रम्यक् वर्ष, ५. देवकुरु, ६. उत्तर कुरु।

ख—जम्बूद्वीप में छह वर्ष (क्षेत्र) हैं

यथा १. भरत, २. ऐरवत, ३. हैमवत,

४. हैरण्यवत, ५. हरिवर्ष, ६. रम्यक् वर्ष[1]।

ग—जम्बूद्वीप में छः वर्षधर पर्वत हैं,

यथा—१. चुल्ल (छोटा) हिमवंत, २. महा हिमवंत
३. निषध, ४. नीलवंत,
५. रुक्मि, ६. शिखरी।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में छः कूट (शिखर) हैं।

यथा—१. चुल्ल है मवंत कूट, २. वैश्रमण कूट,
३. महा हैमवत कूट, ४. वैडूर्य कूट,
५. निषध कूट, ६. रुचक कूट।

ङ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु पर्वत से उत्तर दिशा में छह कूट हैं।

यथा—१. नीलवान कूट, २. उपदर्शन कूट,
३. रुक्मिकूट, ४. मणिकंचन कूट,
५. शिखरी कूट, ६. निगिच्छ कूट।[2]

च—जम्बूद्वीप में छः महाद्रह हैं,

यथा—१. पद्मद्रह, २. महा पद्मद्रह,

---

१ वर्ष (क्षेत्र) यद्यपि सात हैं किन्तु छठा स्थान होने से छह कहे हैं।

२ दक्षिण और उत्तर में स्थित वर्ष धरों में से प्रत्येक वर्षधर पर्वत के दो दो कूटों को यहा गिना गया है।

६०

३. तिगिच्छद्रह, ४. केसरीद्रह,
५. महा पौंडरीकद्रह, ६. पौंडरिक द्रह ।

छ—उन महाद्रहों में छह पल्योपम की स्थिति वाली छः महर्धिक देवियां रहती हैं।
यथा—१. श्री, २. ह्री, ३. धृति, ४. कीर्ति, ५. बुद्धि
६. लक्ष्मी।

ज—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से दक्षिण दिशा में छः महानदियां हैं।
यथा—१. गंगा, २. सिंधु, ३. रोहिता
४. रोहितांशा, ५. हरी, ६. हरिकांता।

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से उत्तर दिशा में छः महानदियां हैं,
यथा—१. नरकांता, २. नारीकांता,
३. सुवर्ण कूला, ४. रुप्य कूला,
५. रक्ता, ६. रक्तवती।

ञ—जम्बूद्वीप वर्ती मेरु से पूर्व में सीता महानदी के दोनों किनारों पर छः अन्तर नदियां हैं,
यथा—१. ग्राहवती, २. द्रहवती, ३. पंकवती,
४. तप्तजला, ५. मत्तजला ६. उन्मत्तजला।

ट—जम्बूद्वीपवर्ती मेरु से पश्चिम में शीतोदा महानदी के दोनों किनारों पर छः अन्तर नदियां हैं।
यथा—१. क्षीरोदा, २. सिंह श्रोता, ३. अंतर्वाहिनी,

४. उर्मिमालिनी, ५. फेनमालिनी
६. गम्भीर मालिनी ।

१-११ क—धातकीखण्ड के पूर्वार्ध में छह अकर्म भूमियाँ हैं, यथा—हैमवत आदि नदी-सूत्र पर्यन्त जम्बूद्वीप के समान ग्यारह-सूत्र कहें ।

ख—धातकीखण्ड के पश्चिमार्ध में जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं ।

ग—पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं ।

घ—पुष्करवर द्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में जम्बूद्वीप के समान ग्यारह सूत्र हैं ।[1]

५२३ —ऋतुएँ छः हैं, यथा—

१. प्रावृट्—आषाढ़ और श्रावण मास ।

२. वर्षा ऋतु—भाद्रपद और आश्विन ।

३. शरद्—कार्तिक और मार्गशीर्ष ।

४. हेमन्त—पोष और माघ ।

५. बसन्त—फाल्गुन और चैत्र ।

६. ग्रीष्म—वैशाख और ज्येष्ठ ।

---

[1] सब मिलकर ५५ सूत्र है ।

५२४ क—दिनक्षय वाले छः पर्व हैं।[1] यथा

१. तृतीयपर्व—आषाढ़ कृष्ण पक्ष।

२. सप्तम पर्व—भाद्रपद कृष्ण पक्ष।

३. ग्यारहवाँ पर्व—कार्तिक कृष्ण पक्ष।

४. पन्द्रहवाँ पर्व—पोष कृष्ण पक्ष।

५. उन्नीसवाँ पर्व—फाल्गुन कृष्ण पक्ष।

६. तेतीसवाँ पर्व—वैशाख कृष्ण पक्ष।

ख—दिन वृद्धि वाले छः पर्व हैं,[2] यथा—

१. चतुर्थ पर्व—आषाढ़ शुक्ल पक्ष।

२. आठवाँ पर्व—भाद्रपद शुक्ल पक्ष।

३. बारहवाँ पर्व—कार्तिक शुक्ल पक्ष।

४. सोलहवाँ पर्व—पोष शुक्ल पक्ष।

५. बीसवाँ पर्व—फाल्गुन शुक्ल पक्ष।

६. चौबीसवाँ पर्व—वैशाख शुक्ल पक्ष।

५२५ —आभिनिबोधिक ज्ञान के छः अर्थावग्रह हैं, यथा—
१-६ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह यावत् नोइन्द्रिय अर्थावग्रह।

---

१ इन छः पर्वों (पक्षों) में दिन की हानि (दिन छोटे) और रात्रि की वृद्धि (रातें बड़ी) होती है।

५२६ —अवधि ज्ञान छः प्रकार का है। यथा—

१. आनुगामिक—मनुष्य के साथ जैसे मनुष्य की आँखें चलती हैं उसी प्रकार अवधि ज्ञान भी अवधि-ज्ञानी के साथ चलता है।

२. अनानुगामिक—जो अवधि ज्ञान दीपक की तरह अवधि ज्ञानी के साथ नहीं चलता।

३. वर्धमान—जो अवधि ज्ञान प्रति समय बढ़ता रहता है।

४. हीयमान—जो अवधि ज्ञान प्रति समय क्षीण होता रहता है।

५. प्रतिपाती—जो अवधि ज्ञान पूर्ण लोक को देखने के पश्चात् नष्ट हो जाता है।

६. अप्रतिपाती—जो अवधि ज्ञान पूर्ण लोक को देखने के पश्चात् अलोक के एक प्रदेश को देखने की शक्ति वाला है।

५२७ —निर्ग्रन्थों और निर्ग्रन्थियों को ये छः अवचन (कुवचन) कहने योग्य नहीं हैं।

यथा—१. अलीक वचन—असत्य वचन[1]।

---

१ ऊंघ लेने वाले निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी को कोई कहे कि—ऊंघ क्यों लेते हो? उस समय निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थी कहे कि—मैं प्रचला (ऊंघ) नहीं लेता।

२. हीलित वचन—ईर्ष्या भरे वचन।

३. खिंसित वचन—गुप्त बातें प्रगट करना।

४. परुष वचन—कठोर वचन।

५. गृहस्थ वचन—बेटा, भाई आदि कहना।

६. उदीर्ण वचन—उपशान्त कलह को पुनः उद्दीप्त करने वाले वचन।

५२८ —कल्प (साधु का आचार) के छः प्रस्तार हैं।[1]

यथा—१. छोटा साधु बड़े साधु को कहे कि तुमने प्राणातिपात किया है।

२. छोटा साधु बड़े साधु को कहे कि तुम मृषावाद बोले हो।

३. छोटा साधु बड़े साधु को कहे कि तुमने अमुक वस्तु चुराई है।

४. छोटा साधु बड़े साधु को कहे कि तुमने अविरति का सेवन किया है।

५. छोटा साधु बड़े साधु को कहे कि तुम अपुरुष (नपुंसक हो)।

६. छोटा साधु बड़े साधु को दास वचन (तुम दास हो) कहे।

---

१ प्रस्तार—प्रायश्चित्त बढ़ाना।

इन छः वचनों का जानबूझ कर भी बड़ा साधु पूर्ण प्रायश्चित न दे तो बड़ा साध उसी प्रायश्चित्त का भागी होता है।

५२६ ——कल्प (साधु का आचार) के छः पलिमंथू (संयम के घातक) हैं।

यथा——१. कौत्कुच्य——कुचेष्टा करना संयम का घात करना है।

२. मौखर्य——अनावश्यक बोलना सत्य वचन का घात करना है।

३. चक्षु लोलुप——चंचल चक्षु रहना ईर्यासमिति का घात करना है।

४. तितिनिक——इष्ट वस्तु के अलाभ से दुखी होना एषणा प्रधान गोचरी का घात करना है।

५. इच्छालोभिक——अति लोभ करना मुक्ति मार्ग का घात करना है।

६. मिथ्या निदान करण——लोभ से निदान करना मोक्ष मार्ग का घात करना है। क्योंकि निदान (फलेच्छा) न करना ही भगवान् ने प्रशस्त कहा है।

५३० ——कल्प-साध्वाचार-की व्यवस्था छः प्रकार की है, यथा——१. सामायिक कल्पस्थिति—सामायिक संबंधी मर्यादा।

२. छेदोपस्थापनिक कल्पस्थिति—शैक्षकाल पूर्ण होने पर पंच महाव्रत धारण कराने की मर्यादा।

३. निर्विसमान कल्प स्थिति—परिहार विशुद्धि तप स्वीकार करने वाले की मर्यादा।

४. निर्विष्ठकल्पस्थिति—पारिहारिक तप पूरा करने वाले की मर्यादा।

५. जिन कल्पस्थिति—जिन कल्प की मर्यादा।

६. स्थविर कल्पस्थिति—स्थविर कल्प की मर्यादा।

५३१ क—श्रमण भगवान् महावीर चतुर्विध आहार परित्याग-पूर्वक छट्ठ भक्त (दो उपवास) करके मुंडित यावत् प्रव्रजित हुये।

ख—श्रमण भगवान् महावीर को जब केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ था उस समय चौविहार छट्ठ भक्त था।

ग—श्रमण भगवान् महावीर जब सिद्ध यावत् सर्व दुःख से मुक्त हुए उस समय चौविहर छट्ठ भक्त था।

५३२ क—सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्प—देवलोक में विमान छः सौ योजन ऊंचे हैं।

ख—सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प में भवधारणीय शरीर की अवगाहना—ऊंचाई छः हाथ की है।

३३ क—भोजन का परिणाम स्वभाव छः प्रकार का है
यथा—१. मनोज्ञ—मन को अच्छा लगने वाला।
२. रसिक—माधुर्यादिरस युक्त।
३. प्रीणनीय—तृप्ति करने वाला तथा शरीर के रसों में समता लाने वाला।
४. बृंहणीय—शरीर की वृद्धि करने वाला।
५. दीपनीय—जठराग्नि प्रदीप्त करने वाला।
६. मदनीय—कामोत्तेजक।

ख—विष का परिणाम—स्वभाव छह प्रकार का है।
यथा—१. दष्ट—सर्प आदि के डंक से पीड़ा पहुँचाने वाला।
२. भुक्त—खाने पर पीड़ा पहुंचाने वाला।
३. निपतित—शरीर पर गिरते ही पीड़ित करने वाला अथवा दृष्टिविष।
४. मांसानुसारी—मांस में व्याप्त होने वाला।
५. शोणितानुसारी—रक्त में व्याप्त होने वाला।
६. अस्थिमज्जानुसारी—हड्डी और चर्बी में व्याप्त होने वाला।

३४ —प्रश्न छः प्रकार के हैं,
यथा—१. संशय प्रश्न—संशय होने पर किया जाने वाला प्रश्न।

२. मिथ्याभिनिवेश प्रश्न[1]—परपक्ष को दूषित करने के लिये किया गया प्रश्न।

३. अनुयोगी प्रश्न—व्याख्या करने के लिए ग्रन्थकार द्वारा किया गया प्रश्न।

४. अनुलोभ प्रश्न—कुशल प्रश्न।

५. तथा ज्ञान प्रश्न—गणधर गौतम के प्रश्न।

६. अतथाज्ञान प्रश्न—अज्ञ व्यक्ति द्वारा किया गया प्रश्न।

५३५ क—चमर चंचा राजधानी में उत्कृष्ट विरह छः मास का है।

ख—प्रत्येक इन्द्रप्रस्थान में उपपात विरह उत्कृष्ट छः मास का है।

ग—सप्तम पृथ्वी तमस्तमा में उपपात विरह उत्कृष्ट छः मास का है।

घ—सिद्धगती में उपपात विरह उत्कृष्ट छः मास का है।

दण्डक सूत्र

५३६ क—आयुबंध छः प्रकार का है,

यथा—१. जातिनामनिधत्तायु—जातिनाम कर्म के साथ प्रति समय भोगने के लिये आयुकर्म के दलिकों की निषेक नाम की रचना।

---

१ व्युद्ग्रह प्रश्न

२. गतिनाम निधत्तायु—गतिनाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

३. स्थितिनाम निधत्तायु—स्थिति की अपेक्षा से निषेक रचना।

४. अवगाहना नाम निधत्तायु—जिसमें आत्मा रहे वह अवगाहना औदारिक शरीर आदि की होती है। अतः शरीर नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

५. प्रदेश नाम निधत्तायु—प्रदेश रूप नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

६. अनुभाव नाम निधत्तायु—अनुभाव विपाक रूप नाम कर्म के साथ पूर्वोक्त रचना।

ख—१-४ नैरयिकों के यावत् वैमानिकों के छः प्रकार का आयुबंध होता है।

यथा १-६ जातिनाम निधत्तायु—यावत् अनुभाव नाम निधत्तायु।

ग—१-४ नैरयिक यावत् वैमानिक छः मास आयु शेष रहने पर परभव का आयु बांधते हैं।[1]

---

१ असंख्य वर्ष की आयु वाले मनुष्य और तिर्यञ्च छः मास आयु शेष रहने पर परभव का आयु बांधते हैं।

५३७ —भाव छः प्रकार के हैं,
यथा—१. औदयिक, २. औपशमिक, ३. क्षायिक, ४. क्षायोपशमिक, ५. पारिणामिक, ६. सान्निपातिक।

५३८ —प्रतिक्रमण छः प्रकार के हैं,
यथा—१. उच्चार प्रतिक्रमण,—मल को परठकर स्थान पर आवे और मार्ग में लगे दोषों का प्रतिक्रमण करे।
२. प्रश्रवण प्रतिक्रमण—मूत्र परठकर पूर्ववत् प्रतिक्रमण करे।
३. इत्वरिक प्रतिक्रमण—थोड़े काल का प्रतिक्रमण यथा—दिन सम्बन्धी प्रतिक्रमण या रात्रि संबंधी प्रतिक्रमण।
४. यावज्जीवन का प्रतिक्रमण—महाव्रत ग्रहण करना अथवा भक्त परिज्ञा स्वीकार करना।
५. यत्किंचित् मिथ्या प्रतिक्रमण—जो मिथ्या आचरण हुआ हो उसका प्रतिक्रमण।
६. स्वाप्नान्तिक प्रतिक्रमण—स्वप्न सम्बन्धी प्रतिक्रमण।

५३९ क—कृत्ति का नक्षत्र के छः तारे हैं।
ख—अश्लेषा नक्षत्र के छः तारे हैं।

५४० क—जीवों ने छः स्थानों में अर्जित पुद्गलों को पाप कर्म के रूप में एकत्रित किया है। एकत्रित करते हैं और एकत्रित करेंगे।

यथा—१-६ पृथ्वीकाय निर्वर्तित—यावत्—त्रसकाय निर्वर्तित ।

ख-ज—इसी प्रकार पाप कर्म के रूप में चय, उपचय, बंध, उदीरण, वेदन और निर्जरा सम्बन्धी सूत्र हैं ।

झ—छः प्रदेशी स्कंध अनन्त हैं ।

ञ—छः प्रदेशों में स्थित पुद्गल अनन्त हैं ।

ट—छः समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त हैं ।

ठ-ण—छः गुण काले—यावत्—छः गुण रूखे पुद्गल अनन्त हैं ।

षष्ठ स्थान समाप्त

सप्तम स्थान (सातवां ठाणा)

५४१ —गण छोड़ने के सात कारण हैं,

यथा—१ मैं सब धर्मों (ज्ञान, दर्शन और चारित्र की साधनाओं) को प्राप्त करना (साधना) चाहता हूँ और उन धर्मों (साधनाओं) को मैं अन्य गण में जाकर ही प्राप्त कर (साध) सकूंगा अतः मैं गण छोड़कर अन्य गण में जाना चाहता हूँ।[1]

२. मुझे अमुक धर्म (साधना) प्रिय है और अमुक धर्म (साधना) प्रिय नहीं है। अतः मैं गण छोड़कर अन्यगण में जाना चाहता हूँ।

३. सभी धर्मों (ज्ञान, दर्शन और चारित्र) में मुझे सन्देह है अतः संशय निवारणार्थ मैं अन्य गण में जाना चाहता हूँ।

४. कुछ धर्मों (साधनाओं) में मुझे संशय है और कुछ धर्मों (साधनाओं) में संशय नहीं है। अतः मैं संशय निवारणार्थ अन्य गण में जाना चाहता हूँ।

---

१ धर्माचार्य को गण छोड़ने का कारण बताकर गण छोड़ने की आज्ञा प्राप्तकर लेनी चाहिए। आज्ञा लिये बिना गण नहीं छोड़ना चाहिये।

५. सभी धर्मों (ज्ञान दर्शन और चारित्र सम्बन्धी) की विशिष्ट धारणाओं को मैं देना (सिखाना) चाहता हूँ। इस गण में ऐसा कोई योग्य पात्र नहीं है अतः मैं अन्य गण में जाना चाहता हूँ।

६. कुछ धर्मों (पूर्वोक्त धारणाओं) को देना चाहता हूँ और कुछ धर्मों (पूर्वोक्त धारणाओं) को नहीं देना चाहता हूं अतः मैं अन्य गण में जाना चाहता हूँ।

७. एकल विहार की प्रतिमा धारण करके विचरना चाहता हूं। (अतः मैं गण छोड़कर जाना चाहता हूँ।)

५४२ —विभंग ज्ञान सात प्रकार का है,

यथा—१. एक दिशा में लोकाभिगम।

२. पाँच दिशा में लोकाभिगम।

३. क्रियावरण जीव।

४. मुदग्र जीव।

५. अमुदग्र जीव।

६. रूपी जीव।

७. सभी कुछ जीव हैं।

प्रथम विभंग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को एक दिशा का लोकाभिगम ज्ञान उत्पन्न होता है। अतः वह पूर्व, पश्चिम, दक्षिण या उत्तर दिशा में से किसी एक दिशा में अथवा ऊपर सौधर्म देवलोक पर्यन्त लोक देखता है तो-जिस दिशा में उसने

लोक देखा है उसी दिशा में लोक हैं अन्य दिशा में नहीं है—ऐसी प्रतीति उसे होती है और वह मानने लगता है कि मुझे ही विशिष्ट ज्ञान उत्पन्न हुआ है और वह दूसरों को ऐसा कहता है कि जो लोग "पांच दिशाओं में लोक है" ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते हैं।

द्वितीय विभंग ज्ञान—किसी श्रमण-ब्राह्मण को पांच दिशा का लोकाभिगम ज्ञान उत्पन्न होता है। अतः वह पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशा में तथा ऊपर सौधर्म देवलोक पर्यन्त लोक देखता है तो उस समय उसे यह अनुभव होता है कि लोक पांच दिशाओं में ही हैं। तथा यह भी अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है। और वह यों कहने लगता है कि जो लोग "एक ही दिशा में लोक है" ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते हैं।

तृतीय विभंग ज्ञान—किसी श्रमण या ब्राह्मण को क्रिया-वरण जीव नाम का विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है तो वह जीवों को हिंसा करते हुए, झूठ बोलते हुए, चोरी करते हुए, मैथुन करते हुए, परिग्रह में आसक्त रहते हुए और रात्रि भोजन करते हुए देखता है किन्तु इन सब कृत्यों से जीवों के पाप कर्मों का वन्ध होता है यह नहीं देख सकता उस समय उसे यह अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है। और वह यों मानने लगता है कि जीव के आवरण (कर्म वन्ध) क्रिया रूप ही है। साथ ही यह भी कहने लगता है कि जो श्रमण ब्राह्मण

"जीव के क्रिया से आवरण (कर्म वन्ध) नहीं होता" ऐसा कहते हैं वे मिथ्या कहते हैं।

चतुर्थ विभंग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को मुदग्रविभंग ज्ञान उत्पन्न होता है तो वह वाह्य और आभ्यन्तर पुद्गलों को ग्रहण करके तथा उनके नाना प्रकार के स्पर्श करके नाना प्रकार के शरीरों की विकुर्वणा करते हुए देवताओं को देखता है उस समय उसे यह अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय वाला ज्ञान उत्पन्न हुआ है अतः मैं देख सकता हूँ कि जीव मुदग्र अर्थात् वाह्य और आभ्यन्तर पुद्गलों को ग्रहण करके शरीर रचना करने वाला है। "जो लोग जीव को अमुदग्र कहते हैं वे मिथ्या कहते हैं" ऐसा वह कहने लगता है।

पंचम विभंग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को अमुदग्र विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है तो वह आभ्यन्तर और बाह्य पुद्गलों को ग्रहण किये बिना ही देवताओं को विकुर्वणा करते हुए देखता है। उस समय उसे ऐसा अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय ज्ञान उत्पन्न हुआ है अतः मैं देख सकता हूँ "जीव अमुदग्र है" और वह यों कहने लगता है कि जो लोग जीव को मुदग्र समझते हैं वे मिथ्यावादी हैं।

छठा विभंग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को जब रूपीजीव नाम का विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है तब वह उस ज्ञान से देवताओं को ही वाह्याभ्यन्तर पुद्गल ग्रहण करके या ग्रहण किये बिना विकुर्वणा करते देखता है। उस समय उसे ऐसा अनुभव

होता है कि मुझे अतिशय वाला ज्ञान उत्पन्न हुआ है और वह यों मानने लगता है कि जीव तो रूपी है किन्तु जो लोग जीव को अरूपी कहते हैं उन्हें वह मिथ्यावादी कहने लगता है।

सप्तम विभंग ज्ञान—किसी श्रमण ब्राह्मण को जब "सर्व-जीवा" नाम का विभंग ज्ञान उत्पन्न होता है तब वह वायु से इधर उधर हिलते चलते कांपते और अन्य पुद्गलों के साथ टकराते हुए पुद्गलों को देखता है उस समय उसे ऐसा अनुभव होता है कि मुझे ही अतिशय वाला ज्ञान उत्पन्न हुआ है अतः वह यों मानने लगता है कि "लोक में जो कुछ है वह सब जीव ही है" किन्तु जो लोग लोक में जीव अजीव दोनों मानते हैं उन्हें वह मिथ्यावादी कहने लगता है।

ऐसे विभंग ज्ञानी को पृथ्वी, वायु और तेजस्काय का सम्यग्-ज्ञान होता ही नहीं अतः वह उस विषय में मिथ्या भ्रम में पड़ा होता है।

५४३ क—योनि संग्रह सात प्रकार का है,

यथा—१. अंडज,—पक्षी, मछलियां, सर्प इत्यादि अंडे से पैदा होने वाले।

२. पोतज—हाथी, वागल आदि चमड़े से लिपटे हुए उत्पन्न होने वाले।

३. जरायुज—मनुष्य, गाय आदि जर के साथ उत्पन्न होने वाले।

४. रसज—रस में उत्पन्न होने वाले।

५. संस्वेदज—पसीने से उत्पन्न होने वाले।

६. सम्मूर्छिम—माता-पिता के संयोग के बिना उत्पन्न होने वाले जीव—कृमि आदि।

७. उद्‌भिज—पृथ्वी का भेदन कर उत्पन्न होने वाले जीव खंजनक आदि।

ख-ज—अंडज की गति और आगति सात प्रकार की होती है।

पोतज की गति और आगति सात प्रकार की होती है। इसी प्रकार उद्‌भिज पर्यन्त सातों की गति और आगति जाननी चाहिए। अंडज यदि अंडजों में आकर उत्पन्न होता है तो अंडजों पोतजों यावत् उद्‌भिजों से आकर उत्पन्न होता है।

इसी प्रकार अंडज अंडजपन को छोड़कर अंडज पोतज यावत् उद्‌भिज जीवन को प्राप्त होता है।

५४४ क—आचार्य और उपाध्याय सात प्रकार से गण का संग्रह (संगठन) करते हैं।

यथा—१. आचार्य और उपाध्याय गण में रहने वाले साधुओं को सम्यक् प्रकार से आज्ञा (विधि अर्थात् कर्तव्य के लिए आदेश) या धारणा (अकृत्य का निषेध) करे।

२-५ आगे पांचवे स्थान में कहे अनुसार (यावत्-

आचार्य और उपाध्याय गच्छ को पूछकर प्रवृत्ति करे किन्तु गच्छ को पूछे विना प्रवृत्ति न करे) कहें।

६. आचार्य और उपाध्याय गण में अप्राप्त उपकरणों को सम्यक् प्रकार से (निर्दोष रूप से) प्राप्त करे।

७. आचार्य और उपाध्याय गण में प्राप्त उपकरणों की सम्यक् प्रकार से रक्षा एवं सुरक्षा करे किन्तु जैसे तैसे न रखे।

ख—आचार्य और उपाध्याय सात प्रकार से गण का असंग्रह (छिन्न-भिन्न) करते हैं।

यथा—१. आचार्य या उपाध्याय गण में रहने वाले साधुओं को आज्ञा या धारणा सम्यक् प्रकार से न करे। इसी प्रकार यावत् २-७ प्राप्त उपकरणों की सम्यक् प्रकार से रक्षा न करे।

५४५ क—पिण्डैषणा सात प्रकार की कही गई है,

यथा—१. असंसृष्टा—देने योग्य आहार से हाथ या पात्र लिप्त न हो ऐसी भिक्षा लेना।

२. संसृष्टा—देने योग्य आहार से हाथ या पात्र लिप्त हो ऐसी भिक्षा लेना।

३. उद्धृता—गृहस्थ अपने लिए रांधने वासण के में से आहार वाहर निकाले व ऐसा आहार ले।

४. अल्पलेपा—जिस आहार से पात्र में लेप न लागे ऐसा आहार (चणाआदि) ले।

५. अवगृहीता—भाजन में परोषा हुआ आहार ले।

६. प्रगृहीता—परोषने के लिये हाथ में लिया हुआ अथवा खाने के लिए लिया हुआ आहार ही ले।

७. उज्झित धर्मा—फेंकने योग्य आहार ही भिक्षा में ले।

ख—पाणैषणा सात प्रकार की कही गई है।[1]

ग—अवग्रह प्रतिमा सात प्रकार की कही गई है।

यथा—१. "मुझे अमुक उपाश्रय ही चाहिये" ऐसा निश्चय करके आज्ञा मांगे।

२. "मेरे साथी साधुओं के लिए उपाश्रय की याचना करूँगा" और उनके लिए जो उपाश्रय मिलेगा उसी में मैं रहूंगा।

३. मैं अन्य साधुओं के लिए उपाश्रय की याचना करूँगा किन्तु मैं उसमें नहीं रहूँगा।

४. मैं अन्य साधुओं के लिए उपाश्रय की याचना नहीं करूँगा किन्तु अन्य साधुओं द्वारा याचित उपाश्रय में मैं रहूँगा।

५. मैं अपने लिये ही उपाश्रय की याचना करूँगा अन्य के लिए नहीं।

पिण्डैषणा के समान पाणैषणा भी है।

६. मैं जिसके घर (उपाश्रय) में ठहरूँगा उसी के यहाँ से संस्तारक भी प्राप्त होगा तो उस पर सोऊँगा अन्यथा बिना संस्तारक के ही रात बिताऊँगा।

७. मैं जिस घर में (उपाश्रय) में ठहरूँगा उसमें पहले से बिछा हुआ संस्तारक होगा तो उसका उपयोग करूँगा।

घ—सप्तैकक सात प्रकार का कहा गया है। यथा—

१. स्थान सप्तैकक, २. नैषेधिकी सप्तैकक,

३. उच्चारप्रश्रवण विधि सप्तैकक, ४. शब्द सप्तैकक,

५. रूप सप्तैकक, ६. परक्रिया सप्तैकक,

७. अन्योन्य क्रिया सप्तैकक।[1]

ङ—सात महा अध्ययन कहे गये हैं।[2]

च—सप्तसप्तमिका भिक्षु प्रतिमा की आराधना ४९ अहोरात्र में होती है उसमें सूत्रानुसार यावत्—१९६ दत्ति ली जाती है।

५४६ क—अधोलोक में सात पृथ्वियाँ हैं।

ख—सात घनोदधी हैं।

---

१. आचारांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कंध की चूला रूप ये सात अध्ययन हैं।

२ सूत्रकृताङ्ग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध में ये सात महा-अध्ययन हैं।

ग—सात घनवात और सात तनुवात है।

घ—सात अवकाशान्तर हैं।

ङ—इन सात अवकाशान्तरों में सात तनुवात प्रतिष्ठित हैं।

च—इन सात तनुवातों में सात घनवात प्रतिष्ठित हैं।

छ—इन सात घनवातों में सात घनोदधि प्रतिष्ठित हैं।

ज—इन सात घनोदधियों में पुष्पभरी छाबड़ी के समान संस्थान वाली सात पृथ्वियाँ है।
यथा—१-७ प्रथमा यावत् सप्तमा।

झ—इन सात पृथ्वियों के सात नाम हैं।
यथा—१. घम्मा, २. वंसा, ३. सेला, ४. अंजना, ५. रिष्ठा, ६. मघा, ७. माघवती।

ञ—इन सात पृथ्वियों के सात गोत्र हैं।
यथा—१. रत्नप्रभा, २. शर्कराप्रभा, ३. वालुकाप्रभा, ४. पंकप्रभा, ५. धूमप्रभा, ६, तमप्रभा, ७. तमस्तमाप्रभा।

८७ —बादर (स्थूल) वायुकाय सात प्रकार की कही गई है।
यथा:—१. पूर्व का वायु, २. पश्चिम का वायु, ३. दक्षिण का वायु, ४. उत्तर का वायु, ५. ऊर्ध्व दिशा का वायु, ६. अधोदिशा का वायु ७. विविध दिशाओं का वायु।

५४८ —संस्थान सात प्रकार के कहे गये हैं।
यथा—१. दीर्घ २. ह्रस्व, ३. वृत्त, ४. त्र्यस्त्र,
५. चतुरस्र, ६. पृथुल, ७. परिमण्डल।

५४९ भय स्थान सात प्रकार के कहे गये हैं।
यथा—१. इहलोक भय, २. परलोक भय,
३. आदान भय, ४. अकस्मात् भय, ५. वेदना भय,
६. मरण भय। ७. अश्लोक—अपयश भय।

५५० क—सात कारणों से छद्मस्थ (असर्वज्ञ) जाना जाताहै।
यथा—१. हिंसा करने वाला, २. झूठ बोलने वाला,
३. अदत्त लेने वाला, ४. शब्द, रूप, रस और स्पर्श
को भोगने वाला, ५. पूजा और सत्कार से प्रसन्न
होने वाला।
६. "यह आधा कर्म आहार सावद्य (पाप सहित) है"
इस प्रकार की प्ररूपणा करने के पश्चात् भी आधा
कर्म आदि दोषों का सेवन करने वाला।
७. कथनी के समान करणी न करने वाला।

ख—सात कारणों से केवली जाना जाता है, यथा—
१. हिंसा न करने वाला।
२. झूठ न बोलने वाला।
३. अदत्त न लेने वाला।
४. शब्द, गन्ध, रूप, रस और स्पर्श का न भोगने
वाला।
५.-७.पूजा और सत्कार से प्रसन्न न होने वाला यावत्
कथनी के समान करणी करने वाला।

११ क—मूल गोत्र सात कहे जाते हैं, यथा—

१. काश्यप, २. गौतम, ३. वत्स, ४. कुत्स,
५. कौशिक, ६. मांडव्य, ७. वाशिष्ट।

ख—काश्यप गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. काश्यप, २. सांडिल्य, ३. गोल्य, ४. वाल,
५. मौजकी, ६. पर्वप्रेक्षकी, ७. वर्षकृष्ण।

ग—गौतम गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. गौतम, २. गार्ग्य, ३. भारद्वाज, ४. अंगिरस,
५. शर्कराभ, ६. भक्षकाभ, ७. उदकात्माभ।

घ—वत्स गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. वत्स, २. आग्नेय, ३. मैत्रिक, ४. स्वामिली,
५. शलक, ६. अस्थिसेन, ७. वीतकर्म।

ङ—कुत्स गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. कुत्स, २. मौद्गलायन, ३. पिंगलायन,
४. कौडिन्य, ५. मंडली, ६. हारित,
७. सौम्य।

च—कौशिक गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. कौशिक, २. कात्यायन, ३. शालंकायण,
४. गोलिकायण, ५. पाक्षिकायण, ६. आग्नेय,
७. लोहित्य।

छ—मांडव्य गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. मांडव्य, २. अरिष्ट, ३. संमुक्त, ४. तैल,

५. ऐलापत्य, ६. कांडिल्य, ७. क्षारायण।

ज—वाशिष्ठ गोत्र सात प्रकार का कहा गया है, यथा—

१. वाशिष्ठ, २. उजायन, ३. जारेकृष्ण,
४. व्याघ्रापत्य, ५. कौण्डिन्य, ६. संज्ञी,
७. पाराशर।

५५२ —मूलनय सात प्रकार के कहे गये हैं, यथा—

१. नैगम, २. संग्रह, ३. व्यवहार,
४. ऋजुसूत्र, ५. शब्द, ६. समभिरूढ़,
७. एवंभूत।

५५३ क —स्वर सात प्रकार के कहे गये हैं, यथा—

१. षड्ज, २. रिसभ, ३. गांधार, ४. मध्यम,
५. पंचम, ६. धैवत, ७. निषाद।

१—षड्ज—१. नासा, २. कंठ, ३. हृदय, ४. जीभ, ५. दाँत, और तालु इन छः स्थानों से उत्पन्न होने वाला स्वर।

२—रिषभ—बैल (साँड़) के समान गंभीर स्वर।

३—गांधार—विविध प्रकार के गंधों से युक्त स्वर।

४—मध्यम—महानाद वाला स्वर।

५—पंचम—नासिकाओं से निकलने वाला स्वर।

६—धैवत—अन्य स्वरों से अनुसंधान करने वाला स्वर।

७—निषाद—अन्य स्वरों को तिरस्कृत करने वाला स्वर।

ख—इन सात स्वरों के सात स्वर स्थान हैं, यथा

१—षड्ज स्वर जिह्वा के अग्रभाग से निकने वाला स्वर।
२—ऋषभ स्वर हृदय से निकलता है।
३—गांधार स्वर उग्र कंठ से निकलता है।
४—मध्यम स्वर जिह्वा के मध्य भाग से निकलता है।
५—पंचम स्वर पांच स्थानों से निकलने वाला स्वर।
६—धैवत स्वर दांत और ओष्ठ से निकलने वाला स्वर।
७—निषाद स्वर मस्तक से निकलने वाला स्वर।

ग—सात प्रकार के जीवों से निकलने वाले सात स्वर।

१—षड्ज मयूर के कण्ठ से निकलने वाला स्वर।
२—रिषभ कुक्कुट के कण्ठ से निकलता है।
३—गांधार हंस के कण्ठ से निकलता है।
४.—मध्यम घेंटे के कण्ठ से निकलता है।
५.—पंचम कोयल के कण्ठ से निकलता है।
६—धैवत सारस या क्रौंच के कण्ठ से निकलता है।
७—निषाद हाथी के कण्ठ से निकलता है।

घ सात प्रकार के अजीव पदार्थों से निकलने वाले सात स्वर, यथा—

यथा—१. षड्जस्वर—मृदङ्ग से निकलता है।
२. ऋषभ स्वर—गोमुखी[1] से निकलता है।
३. गांधार स्वर—शंख से निकलता है।

---

१ गोमुखी को रणसिंगा भी कहते हैं।

४. मध्यम स्वर—झालर से निकलता है।

५. पंचम स्वर—गोधिका वाद्य से निकलता है।

६. धैवत स्वर—ढोल से निकलता है।

७. निषाद स्वर—महाभेरी से निकलता है।

ङ—सात स्वर वाले मनुष्यों के लक्षण—

यथा—१. षड्जस्वर वाले मनुष्य को आजीविका सुलभ होती है, उसका कार्य निष्फल नहीं होता। उसे गायें, पुत्र और मित्रों की प्राप्ति होती है। वह स्त्री को प्रिय होता है।

२. रिषभ स्वर वाले को ऐश्वर्य प्राप्त होता है। वह सेनापति वनता है और उसे धन लाभ होता है। तथा वस्त्र, गंध, अलंकार, स्त्री, और शयन आदि प्राप्त होते हैं।

३. गांधार स्वर वाला गीत—युक्तिज्ञ, प्रधान-आजीविका वाला, कवि, कलाओं का ज्ञाता, प्रज्ञाशील और अनेक शास्त्रों का ज्ञाता होता है।

४. मध्यम स्वर वाला—सुख से खाता पीता है और दान देता है।

५. पंचम स्वर वाला—राजा, शूरवीर, लोक संग्रह करने वाला, और गणनायक होता है।

६. धैवत स्वर वाला—शाकुनिक, झगड़ालु, वागुरिक, शौकरिक और मच्छीमार होता है।

७. निषाद स्वर वाला—चांडाल, अनेक पापकर्मों का करने वाला या गौ घातक होता है।

च—इन सात स्वरों के तीन ग्राम कहे गये हैं।
यथा १. षड्ज ग्राम, २. मध्यम ग्राम,
३. गांधार ग्राम।

छ—षड्जग्राम की सात मूर्छनायें होती हैं।
यथा १. भंगी, २. कौरवीय, ३. हरि, ४. रजनी,
५. सारकान्ता, ६. सारसी, ७. शुद्ध षड्जा।

ज—मध्यम ग्राम की सात मूर्छनायें होती हैं।
यथा १. उत्तरमन्दा, २. रजनी, ३. उत्तरा,
४. उत्तरासमा, ५. आशोकान्ता, ६. सौवीरा,
७. अभीरू।

झ—गांधार ग्राम की सात मूर्छनायें हैं।
यथा १. नंदी, २. क्षुद्रिमा, ३. पुरिमा,
४. शुद्ध गांधारा, ५. उत्तर गांधारा, ६. सुष्ठुत्तर आयाम, ७. कोटि मातसा।

ञ—१. प्रश्न—सात स्वर कहां से उत्पन्न होते हैं?
उत्तर—नाभी से।
२. प्रश्न—गेय की योनि कौनसी होती है?
उत्तर—गीत रुदित योनि है।
३. प्रश्न—उच्छ्वास काल कितने समय का है?

उत्तर—एक पद के उच्चारण में जितना समय लगता है उतना समय गीत के उच्छ्वास का है।

४—गेय के तीन आकार हैं, वे इस प्रकार हैं—

१. मंद स्वर से आरम्भ करे।

२. मध्य में स्वर की वृद्धि करे।

१. अन्त में क्रमशः हीन करे।

५—गेय के छः दोष, आठ गुण, तीन वृत्त और दो भणितियां इनको जो सम्यक् प्रकार से जानता है वह सुशिक्षित रंग (नाट्य शाला) में गा सकता है।

६—हे गायक ! इन छः दोषों को टालकर गाना।

१. भयभीत होकर गाना, २. शीघ्रतापूर्वक गाना, ३. संक्षिप्त करके गाना, ४. ताल बद्ध न गाना, ५. काकस्वर से गाना, ६. नाक से उच्चारण करते हुए गाना।

गेय के आठ गुण हैं।

यथा—१. पूर्ण, २. रक्त, ३. अलंकृत, ४. व्यक्त, ५. अविस्वर, ६. मधुर, ७. स्वर, ८. सुकुमार,

गेय के ये गुण और हैं

यथा—१. उरविशुद्ध, कंठविशुद्ध और शिरोविशुद्ध जो गाया जाय।

२. मृदु और गम्भीर स्वर से गाया जाय।

३. तालबद्ध और प्रतिक्षेप बद्ध गाया जाय।

४. सात स्वरों से सम गाया जाय।

गेय के ये आठ गुण और हैं।

१. निर्दोष, २. सारयुक्त, ३. हेतु युक्त, ४. अलंकृत ५. उपसंहार युक्त, ६. सोत्प्रास, ७. मित, ८. मधुर।

तीन वृत्त हैं—

१. सम, २. अर्ध सम, ३. सर्वत्र विषम।

दो भणितिया हैं, यथा—

१. संस्कृत और २. प्राकृत

इन दो भाषाओं को ऋषियों ने प्रशस्त मानी हैं और इन दो भाषाओं में ही गाया जाता है।

१. प्रश्न—मधुर कौन गाती हैं?

उत्तर—श्यामा (किंचित् काली) स्त्री।

२. प्रश्न—खर स्वर से कौन गाती है?

उत्तर—काली (घन के समान श्याम रंग वाली)।

३. प्रश्न—रुक्ष स्वर से कौन गाती है?

उत्तर—काली।

४. प्रश्न—दक्षता पूर्वक कौन गाती है?

उत्तर—गौरी (गौरवर्ण वाली)

५. प्रश्न—मन्द स्वर से कौन गाती है?

उत्तर—काणी।

६. प्रश्न—शीघ्रतापूर्वक कौन गाती है।

उत्तर—अंधी

७. प्रश्न—विस्वर (विरुद्ध स्वर) से कौन गाती है?

उत्तर—पिंगला—भूरे वर्ण वाली।

स्वर सात प्रकार से सम होता है,

यथा—१. तंत्रीसम, २. तालसम, ३. पाद सम, ४. लय सम, ५. ग्रह सम, ६. श्वासोच्छ्वाससम, ७. संचार सम, सात स्वर, तीन ग्राम, इक्कीस मूर्छना, और उनपचास तान हैं।

इति स्वर मंडल

५५४ —काय क्लेश सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. स्थानातिग—कार्योत्सर्ग करने वाला।

२. उत्कटुकासनिक—उकडु बैठने वाला।

३. प्रतिमास्थायी—भिक्षु प्रतिमा का वहन करने वाला।

४. वीरासनिक—सिंहासन पर बैठने वाले के समान बैठना।

५. नैषधिक—पैर आदि स्थिर करके बैठना।

६. दंडायतिक—दण्ड के समान पैर फैलाकर बैठना।

७. लगंडशायी—वक्र काष्ठ के समान—
—भूमी से पीठ ऊंची रखकर सोने वाला।

५५५ क—जम्बूद्वीप में सात वर्ष (क्षेत्र) कहे गये हैं,

यथा—१. भरत, २. ऐरवत, ३. हैमवत, ४. हैरण्यवत, ५. हरिवर्ष, ६. रम्यक् वर्ष, ७. महाविदेह।

ख—जम्बूद्वीप में सात वर्षधर पर्वत कहे गये हैं।
यथा—१. चुल्लहिमवन्त, २. महाहिमवंत, ३. निषध।
४. नीलवंत, ५. रुक्मी, ६. शिखरी, ७. मंदराचल।

ग—जम्बूद्वीप में सात महानदियां हैं जो पूर्व की ओर बहती हुई लवण समुद्र में मिलती हैं।
यथा—१. गंगा, २. रोहिता, ३. हरित, ४. शीता,
५. नरकान्ता, ६. सुवर्णकूला, ५. रक्ता।

घ—जम्बूद्वीप में सात महानदियां हैं जो पश्चिम की ओर बहती हुई लवण समुद्र में मिलती हैं,
यथा—१. सिन्धु, २. रोहितांशा, ३. हरिकान्ता,
४. शीतोदा, ५. नारीकान्ता, ६. रुप्यकूला,
७. रक्तवती ।

ङ—धातकीखण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में सात वर्ष हैं,
यथा—१-७ भरत—यावत्—महाविदेह।

च—धातकीखण्ड द्वीप में पूर्वार्ध में सात वर्षधर पर्वत हैं।
यथा—१. चुल्ल हिमवंत—यावत्—मंदराचल ।

छ—धातकी खण्ड द्वीप के पूवार्ध में सात महानदियां हैं जो पूर्व दिशा में बहती हुई कालोद समुद्र में मिलती हैं।
यथा—१-७ गंगा यावत् रक्ता।

ज—धातकी खण्ड द्वीप में सात महानदियां हैं जो पश्चिम में बहती हुई लवण समुद्र में मिलती हैं।
यथा—१-७ सिन्धु—यावत्—रक्तावती।

झ-ठ—धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध में सात वर्ष हैं,
यथा १-७ भरत यावत् महाविदेह
शेष तीन सूत्र पूर्ववत्।
विशेष—पूर्व की ओर बहने वाली नदियां लवण समुद्र में मिलती हैं और पश्चिम की ओर बहने वाली नदियां कालोद समुद्र में मिलती हैं।

ड-त—पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में पूर्ववत् सात वर्ष हैं।
विशेष—पूर्व की ओर बहने वाली नदियां पुष्करोद समुद्र में मिलती हैं। पश्चिम की ओर बहने वाली नदियां कालोद समुद्र में मिलती हैं शेष ३ सूत्र पूर्ववत्।
इसी प्रकार पश्चिमार्ध के भी ४ सूत्र हैं।
विशेष—पूर्व की ओर बहने वाली नदियां कालोद-समुद्र में मिलती हैं और पश्चिम की ओर बहने वाली नदियां पुष्करोद समुद्र में मिलती हैं।
वर्ष, वर्षधर और नदियां सर्वत्र कहनी चाहिये।

५५६ क—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी में सात कुलकर थे,
यथा—१. मित्रदास, २. सुदाम, ३. सुपार्श्व,

४. स्वयंप्रभ, ५. विमलघोष, ६. सुघोष, ७. महाघोष ।

ख—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में सात कुलकर थे,
यथा—१. विमलवाहन, २. चक्षुष्मान्, ३. यशस्वान्, ४. अभिचन्द्र, ५. प्रसेनजित्, ६. मरुदेव, ७. नाभि ।

ग—इन सात कुलकरों की सात भार्यायें थी,
यथा—१. चन्द्रयशा, २. चन्द्रकान्ता, ३. सुरूपा, ४. प्रतिरूपा, ५. चक्षुकान्ता, ६. श्रीकान्ता, ७. मरुदेवी ।

घ—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में सात कुलकर होंगे ।
यथा—१. मित्रवाहन, २. सुभीम, ३. सुप्रभ, ४. सयंप्रभ, ५. दत्त, ६. सूक्ष्म, ७. सुबन्धु ।

ङ—विमलवाहन कुलकर के काल में सात प्रकार के कल्पवृक्ष उपभोग में आते थे ।
यथा—१. मद्यांगा, २. भृंगा, ३. चित्रांगा, ४. चित्र-रसा, ५. मण्यंगा, ६. अनग्ना, ७. कल्पवृक्ष ।

५५७ दण्ड नीति सात प्रकार की है—
यथा—१. हक्कार—हे या हा कहना ।
२. मक्कार—मा अर्थात् मत कर कहना ।
३. धिक्कार—फटकारना ।

४. परिभाषण—अपराधी को उपालम्भ देना।

५. मंडल बंध—क्षेत्र मर्यादा से बाहर न जाने की आज्ञा देना।

६. चारक—कैद करना।

७. छविच्छेद—हाथ पैर आदि का छेदन करना।

५५८ क—प्रत्येक चक्रवर्ती के सात एकेन्द्रिय रत्न कहे गये हैं।
यथा—१. चक्ररत्न, २. छत्ररत्न, ३. चर्मरत्न, ४. दण्डरत्न, ५. असिरत्न, ६. मणिरत्न, ७. काकिणी रत्न।

ख—प्रत्येक चक्रवर्ती के सात पंचेन्द्रिय रत्न कहे गये हैं,
यथा—१. सेनापतिरत्न, २. गाथापतिरत्न, ३. वर्धकीरत्न, ४. पुरोहितरत्न, ५. स्त्रीरत्न ६. अश्व रत्न, ७. हस्तीरत्न।

५५६ क—दुषमकाल (अवसर्पिणी काल का पांचवा भाग) के सात लक्षण हैं,

यथा—१. अकाल में वर्षा होना,

२. वर्षाकाल में वर्षा न होना,

३. असाधु (दुर्जन) जनों की पूजा होना,

४. साधु (सज्जन) जनों की पूजा न होना,

५. गुरु के प्रति लोगों का मिथ्याभाव होना

६. मानसिक दुःख,

७. वाणी का दुःख।

ख—सुषम काल के सात लक्षण हैं,

यथा—१. अकाल में वर्षा नहीं होती है,

२. वर्षाकाल में वर्षा होती है,

३. असाधु की पूजा नहीं होती है,

४. साधु की पूजा होती है,

५. गुरु के प्रति लोगों का सम्यक् भाव होता है,

६. मानसिक सुख,

७. वाणी का सुख।

६० —संसारी जीव सात प्रकार के कहे गये हैं,

यथा—१. नैरयिक, २. तिर्यंच, ३. तिर्यंचनी,

४. मनुष्य, ५. मनुष्यनी, ६. देव, ७. देवी,

६१ —आयु का भेदन सात प्रकार से होता है,

यथा—१. अध्यवसाय (राग-द्वेष और भय) से,

२. निमित्त (दंड, शस्त्र आदि) से,

३. आहार (अत्यधिक आहार) से,[1]

४. वेदना (आंख आदि की तीव्र वेदना) से,

५. पराघात (कुएं में गिरना आदि आकस्मिक आघात) से,

६. स्पर्श (सर्प बिच्छु आदि के डंक) से,

७. श्वासोच्छ्वास (के रोकने) से,

---

१ आहार के अभाव से।

क—सभी जीव सात प्रकार के हैं,

यथा—१. पृथ्वीकायिक, २. अप्कायिक, ३. तेजस्कायिक, ४. वायुकायिक, ५. वनस्पतिकायिक, ६. त्रसकायिक, ७. अकायिक।

ख—सभी जीव सात प्रकार के हैं,

यथा—१-६ कृष्ण लेश्या वाले, यावत् शुक्ल लेश्या वाले, ७. अलेशी,

५६३ —ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती सात धनुष के ऊंचे थे। वे सातसौ वर्ष का पूर्वायु होने पर, सातवीं पृथ्वी के अप्रतिष्ठान नरकावास में नैरयिक रूप में उपन्न हुए।

५६४ —मल्लीनाथ अर्हन्त स्वयं सातवे (सात राजाओं के साथ) मुण्डित हुये और गृहस्थावास त्यागकर अणगार प्रव्रज्या से प्रव्रजित हुये।

यथा—१. मल्ली—विदेह राज कन्या,

२. प्रतिबुद्धी—इक्ष्वाकु राजा,

३: चन्द्रच्छाय—अंग देश का राजा,

४. रुक्मी—कुणाल देश का राजा.

५. शंख—काशी देश का राजा,

६. अदीन शत्रु—कुरु देश का राजा

७. जित शत्रु—पांचाल देश का राजा।

५६५ दर्शन सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. सम्यग्दर्शन, २. मिथ्यादर्शन, ३. सम्यग्मि-

थ्यादर्शन, ४. चक्षुदर्शन, ५. अचक्षुदर्शन, ६. अवधि-
दर्शन और केवल दर्शन।

५६६ —छद्मस्थ वीतराग मोहनीय को छोड़कर सात कर्म
प्रकृतियों का वेदन करते हैं—

यथा—१. ज्ञानावरणीय, २. दर्शनावरणीव, ३. वेद-
नीय, ४. आयुकर्म, ५. नामकर्म, ६. गोत्र कर्म,
७. अन्तराय कर्म।

५६७ क—छद्मस्थ सात स्थानों को पूर्णरूप से न जानता है और
न देखता है,

यथा—१. धर्मास्तिकाय, २. अधर्मास्तिकाय,
३, आकाशास्तिकाय, ४. शरीर रहित जीव,
५. परमाणु पुद्गल, ६. शब्द और ७. गन्ध।

ख—इन्हीं सात स्थानों को सर्वज्ञ पूर्ण रूप से जानता है
और देखता है।

यथा—१-७ धर्मास्तिकाय यावत् गन्ध।

५६८ —श्रमण भगवान महावीर वज्र ऋषभ नाराच संघयण
वाले समचतुरस्र संस्थान वाले और सात हाथ
ऊंचे थे।

६६५ —सात विकथायें कहीं गई हैं,

यथा—१, स्त्री कथा, २, भक्त (आहार) कथा,

३. देश कथा, ४. राज कथा, ५. मृदुकारिणी कथा[1]
६. दर्शनभेदिनी[2] ७. चारित्र भेदिनी[3]

५७० —गण में आचार्य और उपाध्याय के सात अतिशय हैं।

यथा—१-५ आचार्य और उपाध्याय उपाश्रय में धूल भरे पैरों को दूसरे से झटकवावे या पुंछावे तो भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं होता—शेष पांचवे ठाणे के समान यावत् आचार्य उपाध्याय उपाश्रय के बाहर इच्छानुसार एक रात या दो रात रहे तो भी मर्यादा का अतिक्रमण नहीं होता।

६. उपकरण की विशेषता—आचार्य या उपाध्याय उज्ज्वल वस्त्र रखे तो मर्यादा का लंघन नहीं होता।

७. भक्तपान की विशेषता—आचार्य या उपाध्याय श्रेष्ठ और पथ्य भोजन ले तो मर्यादा का अतिक्रमण नहीं होता।

५७१ क—संयम सात प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१-६ पृथ्वीकायिक संयम—यावत् त्रस कायिक संयम १-७ अजीवकाय संयम

---

१ कारुण्य रस प्रधान कथा
२ कुतीर्थीकों की प्रशंसा रूप कथा।
३ प्रमाद बाहुल्य से इस काल में चारित्र नहीं है।

ख—असंयम सात प्रकार के कहे गये हैं,

यथा—१-६ पृथ्वीकायिक असंयम—यावत् त्रस-कायिक असंयम, अजीवकाय असंयम ।

ग—आरम्भ सात प्रकार के कहे गये हैं,

यथा—१-७ पृथ्वीकायिक आरम्भ—यावत् अजीव-काय आरम्भ ।

घ—इसी प्रकार अनारम्भ सूत्र है ।

ङ—,, ,, सारंभ सूत्र है ।

च—,, ,, असारंभ सूत्र है ।

छ—,, ,, समारंभ सूत्र है ।

ज—,, ,, असमारंभ सूत्र है ।

२ —प्रश्न—हे भगवन् ! अलसी, कुसुंभ, कोद्रव, कांग, रल, सण, सरसों और मूले के बीज । इन धान्यों को कोठे में, पाले में यावत् ढांककर रखे तो उन धान्यों की योनि[1] कितने काल तक सचित्त रहती है ?

उत्तर—हे गौतम ? जघन्य अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट—सात संवत्सर ।

पश्चात् योनि म्लान हो जाती है—यावत्—योनि नष्ट हो जाती है ।

३ क—बादर अप्कायिक जीवों की उत्कृष्ट स्थिति सात हजार वर्ष की कही गई है ।

योनि-ऊगने की शक्ति ।

ख—तीसरी वालुका प्रभा में नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की कही गई है।

ग—चौथी पंक प्रभा में नैरयिकों की जघन्य स्थिति सात सागरोपम की कही गई है।

५७४ क—शक्रेन्द्र के वरुण लोकपाल की सात अग्रमहिषियां हैं

ख—ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की सात अग्रमहिषियां है

ग—ईशानेन्द्र के यम लोकपाल की सात अग्रमहिपियां है

५७५ क—ईशानेन्द्र के आभ्यन्तर परिषद् के देवों की स्थिति सात पल्योपम की है।

ख—शकेन्द्र के अग्रमहिषी देवियों की स्थिति सात पल्योपम की है।

ग—सौधर्म कल्प में परिगृहिता देवियों की उत्कृष्ट स्थिति सात पल्योपम की है।

५७६ क—सारस्वत लोकान्तिक देव के सात देवों का परिवार है।

ख—आदित्य लोकान्तिक देव के सात सौ देवों का परिवार है।

ग—गर्दतोय लोकान्तिक देव के सात देवों का परिवार है।

घ—तुपित लोकान्तिक देव के सात हजार देवों का परिवार है।

५७७ क—सनत्कुमार कल्प में देवताओं की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम की है।

ख—महेन्द्र कल्प में देवताओं की उत्कृष्ट स्थिति कुछ अधिक सात सागरोपम की है,

ग—ब्रह्मलोक कल्प में देवताओं की जघन्य स्थिति सात सागरोपम की है।

५७८ ब्रह्मलोक और लांतक कल्प में विमानों की ऊंचाई सात सौ योजन की है,

५७९ क—भवनवासी देवों के भवधारणीय शरीरों की ऊंचाई सात हाथ की है।

ख—इसी प्रकार व्यन्तर देवों की

ग—ज्योतिषी देवों की

घ—सौधर्म और ईशान कल्प में देवों के भवधारणीय शरीरों की ऊंचाई सात हाथ की है।

५८० क—नन्दीश्वर द्वीप में सात द्वीप हैं।

यथा—१. जम्बूद्वीप, २. धातकीखण्ड द्वीप, ३. पुष्कर वरद्वीप, ४. वरुणवर द्वीप, ५. क्षीरवर द्वीप, ६. घृत वर द्वीप, ७. क्षोद वर द्वीप।

ख—नन्दीश्वर द्वीप में सात समुद्र हैं।

यथा—१. लवण समुद्र, २. कालोद समुद्र, ३. पुष्करोद समुद्र, ४. करुणोद समुद्र, ५. खीरोद समुद्र, ६. घृतोद समुद्र, ७. क्षोदोद समुद्र।

सात प्रकार की श्रेणियाँ कही गई हैं।
यथा—१. ऋजु आयता[1]।
२. एकतः वक्रा[2], ३. द्विधावक्रा[3]

---

१. ऋजु आयता—सरल और लम्बी श्रेणी।
जब जीव या पुद्गल ऊर्ध्वलोक से अधोलोक में या अधोलोक से ऊर्ध्वलोक में गमन करे तब सीधी रेखा से गमन करते हैं वह सीधी रेखा "ऋजु आयता श्रेणी" कही जाती है।

२. एकतः वक्राः—जब जीव या पुद्गल एक श्रेणी से दूसरी श्रेणी में गमन करता है तब एक जगह वक्र गति करता है।
यथा—एक जीव अधोलोक में पूर्व दिशा में मरता है और उसका उत्पत्ति स्थान उर्ध्वलोक में पश्चिम दिशा में होता है तो वह पहले ऋजु गति से उर्ध्वलोक की पूर्व दिशा में पहुंचता है और वहां से सीधा पश्चिम दिशा में जाता है। इस प्रकार उसे पश्चिम दिशा में पहुँचने के लिए एक जगह वक्र गति से गमन करना पड़ता है।

३. द्विधावक्रा—जिस श्रेणी में दो जगह वक्र गति करनी पड़ती है, वह द्विधा वक्रा श्रेणी कही जाती है। यथा—एक जीव उर्ध्वलोक के अग्निकोण में मृत्यु को प्राप्त हुआ और उसका उत्पत्ति स्थान वायव्य कोण में हो तो वह पहले तिरछी गति से नैऋत्य कोण में जाता है वहाँ से तिरछी गति से वायव्य कोण में पहुंचता है।

४. एकतः खा[४], ५. द्विधा खा[५], ६. चक्रवाला[६], ७. अर्धचक्र वाला[७]

५८२ क—चमर असुरेन्द्र के सात सेनायें हैं, और सात सेनापति हैं।

यथा—१. पैदल सेना, २. अश्व सेना, ३. हस्तिसेना, ४. महिष सेना, ५. रथ सेना, ६. नट सेना, ७. गंधर्व सेना।

१-५ द्रुम—पैदल सेनापति,

---

४. एकतः खा—जिस श्रेणी में एक ओर लोक नाड़ी(त्रसनाड़ी) के बाहर का आकाश हो वह श्रेणी "एकतः खा" कही जाती है। यथा—एक जीव त्रसनाड़ी से बाहर का त्रसनाड़ी में उत्पन्न हो तो वह श्रेणी एकतः खा कही जाती है।

५. द्विधा खा—जिस श्रेणी में दो बार त्रसनाड़ी के बाहर के आकाश का स्पर्श हो वह श्रेणी द्विधा खा कही जाती है। यथा—एक जीव त्रसनाड़ी के बाहर दक्षिण भाग से त्रसनाड़ी के बाहर बायें भाग में जाकर उत्पन्न हो तो वह दो बार त्रसनाडी से बाहर के आकाश का स्पर्श करता है।

६. चक्र वाला—चक्र के समान जो गति करे वह चक्रवाला कही जाती है। यह गति जीव की नहीं होती, केवल पुद्गल की होती है।

७. अर्धचक्र वाला—अर्ध गोल यह गति भी परमाणु की होती है।

शेष पांचवे स्थानक के समान यावत् किन्नर-रथसेना का सेनापति,

६. रिष्ट—नटसेना का सेनापति,

७. गीतरती—गंधर्व सेना का सेनापति।

ख—बलि वैरोचनेन्द्र के सात सेनायें हैं और सात सेनापति हैं।

यथा—१-५ पैदल सेना यावत् गंधर्व सेना,

१-५ महाद्रुम—पैदल सेना का सेनापति,

यावत् किंपुरुष—रथ सेना का सेनापति,

६. महारिष्ट—नट सेना का सेनापति,

७. गीतयश—गंधर्व सेना का सेनापति।

ग—धरणेन्द्र (नाग कुमारेन्द्र) की सात सेनायें और सात सेनापति हैं,

यथा—१-७ पैदल सेना यावत् गंधर्व सेना

१-५ रुद्रसेन—पैदल सेना का सेनापति

यावत्—आनन्द—रथ—सेना का सेनापति,

६. नन्दन—नटसेना का सेनापति

७. तेतली—गंधर्व सेना का सेनापति।

घ—नाग कुमारेन्द्र भूतानन्द की सात सेनायें और सात सेनापति हैं

यथा—१-६ पैदल सेना यावत् गंधर्व सेना।

१-५ दक्ष पैदल सेना का सेनापति

यावत्—नंदुत्तर—रथ सेना का सेनापति.

६. रती—नट सेना का सेनापति,

७. मानस गंधर्व सेना का सेनापति।

ङ-भ—इस प्रकार घोष और महाघोष पर्यन्त सात सात सेनायें और सात सात सेनापति हैं।

म—शक्रेन्द्र की सात सेनायें और सात सेनापति हैं।

यथा—१-७ पैदल सेना यावत् गंधर्व सेना
१-५ हरिणगमेषी—पैदल सेना का सेनापति।
यावत् माढर—रथ सेना का सेनापति।
६. महास्वेत—नट सेना का सेनापति
७. रत—गंधर्व सेना का सेनापति
शेष पांचवें स्थान के अनुसार
इस प्रकार अच्युत देवलोक पर्यन्त सेना और सेनापतियों का वर्णन समझें।

५८३ क—चमरेन्द्र के द्रुम पैदल सेनापति के सात कच्छ (सैन्य समूह) है,

यथा—१-७ प्रथम कच्छ—यावत् सप्तम कच्छ।
प्रथम कच्छ में ६४००० देव हैं।
द्वितीय कच्छ में प्रथम कच्छ से दूने देव हैं।
तृतीय कच्छ में द्वितीय कच्छ से दूने देव हैं।
इस प्रकार सातवें कच्छ तक दूने-दूने देव कहें।

ख—इस प्रकार बलेन्द्र के भी सात कच्छ हैं,

विशेष सूचना—महद्रुम सेनापति के प्रथम कच्छ में साठ हजार देव हैं, शेष छः कच्छों में पूर्ववत् दूने-दूने देव कहें।

ग—इस प्रकार धरणेन्द्र के सात कच्छ हैं।

विशेष सूचना—रुद्रसेन सेनापति के प्रथम कच्छ में २८००० देव हैं शेष छः कच्छों में पूर्ववत् दुगने-दुगने देव कहें।

घ-भ—इस प्रकार महाघोष पर्यन्त दूगुने दूगुने देव कहें।

विशेष सूचना—पैदल सेना के सेनापतियों के पूर्व-वत् कहें।

म—शक्रेन्द्र के पैदल सेनापति हरिणगमेषी देव के सात कच्छ हैं।

चमरेन्द्र के समान अच्युतेन्द्र पर्यन्त कच्छ और देवताओं का वर्णन समझें।

पैदल सेनापतियों के नाम पूर्ववत् कहें।

देवताओं की संख्या इन दो गाथाओं से जाननी चाहिये।

१-१०—शक्रेन्द्र के पैदल सेनापति के प्रथम कच्छ में ८४००० देव हैं।

ईशानेन्द्र के ८०,००० देव हैं।

सनत्कुमार के ७२,००० देव हैं।

माहेन्द्र के ७०,००० देव हैं।

ब्रह्मेन्द्र के ६०,००० देव हैं।

लांतकेन्द्र के ५०,००० देव हैं।

महाशुकेन्द्र के ४०,००० देव हैं।

सहस्रारेन्द्र के ३०,००० देव हैं।

आनतेन्द्र और आरणेन्द्र के २०,००० देव हैं।

प्राणतेन्द्र और अच्युतेन्द्र के २०,००० देव हैं।

प्रत्येक कच्छ में पूर्व कच्छ से दुगुने-दुगने देव कहें।

५८४ —वचन विकल्प सात प्रकार के हैं, यथा—

१. आलाप—अल्प भाषण,

२. अनालाप—कुत्सित आलाप,

३. उल्लाप—प्रश्नगर्भित वचन,

४. अनुल्लाप—निंदित वचन,

५. संलाप—परस्पर भाषण करना,

६. प्रलाप—निरर्थक वचन,

७. विप्रलाप—विरुद्ध वचन।

५८५ क—विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. ज्ञान विनय, २. दर्शन विनय, ३. चारित्र विनय, ४. मन विनय, ५. वचन विनय, ६. काय विनय, ७. लोकोपचार विनय।

ख—प्रशस्त मन विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. अपापक—शुभ चिंतन रूप विनय,

२. असावद्य—चोरी आदि निंदित कर्म रहित,

३. अक्रिय—कायिकादि क्रिया रहित,

४. निरुपक्लेश—शोकादि पीड़ा रहित,

५. अनाश्रवकर—प्राणातिपातादि रहित,

६. अक्षतकर—प्राणियों को पीड़ित न करने रूप,

७. अभूताभिशंकन—अभयदान रूप।

ग—अप्रशस्त मन विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. पापक—अशुभ चिंतन रूप,

२. सावद्य—चोरी आदि निंदित कर्म,

३. सक्रिय—कायिकादि क्रिया युक्त,

४. सोपक्लेश—शोकादि पीड़ा युक्त,

५. आश्रवकर—प्राणातिपातादि आश्रव,

६. क्षयकर—प्राणियों को पीड़ित करने रूप,

७. भूताभिशंकन—भयकारी।

घ—प्रशस्त वचन विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१-७ अपापक, असावद्य, यावत् अभूताभिशंकन।

ङ—अप्रशस्त वचन विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१-७ पापक यावत् भूताभिशंकन।

च—प्रशस्तकाय विनय सात प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. उपयोग पूर्वक गमन,

२. उपयोग पूर्वक स्थिर रहना,

३. उपयोग पूर्वक बैठना,

५. उपयोग पूर्वक देहली आदि का उल्लंघन करना,
६. उपयोग पूर्वक अर्गला आदि का अतिक्रमण,
७. उपयोग पूर्वक इन्द्रियों का प्रवर्तन ।

छ—अप्रशस्तकाय विनय सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१-७ उपयोग विना गमन करना,
यावत्—उपयोग विना इन्द्रियों का प्रवर्तन ।

ज—लोकोपचार विनय सात प्रकार का कहा गया है,
यथा—१. अभ्यासवर्तित्व—समीपरहना — जिससे बोलने वाले को तकलीफ न हो,

२. परछंदानुवर्तित्व—दूसरे के अभिप्राय के अनुसार आचरण करना,

३. कार्य हेतु—इन्होंने मुझे श्रुत-दिया है अतः इनका कहना मुझे मानना ही चाहिये ।

४. कृतप्रतिकृतिता—इनकी मैं कुछ सेवा करूंगा तो ये मेरे पर कुछ उपकार करेंगे,

५. आर्तगवेषण—रुग्ण की गवेषणा करके औषध देना,

६. देश-कालज्ञता—देश और काल को जानना,

७. सभी अवसरों में अनुकूल रहना ।

क—समुद्घात सात प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१. वेदना समुद्घात, २. कषाय समुद्घात, ३. मारणांतिक समुद्घात, ४. वैक्रिय समुद्घात,

५. तैजस समुद्घात, ६. आहारक समुद्घात,
७. केवली समुद्घात।

ख—मनुष्यों के सात समुद्घात कहे गये हैं,
यथा—पूर्ववत्।

५८७ क—श्रमण भगवान् महावीर के तीर्थ में सात प्रवचन-निह्नव हुए,

यथा—१. वहुरत—दीर्घकाल में वस्तु की उत्पत्ति मानने वाले,

२. जीव प्रदेशिका—अन्तिम जीव प्रदेश में जीवत्व मानने वाले,

३. अव्यक्तिका—साधु आदि को संदिग्ध दृष्टि से देखने वाले,

४. सामुच्छिदेका—क्षणिक भाव मानने वाले,

५. दो क्रिया—एक समय में दो क्रिया मानने वाले,

६. त्रैराशिका—१. जीव राशि, २. अजीव राशि और ३. नो जीव राशि। इस प्रकार तीन राशि की प्ररुपणा करने वाले,

७. अवद्धिका—जीव कर्म से स्पष्ट है किन्तु कर्म से वद्ध जीव नहीं है, इस प्रकार की प्ररुपणा करने वाले।

ख—इन सात प्रवचन निह्नवों के सात धर्माचार्य थे,
यथा—१. जमाली, २. तिष्यगुप्त, ३. आषाढ़,

४. अश्वमित्र, ५. गंग, ६. षडुलुक (रोहगुप्त),
७. गोष्ठामाहिल ।

ग—इन प्रवचन निह्नवों के सात उत्पत्ति नगर हैं,
यथा—१. श्रावस्ती, २. ऋषभपुर, ३. श्वेताम्बिका,
४. मिथिला, ५. उल्लुकातीर, ६. अंतरंजिका
७. दशपुर ।

८८ क—सातावेदनीय कर्म के सात अनुभाव (फल) हैं,
यथा—१. मनोज्ञ शब्द, २. मनोज्ञ रूप, ३-५
यावत्—मनोज्ञ स्पर्श, ६. मानसिक सुख,
७. वाचिक सुख ।

ख—असातावेदनीय कर्म के सात अनुभाव (फल) हैं,
यथा—१-७ अमनोज्ञ शब्द—यावत्—वाचिक दुख ।

८९ क—मघा नक्षत्र के सात तारे हैं,

ख—अभिजित् आदि सात नक्षत्र पूर्व दिशा में द्वार
वाले हैं,[1]
यथा—१. अभिजित्, २. श्रवण, ३. धनिष्ठा,
४. शतभिषा, ५. पूर्वभाद्रपदा, ६. उत्तराभाद्रपदा,
७. रेवती ।

---

१ इन सात नक्षत्रों में पूर्व दिशा में यात्रा की जाती है इसी
प्रकार आगे भी जानें ।

ग—अश्विनी आदि सात नक्षत्र दक्षिण दिशा में द्वार-
वाले हैं, यथा—१. अश्विनी, २. भरणी, ३, कृत्तिका,
४. रोहिणी, ५. मृगशिरा, ६. आर्द्रा, ७ .पुनर्वसु ।

घ—पुष्य आदि सात नक्षत्र पश्चिम दिशा में द्वारवाले हैं,
यथा—१. पुष्य, २. अश्लेषा, ३. मघा, ४. पूर्वा-
फाल्गुनी, ५. उत्तराफाल्गुनी, ६. हस्त, ७. चित्रा ।

ङ—स्वाति आदि सात नक्षत्र उत्तर दिशा में द्वारवाले हैं,
यथा—स्वाति, २. विशाखा, ३. अनुराधा,
४. ज्येष्ठा, ५. मूल, ६. पूर्वाषाढ़ा, ७. उत्तराषाढ़ा ।

५९० क—जम्बूद्वीप में सोमनस वक्षस्कार पर्वत पर सात कूट हैं,
यथा—१. सिद्धकूट, २. सोमनसकूट, ३. मंगलावती-
कूट, ४. देवकूट, ५. विमलकूट, ६. कंचनकूट,
७. विशिष्टकूट ।

ख—जम्बूद्वीप में गंधमादन वक्षस्कार पर्वत पर सात
कूट हैं,
यथा—१. सिद्धकूट, २. गंधमादनकूट, ३. गंधला-
वतीकूट, उत्तरकुरुकूट, ५. फलिघकूट, ६. लोहिताक्ष-
कूट, ७. आनन्दन कूट ।

५९१ —बेइन्द्रिय की सात लाख कुल कोड़ी हैं ।

५९२ क-ङ—जीवों ने सात स्थानों में निर्वर्तित (संचित) पुद्गल
पाप कर्म के रूप में चयन किये हैं, चयन करते हैं,
और चयन करेंगे ।

इसी प्रकार उपचयन, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के तीन-तीन दण्डक कहें।

५९३ क—सात प्रदेशिक स्कन्ध अनन्त हैं,

ख—सात प्रदेशावगाढ पुद्गल अनन्त हैं,

ग-य—यावत् सात गुण रुक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

सप्तम स्थान समाप्त

अष्टम स्थान—(आठवां ठाणा)

५९४ —आठ गुण सम्पन्न अणगार एकलविहारी प्रतिमा धारण करने योग्य होता है,

यथा—१. श्रद्धावान, २. सत्यवादी, ३. मेधावी, ४. बहुश्रुत, ५. शक्तिमान्, ६. अल्पकलही, ७. धैर्य-वान्, ८. वीर्यसम्पन्न।

५९५ क—योनिसंग्रह आठ प्रकार का कहा गया है,

यथा—१-७ अंडज, पोतज—यावत्—उद्भिज ८. औपपातिक।

ख—अंडज आठगति वाले हैं, और आठ आगति वाले हैं।

ग—अण्डज यदि अण्डजों में उत्पन्न हो तो अण्डजों से पोतजों से यावत्—औपपातिकों से आकर उत्पन्न होते हैं।

घ—वही अण्डज अण्डजपने को छोड़कर अण्डज रूप में यावत्—औपपातिक रूप में उत्पन्न होता है।

ङ—इसी प्रकार जरायुजों की गति आगति कहें। शेष रसज आदि पाँचों की गति आगति न कहें।

५९६ क—जीवों ने आठ कर्म प्रकृतियों का चयन किया है, करते हैं, और करेंगे।

यथा—१. ज्ञानावरणीय, २. दर्शनावरणीय, ३. वेदनीय, ४. मोहनीय, ५. आयु, ६. नाम, ७. गोत्र, ८. अन्तराय।

दण्डक सूत्र

१-२४—नैरयिकों ने आठ कर्म प्रकृतियों का चयन किया है, करते हैं, और करेंगे।

इस प्रकार वैमानिक पर्यन्त कहें।

इसी प्रकार उपचय, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के सूत्र कहें।

प्रत्येक के दण्डक सूत्र कहें।[1]

५९७ क—आठ कारणों से मायावी माया करके न आलोयणा करता है, न प्रतिक्रमण करता है,—यावत्—न प्रायश्चित्त स्वीकारता है,

यथा—१. मैंने पाप कर्म किया है अब मैं उस पाप की निन्दा कैसे करूं?

२. मैं वर्तमान में भी पाप करता हूं अतः मैं पाप की आलोचना कैसे करूं?

३. मैं भविष्य में भी यह पाप करूंगा—अतः मैं आलोचना कैसे करूं।

---

१ इस सूत्र के अन्तर्गत १६० सूत्र हैं।

४. मेरी अपकीर्ति होगी अतः मैं आलोचना कैसे करूं ?

५. मेरा अपयश होगा अतः मैं आलोचना कैसे करूँ ?

६. पूजा प्रतिष्ठा की हानि होगी अतः मैं आलोचना कैसे करूँ ?

७. कीर्ति की हानि होगी ,, ,,

८. मेरे यश की हानि होगी ,, ,,

ख—आठ कारणों से मायावी माया करके आलोयणा करता है—यावत्—प्रायश्चित्त स्वीकार करता है, यथा—मायावी का यह लोक निन्दनीय होता है अतः मैं आलोचना करूँ।

२. उपपात (देव-नारक) निन्दित होता है ।

३. भविष्य का जन्म निन्दनीय होता है।

४. एक वक्त माया करके आलोचना न करे तो आराधक नहीं होता है।

५. एक वक्त माया करके आलोचना करे तो आराधक होता है।

६. अनेक वार माया करके आलोचना न करे तो आराधक नहीं होता है।

७. अनेक वार माया करके भी आलोचना करे तो आराधक होता है।

८. मेरे आचार्य और उपाध्याय विशिष्ट ज्ञान वाले है, वे जानेंगे कि "यह मायावी है" अतः मैं आलोचना करूं—यावत्—प्रायश्चित्त स्वीकार करूं।

माया करने पर मायावी का हृदय किस प्रकार पश्चात्ताप से दग्ध होता रहता है—यह यहां पर दृष्टान्त द्वारा बताया गया है।

जिस प्रकार लोहा, तांबा, कलई, शीशा, रूपा और सोना गलाने की भट्टी, तिल, तुस, भुसा, नल और पत्तों की अग्नि। दारु बनाने की भट्टी, मिट्टी के बर्तन, गोले, कवेलु, ईंटे आदि पकाने का स्थान, गुड़ पकाने की भट्टी और लुहार की भट्टी में केशूले के फूल और उल्कापात जैसे जाज्वल्यमान, हजारों चिनगारियां जिनसे उछल रही हैं ऐसे अंगारों के समान मायावी का हृदय पश्चात्ताप रूप अग्नि से निरन्तर जलता रहता है।

मायावी को सदा ऐसी आशंका बनी रहती है कि ये सब लोग मेरे पर ही शंका करते हैं।

मायावी की दुर्गति—

मायावी माया करके आलोचना किये बिना यदि मरता है और देवों में उत्पन्न होता है तो वह महर्धिक देवों में यावत् सौधर्मादि देव लोकों में उत्पन्न नहीं होता है। उत्कृष्ट स्थिति वाले देवों में भी वह उत्पन्न नहीं होता है। उस देव की बाह्य या आभ्य-

न्तर परिषद् भी उसके सामने आती है लेकिन परिषद् के देव उस देव का आदर समादर नहीं करते हैं, तथा उसे आसन भी नहीं देते हैं। वह यदि किसी देव को कुछ कहता है तो चार पांच देव उसके सामने आकर उसका अपमान करते हैं और कहते हैं कि बस अब अधिक कुछ न कहो जो कुछ कहा यही बहुत है। आयु पूर्ण होने पर वह देव वहां से च्यव-कर इस मनुष्य लोक में हलके कुलों में उत्पन्न होता है।

यथा—अन्त कुल, प्रांत कुल, तुच्छ कुल, दरिद्र कुल, भिक्षुक कुल, कृपण कुल आदि। इन कुलों में भी वह कुरूप, कुवर्ण, कुगन्ध, कुरस, और कुस्पर्श वाला होता है। अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ, हीन-स्वर, दीनस्वर, अनिष्ट स्वर, अकान्त स्वर, अप्रिय-स्वर, अमनोज्ञ स्वर, अमनाम स्वर, और अनादेय वचन वाला वह होता है। उसके आसपास के लोग भी उसका आदर नहीं करते हैं वह कुछ किसी को उपालम्भ देने लगता है तो उसे चार पांच जने मिल कर रोकते हैं और कहने लगते हैं कि बस अब कुछ न कहो।

अमायी की सुगति—

किन्तु मायावी माया करने पर यदि आलोचना करके मरे तो वह ऋद्धिमान् देव होता है तथा

उत्कृष्ट स्थिति वाला देव होता है, हार से उसका वक्षस्थल सुशोभित होता है, हाथ में कंकण तथा मस्तक पर मुकुट आदि अनेक प्रकार के आभूषणों से वह सुन्दर शरीर से दैदीप्यमान होता है, वह दिव्य भोगोपभोगों को भोगता है। वह कुछ कहने लगता है तो उसे चार पाँच देव आकर उत्साहित करते हैं और कहने लगते हैं कि आप खूब बोलें। वह देव देवलोक से च्यवकर मनुष्य लोक में उच्चकुलों में उत्पन्न होता है तो उसे सुन्दर शरीर प्राप्त होता है, आस-पास के लोग उसका बहुत आदर करते हैं तथा बोलने के लिए बहुत आग्रह करते हैं।

५९८ क—संवर आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१-५ श्रोत्रेन्द्रिय संवर, यावत् स्पर्शेन्द्रिय संवर,
६. मन संवर, ७. वचन संवर, ८. काय संवर।

ख—असंवर आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१-८ श्रोत्रेन्द्रिय असंवर यावत् काय असंवर।

५९९ स्पर्श आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१. कर्कश, २. मृदु, ३. गुरु, ४. लघु, ५. शीत
६. उष्ण, ७. स्निग्ध. ८. रुक्ष।

६०० लोक स्थिति आठ प्रकार की कही गयी है,
यथा—१ आकाश के आधार पर रहा हुआ वायु,
२. वायु के आधार पर रहा हुआ घनोदधि—शेष

छठे स्थान के समान—यावत्—संसारी जीव कर्म के आधार पर रहे हुए हैं।

७. पुद्गलादि अजीव जीवों से संग्रहीत (बद्ध) हैं।

८. जीव ज्ञानावरणीयादि कर्मों से संग्रहीत (बद्ध) हैं।

६०१ —गणी (आचार्य) की आठ सम्पदा (भावसमृद्धि) कही गयी है, यथा—

१. आचार सम्पदा—क्रियारूप सम्पदा,

२. श्रुत सम्पदा—शास्त्र ज्ञान रूप सम्पदा,

३. शरीर सम्पदा—प्रमाणोपेत शरीर तथा अवयव,

४. वचन सम्पदा—आदेय और मधुर वचन,

५. वाचना सम्पदा—शिष्यों की योग्यतानुसार आगमों की वाचना देना।

६. मति सम्पदा—अवग्रहादि बुद्धिरूप,

७. प्रयोग सम्पदा—वाद विषयक स्वसामर्थ्य का ज्ञान तथा द्रव्य-क्षेत्र आदि का ज्ञान।

८. संग्रह परिज्ञा सम्पदा—बाल-वृद्ध तथा रूप आदि के क्षेत्रादि का ज्ञान।

६०२ —चक्रवर्ती की प्रत्येक महानिधि आठ चक्र के ऊपर प्रतिष्ठित है और प्रत्येक आठ-आठ योजन ऊंचे हैं।

६०३ —समितियां आठ कही गयी हैं,

यथा—१. ईर्यासमिति, २. भाषा समिति, ३. एषणा समिति, ४. आदान भांड मात्र निक्षेपणा

समिति, ५. उच्चार, प्रस्रवण, श्लेष्म, मल, सिंघाण परिष्ठापनिका समिति।

६. मन समिति[1] ७. वचन समिति[2] ८. काय समिति[3]

६०४ क—आठ गुण सम्पन्न अणगार आलोचना सुनने योग्य होता है,

यथा—१. आचारवान्, २. अवधारणावान्, ३. व्यवहारवान्,

४. आलोचक का संकोच मिटाने में समर्थ,

५. शुद्धि करवाने में समर्थ,

६. आलोचक की शक्ति के अनुसार प्रायश्चित्त देने वाला,

७. आलोचक के दोष अन्य को न कहने वाला,

८. दोष सेवन से अनिष्ट होता है, यह समझाने में समर्थ।

ख—आठ गुण युक्त अणगार अपने दोषों की आलोचना कर सकता है,

यथा—१. जातिसम्पन्न, २. कुलसम्पन्न, ३. विनय

---

१ दुष्ट संकल्प का त्याग और प्रशस्त संकल्प का स्वीकार।

२ असत्य, अहितकर और अपरिमित वचन का त्याग, सत्य हितकर और परिमित वचन का स्वीकार।

३ अकुशल प्रवृत्ति का त्याग और कुशल प्रवृत्ति का स्वीकार।

सम्पन्न, ४. ज्ञान सम्पन्न, ५. दर्शन सम्पन्न, ६. चारित्र सम्पन्न, ७. क्षान्त, ८. दांत।

६०५ प्रायश्चित्त आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१. आलोचना योग्य, २. प्रतिक्रमण योग्य, ३. उभय योग्य, ४. विवेक योग्य[1]
५. व्युत्सर्ग योग्य, ६. तप योग्य, ७. छेद योग्य[2]
८. मूल योग्य[3]।

६०६ —मद स्थान आठ कहे गये हैं,
यथा—१. जाति मद, २. कुल मद, ३. बल मद, ४. रूप मद, ५. तप मद, ६. सूत्र मद, ७. लाभ मद, ८. ऐश्वर्य मद।

६०७ —अक्रियावादी आठ हैं,
यथा—१. एक वादी—आत्मा एक ही है ऐसा कहने वाले,
२. अनेकवादी—सभी भावों को भिन्न मानने वाले,
३. मितवादी—अनन्त जीव हैं फिर भी जीवों की एक नियत संख्या मानने वाले।

---

१ आधाकर्म आदि सदोष आहार के त्याग से शुद्धि हो।
२ कायोत्सर्ग योग्य।
३ अनेक अतिचार लगने से जो तप करने में असमर्थ हो—उसके श्रमण पर्याय का छेद करना।
४ मूल महाव्रत का भंग होने पर पुनः महाव्रतारोपण करना।

४. निर्मितवादी—"यह सृष्टि किसी की बनायी हुई है" ऐसा मानने वाले।

५. सातवादी—सुख से रहना, किन्तु तपश्चर्या न करना।

६. समुच्छेदवादी—प्रतिक्षण वस्तु नष्ट होती है, ऐसा मानने वाले क्षणिकवादी।

७. नित्यवादी—सभी वस्तुओं को नित्य मानने वाले।

८. मोक्ष या परलोक नहीं है, ऐसा मानने वाले।

८—महानिमित्त आठ प्रकार का कहा गया है,
यथा—१. भौम—भूमि विषयक शुभाशुभ का ज्ञान करने वाला शास्त्र।

२. उत्पात—रुधिर वृष्टि आदि उत्पातों का फल बताने वाला शास्त्र।

३. स्वप्न—शुभाशुभ स्वप्नों का फल बताने वाला शास्त्र।

४. अंतरिक्ष—गांधर्व नगरादि का शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र।

५. अंग—चक्षु, मस्तक आदि अंगों के फरकने से शुभाशुभ फल की सूचना देने वाला शास्त्र।

६. स्वर—षड्ज आदि स्वरों का शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र।

७. लक्षण—स्त्री-पुरुष के शुभाशुभ लक्षण बताने वाला शास्त्र ।

८. व्यञ्जन—तिल मस आदि के शुभाशुभ फल बताने वाला शास्त्र ।

६०६ —वचन विभक्ति आठ प्रकार की कही गयी है,
यथा १. निर्देश में प्रथमा—वह, यह, मैं ।

२. उपदेश में द्वितीया—यह करो ! इस श्लोक को पढ़ो !

३. करण में तृतीया—मैंने कुण्ड बनाया ।

४. सम्प्रदान में, चतुर्थी—नमः स्वस्ति, स्वाहा के योग में, साधु के लिये भिक्षा देना ।

५. अपादान में, पंचमी—पृथक् करने में तथा ग्रहण करने में, यथा—कूप से जल निकाल, कोठी में से धान्य ग्रहण कर ।

६. स्वामित्व के सम्बन्ध षष्ठी—इसका, उसका तथा सेठ का नौकर ।

७. सन्निधान अर्थ में सप्तमी—आधार अर्थ में—मस्तक पर मुकुट है ।

काल में—प्रातःकाल में कमल खिलता है, भावरूप क्रिया विशेषण में—सूर्य अस्त होने पर रात्रि हुई ।
८. आमन्त्रण में अष्टमी—यथा—हे युवान् !
हे राजन् !

६१० क—आठ स्थानों को छद्मस्थ पूर्णरूप से न देखता है और न जानता है।

यथा—१-६ धर्मास्तिकाय–यावत् ७. गंध, ८. वायु।

ख—आठ स्थानों को सर्वज्ञ पूर्णरूप से देखता है और जानता है।

यथा—१-६ धर्मास्तिकाय यावत् ७. गंध, ८. वायु।

६११ —आयुर्वेद आठ प्रकार का कहा गया है,

यथा—१. कुमार भृत्य—बाल चिकित्सा शास्त्र,

२. कायचिकित्सा—शरीर चिकित्सा शास्त्र,

३. शालाक्य—गले से ऊपर के अंगों की चिकित्सा का शास्त्र।

४. शल्यहत्या—शरीर में कंटक आदि कहीं लग जाय तो उसकी चिकित्सा का शास्त्र,

५. जंगोली—सर्प आदि के विष की चिकित्सा का शास्त्र।

६. भूतविद्या—भूत-पिशाच आदि के शमन का शास्त्र,

७. क्षारतंत्र—वीर्यपात की चिकित्सा का शास्त्र,

८. रसायन—शरीर आयुष्य और बुद्धि की वृद्धि करने वाला शास्त्र।

---

१ इसका दूसरा नाम—वाजीकरण है—मनुष्य को घोड़े के समान करने वाली औषधी।

६१२ क—शक्रेन्द्र के आठ अग्रमहिषियां हैं,

यथा—१. पद्मा, २. शिवा, ३. सती, ४. अंजू, ५. अमला, ६. आसरा, ७. नवमिका ८. रोहिणी।

ख—ईशानेन्द्र के आठ अग्रमहिषियां हैं,

यथा—१. कृष्णा, २. कृष्णराजी, ३. रामा, ४. रामरक्षिता, ५. वसु, ६. वसुगुप्ता, ७. वसुमित्रा, ८. वसुंधरा।

ग—शक्रेन्द्र के सोम लोकपाल की आठ अग्रमहिषियाँ हैं,

घ—ईशानेन्द्र के वैश्रमण लोकपाल की आठ अग्रमहिषियाँ है,

ङ—महाग्रह आठ हैं

यथा—१. चन्द्र, २. सूर्य, ३. शुक्र, ४. बुध, ५. वृहस्पति, ६, मंगल, ७. शनैश्चर, ८. केतु।

६१३ —तृण वनस्पति काय आठ प्रकार का है,

यथा—१ मूल, २. कंद, ३. स्कंध, ४. त्वचा, ५. खाल, ६. प्रवाल, ७. पत्र, ८. पुष्प।

६१४ क—चउरिन्द्रिय जीवों की हिंसा न करने वालों में आठ प्रकार का संयम होता है। यथा—

१. नेत्र सुख नष्ट नहीं होता,

२. नेत्र दुःख उत्पन्न नहीं होता,

यावत्—७. स्पर्श सुख नष्ट नहीं होता,

८. स्पर्श दुःख उत्पन्न नहीं होता।

ख—चउरिन्द्रिय जीवों की हिंसा करने वालों के आठ प्रकार का असंयम होता है, यथा—

१. नेत्र सुख नष्ट होता है,

२. नेत्र दुःख उत्पन्न होता है,

३. यावत्—७. स्पर्श सुख नष्ट होता है ८. स्पर्श दुःख उत्पन्न होता है।

६१५ —सूक्ष्म आठ प्रकार के हैं,

यथा—१. प्राणसूक्ष्म—कुंथुआ आदि
२. पनक सूक्ष्म—लीलण, फूलण,
३. वीज सूक्ष्म—वटवीज,
४. हरित सूक्ष्म—लीली वनस्पति,
५. पुष्प सूक्ष्म
६. अंड सूक्ष्म—कृमियों के अंडे,
७. लयन सूक्ष्म—कीड़ी नगरा
८. स्नेह सूक्ष्म—धुंअर आदि।

६१६ —भरत चक्रवर्ती के पश्चात् आठ युग प्रधान पुरुष व्यवधान रहित सिद्ध हुये यावत्—सर्व दुःख रहित हुए।

यथा—१. आदित्य यश, २. महायश, ३. अतिवल, ४. महावल, ५. तेजोवीर्य, ६. कार्तवीर्य, ७. दंडवीर्य, ८. जलवीर्य ।

६१७ —भगवान् पार्श्वनाथ के आठ गण और आठ गणधर थे, यथा——१. शुभ, २. आर्य घोष, ३. वशिष्ठ, ४. ब्रह्मचारी, ५. सोम, ६. श्रीधर, ७. वीर्य, ८. भद्रयश।

६१८ —दर्शन आठ प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१. सम्यग्दर्शन, २. मिथ्यादर्शन, ३. सम्यग्मिथ्यादर्शन, ४. चक्षुदर्शन, यावत् ५-७ केवलदर्शन, ८. स्वप्नदर्शन।

६१९ —औपमिक काल आठ प्रकार के कहे गये हैं,
यथा—१. पल्योपम, २. सागरोपम, ३. उत्सर्पिणी, ४. अवसर्पिणी, ५. पुद्गल परावर्तन, ६. अतीतकाल, ७. भविष्य काल, ८. सर्वकाल।

६२० —भगवान् अरिष्टनेमि के पश्चात् ८ युग प्रधान पुरुष मोक्ष में गये और उनकी दीक्षा के दो वर्ष पश्चात् वे मोक्ष में गये।

६२१ —भगवान् महावीर से मुण्डित होकर आठ राजा (गृहस्थ त्यागकर) प्रव्रजित हुए।
यथा—१. वीरांगद, २. क्षीरयश, ३. संजय, ४. एणेयक, ५. श्वेत, ६. शिव, ७. उदायन, ८. शंख।

६२२ —आहार आठ प्रकार के हैं,
यथा—१. मनोज्ञ अशन, २. मनोज्ञ पान, ३. मनोज्ञ खाद्य, ४. मनोज्ञ स्वाद्य, ५.अमनोज्ञ अशन,

७. अमनोज्ञ पान ६. अमनोज्ञ खाद्य, ८. अमनोज्ञ स्वाद्य।

६२३ क—सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्प के नीचे ब्रह्मलोक कल्प में रिष्टविमान के प्रस्तट में अखाडे के समान समचतुरस्र (समचोरस) संस्थान वाली आठ कृष्णराजियां हैं,

यथा—१-२ दो कृष्णराजियां पूर्व में,

३-४ दो कृष्णराजियां दक्षिण में

५-६ दो कृष्णराजियां पश्चिम में

७-८ दो कृष्णराजियां उत्तर में।

१. पूर्व दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि दक्षिण दिशा को वाह्य कृष्णराजि से स्पष्ट है।

२. दक्षिण दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि पश्चिम दिशा की वाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है।

३. पश्चिम दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि उत्तर दिशा की वाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है।

४. उत्तर दिशा की आभ्यन्तर कृष्णराजि पूर्व दिशा की वाह्य कृष्णराजि से स्पृष्ट है।

क—पूर्व और पश्चिम दिशा की दो वाह्य कृष्णराजियां षट्कोण हैं।

ख—उत्तर और दक्षिण दिशा की दो वाह्य कृष्णराजियां त्रिकोण हैं।

ग—सभी आभ्यन्तर कृष्णराजियां चौरस हैं।

आठ कृष्णराजियों के आठ नाम हैं—

यथा—१. कृष्णराजि, २. मेघराजि, ३. मघाराजि, ४. माघवती, ५. वातपरिघा, ६. वातपरिक्षोभ, ७. देवपरिघा, ८. देवपरिक्षोभ।

इन आठ कृष्णराजियों के मध्य भाग[1] में आठ लोकान्तिक विमान हैं,

यथा—१. अर्चि, २. अर्चिमाली, ३. वैरोचन, ४. प्रभंकर, ५. चन्द्राभ, ६. सूर्याभ ७. सुप्रतिष्ठाभ, ८. अग्नेयाभ।

इन आठ लोकान्तिक विमानों में आठ लोकान्तिक देव रहते हैं,

यथा—१. सारस्वत, २. आदित्य, ३. वह्नि, ४. वरुण ५. गर्दतोय, ६. तुषित, ७. अव्याबाध, ८. आग्नेय।

६२४ क—धर्मास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ हैं,

ख—अधर्मास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ हैं,

ग—आकाशास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ हैं,

घ—जीवास्तिकाय के मध्य प्रदेश आठ हैं।

---

१ आठ अवकाशान्तरों में।

६२५ —महापद्म अर्हन्त आठ राजाओं को मुण्डित करके तथा गृहस्थ का त्याग करा करके अणगार प्रवज्या देंगे।
यथा—१. पद्म, २. पद्मगुल्म, ३ नलिन, ४. नलिन-गुल्म ५. पद्मध्वज, ६. धनुध्वज, ७. कनकरथ, ८. भरत।

६२६ —कृष्ण वासुदेव की आठ अग्रमहिषियां अर्हन्त''' अरिष्ट नेमि के समीप मुण्डित होकर तथा गृहस्थ से निकल-कर अणगार प्रवज्या स्वीकार करेंगी, सिद्ध होंगी यावत् सर्व दुःखों से मुक्त होंगी।
यथा—१. पद्मावती, २. गोरी, ३. गंधारी, ४. लक्षणा, ५. सुसीमा, ६. जाम्ववती ७. सत्यभामा ८. रुक्मिणी।

६२७ —वीर्यप्रवाद पूर्व की आठ वस्तु और आठ चूलिका वस्तु हैं।

६२८ —गतियां आठ प्रकार की हैं,
यथा—१. नरक गति २. तिर्यंचगति
३-५ यावत् सिद्ध गति,
६. गुरु गति ७. प्रणोदन गति ८. प्राग् भारगति

६२९ —गंगा, सिन्धु रक्ता और रक्तवती देवियों के द्वीप आठ-आठ योजन के लम्बे चौड़े हैं।

६३० —उल्कामुख, मेघमुख, विद्युन्मुख और विद्युद्दंत अन्तर-

द्वीपों के द्वीप आठसी-आठसी योजन के लम्बे चौड़े हैं।

६३१ —कालोद समुद्र की वलयाकार चौड़ाई ८ लाख योजन की है।

६३२ क—आभ्यन्तर पुष्करार्ध द्वीप की वलयाकार चौड़ाई भी आठ लाख योजन की है।

ख—बाह्य पुष्करार्ध द्वीप की वलयाकार चौड़ाई भी इतनी ही है।

६३३ —प्रत्येक चक्रवर्ती के काकिणी रत्न आठ सुवर्ण प्रमाण होते हैं

काकिणी रत्न के ६ तले, १२ अस्रि (कोटी) आठ कर्णिकायें होती हैं।

काकिणी रत्न का संस्थान एरण के समान होता है।

६३४ —मगध का योजन आठ हजार धनुष का निश्चित है।

६३५ क— जम्बूद्वीप में सुदर्शन वृक्ष आठ योजन का ऊंचा है, मध्य भाग में आठ योजन का चौड़ा है, और सर्व परिमाण कुछ अधिक आठ योजन का है।[1]

ख—कूट शाल्मली वृक्ष का परिमाण भी इसी प्रकार है।[2]

---

१ यह सुदर्शन वृक्ष उत्तर कुरु में है।

२ यह कूट शाल्मली वृक्ष देवकुरु में है।

६३६ क—तमिस्रा गुफा की ऊंचाई आठ योजन की है।[1]

ख—खण्ड प्रपात गुफा की ऊंचाई भी इसी प्रकार आठ योजन की है।

६३७ क—जम्वूद्वीपवर्ती मेरु पर्वत के पूर्व में सीता महानदी के दोनों किनारों पर वक्षस्कार पर्वत हैं,

यथा—१. चित्रकूट, २. पद्मकूट[2], ३. नलिनीकूट, ४. एकशैलकूट, ५. त्रिकूट, ६. वैश्रमणकूट, ७. अंजन-कूट, ८ मातंजन कूट।

ख—जम्वूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के किनारों पर आठ वक्षस्कार पर्वत हैं।

यथा—१. अंकावती, २. पद्मावती, ३. आशीविष, ४. सुखावह, ५. चन्द्रपर्वत, ६. सूर्य पर्वत, ७. नाग-पर्वत, ८. देव पर्वत।

ग—जम्वूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व में सीता महानदी के उत्तरी किनारे पर आठ चक्रवर्ती विजय हैं,

यथा—१. कच्छ, २. सुकच्छ, ३. महाकच्छ, ४. कच्छगावती, ५. आवर्त, ६-७ यावत् ८. पुष्क-लावती विजय।

---

१ तमिस्रा गुफा।

२ इसका अपरनाम ब्रह्मकूट है।

घ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व में शीता महानदी के दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय हैं,

यथा—१. वत्स, २-७ सुवत्स यावत्-८ मंगलावती।

ङ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के दक्षिण में आठ चक्रवर्ती विजय हैं, १-८ पद्म यावत् सलिलावती।

च—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा के उत्तर में आठ चक्रवर्ती विजय हैं,

यथा—१. वप्रा, २. सुवप्रा, यावत् गंधिलावती।

छ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीता महानदी के उत्तर में आठ राजधानियां हैं,

यथा—१. क्षेमा, २. क्षेमपुरी, ३. यावत्-पुंडरिकिणी।

ज—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व में शीता महानदी के दक्षिण में आठ राजधानियां हैं।

यथा—१. सुसीमा, २. कुंडला यावत् ८ रत्नसंचया

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के दक्षिण में आठ राजधानियां है,

१. अश्वपुरा, २-७ यावत् वीतशोका।

ञ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के उत्तर में आठ राजधानियां हैं,

यथा—१. विजया, २. वैजयन्ती—यावत् अयोध्या।

७३८ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व में शीता महानदी के उत्तर में, उत्कृष्ट आठ अर्हन्त, आठ चक्रवर्ती, आठ बलदेव और आठ वासुदेव उत्पन्न हुये, होते हैं और होंगे।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व में शीता महानदी के दक्षिण में इतने ही अरिहन्त आदि हुए हैं, होते हैं और होंगे।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के दक्षिण में इतने ही अरिहन्त आदि हुए हैं, होते हैं और होंगे।

घ—उत्तर में भी इतने ही अरिहन्त आदि हुए हैं, होते हैं और होंगे।

६३९ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत से पूर्व में शीता महानदी के उत्तर में आठ दीर्घ वैताढ्य, आठ तमिस्र गुफा, आठ खंडप्रपात गुफा, आठ कृतमालक देव, आठ नृत्यमालक देव, आठ गंगा कुण्ड, आठ सिन्धु कुण्ड, आठ गंगा, आठ सिन्धु, आठ ऋषभकूट पर्वत और आठ ऋषभ-कूट देव हैं।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व में शीता महानदी के दक्षिण में आठ दीर्घवैताढ्य हैं—यावत् — आठ ऋषभकूट देव हैं।

ग-घ—विशेष सूचना—रक्ता और रक्तवती नदियों के इतने ही कुण्ड हैं।

ङ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत से पश्चिम में शीतोदा महानदी के दक्षिण में आठ दीर्घ वैताढ्य पर्वत हैं यावत्—आठ नृत्यमालक देव हैं, आठ गंगा कुण्ड, आठ सिन्धु कुण्ड, आठ गंगा (नदियां) आठ सिन्धु नदियाँ, आठ ऋषभ कूट पर्वत और आठ ऋषभ कूट देव हैं।

च—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में शीतोदा महानदी के उत्तर में आठ दीर्घ वैताढ्य पर्वत हैं यावत्—आठ नृत्यमालक देव हैं। आठ रक्त कुण्ड हैं, आठ रक्तावती कुण्ड हैं, आठ रक्ता नदियाँ हैं यावत्—आठ ऋषभ कूट देव हैं।

६४० —मेरुपर्वत की चूलिका मध्य भाग में आठ योजन की चौड़ी हैं।

६४१ क—धातकी खण्डद्वीप के पूर्वार्ध में धातकी वृक्ष आठ योजन का ऊँचा है, मध्य भाग में आठ योजन का चौड़ा है, और इसका सर्व परिमाण कुछ अधिक आठ योजन का है।

सूचना—धात की वृक्ष से मेरु चूलिका पर्यन्त सारा कथन जम्बूद्वीप के वर्णन के समान कहना चाहिए।[1]

---

१ सूत्र ६३५ से ६४० तक जम्बूद्वीप का वर्णन हैं।

ख—धातकी खण्ड द्वीप के पश्चिमार्ध में भी महाधातकी वृक्ष से मेरु चूलिका पर्यन्त का कथन जम्बूद्वीप के वर्णन के समान है।

ग—इसी प्रकार पुष्करवर द्वीपार्ध के पूर्वार्ध में पद्मवृक्ष से मेरु चूलिका पर्यन्त का कथन जम्बूद्वीप के समान है।

घ—इस प्रकार पुष्करवरद्वीपार्ध के पश्चिमार्ध में महापद्म वृक्ष से मेरुचूलिका पर्यन्त का कथन जम्बूद्वीप के समान हैं।

६४२ क—जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत पर भद्र शालवन में आठ दिशाहस्तिकूट हैं।

यथा—१. पद्मोत्तर, २. नीलवंत, ३. सुहस्ती, ४. अंजनागिरी, ५. कुमुद, ६. पलाश, ७. अवतंसक, ८. रोचनागिरी।

ख—जम्बूद्वीप की जगति आठ योजना की ऊँची है और मध्य में आठ योजन की चौड़ी है।

६४३ क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण में महाहिमवंत वर्ष-धर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. सिद्ध, २. महाहिमवंत, ३. हिमवंत, ४. रोहित, ५. हरीकूट, ६. हरिकान्त, ७. हरिवास, ८. वैडूर्य।

ख—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के उत्तर में रुक्मी वर्षधर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. सिद्ध, २. रुक्मी, ३. रम्यक्, ४. नरकान्त, ५. बुद्धि, ६. रुक्मकूट, ७. हिरण्यवत, ८. मणिकंचन।

ग—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पूर्व में रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. रिष्ट, २. तपनीय, ३. कंचन, ४. रजत, ५. दिशास्वस्तिक, ६. प्रलम्ब, ७. अंजन, ८. अंजन-पुलक।

घ—इन आठ कूटों पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति वाली आठ दिशा कुमारियां रहती हैं।

यथा—१. नंदुत्तरा, २. नंदा, ३. आनन्दा, ४. नंदि-वर्धना, ५. विजया, ६. वैजयंती, ७. जयंती ८. अप-राजिता।

ङ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के दक्षिण में रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. कनक, २. कंचन, ३. पद्म, ४. नलिन, ५. शशि, ६. दिवाकर, ७. वैश्रमण ८. वैडूर्य

च—इन आठ कूटों पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति वाली आठ दिशा कुमारियां रहती हैं।

यथा—१. समाहारा, २. सुप्रतिज्ञा, ३. सुप्रबद्धा, ४. यशोधरा, ५. लक्ष्मीवती, ६. शेषवती, ७. चित्र-गुप्त ८. वसुंधरा।

छ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के पश्चिम में रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. स्वस्तिक, २. अमोघ, ३. हिमवत्, ४. मंदर, ५. रुचक, ६. चक्रोत्तम, ७. चन्द्र, ८. सुदर्शन।

ज—इन आठ कूटों पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति-वाली आठ दिशाकुमारियां रहती हैं,

यथा—१. इलादेवी, २. सुरादेवी, ३. पृथ्वी, ४. पद्मावती, ५. एक नासा, ६. नवमिका, ७. सीता, ८. भद्रा।

झ—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के उत्तर में रुचकवर पर्वत पर आठ कूट हैं,

यथा—१. रत्न, २. रत्नोच्चय, ३. सर्वरत्न, ४. रत्न-संचय, ५. विजय, ६. वैजयंत, ७. जयन्त, ८. अप-राजित।

ञ—इन आठ कूटों पर महर्धिक यावत् पल्योपम स्थिति-वाली आठ दिशाकुमारियां रहती हैं,

यथा—१. अलंबुसा, २. मितकेसी, ३. पोंडरी ४. गीत-वारुणी ५. आशा, ६. सर्वगा, ७. श्री, ८. ह्री।

ट—आठ दिशा कुमारियां अधोलोक में रहती हैं,

यथा—१. भोगंकरा, २. भोगवती, ३. सुभोगा,

४. भोग मालिनी, ५. सुवत्सा, ६. वत्समित्रा,
७. वारिसेना, ८. वलाहका।

ठ—आठदिशा कुमारियां ऊर्ध्वलोक में रहती हैं,
यथा—१. मेघंकरा २. मेघवती, ३. सुमेघा,
४. मेघमालिनी, ५. तोयधारा, ६. विचित्रा,
७. पुष्पमाला, ८. अनिंदिता।

६४४ क—तिर्यंच और मनुष्यों की उत्पत्ति वाले आठ कल्प (देवलोक) हैं,
यथा—१-८ सौधर्म—यावत्—सहस्रारेन्द्र।

ख—इन आठ कल्पों में आठ इन्द्र हैं,
यथा—१-८ शक्रेन्द्र—यावत्—सहस्रारेन्द्र।

ग—इन आठ इन्द्रों के आठ यान विमान हैं,
यथा—१. पालक, २. पुष्पक, ३. सौमनस,
४. श्रीवत्स, ५. नंदावर्त, ६. कामक्रम, ७. प्रीतिमन,
८. विमल।

६४५ —अष्ट अष्टमिका भिक्षुपड़िमा का सूत्रानुसार आराधन यावत्—सूत्रानुसार पालन ६४ अहोरात्रि में होता है और उसमें २८८ वार भिक्षा ली जाती है।

६४६ क—संसारी जीव आठ प्रकार के हैं,
यथा—१. प्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,
२. अप्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,
३-८ यावत्—अप्रथम समयोत्पन्न देव।

ख—सर्वजीव आठ प्रकार के हैं,

यथा—१. नैरयिक, २. तिर्यंच योनिक, ३. तिर्यंच-नियां, ४. मनुष्य, ५. मनुष्यनियां, ६. देव, ७. देवियां, ८. सिद्ध।

ग—अथवा सर्वजीव आठ प्रकार के हैं,

यथा—१-५, आभिनिवोधिक ज्ञानी, यावत्—केवलज्ञानी,
६. मति अज्ञानी, ७. श्रुत अज्ञानी,
८. विभंग ज्ञानी।

६४७ —संयम आठ प्रकार का है,

यथा—१. प्रथम समय—सूक्ष्म सम्पराय-सराग-संयम,
२. अप्रथम समय—सूक्ष्म संपराय संयम,
३. प्रथम समय—वादर सराग संयम,
४. अप्रथम समय—वादर-सराग-संयम,
५. प्रथम समय—उपशान्त कषाय-वीतराग संयम,
६. अप्रथम समय—उपशान्त कषाय-वीतराग संयम,
७. प्रथम समय—क्षीण कषाय वीतराग संयम,
८. अप्रथम समय—क्षीण कषाय वीतराग संयम।

६४८ —ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी के आठ नाम हैं,

यथा—१. ईषत्, २. ईषत्प्राग्भारा, ३. तनु, ४. तनु-तनु, ५. सिद्धि, ६. सिद्धालय, ७, मुक्ति,
८. मुक्तालय।

६४६ —आठ आवश्यक कार्यों के लिए उद्यम, प्रयत्न और पराक्रम करना चाहिये किन्तु इनके लिए प्रमाद नहीं करना चाहिए,

यथा—१. अश्रुत धर्म को सम्यक् प्रकार से सुनने के लिए तत्पर रहना चाहिये।

२. श्रुत धर्म को ग्रहण करने और धारण करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

३. संयम स्वीकार करने के पश्चात् पापकर्म न करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

४. तपश्चर्या से पुराने पाप कर्मों की निर्जरा करने के लिए तथा आत्मशुद्धि के लिए तत्पर रहना चाहिए।

५. निराश्रित—परिजन को आश्रय देने के लिए तत्पर रहना चाहिये।

६. शैक्ष (नव दीक्षित) को आचार और गोचरी विषयक मर्यादा सिखाने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

७. ग्लान की ग्लानि रहित सेवा करने के लिए तत्पर रहना चाहिये।

८. सार्धमिकों में कलह उत्पन्न होने पर राग-द्वेष रहित हो पक्ष ग्रहण किये विना मध्यस्थ भाव से सार्धामिकों के वोलचाल, कलह, और तु-तु मैं-मैं को शान्त करने के लिए प्रयत्न करना चाहिये।

५० —महाशुक्र और सहस्रारकल्प में विमान आठसौ योजन के ऊंचे हैं।

५१ —भगवान् अरिष्टनेमिनाथ के आठसौ ऐसे वादि मुनियों की सम्पदा थी जो देव, मनुष्य और असुरों की पर्षदा में किसी से पराजित होने वाले नहीं थे।

५२ —केवली समुद्घात आठ समय का होता है,
यथा—१. प्रथम समय में स्वदेह प्रमाण नीचे ऊँचे, लम्बा और पोला चौदह रज्जु (लोक) प्रमाण दण्ड किया जाता है,

२. द्वितीय समय में पूर्व और पश्चिम में लोकान्त पर्यन्त कपाट किये जाते हैं,

३. तृतीय समय में दक्षिण और उत्तर में लोकान्त पर्यन्त मंथान किया जाता है,

४. चतुर्थ समय में रिक्त स्थानों की पूर्ति करके लोक को पूरित किया जाता है,

५. पाँचवें समय में आंतरों का संहार किया जाता है,

६. छठे समय में मंथान का संहरण किया जाता है,

७. सातवें समय में कपाट का संहरण किया जाता है,

८. आठवें समय में दण्ड का संहरण किया जाता है।

६५३ —भगवान् महावीर के उत्कृष्ट ८०० ऐसे शिष्य थे जिनकी कल्याणकारी अनुत्तरोपपातिक देवगति यावत् भविष्य में (भद्र) मोक्ष गति निश्चित है।

६५४ क—वाणव्यन्तर देव आठ प्रकार के हैं,
यथा—१. पिशाच, २. भूत, ३. यक्ष, ४. राक्षस, ५. किन्नर, ६. किंपुरुष, ७. महोरग, ८. गंधर्व।

ख—इन आठ वाणव्यन्तर देवों के आठ चैत्य वृक्ष है,
यथा—१. पिशाचों का कदम्ब वृक्ष,
२. यक्षों का चैत्य वृक्ष,
३. भूतों का तुलसी वृक्ष,
४. राक्षसों का कंडक वृक्ष,
५. किन्नरों का अशोक वृक्ष,
६. किंपुरुषों का चंपक वृक्ष
७. भुजंगों का नाग वृक्ष[1]
८. गंधर्वों का तिंदुक वृक्ष।

६५५ —रत्नप्रभा पृथ्वी के समभूमि भाग से ८०० योजन ऊंचे ऊपर की ओर सूर्य का विमान गति करता है।

६५६ —आठ नक्षत्र चन्द्र के साथ स्पर्श करके गति करते हैं,
यथा—१. कृतिका, २. रोहिणी, ३. पुनर्वसु, ४. मघा, ५. चित्रा, ६. विशाखा, ७. अनुराधा, ८. ज्येष्ठा।

---

१ महोरगों का

६५७ क—जम्बूद्वीप के द्वार आठ योजन ऊँचे हैं।

ख—सभी द्वीप समुद्रों के द्वार आठ योजन ऊँचे हैं।

६५८ क—पुरुष वेदनीय कर्म की जघन्य आठ वर्ष की बन्ध स्थिति है।

ख—यशोकीर्ति नाम कर्म की जघन्य बन्ध स्थिति आठ मुहूर्त की है।

ग—उच्चगोत्र कर्म की भी इतनी ही स्थिति है।

६५९ —तेइन्द्रिय की आठ लाख कुल कोड़ी हैं।

६६० क—जीवों ने आठ स्थानों में निर्वतित—संचित पुद्गल पापकर्म के रूप में चयन किये हैं, चयन करते हैं, और चयन करेंगे।

यथा—१-८ प्रथम समय नैरयिक निर्वर्तित यावत्—अप्रथम समय देव निर्वर्तित।

इसी प्रकार उपचयन, वन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के तीन.तीन दण्डक कहने चाहिये।

ख—आठ प्रदेशिक स्कन्ध अनन्त हैं।

ग—अष्ट प्रदेशावगाढ़ पुद्गल अनन्त हैं।

घ—यावत् आठ गुण रुक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

अष्टम स्थान समाप्त

नवम स्थान (नवां ठाणा)

६६१ —नौ प्रकार के सांभोगिक श्रमण निर्ग्रन्थों को विसंभोगी करे तो भगवान् की आज्ञा का अतिक्रमण नहीं होता है,

यथा—१. आचार्य के प्रत्यनीक को,

२. उपाध्याय के प्रत्यनीक को,

३. स्थविरों के प्रत्यनीक को,

४. कुल के प्रत्यनीक को,

५. गण के प्रत्यनीक को,

६. संघ के प्रत्यनीक को,

७. ज्ञान के प्रत्यनीक को,

८. दर्शन के प्रत्यनीक को,

९. चारित्र के प्रत्यनीक को।

६६२ —ब्रह्मचर्य (आचारांग प्रथम श्रुतस्कन्ध) के नौ अध्ययन हैं,

यथा—१. शस्त्र परिज्ञा, २-७ लोक विजय यावत्—८ उपधान श्रुत, ९ महापरिज्ञा।

६६३ क—ब्रह्मचर्य की गुप्ति (रक्षा) नौ प्रकार की हैं,

यथा—१ एकान्त (पृथक्) शयन और आसन का सेवन करना चाहिये, किन्तु स्त्री, पशु और नपुंसक के संसर्ग वाले शयनासन का सेवन नहीं करना चाहिए,

२. स्त्री कथा नहीं कहनी चाहिये,

३. स्त्री के स्थान (स्त्री के निवास स्थान) में निवास नहीं करना चाहिए,

४. स्त्री की मनोहर इन्द्रियों के दर्शन और ध्यान नहीं करना चाहिए,

५. विकार वर्धक रस का आस्वादन नहीं करना चाहिए,

६. आहारादि की अतिमात्रा नहीं लेनी चाहिए,

७. पूर्वानुभूत रति—क्रीड़ा का स्मरण नहीं करना चाहिए,

८. स्त्री के रागजन्य शब्द और रूप की तथा स्त्री की प्रशंसा नहीं सुननी चाहिए,

९. शारीरिक सुखादि में आसक्त नहीं होना चाहिए ।

ख—ब्रह्मचर्य की अगुप्ति नव प्रकार की हैं,

यथा—१. एकान्त शयन और आसन का सेवन

(उपयोग) नहीं करे अपितु स्त्री, पशु तथा नपुंसक सेवित शयनासन का उपयोग करे,

२. स्त्री कथा कहे,

३. स्त्री स्थानों का सेवन करे,[1]

४. स्त्रियों की इन्द्रियों का दर्शन-यावत् ध्यान करे,

५. विकार वर्धक आहार करे,

६. आहार आदि अधिक मात्रा में सेवन करे,

७. पूर्वानुभूत रति क्रीड़ा का स्मरण करे,

८. स्त्रियों के शब्द तथा रूप की प्रशंसा करे,

९. शारीरिक सुखादि में आसक्त रहे।

६६४ —अभिनन्दन अरहन्त के पश्चात् सुमतिनाथ अरहन्त नव लाख क्रोड सागर के पश्चात् उत्पन्न हुये।

६६५ —शास्वत पदार्थ नव हैं,
यथा—१. जीव, २. अजीव, ३. पुण्य, ४. पाप, ५. आश्रव, ६. संवर, ७. निर्जरा, ८. बन्ध, ९. मोक्ष।

६६६ क—संसारी जीव नौ प्रकार के हैं,
यथा—१-५ पृथ्वीकाय, यावत् वनस्पति काय, ६-९ बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय।

---

१ स्त्रियों के निवास स्थान में रहे।

ख—पृथ्वीकायिक जीवों की नौ गति और नौ आगति।
यथा—पृथ्वीकायिक पृथ्वीकायिको में उत्पन्न हो तो पृथ्वीकायिकों से यावत् पंचेन्द्रियों से आकर उत्पन्न होते हैं।
पृथ्वीकायिक जीव पृथ्वीकायिकपन को छोड़कर पृथ्वीकायिक रूप में यावत् पँचेन्द्रिय रूप में उत्पन्न होते हैं।

इसी प्रकार अप्कायिक जीव-यावत् पंचेन्द्रिय जीव उत्पन्न होते हैं।

ग—सर्व जीव नौ प्रकार के हैं,
यथा—१. एकेन्द्रिय, २. द्वीन्द्रिय, ३. तेइन्द्रिय, ४. चउरिन्द्रिय, ५. नैरयिक, ६. तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय, ७. मनुष्य, ८. देव, ९. सिद्ध।

घ—सर्व जीव नौ प्रकार के हैं,
यथा—१. प्रथम समयोत्पन्न नैरयिक, २-७ अप्रथम-समयोत्पन्न नैरयिक यावत्
८ अप्रथम समयोत्पन्न देव ९ सिद्ध।

ङ—सर्व जीवों की अवगाहना नौ प्रकार की हैं,
यथा—१. पृथ्वीकायिक जीवों की अवगाहना,
२-५ अप्कायिक जीवों की अवगाहना,
यावत् वनस्पति कायिक जीवों की अवगाहना,
६. बेन्द्रिय जीवों की अवगाहना,

७. तेन्द्रिय जीवों की अवगाहना
८. चउरिन्द्रिय जीवों की अवगाहना
९. पंचेन्द्रिय जीवों की अवगाहना ।

च—संसारी जीव नौ प्रकार के थे, हैं और रहेंगे ।
यथा—१-९ पृथ्वीकायिक रूप में यावत् पंचेन्द्रिय रूप में ।

६६७ —नौ कारणों से रोगोत्पत्ती होती है,
यथा—१. अति आहार करने से,
२. अहितकारी आहार करने से,
३. अति निद्रा लेने से,
४. अति जागने से,
५. मल का वेग रोकने से,
६. मूत्र का वेग रोकने से,
७. अति चलने से,
८. प्रतिकूल भोजन करने से,
९. कामवेग को रोकने से ।

६६८ —दर्शनावरणीय कर्म नौ प्रकार का है,
यथा—१. निद्रा, २. निद्रा-निद्रा, ३. प्रचला, ४. प्रचला प्रचला, ५. स्त्यानगृद्धी, ६. चक्षुदर्शनावरण, ७. अचक्षुदर्शनावरण, ८. अवधिदर्शनावरण, ९. केवलदर्शनावरण ।

६६९ क—अभिजित् नक्षत्र कुछ अधिक ९ मुहूर्त चन्द्र के साथ योग करते हैं,

ख—अभिजित् आदि नौ नक्षत्र चन्द्र के साथ उत्तर से योग करते हैं,

यथा—१. अभिजित्, २. श्रवण धनिष्ठा, ३-८ यावत् ९. भरणी।

६७० —इस रत्नप्रभा पृथ्वी के सम भू भाग से नवसौ योजन की ऊँचाई पर ऊपर का तारा मण्डल गति करता है।

६७१ —जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में नौ योजन के मच्छ प्रवेश करते थे, करते हैं और करेंगे।

६७२ क—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, इस अवसर्पिणी में ये नौ बलदेव और नौ वासुदेव के पिता थे।

यथा—१. प्रजापती, २. ब्रह्म, ३. रुद्र, ४. सोम, ५. शिव, ६. महासिंह, ७. अग्निसिंह, ८. दशरथ, ९. वसुदेव।

यहाँ से आगे समवायांग सूत्र के अनुसार कहना चाहिये यावत् एक नवमा बलदेव ब्रह्मलोक कल्प से च्यवकर एक भव करके मोक्ष में जावेंगे—पर्यन्त कहना चाहिए।

ख—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में नौ बलदेव और नौ वासुदेव के पिता होंगे, नौ बलदेव

और नौ वासुदेव के माताएं होंगीं–शेष समवायाङ्ग के अनुसार कहना चाहिये। यावत्—महा भीमसेन सुग्रीव पर्यन्त कीर्तिमान् वासुदेवों के शत्रु प्रति वासुदेव जो सभी चक्र से युद्ध करने वाले हैं और स्वचक्र से ही मरने वाले हैं–इनका वर्णन समवायाङ्ग के अनुसार ही कहना चाहिये।

६७३ क—प्रत्येक चक्रवर्ती की नौ महानिधियां है, और प्रत्येक महानिधि नौ नौ योजन की चौड़ी हैं।

यथा—१. नैसर्प, २. पांडुक, ३. पिंगल, ४. सर्वरत्न ५. महापद्म, ६. काल, ७. महाकाल, ८. माणवक, ९. शंख।

१. नैसर्प महानिधि–इनके प्रभाव से निवेश, ग्राम, आकर, नगर, पट्टण, द्रोणमुख, मडंब, स्कंधावार, और घरों का निर्माण होता है।

२. पांडुक महानिधि–इसके प्रभाव से गिणने योग्य वस्तुएं यथा—मोहर आदि सिक्के, मापने योग्य वस्तुएँ वस्त्र आदि, तोलने योग्य वस्तुएं–धान्य आदि की उत्पति होती है,

३. पिंगल महानिधि–इसके प्रभाव से पुरुषों, स्त्रियों, हाथियों या घोड़ों के आभूषणों की उत्पत्ति होती है,

४. सर्वरत्न महानिधि–इसके प्रभाव से चौदह रत्नों की उत्पत्ति होती है,

५. महापद्म महानिधि–इसके प्रभाव से सर्व प्रकार के रंगे हुये या स्वेत वस्त्रों की उत्पत्ति होती है,

६.काल महानिधि–काल, शिल्प, कृषि का ज्ञान उत्पन्न होता है,

७. महाकाल महानिधि–इसके प्रभाव से लोहा, चांदी, सोना, मणी, मोती स्फटिकशिला और प्रवाल आदि के खानों की उत्पत्ति होती है,

८. माणवक महानिधि–इसके प्रभाव से योद्धा, शस्त्र, बख्तर, युद्धनीति और दंडनीति की उत्पत्ति होती है,

९. शंख महानिधि–इसके प्रभाव से नाट्यविधि, नाटकविधि, और चार प्रकार के काव्यों की तथा मृदंगादि वाद्यों की उत्पत्ति होती है।

ये नौ महानिधियां आठ-आठ चक्र पर प्रतिष्ठित हैं–आठ-आठ योजन के ऊंचे हैं, नौ नौ योजन के चौड़े हैं और बारह योजन लम्बे हैं, इनका आकार पेटी के समान है। ये सब गंगा नदी के आगे स्थित हैं। स्वर्ण के बने हुए हैं, और वैडूर्यमणि के द्वार वाले हैं, अनेक रत्नों से परिपूर्ण हैं। इन सब विधानों पर चन्द्र-सूर्य के समान गोल चक्र के चिन्ह हैं।

इन निधियों के नाम वाले तथा पल्यस्थिति वाले देवता इन निधियों के अधिपति हैं। किन्तु इन

निधिओं से उत्पन्न वस्तुएं देने का अधिकार नहीं है ये सभी महानिधियां चक्रवर्ती के अधीन होती हैं।

६७४ —विकृतियां (विकार के हेतु भूत) नौ प्रकार की हैं,
यथा—१. दूध, २. दही, ३. मक्खन, ४. घृत, ५. तेल ६. गुड़, ७. मधु, ८. मद्य ९. मांस ।

६७५ —औदारिक शरीर के नौ छिद्रों से मल निकलता है,
यथा—१-२ दो कान, ३-४ दो नेत्र, ५-६ दो नाक, ७. मुख, ८. मूत्र स्थान, ९. गुदा ।

६७६ —पुण्य नौ प्रकार के होते हैं,
यथा—१. अन्न पुण्य, २. पाण पुण्य ३. लयन पुण्य, ४. शयन पुण्य, ५. वस्त्र पुण्य, ६. मन पुण्य, वचनपुण्य, ८. काया पुण्य ९. नमस्कार पुण्य ।

६७७ —पाप के स्थान नौ प्रकार के हैं,
यथा—१. प्राणातिपात २. मृषावाद यावत् ३-५ परिग्रह ६. क्रोध, ७. मान ८. माया और ९. लोभ ।

६७८ —पाप श्रुत नौ प्रकार के हैं,
यथा—१. उत्पात, २. निमित्त, ३. मंत्र, ४. आख्यायक, ५. चिकित्सा, ६. कला, ७. आकरण, ८. अज्ञान ९. मिथ्या प्रवचन ।

६७९ नैपुणिक[1] वस्तु नौ हैं,

---

१ निपुण आचार्यों द्वारा कहे गये ग्रन्थ

यथा—१. संख्यान—गणित में निपुण,

२. निमित्त—त्रैकालिक शुभाशुभ बताने वाले ग्रन्थों में निपुण,

३. कायिक—स्वर शास्त्रों में निपुण,

४. पुराण—अठारह पुराणों में निपुण,

५. परहस्तक—सर्व कार्य में निपुण,

६. प्रकृष्ट पंडित—अनेक शास्त्रों में निपुण,

७. वादी—वाद में निपुण,

८. भूति कर्म[1]—मंत्र शास्त्रों में निपुण,

९. चिकित्सक—चिकित्सा करने में निपुण।

८० —भगवान् महावीर के नौ गण थे,

यथा १. गोदास गण, २. उत्तर बलिस्सह गण ३. उद्देह गण, ४. चारण गण, ५. उध्र्ववातिक गण ६. विश्व वादी गण, ७. कामार्द्धिक गण ८. मानव-गण ९. कोटिक गण।

८१ —श्रमण भगवान् महावीर ने श्रमण निर्ग्रन्थों की नव कोटी शुद्ध भिक्षा कही है,

यथा—१. स्वयं जीवों की हिंसा नहीं करता है,

---

१ भूति कर्म—ज्वरादि से रक्षा करने के लिए भूति-भभूत—रक्षा पोटली देना।

२. दूसरों से हिंसा नहीं करवाता है,

३. हिंसा करने वालों का अनुमोदन नहीं करता है,

४. स्वयं अन्नादि को पकाता नहीं हैं,

५. दूसरों से पकवाता नहीं है,

६. पकाने वालों का अनुमोदन नहीं करता है,

७. स्वयं आहारादि खरीदता नहीं हैं,

८. दूसरों से खरीदवाता नहीं है,

९. खरीदने वालों का अनुमोदन नहीं करता है।

६८२ —ईशानेन्द्र के वरुण लोकपाल की नौ अग्रमहिषियां हैं।

६८३ क—ईशानेन्द्र की अग्रमहिषियों की स्थिति नव पल्योपम की हैं।

ख—ईशान कोण में देवियों की उत्कृष्ट स्थिति नव पल्योपम की हैं।

६८४ क—नौ देव निकाय (समूह) हैं,

यथा—१. सारस्वत, २. आदित्य, ३. वन्हि, ४. वरुण, ५. गर्दतोय, ६. तुषित, ७. अव्याबाध, ८. आग्नेय, ९. रिष्ट।

ख—अव्याबाध देवों के नवसौ नौ देवों का परिवार है,

ग-घ—इसी प्रकार अगिच्चा और रिट्ठा देवों का परिवार है।

८५ क—नौ ग्रैवेयक विमान प्रस्तट (प्रतर) हैं,

यथा—१. अधस्तन अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
२. अधस्तन मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
३. अधस्तन उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
४. मध्यम अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
५. मध्यम मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
६. मध्यम उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
७. उपरितन अधस्तन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
८. उपरितन मध्यम ग्रैवेयक विमान प्रस्तट,
९. उपरितन उपरितन ग्रैवेयक विमान प्रस्तट।

ख—नव ग्रैवेयक विमान प्रस्तटों के नौ नाम हैं,

यथा—१. भद्र, २. सुभद्र, ३. सुजात, ४. सौमनस, ५. प्रिय दर्शन, ६. सुदर्शन, ७. अमोघ, ८. सुप्रबुद्ध, ९. यशोधर।

८६ —आयु परिणाम नौ प्रकार का है,

यथा—गति परिणाम, गतिबंधणपरिणाम, ३. स्थितिपरिणाम, ४. स्थिति बंधण परिणाम, ५. उर्ध्वगोरव परिणाम, ६. अधो गोरव परिणाम, ७. तिर्यग् गोरव परिणाम, ८. दीर्घ गोरव परिणाम, ९. ह्रस्व गोरव परिणाम।

८७ —नव नवमिका भिक्षा प्रतिमा का सूत्रानुसार आराधन यावत् पालन इक्यासी रात दिन में होता है, इस प्रतिमा में ४०५ बार भिक्षा (दति) ली जाती हैं।

६८८ —प्रायश्चित्त नौ प्रकार का है,
यथा—१. आलोचनार्ह—गुरु के समक्ष आलोचना करने से जो पाप छूटे, यावत् ८ मूलार्ह—(पुनः दीक्षा देने योग्य)

९. अनवस्थाप्यार्ह—अत्यन्त संक्लिष्ट परिणाम वाले को इस प्रकार के तप का प्रायश्चित्त दिया जाता है। जिससे कि वह उठ बैठ नहीं सके।
तप पूर्ण होने पर उपस्थापना (पुनः महाव्रतारोपणा) की जाती है और यह तप जहाँ तक किया जाता है वहां तक तप करने वाले से कोई बात नहीं करता।

६८९ क—जम्बूद्वीप के मेरु से दक्षिण दिशा के भरत में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं,
यथा—१. सिद्ध, २. भरत, ३. खण्ड प्रपातकूट, ४. मणिभद्र, ५. वैताढ्य, ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिश्र-गुहा, ८. भरत, ९. वैश्रमण।

ख—जम्बूद्वीप के मेरुपर्वत से दक्षिण दिशा में निषध वर्षधर पर्वत पर नौ कूट हैं,
यथा—१. सिद्ध, २. निषध, ३. हरिवर्ष, ४. विदेह, ५. हरि, ६. धृति, ७, शीतोदा, ८. अपर विदेह, ९. रुचक।

ग—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर नन्दन वन में नौ कूट हैं,
यथा—१. नंदन, २. मेरु, ३. निषध, ४. हैमवन्त,

५. रजत, ६. रुचक, ७. सागरचित, ८. वज्र, ९. बलकूट।

घ—जम्बूद्वीप के माल्यवंत वक्षस्कार पर्वत पर नो कूट हैं,

यथा—१. सिद्ध, २. माल्यवंत, ३. उत्तरकुरु, ४. कच्छ, ५. सागर, ६. रजत, ७. सीता, ८. पूर्ण, ९. हरिस्सहकूट

ङ—जम्बूद्वीप के कच्छ विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं,

यथा—१. सिद्ध, २. कच्छ, ३. खण्ड प्रपात, ४. माणिभद्र, ५. वैताढ्य ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिस्र गुहा, ८. कच्छ, ९. वैश्रमण

च—जम्बूद्वीप के सुकच्छ विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नो कूट हैं।

यथा—१. सिद्ध, २. सुकच्छ, ३. खण्ड प्रपात, ४. माणिभद्र, ५. वैताढ्य, ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिस्र गुहा, ८. सुकच्छ, ९. वैश्रमण।

छ—इसी प्रकार पुष्कलावती विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं,

ज—इसी प्रकार वच्छ विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं यावत्—मंगलावती विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं।

झ—जम्बूद्वीप के विद्युत्प्रभ वक्षस्कार पर्वत पर नौ कूट हैं,

यथा—१. सिद्ध, २. विद्युत्प्रभ, ३. देवकुरु, ४. पद्म-प्रभ, ५. कनकप्रभ, ६. श्रावस्ती, ७. शीतोदा, ८. सजल, ९. हरीकूट ।

ञ—जम्बूद्वीप के पक्ष्मविजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं,

यथा—१. सिद्ध कूट, २. पक्ष्मकूट, ३. खण्ड प्रपात, ४. माणिभद्र, ५. वैताढ्य, ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिश्र गुहा, ८. पक्ष्मकूट, ९. वैश्रमण कूट ।

ट—इसी प्रकार यावत् सलिलावती विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं ।

ठ—इसी प्रकार वप्रविजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं ।

ड—इसी प्रकार यावत्—गंधिलावती विजय में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं,

यथा—१. सिद्ध कूट, २. गंधिलावती, ३. खण्डप्रपात, ४. माणिभद्र, ५. वैताढ्य, ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिश्र-गुहा, ८. गंधिलावती, ९. वैश्रमण ।

ढ—इस प्रकार सभी दीर्घ वैताढ्य पर्वतों पर दूसरा और नवमा कूट समान नाम वाले हैं शेष कूटों के समान पूर्ववत् हैं ।

ण—जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत की उत्तर दिशा में नीलवान वर्षधर पर्वत पर नौ कूट हैं,
यथा—१. सिद्ध कूट, २. नीलवान कूट, ३. विदेह, ४. शीता, ५. कीर्ति, ६. नारिकान्ता, ७. अपरविदेह, ८. रम्यक्कूट, ९. उप दर्शन कूट।

त—जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत पर उत्तर दिशा में ऐरवत क्षेत्र में दीर्घ वैताढ्य पर्वत पर नौ कूट हैं,
यथा—१. सिद्ध, २. रत्न, ३. खण्ड प्रपात ४. माणिभद्र, ५. वैताढ्य, ६. पूर्णभद्र, ७. तिमिश्रगुहा, ८. ऐरवत, ९. वैश्रमण।

६९० —भगवान् पार्श्वनाथ पुरुषों में आदेय नाम कर्म वज्र-ऋषभ-नाराज संघयण और समचतुरश्र संस्थान वाले थे तथा नौ हाथ के ऊँचे थे।

६९१ —भगवान् महावीर के तीर्थ में नौ जीवों ने तीर्थंकर गोत्र नाम कर्म का उपार्जन किया,
यथा—१. श्रेणिक, २. सुपार्श्व, ३. उदायन, ४. पोटिलअणगार. ५. दृढ़ायु, ६. शंख, ७. शतक, ८. सुलसा श्राविका, ९. रेवती।

६९२ —१. आर्य कृष्ण वासुदेव, २. राम बलदेव, ३. उदक पेढाल पुत्र[1], ४. पोटिलमुनि, ५. शतक गाथापति,

---

१ पेढालपुत्र उदक मुनि का वर्णन सूत्रकृताङ्ग के नालंदीय अध्ययन में है।

६. दारूक[1] निर्ग्रन्थ, ७. सत्यकी निर्ग्रन्थीपुत्र, ८. सुलसाश्राविका से प्रतिबोधित अम्बड़ परिव्राजक, ९. भ० पार्श्वनाथ की प्रशिष्या सुपार्श्वा आर्या ।
ये आगामी उत्सर्पिणी में चार याम धर्म की प्ररूपणा करके सिद्ध होंगे—यावत्—सब दुःखों का अन्त करेंगे ।[2]

६९३ —हे आर्य ! यह श्रेणिक राजा (बिंबिसार) मरकर इस रत्नप्रभा पृथ्वी के सीमंतक नरकावास में चौरासी हजार वर्ष की नारकीय स्थिति वाले नैरयिक के रूप में उत्पन्न होगा और अती तीव्र—यावत्—असह्य वेदना भोगेगा । यह उस नरक से निकलकर आगामी उत्सर्पिणी में इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में वैताढ्य पर्वत के समीप पुण्ड्रजन पद के शत द्वार नगर में संमति कुलकर की भद्रा भार्या की कुक्षी में पुत्र रूप में उत्पन्न होगा ।

---

१ दारूक श्रीकृष्ण के पुत्र थे इनका चरित्र अनुत्तरोपपातिक सूत्र में है ।

२ (क) ये नौ जीव आगामी उत्सर्पिणी में प्रथम और अन्तिम तीर्थङ्कर को छोड़कर मध्य के तीर्थङ्करों के तीर्थ में तीर्थङ्कर होंगे ।

(ख) इन नौ में से कुछ तीर्थङ्कर होंगे और कुछ तीर्थङ्करों के तीर्थ में सिद्ध होंगे ।

नौ मास और साढ़ेसात अहोरात्र बीतने पर सुकुमार हाथ पैर, प्रतिपूर्ण पंचेन्द्रिय शरीर और उत्तम लक्षण तिलमस युक्त यावत्—रूपवान पुत्र पैदा होगा।

जिस रात्रि में यह पुत्र रूप में पैदा होगा उस रात्रि में शतद्वार नगर के अन्दर और बाहर भाराग्र तथा कुम्भाग्र प्रमाण पद्म एवं रत्नों की वर्षा बरसेगी। पश्चात् उसके माता-पिता इग्यारवां दिन बीतने पर यावत्—बारहवें दिन उसका गुण सम्पन्न नाम देगें। क्योंकि इनका जन्म होने पर शतद्वार नगर के अन्दर और बाहर भार एवं कुम्भ प्रमाण पद्म एवं रत्नों की वर्षा होने से इस पुत्र का महापद्म नाम देंगे।

पश्चात् महापद्म के माता-पिता महापद्म को कुछ अधिक आठ वर्ष का हुआ जानकर राज्याभिषेक का महोत्सव करेंगे। पश्चात् वह राजा महाराजा के समान यावत्—राज्य करेगा। उसके राज्यकाल में पूर्णभद्र और महाभद्र नाम के दो देव महर्धिक यावत्—महान् ऐश्वर्य वाले उनकी सेना का संचालन करेंगे। उस समय शतद्वार नगर के बहुत से राजा यावत्—सार्थवाह आदि परस्पर बातें करेंगे—हे देवानुप्रियो! हमारे महापद्म राजा की सेना का संचालन महर्धिक यावत्—महान् ऐश्वर्य वाले दो

देव (पूर्णभद्र और मणिभद्र) करते हैं इसलिए इनका दूसरा नाम "देवसेन" हो।

उस समय से महापद्म का दूसरा नाम देवसेन भी होगा।

कुछ समय पश्चात् उस देवसेन राजा को शंखतल जैसा निर्मल, श्वेत चार दाँत वाला हस्तिरत्न प्राप्त होगा। वह देवसेन राजा उस हस्तिरत्न पर आरूढ़ होकर शतद्वार नगर के मध्यभाग में से वार-वार आव-जाव करेगा। उस समय शतद्वार नगर के वहुत से राजेश्वर यावत्—सार्थवाह आदि परस्पर वातें करेंगे।

यथा—हे देवानुप्रियो! हमारे देवसेन राजा को शंखतल जैसा निर्मल श्वेत चार दान्त वाला हस्ति रत्न प्राप्त हुआ है, इसलिए हमारे देवसन राजा का तीसरा नाम "विमलवाहन" हो।

पश्चात् वह विमलवाहन राजा तीस वर्ष गृहस्थावास में रहेगा और माता-पिता के स्वर्गवासी होने पर गुरुजनों की आज्ञा लेकर शरद् ऋतु में स्वयं बोध को प्राप्त होगा तथा अनत्तुर मोक्ष मार्ग में प्रस्थान करेगा।

उस समय लोकान्तिदेव इष्ट यावत्—कल्याणकारी वाणी से उनका अभिनन्दन एवं स्तुति करेंगे। नगर

के बाहर सुभूमि भाग उद्यान में एक देवदूष्य वस्त्र ग्रहण करके वह प्रव्रज्या लेगा।

शरीर का ममत्व न रखने वाले उन भगवान् को कुछ अधिक बारह वर्ष तक देव, मनुष्य और तिर्यंच सम्बन्धी जो उपसर्ग उत्पन्न होंगे उन्हें वे समभाव से सहन करेंगे यावत्—अकम्पित रहेंगे।

पश्चात् वे विमलवाहन भगवान् ईर्या समिति, भाषा समिति का पालन करेंगे—यावत्—ब्रह्मचर्य का पालन करेंगे।

वे निर्मम निष्परिग्रही कांस्य पात्र के समान अलिप्त होंगे यावत्—भावना अध्ययन में कहे गये भगवान् महावीर के वर्णन के समान कहें।

वे विमलवाहन भगवान्

१. कांस्यपात्र के समान अलिप्त,
२. शंख के समान निर्मल,
३. जीव के समान अप्रतिहत गति,
४. गगन के समान आलम्बन रहित,
५. वायु के समान अप्रतिबद्ध विहारी,
६. शरद ऋतु के जल के समान स्वच्छ हृदय वाले,
७. पद्म पत्र के समान अलिप्त,
८. कूर्म के समान गुप्तेन्द्रिय,
९. पक्षी के समान एकाकी,

१०. गेंडा के सींग के समान एकाकी,

११. भारंड पक्षी के समान अप्रमत्त,

१२. हाथी के समान धैर्यवान,

१३. वृषभ के समान वलवान,[1]

१४. सिंह के समान दुर्धर्ष,[२]

१५. मेरु के समान निश्चल,

१६. समुद्र के समान गम्भीर,

१७. चन्द्र के समान शीतल,

१८. सूर्य के समान उज्ज्वल,

१९. शुद्ध स्वर्ण के समान सुन्दर,

२०. पृथ्वी के समान सहिष्णु,

२१. आहुति के समान प्रदीप्त अग्नि के समान ज्ञानादि गुणों से तेजस्वी होंगे।

उन विमलवाहन भगवान् का किसी में प्रतिवन्ध (ममत्व) नहीं होगा।

प्रतिवन्ध चार प्रकार के हैं,

यथा—१. अण्डज, २. पोतज, ३. अवग्रहिक, ४. प्रग्राहिक।

१. ये अण्डज—हंस आदि मेरे हैं,

२. ये पोतज—हाथी आदि मेरे हैं,

---

१ की हुई प्रतिज्ञा का निर्वाह करने वाले

२ परिषहों से पराजित न होने वाले

३. ये अवग्रहिक—मकान, पाट, फलक आदि मेरे हैं।

४. ये प्रग्रहिक—पात्र आदि मेरे हैं।

वे विमल वाहन भगवान् जिस-जिस दिशा में विचरना चाहेंगे उस-उस दिशा में स्वेच्छापूर्वक शुद्ध भाव से, गर्व रहित तथा सर्वथा ममत्व रहित होकर संयम से आत्मा को पवित्र करते हुये विचरेंगे।

उन विमल वाहन भगवान् को ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वसति और विहार की उत्कृष्ट आराधना करने से सरलता, मृदुता, लघुता, क्षमा, निर्लोभता, मन, वचन, काया की गुप्ति, सत्य, संयम, तप, शौच और निर्वाण मार्ग की विवेकपूर्वक आराधना करने से शुक्ल ध्यान ध्याते हुए अनन्त, सर्वोत्कृष्ट बाधा रहित यावत्–केवल ज्ञान–दर्शन उत्पन्न होगा तब वे भगवान अर्हन्त एवं जिन होंगे।

केवल ज्ञान-दर्शन से वे देव, मनुष्यों एवं असुरों से परिपूर्ण लोक के समस्त पर्यायों को देखेंगे।

सम्पूर्ण लोक के सभी जीवों की आगति, गति, स्थिति, च्यवन (मरण) उपपात (जन्म) तर्क, मानसिक भाव, मुक्त, कृत, सेवित, प्रगट कर्मों और गुप्त

कर्मों को जानेंगे अर्थात् उनसे कोई कार्य छिपा नहीं रहेगा ।

वे पूज्य भगवान् सम्पूर्ण लोक में उस समय के मन वचन और कायिक योग में वर्तमान सर्व जीवों के सर्व भावों को देखते हुए विचरेंगे ।

उस समय वे भगवान् केवल ज्ञान, केवल दर्शन से समस्त लोक को जानकर श्रमण निर्ग्रन्थों के पच्चीस भावना सहित पाँच महाव्रतों का तथा छजीवनिकाय धर्म का उपदेश देंगे ।

——हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थों का एक आरम्भ स्थान (प्रमाद) कहा है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थों का एक आरम्भ स्थान कहेंगे ।

हे आर्यो ? जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थों के दो बन्धन कहे हैं उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थों के दो बन्धन कहेंगे यथा—राग बन्धन और द्वेष बन्धन ।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थों के तीन दण्ड कहे हैं, उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण-निर्ग्रन्थों के तीन दण्ड कहेंगे यथा—मनदण्ड, वचन-दण्ड और कायदण्ड ।

इस प्रकार चार कषाय, पांच काम गुण, छ जीव-निकाय, सात भय स्थान, आठ मद स्थान, नो ब्रह्मचर्य गुप्ति, दश श्रमण धर्म यावत् तेतीस आशातना पर्यन्त कहें।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थों का नग्न भाव, मुण्ड भाव, अस्नान, अदन्तधावन, छत्र रहित रहना, जूते न पहनना, भू-शय्या, फलक शय्या, काष्ठ शय्या, केश लोच, ब्रह्मचर्य पालन गृहस्थ के घर से आहार आदि लाना, मान अपमान में सामान रहना आदि की प्ररूपणा करेंगे।

हे आर्यो ! मैंने श्रमण निर्ग्रन्थों को आधाकर्म[1] औद्देशिक[2] मिश्रजात[3] अध्यवपूर्वक[4] पूतिक[5] क्रीत[6]

---

१ आधा कर्म—जो आहार साधु के निमित्त बनता है।

२ औद्देशिक—जो आहार श्रमण निर्ग्रन्थों के उद्देश्य से बनाया जाता है।

३ मिश्रजात—जो आहार गृहस्थ और श्रमण के निमित्त बनता है।

४ अध्यवपूर्वक—गृहस्थ अपने लिए जो आहार बना रहा है उसी में साधु के निमित्त थोड़ा और मिलाकर बनाता है।

५ पूतिक—आधा कर्म आहार से मिश्रित शुद्ध आहार।

६ क्रीत—साधु के निमित्त खरीदा हुआ आहार।

अपमित्यक[1] आच्छेद्य[2] अनिसृष्ट[3] अभ्याहृत[4] कान्तार भक्त[5], दुर्भिक्ष भक्त[6], ग्लान भक्त[7] वद्धलिका भक्त[8], प्राघूर्णक[9], मूल भोजन[10], कन्द भोजन,[11] फल भोजन[12]

---

१ अपमित्यक—साधु के निमित्त उधार लिया हुआ आहार।
२ आच्छिद्य—नौकर आदि से छीनकर दिया जाने वाला आहार।
३ अनिसृष्ट—दो के स्वामित्व का आहार एक की आज्ञा के बिना देना।
४ अभ्याहृत—सन्मुख लाकर दिया जाने वाला आहार
५ कान्तार भक्त—अटवी में साधु के निमित्त बनाकर दिये जाने वाला आहार,
६ दुर्भिक्ष भक्त—दुष्काल में साधु के निमित्त बनाकर दिया जाने वाला आहार,
७ ग्लान भक्त—ग्लान साधु के निमित्त बनाकर दिया जाने वाला आहार,
८ वद्दलिका भक्त—वर्षाकाल में साधु के निमित्त बनाकर दिया जाने वाला आहार,
९ प्राघूर्णक—महमानों के निमित्त रखे हुए आहार में से आहार दिया जाय,
१० मूल भोजन—सचित्त (सजीव) वनस्पतियां साधु को देना।
११ कन्द भोजन—सचित्त कन्द साधु को देना,
१२ फल भोजन—सचित्त फल साधु को देना,

बीज भोजन[1], हरित भोजन[2] लेने का निषेध किया है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थों को आधा कर्म—यावत्—हरित भोजन लेने का निषेध करेंगे ।

हे आर्यो । जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थों का प्रतिक्रमण सहित पंच महाव्रत अचेलक धर्म कहा है इसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थों का प्रतिक्रमण सहित यावत् अचेलक धर्म कहेंगे ।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने पांच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत रूप बारह प्रकार का श्रावक धर्म कहा है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी पाँच अणुव्रत यावत् श्रावक धर्म कहेंगे ।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैंने श्रमण निर्ग्रन्थों को शय्यात्तर पिंड[3] और राजपिंड[4] लेने का निषेध

---

[1] बीज भोजन—सचित्त बीज साधु को देना ।
[2] हरित भोजन—सचित्त मधुर तृणादि साधु को देना ।
[3] शय्यातर पिंड—साधु को ठहरने के लिए जो स्थान की आज्ञा दे उसके घर का आहार ।
[4] राजपिंड—चक्रवर्ती या वासुदेव के निमित्त बना हुआ आहार ।

किया है उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी श्रमण निर्ग्रन्थों को शय्यातर पिंड और राजपिंड लेने का निषेध करेंगे ।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मेरे नौ गण और इग्यारह गणधर हैं उसी प्रकार महापद्म अर्हन्त के भी नो गण और इग्यारह गणधर होंगे ।

हे आर्यो ! जिस प्रकार मैं तीस वर्ष गृहस्थ पर्याय में रहकर मुण्डित यावत् प्रव्रजित हुआ, बारह वर्ष और तेरह पक्ष न्यून तीस वर्ष का केवली पर्याय, बियालीस वर्ष का का श्रमण पर्याय और बहत्तर वर्ष का पूर्णायु भोगकर, सिद्ध, होऊंगा यावत् सब दुखों का अन्त करूंगा इसी प्रकार महापद्म अर्हन्त भी तीस वर्ष गृहस्थावास में रहकर यावत् सब दुःखों का अन्त करेंगे ।

संक्षिप्त में

जो शील समाचार (कार्यकलाप) अर्हत तीर्थंकर महावीर का था वह शील समाचार महापद्म अर्हन्त का होगा ।

६९४ —नौ नक्षत्र चन्द्र के पीछे से गति करते हैं, यथा—१. अभिजित्, २. श्रवण, ३. धनिष्ठा, ४. रेवति, ५. अश्विनी, ६. मृगशिरा, ७. पुष्य ८. हस्त ९. चित्रा ।

५ —आणत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्प में विमान नौ सौ योजन के ऊँचे हैं।

६ —विमल वाहन कुल कर नौ धनुष के ऊँचे थे।

७ —कौशलिक भगवान् ऋषभदेव ने इस अवसर्पिणी में नौ क्रोड़ाक्रोड़ सागरोपम काल बीतने पर तीर्थ प्रवर्ताया।[1]

८ —घनदन्त, लष्टदन्त, गूढ़दन्त और शुद्धदन्त इन अन्तर्द्वीपवासी मनुष्यों के द्वीप नौ-सौ नौ-सौ योजन के लम्बे और चौड़े कहे गये हैं।

९ —शुक्र महाग्रह की नौ विथियाँ हैं,
यथा—१. हयवीथी, २. गजवीथी, ३. नागवीथी, ४. वृषभवीथी, ५. गोवीथी, ६. उरगवीथी, ७. अजवीथी, ८. मित्रवीथी, ९. वैश्वानरवीथी[2]।

१० —नौ कषाय वेदनीय कर्म नौ प्रकार का है,
यथा—१. स्त्री वेद, २. पुरुष वेद, ३. नपुंसक वेद, ४. हास्य, ५. रति, ६. अरति, ७. भय, ८. शोक, ९. दुगुंछा।

११ क—चोरिन्द्रिय जीवों की नौ लाख कुल कोड़ी हैं।

---

१ यहां एक लाख पूर्व और निव्यासी पक्ष न्यून नौ क्रोडा-क्रोड सागरोपम काल समझना चाहिये।

२ ये नो शुक्रग्रह के गति क्षेत्र हैं, अर्थात् इन नो क्षेत्रों में शुक्र ग्रह गति करता है।

ख—भुजपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीवों की नौ लाख कुल कोड़ी हैं।

७०२ —नौ स्थानों में संचित पुद्गलों को जीवों ने पापकर्म के रूप में चयन किया था, करते हैं और करेंगे।

यथा—पृथ्वीकायिक जीवों द्वारा संचित यावत्—पंचेन्द्रिय जीवों द्वारा संचित।

ख—इसी प्रकार चय, उपचय यावत् निर्जरा सम्बन्धि सूत्र कहने चाहिए।

७०३ क—नौ प्रादेशिक स्कन्ध अनन्त कहे गये हैं,

ख—नव प्रदेशावगाढ़ पुद्गल अनन्त कहे गये हैं—यावत् नवगुण रुक्ष पुद्गल अनन्त कहे गये हैं।

नवम स्थान समाप्त

दशम स्थान (दसवां ठाणा)

७०४ —लोक स्थिति दश प्रकार की हैं,

यथा—१. जीव मर-मरकर बार-बार लोक में ही उत्पन्न होते हैं।

२. जीव सदा पाप कर्म करते हैं।

३. जीव सदा मोहनीय कर्म का वन्ध करते हैं।

४. तीन काल में जीव अजीव नहीं होते हैं और अजीव जीव नहीं होते हैं।

५. तीन काल में त्रसप्राणी और स्थावर प्राणी विच्छिन्न नहीं होते हैं।

६. तीन काल में लोक अलोक नहीं होता है और अलोक लोक नहीं होता है।

७. तीन काल में लोक अलोक में प्रविष्ट नहीं होता है और अलोक लोक में प्रविष्ट नहीं होता है।

८. जहाँ तक लोक है वहां तक जीव है और जहाँ तक जीव है वहाँ तक लोक है।

९. जहाँ तक जीवों और पुद्गलों की गति है वहाँ तक लोक है, जहाँ तक लोक है वहाँ तक जीवों और पुद्गलों की गति है।

१०. लोकान्त में सर्वत्र रूक्ष पुद्गल हैं अतः जीव और पुद्गल लोकान्त के बाहर गमन नहीं कर सकते हैं।

७०५ —शब्द दस प्रकार के हैं,

यथा—१. नीर्हारी—घन्टा के समान घोष वाला शब्द।

२. डिंडिम—ढोल के समान घोष रहित शब्द।

३. रूक्ष—काक के समान रूक्ष शब्द।

४. भिन्न—कुष्टादिरोग से पीड़ित रोगी के समान शब्द।

५. जर्जरित—वीणा के समान शब्द।

६. दीर्घ—दीर्घ अक्षर के उच्चारण से होने वाला शब्द अथवा मेघ के समान दूर तक सुनाई देने वाला शब्द।

७. ह्रस्व—ह्रस्व अक्षर के उच्चारण से होने वाला शब्द अथवा वीणा के समीप में सुना जाने वाला शब्द।

८. पृथक्त्व—अनेक प्रकार के वाद्यों का एक समवेत स्वर।

९. काकणी—कोयल के समान सूक्ष्म कण्ठ से निकलने वाला शब्द।

१०. किंकिणी—छोटी-छोटी घंटियों से निकलने वाल शब्द।

७०६ क—इन्द्रियों के दश विषय अतीत काल के हैं,
यथा—१. अतीत में एक व्यक्ति ने एक देश (कान) से शब्द सुना।

२. अतीत में एक व्यक्ति ने सर्व देश (दोनों कानों) से शब्द सुना।

३-१०. इसी प्रकार रूप, रस, गंध और स्पर्श के दो-दो भेद है।

ख—इन्द्रियों के दश विषय वर्तमान काल के हैं,
यथा—१. वर्तमान में एक व्यक्ति एक देश (एक कान) से शब्द सुनता है।

२. वर्तमान में एक व्यक्ति सर्व देश (दोनों कानों) से शब्द सुनता है।

३-१०. इसी प्रकार रूप, रस, गंध और स्पर्श के दो-दो भेद हैं।

ग—इन्द्रियों के दश विषय भविष्य काल के हैं,
यथा—१. भविष्य में एक व्यक्ति एक देश (एक कान) से सुनेगा।

२. भविष्य में एक व्यक्ति सर्व देश (दोनों कानों) से सुनेगा।

३-१०. इसी प्रकार रूप, रस, गंध और स्पर्श के दो-दो भेद हैं।

७०७ —शरीर अथवा स्कंध से पृथक् न हुए पुद्गल दश प्रकार से चलित होते हैं,

यथा—१. आहार करते हुए पुद्गल चलित होते हैं।

२. रस रूप में परिणत होते हुए पुद्गल चलित होते हैं।

३. उच्छ्वास लेते समय वायु के पुद्गल चलित होते हैं।

४. निश्वास लेते समय वायु के पुद्गल चलित होते हैं।

५. वेदना भोगते समय पुद्गल चलित होते हैं।

६. निर्जरित पुद्गल चलित होते हैं।

७. वैक्रिय शरीर रूप में परिणत पुद्गल चलित होते हैं।

८. मैथुन सेवन करते समय शुक्र के पुद्गल चलित होते हैं।

९. यक्षाविष्ट पुरुष के शरीर के पुद्गल चलित होते हैं।

१०. शरीर के वायु से प्रेरित पुद्गल चलित होते हैं।

७०८ —दश प्रकार से क्रोध की उत्पत्ति होती है,

यथा—१. मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, और गंध का इसने अपहरण किया था ऐसा चिन्तन करने से—

२. इसने मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध दिया था ऐसा चिन्तन करने से—

३. मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, और गंध का यह अपहरण करता है ऐसा चिन्तन करने से—

४. इससे मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध दिया जाता है ऐसा चिन्तन करने से—

५. मेरे मनोज्ञ शब्द स्पर्श, रस, रूप और गंध का यह अपहरण करेगा-ऐसा चिन्तन करने से—

६. यह मुझे अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध देगा–ऐसा चिन्तन करने से–

७. मेरे मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गंध का इसने अपहरण किया था, करता है या करेगा–ऐसा चिन्तन करने से–

८. इसने मुझे अमनोज्ञ शब्द-यावत् गंध दिया था, देता है या देगा–ऐसा चिन्तन करने से–

९. इसने मेरे मनोज्ञ शब्द-यावत्-गंध का अपहरण किया, करता है या करेगा तथा इसने मुझे अमनोज्ञ शब्द-यावत् गंध दिया, देता है या देगा ऐसा चिन्तन करने से—

१०. मैं आचार्य या उपाध्याय की आज्ञानुसार आचरण करता हूं किन्तु वे मेरे पर प्रसन्न नहीं रहते हैं।

८०९ क—संयम दश प्रकार का है,

यथा—१-५. पृथ्वीकायिक जीवों का संयम यावत्-वनस्पतिकायिक जीवों का संयम, ६. बेइन्द्रिय जीवों का संयम, ७. तेइन्द्रिय जीवों का संयम, ८. चउरिन्द्रिय जीवों का संयम, ९. पंचेन्द्रिय जीवों का संयम, १०. अजीव काय संयम[1]

ख—असंयम दश प्रकार का है,

यथा—१-५. पृथ्वीकायिक जीवों का असंयम यावत्-वनस्पतिकायिक जीवों का असंयम, ६-९. बेइन्द्रिय जीवों का असंयम-यावत्-पंचेन्द्रिय जीवों का असंयम, १०. अजीव कायिक असंयम।[2]

ग—संवर दस प्रकार का है,

---

१ वस्त्र-पात्र आदि अजीव पदार्थों को यत्नापूर्वक काम में लेना।

२ वस्त्र-पात्र आदि अजीव पदार्थों को अयत्ना से काम में लेना।

यथा—१-५. श्रोत्रेन्द्रिय संवर–यावत्–स्पर्शेन्द्रिय संवर, ६. मन संवर, ७. वचन संवर, ८. काय संवर, ९. उपकरण संवर,[1] १०. शुचि कुशाग्र संवर।[2]

घ—असंवर दस प्रकार है,

यथा—१-५. श्रोत्रेन्द्रिय असंवर–यावत्–स्पर्शेन्द्रिय असंवर, ६. मन असंवर, ७. वचन असंवर, ८. काय असंवर, ९. उपकरण असंवर,[3] १०. शुचि कुशाग्र असंवर,[4]

७१० —दस कारणों से मनुष्य को अभिमान उत्पन्न होता है, यथा—१. जातिमद से, २-७. कुलमद से–यावत्–८. ऐश्वर्यमद से, ९. नाग कुमार देव या सुपर्णकुमार देव मेरे समीप शीघ्र आते हैं इस प्रकार के मद से, १०. सामन्य पुरष को जिस प्रकार का अवधिज्ञान उत्पन्न होता है उससे श्रेष्ठ अवधिज्ञान और दर्शन मुझे उत्पन्न हुआ है इस प्रकार के मद से।

७११ —समाधी दस प्रकार की हैं,

---

१ अकल्पनीय उपकरण वस्त्र-पात्र का त्याग करना।

२ सुई या कुशाग्र को संवृत करके रखना।

३ अकल्पनीय उपकरण वस्त्र-पात्र का त्याग न करना।

४ सुई या कुशाग्र को संवृत करके न रखना।

यथा—१. प्राणातिपात से विरत होना,

२. मृषावाद से विरत होना,

३. अदत्तादान से विरत होना,

४. मैथुन से विरत होना,

५. परिग्रह से विरत होना,

६. ईर्या समिति से,

७. भाषा समिति से ।

८. एषणा समिति ।

९. आदान भाण्डमात्र निक्षेपणा समिति से,

१०. उच्चार प्रश्रवण श्लेष्म सिंघाण परिस्थापनिका समिति ।

ख—असमाधि दस प्रकार की हैं,

यथा—१-५ प्राणातिपात—यावत्—परिग्रह,

६-१० ईर्या असमिति—यावत्—उच्चार प्रश्रवण श्लेष्म सिंघाण परिस्थापनिका असमिति ।

७१२ क—प्रव्रज्या दस प्रकार की हैं,

यथा—१. छन्द से—गोविन्द वाचक के समान स्वेच्छा से दीक्षा ले ।

२. रोष से—शिवभूति के समान रोष से दीक्षा ले ।

३. दरिद्रता से—कठिआरे के समान दरिद्रता से दीक्षा ले ।

४. स्वप्न से—पुष्प चूला के समान स्वप्न दर्शन से दीक्षा ले, अथवा स्वप्न में दीक्षा लेने से दीक्षा ले।

५. प्रतिज्ञा लेने से—धन्नाजी के समान प्रतिज्ञा लेने से दीक्षा ले।

६. स्मरण से—भगवान् मल्लिनाथ के छः मित्रों के समान पूर्वभव के स्मरण से दीक्षा ले।

७. रोग होने से—सनत्कुमार चक्रवर्ती के समान रोग होने से दीक्षा ले।

८. अनादर से—नंदीषेण के समान अनादर से दीक्षा ले।

९. देवता के उपदेश से—मेतार्य के समान देवता के उपदेश से दीक्षा ले।

१०. पुत्र के स्नेह से—वज्रस्वामी की माताजी के समान पुत्र स्नेह से दीक्षा ले।

ख—श्रमण धर्म दस प्रकार का है,

यथा—१. क्षमा, २. निर्लोभता, ३. सरलता, ४. मृदुता, ५. लघुता, ६. सत्य, ७. संयम, ८. तप, ९. त्याग, १०. ब्रह्मचर्य।

ग—वैयावृत्य दस प्रकार का है,

यथा—१. आचार्य की वैयावृत्य,

२. उपाध्याय की वैयावृत्य,

३. स्थविर साधुओं की वैयावृत्य,

४. तपस्वी की वैयावृत्य,
५. ग्लान (रोगी) की वैयावृत्य,
६. शैक्ष (नवदीक्षित) की वैयवृत्य,
७. कुल (चद्र कुलादि) की वैयावृत्य,
८. गण (कोटि कादिगण) की वैयावृत्य,
९. चतुर्विध संघ की वैयावृत्य,
१०. साधर्मिक की वैयावृत्य।

७१३ क—जीव परिणाम दस प्रकार के हैं,
यथा—१. गति परिणाम, २. इन्द्रिय परिणाम, ३. कषाय परिणाम, ४. लेश्या परिणाम, ५. योग-परिणाम, ६. उपयोग परिणाम, ७. ज्ञान परिणाम, ८. दर्शन परिणाम, ९. चारित्र परिणाम, १०. वेद-परिणाम।

ख—अजीव परिणाम दस प्रकार के हैं,
यथा—१. बन्धन परिणाम, २. गति परिणाम, ३. संस्थान परिणाम, ४. भेद परिणाम, ५. वर्ण परि-णाम, ६. रस परिणाम, ७. गंध परिणाम, ८. स्पर्श परिणाम ९. अगुरु लघु परिणाम, १०. शब्द परिणाम।

७१४ क—आकाश सम्बन्धी अस्वाध्याय दस प्रकार का हैं,
यथा—१. उल्कापात—आकाश से प्रकाश पुंज का गिरना[1]

---

१ अस्वाध्याय काल—एक प्रहर।

२. दिशादाह—महानगर के दाह के समान आकाश में प्रकाश का दिखाई देना[1]

३. गर्जना—आकाश में गर्जना होना[2]

४. विद्युत—अकाल में विद्युत चमकना[3]

५. निर्घात—आकाश में व्यन्तर देव कृत महाध्वनि अथवा भूकम्प की ध्वनि[4]

६. जूयग—संध्या और चन्द्रप्रभा का मिलना[5]

७. यक्षादीप्त—आकाश में यक्ष के प्रभाव से जाज्वल्यमान अग्नि का दिखाई देना।

८. धूमिका—धुंए जैसे वर्णवाली सूक्ष्मवृष्टि।

९. मिहिका—शरद् काल में होने वाली सूक्ष्म वर्षा अर्थात् ओस गिरना,

१०. रजघात—चारों दिशा में सूक्ष्म रज की वृष्टि[6]

---

१ अस्वाध्याय काल—एक प्रहर

२ ,, ,, दो प्रहर

३ ,, ,, एक प्रहर

४ ,, ,, आठ प्रहर

५ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से तृतीया तक प्रतिक्रमण पश्चात एक प्रहरपर्यन्त कालिक सूत्र का अस्वाध्याय काल है।

६ यक्षादीप्त, धूमिका, मिहिका और रजघात जब तक रहे तब तक अस्वाध्याय है।

ख—औदारिक शरीर सम्बन्धी अस्वाध्याय दस प्रकार का हैं,

यथा—१. अस्थि, २. माँस, ३. रक्त[1] ४. अशुचि के समीप, ५. स्मशान के समीप, ६. चन्द्र ग्रहण[2] ७. सूर्य ग्रहण[3] ८. पतन—राजा, मंत्री, सेनापति या ग्रामाधिपति आदि का मरण[4] ९. राजविग्रह—युद्ध, १०. उपाश्रय में मनुष्य आदि का मृत शरीर पड़ा हो तो सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय क्षेत्र हैं।

७१५ क—पंचेन्द्रिय जीवों की हिंसा न करने वाले को दस प्रकार का संयम होता हैं।

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय का सुख नष्ट नहीं होता।

२. श्रोत्रेन्द्रिय का दुःख प्राप्त नहीं होता यावत्—

३.-१०. स्पर्शेन्द्रिय का दुःख प्राप्त नहीं होता।

---

१ (क) अस्थि आदि तिर्यंच के हो तो क्षेत्र से साठ हाथ पर्यन्त और काल से तीन प्रहर तक अस्वाध्याय है।

(ख) अस्थि आदि मनुष्यों के हो तो क्षेत्र आदि से सौ-सौ हाथ पर्यन्त और काल से अहोरात पर्यन्त अस्वाध्याय है।

२ उत्कृष्ट—बारह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल हैं।
जघन्य—आठ प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल हैं।

३ उत्कृष्ट—सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल हैं।
जघन्य—बारह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्याय काल हैं।

४ अहोरात्र पर्यन्त अस्वाध्याय हैं।

ख—इसी प्रकार दस प्रकार का असंयम भी कहना चाहिए ।

७१६ —सूक्ष्म दस प्रकार के हैं,
यथा—१. प्राण सूक्ष्म—कुंथुआ आदि ।
२. पनक सूक्ष्म—फूलण आदि ।
३. वीज सूक्ष्म—डांगर आदि का अग्र भाग ।
४. हरित सूक्ष्म—सूक्ष्म हरी घास ।
५. पुष्प सूक्ष्म—वड आदि के पुष्प ।
६. अंड सूक्ष्म—कीड़ी आदि के अण्डे ।
७. लयन सूक्ष्म—कीड़ी नगरादि ।
८. स्नेह सूक्ष्म—धुंअर आदि ।
९. गणित सूक्ष्म—सूक्ष्म बुद्धि से गहन गणित करना।
१०. भंग सूक्ष्म—सूक्ष्म बुद्धि से गहन भांगे बनाना ।

सरितासूत्र

७१७ क—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से दक्षिण दिशा में गंगा और सिन्धु महानदी में दस महा नदियाँ मिलती हैं ।
यथा—गंगा नदी में मिलने वाली पाँच नदियाँ—
१. यमुना, २. सरयू, ३. आवी, ४. कोशी, ५. मही ।
सिन्धु नदी में मिलने वाली पाँच नदियाँ—
१. शतद्रु, २. विवत्सा, ३. विभासा, ४. एरावती, ५. चन्द्रभागा ।

ख—जम्बूद्वीप के मेरु से उत्तर दिशा में रक्ता और रक्तवती महानदी में दस महानदियाँ मिलती हैं,

यथा—१. कृष्णा, २. महाकृष्णा, ३. नीला ४. महानीला, ५. तीरा, ६. महातीरा, ७. इन्द्रा, ८. इन्द्रषेणा, ९. वारिषेणा, १०. महाभोगा।

७१८ क—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में दस राजधानियाँ हैं,

यथा—१. चम्पा, २. मथुरा, ३. वाराणसी, ४. श्रावस्ती, ५. साकेत, ६. हस्तिनापुर, ७. कांपिल्यपुर, ८. मिथिला, ९. कोशाम्बि, १०. राजगृह।

ख—इन दस राजधानियों में दश राजा मुण्डित यावत्—प्रव्रजित हुए,

यथा—१. भरत, २. सगर, ३. मघव, ४. सनत्कुमार, ५. शान्तिनाथ, ६. कुन्थुनाथ, ७. अरनाथ, ८. महापद्म, ९. हरिषेण, १०. जयनाथ

मेरुपर्वत सूत्र

७१९ क—जम्बूद्वीप का मेरुपर्वत भूमि में दस सौ (एक हजार) योजन गहरा है।

ख—भूमि पर दस हजार योजन चौड़ा है।

ग—ऊपर से दस सौ (एक हजार) योजन चौड़ा है।

घ—दस-दस हजार (एक लाख) योजन के सम्पूर्ण मेरुपर्वत हैं।

क—जम्बूद्वीपवर्ती मेरुपर्वत के मध्य भाग में इस रत्न प्रभा पृथ्वी के ऊपर और नीचे के लघु प्रतर में आठ प्रदेश वाला रुचक है वहाँ से इन दश दिशाओं का उद्‌गम होता है।

यथा—१. पूर्व, २. पूर्व दक्षिण, ३. दक्षिण, ४. दक्षिण पश्चिम, ५, पश्चिम, ६. पश्चिमोत्तर, ७. उत्तर, ८. उत्तर पूर्व, ९. ऊर्ध्व, १०. अधो।

ख—इन दस दिशाओं के दस नाम हैं,

यथा—१. ऐन्द्री, २. आग्नेयी, ३. यमा, ४. नैऋती, ५. वारुणी, ६. वायव्या, ७. सोमा, ८. ईशाना, ९. विमला, १०. तमा।

लवण समुद्र सूत्र

ग—लवण समुद्र के मध्य में दस हजार योजन का गोतीर्थ विरहित क्षेत्र है।

घ—लवण समुद्र के जल की शिखा दस हजार योजन की हैं।

महापाताल कलश सूत्र

ङ—सभी (चार) महापाताल कलश दस-दश सहस्र (एक लाख योजन के गहरे हैं।

च—मूल में (पेंदे में) दस हजार योजन के चौड़े हैं।

छ—मध्य भाग में—एक प्रदेश वाली श्रेणी में दस-दस हजार (एक लाख) योजन चौड़े हैं।

ज—कलशों के मुंह दस हजार योजन चौड़े हैं।

झ—उन महापाताल कलशों की ठीकरी वज्रमय है और दस सौ योजन की सर्वत्र समान चौड़ी (मोटी) है।

लघुपाताल कलश सूत्र

ञ—सभी (चार) लघुपाताल कलश दस सौ (एकहजार) योजन गहरे हैं।

ट—मूल में (पेंदे में) दस दशक (सौ) योजन चौड़े हैं।

ठ—मध्य भाग में—एक प्रदेश वाली श्रेणी में दशसौ (एक हजार) योजन चौड़े हैं।

ड—कलशों के मुंह दशदशक (सौ) योजन चौड़े हैं।

ढ—उन लघुपाताल कलशों की ठीकरी वज्रमय है और दश योजन की सर्वत्र समान चौड़ी (मोटी) है।

मेरु पर्वत सूत्र

७२१ क—धातकीखण्ड द्वीप के मेरु भूमि में दश सौ (एक हजार) योजन गहरे हैं।

ख—भूमि पर कुछ न्यून दश हजार योजन चौड़े हैं।

ग—ऊपर से दश सौ (एक हजार योजन) चौड़े हैं।

घ-च—पुष्करवर अर्धद्वीप के मेरु पर्वतों का प्रमाण भी इसी प्रकार का है।

वैताढ्य पर्वत सूत्र

क—सभी वृत्त वैताढ्य पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन ऊँचे हैं।

ख—भूमि में दस सौ (एक हजार) गाऊ गहरे हैं।

ग—सर्वत्र समान पल्यंक संस्थान से संस्थित हैं और दश सौ (एक हजार) योजन चौड़े हैं।

—जम्बूद्वीप में दश क्षेत्र हैं,

यथा—१. भरत, २. ऐरवत, ३. हैमवत, ४. हैरण्यवत, ५. हरिवर्ष, ६. रम्यक्वर्ष, ७. पूर्व-विदेह, ८. अपरविदेह, ९. देवकुरु, १०. उत्तरकुरु।

—मानुपोत्तर पर्वत मूल में दश सौ बावीस (एक हजार बावीस–१०२२) योजन चौड़ा है।

अंजनक पर्वत सूत्र

क—सभी अंजनक पर्वत भूमि में दश सौ (एक हजार) योजन गहरे हैं।

ख—भूमि पर मूल में दश हजार योजन चौड़े हैं।

ग—ऊपर से दश सौ (एक हजार) योजन चौड़े हैं।

दधिमुख पर्वत सूत्र

घ—सभी दधिमुख पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन भूमि में गहरे हैं।

ङ—सर्वत्र समान पल्यंक संस्थान से संस्थित हैं और दश हजार योजन चौड़े हैं।

रतिकर पर्वत सूत्र

च—सभी रतिकर पर्वत दश सौ (एक हजार) योजन ऊँचे हैं।

छ—दश सौ (एक हजार) गाऊ भूमि में गहरे हैं।

ज—सर्वत्र समान झालर के संस्थान से स्थित हैं और दश हजार योजन चौड़े हैं।

रुचकवर पर्वत सूत्र

७२६ क—रुचकवर पर्वत दश सौ योजन भूमि में गहरे हैं।

ख—मूल में (भूमि पर) दस हजार योजन चौड़े हैं।

ग—ऊपर से दस सौ योजन चौड़े हैं।

घ-च—इसी प्रकार कुण्डलवर पर्वत का प्रमाण भी करना चाहिए।

७२७ —द्रव्यानुयोग दस प्रकार का है,

यथा—१. द्रव्यानुयोग, २. जीवादि द्रव्यों का चिन्तन यथा—गुण-पर्यायवद् द्रव्यम्।

२. मातृकानुयोग—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य इन तीन पदों का चिन्तन।

यथा—उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्तं सत्।

३. एकार्थिकानुयोग—एक अर्थ वाले शब्दों का चिन्तन।

यथा—जीव, प्राण, भूत और सत्व इन एकार्थवाची शब्दों का चिन्तन ।

४. करणानुयोग—साधकतम कारणों का चिन्तन ।
यथा—काल, स्वभाव, नियति और साधकतम कारण से कर्त्ता कार्य करता है ।

५. अर्पितानर्पित—
यथा—अर्पित-विशेषण सहित—यह संसारी जीव हैं ।
अनर्पित विशेषण रहित—यह जीव द्रव्य हैं ।

६. भाविताभावित—
यथा—अन्य द्रव्य के संसर्ग से प्रभावित—भावित कहा जाता है और अन्य द्रव्य के संसर्ग से अप्रभावित अभावित कहा जाता है—इस प्रकार द्रव्यों का चिन्तन किया जाता है ।

७. बाह्याबाह्य—बाह्य द्रव्य और अबाह्य द्रव्यों का चिन्तन ।

८. शास्वताशास्वत—शास्वत और अशास्वत द्रव्यों का चिन्तन ।

९. तथाज्ञान—सम्यगदृष्टि जीवों का जो यथार्थ ज्ञान है वह तथाज्ञान है ।

१०. अतथाज्ञान—मिथ्यादृष्टि जीवों का जो एकान्त ज्ञान है वह अतथाज्ञान है ।

उत्पात पर्वत सूत्र

७२८ क—असुरेन्द्र चमर का तिगिच्छा कूट उत्पात पर्वत मूल में दस-सौ वाईस (एक हजार वाईस १०२२) योजन चौड़ा है।

ख—असुरेन्द्र चमर के सोम लोकपाल का सोमप्रभ उत्पाद पर्वत दस सौ (एक हजार) योजन का ऊँचा है, दस सौ (एक हजार) गाऊ का भूमि में गहरा है, मूल में (भूमि पर) दससौ (एक हजार) योजन का चौड़ा है।

ग—असुरेन्द्र चमर के यमलोकपाल का यमप्रभ उत्पात पर्वत का प्रमाण भी पूर्ववत् है।

घ—इसी प्रकार वरुण के उत्पात पर्वत का प्रमाण है।

ङ—इसी प्रकार वैश्रमण के उत्पात पर्वत का प्रमाण है।

च—वैरोचनेन्द्र वलि का रुचकेन्द्र उत्पात पर्वत भूल में दस सौ वावीस (एक हजार वाईस १०२२) योजन चौड़ा है।

छ-ज—जिस प्रकार चमरेन्द्र के लोकपालों के उत्पात पर्वतों का प्रमाण कहा है उसी प्रकार वलि के लोकपालों के उत्पात पर्वतों का प्रमाण कहना चाहिए।

ट—नागकुमारेन्द्र धरण का धरणप्रभ उत्पात पर्वत दस सौ (एक हजार) योजन ऊँचा है, दस सौ (एक हजार) गाऊ का भूमि में गहरा है, मूल में दससौ (एक हजार) योजन चौड़ा है।

ठ-त—इसी प्रकार धरण के कालवाल आदि लोकपालों के उत्पात पर्वतों का प्रमाण है।

ध-प—इसी प्रकार भूतानन्द और उनके लोकपालों के उत्पात पर्वतों का प्रमाण है।

सूचना—इसी प्रकार लोकपाल सहित स्तनित कुमार पर्यन्त उत्पात पर्वतों का प्रमाण कहना चाहिए। असुरेन्द्रों और लोकपालों के नामों के समान उत्पात पर्वतों के नांम कहने चाहिए।

फ—देवेन्द्र देवराज शक्रेन्द्र का शक्रप्रभ उत्पात पर्वत दस हजार योजन ऊँचा है। दस हजार गाऊ भूमि में गहरा है। मूल में दस हजार योजन चौड़ा है।

ब-य—इसी प्रकार शक्रेन्द्र के लोकपालों के उत्पात पर्वतों का प्रमाण है।

सूचना—इसी प्रकार अच्युत पर्यन्त सभी इन्द्रों और लोकपालों के उत्पात पर्वतों का प्रमाण है।[1]

अवगाहना सूत्र

७२९ क—बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट अवगाहना दश सौ (एक हजार) योजन की है।

ख—जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना दश सौ (एक हजार) योजन की हैं।

---

१ सबका समान प्रमाण है।

ग—स्थलचर उरपरिसर्प तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना भी इतनी ही है।

७३० —संभवनाथ अर्हन्त की मुक्ति के पश्चात् दश लाख क्रोड़ सागरोपम व्यतीत होने पर अभिनन्दन अर्हन्त उत्पन्न हुए।

७३१ —अनन्तक दश प्रकार के हैं,

यथा—१. नाम अनन्तक—सचित्त या अचित्त वस्तु का अनन्तक नाम।

२. स्थापना अनन्तक—अक्ष आदि में किसी पदार्थ में अनन्त की स्थापना।

३. द्रव्य अनन्तक—जीव द्रव्य या पुद्गल द्रव्य का अनन्तपना।

४. गणना—अनन्तक एक, दो, तीन इसी प्रकार संख्यात, असंख्यात और अनन्त पर्यन्त गिनती करना।

५. प्रदेश अनन्तक—आकाश प्रदेशों का अनन्तपना।

६. एकतोऽनंतक–अतीत काल अथवा अनागत काल।

७. द्विधा-अनन्तक—सर्वकाल।

८. देश विस्तारानन्तक—एक आकाश प्रतर।

९. सर्व विस्तारानन्तक—सर्व आकाशास्तिकाय।

१०. शास्वतानन्तक—अक्षय जीवादि द्रव्य।

७३२ क—उत्पाद पूर्व के दश वस्तु (अध्ययन) हैं।

ख—अस्तिनास्ति प्रवादपूर्व के दश चूल वस्तु (लघु अध्ययन) हैं।

७३३ क—प्रतिषेवना (प्राणातिपात आदि पापों का सेवन) दश प्रकार की हैं।

यथा—१. दर्प प्रतिषेवना—दर्पपूर्वक दौड़ने या वध्यादि कर्म करने से।

२. प्रमाद प्रतिषेवना—हास्य विकथा आदि प्रमाद से[1]

३. अनाभोग प्रतिषेवना—असावधानी से।

४. आतुर प्रतिषेवना—स्वयं की या अन्य की चिकित्सा हेतु[2]

५. आपत्ति प्रतिषेवना—विपद्ग्रस्त होने से[3]

६. शंकित प्रतिषेवना—शुद्ध आहारादि में अशुद्ध की शंका होने पर भी ग्रहण करने से।

---

१ करने योग्य कार्य के करने में प्रयत्न न करना प्रमाद है।

२ भूख, प्यास या व्याधि से पीड़ित होकर दोष सेवन करना।

३ द्रव्यादि भेद से चार प्रकार की विपत्ति है—
द्रव्य विपत्ति—प्राशुक द्रव्य की दुर्लभता,
क्षेत्र विपत्ति—मार्ग में गिरना,
काल विपत्ति—दुर्भिक्ष आदि,
भाव विपत्ति—ग्लानि होना।

७. सहसात्कार प्रतिषेवना—अकस्मात् दोष लग जाने से ।[1]

८. भयप्रतिषेवना—राजा चोर आदि के भय से ।[2]

९. प्रद्वेषप्रतिषेवना—क्रोधादि कषाय की प्रबलता से ।

१०. विमर्श प्रतिषेवना—शिष्यादि की परीक्षा के हेतु[3]

ख—आलोचना के दश दोष हैं,

यथा—१. अनुकम्पा उत्पन्न करके आलोचना करे—आलोचना लेने के पहले गुरु महाराज की सेवा इस संकल्प से करे कि ये मेरी सेवा से प्रसन्न होकर मेरे पर अनुकम्पा करके कुछ कम प्रायश्चित्त देंगे ।

२. अनुमान करके आलोचना करे—ये आचार्यादि मृत्यु दण्ड देने वाले हैं या कठोर दण्ड देने वाले हैं

---

१ [क] देखे बिना पैर धरदे पश्चात् देखने वर जीवों की विराधना होती हुयी देखे किन्तु पीछे न लौटे ।

[ख] पात्र में सहसा कोई सदोष आहार डाल दे बाद में दोष जानने पर भी उस आहार को न त्यागे ।

२ सिंह आदि श्वापद तथा सर्पादि उरग जीवों के भय से वृक्षादि पर चढ़ने से ।

३ सचित्त पृथ्वी आदि के स्पर्श से ।

यह अनुमान से जानकर मृदु दण्ड मिलने की आशा से आलोचना करे।

३. मेरा दोष इन्होंने देख लिया है ऐसा जानकर आलोचना करे—आचार्यादि ने मेरा यह दोषसेवन देख तो लिया ही है अब इसे छिपा नहीं सकता अतः मैं स्वयं इनके समीप जाकर अपने दोष की आलोचना करलूँ इससे ये मेरे पर प्रसन्न होंगे—ऐसा सोच कर आलोचना करे किन्तु दोष सेवी को ऐसा अनुभव हो कि आचार्यादि ने मेरा दोप सेवन देखा नहीं है है, ऐसा विचार करके आलोचना न करे अतः यह दृष्ट दोष है।

४. स्थूल दोष की आलोचना करे—अपने बड़े दोष की आलोचना इस आशय से करे कि यह कितना सत्यवादी हैं ऐसी प्रतीति कराने के लिये बड़े दोष की आलोचना करे।

५. सूक्ष्म दोष की आलोचना करे—यह छोटे-छोटे दोषों की आलोचना करता है तो बड़े दोषों की आलोचना करने में तो सन्देह ही क्या है ऐसी प्रतीति कराने के लिए सूक्ष्म दोषों की आलोचना करे।

६. प्रच्छन्न रूप से आलोचना करे—आचार्यादि सुन न सके ऐसे धीमे स्वर से आलोचना करे अतः आलोचना नहीं करी ऐसा कोई न कह सके।

७. उच्च स्वर से आलोचना करे—केवल गीतार्थ ही सुन सके ऐसे स्वर से आलोचना करनी चाहिये किन्तु उच्च स्वर से बोलकर अगीतार्थ को भी सुनावे ।

८. अनेक के समीप आलोचना करे—दोष की आलोचना एक के पास ही करनी चाहिये, किन्तु जिन दोषों की आलोचना पहले कर चुका है उन्हीं दोषों की आलोचना दूसरों के पास करे ।

९. अगीतार्थ के पास आलोचना करे—आलोचना गीतार्थ के पास ही करनी चाहिये किन्तु ऐसा न करके अगीतार्थ के पास आलोचना करे ।

१०. दोषसेवी के पास आलोचना करे—मैंने जिस दोष का सेवन किया है उसी दोष का सेवन गुरुजी ने भी किया है अतः मैं उन्हीं के पास आलोचना करूं—क्योंकि ऐसा करने से वे कुछ कम प्रायश्चित्त देंगे ।

ग—दश स्थान (गुण) सम्पन्न अणगार (आचार्यादि) अपने दोषों की आलोचना करता है,

यथा—१. जातिसम्पन्न, २. कुलसम्पन्न शेष ३-६ अष्टम स्थानक समान यावत् ७. क्षमाशील, ८. दमनशील, ९. अमायी, १०. अपश्चात्तापी (आलोचना प्रायश्चित्त) लेने के पश्चात् पश्चात्ताप न करने वाला ।

घ—दश स्थान (गुण) सम्पन्न अणगार आलोचना सुनने योग्य होता है।

यथा—१. आचारवान्

२. अवधारणावान्

३. व्यवहारवान्[1]

४. अल्पव्रीडक—आलोचक की लज्जा दूर कराने वाला, जिससे आलोचक सुखपूर्वक आलोचना कर सके।

५. शुद्धि करने में समर्थ,

६. आलोचक की शक्ति के अनुसार प्रायश्चित्त देने वाले,

७. आलोचक के दोष दूसरों को न कहने वाला,

८. दोष सेवन से अनिष्ट होता है ऐसा समझा सकने वाला,

९. प्रियधर्मी,

१०. दृढ़धर्मी।

ङ—प्रायश्चित्त दश प्रकार का है,

यथा—१. आलोचना योग्य, यावत् २-९-अनवस्थाप्यार्ह—जिस दोष की शुद्धि साधु को अमुक समय तक व्रतरहित रखकर पुनः व्रतारोपण रूप प्रायश्चित्त से हो।

---

१ आगमादि पांच व्यवहारों का ज्ञाता।

१०. पारंचिकार्ह—गृहस्थ के कपड़े पहनाकर जो
प्रायश्चित्त दिया जाय।

७३४ —मिथ्यात्व दश प्रकार का है, यथा—
१. अधर्म में धर्म की बुद्धि,
२. धर्म में अधर्म की बुद्धि,
३. उन्मार्ग में मार्ग की बुद्धि,
४. मार्ग में उन्मार्ग की बुद्धि,
५. अजीव में जीव की बुद्धि,
६. जीव में अजीव की बुद्धि,
७. असाधु में साधु की बुद्धि,
८. साधु में असाधु की बुद्धि,
९. अमूर्त में मूर्त की बुद्धि,
१०. मूर्त में अमूर्त की बुद्धि।

७३५ क—चन्द्रप्रभ अर्हन्त दश लाख पूर्व का पूर्णायु भोग का
सिद्ध यावत् मुक्त हुए।
ख—धर्मनाथ अर्हन्त दश लाख वर्ष का पूर्णायु भोगक
सिद्ध यावत् मुक्त हुए।
ग—नमिनाथ अर्हन्त दश हजार वर्ष का पूर्णायु भोगक
सिद्ध यावत् मुक्त हुए।
घ—पुरुषसिंह वासुदेव दश लाख वर्ष का पूर्णायु भोगक
छट्ठी तमा पृथ्वी में नैरयिक रूप में उत्पन्न हुए।

ङ—नेमनाथ अर्हन्त दश धनुष के ऊँचे थे और दश सौ (एक हजार) वर्ष का पूर्णायु भोगकर सिद्ध यावत् मुक्त हुए।

च—कृष्ण वासुदेव दश धनुष के ऊँचे थे और दश सौ (एक हजार) वर्ष का पूर्णायु भोगकर तीसरी वालुकाप्रभा पृथ्वी में नैरयिक रूप में उत्पन्न हुए।

७३६ क—भवनवासी देव दश प्रकार के हैं,

यथा—१-१० असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार।

ख—इन दश प्रकार के भवनवासी देवों के दश चैत्य वृक्ष हैं,

यथा—१. अश्वत्थ—पीपल, २. सप्तपर्ण, ३. शालमली, ४. उदुम्बर, ५. शिरीष, ६. दधिपर्ण, ७. वंजुल, ८. पलाश, ९. वप्र, १०. कणेरवृक्ष।

७३७ सुख दस प्रकार का है,

यथा—१. आरोग्य, २, दीर्घायु, ३. धनाढ्य होना, ४. इच्छित शब्द और रूप का प्राप्त होना, ५. इच्छित गंध, रस और स्पर्श का प्राप्त होना, ६. सन्तोष, ७. जब जिस वस्तु की आवश्यकता हो, उस समय उस वस्तु का प्राप्त होना, ८. शुभ भोग प्राप्त होना, ९. निष्क्रमण दीक्षा, १०. अनाबाध-मोक्ष।

७३८　क—उपघात दस प्रकार का है,[1]

यथा—१. उद्गम उपघात, उत्पादन उपघात शेष पाँचवे स्थान के समान यावत्—३.-५. परिहरण उपघात, ६. ज्ञानोपघात, ७. दर्शनोपघात, ८. चारित्रोपघात, ९. अप्रीतिकोपघात[2] १०. संरक्षणोपघात[3]।

ख—विशुद्धि दस प्रकार की है,[4]

यथा—१. उद्गम विशुद्धि, २. उत्पादन विशुद्धि यावत् ३.-१०. संरक्षण विशुद्धि।

७३९　क—संक्लेश दस प्रकार का है,

यथा—१. उपधि संक्लेश, २. उपाश्रय संक्लेश, ३. कषाय संक्लेश, ४. भक्तपाण संक्लेश, ५. मन संक्लेश, ६. वचन संक्लेश, ७. काय संक्लेश, ८. ज्ञान संक्लेश, ९. दर्शन संक्लेश, १०. चारित्र संक्लेश।

ख—असंक्लेश दस प्रकार का है,

यथा—१. उपधि अंसक्लेश यावत् २-१० चारित्र असंक्लेश।

१　चारित्र की विराधना रूप उपघात।

२　गुरु पर स्नेह न रखने से विनय का भंग होना,

३　शरीर पर मूर्छा होने से अपरिग्रह व्रत का उपघात।

४　उपघात का विरोधी विशुद्धि है।

७४० —वल दस प्रकार के हैं,

यथा—१. श्रोत्रेन्द्रिय वल यावत् २.-५. स्पर्शेन्द्रि वल, ६. ज्ञान वल, ७. दर्शन वल ८. चारित्र वल, १०. वीर्य वल।

७४१ क—सत्य दस प्रकार के हैं,

यथा—१. जनपद सत्य—देश की अपेक्षा से सत्य,

२. सम्मत सत्य—सब का सम्मत सत्य,

३. स्थापना सत्य—वालक द्वारा लकड़ी में घोड़े की स्थापना,

४. नाम सत्य—एक दरिद्री का धनराज नाम,

५. रूप सत्य—एक कपटी का साधुवेष,

६. प्रतीत्यसत्य—कनिष्ठा की अपेक्षा अनामिका का दीर्घ होना, और मध्यमा की अपेक्षा अनामिका का लघु होना।

७. व्यवहार सत्य—पर्वत में तृण जलते हैं फिर भी पर्वत जल रहा है ऐसा कहना।

८. भाव सत्य—वक में प्रधान श्वेत वर्ण है अतः बक (बगुला) को श्वेत कहना।

९. योग सत्य—दंड हाथ में होने से दण्डी कहना।

१०. औपम्य सत्य—यह कन्या चन्द्रमुखी है।

ख—मृषावाद दस प्रकार का है,

यथा—१. क्रोध जन्य, २. मान जन्य, ३. माया जन्य, ४. लोभ जन्य, ५. प्रेम जन्य, ६. द्वेष जन्य, ७. हास्य

जन्य, ८. भय जन्य, ९. आख्यायिका जन्य[1], १०. उपघात जन्य[2]।

ग—सत्यमृषा (मिश्र वचन) दस प्रकार का है,

यथा—१. उत्पन्न मिश्रक सही संख्या मालूम न होने पर भी "इस शहर में दस बच्चे पैदा हुए हैं" ऐसा कहना।

२. विगत मिश्रक—जन्म के समान मरण के सम्बन्ध में कहना।

३. उत्पन्न विगत मिश्रक—सही संख्या प्राप्त न होने पर भी "इस गाँव में दस बालक जन्मे हैं और दस वृद्ध मरे हैं" इस प्रकार कहना।

४. जीव मिश्रक—जीवित और मृत जीवों के समूह को देखकर "जीव समूह है" ऐसा कहना।

५. अजीव मिश्रक—जीवित और मृत जीवों के समूह को देखकर "यह अजीव समूह है" ऐसा कहना।

६. जीवाजीव मिश्रक—जीवित और मृत जीवों के समूह को देखकर "इतने जीवित हैं और इतने मृत हैं" ऐसा कहना।

७. अनन्त मिश्रक—पत्ते सहित कन्द मूल को 'अनन्तकाय' कहना।

---

१ मिथ्या कथा कहना।

२ प्राणी की हिंसा के लिए कहे गये वचन।

८. प्रत्येक मिश्रक—मोगरी सहित मूली को प्रत्येक वनस्पति कहना।

९. अद्धामिश्रक—सूर्योदय न होने पर भी "सूर्योदय हो गया" ऐसा कहना।

१०. अद्धाद्धामिश्रक—एक प्रहर दिन हुआ है "फिर भी दुपहर हो गया" ऐसा कहना।

दृष्टिवाद के दस नाम हैं,

यथा—१. दृष्टिवाद, २. हेतुवाद, ३. भूतवाद, ४. तत्ववाद, ५. सम्यग्वाद, ६. धर्मवाद, ७. भाषाविचय, ८. पूर्वगत, ९. अनुयोगगत, १०. सर्व प्राण भूत जीव सत्त्व सुखवाद।

क—शस्त्र दश प्रकार के हैं,

यथा—१. अग्नि, २. विष

३. लवण, ४. स्नेह,

५. क्षार, ६. आम्ल,

७. दुष्प्रयुक्तमन, ८. दुष्प्रयुक्त वचन,

९. दुष्प्रयुक्तकाय, १०. अविरति भाव।[1]

ख—(वाद के) दोष दस प्रकार के हैं,

यथा—१. तज्जात दोष—प्रतिवादी के जाति कुल को दोष देना,

२. मति भंग—विस्मरण,

---

[1] अन्तिम चार भाव शस्त्र हैं।

३. प्रशास्तृदोष—सभापति या सभ्यों का निष्पक्ष न रहना।

४. परिहरण दोष—प्रतिवादी के दिये हुए दोष का निराकरण न कर सकना।

५. स्वलक्षण दोष—स्वकथित लक्षण का सदोष होना।

६. कारण दोष—साध्य के साथ साधन का व्यभिचार।

७. हेतुदोष—सदोष हेतु देना।

८. संक्रामण दोष—प्रस्तुत में अप्रस्तुत का कथन।

९. निग्रहदोष—प्रतिज्ञा हानि आदि निग्रह स्थान का कथन।

१०. वस्तुदोष—पक्ष में दोष का कथन,

ग—विशेष दोष दस प्रकार के हैं।

यथा—१. वस्तु—पक्ष में प्रत्यक्ष निराकृत आदि दोष का कथन,

२. तज्जातदोष—जाति कुल आदि को दोष देना,

३. दोष—मतिभंगादि पूर्वोक्त आठ दोषों की अधिकता,

४. एकार्थिक दोष—समानार्थक शब्द कहना,

५. कारणदोष—कारण को विशेष महत्त्व देना,

६. प्रत्युत्पन्नदोष—वर्तमान में उत्पन्न दोष का विशेष रूप से कथन,

७. नित्यदोष—वस्तु को एकान्त नित्य मानने से उत्पन्न होने वाले दोष,

८. अधिकदोष—वाद काल में आवश्यकता से अधिक कहना,

९. स्वकृतदोष,

१०. उपनीत दोष—अन्य का दिया हुआ दोष।

४४ शुद्ध वागनुयोग[1] दस प्रकार का है,

यथा—१. चकारानुयोग—वाक्य में आने वाले "च" का विचार।

२. मकारानुयोग—वाक्य में आने वाले "मा" का विचार।

३. अपिकारानुयोग—"अपि" शब्द का विचार।

४. सेकारानुयोग—आनन्तर्यादि सूचक "से"[2] शब्द का विचार।

५. सायंकारानुयोग—ठीक अर्थ में प्रयुक्त "सायं" का विचार।

६. एकत्वानुयोग—एक वचन के सम्बन्ध में विचार।

७. पृथक्त्वानुयोग—द्विवचन और बहुवचन का विचार।

८. संयूथानुयोग—समास सम्बन्धी विचार।

---

१ वाक्य द्वारा पदार्थ बोध विषयक विचार।

२ "से" अर्थात्-अथ का विचार

९. संक्रामितानुयोग—विभक्ति विपर्यास के सम्बन्ध मे विचार।

१०. भिन्नानुयोग सामान्य बात कहने के पश्चात् क्रम और काल की अपेक्षा से उसके भेद करने के सम्बन्ध में विचार करना।

७४५ क—दान दस प्रकार का होता है,

यथा—१. अनुकम्पादान—कृपा करके दीनों और अनाथों को देना,

२. संग्रहदान—आपत्तियों में सहायता देना,

३. भयदान—भय से राजपुरुषों को कुछ देना,

४. कारुण्यदान—शोक अर्थात पुत्रादि वियोग के कारण कुछ देना।

५. लज्जादान—इच्छा न होते हुऐ भी पांच प्रमुख व्यक्तियों के कहने से देना।

६. गोरवदान—अपने यश के लिये गर्व पूर्वक देना,

७. अधर्मदान—अधर्मी पुरुष को देना,

८. धर्मदान— सुपात्र को देना,

९. आशादान—सुफल की आशा से देना,

१०. प्रत्युपकारदान—किसी के उपकार के वदले कुछ देना।

ख—गति दश प्रकार की है,

यथा—१. नरक गति, २. नरक की विग्रहगति,

३. तिर्यंचगति, ३. तिर्यञ्च की विग्रहगति,

५. मनुष्यगति, ६. मनुष्य विग्रहगति,
७. देवगति, ८. देव विग्रहगति,
९. सिद्धगति, १०. सिद्ध विग्रहगति ।

६ —मुण्ड दस प्रकार के हैं,
यथा—१-५. श्रोत्रेन्द्रिय मुण्ड यावत् स्पर्शेन्द्रियमुण्ड,
६-९. क्रोध मुण्ड यावत् लोभ मुण्ड, १०. सिरमुण्ड ।

७ —संख्यान—गणित दस प्रकार के हैं,
यथा—१. परिकर्म गणित—अनेक प्रकार की गणित का संकलन करना ।
२. व्यवहारगणित—श्रेणी आदि का व्यवहार ।
३. रज्जूगणित—क्षेत्रगणित
४. राशिगणित—त्रिराशी आदि,
५. कलासवर्ण गणित—कला अंशों का समीकरण ।
६. गुणाकार गणित—संख्याओं का गुणाकार करना
७. वर्ग गणित—समान संख्या को समान संख्या से गुणा करना यथा—दो को दो से गुणा करना ।
८. घन गणित—समान संख्या को समान संख्या से दो बार गुणा करना, यथा—दो का घन आठ, दो को दो से गुणा किया तो हुये चार और चार को चार गुणा किया तो हुये सोलह ।
९. वर्ग-वर्ग गणित—वर्ग का वर्ग से गुणा करना, यथा—दो का वर्ग चार और चार का वर्ग सोलह । यह वर्ग-वर्ग हैं ।

१०. कल्प गणित—छेद गणित करके काष्ठ का करवत से छेदन करना।

७४८ —प्रत्याख्यान दश प्रकार के हैं,

यथा—१. अनागत प्रत्याख्यान—भविष्य में तप करने से आचार्यादि की सेवा में वाधा आने की सम्भावना होने पर पहले तप कर लेना।

२. अतिक्रान्त प्रत्याख्यान—आचार्यादि की सेवा में किसी प्रकार की वाधा न आवे—इस संकल्प से जो तप अतीत में नहीं किया जा सका उस तप को वर्तमान में करना।

३. कोटी सहित प्रत्याख्यान—एक तप के अन्त में दूसरा तप आरम्भ कर देना।

४. नियंत्रित प्रत्यांख्यान—पहले से यह निश्चित कर लेना कि कैसी भी परिस्थिति हो किन्तु मुझे अमुक दिन अमुक तप करना ही है।

५. सागार प्रत्याख्यान—जो तप आगार सहित किया जाय।

६. अनागार प्रत्याख्यान–जिस तप में "महत्तरागारेण" आदि आगार न रखे जाय।

७. परिमाण कृत प्रत्याख्यान—जिस तप में दत्ति, कवल, घर और भिक्षा का परिमाण करना।

८. निरवशेष प्रत्याख्यान—सर्व प्रकार के अशनादि का त्याग करना।

६. सांकेतिक प्रत्याख्यान---अंगुष्ठ. मुष्टि आदि के संकेत से प्रत्याख्यान करना।

१० अद्धा प्रत्याख्यान---नोकारसी, पोरसी आदि काल विभाग से प्रत्याख्यान करना।

समाचारी दस प्रकार की हैं,
यथा---१. इच्छाकार समाचारी---स्वेच्छापूर्वक जो क्रिया की जाय और उसके लिए गुरु से आज्ञा प्राप्त करली जाय।

२. मिच्छाकार समाचारी---मेरा दुष्कृत मिथ्या हो इस प्रकार की क्रिया करना।

३. तथाकार समाचारी---आपका कहना यथार्थ है इस प्रकार कहना।

४. आवश्यिका समाचारी---आवश्यक कार्य है ऐसा कहकर बाहर जाना।

५. नैषेधकी समाचारी---बाहर से आने के बाद में अब मैं गमनागमन बन्द करता हूँ ऐसा कहना।

६. आपृच्छना समाचारी—सभी क्रियायें गुरु को पूछ कर के करना।

७. प्रतिपृच्छा समाचारी---पहले जिस क्रिया के लिए गुरु की आज्ञा प्राप्त न हुई हो और उसी प्रकार की क्रिया करना आवश्यक हो तो पुनः गुरु आज्ञा प्राप्त करना।

८. छंदना समाचारी––लायी हुई भिक्षा में से किसी को कुछ आवश्यक हो तो "लो" ऐसा कहना।

९. निमन्त्रणा समाचारी––मैं आपके लिए आहारादि लाऊँ ? इस प्रकार गुरु से पूछना।

१०. उपसंपदा समाचारी––ज्ञानादि की प्राप्ति के लिए गच्छ छोड़कर अन्य साधु के आश्रय में रहना।

७५० श्रमण भगवान महावीर छद्मस्थ काल की अन्तिम रात्रि में ये दस महास्वप्न देखकर जागृत हुये,
यथा–––१. प्रथम स्वप्न में एक महा भयंकर जाज्वल्यमान ताड जितने लम्बे पिशाच को देखकर जागृत हुए।
२. द्वितीय स्वप्न में एक स्वेत पंखों वाले महा पुंस्कोकिल को देखकर जागृत हुये,

३. तृतीय स्वप्न में एक विचित्र रंग की पांखों वाले महा पुंस्कोकिल को देखकर जागृत हुये,

४. चौथे स्वप्न में––सर्व रत्नमय मोटी मालाओं की एक जोड़ी को देखकर जागृत हुये,

५. पांचवे स्वप्न में स्वेत गायों के एक समूह को देखकर जागृत हुये,
६. छठे स्वप्न में कमल फूलों से आच्छादित एक महान पद्म सरोवर को देखकर जागृत हुये,

७. सातवें स्वप्न में--एक सहस्र तरंगी महासागर को अपनी भुजाओं से तिरा हुआ जानकर जागृत हुये।

८. आठवें स्वप्न में एक महान् तेजस्वी सूर्य को देखकर जागृत हुये।

९. नव में स्वप्न में एक महान् मानुषोत्तर पर्वत को वैंडूर्यमणिवर्ण वाली अपनी आंतों से परिवेष्टित देखकर जागृत हुए।

१०. दसवें स्वप्न में महान् मेरु पर्वत की चूलिका पर स्वयं को सिंहासनस्थ देखकर जागृत हुए।

दस स्वप्नों का फल

१. प्रथम स्वप्न में ताल पिशाच को पराजित देखने का अर्थ यह है कि—भगवान महावीर ने मोहनीय कर्म को समूल नष्ट कर दिया।

२. द्वितीय स्वप्न में श्वेत पांखों वाले पुंस्कोकिल को देखने का अर्थ यह है कि भगवान महावीर शुक्ल ध्यान में रमण कर रहे थे।

३. तृतीय स्वप्न में विचित्र रँग की पङ्खों वाले पुंस्कोकिल को देखने का अर्थ यह है कि भगवान महावीर ने स्व समय और पर समय के प्रतिपादन से चित्रविचित्र द्वादशाङ्गरूप गणिपिटक का सामान्य कथन किया, विशेष कथन किया, प्ररूपण किया,

युक्ति पूर्वक क्रियाओं के स्वरूप का दर्शन निदर्शन किया।

यथा—आचाराङ्ग यावत् दृष्टिवाद।

४. चतुर्थ स्वप्न में सर्व रत्नमय माला युगल को देखने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर ने दो प्रकार का धर्म कहा—

यथा—आगार धर्म और अणगार धर्म

५. पाँचवे स्वप्न में श्वेत गो–वर्ग को देखने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर के चार प्रकार का संघ था।

यथा— १. श्रमण, २. श्रमणियां, ३. श्रावक, ४. श्राविकायें।

६. छठे स्वप्न में पद्म सरोवर को देखने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर ने चार प्रकार के देवों का प्रतिपादन किया। यथा—भवनपति

२. वाणव्यन्तर, ३. ज्योतिषी. ४. वैमानिक।

७. सातवें स्वप्न में सहस्रतरगी सागर को भुजाओं से तिरने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर ने अनादि अनन्त दीर्घ मार्ग वाली गति रूप विकट भवाटवी को पार किया।

८. आठवें स्वप्न में तेजस्वी सूर्य को देखने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर को अनन्त ज्ञान अनन्त दर्शन उत्पन्न हुआ।

९. नव में स्वप्न में आँतों से परिवेष्टित मानुषोत्तर पर्वत को देखने का अर्थ यह है कि इस लोक के देव मनुष्य और असुरों में श्रमण भगवान महावीर की कीर्ति एवं प्रशंसा इस प्रकार फैल रही है कि श्रमण भगवान महावीर सर्वज्ञ सर्वदर्शी सर्व-संशयोच्छेदक एवं जगद्वत्सल हैं।

दसवे स्वप्न में चूलिका पर स्वयं को सिंहासनस्थ देखने का अर्थ यह है कि श्रमण भगवान महावीर देव मनुष्यों और असुरों की परिषद में केवली प्रज्ञप्त धर्म का समान्य रूप से कथन करते हैं यावत् समस्त नयों को युक्ति पूर्वक समझाते हैं।

७५१ सराग सम्यग्दर्शन दस प्रकार का है,

१. निसर्गरुचि, जो दूसरे का उपदेश सुने विना स्वमति से सर्वज्ञ कथित सिद्धान्तों पर श्रद्धा करे,

२. उपदेश रुचि---जो दूसरों के उपदेश से सर्वज्ञ प्रतिपादित सिद्धान्तों पर श्रद्धा करे,

३. आज्ञारुचि—जो केवल आचार्य या सद्गुरु के कहने से सर्वज्ञ कथित सूत्रों पर श्रद्धा करे,

४. सूत्र रुचि---जो सूत्र शास्त्र वांच कर श्रद्धा करे,

५. वीजरुचि—जो एक पद के ज्ञान से अनेक पदों को समझ लें।

६. अभिगम रुचि—जो शास्त्र को अर्थ सहित समझें,

७. विस्तार रुचि—जो द्रव्य और उनके पर्यायों को

प्रमाण तथा नय के द्वारा विस्तार पूर्वक समझे,
८. क्रिया रुचि—जो आचरण में रुचि रखे,
९. संक्षेप रुचि--जो स्वमत और परमत में कुशल न हो किन्तु जिसकी रुचि संक्षिप्त त्रिपदी में हों,
१०. धर्मरुचि--जो वस्तु स्वभाव की अथवा श्रुत चारित्र रूप जिनोक्त धर्म की श्रद्धा करे।

दण्डक सूत्र

७५२ क--संज्ञा दस प्रकार की होती है,
यथा—१-४. आहार संज्ञा यावत् परिग्रह संज्ञा,
५-८. क्रोध संज्ञा यावत् लोभ संज्ञा,
९. लोक संज्ञा, १०. ओघ संज्ञा,

ख--नैरयिकों में दस प्रकार की संज्ञायें होती हैं, इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त दस संज्ञायें हैं।

७५३ नैरयिक दस प्रकार की वेदना का अनुभव करते हैं,
यथा -शीत वेदना, २. उष्णवेदना, ३. क्षुधा वेदना, ४. पिपासा वेदना, ५. कंडुवेदना, ६. पराधीनता, ७. भय, ८. शोक, ९. जरा, १०. व्याधि।

७५४ दस पदार्थों छद्मस्थ पूर्ण रूप से न जानता है और न देखता है,
यथा--१-८. धर्मास्तिकाय यावत् वायु ९. यह पुरुष जिन होगा या नहीं, १०. यह पुरुष सब दुःखों का अन्त करेगा या नहीं ?

ख—इन्हीं दस पदार्थों को सर्वज्ञ सर्वदर्शी पूर्ण रूप से जानते हैं और देखते हैं।

५.५ क—दशा दस हैं,

यथा—१. कर्मविपाक दशा, २. उपासक दशा, ३. अंतकृद् दशा, ४. अनुत्तरोपपातिकदशा, ५. आचार दशा, ६. प्रश्नव्याकरण दशा, ७. बंध दशा, ८. दोगृद्धि दशा, ९. दीर्घ दशा, १० संक्षेपित दिशा।

ख—कर्म विपाक दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. मृगापुत्र, २. गोत्रास, ३. अण्ड, ४. शकट, ५. ब्राह्मण. ६. नंदिसेण, ७. सौरिक, ८. उदुंबर, ९. सहस्रोदाह—आमरक, १० लिच्छवी कुमार।

ग—उपासक दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. आनन्द, २. कामदेव, ३. चुलिनोपिता, ४. सुरादेव, ५. चुल्लशतक, ६. कुण्डकोलिक, ७. शकडालपुत्र, ८. महाशतक, ९. नंदिनीपिता, १०. सालेयिका पिता।

घ—अन्तकृद्दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. नमि, २. मातंग, ३. सोमिल, ४. रामगुप्त, ५. सुदर्शन, ६. जमाली, ७. भगाली, ८. किंकर्म, ९. पल्यंक, १०. अंबडपुत्र[1]।

---

१ क—मूल पाठ में "फाल" नाम अधिक हैं।

ख—वर्तमान में उपलब्ध अन्तकृद्दशा के दस अध्ययन इन अध्ययनों से भिन्न हैं।

ङ—अनुत्तरोपपातिक दशा के दस अध्ययन हैं,
यथा—१. ऋषिदास, २. धन्ना, ३. सुनक्षत्र. ४. कार्तिक, ५. संस्थान, ६. शालिभद्र, ७. आनन्द, ८. तेतली, ९. दशार्णभद्र, १०. अतिमुक्त[1]।

च—आचार दशा (दशा श्रुतस्कंध) के दस अध्ययन हैं,
यथा—१. वीस असमाधि स्थान, २. इकवीस शवल दोष, ३. तेतीस आशातना, ४. आठ गणिसम्पदा, ५. दस चित्त समाधि स्थान, ६. इग्यारह श्रावक प्रतिमा, ७. बारह भिक्षु प्रतिमा, ८. पर्युषण कल्प, ९. तीस मोहनीय स्थान, १०. आजातिस्थान।[2]

छ—प्रश्न व्याकरण दशा के दस अध्ययन हैं,
यथा—१. उपमा. २. संख्या, ३.ऋषि भाषित, ४. आचार्य भाषित, ५. महावीर भाषित, ६. क्षौमिक प्रश्न, ७. कोमल प्रश्न, ८. आदर्श प्रश्न, ९. अंगुष्ठ प्रश्न, १०. बाहु प्रश्न।[3]

ज—बन्ध दशा के दस अध्ययन हैं,
यथा—१. बन्ध. २. मोक्ष, ३. देवर्धि, ४. दशार-

---

१ वर्तमान में उपलब्ध अनुत्तरोपपातिक दशा के दस अध्ययनों में कुछ अध्ययन तो ये ही हैं और कुछ अध्ययन भिन्न हैं।

२ सम्मूर्छन, गर्भ और उपपात से जन्म स्थान।

३ वर्तमान में उपलब्ध प्रश्न व्याकरण में ये दस अध्ययन नहीं हैं किन्तु पाँच आश्रव द्वार और पांच संवर द्वार हैं।

मंडलिक, ५. आचार्य विप्रतिपत्ति, ६. उपाध्याय विप्रति पत्ति, ७. भावना, ८. विमुक्ति, ९. शास्वत, १०. कर्म[1]।

झ—द्विगृद्धि दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. वात, २. विवात, ३. उपपात, ४. सुक्षेत्र कृष्ण[2] ५. वियालीस स्वप्न, ६. तीस महास्वप्न, ७. बहत्तर स्वप्न, ८. हार, ९. राम, १०. गुप्त[3]।

ञ—दीर्घ दशा के दस अध्ययन हैं,

यथा—१. चन्द्र, २. सूर्य, ३. शुक्र, ४. श्री देवी, ५. प्रभावती, ६. द्वीप समुद्रोपपत्ति, ७. वहुपुत्रिका, ८. मंदर ९. स्थविर संभूत विजय, १०. स्थविर पद्म उश्वास निश्वास[4]।

ट—संक्षेपिक दशा के दस अध्ययन हैं,

१. क्षुल्लिका विमान प्रविभक्ति, २. महती विमान

---

१ यह आगम उपलब्ध नहीं है।

२ यह आगम उपलब्ध नहीं है।

३ क—प्राचीन प्रतियों में सुक्षेत्र और कृष्ण भिन्न-भिन्न नाम हैं किन्तु आगमोदय समिति की प्रति में सुक्षेत्र कृष्ण एक नाम हैं।

ख—प्राचीन प्रतियों में "रामगुप्त" एक नाम है किन्तु आगमोदय समिति की प्रति में भिन्न-भिन्न नाम हैं।

४ यह अंग उपलब्ध नहीं हैं।

प्रविभक्ति, ३. अंग चूलिका, ४. वर्ग चूलिका, ५. विवाह चूलिका, ६. अरुणोपपात, ७. वरुणोपपात, ८. गरुलोपपात, ९. वेलंधरोपपात, १०. वैश्रमणोपपात[1] ।

७५६ क—दस सागरोपम क्रोड़ाक्रोड़ी प्रमाण उत्सर्पिणी काल है।
ख—दस सागरोपम क्रोड़ा-क्रोड़ी प्रमाण अवसर्पिणी काल है।

दण्डक सूत्र

७५७ क—नैरयिक दस प्रकार के हैं,
यथा—१. अनन्तरोपपन्नक,
२. परंपरोपन्नक,
३. अनन्तरावगाढ,
४. परंपरावगाढ़,
५. अनन्तराहारक,
६. परंपराहारक.
७. अनन्तर पर्याप्त,
८. परम्परा पर्याप्त,
९. चरिम, १०. अचरिम ।

इसी प्रकार वैमानिक पर्यन्त सभी दस प्रकार के हैं।
ख—चौथी पंक प्रभा पृथ्वी में दस लाख नरकावास हैं।

---

१ यह अंग उपलब्ध नहीं हैं।

ग—रत्नप्रभा पृथ्वी में नैरयिकों की जघन्य स्थिति, दस हजार वर्ष की है।

घ—चौथी पंक प्रभा पृथ्वी में नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है।

ङ—पाँचवी धूम प्रभा पृथ्वी में नैरयिकों की जघन्य स्थिति दस सागरोपम की है।

च—असुरकुमारों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है। इसी प्रकार स्तनित कुमार पर्यन्त दस हजार वर्ष की स्थिति हैं।

छ—बादर वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट स्थिति दस हजार वर्ष की है।

ज—वाणव्यन्तर देवों की जघन्यस्थिति दस हजार वर्ष की है।

झ—ब्रह्मलोककल्प में देवों की उत्कृष्ट स्थिति दस सागरोपम की है।

ञ—लांतककल्प में देवों की जघन्य स्थिति दशसागरोपम की है।

७५८ —दस कारणों से जीव अगामी भव में भद्रकारक कर्म करता है।

यथा—१. अनिदानता—धर्माचरण के फल की अभिलाषा न करना।

२. दृष्टिसंपन्नता—सम्यग्दृष्टि होना।

३. योगवाहिता—तप का अनुष्ठान करना।

४. क्षमा—क्षमा धारण करना।

५. जितेन्द्रियता—इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना।

६. अमायिता—कपट रहित होना।

७. अपार्श्वस्थता—शिथिलाचारी न होना।

८. सुश्रामण्यता—सुसाधुता।

९. प्रवचनवात्सल्य—द्वादशाङ्ग अथवा संघ का हित करना।

१०. प्रवचनोद्भावना—प्रवचन की प्रभावना करना।

७५९ —आशंसा प्रयोग[1] दश प्रकार के हैं,

यथा—१. इहलोक आशंसा प्रयोग—मैं अपने तप के प्रभाव से चक्रवर्ती आदि होऊं।

२. परलोक आशंसा प्रयोग—मैं अपने तप के प्रभाव से इन्द्र अथवा सामान्य देव बनूं,

३. उभयलोक आशंसा प्रयोग—मैं अपने तप के प्रभाव से इस भव में चक्रवर्ती बनूं और परभव में इन्द्र बनूं।

४. जीवित आशंसा प्रयोग—मैं चिरकाल तक जीवूं,

५. मरण आशंसा प्रयोग—मेरी मृत्यु शीघ्र हो,

६. काम आशंसा प्रयोग—मनोज्ञ शब्द आदि मुझे

---

१ आशंसा प्रयोग-आशा करना अर्थात् नियाणा करना।

प्राप्त हो,

७. भोग आशंसा प्रयोग—मनोज्ञ गंध आदि मुझे प्राप्त हो,

८. लाभ आशंसा प्रयोग—कीर्ति आदि प्राप्त हो,

९. पूजा आशंसा प्रयोग—पुष्पादि से मेरी पूजा हो,

१०. सत्कार आशंसा प्रयोग—श्रेष्ठ वस्त्रादि से मेरा सत्कार हो।

० —धर्म दश प्रकार के हैं,

यथा—१. ग्राम धर्म, २. नगर धर्म, ३. राष्ट्र धर्म, ४. पाषंड धर्म, ५. कुल धर्म, ६. गण धर्म, ७. संघ धर्म, ८. श्रुत धर्म, ९. चारित्र धर्म, १०. अस्तिकाय धर्म।

१ —स्थविर दश प्रकार के हैं,

यथा—१. ग्राम स्थविर, २. नगर स्थविर, ३. राष्ट्र स्थविर, ४. प्रशास्तृ स्थविर, ५. कुल स्थविर, ६. गण स्थविर, ७. संघ स्थविर, ८. जाति स्थविर, ९. श्रुत स्थविर, १०. पर्याय स्थविर।

२ —पुत्र दश प्रकार के हैं,

यथा—१. आत्मज—पिता से उत्पन्न,

२. क्षेत्रज—माता से उत्पन्न किन्तु पिता के वीर्य से उत्पन्न न होकर अन्य पुरुष के वीर्य से उत्पन्न,

३. दत्तक—गोद लिया हुआ पुत्र,

४. विनयित शिष्य—पढ़ाया हुआ,

५. ओरस—जिस पर पुत्र जैसा स्नेह हो,

६. मौखर—किसी को प्रसन्न रखने के लिए अपने आपको पुत्र कहने वाला,

७. शौंडीर—जो शौर्य से किसी शूर पुरुष के पुत्र रूप में स्वीकार किया जाय,

८. संवर्धित—जो पाल पोष कर बड़ा किया जाय,

९. औपयाचितक—देवता की आराधना से उत्पन्न पुत्र,

१०. धर्मान्तेवासी—धर्माराधना के लिए समीप रहने वाला।

७६३ —केवली के दश उत्कृष्ट हैं,

यथा—१. उत्कृष्ट ज्ञान, २. उत्कृष्ट दर्शन, ३. उत्कृष्ट चारित्र, ४. उत्कृष्ट तप, ५. उत्कृष्ट वीर्य, ६. उत्कृष्ट क्षमा, ७. उत्कृष्ट निर्लोभता, ८. उत्कृष्ट सरलता, ९. उत्कृष्ट कोमलता, १०. उत्कृष्ट लघुता।

७६४ —समय क्षेत्र में दश कुरुक्षेत्र हैं,

यथा—(क) पांच देव कुरु, पांच उत्तर कुरु,

(ख) इन दश कुरु क्षेत्रों में दश महावृक्ष हैं।

यथा—१. जम्बू सुदर्शन, २. धातकी वृक्ष, ३. महाधातकी वृक्ष, ४. पद्म वृक्ष, ५. महा पद्म वृक्ष, ६-१० कूटशाल्मली वृक्ष।

ग—इन दश कुरु क्षेत्रों में दश महर्धिक देव रहते हैं,
यथा—१. जम्बूद्वीप का अधिपतिदेव-अनाहृत, २. सुदर्शन, ३. प्रिय दर्शन, ४. पौंडरिक, ५. महा पौंडरिक, ६-१० पांच गरुड़ (वेणुदेव) देव हैं।

६५ क—दश लक्षणों से पूर्ण दुषम काल जाना जाता है,
यथा—१. अकाल (चौमासे के अतिरिक्त काल) में वर्षा हो,
२. काल (चातुर्मास) में वर्षा न हो,
३. असाधु की पूजा हो, ४. साधु की पूजा न हो,
५. माता पिता आदि का विनय न करे,
६-१०. अमनोज्ञ शब्द यावत् स्पर्श।

ख—दश कारणों से पूर्ण सुषमकाल जाना जाता है,
यथा—१. अकाल में वर्षा न हो, शेष पूर्व कथित से विपरीत यावत् मनोज्ञ स्पर्श।

६६ —सुषम-सुषम काल में दश कल्पवृक्ष युगलियाओं के उपभोग के लिए शीघ्र उत्पन्न होते हैं।
यथा—१. मत्तांगक—स्वादु पेय की पूर्ति करने वाले,
२. भृतांग—अनेक प्रकार के भाजनों की पूर्ति करने वाले,
३. तूर्यांग—वाद्यों की पूर्ति करने वाले,
४. दीपांग—सूर्य के अभाव में दीपक के समान प्रकाश देने वाले,

५. ज्योतिरंग--सूर्य और चन्द्र के समान प्रकाश देने वाले,

६. चित्रांग--विचित्र पुष्प (माला) देने वाले,

७. चित्र रसांग--विविध प्रकार के भोजन देने वाले,

८. मण्यंग—मणि, रत्न आदि आभूषण देने वाले,

९. गृहाकार—घर के समान स्थान देने वाले,

१०. अनग्न—वस्त्रादि की पूर्ति करने वाले।

७६७ क—जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी में दश कुलकर थे,

यथा—१. शतंजल, २. शतायु, ३. अनन्तसेन, ४. अमितसेन, ५. तर्क सेन, ६. भीमसेन, ७. महा भीमसेन, ८. दृढ़रथ, ९. दशरथ, १०. शतरथ।

ख—जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में दश कुलकर होंगे,

यथा—१. सीमंकर, २. सीमंधर, ३. खेमंकर, ४. खेमंधर, ५. विमलवाहन, ६. संमति, ७. प्रतिश्रुत ८. दृढ़धनु, ९. दश धनु, १०. शत धनु।

७६८ क—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पूर्व में शीता महानदी के दोनों किनारों पर दश वक्षस्कार पर्वत हैं,

यथा—१. माल्यवन्त, २. चित्रकूट, ३. विचित्रकूट, ४. ब्रह्मकूट, ५-१० यावत् सोमनस।

ख—जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत से पश्चिम में शीतोदा महा-
नदी के दोनों किनारों पर दश वक्षस्कार पर्वत हैं,
यथा—विद्युत्प्रभ यावत् गंधमादन ।

ग-च—इसी प्रकार धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध में भी दश
वक्षस्कार पर्वत हैं यावत् पुष्करवर द्वीपार्ध के
पश्चिमार्ध में भी दश वक्षस्कार पर्वत हैं ।

७६९ क—दश कल्प इन्द्र वाले हैं,
यथा—१-८ सौधर्म यावत् सहस्रार, ९. प्राणत,
१०. अच्युत ।

ख—इन दश कल्पों में दश इन्द्र हैं,
यथा—१. शक्रेन्द्र, २. ईशानेन्द्र, ३-१० यावत्
अच्युतेन्द्र ।

ग—इन दश इन्द्रों के दश पारियानिक विमान हैं ।
यथा—१. पालक, २. पुष्पक यावत्, ३-९ विमलवर,
१०. सर्वतोभद्र ।

७७० —दशमिका भिक्षु प्रतिमा की एक सौ दिन से और
५५० भिक्षा (दत्ति) से सूत्रानुसार यावत् आराधना
होती है ।

७७१ क—संसारी जीव दश प्रकार के हैं,
यथा—१. प्रथमसमयोत्पन्न एकेन्द्रिय,
२. अप्रथमसमयोत्पन्न एकेन्द्रिय,
३-१० यावत् अप्रथम समयोत्पन्न पंचेन्द्रिय

ख—सर्व जीव दश प्रकार के हैं,
यथा—१-५ पृथ्वीकाय यावत् वनस्पतिकाय, ६-९ बेइन्द्रिय यावत् पंचेन्द्रिय, १०. अनिन्द्रिय।

ग—सर्व जीव दश प्रकार के हैं,
यथा—१. प्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,
२. अप्रथम समयोत्पन्न नैरयिक,
३-८ अप्रथम समयोत्पन्न देव,
९. प्रथम समयोत्पन्न सिद्ध,
१०. अप्रथमसमयोत्पन्न सिद्ध।

७७२ —सौ वर्ष की आयु वाले पुरुष की दशा दशाये हैं,
यथा—१. बाला दशा, २. क्रीडा दशा, ३. मंद दशा, ४. बला दशा, ५. प्रज्ञा दशा, ६. हायनी दशा, ७. प्रपंचा दशा, ८. प्रभारा दशा, ९. मुंमुखी दशा, १०. शायनी दशा[1]।

७७३ —तृण वनस्पतिकाय दस प्रकार का है,
यथा—१. मूल, २. कंद, यावत्—३-८ पुष्प ९ फल, १०. बीज।

७७४ क—विद्याधरों की श्रेणियाँ चारों ओर से दस-दस योजन चौड़ी हैं।

ख—अभियोगिक देवों की श्रेणियाँ चारों ओर से दस-दस योजन चौड़ी हैं।

---

१ प्रत्येक दशा दश वर्ष की होती है।

७७५ —ग्रैवेयक देवों के विमान दस योजन के ऊँचे हैं।

७७६ —दस कारणों से तेजोलेश्या से भस्म होता है।

यथा—१. तेजोलेश्या लब्धि युक्त श्रमण—ब्राह्मण की यदि कोई आशातना करता है तो वह आशातना करने वाले पर कुपित होकर तेजोलेश्या छोड़ता हैं इससे वह पीड़ित होकर भस्म हो जाता है।

२. इसी प्रकार श्रमण ब्राह्मण की आशातना होती देखकर कोई देवता कुपित होता है और तेजोलेश्या छोड़कर आशातना करने वाले को भस्म कर देता हैं।

३. इसी प्रकार श्रमण—ब्राह्मण की आशातना करने वाले को देवता और श्रमण-ब्राह्मण एक साथ तेजो-लेश्या छोड़कर भस्म कर देता है।

४. इसी प्रकार श्रमण—ब्राह्मण जब तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशाताना करने वाले के शरीर पर छाले पड़ जाते हैं, छालों के फूट जाने पर वह भस्म हो जाता है।

५. इसी प्रकार देवता तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशातना करने वाला उसी प्रकार (पूर्ववत्) भस्म हो जाता है,

६. इसी प्रकार देवता और श्रमण—ब्राह्मण एक साथ तेजोलेश्या छोड़ते हैं तो आशातना करने वाला उसी प्रकार (पूर्ववत्) भस्म हो जाता है।

७. इसी प्रकार श्रमण—ब्राह्मण जब तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशातना करने वाले के शरीर पर छाले पड़कर फूट जाते हैं, पश्चात् छोटे-छोटे छाले पैदा होकर भी फूट जाते हैं तब वह भस्म हो जाता है।

८. इसी प्रकार देवता जब तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशातना करने वाला पूर्ववत् भस्म हो जाता है।

९. इसी प्रकार देवता और श्रमण—ब्रह्मण जब एक साथ तेजोलेश्या छोड़ता है तो आशातना करने वाला पूर्ववत् भस्म हो जाता है।

१०. कोई तेजोलेश्या वाला किसी श्रमण की आशातना करने के लिये उस पर तेजोलेश्या छोड़ता है वह उसको कुछ भी अनर्थ नहीं कर सकती हैं वह तेजोलेश्या इधर से उधर ऊँची नीची होती हैं और उस श्रमण के चारों ओर घूमकर आकाश में उछलती है और वह तेजोलेश्या छोड़ने वाले की ओर मुडकर उसे ही भस्म कर देती है जिस प्रकार गोशालक की तेजोलेश्या से गोशालक ही मरा किन्तु भगवान महावीर का कुछ भी नही बिगड़ा।

७७७ —आश्चर्य दस प्रकार के हैं,

यथा—१. उपसर्ग—भगवान महावीर की केवली अवस्था में भी गोशालक ने उपसर्ग किया।

२. गर्भहरण—हरिण गमेषी देव ने भगवान महावीर

के गर्भ को देवानन्दा की कुक्षी से लेकर त्रिशला माता की कुक्षीं में स्थापित किया।

३. स्त्री तीर्थङ्कर—भगवान मल्लीनाथ स्त्रीलिङ्ग (वेद) में तीर्थङ्कर हुए।

४. अभावित परिषदा—केवल ज्ञान प्राप्त हो जाने के पश्चात् भगवान महावीर की देशना निष्फल गई किसी ने धर्म स्वीकार नहीं किया।

५. कृष्ण का अपरकंका गमन, कृष्ण वासुदेव द्रौपदी को लाने के लिए अपरकंका नगरी गये।

६. चन्द्र-सूर्य का आगमन—कोशाम्बि नगरी में भगवान महावीर की वन्दना के लिए शास्वत विमान सहित चन्द्र-सूर्य आये।

७. हरिवंश कुलोत्पत्ति—हरिवर्ष क्षेत्र के युगलिये का भरत क्षेत्र में आगमन हुआ और उससे हरिवंश कुल की उत्पत्ति हुई। युगलिये का निरुपक्रम आयु घटा और उसकी नरक में उत्पत्ति हुई।

८. चमरोत्पात—चमरेन्द्र का सौधर्म देवलोक में जाना।

९. एक सौ आठ सिद्ध—उत्कृष्ट अवगाहना वाले एक समय में एक सौ आठ सिद्ध हुए[1]।

---

१ मध्यम अवगाहना वाले तो एक सौ आठ सिद्ध होते है, किन्तु उत्कृष्ट अवगाहना वाले केवल दो ही सिद्ध होते हैं।

१०. असंयत पूजा—आरम्भ और परिग्रह के धारण करने वाले ब्राह्मणों की साधुओं के समान पूजा हुई ।[1]

७७८ क—इस रत्नप्रभा पृथ्वी का रत्नकाण्ड दस सौ (एक हजार) योजन का चौड़ा है ।

ख—इस रत्नप्रभा पृथ्वी का वज्र काण्ड दस सौ (एक हजार) योजन का चौड़ा है ।

ग—इसी प्रकार—३. वैडूर्य काण्ड, ४. लोहिताक्ष काण्ड, ५. मसारगल्ल काण्ड, ६. हंसगर्भ काण्ड, ७. पुलक काण्ड, ८. सौगंधिक काण्ड, ९. ज्योतिरस काण्ड, १०. अंजन काण्ड, ११. अंजन पुलक काण्ड, १२. रजत काण्ड, १३. जलातरूप काण्ड, १४. अंक काण्ड, १५. स्फटिक काण्ड, १६. रिष्ट काण्ड ये सब रत्न काण्ड के समान दस सौ (एक हजार) योजन के चौड़े हैं ।

७७९ क—सभी द्वीप समुद्र दस सौ (एक हजार) योजन के गहरे हैं ।

ख—सभी महाद्रह दस योजन गहरे हैं ।

ग—सभी सलिल कुण्ड (प्रताप कुण्ड-प्रभव-कुण्ड) दस योजन गहरे हैं ।

---

१ ये दस आश्चर्य अनन्त काल के पश्चात् इस हुंडा अवसर्पिणी में हुये ।

घ—शीता और शीतोदा नदी के मूल मुख दस-दस योजन गहरे हैं।

१८० क—कृत्तिका नक्षत्र चन्द्र के सर्व बाह्य मण्डल से दसवें मण्डल में भ्रमण करता है[1]।

ख—अनुराधा नक्षत्र चन्द्र के सर्व आभ्यन्तर मण्डल से दसवें मण्डल में भ्रमण करता है[2]।

१८१ ज्ञान की वृद्धि करने वाले दस नक्षत्र हैं,

यथा—१. मृगशिरा, २. आर्द्रा, ३. पुष्य, ४-६. तीन पूर्वा[3], ७. मूल, ८. अश्लेषा, ९. हस्त, १०. चित्रा।

१८२ क—चतुष्पद स्थलचर तिर्यञ्च पंचेन्द्रियों की दस लाख कुल कोटी हैं।

ख—उरपरिसर्प स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रियों की दस लाख कुल कोटी हैं।

१८३ क-च—दस स्थानों में बद्ध पुद्गल जीवों ने पाप कर्म रूप में ग्रहण किये, ग्रहण करते हैं और ग्रहण करेंगे।

यथा—प्रथम समयोत्पन्न एकेन्द्रिय द्वारा निर्वर्तित

---

१ कृत्तिका नक्षत्र चन्द्र के सर्व आभ्यन्तर मण्डल से छठे मण्डल में भ्रमण करता है।

२ अनुराधा नक्षत्र चन्द्र के सर्व बाह्य मण्डल से छठे मण्डल में भ्रमण करता है।

३ पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाफाल्गुनी।

यावत्—अप्रथमसमयोत्पन्न पंचेन्द्रिय द्वारा निर्वतित पुद्गल जीवों ने पाप कर्मरूप में ग्रहण किये, ग्रहण करते हैं और ग्रहण करेंगे।

इसी प्रकार चय, उपचय, बन्ध, उदीरणा, वेदना और निर्जरा के तीन-तीन विकल्प कहने चाहिए।

छ—दस प्रादेशिक स्कन्ध अनन्त हैं।

ज—दस प्रदेशावगाढ़ पुदगल अनन्त हैं।

झ—दस समय की स्थिति वाले पुद्गल अनन्त हैं।

ज-ट—दस गुण वाले पुद्गल अनन्त हैं।

इसी प्रकार वर्ण, गंध, रस और स्पर्श से यावत्—दस गुण रूक्ष पुद्गल अनन्त हैं।

दशवाँ अध्ययन समाप्त

स्थानाङ्ग समाप्त

परिशिष्ट

अनुयोग वर्गीकरण तालिका

(१)

एक स्थान सूत्र १-५६ (सूत्र ५६)

उत्थानिका सूत्र १

(१) द्रव्यानुयोग—
२।७, ८, ९, १०-३८।४१-४७।५०-५१।५४।५६।—योग-४४

(२) चरणानुयोग—
३, ४।२१।३९, ४०।४८, ४९।—योग ७

(३) गणितानुयोग—
५, ६।५२।५५।—योग ४

(४) धर्मकथानुयोग—
५३।—योग १

(२)

स्थानक-प्रथम उद्देशक सूत्र ५७-७६ (सूत्र २०)

) द्रव्यानुयोग—
५७, ५८, ५९।६७, ६८।७०, ७१।७३, ७४, ७५।—योग १०

) चरणानुयोग—
६०-६६।६९।७२।७६।—योग १०

(३)

द्विस्थानक-द्वितीय उद्देशक सूत्र ७७-८० (सूत्र ४)

(१) द्रव्यानुयोग—

७७-८०।—योग ४

(४)

द्विस्थानक-तृतीय उद्देशक सूत्र ८१-९४ (सूत्र १४)

(१) द्रव्यानुयोग—

८१, ८२, ८३।८५।९४—योग ५

(२) चरणानुयोग—

८४।—योग १

(३) गणितानुयोग—

८६-९३।—योग ८

(५)

द्विस्थानक-चतुर्थ उद्देशक सूत्र ९५-११८ (सूत्र २४)

(१) द्रव्यानुयोग—

९५,९६,९७।९९,१००, १०१।१०४,१०५,१०६।१०९।११३-११८।—योग १६

(२) चरणानुयोग—

९८।१०२।१०७ ।—योग ३

(३) गणितानुयोग—

१०३।११०,१११ ।–योग ३

(४) धर्मकथानुयोग—

१०८।११२ ।–योग २

(६)

त्रिस्थान-प्रथम उद्देशक सूत्र ११६-१५२ (सूत्र ३४)[1]

(१) द्रव्यानुयोग—

११६[2]-१२५।१२८[3]-१३३।१३७-१४१।१४३[4]-१४७।—

---

१ यहां सूत्र संख्या ३४ है और चारों अनुयोग के सूत्रों का योग ३६ होता है। इस अन्तर का कारण यह है कि एक सूत्र के अन्तर्गत सूत्रों में से कुछ सूत्र एक अनुयोग के होते हैं और कुछ सूत्र दूसरे अनुयोग के होते हैं, अतः एक ही सूत्रांक अनुयोग भेद से कई बार गिना जाता है। आगे भी ऐसा ही समझें।

२ सूत्र ११६ के अन्तर्गत ३ सूत्र हैं। इनमें से दो सूत्र प्रथम और अन्तिम द्रव्यानुयोग के हैं और एक मध्यसूत्र चरणानुयोग का है।

३ सूत्र १२८ के अन्तर्गत ६ सूत्र हैं। इनमें से चार सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं। एक सूत्र चरणानुयोग का है और ४ सूत्र धर्मकथानुयोग के हैं।

४ सूत्र १४३ के अन्तर्गत ३२ सूत्र हैं। इनमें से अन्तिम २ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं और ३० सूत्र गणितानुयोग के हैं।

१५०[१], १५१।—योग २५

(२) चरणानुयोग—

११९।१२६,१२७,१२८।१३५,१३६।१५०।१५२।—योग ८

(३) गणितानुयोग—

१४२,१४३।—योग २

(४) धर्मकथानुयोग—

१२८।१३४।—योग २

(७)

त्रिस्थान-द्वितीय उद्देशक सूत्र १५३-१६७ (सूत्र १५)

(१) द्रव्यानुयोग—

१५४।१५६।१६०।१६२-१६७।—योग ९

(२) चरणानुयोग—

१५५।१५७,१५८,१५९।१६१।—योग ५

(३) गणितानुयोग—

१५३।—योग १

---

१ सूत्र १५० के अन्तर्गत दो सूत्र हैं। इनमें से एक सूत्र द्रव्यानुयोग का है और एक सूत्र चरणानुयोग का है।

(८)

त्रिस्थान-तृतीय उद्देशक सूत्र १६८-१६० (सूत्र २३)

(१) द्रव्यानुयोग—
१७५-१७६।१८१।१८४[1]-१८७।—योग १०

(२) चरणानुयोग—
१६८-१७४।१८२।१८४।१८८।१६०।—योग ११

(३) गणितानुयोग
१८०।१८३।—योग २

(४) धर्मकथानुयोग—
१८६।—योग १

(६)

त्रिस्थान-चतुर्थ उद्देशक सूत्र १६१-२३४ (सूत्र ४४)

(१) द्रव्यानुयोग—
१६२,१६३।१६६,२००।२०७।२०६।२११।२१४,२१५,२१६।
२१६,२२०,२२१।२२४,२२५,२२६।२३२,२३३,२३४।
—योग १६

---

१ सूत्र १८४ के अन्तर्गत ३ सूत्र हैं। उनमें से प्रारम्भ के दो सूत्र चरणानुयोग के हैं और अन्तिम एक सूत्र द्रव्यानुयोग का है।

(२) चरणानुयोग—

१९१।१९४,१९५,१९६।२०१,२०२,२०३।२०६।२०८।२१०।
२१२,२१३,२१४।२१७,२१८।२२२,२२३।—योग १७

(३) गणितानुयोग—

१९७,१९८।२०४,२०५।—योग ४

(४) धर्मकथानुयोग—

२२८–२३१।—योग ४

(१०)

चतुःस्थान-प्रथम उद्देशक सूत्र २३५-२७७ (सूत्र ४३)

(१) द्रव्यानुयोग—

२३६।२३८-२४२।२४४,२४५।२४८,२४९,२५०।२५२-२६२।
२६४, २६५।२६७-२७१।२७३-२७७।—योग ३४

(२) चरणानुयोग—

२३५।२३७।२४३।२४६,२४७।२५१।२५५[1]।२६३।२६६।२७२
—योग १०

---

१ सूत्र २५५ के अन्तर्गत १४ सूत्र हैं। उनमें से प्रथम सूत्र द्रव्यानुयोग का है। शेष १३ सूत्र चरणानुयोग के हैं।

(११)

चतुःस्थान द्वितीय उद्देशक सूत्र २७८-३१० (सूत्र ३३)

(१) द्रव्यानुयोग

२७९-२८२[1]।२८९[2]।२९१-२९९।३०८।—योग १५

(२) चरणानुयोग

२७८।२८२-२८५।२८७-२९०।२९२[3]।३०९,३१०।—योग १५

(३) गणितानुयोग—

२८६।३००-३०७।—योग ९

(१२)

चतुःस्थान तृतीय उद्देशक सूत्र ३११-३३८ (सूत्र २८)

(१) द्रव्यानुयोग—

३११,३१२,३१३।३१५-३२०[4]।३२३,३२४।३२७[5]।३२९,—

---

१ सूत्र २८२ के अन्तर्गत १० सूत्र हैं। इनमें से प्रारम्भ के ५ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं और शेष ५ सूत्र चरणानुयोग के हैं।

२ सूत्र २८९ के अन्तर्गत १७ सूत्र हैं। इनमें से पहला सूत्र चरणानुयोग का है और शेष १६ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं।

३ सूत्र २९२ के अन्तर्गत ५ सूत्र हैं। इनमें से पहला सूत्र चरणानुयोग का है और शेष सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं।

४ सूत्र ३२० के अन्तर्गत ७८ सूत्र हैं। इनमें से प्रारम्भ के ५९ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं और शेष १९ सूत्र चरणानुयोग के हैं।

५ सूत्र ३२७ के अन्तर्गत ३९ सूत्र हैं। इनमें से प्रारम्भ के १४ सूत्र और एक अन्तिम सूत्र चरणानुयोग के हैं। मध्य के २४ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं।

३३०।३३२।३३४,३३५,३३६।३३८।—योग १९

(२) चरणानुयोग—
३१४।३२०,३२१।३२५,३२६,३२७।३३१।—योग ७

(३) गणितानुयोग—
३२८।३३३।३३७।—योग ३

(४) धर्मकथानुयोग—
३२२।—योग १

(१३)

चतुः स्थान-चतुर्थ उद्देशक सूत्र ३३९-३८८ (सूत्र ५०)

(१) द्रव्यानुयोग—
३३९-३४५।३४७।३४९,३५०,३५१।३५३।३५६,३५७,३५८।३६०।३६२।३६४,३६७।३७१।३७३-३८०।३८५।३८७,३८८।
—योग ३३

(२) चरणानुयोग—
३४४[1]।३४६।३४८,३४९[2]।३५२।३५४,३५५।३५९,३६०[3],—

---

१ सूत्र ३४४ में १५ सूत्र हैं। इनमें से अन्तिम एक सूत्र द्रव्यानुयोग का है और शेष १४ सूत्र चरणानुयोग के हैं।

२ सूत्र ३४९ में १६ सूत्र हैं। इनमें से प्रारम्भ के ६ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं। और शेष १० सूत्र चरणानुयोग के हैं।

३ सूत्र ३६० में १४ सूत्र हैं। इनमें से ११ वां, १२ वां ये दो सूत्र चरणानुयोग के हैं। शेष १२ सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं।

३६१।३६३।३६८,३६६,३७०।३७२।—योग १५

(३) गणितानुयोग—

३८३,३८४।३८६।—योग ३

(४) धर्म कथानुयोग—

३८१,३८२।—योग २

(१४)

पंच स्थान-प्रथम उद्देशक सूत्र ३८९-४११ (सूत्र २३)

(१) द्रव्यानुयोग—

३९०।३९३,३९४,३९५।४०१[1]—४०६।—योग १०

(२) चरणानुयोग—

३८९।३९१,३९२।३९६-४००।४०७,४०८।४०९,—
४१०।—योग १२

(३) गणितानुयोग—

४०१।—योग १

(४) धर्म कथानुयोग—

४११।—योग १

---

१ सूत्र ४०१ के अन्तर्गत २ सूत्र हैं। इनमें से प्रथम सूत्र गणितानुयोग का है और द्वितीय सूत्र द्रव्यानुयोग का है।

(१५)

पंच स्थान-द्वितीय उद्देशक सूत्र ४१२-४४० (सूत्र २९)

(१) द्रव्यानुयोग—

४१६।४१८,४१९।४३१।४३६।—योग ५

(२) चरणानुयोग—

४११-४१५।४१७।४१९[1]—४३०।४३२,४३३।४३७,४३८, ४३९।—योग २३

(३) गणितानुयोग—

४३४।—योग १

(४) धर्म कथानुयोग—

४३५।४४०।—योग २

(१६)

पंच स्थान-तृतीय उद्देशक सूत्र ४४१-४७४ (सूत्र ३४)

(१) द्रव्यानुयोग—

४४१-४४४।४४८,४४९,४५०।४५२।४५४।४५६।४५८-४५९। ४६१।४६४।४६९।४७४।—योग १८

---

१ सूत्र ४१९ के अन्तर्गत ९९ सूत्र हैं। इनमें से ५ क्रिया सूत्र चरणानुयोग के हैं। शेष सूत्र द्रव्यानुयोग के हैं।

(२) चरणानुयोग—

४४३[1]।४४५, ४४६, ४४७।४५३।४५५।४५७।४६५-४६८।—योग ९

(३) गणितानुयोग—

४५१।४६०।४६६, ४७०।४७२, ४७३।—योग ६

(१७)

षष्ठ स्थान— सूत्र ४७५-५४० (सूत्र ६६)

(१) द्रव्यानुयोग—

४७८, ४७९, ४८०।४८२।४८३, ४८४।४८६, ४८७, ४८८।

४९०-४९५।४९७।४९९।५०१, ५०२।५०४।५०५-५१०।५१२।

५१३।५२४, ५२५, ५२६।५३२-५३७।५४०।—योग ३८

(२) चरणानुयोग—

४७५, ४७६, ४७७।४८५।४८९।४९६।५००।५०९।५११।

५१४।५२१।५२७-५३०।५३८।—योग १६

(३) गणितानुयोग—

४८१।४९८।५१५, ५१६, ५१७।५२२, ५२३।५३९।—योग ८

(४) धर्मकथानुयोग—

५१८, ५१९, ५२०।५३१।—योग ४

---

१ सूत्र ४४३ के अन्तर्गत ३ सूत्र हैं। इनमें से प्रथम सूत्र द्रव्यानुयोग का है। अन्तिम दो सूत्र चरणानुयोग के हैं।

(१८)

सप्त स्थान | सूत्र ५४१-५९३ | (सूत्र ५३)

(१) द्रव्यानुयोग—

५४२, ५४३।५४७-५५०।५५२,५५३।५५९-५६२।
५६५,५६६,५६७।५६९।५७२-५७९।५८२,५८३।५८६।
५८८।५९१,५९२,५९३।—योग ३१

(२) चरणानुयोग—

५४१।५४४,५४५।५५४।५७०,५७१।५८४,५८५।—योग ८

(३) गणितानुयोग—

५४६।५५५।५८०,५८१।५८९,५९०।—योग ६

(४) धर्मकथानुयोग—

५५१।५५६,५५७,५५८।५६३,५६४।५६८।५८७।—योग ८

(१९)

अष्ट स्थान | सूत्र ५९४-६६० | (सूत्र ६७)

(१) द्रव्यानुयोग—

५९५,५९६।५९९।६०२।६०६-६१३।६१५।६१९।६२२।६२४।
६२७,६२८।६४४।६४६।६५२।६५४।६५८,६५९,६६०।
—योग २५

(२) चरणानुयोग—

५९४।५९७,५९८।६०१।६०३,६०४,६०५।६१४।६१८।
६४५।६४७।६४९।—योग १२

(३) गणितानुयोग—

६००।६२३।६२९-६४३।६४८।६५०।६५५,६५६,६५७।

—योग २२

(४) धर्मकथानुयोग—

६१६,६१७।६२०,६२१।६२५,६२६।६५१।६५३।—योग ८

(२०)

नव स्थान सूत्र ६६१-७०३ (सूत्र ४३)

(१) द्रव्यानुयोग—

६६२।६६५-६६८।६७१।६७३।६७५-६७९।६८२,६८३,६८४।

६८६।७००,७०३।—योग २०

(२) चरणानुयोग—

६६१।६६३।६७४।६८१।६८७,६८८।—योग ६

(३) गणितानुयोग—

६६९,६७०।६८५।६८९।६९४,६९५। ६९८,६९९ ।—योग ८

(४) धर्मकथानुयोग—

६६४।६७२।६८०।६९०-६९३। ६९६,६९७।—योग ९

(२१)

दश स्थान सूत्र ७०४-७८३ सूत्र ८०

(१) द्रव्यानुयोग—

७०४-७०८।७१०।७१३।७१६।७२७।७२९।७३१,७३२।७३४।

७३६,७३७।७४०-७४३।७५२,७५३,७५४।७५६,७५७।७६०,

७६१,७६२।७६५,७६६।७६६।७७२,७७३।७७६।७८१,७८२,
७८३।—योग ३६

(२) चरणानुयोग—
७०६।७११,७१२।७१४,७१५।७३३।७३८,७३६।७४४,७४६।
७५१।७५५।७५८,७५६।७६३।७७०। —योग २०

(३) गणितानुयोग—
७१७।७१६-७२६।७२८।७४७।७६४।७६८।७७४,७७५।७७८,
७७६,७८०।—योग १८

(४) धर्मकथानुयोग—
७१८।७३०।७३५।७५०।७६७।७७७।—योग ६

अनुयोग वर्गीकरण तालिका समाप्त

भगवान महावीर के जीवन प्रसंग

क्रम	स्थान	उद्देशक	सूत्र	वर्णन
१	१		५३	निर्वाण
२	३	४	२२९	युगान्तकृद्भूमि
३	३	४	२३०	चौदहपूर्वीमुनि
४	४	३	३२२	जो श्रमणोपासक देवगति प्राप्त हुए उनकी स्थिति
५	४	४	३८२	वादीमुनि
६	५	१	४११	पंच कल्याण
७	६		५३१	प्रव्रज्या. केवलज्ञान. निर्वाण
८	७		५६८	संघयण. संस्थान. ऊँचाई.
९	७		५८७	प्रवचन निह्नव.
१०	७		५८७	निह्नवों के धर्माचार्य
११	७		५८७	निह्नवों के नगर
१२	८		६२१	भ० महावीर ने ८ राजाओं को दीक्षा दी.
			,,	
१३	८		६५३	अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होने वाले भ० महावीर के शिष्य

१४	९	६८०	भ० महावीर के गण
१५	९	६८१	नौकोटी शुद्ध आहार
१६	९	६९१	भ० महावीर के समय में तीर्थंकर गोत्र बांधने वाले जीव
१७	९	६९२	भ० महावीर ने कहा—ये जीव आगामी उत्सर्पिणी में तीर्थंकर होंगे.
१८	९	६९३	राजा श्रेणिक का वर्णन.
१९	१०	७५०	भ० महावीर के दस महा-स्वप्न.

परिशिष्ट २

मूल सूत्रान्तर्गत सूची

स्थानांग में सात सौ तिरासी मूल सूत्र हैं। उनमें कुछ सूत्र ऐसे हैं जिनका मूल सूत्रांक एक है किन्तु उस एक सूत्र के अन्तर्गत अनेक सूत्र हैं और कुछ सूत्र ऐसे हैं जिनके अन्तर्गत एक भी सूत्र नहीं है। अर्थात् मूल सूत्रांक के अनुसार एक ही सूत्र है।

एक स्थान	
मूलसूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
१	०[1]
२-४०	०
४१	३
४२	१८
४३	३
४४	०
४५	२
४६	४
४७	३६
४८	१८
४९	१८
५०	१४
५१	१०८४
५२	०
५३	०
५४	०
५५	३
५६	२२
	योग १२६९

द्वि स्थान प्रथम उद्देशक	
मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
५७	१०
५८	२
५९	४
६०	३६
६१	२
६२	२
६३	०
६४	११
६५	११
६६	११
६७	०
६८	०
६९	२५
७०	७
७१	२३
७२	२५
७३	२८
७४	२
७५	९३
७६	१८
	योग ३१९

१. जहां शून्य है वहां मूलसूत्रांक के अनुसार एक ही सूत्र है किन्तु अन्तर्गत सूत्र भी नहीं है।

द्विस्थान द्वितीय उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
७७	२४
७८	४८
७९	३६६
८०	४५
	४८३

द्विस्थान तृतीय उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
८१	६
८२	१७
८३	३०
८४	११
८५	२४
८६	७
८७	१९
८८	२५
८९	१८
९०	१४८
९१	३
९२	४३४
९३	४३४
९४	३४
योग	१२१३

त्रिस्थान चतुर्थ उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
९५	७८
९६	५
९७	५
९८	१०
९९	१
१००	४३२
१०१	१४
१०२	९
१०३	३
१०४	४
१०५	८
१०६	३
१०७	३
१०८	४
१०९	०
११०	४
१११	०
११२	०
११३	५
११४	०
११५	०
११६	५
११७	६
११८	२३
योग	६२७

त्रिस्थान प्रथम उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
११९	३
१२०	३
१२१	१९
१२२	३
१२३	३
१२४	७२
१२५	४
१२६	३३
१२७	४
१२८	९
१२९	१२
१३०	९
१३१	०
१३२	२४
१३३	३
१३४	२१
१३५	०
१३६	०
१३७	१४
१३८	८४
१३९	३६
१४०	२३
१४१	०
१४२	१५
१४३	३२
१४४	२
१४५	०
१४६	९
१४७	३
१४८	२
१४९	२
१५०	२
१५१	२
१५२	०

योग ४५७

त्रिस्थान द्वितीय उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
१५३	३
१५४	३२०
१५५	२४
१५६	४
१५७	४
१५८	२
१५९	२
१६०	२९५
१६१	२
१६२	५
१६३	२९
१६४	२
१६५	८
१६६	०
१६७	०

योग ७०२

त्रिस्थान तृतीय उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
१६८	६
१६९	०
१७०	२
१७१	०
१७२	२
१७३	०
१७४	४
१७५	४
१७६	१
१७७	०
१७८	२
१७९	२
१८०	३
१८१	२५
१८२	१४
१८३	५
१८४	३
१८५	८
१८६	२
१८७	७
१८८	८
१८९	२
१९०	०
	योग १५१

त्रि स्थान चतुर्थ उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
१९१	६
१९२	५१
१९३	३
१९४	४
१९५	१८
१९६	०
१९७	९०
१९८	२
१९९	२
२००	३
२०१	४
२०२	६
२०३	४
२०४	०
२०५	०
२०६	२
२०७	०
२०८	६
२०९	२
२१०	२
२११	०
२१२	०
२१३	०
२१४	७
२१५	०
२१६	०
२१७	०

२१८	३
२१९	०
२२०	३
२२१	१४
२२२	४
२२३	२
२२४	०
२२५	०
२२६	०
२२७	७
२२८	०
२२९	३
२३०	०
२३१	०
२३२	४
२३३	६
२३४	२३
	योग २९८

चतुःस्थान प्रथम उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
२३५	०
२३६	२६
२३७	०
२३८	०
२३९	१३
२४०	०
२४१	१८
२४२	२
२४३	२
२४४	०
२४५	०
२४६	०
२४७	१३
२४८	२
२४९	४०८
२५०	१०८
२५१	३
२५२	२
२५३	२
२५४	३७
२५५	१४
२५६	३१
२५७	०
२५८	०
२५९	२
२६०	२
२६१	०
२६२	०
२६३	०
२६४	०
२६५	०
२६६	२
२६७	४
२६८	३
२६९	०
२७०	२

२७१	०
२७२	१९८
२७३	३
२७४	४
२७५	०
२७६	०
२७७	०
	योग-९२१

चतुःस्थान द्वितीय उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
२७८	४
२८९	१७
२८०	१८
२८१	२४
२८२	११
२८३	३
२८४	२
२८५	३
२८६	०
२८७	४
२८८	०
२८९	१७
२९०	०
२९१	४
२९२	५
२९३	७
२९४	३
२९५	५
२९६	१०
२९७	०
२९८	०
२९९	०
३००	०
३०१	३
३०२	५६
३०३	३
३०४	२८
३०५	१२६
३०६	२१६
३०७	०
३०८	०
३०९	०
३१०	३
	योग-५७८

चतुःस्थान तृतीय उद्देशक

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
३११	४
३१२	६
३१३	२
३१४	२
३१५	०
३१६	२५
३१७	०
३१८	०
३१९	१४
३२०	७८
३२१	२

३२२	०
३२३	२
३२४	८
३२५	२
३२६	२
३२७	३९
३२८	२
३२९	३
३३०	०
३३१	४
३३२	२
३३३	२
३३४	०
३३५	०
३३६	०
३३७	०
३३८	८
	योग २१६

चतुः स्थान चतुर्थ उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
३३९	०
३४०	४
३४१	०
३४२	०
३४३	०
३४४	१५
३४५	२
३४६	१४
३४७	०
३४८	२
३४९	१६
३५०	३
३५१	२
३५२	५
३५३	७
३५४	५
३५५	८
३५६	५
३५७	०
३५८	८
३५९	२
३६०	१४
३६१	५
३६२	३
३६३	०
३६४	३
३६५	५
३६६	४
३६७	२
३६८	२
३६९	०
३७०	२
३७१	४८
३७२	०
३७३	४
३७४	६
३७५	२

३७६	२
३७७	०
३७८	०
३७९	०
३८०	०
३८१	०
३८२	०
३८३	३
३८४	०
३८५	२
३८६	०
३८७	६
३८८	२३

योग-२५१

पंच स्थान प्रथम उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
३८९	२
३९०	१३
३९१	२
३९२	०
३९३	२
३९४	२
३९५	८
३९६	१२
३९७	२
३९८	२
३९९	२
४००	२
४०१	२
४०२	०
४०३	२
४०४	३२
४०५	२
४०६	०
४०७	०
४०८	०
४०९	२
४१०	९
४११	१४

योग-११७

पंच स्थान द्वितीय उद्देशक

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
४१२	२
४१३	२
४१४	०
४१५	०
४१६	४
४१७	२
४१८	३
४१९	९९
४२०	०
४२१	०
४२२	३
४२३	२
४२४	०
४२५	२

४२६	२
४२७	४
४२८	०
४२९	२
४३०	४
४३१	०
४३२	०
४३३	२
४३४	९२
४३५	५
४३६	०
४३७	७
४३८	०
४३९	०
४४०	०
	योग २४९

पंचस्थान तृतीय उद्देशक

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
४४१	१
४४२	०
४४३	३
४४४	६
४४५	६
४४६	२
४४७	०
४४८	०
४४९	०
४५०	२
४५१	२
४५२	०
४५३	२
४५४	०
४५५	०
४५६	०
४५७	०
४५८	८
४५९	०
४६०	४
४६१	०
४६२	४
४६३	०
४६४	०
४६५	०
४६६	०
४६७	०
४६८	२
४६९	२९
४७०	४
४७१	०
४७२	२
४७३	०
४७४	३०
	योग १२७

षष्ठ स्थान

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
४७५	०
४७६	०
४७७	०
४७८	२
४७९	०
४८०	०
४८१	०
४८२	७
४८३	३
४८४	०
४८५	०
४८६	०
४८७	२
४८८	२
४८९	०
४९०	२
४९१	२
४९२	२
४९३	१६
४९४	०
४९५	०
४९६	२
४९७	२
४९८	०
४९९	४३
५००	२
५०१	०
५०२	०
५०३	२
५०४	१६
५०५	२
५०६	०
५०७	२
५०८	२०
५०९	२०
५१०	४
५११	२
५१२	०
५१३	०
५१४	०
५१५	२
५१६	०
५१७	३
५१८	०

		सप्तस्थान	
५१९	०	मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
५२०	३	५४१	०
५२१	२	५४२	०
५२२	५५	५४३	८
५२३	०	५४४	२
५२४	२	५४५	६
५२५	०	५४६	११
५२६	०	५४७	०
५२७	०	५४८	०
५२८	०	५४९	०
५२९	०	५५०	२
५३०	०	५५१	८
५३१	३	५५२	०
५३२	२	५५३	९
५३३	२	५५४	०
५३४	०	५५५	२०
५३५	४	५५६	५
५३६	४१	५५७	०
५३७	०	५५८	२
५३८	०	५५९	२
५३९	२	५६०	०
५४०	२९	५६१	०
	योग ३३८	५६२	२

५६३	०
५६४	०
५६५	०
५६६	०
५६७	२
५६८	०
५६९	०
५७०	०
५७१	८
५७२	०
५७३	३
५७४	३
५७५	३
५७६	२
५७७	३
५७८	१
५७९	४
५८०	२
५८१	१
५८२	३२
५८३	३३
५८४	०
५८५	८
५८६	२
५८७	३
५८८	२
५८९	५
५९०	२
५९१	०
५९२	६
५९३	२३
	योग-२४५

अष्ट स्थान

मूल सूत्राङ्क	अन्तर्गत सूत्र
५९४	०
५९५	२
५९६	१४४
५९७	२
५९८	२
५९९	०
६००	०
६०१	०
६०२	०
६०३	०
६०४	२

६०५	०	६२८	०
६०६	०	६२९	०
६०७	०	६३०	०
६०८	०	६३१	०
६०९	०	६३२	२
६१०	२	६३३	०
६११	२	६३४	०
६१२	५	६३५	२
६१३	०	६३६	२
६१४	२	६३७	१०
६१५	०	६३८	४
६१६	०	६३९	४
६१७	०	६४०	०
६१८	०	६४१	७२४
६१९	०	६४२	२
६२०	०	६४३	१२
६२१	०	६४४	३
६२२	०	६४५	०
६२३	५	६४६	३
६२४	४	६४७	०
६२५	०	६४८	३
६२६	०	६४९	०
६२७	०	६५०	०

६५१	०
६५२	०
६५३	०
६५४	२
६५५	०
६५६	०
६५७	२
६५८	३
६५९	०
६६०	२९
योग	

नव स्थान

मूल सूत्रांक	अन्तर्गत सूत्र
६६१	०
६६२	०
६६३	२
६६४	०
६६५	०
६६६	१४
६६७	०
६६८	०
६६९	२
६७०	०
६७१	०
६७२	१९
६७३	०
६७४	०
६७५	०
६७६	०
६७७	०
६७८	०
६७९	०
६८०	०
६८१	०
६८२	०
६८३	०
६८४	०
६८५	२
६८६	०
६८७	०
६८८	०
६८९	३८
६९०	०
६९१	०
६९२	०

६९३	०
६९४	०
६९५	०
६९६	०
६९७	०
६९८	०
६९९	०
७००	०
७०१	०
७०२	६
७०३	२३
	योग १४०

दस स्थान

मूलसूत्राङ्क	अन्तर्गतसूत्र
७०४	०
७०५	०
७०६	३
७०७	०
७०८	०
७०९	४
७१०	०
७११	२
७१२	३
७१३	२
७१४	२
७१५	२
७१६	०
७१७	२
७१८	२
७१९	०
७२०	७
७२१	२
७२२	०
७२३	०
७२४	०
७२५	३
७२६	२
७२७	०
७२८	१५०
७२९	०
७३०	०
७३१	०
७३२	२
७३३	५
७३४	०

७३५	६	७६१	०
७३६	२	७६२	०
७३७	०	७६३	०
७३८	२	७६४	३
७३९	२	७६५	२
७४०	०	७६६	०
७४१	३	७६७	२
७४२	०	७६८	१०
७४३	३	७६९	३
७४४	०	७७०	०
७४५	२	७७१	३
७४६	०	७७२	०
७४७	०	७७३	०
७४८	०	७७४	२
७४९	०	७७५	०
७५०	०	७७६	०
७५१	०	७७७	०
७५२	०	७७८	१६
७५३	०	७७९	३
७५४	०	७८०	२
७५५	११	७८१	०
७५६	०	७८२	२
७५७	१०	७८३	२९
७५८	०		
७५९	०		३५४
७६०	०		

परिशिष्ट ३

स्थानांग-समवायांग

सम विषयक सूत्र सूची

स्थानांग और सनवायाङ्ग के सम विषयक सूत्र

---

१ यहां सर्वत्र सूत्राङ्क दिये हैं।

२ यहां सर्वत्र समवायाङ्क दिये हैं।

जम्बूद्वीप द्वार—
स्था० ३०३ सम० ७९
तप—
स्था० ५१८ सम० ८
तारा—
स्था० ६७० सम० ११२
तीर्थङ्कर—
स्था० ४३५ सम० १०८
स्था० ७३५ सम० १०
स्था० ६५१ सम० १११
स्था० ५२० सम० १०९
स्था० ३८२ सम० १०६
स्था० २३० सम० १०४
स्था० ६५३ सम० १११
स्था० ५६८ सम० ७
दण्ड—
स्था० ३ सम० १
स्था० ६९ सम० २
स्था० १२६ सम० ३
धर्म—
स्था० ७ सम० १
स्था० ७१२ सम० १०
धातकी खण्ड—
स्था० ३०६ सम० १२७

नदियां—
स्था० ५५५ सम० १४
नरक—(स्थिति)
स्था० ७५७ सम० १०
नक्षत्र—
स्था० ५१७ सम० १५
स्था० ६५६ सम० ८
स्था० ६६९ सम० ९
स्था० ७८१ सम० १०
निर्जरा—
स्था० १६ सम० १
पड़िमा—
स्था० ६४५ सम० ६४
स्था० ५४५ सम० ४९
स्था० ६८७ सम० ८१
स्था० ७७० सम० १००
पर्वत—
दीघमुख पर्वत—
स्था० ७२५ सम० ६४
निषध-नीलवंत पर्वत—
स्था० ३०२ सम० १०६
वर्षधर पर्वत—
स्था० ५५५ सम० ७

वक्षस्कार पर्वत—
स्था० ४३४ सम० १०८

वृत्त वैताढ्य पर्वत—
स्था० ७२२ सम० ११३

पर्याप्ति-अपर्याप्ति—
स्था० ७९ सम० १४९

पाताल कलश—
स्था० ३०५ सम० ९५

पाप—
स्था० १२ सम० १

पुण्य—
स्था० ११ सम० १

बलदेव—
स्था० ६७२ सम० १५८

बंध—
स्था० ९ सम० १
स्था० ९६ सम० २
स्था० २९६ सम० ४

ब्रह्मचर्य[1]—
स्था० ६६३ सम० ९

भवनपति—(स्थिति)
स्था० ७५७ सम० १०

मत्स्य—
स्था० ६७१ सम० ९

मद—
स्था० ६०६ सम० ८

महाव्रत—
स्था० ३८९ सम० ५

मेरु—
स्था० ७१९ सम० १.११.९९.१२३

मेरु चूलिका—
स्था० ६४० सम० १२,४०

मोक्ष—
स्था० १० सम० १

राशि—
स्था० ९५ सम० २.१४९

लवण समुद्र—
स्था० ९१ सम० १२५, १२८

लेश्या—
स्था० ५०४ सम० ६

लोक—
स्था० ५ सम० १

वनस्पति—
स्था० ७५७ सम० १०

---

१ पाठ भेद हैं।

स्थानांग सूत्र

(समाप्त)